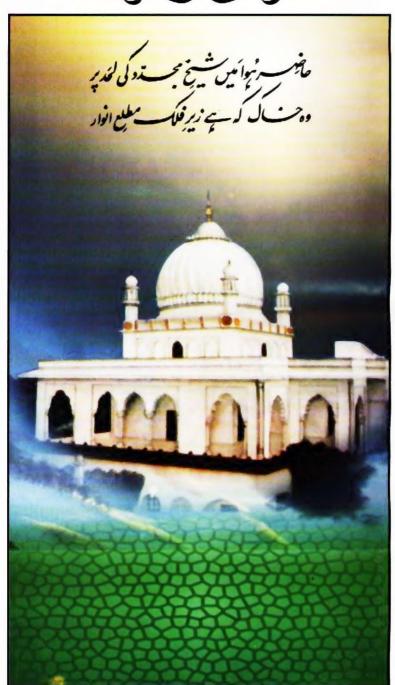


بندة ناپیز کوزیرنظر مسوده
البینات شرح مکتوبات بیمایی
دوران مطالع بجض مفنایین کے
بالے شکوک و شبهات بیدا
بلائے مین ای وقت واقعه
میں حفرت الی وقت واقعه
العزیز کی زیارت ہوئی آپ

در الموالية

مولاناعلام مُحُدِّلِغُرِت الشَّرْمُجُدِّى شُخ الحديث دارالعلوم نَفْتَثْبِنديهِ امينيه ماول الان گرمسرانواله

اس بشارت کو تقدیث نعمت کے طور پرشاس اشاعت کیا جا رہاہے ادارہ <del>CO</del>



<del>COO</del>

ت الم بالذي بالنبخ الم المنتج المحدود في حنى سندي المنظر المرابي المنتج المحدود في حنى سندي المنظر المرابي المنتج المحدود في منتوج المحدود في المنتج المرابط المنتج المرابط المنتج المرابط المنتج المرابط المنتج ال

المراد ا

شاج اوالبیان **حرمت احمل م**ودی

المنظم المنطق ا

www.maktabah.org

### جُمله حقُوق بحقِّ اداره محفُوظ



| تعداد 1,100 | باراولمن 2002   |
|-------------|-----------------|
| تعداد 1,100 | باردومتتبر 2003 |
| سے 400 سے   | هدیه            |

خطاطى انشل:

· محمدامداداحمدابن صوفى خورشيد عالم خورشيدرقم خطاما

واجدمحمودياقوت رقم و محمدامان اللهقادرى خورشيد عالم كوبرقلم و محمدوسيم صديقي



ناشر تنظیم الاست لام سلی کمیشز مرکزی جامع مجد تشنید به 121 بی مادُل اُون گوجرانواله

#### Tanzeem-ul-Islam Publications

E-mail: info@tanzeemulislam.org tanzeemulislam@hotmail.com



عَنْ الْعَفُونَ عِنْ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعِنْ الْعِلْ الْعِنْ الْعِنْ الْعِنْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْمِ الْعِلْ الْعِلْ الْعِلْمِ الْعِلْ الْعِلْمِ الْ اغفالساولي المجنع الأفاسة سيحاقو لأوف أفخاط أوسامعا بالظرا والمُحْوِدُونُ الرَّاسِ الْجَالِي اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللللللَّاللَّالِي الللَّهِ صَمَّى النَّهُ عَلَى جَبِيبِهُ مِي وَالْهُولِمُ



حاملِ نببِ صديقيه اميرُساكرِ اسِ لاميّه خليف ئه الله المعبُود

وارثِ كمالاتِ مُحَدِية مهطِ أومِي رُبِي قَيْمُ الوقتِ الموجود



يحضورنازمين بصدشوق وانكسارارمغان نياز



بُرَ إِن ولا بيتِ مُحمّدية ؛ حُجّة تربوية مُصلفوته المُعْنَّ اللهِ عَلَيْمُ مُطَعَاتِ قَرَانَى المُعْنَّمُ مُطَعَاتِ قَرَانَى المُعْنَمُ المُعْنَمِ المُعْنَمُ المُعْنَمِ المُعْنَمُ المُعْنِمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنِمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنَمُ المُعْنِمُ المُعْنِمُ المُعْنِمُ المُعْنِمُ المُعْنِمُ المُعْنَمُ المُعْنِمُ المُعْمِ المُعْمِمُ المُعْمُمُ المُعْمِمُ المُعْمِمُ المُعْمِمُ المُعْمِمُ المُعْمِمُ المُعْمُمُ المُعْمُمُ المُعْمِمُ المُعْمُمُ المُعْمُمُ المُعْمُمُ المُعْمُمُ المُعْمُ المُعْمُومُ المُعْمُومُ المُعْمُومُ المُعْم

ونوسي المراسة المراسة

؛ تُدبِّرسِتِ فالسُّبُحانِي



## فهرست

| صغفه    | مضامين                                   | 1    | صغم              | مضامين  |
|---------|--|------|------------------|---|
| .6      | ميركي دوقعيں                             | 17   |                  | ش لفظ   |
| .<      | بسينات                                   | YA   | ي قدس سره        | راج عتيدت تجعنورامام راإ                              |
| ماسي ٩. | اسم الظّام رکی تجلی کا ظهور عورتوں کے    | 19   |                  | راج عقیدت مجعنورا ام را !<br>نصر حالح میاشارع مکتوبات |
| 11      | تخصيص نساءكي تين وحوابت                  | ۲.   |                  | غدمه  |
| 17      | بستينات                                  | 49   |                  | تخطيبه  |
| 17"     | صديث نبوى سے استدلال                     |      |                  | مكتوب ا   |
| 10      | بسينات                                   | 97   | ر دماوی علیالرحم | فتصرتعارف خواجه محدباتي التأ                          |
| 17 6    | لتجبم نهجي صلي الشرطبية وعلم كاسايه ندخو |      | يتحلى اسم        | متن (دراثناء راه آنقا                                 |
| 4       | عدم سايد كى تحميس                        | Aw   |                  | الظاهر متجلى كشسة                                     |
| 4       | دَاتِ رسالت مُظهرِ كِمالاتِ ثلاث         | 97   | (                |   |
| 11<     | مختف اشياءمين لمهور تجتيات               | "    |                  | رحميه الشرح   |
| All     | رفیقِ اعلیٰ کی آرزو                      | "    |                  | سم انظامر كأمفهوم                                     |
| 119     | بلينه                                    | 94   | سے استدلال       | خهوم ذكوره برحدميث پاك ـ                              |
| 11      | تنزبيه وتثبيه                            | 94   |                  | بلي كامفهوم   |
| nr -    | تعین جسدی وتعیش علمی                     | 19   | الى تعارىك       | نیرشهودی <sup>ا</sup> در توحید د جردی کا اجم          |
| 144     | عروج فوق العرش                           | 1-1  |                  | بيدوجودي كي پانخ اقسام                                |
| ۱۲۵     | عالم غلق، عالم امر                       | "    | لهوركاعهوم       | ام اشیاد میرتجنی اسم لظامر کنے                        |
| רז      | اللائف عشره                              | 1.5  |                  | براسماء وصفات   |
| 174     | اسماء لطالقن كاثبوت قرآن ست              | 1-1" |                  | مها <b>ت</b> اسماد                                    |
| ITA     | متغابات لطائف عالمهامر                   | "    | رەزات            | ِ ثرَه اساء، دائره صفات، دائر                         |
| 4       | لطيفة قلب                                | 1.5  |                  | بيردوا رژ<br>تاريخ                                    |
| "       | لطيفة دوح                                | 1.6  |                  | اقبداسم انظاهر  |
| 179     | لطيفة بمر                                | "    |                  | ببر کامعنیٰ   |

الميفرخفي ماسوى الترسي تعلق كامفهوم 179 161 فنائے واقعی تطبيغداخني 4 مقابات لطالف عالم خلق فنائے علمی 11. اقسام فثا " 11 بقا كامفهوم 105 171 105 127 لطيفه حارى بونے كامطا 177 فنا ادريقا كامفهوم " 161 تجلىصفاتى 188 11 احسان كامعني احادبیث مبارکہ سے ا 144 JAA متكن (وجهت جذبراكنون تمام 177 124 169 عرش برمقالت انبياء واولياء كامشامره ۱۳۸ اجهام لطيفه اورارواح نفيسه كا سيرفى الشريسي مراد ع ورج کرنا جذب وسنوك 179 17. " 141 191 جذربه حقيقي اقبام سالك 177 174 " 164 امتخاره كأسس 144 11 مراتب ئوک 14-سالكين كي أقسام عروج AFI 11 ننرول 149 141 فناكامفهوم

على المنت المنته المنتهجة ترجر کا ثبوت .... قرآن ومدیث سے اعتبار كالمفهوم 196 14-اقبام ترجر دوائر وظلال KT 11 وانره كالمفهوم توجبرانعكاسي " 190 توحيرالقاني دائره السل " " توحبراتحا دي دائره ظلال 197 طربق توجبر ظلال كامفهوم 145 " مديث پاك سے استدلال تحلیٰ ذاتی ہے دوسفہوم 155 194 ذات بارى تعالى كے مختلف اطلاقا، برستنات 194 11 طرنق ابرار مبداء فيآض 144 199 مبداءكعتين طرنق مقربين 147 " ابرارا ورمقربين كے اعمال وظائف كا فرق ذابت اور ممكناب ١٤٨ 1 حنات الابرارسي ت المقربي كے پانج مفهم حضرت ابن عربي كامؤقف 1<9 ۲.. حنرت امام رباني كاموقف بميتهنات " IAI حقائق سبعه 145 حيرت مدموم حقيقت كعيمغظ 11 4.1 حتيقت محدرينكي صاجبهاالصكوا 1.1 11 حقيقت محدبيام الممس " 119 1.1 عقیقت محدر اور داتی ہے 11 1.4 حقيقت محديه كاادراك اممكن 11 4 حقيقت محديبظه واوّل حقيقت الحقائي ب 4.0 11 تخريج وتخفيق مديث نورولولاك (حاشيه) 19. 4.4 متكلين المسنت كي تحقق 11 Y. A

حقیقت کر تعار جی در تعان جردی ہے حضرت امام رباني كي تحقيق تحقيقت محربيشن اكبري نظرس 191 ۲1۰ شيوناست حقيقت محربيالم رباني كي نظريس 11 717 صفات وشيونات درميان باريك فرق صنعست مشاكله 147 414 مقام شیون مواجه نه دات سیے *ۆ*لەنيىس 125 114

|        |   | T   |  |
|--------|---|-----|--|
| 479    | غير محدي المشرب                               | 771 | حقيقت محديه كي فتلف تعليت اصطلاحا  |
| 797    | حقیقت محربی کے مائل نر ہونے کافہوم            | 777 | حقيقت كبد اختيت محديد فاضل   |
| 755    | متابعت کے دومعنیٰ                             | 777 | حقيقت قرآن   |
| 750    | وارثان كمالات نوتت كى دوقىي                   | 777 | قرآن غیر غادت ہے<br>تولیت قرآن<br>تولیت قرآن   |
| 1/2    | مُكتوبه                                       | "   | قرآن تمام ذاتی وسشيونی كالات كامامعس   |
| w at 8 | متر   | 474 | کلام کی دوقسیں<br>کلام باشک مرات اولو  |
| 449    | ترجمه، مشرع                                   | "   | کلام الشرکے مراتب ادبعہ<br>کلام الشرکے ست ماتب<br>حدیث یک سے استدلال<br>حدیث یک سے استدلال |
| 4      | رساله طريقت خواجگان نقشهنديه                  | 1/  | حدیث یک سے اشدلال<br>کلام کی تقیہ ور الدرات کے ترجہ  |
| 9      | رمال مسلسة الاحرار                            | TTA | کلام کی تقییم وبیان مراتب کی ترجهیه  |
| 70-    |   | "   | حقیقت محریر حقیقت قرآن کاظل ہے   |
| 401    | دباعيات صنب خاجه باقى الشرقدس سؤ              | "   | مرتبر حقيقتِ قرآن مرتبه فورسي هي بالاترب   |
| TOT    | سيرعن الشربالشر كالفهوم (سيريوم)              | 74. | حفيقت دمضان  |
|        | مكتوب ١                                       | 771 | قرآن وزمضان میں مناسبت   |
|        | متن (به برکت توجه عالی بهردو                  |     | حقیقت محدمید میں ذات کی قابیت  |
|        | طریق جذبه وسکوک تربیت فرمود)                  | 777 | شان العلم کے اعتبار سے ہے  |
| 40<    | ,   | 11  | قابلیت اولی سے مراد حقیقت محدی ہے  |
| •      | ترجمه، شرع                                    | 777 | صوفيار كااختلات  |
| 764    | جذب وسكوك                                     | "   | انسان نسخهٔ جامع سب  |
| "      | ببينه   | 770 | حقيقت امكاني   |
| "      | اقيام مندبه                                   | "   | حقيقت وجوبي  |
| 709    | تعبيز حبال ومبلال                             | 777 | فیعن کی دوقسیں   |
| 774    | رساله قد ستيه                                 | 4   | فيض مخليقي   |
| 771    | مصرت خواجه محمر بإرسا قدس مرفه كالمختفة توارف | "   | فيض كمالاتي  |
|        | متنن (مجت ذاتيرعلامت فارت                     | 774 | قابليّت ، نسبت، قابليّت اولي   |
| ,      | واين حيرت وجبل دامئي است                      | "   | مبدا وفيض مربداه فياض  |
| 47     |   | 774 | انبياء ومرسلين كے مبادئ فيوض   |
| 747    | ترجمه اسشرح                                   | 771 | اولیا، کرام کے مہادی فیوض  |
| "      | مجدمنت ذانيدعلامت فاسب                        | 4   | محدتني المشرب اولياد   |
|        | , ,   |     |  |

البيتنا ع و فرست و حيرت وحبل كامفهوم YAT 777 مشابات روحانيه مراتب يقين 770 YAY 440 علم البقين " 4 بديغداوي قدس سراه عيناليقين 11 **FAY** حق اليقين 777 " 275 TAK ترجمه ، مترح 1 11 تصنرت امام رباني كاشيطاني اثرات عارف كامرتبهٔ نزول 771 تصرفات نے پاک ہونا عارون كامرتربحق اليقين 771 11 مكتوب ۸ تجلى افاتى وانفسى " مطلوب أفاق وانفس. 491 74. 11 441 ترحید وجودی اور توحیشودی کے دمیا فیق 491 747 عارف كى كيفيات عروج ونزول 197 4 مکتوب > 795 مشكرامتيطاعيت معالفعل متنن رمقاميكه فوق محدّد لود روح " 294 خود را بطري عرفه درآنجامي يافت ....) 728 797 ترحمه انتسرح 11 مخقرتعارف عفرت ثا ونعتبند كإرى قدس مرا 794 مسيوراربعه 447 مخقرتعا رف حفرت والبيعلا والدين عطار فدرسره سيرعروجي - سيرنزولي 191 11 عروج کی دونسمیں 799

11

744

441

249

TA-

TAI

ميبرالي النثر

سيرفى النشر

سيرعن التدبالتد

ميىرفى الاشياد بالتشر

مخفرتعار فتصرب فواجر علبخالق غدماني قدس سدؤ مصطلحات نقشبندبير ہوش دروم نظربرقدم

سفردروطن

خلوت دراحجن

11

"

4

٣..

المنت المنت

ماوكرو عثان غني رضى الشرعنها TK 4.1 مازگشت مئله تقدير برقول فيبل 719 نخداشت ممئلة قضا وقدراوراقوال صوفلت وحود سركى تا وبلات باد داشت " مخقرتعار ف حضرت خواج معروت كرخي قدس ميرهُ 4.4 44. مخقرتعارف حضرت ام داؤد طائي قدس سرة 1 " مخقرتعارف حفرت فواجه خن بصري قدس مسرة مسُله صفات إرى تعالى م يُختلافا في نوعيت 4.5 مخقرتعار ف حفرت نواجه جبيب عجبي قدى سره صوفیائے ویودیہ 7.7 معتزله ،اشاعره ، ماترىيىيە T-4 ترعمه الشرح صوفیائے شہود ہے ۳.7 TTT علمائے متکلمین المسنت فلأطبيب كها ولأراق ٣.٨ وصل اورمعرفت بستنات 4.9 كمال معرضت صغات سبعه بإثمانير 41. 416 مكتوب الام رتاني كاعتيدة توحيد 711 419 7:17 تزحمه انشرح ترحمه الثرح 44. 11 علمأ وطلبارا مبسنت كےساتھ اظہار محبت بهستنات 271 عارف كالينيآت كافرزرك كو معارف توحدشهودي ۳۱۳ منله قضاو قدر كي تحقيق بهترط ننے کی توجیہات MMY ۳۱۲ متقام عبدميت فهقه قدربير TTO 714 مجوب خداصل لنبطيونكم كي شائعت قدربيكا بإني 477 فرقه جبربي حضرت الراميم على السلام كي شان عبريت 444 " حضرت تولى عليه السلام كى شان عبرميت جبربيا كاباني 417 " ابل انسنته والجاعة كامسلك حضرت أيسف على السلام كي شان عبدت 474 11 صعابه كرام صى التعنيم كي شان عبديت جبربه وقدربه کے عقائد گفریے ہی // حضرت بشرعاني كي ثنال عبديت بنده كينے فعال اعال كاخان نير كارہے ۲i۷ 449 حضريت يخ عبدالقادر جبلاني كيشان عبت مئله قضا وقدرا ورمضرت سيدنا عمرفار وق اور

|     |  |             | ر موران م                           |
|-----|--|-------------|-------------------------------------|
|     | ا المجاهدة ا | <b>}</b> %≡ | البيتنا المحالية                    |
|     | ما در است ا ما اسمال م   | ww.         | متم                                 |
| ۲۳۶ | عارف كامقام استقرار وعبور  | ۲۲۱         | ترجمه، شرح                          |
| ۲۲۲ | ا تين  | "           | /                                   |
| 771 | ترجمبه، شرح  | 444         | جامتیت انسان<br>ایک مثال            |
| "   | وصولی الی التیریکے دومقام  | 777         | 1 4 4 4 4 4 4 4                     |
| ٣٤٠ | مكن ، ترجمه ، شررع   | ۲۲۲         | ظُلُومًا جُهُولًا كَافْهُمُ         |
| 441 | مركزمقام سيرقى الشر  | 770         |                                     |
| 11  | فنائے ارادہ  | ۲۲٦         | ترحمه ، مشرح                        |
| ۳۲۳ | متعامات عالبه بس عبور كامطلب   | m6<         | اوليا دمخټوبين<br>مه په             |
|     | حضرت مجدد پاک کی دربار حبانگیری میں  | 754         | اول ومجيين                          |
| ٣٤٣ | تشريف آوري (حيدافكالات كيوابات)  | "           | خاصهٔ نقشبندییه                     |
| 4<< | عمل ارشاد کی اہمیّت  | 766         | طريقه مجبوبين                       |
| 744 | خليفه مطلق وخليفه مقيتر  | 70-         | نكرن ا                              |
| 749 | مکن (عین نمی ماندانژ محباماند)   | 701         | ترجمه ، شرح                         |
| "   | ترحمه بشرح   | *           | ايب سوال أوراس كاجواب               |
| ۳۸۰ | مخضرتعارت صفرت سينح الوسعيدالوالخيرط إلزمس   |             | ر مکتوب ۱۰                          |
| TAI | مختصرتعا رف صنرت ينح مي الدين ابرع بي عليارتم  | 704         | مكن                                 |
| TAT | مخضرتعارف مضرت مولاناء بالرحمان جامي وإيرم   | *           | ترجمه، شرع                          |
| TAT | فنلئ عين والركى بحث  | 701         | ايمان شودي                          |
| TAT | مسلك حفرت الوسي على الرحم  | "           | ایمان عیبی                          |
| 4   | مسلكب مغنرت شيخ اكبرعليالرثمه  | 709         | من ا                                |
| 11  | مسلك الم رباني قدس سرؤ   | 77.         | ترجمه، شرح                          |
| 710 | تطبيق  | 777         | مديث مَا أُوْذِي نَبِيُّ كَيْرْ يِج |
|     |  |             | مكتوب ١١                            |
|     | متن رصرت شخ از دوام این مدیث   |             | متن راماجون مقام واستقترار          |
|     | فالمراقا والمالية  | W A         | درآنجانداشت)                        |
| 714 | فرموده آگریپهاز نوادرست)   | 175         |                                     |
| 11  | ترجمه المنشرح  | ۲۲۶         | ترجمه المشرع                        |
|     |  |             |                                     |

|     | حشرمولا أيعالة خالى كيزديك          | TAA | نغمات كى اصل عبارت                         |
|-----|-------------------------------------|-----|--|
| 4.0 | ملب امرامن كاظريف                   | 4   | مدريش دوام                                 |
| *** | حضرت مرزام ظهرقدس سرؤ کے نزدیک      | TA9 | حضرت صديق اكبريضي الترعنه كاجترمبارك       |
| ۲.٦ | مىپ امرامن كاطريقه<br>د فع عذاب     | 79- | نسبعت نقثبندير                             |
| r-A | حضرست امام رباني اور وفع عذاب       | 791 | بهشنات                                     |
| 4.9 | كثرت كرات قلت نزول كى وجرب ب        | 797 | تتحباري كامفهوم                            |
| ۲۱. | كرامات اركان ولائت مي سينهي         | "   | تحبتي ذاني كامنعهوم                        |
| 411 | منن اترجمه استرع                    | 497 | شجلی ذاتی برقی                             |
| "   | جذبة كسيليم ورمنها                  | "   | تجلّی ذاتی دائمی                           |
| 717 | المم رباني اور حذر تسيم ورضا        | "   | ياداشت                                     |
|     | حضرت خواجه قطب الدين مختيار كاكي    | 795 | تتن  |
| 717 | اورجذرة تسيم ورضا                   | "   | ترجمه ، شرح                                |
|     | حضرت مرزام فلمرحان جانان اور        | 790 | تنزلات مرتب                                |
| 414 | جذبرتسيم ورضا                       | "   | تنزلاتِ خمسه                               |
|     | حضرت خوالجه نصيرالدين جراغ          | 794 | حضرت ابن عربي عليالرحمه كاموقف             |
| "   | وطوى اورجذراتسيلم ورصا              | "   | چضرت امام ربانی علیرالرحمه کاسوقف          |
| 417 | یاران طراقیت کے باطنی احوال کاتجزیہ | 791 | مكن  |
| ۲۱۲ | حذب كالمفهوم                        | 11  | ترجمه اشرع                                 |
| "   | سلوك كالمفهوم                       | "   | مصنع علاؤالدوايهماني قدم بسرؤ كامخصر نذكره |
| 414 | استغفار برائے دفع خطابت             | 799 | متينح علاؤالدوله اورابن عربي مير فبالنزاع  |
| 417 | غلبنا مدنتيت                        | ۲   | مكرن                                       |
|     | م مکتوب۱۲                           | "   | ترجبه، شرح                                 |
| ۱۲۲ | منن                                 | 4-1 | سلب امراض                                  |
| 477 | ترجمه ومشرح                         | 4.4 | حضرت امام رباني اورسسب المرض               |
| 477 | وجبه خاص كالمفهوم                   |     | حدبت شاه ولي المكي نزديك                   |
| 417 | افعال خداوندى علك نهيس              | 4-4 | سلب امراض كالحب لقير                       |
| "   | معتزله كامسك                        | 4.0 | حفرت شاه عبدالعزين كزوك الملف كالرقير      |
|     |                                     |     |  |

|     | ا الله الله الله الله الله الله الله ال                                       | <b>}</b> € | البيتنا 🚙   |
|-----|---|------------|---|
| 444 | مزيراقيام   | 777        | اشاعره كامسلك   |
| "   | مرتمبر وجرب   | 777        | اتريديركامنك  |
| "   | مثابره  | "          | ذوات اشاراوران کی استعدادات مخلوق مر  |
| 776 | تَجِيلًا بُتِ عالم وجوب   | 440        | منله جبروانتيار   |
| 777 | عتوانِ تَقانيت  | "          | معتزله كاموقف   |
| ``` |   | "          | اشاعره كاموقف   |
|     | متن (ودر ہمین اثناء آرزئے   | ,          | ماتريديه كاموقف   |
| 441 | موت پیداشد)   | 974        | صنرت امام رتانی علم کلام کے مجتبد ہیں<br>س  |
| ,   | ترحم بمشرع  |            | م مکتوب ۱۳  |
| "   | نواېش وصل   | 471        | منن المناسبة |
| ,   | ارزئے موت   | ,          | ترجمه، شرح  |
| 449 | بسية نات  | 444        | آه بزرآه  |
| 401 | صفات کواس کے ساتھ طلنے کا عنوم  | "          | پياس مزارسالدراه  |
| 401 | تجلي صوري   | 444        | ولايت صغرى  |
| 404 | فائے حقیقی  | 40         | مقوله مېمراومت  |
| 404 | تعين وحبرخاص  | 477        | مقوله ببمه از وست   |
| 400 | واقعب   | 744        | توحيد وجودي ايك ننگ كوچىسى  |
| 767 | تعيرات واقعه  | ( ) -      |   |
| , , | بير سويات.<br>اعيان ابته  |            | مكتوب١٢   |
| n,  | عارف بابته اور حضرت ابن عربی قدس سرط<br>اعیان ثابته اور حضرت ابن عربی قدس سرط | 441        | متنن  |
| 404 | اعیان نابتراور حضرت امام ربانی قدس سرهٔ                                       | "          | ترحمه، شرح  |
|     | ایک سوال ادراس کا جواب<br>امک سوال ادراس کا جواب                              | ۱۲۲        | تجتى كامفهق   |
| 404 |   | *          | تتجلى كاثبوت  |
| 709 | منن (اكثربطريق رابط مشغول اند)  | "          | (   |
|     | ترجمه ، مسشرع   | 777        | مجلیات لانعداد جیں<br>اقسام شخبتیات<br>شمبی آثاری ، تجلی فغلی ، تجلی صفاتی<br>شمبلی ذاتی                        |
| "   | ط این العا  | 4          | تحلي آثاري تحلي فعلى تحلي صفاتي   |
| "   | اشاره بطالق الها<br>اشاره بطالق الها  | ,          | سطی ذاتی  |
| 41. | اثباتِ طربقِ رابطه  | "          | 0.0.  |

| ¥           | ا کی است کا کی کی است کا کی ک | A)=@  |  |
|-------------|---|-------|--|
| <b>7</b> A1 | اصحاب حجب   | 44.   | در<br>قران وحدمیث سے استدلال                 |
| TAT         | حجابات ظلمانى   | الم   | تصورت نے کے فوائد                            |
| "           | حبابات نورانی   | 777   | تعورشيخ كے طریقے                             |
|             | عبابت كيغي  | 777   | متن .  |
| 4           |   | 414   | ترجم ، مشرن                                  |
| 11          | اربارِب قلوب  | 470   | در تبالحبوبیت                                |
|             | متن دعز رزمتوقف از فوق  |       | ادلیائے مجوبین<br>بین میں اور اذمے سے افر ہر |
| 546         | فروداندهست  | "     | حضرت امام ربانی محبو کے جعانی ہیں<br>        |
| 445         | ترجمه استسرح  |       | مكتوب١٥                                      |
| "           | جذبهاحارب   | 419   | تتن  |
| ۲۸۳         | عزيز متوقف كي متعلق تين أوال  | "     | ترحمه بهشدح                                  |
| 49.         | جذربه کی دوتسیں   | "     | كيفيات عروج ونزول                            |
|             | مكتوب ١٦  | 74    | منن (ازصعود وعرف بازمانده)                   |
| 497         | متن متن   | "     | ترجمه استسرح                                 |
| "           | ترجمه بهشرح   | FKT   | صعود وعروج                                   |
|             | رساله كثيرالبركات كورشرركاننات  | "     | متفلتب قلب يتفام قلب                         |
| 494         | ملی التُرعلیہ وعلم نے بوسر دیا ·<br>مراب ش  |       | سالک کی روح ونفس کی دونوں                    |
| "           | اس سے کونسا کمتوب شریعی مرادب   | "     | جہتوں کے جامع ہونے کامفہوم                   |
|             | منتن ( پیندان و جوه ولایت و کمالآ   | 44    | مقام جمع ـ مقام فرق<br>په کورن کرين          |
| 494         | أنرا وانمودند   | 101   | روح 'ولفس كي تفطيها يُجث<br>مد               |
| "           | ترجمه الشدع   |       | منس (دست چیپ عبار از مقام                    |
| "           | کمالات ولایت کے تین مفہوم   | 4v-   | قلبست  |
|             | همن (این مقام مقام تمکیل و  | " NA  | ترجمه النبرح                                 |
| 494         | ارشادست   | Y A I | متقام قلب کے دومفہم                          |

جه البيتنا المناسب المحجد زیم، رشیرع 499 614 متقام دعوت " حبرت وريشاني A --۵٢. قطب ارشاد معنوی سردی 0.4 " قطيب افداو 11 ن (عجب أنت كه حالا كجق متنن (نزول در مقام قلب يقين مشرّف ساخة اند .....) 541 بحقيقت متعام فرق .....) ترجمه، نشرح 4.0 11 ترجمه استسرح عماليقين 4.7 SYT مق*ام ارشا* د عين اليقين " 11 مقاميم جمع وفرق حق اليقين 577 اقسام عارف 275 متن ( فرق مقام ولايت . 411 مقام شهادت سنت ....) 070 11 ترجمه، مترح ربنتو فصب محضرت نواجه باتى بالتدمروان 1 577 مراتب ولايت زيدمتوقعت كى روحانى ترقى كى خبردينا 11 11 تعربفيات مراتب 015 پهلامرتبر - ولايت " " را وطربقیت میں مجامرہ کے ساتھ وومهامرتبه يشهادت DYC توجهات شيخ بھي صروري ہيں . تيسام رتبه وستلقيت 11 ATA جار کائل مرتب مكتوب ١٨ منن (واز نلوین سرمکین مربعت کے درمیان کو نک خام مشرّف فرمود ....) 014 DYT ø ترجمه بمنشرع الترتعالى كاوتوداسكي ذات يرزارب 511

| ~     | و فنست  | - Sec. | هو ابنت ا  |
|-------|---|--------|--|
| ۵۵۰ ۱ | موت اختیاری کی اقعام                                | ی تر   |  |
| ۵۵۱   | موت ابیض<br>موت ابیض                                |        | متن ( برسیرے ئلہ قضا و قدر                               |
| "     | موت اسود  | ٥٣٣    | نيز اطلاع داد ند)  |
| ,,    | موت احمر  | ٥٣٣    | ترحمه، شرح   |
| 1,    | موت انصر  | 4      | مئله قضا وقدر كي حقيقت                                   |
| 864   | تتن   | 547    | متن  |
| 4     | ترجمبه، شرح   | 11     | ترجمه ، شرح  |
| 11    | صورت ايمان اورحيقت إيان كافرق                       | ۵۳۷    | تشبيهمه وتنزيهم  |
| ٥٥٣   | استشهاد بالمحدثيث                                   |        |  |
| ۵۵۵   | مغرن .  |        | مكتوب١٩  |
| 11    | <b>ئتن</b><br>ترجمہ، شرع                            | 551    | مكن المنابع  |
| ,     | ولايهنئ عامه  | "      | ترحمبه اشرح  |
| 700   | ولايت خاصه  | "      | حاجت مندول کی مالی ایداد وسفارش                          |
| "     | درجات ولايت   |        | ارباب حوائج كى ماجتيں پورى كرنا                          |
| 884   | خُلَّت  | 284    | موجب اجر و الواب سے                                      |
| "     | حبت   |        |  |
| "     | ختام  | "      | خدمتِ خلق کی خنیاست                                      |
| ۸۵۵   | عبورتتيت  |        | مكتوب ٢٠   |
| 11    | نبوّت اور دِ لاست کا بانهمی ٌعلق                    |        | • •  |
| "     | اتباع کی دوسمبر                                     | 249    | صاجت مندوں کی مالی املاد وسفارش<br>-                     |
| 11    | نتوسن کا ظاہرو باطن<br>·                            |        | مكتوب  |
| 666   | ولاميتِ البياء                                      |        |  |
| ۵٦-   | مناصرب ومراتب اوليا،                                |        | مَّن (إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي                            |
| 110   | احادیث سے استدلال                                   | 089    | قَصُلُ اللَّهُ تِدَالْمُعُدُّرِعَنْهُ مِالْفَنَارِينِ    |
| 577   | بعض اصطلاحات مناصب <u>کا</u> مفهوم<br>ایربیمه واسمه |        | قَبُلَ المُوْتِ الْمُعُبِّرِعَنْهُ بِالْفَنَاءِ          |
| //    | ولی کامعنیٰ ومفهوم<br>تنا سرمن                      | "      | ترجمه، شرح<br>مُونُّوُقَبُلُ أَنْ تَمُوَيُّوُا كَامُهُمِ |
| 275   | تخطب كامفهوم  | 35.    | موبوقبل ال تمويواة سوم                                   |
|       |   |        |  |

| المرست ع | البيت الله الله الله الله الله الله الله الل |
|----------|--|
|----------|--|

|   | 2 cms 2                        | 200 |  |
|---|--------------------------------|-----|--|
| ٥<<   | اقبام جابات                    | 710 | اقبام اقطاب                            |
| "   | حجابات وحوديه وحجابات اعتباريه | "   | فرائض اقطاب                            |
| 5 <a< th=""><th>زوال علمي وزوال عيني</th><th>410</th><th>قطب مرار</th></a<> | زوال علمي وزوال عيني           | 410 | قطب مرار                               |
| "   | وصل عراني                      | "   | غوث                                    |
| "   | مكن                            | דרם | قيترم برين                             |
| 5<9   | ترجمبه اشرح                    | "   | قیوم کے دوغہوم                         |
| "   | ولابت محدريعلى صاجها الصلوات   | 276 | ابدال ا                                |
| "   | تتجلی ذاتی برتی                |     | ا بدال کے باذن ایشرامداد ادرفیف        |
| ۵۸.   | تتجلى ؤاتى دائمى               | AFA | بہنچانے برحدیث پاکے سے استدلال         |
| ۵۸۱   | نبىتِ نقشبندى                  | 679 | متن                                    |
| "   | اكابرنِقشبنديدا درنسبتِ صديقيه | 04- | ترجمه انشرع                            |
|   | مكتوب٢٢                        |     | اساءوصفات اورشيونات                    |
|   | •                              | "   | واعتبادات كى محت                       |
|   | ملمن (سیمان من جمع بین         | 041 | اسماء وصفات                            |
| <b>A</b> A<   | النوروالظلمة                   | "   | اسادحني                                |
| "   | ترجمه بمشدح                    | 0<1 | اقهاتِ اساء                            |
| ۵۸۸   | روح كامعني                     | "   | اسم جامع                               |
| 11  | روح کی تعربیت                  | "   | اعيان نابته واعيان ممكنات              |
| 89.   | متعلقات مسكه روح               | "   | ذا <i>ت وصفات</i>                      |
| 191   | روع کے دوہدن                   | 047 | شيونات                                 |
| 196   | روح کے باتسے میں دو کمتیب فکر  | 0<5 | اعتبارات                               |
| 198   | نفس كامعني اوروج تسميه         |     | ير زخرق جميع المحجب                    |
| "   | اقسامِ نفس                     |     | الوجودية والاعتبارية                   |
| 491   | ابليس أورنفس                   | ٥٧٥ | عِلما وغَينا يَتَّعَقَّق في هذا القام) |
| "   | نفس ادر روح حقیقتِ واحده ہیں   | 4   | ترجمه افترت                            |
| .97   | قرآن وحديث سياستدلال           | 5<7 | ظلال                                   |
| "   | خلاصة كمتوب                    | "   | مجابات                                 |
|   |                                |     |  |
|   |                                | •   |  |

|       | ß ::  |      | جه ابت   |
|-------|---|------|--|
|       | المجاسسة فنرست المجا  |      | •  |
| 477   | فليُطلق   | 599  | اوليات مستهلكين ومرتوعين   |
| "     | مجست ذاتيري انعام وايلام برابر مجستين                                 |      | مكتوب ٢٣   |
| 775   | مجتت ذاتير كالمفهوم   |      | ت مسوب   |
| "     | مقتربن والراري عبادات مي فرق  | 7.5  |  |
|       | جنت کی طلب کرنااور دوزخ<br>رنس جگی مدین کرند                          | "    | مرقمبه انتظرخ<br>شنن قد نمشینزرها ک  |
| 475   | سے نجات انگن مقر تبن کامرتبہ  | 4-6  | شیخ اقص وشیخ کامل کی پیچان<br>اولیائے نقشند پر مجذوب لک ہوتے ہی  |
|       | مكتوب٢٥   | 7-4  | اولیائے مسبندریہ جدوب لک ہوجے ہیں۔<br>او امریشہ  |
|       | ممن رسلم الله تعالى قلبكمو  | "    | اقبارم شیخ<br>مجِدوب سانک (محبوب)  |
| 779   | شرح صدركم وذكى نفسكم  | "    | سالک مجذوب (محت )  |
| "     | ترحمبه بشرح   | 7.9  | منتن   |
| 77.   | حضرت امام ربانی کی چار دعایس  | "    | ترجمه المنسرح  |
|       | ممن رفعليكر بمتابعته و  | "    | كفرية إلقابات عبارات اجتناب تي فقين  |
|       | متابعة خلفائه الراشدين  | 717  | اسلام کی دوقسمیں   |
| 477   | ترجمه استسرع  |      | مكتوب۲۴  |
| 11    |   |      |  |
| 777   | تعظیم صحاب کرام رصنی التی عنهم<br>بینخ سلطان اوران کے بیٹریس کی سفارش | 71<  | مَثْن رهوشان الصوفيّ<br>الڪائن البائن)   |
| ''' / |   | HIA! | ترجمه الشدرع   |
|       | مكتوب٢٦   | "    | صوفی کائن بائن کے دوعفوم   |
|       | منش (الاطال شوق الابرار الى لقائى                                     | 719  | ایک دل میں دومجتیں مگرنہیں کچڑتی   |
| 44    | الى لقائى   | 77.  | مختن المناسبة المناسب |
| "     | ترحمبه بشرح   | "    | ترجمه، مشرب  |
| TA    | شوق کامفهوم   |      | تم روهـ ذه الدولة القصوي   |
| "     | قرآن وحدیث کے استدلال   | 777  | لا يقتقق الابعد الفنا)   |
| 79    | رجالِ استياق<br>- يش  |      | 2 2 27   |
| "     | مقرّبي  | "    | الرغيد المعرك  |
|       |   | 1    |  |

| *   | الم                    | ٣ ١-١ | ه البيت الله   |
|-----|--|-------|--|
| 707 | نببت سلاسل   | 759   | ايرار  |
| "   | سلسله تقشبندي  | 74.   | <i>عدمیث شوق</i>   |
| 705 | سلسلة فادرب سلسلهم وردبي                                   | "1    | مديث طال شوق الابرار كَيْ خْرْجُ                                 |
| "   | مليلچثير   | 751   | مدسیط قدسی کی تعربیت   |
| 700 | بريّه نات  | "     | متن  |
| rar | نسبت لقشبندر مجدديه كى الفرادتيت                           | 777   | تزجمه بمشدح  |
| 70< | سماع ورقص اور وحد، الممر بانی کی نظریہ                     | "     | زوال شوق کے اسباب  |
| 77- | الم اع ورقص حقيقت نماز سے بے خبران                         |       | متر رلايقال ان مراتب   |
| ודד | بدعت في الطّريفيت  |       | الوصول لاسقطح  |
| "   | اپنی طربقت کی حفاظت ایم ترین امرہ                          | 755   | ابدالالبدين)   |
| 775 | اس کی چندوجو بات   |       |  |
|     | مكتوب٢٧  | "     | ترحمه ،مشرح  |
|     |  | "     | سيراجمالي سيرتغصيلي  |
| 444 | متن د نبست ما فرق مهمه نسبت                                | 750   | حضرت ابن عربي على الرحمه كالكفة كريه                             |
| 11  | كاستن)   |       | حضرت امام ربانی قدس سرهٔ کاعلوم<br>ظاہرید وکشفیہ میں منفر دمتقام |
| 11  | ترجمه بشرح   | 767   | كالهربيه وتشفيه في منفرد متفام                                   |
| "   | نبدت نقشبنديه تمام نبتول تبزيه                             |       | متر رفاصحاب الشوق والتواجد                                       |
| AFF | یاداشت کانفتوم<br>یادداشت اور یاد کردیس فرق                | 754   | ليسوا الااصحب البجليّات الصفاتيّة                                |
| 11  | ياد داشت اوريا دكرد غمين فنرق                              | '     |  |
| 779 | ملن ب  | 11    | ترجمه بشرن   |
| "   | ترجمه ، مشرح<br>ا  | 167   | حقیقت وجد<br>مطلق دمد کا تبوت آیات قرآنیست                       |
|     | نسبت نقشبندر قليل الوجرد                                   | "     |  |
| 44. | اور کم یاب ہوجی ہے   | 164   | تواجد کامعنیٰ<br>تراحبد کے متعلق صوفیا، کی دوآراء                |
|     | حضور بق تعالی میسر شنے کے                                  | 75.   |  |
| 11  | دو وقت (باتیه)<br>جهاتِ ستر                                | "     | وجود کامفهوم<br>صوفی صاحب الوجود                                 |
| 441 | بهاب سیر<br>اکابرمشاسخ نقشبندیه کی مدح بیں                 | 701   | وجد، تواجد اور وجود کا باسمی رابط                                |
|     | اقابر صلب تقسبندریدی مدت بین<br>مولانا جامی کی مشهور رباعی | "     | وجد، واجدا دروجود ۴ با بنی ربط اختلاب صوفیاری حکمت               |
| "   | ولاماج مای مهور ربای                                       | 707   | الحلافين منوفياري عمت  |

| *        | ١٢ ﴾ الله الله الله الله الله الله الله ال               | - SE  | البيتنا 🚐  |
|----------|--|-------|--|
| 195      | ماء ستعل طام ہے  | 1     | مكتوب٢٨  |
|          | سيدعالم صلى لته طيرته كم ك فضلات                         |       |  |
| 9<       | مبارکه طاهروی  |       | منن (چەنعىتەست كەآزادان<br>ياد گرفتاران كىنىد)   |
| 194      | المن .   | 440   | یاد شرعه<br>ترحمه رشرع   |
| 199      | ترجمبر شررع  | 747   | ر به بسری<br>آزاد اورگرف <b>تا</b> رکی اصطلاح  |
| "        | سجده کی تعربیت   | 144   | ہروہ اور میں اور |
| "        | سحده کی دواقسام محده عبادت ، تعده تحییت                  | 100   |  |
| <        | احادیث تحریم محدہ تحیّت                                  |       | مكتوب ٢٩   |
|          | مگتوب ۲۰   |       | متن (مقربات اعال يا فرائض  |
|          | ا تد   |       |  |
| ∠-b      | ر جمه شرع  | TAI   | انديا نوافل  |
| #        | شهرد آفاتی وشهورنشی کا فرق<br>شهرد آفاتی وشهورنشی کا فرق | ,,    | ترجمہ ۔سٹےرح   |
| ۲۰۶      | مطلوب آفاق وانفس سے وراء ہے                              | 745   | قُرْب اللي كے دو درجے  |
| "        | ندوب، مان در المعادر                                     | "     | تُربِّ فرانِضُ اور قرُبِ نوافل كافرق   |
| 4.9      | ترجمه استسرح   | 717   | فرض نمازكي ابميت   |
| "        | شهود أنعني وتمبائي صورى كا فرق                           | 745   | منترن  |
| "<br>داا | ئتن أ  | "     | ترحمه ، شرع  |
| "        | ترممبه، شرع  | AAF   | جاعت كى فضيلت  |
| "        | ومجديعدم اور وجرد فناء                                   | AAF   | نتن .  |
|          | متن دلىذا نهايت مراتب ولايت                              | AAF   | ترجمه- شرع   |
| 418      | من رسمه مایت سرب دیب                                     | PAF   | عثار کے وقت میں نداہب اربعہ  |
| "        | ترجمه منشرع  | 491   | مكن  |
| ۵۱۵      | مقام عبديت   | 4     | ترجم   |
| 214      | تمن  | 791   | بشرح ریار  |
| <17      | ترجر ، مشرع  | "     | ماؤستعل کی تعرفیف داخکام   |
| 417      | توحيد فعلى   | m Ø m | ما يستعل كي معلق المام المم الوحليمة ري عنه ا  |
|          |  | 141   | مع ين الوال  |

## پیش لفظ

امام رّبانی ، قیوم زمانی صفرت مجد دالعت نانی قدس سرهٔ النورانی و عظیم مرّبت شخصیت بین جنول نے برمینیر میں اسلام کے احیا ، و فروغ اور سرملبندی کے لیے وہ کارنامے سرانجام نیئے جن کو رمتی دنیا تک یا درکھا جائے گا ،

رب سرب این مجددالت نانی قدس سرؤالنوانی مسند تجدید پرفائز تھے
ہندوشان میں جب اکبر بادشاہ نے دہن اللی کی بنیاد رکھی توحضرت امام رہانی نے
ہندوشان میں جب اکبر بادشاہ نے دہن اللی کو بنیا در کھی توحضرت امام رہانی نے
ہندورت اکبر کے وضع کردہ دین اللی کو بنیا دوں سے اکھیٹر کر رکھ دیا بکدشر بعت و
طریقت پر بڑے نے والی گر دکو بھی صاف کیا اور وہ بدعات ہو دہین میں در آئیر تھی ان کا بھی قلع قمع فرمایا۔ ہی مقصد کے لیے آپ نے اسس وقت کے امراء،
وزراء ، علیا، وصوفیا و کے نام جوم کا تیب بخریفر لیئے وہ اپنی شال آپ ہیں جس
طرح آپ کے تجدیدی کا رناموں کی عظمت کا اعتراف اہل علم وفضل نے کیا ہے
ادر آنیو لئے ہر عہد میں کیا جا تا ہے گا اسی طرح آپ کے تحریر کر دہ محقوبات شریف
جوکہ شریعت وطریقت اور معرفت وحقیقت کے علوم ومعارف کا گنجید ہیں علماء
وصوفیا د نے ہر دور میں ان کی فضیلت کی بھی گواہی دی ہے۔

محتوبات شریفه کی اہمیت کا اندازہ انقرہ (ترکی) کے عبیل الفدر قاضل صرت العلام سیّدعبالیجم برالمصطفے الآرواسی علیہ الرحمہ کے اس قول سے بخو بی لگایا جاسکتاہے کہ

افضل الكتب الاسلاميه بعدكتاب الله تغيالي وبعث

احاديث النبوية مكتوبات للامام الرباني لامتلله في الاقطار الجهاني

ترجه: قرآن پاک اوراما دیث نبوته علی صاحبها الصلوات کے بعب د گُتب اسلامید میں سب سے افضل کتاب محتوبات امام ربانی ہے جس کی سینڈ گیتی رکوئی مثال نہیں .

یهی وجهب کرگردشس حالات اورمرورزماندان کی مقبولیت وافادیت يس ركاوط منيس بن سلح اوران كى جامعةت اورمم كيرى بي فرق نبيس آيا. جهاں بیا جمجی طالبان ا<sub>ل</sub>ەسلوک کے پلیے عقائد ،عبا دات ،معاملات ،اخلاق و كردار، حائق ومعارف كاخز بيذاور روحاني ترقى كاموجب ہيں واہل ان ہم ملّت اسلاميه كى زبون حالى ،مصائب ،امراض اور شكلات كاش في حل معي موجو د ب . ضرورت اس امرى تمى كه صنرت المم رباني مجدّد العث اني قدرسس سرة النواني سنے بلینے مکتوبات شریفی میں جوعلوم و معارف بیان فرطنے ہیں ان کو سلبس، عام فہم اور سادہ الفاظ میں قارئین کٹ مینجا یا جائے بھزئت امام ربانی قات النوانی کے بیان کردہ خائق ومعارف ، وست بتی اصطلاحات کوسمجنا اور کلیل الفاظ مِي بيان كرنا نهايت مِي تَسكل كام تقامَّر هامل فيوضات مجد والعن ثاني . شخط بقيت حضرت علامه الوالبيان بيرمحد سعيدا حمد محبدوي رحمة الشعليه سنه استشكل ترين كام كا بيراائها إاورالترتبارك تعالى كيضل بصنوصلى الته عليه وملم كي نگاه رحمت بهجيت مجدد القت نانى قدمسس سره النوراني كے خاص فيضان كرم سے محتوبات شريفه كيشرح منكف كالسلد مشروع فرمايا بجس كي مضابين ومقالات "البينات مشرح مكتوبات" كيعنوان ست مامنامه دعوت نظيم الاسلام گوجرانواله بي بالاقساط ثنائع بوست بي جنیں اب مزیر والہ جات کے ساتھ مزین کرکے بیشس کیا عاراب ۔ سوالہ جات کی تحقیق وتحزیج ، کتابت ، پروف ریڈنگ اور طباعت کے

جانگل مراحل میں علامہ محدنصرت اللہ مجددی ، پروفیسر محدظیم فاروقی مجددی ، علامہ صاحبزادہ سیتہ احمد فاروق شاہ مجددی ، علامہ محد بشارت علی مجددی ، علامہ فارقی محددی ساتی مجددی ، موسعیا حمد کی ساتی مجددی اور محدندی المعرفی الشرکی دری ، علامہ تنویجسین مجددی اور محدندی ارشد مجددی کی سخسانہ روز محنت فابل سائش اور مذبلائی تحریب بسی مجددی اور مجددی ارشد محددی اور مجانب پروفیس محداق الحرائی در المحددی در محاصر محاصر محاصر محداق اور بالغ نظر موارخ محتر م جاب پروفیس محداق الحدد کی در محدوثیات وقت نال کرنها بیت تاریخی بخصی محدوثیا محدوثیا محدوثیا محدوثیا المحددی اور اعلی اخلاق کے مالک ہیں ۔

الله تعالی ان سب صنرات کواجر عظیم اور تواب عمیم عطا فرطئے اور بیش زبیش دین اسلام کی خدمت کی تو نبیق عطا فرطئے ۔ خدا کوے کہ یہ کتاب متعطاب ارباب قلوب اور اصحاب سلوک کے بیاے کامیا ہی کی تقلید ، شرف باریا ہی کی نوید جانفزاور طالبان راہ حقیقت اور سالکان جادہ طرابقت کے بیاے بہترین تحفہ ثابت ہو۔

الترتعالی کے صور کمتی ہول کہ وہ اس کتاب کو شرف قبولیت بختے اور ساج العار فین شیخ طریقت صنرت علامہ محد سعید احمد محبد دی رحمتہ التر علیہ کے درجاتِ عالیہ کو مزید مبند فرطئے اور ہمیں اس عظیم کمی ورومانی مشن کی تحمیل و تنتیم کی توفیق انتی رفیق فرمائے۔

اللهم آمین بجاه النبی الکریم علیه الصلوة والتسلیم قارئین کرام سے التاس ہے کہ دوران مطالعہ اگرک بت یا پروف ٹینگ کی کوئی غلطی پائیں تو دام بحفولیں حگہ دیں اورا دارہ کومطلع فرائیں تاکہ آندہ الیوش میں اس کی اصلاح کر دی جائے۔

حَالِ اللهِ مُعَالِكُ الْمُعَالِكِ الْمُعَالِكِ الْمُعَالِكِ اللهُ الله



# خراج عفیت ام ربانی مجرد العث الی میشود

بگود کستان زاحمت نقشین که داری دل از د اغ مهرشس سیند كرشنة بيك كام زير وطلبق ز قُدُ وسسيان برده گوئے سبق بهن<del>دوست</del> تان گرجه دار دخت م ببالائے ہفتم فلکس ماندہ گام مربع نسنیں و میدسس سرا! برامش جبین سوده مهنت تم سماً نگین گشته در حلفت ٔ اولیک چو در أنبسيار خاتم الأنبسيار

مضرت خواجه عبدالاحمث وحدت بن صرت خواجه عرب مرم ندى قدس رهما البيت المجاد البيت المجاد المج

اے خاک کے دون عبری و بنری اسکال جہان میت تو ہوش شداند عافليثيب ممرمخورونت إندا ساتى فأذر توخش كبيكم النمر برني خاكفله توداركم الماض فيفحق و افية رجرخ فت ابد نيهان ردم وثنام يبسرمند مثتراند نے نے زازرت سے سے شہالہ این فاک احری سنات افکر نے مکے صفرار از نظا کے شاند اللَّا ومرسَّلِي زَوَّار توسِي التعال يُعِدرُ بُخ اعدات بستبرايد بارب مخطاص زيفاك رمرا برحال كسال كازيفاك شاند يارج واز باست أرق نهفته شرر بخوا فاز بهلو برث بل شرر بخوا في بهري دو بل منهاعنی منه مدح نغمهٔ توسف کرد كرِّدِبان عرش من كونه گفته اند

0

مَعْرِشَاهُ عَنْدُ الْغِنْ فَحُكِيْتُ مَمَا حِمَلُونِ السِّنَالِيَا

ماضرمُوا مَیں شیخ مجدّد کی گحد پر وہ خاک کہہے زیرفِلک مطلع الوار

اس فاک نے ذرق سے ہیں شرمندہ ستار اس فاک میں اوپشیدہ ہے ہصاحب سرار

گردن بھی جب کی جہا نگیر کے آگے جس کفش گرم سے ہے گرمی احرار

وہ ہند میں سرمائی ملّت کا نگھباں اللّٰہ نے بُروقت کیاجس کو حب رُارا

> علآمه محراقنب ل مرحوم (بال جبيرل)

## مخضر والخحيات

## العالم المعالم المعالم

علم واوب بخلوص وسادگی ، متانت و تجدیگی ، ایثار و وقار بشفقت و مجبت ، توگوئی و ب باکی ، ذابنت و فطانت ، حس اخلاق اور حس گفتار و کردا و بین غلیم صفات کو اگرایک لامی میں برقوریا جائے تو کشیخ طراقیت حضرت علامہ الوالیان محرسعیدا حمد محبد دی فیمن سرفر العزیز کی ذات گرامی تشکیل پاتی ہے جومشائخ کے بیار سالیا اوب و نیا ز ، علما و کے لیے ایثار و مروت اور عوام الناس کے بیاخ شفقت و مجست کاسائیاں متھے۔ بیکی ایثار و مروت اور عوام الناس کے بیاخ شفقت و مجست کاسائیاں متھے۔ بیکی و ایشار مراول کیلئے بیکی دفت سفر میر کا روال کیلئے بیکی ہے۔ رخت سفر میر کا روال کیلئے

کے گھر ۱۹۲۳ء بروز جمقہ المبارک برقت فجر پیا ہونے والا بچراکیب دن روسسن آفاب بن کرچکے گا اور صفرت مجدد العن تانی رحمۃ اللہ علیہ کے افکار ونظر پات کی ترجمانی کرتے ہوئے و وعظیم کا زنامہ سرانجام نے گا ہے گذستہ چارصد یوں میں کوئی نذکر سکا۔

© آپ کا خاندان ۱۹ مرم ۱۹ میں بجرت کرکے پاکستان آگیا توضلع جہا تحصیل سرائے عالمگیر کے گاؤں اور نگ آباد میں قیام کیا۔

آب کے والدگرامی صنرت مولانالال دین رحمته التہ علیہ ایک عالم باعمل اور صوفی منش بزرگ تھے والدہ مرحومہ درو دل کھنے والی نیک سیرت اور پاکباز خاتون تعییں۔ والدین کی ترمیت نے اداب فرزندی کھائے ، خود سناسی اور خداشاسی اور خداشاسی اور خداشا کی ورثے میں ملی .

~ يەحق آگاہى، يەخۇمىشس گوئى، يە ذوق معرفت

بیطسریق دوسستی ،خود داری وتمکنت

اس کے شاہد ہیں کہ ان کے والدین براتھے

باغداته ابل دِل تعصاحب بررته

آپ کاسلانسب صحابی رسول ، حضرت دحید کلبی رشی الشرعذ سے جا ما آپ ہونہا یہ حیث میں الشرعذ سے جا ما آپ ہونہا یہ حیث وجیل میں مجیل میں مجیل میں مجیل ہوئے ہیں جا سے محمد میں ماضر ہوئے تو اکثر حضرت دحید کلی میں مورت میں شکل ہوئے تھے نہی وجہ ہے کہ ان کے حدوج ال کی حکمت آپ میں نمایاں نظراتی تھی ۔

سے ان کی ذرتیت کا ہر ذرہ ند کیوں ہوافاتب سرزمین حسن سے علی ہے یہ کانِ جمال

تعلیمی زندگی ؛ گھر میر ندیمی ماحل کی وجسے سکول کی تعلیم کے بعد مختلف دینی مارس



مين من زادرجيم على التي كرام ميعلوم دمينيكا اكتساب كيا.

جامعة نظامية لا بورائية نظيم المدارس كے تحت الشبادة العالمية (ايم كے على واسلاميات) كا امتحان ياس كيا.

شیخ القرآن حضرت علامه محرعبدالعفور منزاروی رحمنه الشرعلیه سے دورہ قرآن رہا۔

امام المستنت صرّت علامرست المحرسيد كاظي رحمة السّرعليه (طآن) سي مندهديث ماصل كي .

خطابت اعشق رسول میں ڈوبی ہوئی آواز ، مجت محرالہ وانداز ، تجنیس الفاظ ، سخن وِل نواز ، متراوفات کی وِل نشین ، استعارات آفری ہطالب کاسیلاب ، اشارات و کمایات و محاورات کا وافراستعال آپ کی خطابت کے دندئین عناصراور آپ کے خطابت کے دندئین عناصراور آپ کے عیق مطالعہ کا بین نبوت ہیں .

خطیب الاسلام صفرت صاحبزاده پیرستیدفین الحن شاه رحمة السّرطید دا آونهار شرایین) کی ۲۵ ساله صحبت و رفاقت اور تربیّت و شفقت نے آپ کے دبئی، روانی، فکری اوراد بی رحجانات میں مزید نکھار پیلا کی جس سے میدان خطابت میں آپ کو عالمگیر شہرت اور بذیل کی حاصل ہوئی۔

آتب کی خطابت کی جولانی، شعله بیانی اورسلاست و روانی کو دیگر کرشنخ الاسلام معنوت خواجه محرقم الدین سیالوی رحمة الترطیهات الوالبیان کالقب عطا فرمایا جوآب کے نام کا جزولازم بن کررہ گیا ۔

تبلیغی و خربی سرگرمیال اجمعیت علمائے پاکتان اجماعت المسدنت اور دیگر کئی ندمبی وسیاست ظیموں میں نمایا رعبدوں بینلیغی و روحانی خدمات سارنجام میتے ہے۔ ه عرصہ بین سال بک آزاد کشمیر کی سب سے ٹوٹر دینی اور سیاست نظیم جمعیت علمائے جمول وکشمیر کی صدارت کے فرائض مجمی انجام میں آب نے سیاست کی بُرِ ناروادی بی مجمی قدم رکھا لیکن حلد ہی علی سیاست سے کنارہ کش ہوگئے۔

عالمي دارة تنظيم الأسسلام كاقيام

فروری ۱۹۸۰ء میں عالمی اوار ہ طیم الاسلام کی بنیا و رکھی حسکے تحت نوجوانوں کی علمی ونظریاتی تربیت اور وحانی ذوق کی آبیاری کے لیے علی حدوجہ دشر مرع کر دی.
عالمی اوار ہ نظیم الاسلام کے قیام کا بنیا دی مقصد تعلیمات کتاب وسنت کی ترویجوائی اور جبادی اور غلبا اسلام کے لیے ملمانوں کو متحد وظم کرنا ، ان کی علمی وعملی ، فکری و روحانی اور جبادی تربیت کرنا گاکہ اسلام کی نشاق نمانیہ کے لیے نئے دور کا آغاز ہوسکے .

اُ اُقطہ کہ اب بزم حبال کا اور ہی اندازہے مشرق ومغرب میں تیرے دور کا آغازہے

ادارہ کی تنظیم صالح ، با کردار اہل علم و دانش اورغیورافراد ئیر تل ہے جو پاکسان کے علاوہ آسٹر بیا، ملائیٹیا ، برطانیہ اور دیگیر ممالک میں اسلامی انقلاب کے لیے ٹوٹر کردار اداکر رہی ہے ۔ نیز بفضلہ تعالیٰ ادارہ کے تحت بیسیوں مساجد و مدارس کا نظام کجرف خوبی میل رہا ہے ۔

اراضی برشمل جامعہ ریاض المدینہ کی فیار دیگل چائمہ گوجرانوالہ (بطرف لاہور) پانچ ایکٹر اراضی برشمل جامعہ ریاض المدینہ کی فیا در کھی مگر بعض جاہ پیند عناصر کی وجہسے کافی عرصہ تعلیمی نظام معطل رہا سکین اللہ تعالی کے فضل و کرم سے بھیر آہیے ہی کی زیر سربی تعلیم نظام کا آغاز ہوچکا ہے خدا کر سے کہ ستقبل میں ریا ہوارہ ایک عظیم الشائ سنی لو نیورٹی کا رویب دھار سے (العمر آیین)

گرجرانوالہ ڈویژن میں اہل سنت کی معروف دین درس گاہ دارالعلوم نقتبندیہ
 امینیہ ماٹرل ٹا ڈن کے بانی بھی آپ ہی ہیں۔

آپ نے کئی سرتبہ بیرونی ممالک (برطانیہ، آسٹریلیا، طابیثیا، عراق، ہنڈشان وغیر) میں بیٹی فی دروحانی دورہے فرطئے۔

المحمر تبه حج بیت الله اور تعدد عمرون کی سعادت حاصل فرائی.

رومانی نبدت

آب نے درد وسوز اور تصوف کی طرف میلان ور تدبی بایا . حصرت داتا گینج بخش رحمۃ الشرطیہ کے مزارا قدس پر زبدۃ الفقراء صفرت نواجوسونی محمطی نقشندی مجددی قدمس سرمرہ (خلیفہ خاص آلومهار شراعیت سیا اسکوٹ) سے ملاقات ہوئی . بو مادر زادولی اور ملبند با بیصاحب حال صوفی تھے ، ان کی نگاہ ولایت نے بہلی ہی نظر بیس جوم تابل اور ملسلہ عالیہ نقشبندیہ مجدد بدیں بیعیت فرمالیا . پس جوم تابل اور ملسلہ عالیہ نقشبندیہ مجدد بدیں بیعیت فرمالیا . شیخ کامل کی روحانی توجہات نے سونے پرسالہ کا کام کیا جنا بخر مقور سے ہی عصر بیس آت کو مان السلوک کے کروا کے مذصر ف خرفنلافت سے نواز ابلکہ "شہاز طراقیت کا لقب مجی عطافہ مایا .

آپ کے شیخ کامل صنرت خواج صوئی محد علی نقتبندی قدس سرۂ فرمایا کرتے تھے کہ اگر دوز قیامت خدانے پوچیا اے محد علی إ دنیا سے کیا لائے ہوتو میں محد معیرا حمد کا ماتھ کے داکر بارگاہ ایزدی میں پیٹیس کر دوں گا.

حاصل عمر نثارِرہ بائے کردم شادم از زندگی خویش کر <u>کانے کر</u>دم

آپ کی اعلی روحانی وعلی استعداد کو نیکھتے ہوئے اندرون و بیرون مک کے جبیل الفدرمشائخ عظام نے دیگر سلاسل طربیت مثلاً فا دریہ ، جیشتیہ ، مہرور دیہ ، شاذلیہ وغیر ہاکے فیوض و برکات اور خرقہ المسکے خلافت واجازت سے نوازا یوں آپ کی ذات حبلہ سلاسل کے فیوض و برکات کی جامع و نظم قرار پائی ۔ ان ہیں سے جندمشائخ کرام کے اسمائے گرامی درج ذیل ہیں۔

خطیب الاسسلام حضرت صاحبزاده بیریستیدفیض انحن شاه رحمة الشطیم
 آمدار آلومهارشرامین منلع سیا مکوث

يشنخ المثائخ حضرت مسيد مح فضل شاه مجددي رحمة الترعليه سجاد ونسشين

بيوره تسرلين ضلع انك

0

0

0

 پیرطرلقت حضرت خواجه محد غلام فرید شاه محد دی رحمة الته علیه سجا دفشین نتهیال شرلین ضلع اثک

 شهراً ده غوث الورئ صنرت صاجبزاده بیرستید محدانورشاه گیلانی بغدادی نملتم سجاده نشین سدره شراهین ضلع دریره اساعیل خال (صوبرسرمد)

غزانی زمان حضرت علامیسیدا حمد سعیدشاه کاظمی رفته الته علیه (ملتان)

شِنْخ القرآن صفرت علامه محر عبد الغفور مزاروی رحمة النه علیه (وزیراً باد)

يُسِخ الشيوخ حضرت العلام شيخ الوالنورشازلي مظلم (مِشق)

بيرطرليقت حضرت صاجنزاده پيريسية عاشق ځيين شاه مجددي مدظلّه مجاده

اتتانه عاليه سرېد شريف (انديا) مالمقيم شخو پوره پاکسان-

علوم تفتوف

لطریقت کے نہایت باریک، اطیعت اور دستیق مسائل ومعارف برشرح وبسط کے ساتھ کلام کرنے اور عامتہ الناسس کے قلوب وا ذالج ن میں میرے اسلامی تصوّف کو اجاگر کرنے کی صلاحیت خصوصی طور پر قدرت نے آپ کو و دیعیت فرمائی تقی یہی وجہ ہے کہ آپ حضرت وا تا گنج کجش علی ہجویری رحمتہ السّرعلیہ کی تشرہ آفٹ ق ک ب متعطاب کشف المجوب کا مسلسل ۸سال کے بہفتہ واردیس ارشاد فرطتے ہے۔

حضرت امام ربانی مجدد العت نانی قدس سرهٔ کے ضوعی علوم ومعارف برشتل ان
 کی تصنیف لطیف مبدا ومعاد "احباب کوستفاً پڑھاتے ہے .

نیز کمتوبات امام ربانی کا تقریباً ۲۲ برس که درسس ارشاد فرمایا علی تصوف کے بھر ساتھ آپ کو علی تصوف کے بھر ساتھ آپ کو علی تصوف میں میں انتہائی مشاق اور قوی التوجہ تھے یہی وجہ بھے کئی احباب کو بہلی ہی توجہ سے عالم الم وعالم خلق کے لطائف طے کروا ہیئے۔

737000

البينات شرح مكتوبات

1919ء میں جب عالمی ادارہ نظیم الاسلام کے زبراہتام ماہن مہ وعوت نظیم الاسلام کے زبراہتام ماہن مہ وعوت نظیم الاسلام کے اجرادہ والوں ہوا تو اللہ میں مجدولیہ کے فروغ واحیاء کے لیے حضرت امام ربانی مجدوالف ثانی سنین خاحمد فاروقی سربزندی رحمۃ اللہ علیہ کے مکتو بات نشریفہ "کی پہلی اُردوشسرے" البینات شرح مکتو بات "کے تھنے کا آغاز فرمایا ۔

کمتوبات شریفه کی شرح یقیناً ایک مشکل ترین کام تعاکیر کمکتوبات امام رانی علیرالری کی محتورا در اصطلاحات تصرف علیرالری کر کسیمنے کے لیے صرف عربی اور فارسی زبان برعبورا وراصطلاحات تصرف کامان لینا ہی کا فی نہیں بلکہ حضرت مجدد باک علیہ الرحمہ کے لامحہ ورکمشوفات ، حقائق ورمعارف کو میمنے کے لیے اعلی روحانی استعداد ، بلندئ فیح ونظر ، قال کے بجائے مال اورعام کسی کے ساتھ ساتھ علم وہبی کی بھی ضرورت ہے ۔ اس کا تعلق واردات قلبیہ اور شاہوات و این مشاہوات میں اور ذاتی مشاہوات میں اور ذاتی مشاہوات کی میں برونا اور بھی مشکل کام ہے بجمدہ تعالیا الشر کا اوراک کرکے ان کو الفاظ کی حبین لڑی میں برونا اور بھی مشکل کام ہے بجمدہ تعالیا الشر رب العزت نے یہ ساری قابلیتیں وصلاحیتیں آپ کی ذات بابر کا مت میں و دیوت فرمائی تضییں ۔

آب کے اس کا م کو سرا جا اور دارتھیں دی تو کچھ انگشت بدنداں رہ گئے جب
دال دیا۔ کچھ نے اس کا م کو سرا جا اور دارتھیں دی تو کچھ انگشت بدنداں رہ گئے جب
کہ کچھ نے توبیہ مجھا کہ یہ کام نیا دہ دیر تک پہلنے دالا نہیں لیکن جس کام کی بنیاد خلوص و
لئیست پر ہمو، جہاں تائید ایز دی اور بزرگوں کی توجہات شامل حال ہموں ، مزید یہ کہ
نو دھنور مجد دیا کے علیم الرحمہ کی روحانیت ممدومعا ون ہموتو ناکائی کا تصور بھی نہیں کیا جا
سکت اس سلسلہ میں آپ نو د فرواتے ہیں کہ بار جا ایسا ہوا کہ البینات کے سلسلہ میں کی مشکل مسلسلہ میں آب نو د فروات نہ بن پاتی تو حضور مجد دیا کی علیم الرحمہ کی بارگاہ
مشکل مسلسلہ کے حل کی جب کوئی صورت نہ بن پاتی تو حضور مجد دیا کی علیم الرحمہ کی بارگاہ
مشکل مسلسلہ کے حل کی جب کوئی صورت نہ بن پاتی تو حضور مجد دیا کی علیم الرحمہ کی بارگاہ

المنت المنت

كرابيانك كسى ندكسى كتاب مين فرَّرا وبي مندسامية آماة والحدد لله على ذالك وصال بُرِطلل

دواڑھائی برس بسترعلالت بریسے کے بعد آخر کارعلم و معرفت اور فقر و ولایت کایداف آب ۱۰ راور ۱۱ راگست ۲۰۰۲ء کی درمیانی شب بمطابق بیم جماوی الثانی ۲۳ ۱۳ مرح کولبوں برمسکرا ہٹ سجائے کلم طبیتہ بڑستے ہوئے دار فناسے دار بقا کی طرف عازم غر ہوا۔ انا لللہ وا نا الیہ یہ راجعون

دُعاہے کہ الله رب العزت آپ کی اس عی جبایہ کو قبول فرما کر مبندی رجات عطا فرمائے۔

ایس ازمن واز حمله جهال آمین باد

ما بزا سيكل حكف أروق شار مجدى امير عالى اداره تنظيم الاسلام وسنت پرونمیرمجداقبال مجسد دی مدر تعبیاریخ بهسلامیکالج بول لائبزلاہوً

مقاهم

حضرت امام رباني مجدّد الف ثاني شيخ احمد سرم بندي قُدِسُ سَرُهُ ١١٠٩ - ٢٠١٥ه/ ١٥ ١٠ ٢ ١ ١٥) كازمانة حيات كئي اعتبار سي بيجان أنكيز تعا -اس مين دبني بيني اور معاشرتی انتشار عبلانے والی ایسی کئی تحریمیں انھیں جن کے ہندوسانی معاشرت برگہرے الرّات مرّتب ہوئے۔ اِن اُدوار میں بہت سی ایس تحرکوں نے تصِغیر اکپتان وہند کارُخ كيابن كابنيادى تقطم نظر عقل مصن تعاران تحركون ندأمبي اعتقادات بين انتشارهيالياني کی نوری نودی و کوشششیں کیں۔ بہتمتی سے ان آیام میں ہندوستان میں اکبر باوشاہ روم ۱۵ م ١٠١٥) اوراس كے حوار بوں كے زيرا أراد خياتي اور الحاد كے ليے زمين بمواركي جارہي تقى ـ اكبربا دننا ة ابتداريس ديندار اور پابند صوم وصلوة تقا اورعلمار كي بهت تعظيم و توقير كرنا تقا اس نے ان کوراے بڑے نصب دے کر با اختیار بنادیا توعلمار نقروقناعت سے نکل کر أمرار ك زُمره بين أكماع ما نهول في اس كاناجائز فالده الحايا عباوت فانه كي المناجم مباحث نے مجمع کم اکبرکو دین اسلام سے ہی خرف کردیا یے نکرعبدہ دارعلمار اہل سنت سے تعكق ركھتے تھے اس بيلے قدرتي طور پر دوسرے فرقون صوصات بيع علمار نے بھي استيم كا اقتدار عاصل کرنے کی کوسشسٹ کی اور یہ محرکها کہ جب تک ان کو اقتدار سے ہٹا نہ دیں گے جین سے نہیں گئے۔

اکبر با دشاہ ان علمارکے کرداراور حُب جاہ کی وجہ سے ان سے آننا متنقر ہوا کہ ان سے بیش کے کرداراور حُب جاہ کی وجہ سے ان حسال واقعات بیش کے بیٹ کار احاصل کرنے کے بیٹ کار مندر ہے لگا۔ ان دِنوں جو افسوسناک واقعات بیش کے ان بین سے اکبرے عہد کے ایک نہایت ہی زیرک خانوا در بعنی کم کار سے خانوا دے کی تذلیل و تحقیر محمی ہوا ہوں کہ شیخ مبارک اینے بیٹوں الجراف نا اور جنی کو اس کے خانوا دے کی تذلیل و تحقیر محمی ہوا ہوں کہ شیخ مبارک اینے بیٹوں الجراف نا اور جنی کو

کے کرصد زُ الصّد وَشِیخ عبدالنّبی اور نخدُوم الملک فلاحبدالله الله الله الله الله الله الله و مدمِ عن الله الله و معاش کیا اور ننگ و تی کی شکایت کرتے ہوئے ان سے صرف ایک سوبگھے زمین لطور مدوِمعاش مانگی تو انہوں نے یہ کہ کرکہ تم شیعہ و اپنے درسے نکال دیا۔ اس وقت فیفنی کی دگر جمیّت بھول اُٹھی اور اس نے کہا کہ :

بنا گرمی این اسل سے ہوں اور اپنے اعتقاد میں بیا ہوں تو تم سے الیا انتقاد لوں گاجس کی گونج سادے ہندوستان بیئ سنی جائے گی ؛ ا

واقعی وہ گونج سارسے ہندوستان میں نئی کئی۔ اکبر نے عمار کا اقتدار ختم کرنے کے لیے منصوبہ تیار کرلیا۔ اس سارے ڈرامے کی رُوح رواں قلامبارک اگری اور اس کے بیہ دونوں نہایت زیرک اور موقع شناس بیلے دائر افضن اور نفینی شخصے۔ انہوں نے یہ م م کو ایک محضر نامر تیار کیا عبل کی رُوسے اکبر با دشاہ کو اعدل ، عقل اور اعلم قرار دیتے ہوئے متام علمارسے اس پر دستھ طرح واکر اکبر با دشاہ کو مجہد تبلیم کروالیا۔

اب ان بائم دست وگریبان علمار کا اقتدارختم ہوگیا کاش پیملمار فدا ترس ہوتے اپنے عمل کر دار اور تفوی سے جب کہ انہیں با دشاہ کی ٹائید و حمایت بھی حاصل تھی بہدون کو سلمانوں کے سیان اسلامی ملکت بنا دیتے لیکن ان کی حتب جاہ اور دولت کی ہوس نے ہندوستان کے سلمانوں کو نہایت نازک مالات سے دوجیار کر دیا، اب ہونیر اسلامی نظر بایت رکھنے والی تحریک کو یہاں پنینے کے خوب مواقع ملے ۔ ان باطل فرقوں میں سے جو ہندوستان آئے فرقہ نقطور کے عقائد سب سے زیادہ خطر ناک تھے۔ ان سے میز دیک نماز، ج اور قربانی بیقی کے مقاد دی تھی طہارت اوٹرسل کے مسائل کی بھی تفتی کے مقاد دیتھی طہارت اوٹرسل کے مسائل کی بھی تفتی کے رائے اسلام منسوخ ہوجیکا ہے اس لیے استے اسے اسلام منسوخ ہوجیکا ہے اس لیے استے استے اس کے اس کیا کا مقدید کی کو سے اس کو اس کے اس کی کی کو سیان کی اس کو اس کی کو سیان کی تھی کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کی کو سیان کو تھوں کو اس کی کو سیان کی کو سیان کو سیان کی کو سیان کو سیان کو کر سیان کی کو سیان کی کو سیان کی کو سیان کی کو سیان کو کر کو سیان کے دور کے کو سیان کی کو سیان کو سیان کر سیان کی کو سیان کی کو سیان کو سیان کو سیان کی کو سیان کی کو سیان کو سیان کی کو سیان کو سیان کی کو سیان کی کو سیان کو سیان

لے فریکھکری: ذخیرہ انخانین امر ۹۸ - ۹۹ کے عبدالقا در بدالونی: متحنب التواریخ ۲/۱۲- ۲۷۲ نظام الدّین احمد: طبقات اکبری ۲۴۳ - ۲۴۴

دین کی ضرورت ہے کی

گویا ان کا کہنا تھا کہ اسلام کی عمرصون ہزارسال تھی اب اگلے ہزارسال سے یہ ہوارسال سے یہ ہوارسال سے مقائد قبول کے جائیں نقطوی تحریک کے بانی در اصل ایرانی علماتھے جب شاہ عباس صفوی کو ان کے عقائد کا علم ہوا تو اس نے اس فرقد کے ماننے و الے ہزار وں افراد کو موت کے گھاٹ اُٹار دیا تجھے افراد جان بچا کر ہندوستان آنے ہیں کا میاب ہو سے گئے۔ ان میں نترلوب الی طرا با کال عالم تھا ان دنوں ہندوستان کے حالات تو بہلے ہی ہو سے کے اور اس کے ماشینسیوں نے اسے ہمقوں ایسی تحریموں سے ماشینسیوں نے اسے ہمقوں اپنے گیا اکبر با دشاہ اسے اپنے مُرشدوں کی طرح مانتا تھا خود الواضل کا اس فرقہ کے ساتھ گہرا معلق وہم آہنگی تھی۔

تر لوب آملی نے اپنے فرقے کی آبوں سے نبوت بیش کرکے اکبر کونیا دین بنانے کی ترفیب دی نبانے کی ترفیب دی اور ترفیب دی نقطوی فرقے دو اور ان کے بند وستان آکر الف ثانی کے لیے نئے دین اور نئے ایکن کے لیے راہ ہموار کی حب انہیں اکبری دور کے علمائے سور کی آئید وجایت ماصل ہوگئی تو انہیں اس کے پورے مواقع ملے اور ان کے عقائد اکبر کے دین الہی میں جلوہ گر ہوگئے ہے۔

یسب کچھ علمائے مُورکے کردار کا تطہرتھا جس کے ہندوستان کے سلمانوں بناقابل ملانی سفی اثرات مرتب ہوئے بصنرت امام ربّانی مجدو العث انی اس حقیقت کا اظہار کتے ہوئے فرماتے ہیں کہ زمانہ ماضی (عہد اکبر) ہیں جربلا وافت بھی اسلام کے سربر اولی وہ ہی علمار سُوری شومی کی ہدولت تھی تکھتے ہیں :

صغر الله المنظمة المنطقة الله المنطقة المن

له وسبستان نامب ۳۰۰ که نقطوی فرقد اوراس کے عقائد کی تفصیل کے لیے الم حظر ہو : ا. نذر احمد : اکبری دور کا فارس ادب مقالمتموله (رسالتجمین شعبراً دو منده کونورشی منده شاره ۱۲-۱۲ (۱۹۹۸- ۱۹۹۹)

" درقرن اصنی هر بلای که برسرآمداز شومتی این جماعت بود با دشا با را ایشاں آزرا ه می برند ہفتا د و دو ملت کدرا و صنلالت انمتیار کر دہ اند ىقتەيان اينها علمارسُو بودند . . . . . واكثر جهلائ سوفى نماى اين زمانه ع<sub>كر</sub>علما بِصُو دار مُد فساد اينها نيز فسا دمتعدي است . . . . له ان حالات بير حضرت خواجه باقي بالتُد قُدُس سرّهُ (ف ١٠١٧هـ) نه اس ماحوا كالغور جائزه لیا اور راسخ العقیده اُمرابر در بار ،علمار اور صوفیه کی ایک جماعت تیار کی جن میرآپ کے دوخلفا چضرت امام ربائن مجدد العت نائی مشیخ عبدالحق محدث دہوی اور بؤ آب مرتضى خان فريد يجارى خاص طور يرقابل ذكربين ان حصرات نے علمائے سؤ كيے نفي كر دار کے اٹرات زائل کرنے کے بیے اکبر کے بعد نور الّدین جہا گیر کی جانشینی پر اس شرط کے سانقه حماست کی که وه دین اسلام کی ترویج مین ان کامامی وموئد بهوگا . جب خُرو کی بجائے جہانگیر کا اکبر کے جانشین کی حثیت سے انتخاب ہوا تو حصر مجدو العنة نانى نے نواب ترضیٰ خان فرید بخاری کوخط تھا اور مُبارک باو ویتے ہوئے اس انتخاب کواسلام کے بیلے تقویت کا باعث قرار دیا ۔ حضرت مجذوالفت الى نے اكابر أمرار اور مقربین با دشاہ اجہا بگیر، كو اكبركے عهد میں ہندوستان کے سلمالوں پر ہونے والی زیا د تیوں کی تما تعضیلات سے آگاہ کیا اور ان ایام میں اسلام کی زلوں عالی کے سامیے حقائق ان اُمرار کے سامنے رکھے اور ان حضارت کے نام اینے مکا تیاب میں زمانہ ماصنی میں اسلام کے شعف کے اسباب گنوائے اور آئندہ ان کا ازالہ کرنے کے بیے کیا کیا اقدام کرنے جا ہیں ؟ سب تجاویز ان کے گوش گزار کیں آپ

استضيقت سيجوبي أكاه تحصكرزمانه ماضي البهيد اكبرابي باوشاه ك اسلام سي ربكشة

ہونے کاسب سے اہم سبب علمار کی ہوسِ اقتدار اور خبّ جاہ تھا۔

اس یلےجب آپ کو میعلوم ہوا کہ جہا نگیر بھی پرچا ہتا ہے کہ
" چار دین دارعلمار سفر وصفریس اس کے ساتھ رہیں اور اسے احکام شرعی
سے آگاہ کرتے رہیں تاکہ کوئی اُمر خلاف بشرع واقع نہ ہو " کہ
تر آپ نے نور آ جہا نگیر کے سب سے تقدر منصب دار اواب مرتضای خان فرید
بخاری کو تفصیلی خط سکھتے ہوئے اس اُمر سے آگاہ فرمایا کہ جا یا سائے صرف ایک
" عالم آخرت" میں مرآجائے تو پیر سب سے بہتر ہوگا ۔ آپ زمانہ سابق میں مملمار سُوکے
کردار کے نتا گج بر بحیث کرتے ہوئے فرماتے ہیں :

" ویندار علمار بلاشہ بہت کم ہیں جن کے دلوں سے مرتبرا وربرداری کی محبت کی چکی ہوا درجن کا مطلب و متعااس کے سوانچھ نہ ہو کہ شریعیت کی ترویج اور ملت اسلام کی تقویت و تائید ہوطلب جاہ کی صورت ہیں ان علمار ہیں سے ہرائی الگ الگ بہلوفتیار کرے گا اور اختلائی با تیں درمیان ہیں لائیگا اور اس روش کو با دشاہ کی نزدیکی کا اظہار کرے گا اور اختلائی با تیں درمیان ہیں لائیگا اور اس روش کو با دشاہ کی نزدیکی کا ڈرلعہ بنائے گا۔ اس صورت میں تبلیغ دین کی مہم ابتری اور خرابی کا شکار ہوگی گزشتہ زمانے میں مجمع میں اس سے بناہ اور علمار موری کی ترویج کیا موگی التی دین کی ترویج کیا ہوگی التی دین کی ترویج کیا ہوگی التی دین کی ترویج کیا ہوگی التی دین کی ترویج کیا موگی التی دین کی ترویج کیا ہوگی التی دین کی تربیب ہوگی۔ التی میان کا می در مین آسکتی ہے۔ اس طرح دین کی ترویج کیا فرائی نیاہ ۔ اس غرض کے لیے اگر ایک عالم کو متحب کرلیں تو بہتر ہوگا ۔ اگر علمائے خرت میں سے کوئی میں سے کوئی میں آب اور کی ترین کی تو ریکتی بڑی سے دیاہ اور علمار شہر ہوگا ۔ اگر علمائے خرت میں سے کوئی میں سے کوئی میں آب ایک خوری کی میں سے کوئی سے کوئی سے کوئی میں سے کوئی میں سے کوئی میں سے کوئی میں سے کی سے کی سے کوئی سے کوئی میں سے ک

یہ آپ کی نہایت مرترا نہ بھی انداور مجدد داند بصیرت تھی کہ آپ نے فی الفور زمانہ ماصنی میں عُلما بِسُور کے نہا سے بیدا شدہ الزات سے بیجنے کے لیے ایسی تحریز مبتی کی حس سے ان اقدام کا بروقت تدارک ہوگا ۔

شاہ جہاں کے آخری آیام حیات ہیں اس کے فرز ذاکر دار انکوہ کی ہند وانہ ذہبیت کے باعث قریب تھاکہ ہند وستان بھرسے اکبری عہد جیسے مالات سے دوبیار ہوجا تا کیکن ہمادے حضرات مجد دید نے اس موقع کیسینہ سپر ہوکر دار انکوہ اور اس کے مامی عمار محل محد فیر سینہ سپر ہوکر دار انکوہ اور اس کے مامی عمار محد فیر محد نے افکار دخیالات کا دُل کومقا بلہ کیا جس کے بیتنج کے طور پر اور نگ زیب تخد محد من تعزین ہوا اور اس کی تابید و حمایت دین ماصل کرنے کے بیاے حضرت نوا جھی محد مور قد من ایند و حمایت دوبالا اور دو خلافت ہمتی تھ کی مدین کو صوف اور صوف اور کو گئی نیسی میں ہمکن ہو تربیت کے لیے خلافت دے کر مرکز میں اور نگ زیب کے پاس بھیجا۔ اصحاب مع صاجزادگان بادی باری ملافت دے کر مرکز میں اور نگ زیب کے پاس بھیجا۔ اصحاب مع صاجزادگان بادی باری مسلمانوں کو وہ سکون میں ہوسکتا تھا بینی اس مسلمانوں کو وہ سکون میں ہوسکتا تھا بینی اس مسلمانوں کو وہ سکون میں ہوسکتا تھا بینی اس میک سلمانوں کو دور داج پڑمل کرتے ہوئے زندگی بسر کرسکتے تھے۔

یہ ای مجددی تحریب احیائے دین کا نتیجہ تھا کہ اور نگ زیب نے اسلامی قالون کی مشالی کتاب اندامی تالون کی مشالی کتاب افتاری المگیری مرتب کروائی اورائ طبیح کام سے یہ سادے مکاسے علمار وفقہار کا لورڈ بنا کریہ انہم کارنامہ سرانجام دیاج آج کجی ملت اسلامیہ سے یہے رہنما ﴿
کا کام دسے رہاہے ۔

آیئے اس مختصر سے فاکے میں اس تحریب احیائے دین کے رُوح روال حضرت محبد والفت ناتی کے تو حروال حضرت محبد والفت ناتی کے تحویات شریف کی ایک مشرح دالبینات کامطالعہ کریں جواس عہد کی فکری ونظریاتی تاریخ کاسب سے اہم ما خذہ کے لیکن پہلے آپ ہمارے حضرات کی ان کوسٹ شوں کی تفصیل مرجھ یہ لیجئے بینہوں نے اس اہم اریخی اور فکری دساویز مکتوبات مربعی ایک تحقیل ہے۔ میں ایک کی تحقیل ہ

مكتوبات فهم ونهيم مرصرات مجديه كالوثين

کمتوبات ام ربانی مجد دالف نانی فکرس تر فیس شامل معبن دقیق سائل کو سمجھنے کے
یہ حضرت مجد دالف نانی کی زندگی میں ہی سوالات کا سلسلہ شروع ہوگیا تھا خود آپ کے
کئی اصحاب نے معبن مطالب کی نشر تریح کی درخواست کی تھی جن کے جاب میس خودصاحب
مکتوبات نے خامہ فرسائی کی ہے۔ بھر آپ کے میں جیات آپ کے کلام ربیع خواسدیں اور
کم خوب مے اعتراضات شروع کیے تو آپ نے ان اعتراضات کے مدل جاب
مرمت فرمائے ۔ آپ کے حالات پر دومعاصر کتا ہو لیجنی ڈیدۃ المقا مات اور حذات القدیں
مرمت فرمائے ۔ آپ کے حالات پر دومعاصر کتا ہو لیجنی ڈیدۃ المقا مات اور حذات القدیں
مرمت فرمائے ۔ آپ کے حالات پر دومعاصر کتا ہو لیجنی شامل آپ کے فوظات میں
میں بھی اس کی جھلکی سے معترات القدیس میں شامل آپ کے فوظات میں
میں بھی اس کی جھلکی سے ساملتی ہیں ۔ حضرات القدیس میں شامل آپ کے فوظات میں

ا مقیقت یہ بے کو کمتوبات صفرت مجد دالف تانی اس عہد کی فکری و فدہبی تاریخ کا ایک ایسا ما خذہبے کہ جب کہ اس عہد کے جب میں اس عہد کے جب اس عہد کے جب میں اس عہد کے جب میں اس معاشر تی جذہ ہی اور فکری کا ایک ایسے تجزیاتی خاکے کا پہلے بغور مطالعہ نہ کو کہ اس عہد کے لیے اس میں یہ ساری احتیاطیں پہنے کو راب سے مضرورت اس امر کی جب کہ جس طرح محتوبات کی شرح کھنا انس لازم ہے اس طرح اس عہد کی ایک جائے فکری ونظریاتی تاریخ مرتب کی جائے میں ہے بہن نظرین قاری باس نی تی جھ جائے کہ ان محتوبات کے جائے تھائی ہمیں آج کے حوالے سے کیا بی ورہے ہیں بیکن اس محتوبات کی خوائش کہاں؟ حقائق ہمیں آج کے حوالے سے کیا بی ورہے ہیں بیکن اس محتوبات کی خوائش کہاں؟

ہم نے جانشین حضرت مجدّد العن تاکن اور تحرکی احیائے دین کے محرّک عظم حضرت خواجہ محدُمعصُوم سرمبدی رحمۃ اللّه علیہ کے احوال بقیلیات اورافکار پر ایک خیم و حجیم کتاب ''مقامات مصومی'' ایڈٹ کی ہے جس کی پہلی مجلد وصفحات بقدر ۲۰۰۰ توصرف مقد ترمیشتمل ہے جس میں اس عہد کی فکری ، نظریاتی اور خدہبی آریخ بیان کی ہے۔ پیٹم از معلومات اسی سے مخصْلاً ماخوذ ہیں ۔ آب کیبین وقیق تحرایت کی تشریحات بھی کی تھی ہیں گیا ہیں گئی ہیں گئی ہیں گئی ہیں گئی ہیں کے بعد فہم توجہ کے لیے یہ کوشٹ میں صفرت مجد دالفت انی کے وصال ۱۹۴۸ میں جا بجا ایسے غلق مقامات کی تشریحات کی گئی ہیں کہ ان کے بغیر کرتا جا کہ کے بیٹے کی کوشش کرنا عبیث ہے۔

می جاری رہیں آب کے گئی ہیں کہ ان کے بغیر کمتوبات کے سمجھنے کی کوشش کرنا عبیث ہے۔

آب کے فرزند گرامی صفرت خواجہ گئر معید ڈنٹس سرّ فردن ۱۰، ۱۹، اور کے اپنے کمتوبات کے بیان میں محتوب ۱۹۷۱ وصدت الشہود میں کئی مقامات پر آپ کے کلام کی توضیحات بیٹی کی ہیں بشلا محتوب ۱۹۷۱ وصدت الشہود کے بیان میں محتوبات محترب مجدد کی تشریح ۱۹۷۹ کر امات کے بیان میں محتوبات محترب مجدد کی تشریح ۱۹۷۹ کر امات کے بیان میں محبوبات محترب محت

اسی طرح آب کے دُوسر سے صاحبزاد سے صفرت خواجر گرام مصوم دف 6 . م م ) نے بھی اپنے مجموعۂ مکا تیب میں جو تین ضخیم مجلدات بہتی کہ ہے بڑے اہتمام سے محتوبات و معارف صفرت محدد الفت ان کی توضیحات میٹی کی ہیں جن کی نشاند ہی ججائے خودایک طویل موضوع تحقیق ہے کیو

اشیخ مینفنل الله)می فرمودند که درس کمتوبات ِقدسی سمات حضرت محبّه و الفت انى نزدىك حضرت خازن الرحمة (خواجه محد سعيد) دوام دم سنسة اما آنحضرت استماع آسيب كوت دادب تمام مي نمودند وسرمعاني آساب مبارك نمى تشؤوند الآماشار اللذنعالي وحضرت اليشاس دخواجه محرمعصُوم بهم بردر*س کتو* ابت مداومت <del>داش</del>تندا ما معانی آن برحاصران موافق حوصکه ای انها افشا می ساختند . . . . . روزی این درویش (صفرا مرمعصُومی) بءعض كضنيت رسانيدندكه وجبسكوت فازن الرحمة وتقرر يصنرت ايشاں اگر بن فرمايند موجب تشفيّن طرِنياز مندان گرد در شيخ محفضل لله فرمو دندحنيت خازن الرحمة الفارمعاني راتفولين برباطن فيصن مواطن جست مجدد الفث ثاني مي نمودند آازال مركات رشمر برا الم محبس تقاطر نمايد وخور برا قبه می ساختند وحض**رت** ایشاں (خواجه مختصوم) که معانی آ*ن می فرمو* دند بیروئ مفتران ویتراح مدمیث می منودند . . . . والقائی معانی وصورّاً و معناً فانصن الرحضور شود و اجرين إلقاً وبيان ماصل آييه له

یہی وَلف ایک اور مقام بر فر ملتے ہیں کہ صنرت خواج محد مصنوم محتوبات صنرت محدّد العث الف ایک ساتھ کھی ا بینے معتوبات کی ملدا وّل کی ماعت بھی فرطتے تقے اور صنرت المام ربّانی کے احوال مُبارک بر دولوں معاصر کیا بول عنی زبدۃ المقامات الیون خواج محدّد ہا تھمکتی اور صنرات الفدس مولف ملاً بدرُ الدّین سرہندی بھی ای بس شرفین ہیں مسنتے تھے ، محصے اور صنرات الفدس مولف ملاً بدرُ الدّین سرہندی بھی ای بس شرفین ہیں مسنتے تھے ، محصے

، برسبِ كتبِ اماديث مثل ميح بخارى وصيح مل ومشكوة المصابيح مي بردا فتهند وگاهي بر كمتو بات بصرت مجدّد العن أني دس شنه يدند وسعائي جو المناف المنا

آن ہم درمیان می آور دند وگاہی مبلداؤل کمتربات خود وگاہی مقامات مجدی مشنو دند میں اور

ایک اور معاصر تذکرہ نویس نیخ محمد ایمن بنتی نے جو حضرت خواجہ می محصوم کے مورید خاص مصط کھا ہے کہ مکتوبات بحضرت مجدد الف ان اور کتوبات بعضومید و فول کا مدر مریم نیز یس درسس دیا جاتا تھا۔ کے

له صفراحمد ، مقامات بحصومی مرتبر محراتبال مجدّدی زیر طبع رص ۳۹۹ – ۳۸۰)

م مخدا بین بنیشی ، نتائج الحربین (مجدسوم بخطی مخرونه کتاب خانه اندایا سون لندن فمبر ۲۵۲ که مختی فخرا برگاب خانه اندایا سون لندن فمبر ۲۵۲ که مختی فخرا برگاب خانه اندایا سوری خواب بر سوان به به مختی فخرا برگاب خانه بین اور گاب خانه بین بادشاه کی تحقا مصل کرکے تقویت وین مین کا باعث بین بادشاه کی تحقا مصل کرکے تقویت وین مین کا باعث بین بادشاه کی تحقا مین مقویت کے بیادی کا ایوان محبد برای کا بازگار کا بازگار المدایات مین بادی کا بازگار کرمی می افزار اور کا نواز کرمی می تواند بین مین بادی کا بازگار کا بازگار المدایات کا بازگاری کا برای کا بازگار المدایات کا بازگاری کا برای کا بازگاری کا با

وفكرح فروات إلى -

ا ما بعد مي كويد اصنعف عبا والله المعين محتربا قربن شرف الترين الاصوري العباسي تخميني غفي غنهكا كدجون مراتب حصمول سلوك وحقائق وخصائصرحبر امام حمام ..... معبِّد والالف الثاني ..... ورُحتوبات ..... حصرت مجدُ دالف تناني ..... وحضرت بير دشگيرقطب الانام .... وحضرت خواجه محمد عصومی ...... و تبربعد مرتبه ند کورنمیت و بیان ترتیب این مراتب درانجا لمحوظ أنجاطران فدوي ريخت كدرساله مبدار ومعاد ودفا ترسته مكايتب حضرت محبدد العث ناني وحضرت ابشان اخواج محدمه صوم رارضي الله تعالى عنهما ورنظر داشتة إبى لاّ لي منتوره رامنتظم ساز و ..... في المحادي والعشرين مربخوال سنة الف وثما بنين من المحجرة المباركم ..... اتمت تا ليفه في تاسع ذي لقعهُ من العام المذكور اتمامًا . . . . وبعدا زاتمام بعبنى خصائص درخاته ذكريا فية ..... این فقیرا لتزام کرده که عبارات اصل را بعینها تبرکا ایرا د نماید گردر بعصنی مواضع کذبجهت تلعبنی مکم به تغییر بییرآور ده .... . لفظ فائده بجای نصل اختيار منوده .... ودرا ثنائي اليعن إر إخوش وقتى حضرت محبة و العنة انى وحصرت اليتال رصى التدعنها ورباب اين ماليف يرتو انداخية و اتحاد خاص بخياب الخصنرت ذسبتي خاص درخوديا فته وتوفيق وامدا دازس جناب معلوم ساخته .... له

مفتی الا جوری ، کنزالهدایات مرتبه مولانا فداحد الرسسدی ، امرتسر ، ۱۳۳۵ مر را غاز ،

on An

البيت المحالية المحالة المحالة

بخزالہدایات کے عربی میں بھی ترجمے ہوئے ہیں اس وقت کے ہمیں صرف ان دو

ترجموں کاعلم ہے ۔ ۱۔ عربی ترجمہار شیخ محدّ باقرین محدّ جعفر حنفی دھلوی خِطی نسخہ رباط منظہر ۔ مدین منورہ رین مناسن میں تاریخہار میں مناسن میں میں مناسن میں

حرر العنايات ترجم كنز الهدايات . ارمشيخ عد عظي أفندي ، قلمي تنحه مخزوز كتب خانه سيممانيه استنبول تزكى ويرعر في ترحمه واكثرامين الله وثير نے مرتب كر كے مجله جا معه اسلامیه بها ولبور خبوری. ایریل ۵ ، ۱۹۷ کوشا نع کرایا تھا کیا

كنزالهدايات كے فارسي متن كومولانا نور احمد امرتسري مرحوم نے ايڑٹ كركے ١٣٧٥ كوامرتسرسے شائع كيا اور اس كتاب كاارُ دو ترجمه الله والے كي قولمي دكان كشميري بارزار

لا مورسے قیام پاکستان سے قبل جھپاتھا۔

مفتى محتربا قرلا ہورى قدتس متر في كے بعائي مُلَا محرايين حافظ آبا ديكى بھى كمتوبات حضرت مجدّد العن ثانی قدس منرہ کے ماہرین میں شمار کیے جاتے تھے۔ انہیں ان کے بڑھنے اور لرصانه كااتنا درك اورشغف تهاكه انهول نيصرت خواجرسيف إلدين بن صرت خواجه م معصوم قدس ترهماسه "محتوب خوان" كاخطاب يا يا تصاميعاصر تذكره نويس كامشاهده

‹ و مهارتی برمکتوبات کدمنورجهانب شهاست ماصل کروه از مندست مخدوم زاوه قطب المققّين شيخ سبيف الحق والدين قدّس ستره كمتوب خوان

لع تعارف ترجمه ؛ اوزشيل كالح ميكزين لاجور (صدسالح شن نمبر ٢١٩٠٢) ك الم محمد المين ما فط أبادئ غنى محد باقر لا بورى تحقيقى بهائي تصلوك كي أبتدائي تعلير كأ عار مفتى محد باقر ل خدمت بير كيا الد خلافت حضرت خواجه محمد مصوم سے ماصل کی 'بلا عمد امین ما فظ آبادی کے نا مصرت خواج محمد م کے چارم کا تیب ہیں ۱۳۷۴، ٥٥١ ١٩٢٠ ١٠٢/٣ حضرت خواجيك وصال ١٠٤٩ م) كيعدا نبول نعضرت خواجرسيف الدين سيمنسلك بوكراس كارِ دعوث وعز بمت بين حبِّنه ليا - امقامات محصومي ، تعليقات · ٩٩ / ١٥) خطاب یافیۃ درگوشہ وطن رحافظ آباد بنجاب، برخلافت حضرت ایشاں انواج محد محصور میں بارٹ د تمام شستہ بہ مداریت آنجا سرا فراز گستہ کیا اس اقتباس سے قباس کیا جاسکتا ہے کہ کلا محرابین حافظ آبادی حضرات مجدّدید کی محافل مبارکہ میں محقوبات شریف کر درس کے دوران مکتوب کی قرائت کا فریفید آنجام دیتے تھے۔ حضرت خواجہ محد محدوم فکرس مترف ہے۔ رو ف خلیفہ حاجی جبیب اللہ مصاری مجاری قدس نیرؤ (حدود ۱۱۱۰م) کا تولیقیوہ وضیہ ہی محقوبات بحضرت مجدد سنتانی قدش سرہ پر عمل کرنا اور ان مجتوبات شریف کے درس و تدریس کا انہوں نے ایسا اہتمام کیا تھا کہ اسر کا عشر عشیر جبی ہندوستان میں نہیں تھا شیخ حصفومی قدس سرہ کے عقیدت جاحترام سیاس میں الفاظ اطلحظہ ہوں۔

اله صفراحمد امقامات بحسومي ١٩٠

البيت المحالية المحال

اس کو گفت بزرگ نے کھا ہے کہ موصوف اس کے درس کے اوقات کا آتنا اہتمام فرمات کے کہ اس کی تفصیلات کھی جائیں تو کئی گرزین جائیں۔
حضرت خواجہ محکم حصّموم قدس سترہ کے ایک اور خلیفہ نامدار شیخ محد مراد شامی قدس سترہ ہے۔ ایک اور خلیفہ نامدار شیخ محد مراد شامی قدس سترہ ہے۔ بعد وقد میں سبے بعد وقد میں اند معرب محدول و بدن خود گرفتہ ملکم اکثر ملتوبات ترفیلی کے دان فرس اند معرب کروانیدہ کے "
میسی جمد محد مراد شامی کے محتوبات شراعیت کے اس درس کے اہتمام اور اس سے مشیخ جمد مراد شامی کے محتوبات شراعیت کے اس درس کے اہتمام اور اس سے مشیخ جمد مراد شامی کے محتوبات شراعیت کے اس درس کے اہتمام اور اس سے

مسیح حدمرا دسای کے معوات شرافیہ کے اس درس کے اہمام اور اس کے عربی ترجمہ کے ترکی اور دیا رعرب میں خوش گوار اثرات مرتب ہوئے ۔ نہ صوف اہل عرب اس طریقہ مبارکہ کی حقابیت سے آگاہ ہوئے بلکٹرک بھی اس کی خطریت کے معترف ہو سکتے ۔ ان کے معاصرین نے متوبات شریف کا ڈکی زبان میں بھی ترجمہ کیا ۔ کہ

 المراس ا

درسس دفاتر مکتوبات قدسی آیات به دقت دمتانت نمام مهوارهٔ مؤسس آیات توفیق مراصی الهی ملّ شانهٔ شامل مال با دیگه مؤسس آیات توفیق مراصی الهی ملّ شانهٔ شامل مال با دیگه حضرت مجدّ دالفت نانی قدّس سرّهٔ کے بوتے شیخ عبدالاحد وحدث قدّس سرّه امرانی کی شرح لھی تھی ہمیں ناحال اس کے کمنی سننے کا علم نہیں ہے۔ اس لیے ینہیں کہاجا سکتا کہ کیا وہ ہرسد فاتر مکتوبات کی شرح ہے یا بعض مکاتیب کی شرح سکھنے پر اکتفا کیا ہے۔ فامذانی مؤلف ماجی محد شاندانی مولف ماجی محد شاندانی مولف ماجی محد شاندانی مولف ماجی محدث وحدت وحدت نے شرح کال قدسی آیات مکاتیب مجدّ دی تھی تالیف کی تھی شیھ

له كال الدّين مخداصان ؛ روضة القيومية ٢٢٨/٣،١٢٨ كه العِنا ٢٩٥٠ ٢٩٥ ٢ ٢٥٥ ٢ كل صفراحمد ؛ مقامات بعصوى ٢٦١ كه شيخ عبدالاحد وحدت بن صفرت خواجه محد سعيد بن صفرت محدِّالف ثماني أب بمعروف عالم ، شيخ طريقيت اورفارسي شاعر تصحير شعرارك تذكره أولسوس نه آپ كالام كومبهت مرا باسه يهم نه آپ كي ايك اليف " لطالف المدينة " الميرف كي جحس محريقة تمريس آپ كيففس حالات تحرير كيم بين . هم محضن الترقيد عادى ، محمدة المقامات (لبال ٣٢١ه) لا مور ٥ ١٣٥ مع

حضرت خواجہ محمد معمد م قرس سر فرکے ایک خلیفہ مافظ محسن سیالکوئی رحمۃ اللہ علیہ اللہ علیہ کا محمد محمد ہا قر بھی محمد ہا قر بھی محمد ہا قر اللہ مالیہ سے روایت کی ہے۔ لاہوری رحمۃ اللہ علیہ سے روایت کی ہے۔

درسس مِنتوبات ِ قُدى آيات را التزام د است ومعاني آل را بيان مي ساخست برك

حصرت خواجہ محرکت میں میں الدین ہنواجہ عبید اللہ مرق ج الشریعیة قد اسرارهم کے مکاتیب حافظ محسن سیالکوئی رحمۃ اللہ علیہ کے نام ان کے مجموعہ ہاتے مکاتیب میں بائے جاتے ہیں جن میں ان کی رُوحانی تر فی اور مدارج کا تذکرہ ممری الفاظ میں بیان کیا گیا ہے۔ الفاظ میں بیان کیا گیا ہے۔

معرود بنیم طرفت معارت خواجہ محدز بہر سربہندی بن خواجہ محدِقت بند انی بن حصرت خواجہ محدِقت بند انی بن حصرت خواجہ محد نہ بہر سربہندی بن خواجہ محدِقت بند ان براہ معارض منے محدِق است معارض محدِق محدِق اللہ محدِق

معُروفُ تُركَخطًا ط اورعالِمُ ستقتيم ذا ده سعدُ الدّين سليما نقشبندي نے ١٩٢ء ١١٩٥

کے ما فظ مس بیا کوئی اور ما فظ محرص دھلوی دوم عاش خیبتیں تھیں دونوں حضرت نواج محرک مصفر کے ملقہ ارادت میں شامل تھے بنائی الذکر توحضرت خیب خیرائی محرت دھلوی کی اولا دہیں سے تھے جن کا بیا کور ہے سے کوئی تعلق نہیں نقاماس کیے اور کا لگائی تھا۔ ان دونوں کے اہیں فرق اور کلاک تھا۔ ان دونوں کے اہیں فرق اور کلاک کے لیے ملاحظہ ہوتعلیقات برمقامات مجھنومی ۱۹۳ مراا - ۱۲ کم صفر احمد : مقامات مجھنومی ۹۳ م

ے مان بین مد مان اور ملا ماہ اور میں ۱۹۱۸ کھ حضرت خواجہ محد مصروم کے ایک ملیفہ شیخ قل احمد معروف براحمد یک دست (ف ۱ الآتھ) جن کے ترک ملفاریس سے ایک بزرگ نیخ محدامین ترفاری جی تھے جن سے تقیم زادہ معد الدّین سلیمان نے فا ہری و باللیٰ فیمن یا یا (تضخة الحظاطین متقدّمہ ۲۵ - ۲۷) کوسکتوبات مصموسی کا ترجمه ترکی زبان میں کیا اور تشنبندی سلسله کے افکار پر ترکی زبان می تقیم زاده کی کئی قابل توجه کتابیں ترکی کے مختلف کتب نما لؤں میں موجود ہیں لیہ بازگتب سے اس مسلم مبارکہ کا تعارف ترکستان کے مختلف علاقوں میں ہموا اور طالبان حق جو ق در جو ق اس میں داخل ہوئے۔

مستُفيتم زاده ني مكتوبات منزت مجدّد العن ثاني قُدس سرَهُ كاهجي تركي مي ترجمه كيا تهاجر ١٧٤٤ هر ١٨٠ ع كواستنبول سي حيب چكاہے كيه

مکنوبات کی رسیب لعداد حیات ہی آپ کے کمتوبات شرف کے مین کمرون ہوکر کا بل شہرت ماصل کر چکے تھے۔ نورالدّین جہانگیر بادشاہ نے اپنی توزک میں ۱۰۲۸ مد ۱۹۱۹ء کے واقعات کے تحت جہاں حضرت مجدّ دالف ثانی قدُس سرہ کا ذکر نہایت ہے ادباند انداز سے کیا ہے وہاں آپ کے کھوبات برھی جس لاعلمی سے طبیق الحالی ہے اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ محقوبات شریف ندکورہ سنہ تک سے ایسا درے ہند ورتان ہیں مووف وستعارف ہوچکے تھے۔ اس وقت مک محقوبات کی پہلی دو جلدیں مرتب ہوئی تھیں۔ تیسری مجد بعد میں مرتب ہوئی۔

پہلا دفتر دار المعرفت کے آریکی نام سے موسوم ہے۔ اس میں ۳۱۳ مکتوبات میں اس دفتر کوخواجہ یا رہے گئے تام سے موسوم ہے۔ اس میں ۱۰۳ مکتوبات میں اس دفتر کوخواجہ یا رمحتہ کے مدد جمع کیا۔ دار المعرفت اس کا آریکی نام ہے جس کے عدد جمع کرنے سے مذکورہ منہ رشیب برآمد ہوتا ہے اس مبلد کے مکانیب کی تعدا دحضرت مجد دالف بنانی قدیم خوا

که ستغیم زاده ، تخفهٔ انحفاطین ۲۹ وبربعد (مقدّر) که مکتوبات کا آخری ترکی ترجیهسین طمی ایشق کا ہے جو انہوں نے خود استنبول سے کئی بارشائع کیا ہے 1949 کا ایک افرویشن اس وقت میش نظرہے ۔ یکھ جہرے نگیر ، توزک جہانگیری ۲۷۲

عه بها الدین محدا حسان ؛ روضة القیومسید ا ۱۹۸

کے ارشا دکے مطابق اصحاب بدر کی تعدا دکے مطابق ۳۱۳ رکھی گئی۔ اسی ال آت کے فرزند اکبر حضرت خواج محد صادق قد س تر فی کا وصال ہوا ان کے تین عربی اللہ مضرت مجدد قد ش سر فی اس مبلد کے آخرین لطبور ضمیم نیفتول ہیں۔

بی مصرف بدوند ک تروه کی ببدت اعریق جوزید سوی بی را محقوبات کا دومرا دفتر ۱۰۲۸ ها کو مرتب بهوااس کے جامع خواجرعبد الحق بنی ہم چاکر حصیاری قُدّس کی هما ہیں انہوں نے صنرت خواجہ محد معصوم کے حکم رقیم بُوعہ مرتب کیا اس کا تاریخی نام '' لوز الخلائق ''ہے جس سے مذکورہ سنزر تیب برآمد ہو تا ہے۔

اس میں اسمار سنی کے مطابق ۹۹ مکانتیب ہیں۔

تبسرا دفتر ۱۰۳۱ هدکوم تب بهوا اس کے جامع صاحب زُبدۃ المقامات عجلیہ فقد ہاشم محتمٰی قدس میرہ برہا نبوری ہیں ۔ لفظ '' نالت' 'سے اس کا سال تربتیب برآمد ہوناہے اس ہیں محتوبات شریف کی تعداد سُورِ قرآنی کے مطابق ۱۱۲ کھی گئی تھی لیکن مخمیل کے بعد چیدا ورم کا تیب ملے اب عام طور پر اس جلد ہیں ۱۲۲ میکا تیب پلئے جاتے ہیں مجتملہ عصابوعہ المینشنوں ہیں ان کی تعداد جمی مختلف ہے لیکن حضرت خوجب محمد عصابوم قدس مترہ کی تصریح کے مطابق اس کا تسخد مرتبہ مولا نا نور احمد امرت سری

صنرت الم مرتبانی فُدس سرّهٔ کے مین جیات کا مکتوبہ کوئی خطی شخه نامال بهاری نظر سے نہیں گزرا ہے۔ اس کا قدیم تریق کمی شخه خانقا فقشبندیة بلعہ جواد کابل میں تھا حب کی حضرت نورالمشاکخ فضل عمر الله کی حضرت نورالمشاکخ فضل عمر الله

له برُ الدِّين سسر مبندي احضرات القُدس ۳۳۹/۲ له محد المشسسكشي: زُبدة المقامات (آغاز كتاب) حضرات القُدِّس ۲/۸۲۲

شور بازار قُدّس سرهمانے ۱۹۷۹ میں مجھے زیارت کر وائی تھی اس نیننے کی خُربی پی تھی کھ اِس كة آخرين ايك صفح براس امرى تصريح كي كئي هي كديه وه في ننخه بحب كي تصيحه نودحضرت خواجه محرمحضوم سرمبذي فترس سرؤن في ہے اورجا بجاحو امتی بھی لکھے ہوئے تھے لیکن افنوس کہ ، ، واکے روسی انقلاب افغانستان کے دوران جب بیمبارک خانقاه اوعلى مركز مسماركياً كيا توكتا بخامة هجئ ستشراورتباه بوگياجس ميں بيزا در الوجود سلمي ننخذهی علوم نہیں کہ اب کس سے پاس ہے؟ البتہ حضرت صنیارٌ المشاکخ نے کال ہم وائی فرمات ہوئے اس کے چندا دراق کا حکس مجھے عنایت فرمایا تھا جومیری مرتبہ کتا ب مقامات مصومی کے مکسیات میں شامل ہے۔

۔ وُنیا بھر کے کتب خالوں میں اس کے جتنے خطی نسخے بائے جاتے ہیں ان کی جامع فہرست انھی ککسی نے ہمیں بنائی ہے اہم خوں کی کثیر تعدادیہ نابت کرنے کے لیے كانى بهدك يدكآب الماعلم وعرفان كيز ديك كس قدر هبول تقي

ایرانیوں کی کومشش سے گھوبات شریف کے پاکشان میں موجود اکہ ترقمی تحوٰں کی نشاندہی ہوجی ہے۔ ان میں قدیم ترین خرا ۱۰۵ م کامکتوبر سے کی

حصرت مجدّدِ الفتْ ماني فدّس مرّهُ كي محتوبات اوررسائل كا ايك مجموعهُ ورت كُلّيات مكتوبه ٢٠٠٩ واورمنيل الميثيوط لائبرري باشقنديي ہے بمارا خيال ہے كەشار بخارا نے حضرات سرمهندسے حضرت مجدّد الفت ان فدس سره کی تحریرات بھیجنے کے لیے کہا تقاله بيفالبا وبمحب موعهد

مگوبات محلف الراش ملوبات صرب وبددات الراش ملوبات محالت معلوبات محالت معلوبات محالت معلوبات محالت معلوبات محالت معلوبات محالت معلوبات معل

اشاعتیں ہاری نظرسے گزری ہیں جن کا ذکر کیا جار ہاہے۔

ا دېلي ۱۲۸۸ هر ۱۸۸۱ عمل متن

۲ مطبع خاص قرصنوی دېلی ۹۰ ۱۲هر ۳ په ۸۶ باېټمام حافظ حاجی عزیز الدّین احمد مالک مطبع هرسه دفتر کامل به

٢ مطبع نولكشور الكهنو ١٢٩ه - ١٨٥٥ - ١٩١٣ وكتى اليشن طبع موت.

م مطبوعه امرتسر ۱۳۲۶ ه ۱۳۳۰ و تحقیق تعلیق مولا ما لوراحمد امرتسری فی ۱۳۴۵)

مولانا نور احمد امرتسری مرحوُم نے اپنی زندگی کا ایک جمتہ کمتوبات تربون کی تھیجے۔ تخریج اورتعلیقات نولیسی میں صرف کرکے اسے بہت ہی اہتمام کے ساتھ خود امرتسر سے شائع کیا تھا سلسانقشبندیہ کی یہ ہملی دقیق ترین کتاب ہے جس کا متن انتی حت کے ساتھ مرتب کیا گیا ورنداس سے قبل نحصٰ ایک ہی فلمی ننجہ کی بنیاد پرمطابع نے

نقل کر کے جھای دیا تھا کہ

مولانا نور احمد امرتسری کے صحیر نیخ کو عکسی صورت بیں ڈاکٹر غلام صطفی خان نے کر اچی سے دوبارہ جیاب دیا ہے لیکن افسوس کہ ڈاکٹر صاحب نے اس کے سُرور ق سے مولانا امرتسری کا اسم گرامی نکال دیا ہے موصوف نے بہی کارنام کمتوبات محصومی کی مبلد سوم مرتبہ مولانا امرتسری کا عکس شائع کرتے ہوئے انجام دیا ہے جس ریعلمی ڈنیا انہیں خراج بختین پیش کرتے گی کہ کیا ایک عالم کے عُمر کھر کے لمی سرمایہ کے ساتھ بہی کیا جانا چاہیئے تھا ؟

ا مولانانُد احمد امرتسری کے احوال وآثار رہیکی محد مُوسی امرتسری مرحُوم نے ایک کتا بچہ الیف کیا تفاج آمال سٹ رئع نہیں ہوا۔

کے مولانا نُودا مدامرتسری سے مرتبہ کمتوبات سے متن برِنظر اُنی مولانا محد میں میں میں مقرم اُر دو محتوبات انے ک تھی اور اس کا ایک جدید الدیشین نور کمپنی لا ہور نے بھی سٹ نُح کیا تھا۔

## مكتوبالشيخ مختلف تراهم

عربی ترامی میری ترخمه می توان میراد شامی که دالف تانی قدس سرهٔ عربی ترامی میراد شامی که دفت ۱۱۳۱ه ۱۱۵)

۲ ایک عربی ترحمه (جوابتدائی چند مکاتیب میشتل ہے) نیشنل میوزیم کراچی میں میں ہے۔ یہ بار بہویں صدی ہجری کی تابت معس اُوم ہوتی ہے (صدوز الام

٣ تعريب المكتوبات الصوفيه مترجم شيخ كونس نقشبندي له

م مكاتيب الشخ احمد النقشبندي مترجم المعلوم لله

۱ الدُّررالمكنونات النفيسه مترجم شيخ محدم ادبن عبدالله وفازاني كلى (۱۹۳۲ء) كله مكتوبات صغرت مجدد العن فارس مرؤ كايدكا مل ترجمه سب ، جوعربي

زبان مي كياكيا عن سے دور آخر كے عرب علمارا بل سنت في استفاده كيا . و کی در استقیم زاده سعدالدین سلیمان نے محتوبات حضرت مجدّد ترکی من الفت انی قدس سرؤ اور محتوبات معسومید دونوں کے ترکی میں جمر کریں تعمد ال

۲ ایک اور ترکی ترجمه مجی ہے جو غالباً ندکورہ ترجے کے بعد کیا گیاہے محتوباً کے عربی مترجم سنین محدماد قازانی نے لینے ابتدائیہ میں اس کا ذکر کیا ہے ليكن كوئي تفصيل نهيس دي .

٣ النزى ترجم حين ملمي ايشيق كالمديم والمستنبول سي كئ بارهيب وكاب و در الطافت رحمانی ترجمهم کتوبات امام ربانی مترجم محد حین بن ار دو تراجم محد حین بن ار دو تراجم محد حین بن ار دو ترم محمد عن بن الم در این می محد محد می از دو ترم محمد می این م مكاتيب كاترحمبر)

۳ ترجمهازمولوی عبدالرحم نائب مدیراخبار دکیل امرتسر (کمتوب ۱۷سے ترجمه شروع کیا کمیں کہیں حواشی مبی ایکھے ہیں رمصرف ابتدائی چند مکاتیب ہی کا ترجمہ ہے۔مطبوعہ امرتسر ۱۳۳٪ ھ)

ترجمه از مولوى عالم دين نعشبندى - يه بهلامكل أرد وترجم سب حوكتميري بازار

۵ ترحمبرازمولانا محدسعیدا حمد نقشبندی مطبوعه کراچی ۱۹۷۳ء بین حبد کامل. ۲ دُرِّلا اُنی کے نام سے شاہ ہدایت علی نقشبندی نے بینوں حبدوں کی

البنان المحتمد المنان المحتمد المنان المحتمد المحتمد

بیر مجوعه فیض البرکات من عین المکتوبات کے نام سے لاہور سے طبع ہو پکاہے۔ مراک مصد علم الشدق نے Endloss Rlics کے نام سے

انگریزی زاجم ایسین طمی ایشیق نے Endless Bliss کے نام سے انگریزی ترجمہ مکتوبات مٹرلیف کے بعض صول کا انگریزی ترجمہ است بنبول سے ۱۹۷۲ء کوشائع کیا .

ام ربانی بارخی انصاری نے تصوّف اور شریعت کے موضوع پرمکتو بات ام ربانی بارجی قدر نکات ورج ہوئے ہیں ان کا تقابلی مطالعہ پیشس کیاہے مام ربانی بارجی قدر نکات ورج ہوئے ہیں ان کا تقابلی مطالعہ پیشس کیاہے کتاب کا پورانام بیہے۔ Ahmed Sirhind's effort to reform sufism) London, 1986.

۳ آسسسری انگریزی ترجمه میروفیسرشیخ محدوجیه الدّین کاسے۔اس کی پہلی جلد نهایت آب آب انگریزی جو بی سے حس میں ۲۱۳ مکا تیب کا انگریزی ترجم کیا است میں اصطلاحات ترجم کیا گیاست ۔ اس میں اصطلاحات ترجم کیا گیاست کے ساتھ انگریزی میں بمدل کیا گیاست لیک اور انگریزی میں بمدل کیا گیاست لیک اور انگریزی میں بمدل کیا گیاست لیک اور انگریزی

حروف میں مل اصطلاح کو بھی قائم رکھ ہے۔ اسکے باتی حسوں کا ترجمہ ان دنوں زیر نظر ہے۔ اسکے باتی حسوں کا ترجمہ ان دنوں زیر نظر ہے۔ ائیر دیں گئے اِس ترجمہ کا پرا نام اس طرح سے ہے۔ (Maktubat Sharif) عام اس طرح سے ہے۔ اور ایس کا معادد کی معادد کا معادد

Institute of Naqshbandy Mujaddidy Works, Lahore, 2000

مكتوبات كى تسروح وتخريجات مكتوبات تربيك كانتراق كيسيد يم مفتى مؤافر

لاموری رحمة الشرعلیه اور شخ عبدالاحدوحدت مرمندی قدس سرهٔ کے علمی کاموں کا درکہ یا جائی کاموں کا درکہ یا جائی کاموں کا درکہ یا جائی کا موال کے تحت چنداور کُتب کی تفصیل دی جاہج اس می خالف می مولانامیر عرب شاہ

مؤلف کے حالات سے ہم واقعت نہیں ہیں انہوں نے آغاز کاب میں اس شرح کاسال تالیعت ۱۱۵ احد کھا ہے۔ افسوس کہ یہ گراں بہا کتا ہے ہیں اس شرح کاسال تالیعت ۱۱۵ احد کھا ہے۔ افسوس کہ یہ گراں بہا کتا ہے ہیں میں میں جو مخطوطہ ہماری نظر سے گزرا ہے وہ صرف محکو بات حصر سے اس مجدوالعت ثانی قدس میرہ کے دفتہ ثالث کے چند مرکا بیب کی مشرح ہے اس حصتے کا ایک مختصر سانسخ نیشنل میوزیم کراچی ہیں ہے۔ له حصتے کا ایک مختصر سانسخ نیشنل میوزیم کراچی ہیں ہے۔ له حدیا والمقدمات لمطالع المحکوبات (۱۳۲۰هم) مؤلف ہو۔ مولانا ضیاد الدین بن وزیرا چکڑائی فراہی .

اس کے مؤلف کی ولادت قریب شیوان (من مضافات فراہ سیستال فغانیا) یس > ١٢٨ هرکو ہوئی۔ ابتدائی تعلیم لینے والدسے ماصل کی اور بھر ہرات جاکر مولانا محد عمر ہروی سلجو تی (صاحب تصانیع نب رائعتہ) اور مولانا غلام مصطفع کی محمت بیں آجھ سال رہ کرمنطق معانی، بیان، بدیع، حد سیث، اصول فقتر کی معیل کی۔

له نوشا می ، سیدعارف ؛ فهرست نسخه بلئ خطی فارس موزه ملی پاکستان (مرمخلط ۱،۹/۱هه،۱۱۲۳)

ولم سے قندهار پہلے گئے اور سید محدامین قندهاری سے منطق اور ریاضی کی بھیل کی اور درس و تدریس میں مصروف ہوگئے۔ آس کے ساتھ تصنیف و تالیف میں بھی ہم تنرح الیاعؤجی تالیف میں بھی ہم تن لگے ہے ان کی تالیفات میں سے تشرح الیاعؤجی (میکی سل ج الساری و دیگر ضوالکا فی دو تشرح) ضیاء الموازین درعلم صروف مضیاء الموازین درعلم مناطب رہ اور التصدیق ، تشرح مخصر قاضی عضدی درعلم مناطب رہ اور شائل النبی (صلی الترعلیہ وسلم) لے

ضیاء المقدمات دراصل محتوبات شراعی کوئی محلی شرح نہیں ہے۔ بعکہ بعض مُغلق اور دستیق مکا تیب کی توضیحات کرنے کی کوشن کی گئے ہے۔ البتہ محتوبات میں شامل اصطلاحات کی شرح مفصل بیان کی ہے مؤلف کی تشریحات بالکل ساوہ ہیں معلوم ہو اسے کران کے باس اس کتاب کی تالیف تشریحات بالکل ساوہ ہیں معلوم ہوتے ہیں۔ افغانت ان کے مکاتیب کے مجبول کے دوران ما فند ومراجع انتہائی کم شعبے صابحزادگان کے مکاتیب کے مجبول کے دوران ما فند ومراجع انتہائی کم شعبے صابحزادگان کے مکاتیب کے مجبول کی سے مؤلف نا واقف معلوم ہوتے ہیں۔ افغانت ان کے ایک دورانتا وہ قریبے عالم کی مربوبات قریبے عالم کی ایک ورافتا وہ قریبے عالم کی مربوبات فی تو جسے المکتوبات

یہ تھی مولانا ضیادالدین ای کونی کی تالیف ہے۔ یہ دراصل مکتوبات شرایت کے عینوں دفائر کا بین السطور ارُدو ترجمہ ادر کہیں تشریحات برشتی ہے۔ اس کا تطی نسخہ مؤلف کے فرزند مولوی محد ساکن قصبہ نو زاد (قندهار) کے پاس محفوظ متعا سکتہ تقریباً نبدرہ سال قبل مین ظی نسخہ کسی طرح لا ہور کے ایک ناشر گتب

له خاتمه کتاب ضبیاء المقدمات ص ۲۵۷ - ۲۵۹ (مخصاً) لله ضیاد المقدمات کا ایک خطی نستی بخط مؤلف کتا کانه گئج بخش اسلام میں ہے (نمبال ۱۰۵۲) ته محدموسی امرتسری : مقدمه محتوبات حضرت محبدد الفٹ ٹانی ص ۳۷

کے پاس بغرض اشاعت لایا گیا تھا لیکن ضخامت زیادہ ہونے کے باعد نے چھپ سرسکا۔ اب معلوم نہیں کہ اس کا وہ نسخہ کہاں ہے۔ مہے۔ مثرح مکتو ہاست امام ربانی (فارسی نشر)

مؤلف ، مولوی نصرالسر ہونکی (ولادت ۱۸۹۸ء ۔ وفات مدود ۱۹۹۸ء)
اس کے مولوت ایک بزرگ عالم تھے گرست میں روسی جملہ برافغانستان جس میں ہما نے مولوت ایک بزرگ عالم تھے گرست میں روسی جملہ برافغانستان جس مور روز ہما نے اس شرح کی اب کا صرف بین عبلہ بن چیبی ہیں لے شارح ہر روز درس کے دوران صفرت نورالمشائخ فضل عمر مجددی قدس سرہ معووف برملا شور بازار کابل کی موجودگی میں بیست سرح بیان فراتے تھے ۔ اسس کی خوبی بیہ بازار کابل کی موجودگی میں بیست سرح بیان فراتے تھے ۔ اسس کی خوبی بیہ کوشارح نے دوران محبود العن ثانی قدس سرہ کے صاحبزادگان اور بوتوں کے مثارح نے دوران اور بوتوں کے معارح نے مکا تیب سے محبر لوپر کہ ستفادہ کیا ہے اور جا بجا شرح کے دوران ان سے نظرعی میں اس کی تولی کے معارف اور جا بجا شرح کے دوران ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اسے کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اس کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اس کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اس کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اس کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی اس کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی ان سے نقل واقتباس کرکے تومنی کا سے کوست ند بنایا ہے۔ اب بھی منظرعی اس

يركن والى شروح بس يرسب وقيع اوعلى شرح ب يديكن افسوس كرافغانتان

کے خونی انقلاب کے باعث می ظیم انشان کام ادھورا رہ گیا۔ کے

۵ میکتوبات امام ربا نی کی دمینی اور ملعاشرتی انهمیت تالیف: د ڈاکٹر ساج احمد خان

میر کتاب ڈاکٹر سرائے احمدخاں بن ڈاکٹر غلام صطفے خان کابی ایج ڈی کامقالہ ہے معالد سات ابواب کامجموعہ ہے۔ لیکن محتوبات تنریف کے حوالے سے اس

که پرشرح مرشدی صنرت ضیادالمشائخ محدا براہیم مجددی شید بن طاشور بازار نے نووشائع کی تھی جوا ب تقریباً نا پاہیے کے مولوی نصرار کٹر ہوتو کی مرحوم نے ایک ملاق میں مجھے تبایا کومیری والدہ طامح ورضان رخلیفہ ق سترا اخونہ علیففور ، کی میٹی تھی ، مولوی نصرار شرکو صفرت فصل عمر فرالمش کنے کی صحبت مبارک میں ، ۲ سال ہے کا موقع چلاتھا ۔ چلاتھا ۔ میں صروف دوباب ہیں۔ باب بنجم کمتوبات کی دینی اہمیّت اورباب شم کمتوبات کی دینی اہمیّت اورباب شم کمتوبات کی معاشر تی اہمیّت اورباب شم کمتوبات کی معاشر تی اہمیّت دیکن کولفٹ نے ان الوائے تحت بند محنوانات قائم کرے محتوبات میں سے اقتباسات مع اُردوترجم یکی کرفیے ہیں بنران برکوئی مواشی ہیں اور مذہبی مباحث اور ان کے مطالب کی توضیحات و مشرح کی طرف مطلق توجر بنیں کی گئی کے

٧- البيتنات شرح محتوبات

مؤلف، مولانا الألبيان موسعدا مدمجة دى ك

ے۔ تبریز المکنونات فی تخریج احادیث المکتوبات مؤلفہ حضرت شاہ عبدالغنی مجدوی (۱۲۳۲-۱۹۹۱ه) بن صرت الا الجرائی الجرسی محبروق الله محتربات محبروالف الن قدس مرفی میں شامل احادیث کی تخریج اس مکتر بات حضرت مجدوالف الی قدس مرفی میں شامل احادیث کی تخریج اس رسالہ کاموضوع ہے۔ اس کے بزرگ مؤلف محدث اور مدیسے منورہ میں شام وقت تھے سکین اس کے باوجود موصوف تمام احادیث واردہ محتر بات شرافیت کی تخریج میں کا میاب نہیں جوسکے تھے۔ شاہ عبدالغنی مجدوی قدس سرفی کے اس رسانے کے بات میں مفتی عدالت مرکار آصفیہ رحید آباد دکن ) نے سائے دی ہے لکن عذا کہ بڑا من الدحادیث التی لے پیظفر دھا الی الوضع والضعف وعدم

۸ فی تشیید المبانی فی تخریج احاد سیش محتوبات الامام الربانی تالیعن، مولانامحرسید کله

لے مطبوعہ کراچی > 19 میں ایج ڈی کا یہ تعالداس قدر تشذا در مرمری تحقیقات کا انتبید دار ہے کہ کو نف نے جو خواس کے ناٹر معلوم ہوتے ہیں اس پر اسے مقالہ برائے حصول درجہ پی ایج ڈی کمعنا پیز رنبیں فرایا ۔ ملا تفعیل اس مقدمہ کے آخر ہیں ملاحظ کریں محصور تشدید کی ای کا المکونا کا قلمی نے موانی الوکن زید فاروقی برمر الشرعیہ کے تا بی زواقع دہلی ہیں ہے کے موانی محد سے حالات کے لیے ملاحظ ہو الدیکا الفوائد مسر ۲۵۹ ۔ ۲۱۱ البيت المجاد المراج المجاد المجاد المراج الم

دمفتی عدالت سرکار آصفید) مولفرشاه عبدالغی کے مذکورہ رسالہ کے نقائص تبانے کے باوجود کامیابی کے ساتھ تخریجی کام انجام نہیں سے ۔ ان دونوں صرات کے زمانے تک تخریج حدیث کے ذرائع بہت کم تھے۔ ان کے بعد جب مولانا نوراحمدام تسرى مرحوم نے محتوبات كى تقييح كاكام كيا توايك عدتك ان دونوں كابور كى كمى كويد اكرنے كى سى كى ك ٩ ـ مكتوبات مجد دالف ثاني ، تخريج احاديث

مؤلفه: ايربيك مطالي

يەمۇلەن كاپنجاب لونىچرىسىڭى لا بور (١٩٩٢ء)سىيى ايچى دى (شعبەعلوم اسلامیہ) کا مقالہ ہے جس برانسی یہ ڈگری تفویفن ہوئی ہے موصوف نے برى محنت اورجا نغثانی سے تخریج کا کام انجام دیاہے اور بہت مدتک مالقہ مؤلفین کے جھیوٹے ہوئے خلاد پڑکرنے کی کرششش کی ہے کیونکراپ تو تخریج حدیث کے سلطے میں بہت ہے انڈیکی تیار ہوکر دنیا کے ہاتھ میں ہیں ا مؤلف نے اپنی مرتبر ملخیص میں تخریج کے سائے امکانات بتاتے ہوئے مکھاہے کہ کہاں کس مقام بر کتنے فیصد تخریج ممکن ہوگی سیے ١٠- فهارس تحليلي چشتگانه محتوبات احمد مسرمندي (Arthur F. Buehler) موتب ه آر قور بيولر ك

ك تشيدالم إنى ، مطع فتح الكريم حيدراً بادوك سه ١٣١١ حكوطم بورى جوعرني بي ب لله پروفیسر داکشربولرنے نقشندی سلسله پامری میں بی ایج ڈی کی ہے ان کے مقالد کاعوان ہے . Sufi Heirs of the Prophet (the Indian Naqshbandiyya and the rise of mediating sufi shaykh), University of South Carolina pren, 1998. اسسلنت بدوفيسري ان كامرتبرا لذيكس محتوبات شراعين اقبال أكيدى لابورس ثائع بوگا Analytical Indexes for the Collected letters of Ahmad Sirhandi. جس کا پورا نام سیسب کمتوبات شرایند کایداندگی ایک امری جوال سال محق جو مجوالداسلام قبول کر
پیکے ہیں اور سالم عبداللہ کے نام سے پاکستان ہیں معروف ہیں انہوں لے اس
کاب میں کمتوبات کے شعلق اعمداندگیں بنائے ہیں یعنی (۱) فہرست آیات
(۲) فہرست احادیث (۲) فہرست گفتار وامثال عرفانی ازمشائخ (۲) فہرست
شحلیلی الفاظ واصطلاحات عرفانی (۵) فہرست نام ہای اشخاص (۱) فہرست
گردہ کم وفرقہ کم (۷) فہرست نام ہای کتب ورسالہ کم (۸) فہرست نام جا کا ۔ یہ
انڈ کی ابنی خوبیوں کے ساتھ لعفی خامیوں کا بھی حامل ہے گولف اجنبیت
کے باعث کئی نام صحیح طورسے نہیں بڑھ سکے ۔اسی طرح اسائے حجرافیہ
میں ممی کئی اغلاط موجود ہیں۔
میں ممی کئی اغلاط موجود ہیں۔

ایک علط می ازاله کارت صرت مجدد الف ثانی قدی سره ایک علط می ازاله کارت صحیح اید نیش پرلیما نورا حدام تسری روم

کامرتب کیا ہوا ہے لیکن ایک متفام بداس کے صفح بزرگ کو سہو ہواہی ۔ جمائگیر کے المحصول سکھوں کے گروار جن کے قتل کی خبر جب صفرت مجددالفانی قدس مسرؤ کو ملی تواتب سنے اس پر ٹری خوشی کا اظہار کرتے ہوئے نواب مرتفیٰ فان فرید بخاری کے لیے جذبات سے آگاہ فرمایا ۔ فان فرید بخاری کے لیے جذبات سے آگاہ فرمایا ۔

" دریں وقت کشتن کا فرنعین گویند والی اوبسیار خوب واقع شد" که بهاں مولانا نوراحمدامرتسری مرحوم کوتعیم متن کے دوران خط کشیرہ الفاظ پڑھنے میں غلط فہمی ہوئی ہے اس کے مقابلہ میں مولانا امرسری سے پہلے کی اشاعتوں میں بیرحملہ لیرن نقل ہواہے۔

دري وقت كثين كا فرلعين كويندوالب يار خوب واقع شديك

مولانا امرتسری نے عربی وفارسی فاعدہ کے مطابق کے یوں پڑھ لیا "کافر تعین گوبند وآل او ..... یعنی گوبند وال کو مرحوم نے گوبند وآل اوسمجا ہو چیمے نہیں ہے ۔ اس لیے کہ گر وگوبند کا زمانہ صفرت مجدّد العث ثانی کے وصال ۱۳۲۸ہ مورد کے بعد یعنی ۱۳۷۵ - ۱۲۰۸ء کا ہے انہوں نے مکتوبات کے حاسف یہ میں خود ہی گوبند کو اورنگ زبیب کا معاصر بتایا ہے ۔

حفیقت یہ ہے کہ حضرت مجدد العث انی قدر سرفے نے کسی سکھ گرو کا نام نہیں ایکھا بلکہ سکھوں کے مذہبی مرکز گویندوال کو ہدفت تنقید بنایاہے کہ اس مرکز گریندوال میں سہنے والے کا فر سے قتل کا واقعہ بہت نوب ہے۔

گریندوال سکھول کا فکری و مذہبی مرکزتھا ، ولم ان کے اہم گردوارے موجود ہیں گرواس کے اہم گردوارے موجود ہیں گروامرواس (۱۵۵۲-۱۵۷۹ء) کا گردوارہ بھی سیسیں ہے اوران کی بذہری تا گرینھ تھی اسی متقام میزئر نگرانی گروارین (۱۵۸۱-۱۹۰۹ء) مرتب ہوئی تھی ۔ گریا گریندوال تھول کا مذہبی وفکری مرکز تھا اسی لیے احمدشاہ درانی نے ایک حملے کے دوران اسے جلا کر خاکمتر کر دیا تھا لے گریا صفر سے مجد دالعت ثانی کا اشارہ گرواری سے قتل سے متعلق ہے جو ۱۹۰۱ء کو ہوا گروگو بند شکھ کا اس سے کوئی تعلق نہیں ہے ۔ کے نہیں ہے ۔ کے

بعض اہم امورانجام دینے کی ضورت کمتوبات صنرت مجددالفٹانی عض اہم امورانجام دوران قدس مرائح کی شرح کے دوران یاس کے علاوہ متفل عنوانات کے تحت بعض اہم امور کی انجام دہی لازم ہے جن میں سے چنداشارات الاستظر ہوں۔

ام محتوبات كادبگرلسر بیر کاب ك زان در العن ان قدس بمرفه اسمحتوبات كادبگرلسر بیر الم محتوبات كادبگرلسر بیر الم محتوبات كادب الم محتوبات كادب الم محتوبات المحتوبات الم

اس عنوان کے تحت کیا ہے مسائل کا احاطہ کیا جائے جن کا

٢ مِمانْلِ عُصر محبِّد والفَّ ثانى قدس مُ

تعلق حضرت مجد والعث انی قدس مرف کے زمان حیات (۱۹۹-۱۰۳۲ مر۱۶ ۱۰۹۲۱)
سسست اکر اس منظر ولی منظر میں بیر مجا جاسکے کی محتوبات حاصر کے مولف کے
افکار وفیالات کس ماحول میں بیروال چڑھے، نہیں کن سیاسی، سماجی اور فاہبی مسائل کا
سامنا کرنا پڑا اور آپ نے ان مسائل میں لینے افکار کو کیسے محکم بنانے کی سعی فرمائی ؟
ایمن حکران طبقہ جو ماحول کوسنوار نے اور دیگا ڈسنے کا ذمر دار ہوتا ہے خود کن خیالات
کیا مالک تھا ؟ اور ان کے ان افکار نے اس عمد کی معامشرت کو کس حد تک مناثر
کیا ؟ اسس عمد کا مذہبی طبقہ بین علماء وصوفیہ کن معتقدات کے مامل نے ؟ اور کوم
بیران کے تھا مذہبی طبقہ بین علماء وصوفیہ کن معتقدات کے مامل نے ؟ اور کوم
بیران کے تھا مذہبی طبقہ بین علماء وصوفیہ کن معتقدات کے مامل نے ؟ اور کوم

اس سائے ہیں منظر کو جانے بغیر کمتو بات شریعت کے مندرجات سمجھ آپی ہیں سکتے مشلا آپ فراتے ہیں .

میں اس سے قبل کفاراعلائمیہ غلبہ اور زور کے ساتھ دارِ اسلام میں کفر کے احکام جاری کرتے احکام جاری کرتے اگر جاری کرتے اگر ملان اللہ می احکام کے اظہار سے عاجز اور سبے بس تھے اگر مسلمان الیا کرنے کی جزاءت کرتے ترقش کرنے ہوئے۔.....

بادشاہ دنیا سے ایس اس طرح ہے جس طرح دِل بدن سے الگردائیک سے تو بار بدن سے الگردائیک سے تو بدن جو بدن جو بار الگرد ل خوا ب ہے تو سازا بدن خوابی کا شکار ہوگا۔ بادشاہ کی درستی جہان کی درستی ہے اور بادشاہ کا خواب ہونا ملک کو خوابی میں ڈال دیتا ہے ..... واویلا واصیب ہیں ان کے مانے والے تو ذلیل وخوار ہوں لیکن آپ کے منکو وں کی عزت اور ان کا لحاظ ہو ..... زمانۂ ماضی میں جو بلا واقت بھی اسلام کے مر برٹوٹی وہ ابنی علی دسو کی بدولت تھی بادشا ہوں کو بہی علمار سُورا و داست سے مشکلاتے ہیں ساتھ ..... احکام شرع میں ایک تھم کوجاری اور زندہ کرنا خصوصاً الیے وقت میں جب کہ اسلامی شعا ٹرمٹائے جائے ہوں تھا گر عزت اور ان کا برندیں ہو سکتا جو خواری اور زندہ کرنا خصوصاً الیے وقت میں جب کہ اسلامی شعا ٹرمٹائے جائے ہوں تھا گر عزب کی داہ میں کر وڈولا دو بیا خیرات کر دینا بھی اس کے برابر نہیں ہو سکتا جس طرح مسائل سے عیتر میں ایک ملے خیرات کر دینا بھی اس کے برابر نہیں ہو سکتا جس طرح مسائل سے عیتر میں ایک ملے کورواج دیں ۔ بہ

تقریباً ایک صدی سے اسلام کی غربت اور نستی اس حد تک پینیج پی ہے کہ ملاد اسلام میں کفار صرف اس کام کفر کے اجراء پر داختی نہیں ہوتے بلکہ یہ چاہتے ہیں کہ اسلامی احکام بالکل مٹ جائیں اور سلمانوں اور اسلام کا کوئی انٹر ہاقی مذہبے اور ان کی جرارت وب باکی بیال تک پہنچ گئے ہے کہ اگر کوئی سلمان شعائر اسلام کے اظہار کی دلیری کرتاہے تواسے قل کردیا جاتاہے کے

خاص طور پراسلام کا نام سننے تک کیلئے تیار نہیں تھی حضرت مجدّد العن ثانی قدیم سرف نے راسنے العقیدہ امراء وعلی رکوخطوط انکھ کر انہیں اپنا ہم خیال بنایا اور انہیں وقت کی نزاکت سے آگاہ کرتے ہوئے اسلام کے حیج عقائد تبائے اور دین اللی کی مگر دین اسلام کے اصل عقائد سے انہیں آگاہ کیا اور تبایا کہ اس وقت کس طرح ان کا اجراء

ممکن ہے. ترویج شرلیت کا طریقہ بتاتے ہوئے بیت تعقیقت ان پروافنع کی کہاں وقت با دشاہِ اسلام (جہانگیر) کے ممد ومعاون بن جائیں .

املِ اسلام برخود لازم دانستندکه ممدومعادن بادشا ۱ باشند و برترویج شریعت تقویت طند دلالت نمانید که

اس کار خیرکے لیے امراء کی جو جماعت آپ نے تیار کی متی اسے جرگرد ممان دولتِ اسلام گانام نیستے ہوئے دمان دولتِ اسلام گانام نیستے ہوئے خود باد شاہ نے اس میں شمولیت کو اپنی معاد سجھا ہے ۔ بعض طویل مکاتیب صرف عقا مرکے موضوع پر ہیں جو بجائے نود رسائل سے کم

نىيى بىر.

له موروالف ثانی امکتر بات الرا۸ بنام شیخ مرتضلی خان فرید بخاری له ایضاً الریم ٣- اسلام کا دف عاور متوبات میں ہندو سان قدس سرافی اور متوبات میں ہندو سان کے شکانوں اور مندو بات میں ہندو سے ان کے شکانوں اور مند کے بارے میں بہت اہم مواد موجود ہے۔ نقین جب کوئی ہمند دوستان میں اسلام کے باسے میں تحقیق کرسے کا قرم کو بات شرافیت اس کے لیے ایک ناگزیر ماخذ کی حیثیت سے استعمال کرنا لازم ہوگا۔ اس کے لیے ایک ناگزیر ماخذ کی حیثیت سے استعمال کرنا لازم ہوگا۔ ان مکا تیب میں ممل نوں اور اسلام کی زفوں مالی کا نقشہ ہن الفاظ میں کھینچاگیا ہے۔ اس عہد کی کتیب ناریخ اور دو سرالطری پر اس سے پیکسرخالی ہے۔ صرورت اس امر کی ہم بت کر آپ کے عہد کے سامے سام لیے کا کہ کہ تان کی اہم بتت پر مورخان و دنا قدار ذوعیت میں کا کام کیا جائے۔

کی خیر ملم اور محتوبات میں جہان کہیں غیر ملموں کے تعلق اشارات میں جاندوہیں ۔ آپ ملے ہیں وہاں زیادہ تھا مات برآپ کی مراد ہندوستان کے ہندوہیں ۔ آپ کے نزدیک ہندووستان کے مضانوں پرجس قدرا تبلاء کا نزول ہوا وہ وہاں کے مسلمان مکم انوں کا ہندووں کو مراحات نے کہ ان سکے بابران کی بیٹیت نینے کا مسلمان مکم انوں کا ہندووں کو مراحات نے کہ ان سکے بابران کی بیٹیت نینے کا مسلمانوں کی توقیر کے مساوی قرار نے تے ہیں ۔ ہندووں سے جزیر لینا آپ لازم سے مسلمانوں کی توقیر سے مساوی قرار نے تے ہیں ۔ ہندووں کو بڑے ماتھ زیادتی کی مسلمانوں کی توقیر سے مسلمانوں کی توقیر سے مساوی قرار نے تے ہیں ۔ ہندووں کو بڑے ماتھ زیادتی کی مسلمانوں کی توقیر سے مسلمانوں کے باس ایے جائیں اور اگر ان میں سے کسی سے ملے بغیر جارہ کی کار نہ ہوتوان کے پاس ایے جائی جو مرتفئی خان نے دیے سے میں دینے حالت ہیں ۔ نیز آپ نے اس قبی میں کیا ہے جو مرتفئی خان نے دیا۔

بخاری، خان اعظم اورصدرجهان وغیرہ کے نام ہیں۔ عرصہ ہوا راقم احقرنے ایک مفصل مقالہ لعبنوان

Analysis of Mujaddid Alf-i-Sani's Attetude towards Hindus

الکھا تھا اسکین عدم فرصنت کے باعث اس پرنظر انی تامال نہیں ہو کی اور نہ ہی اور نہ ہی اور نہ ہی اور نہ ہی اس کا آہم اس امری اشد ضرورت ہے کہ محتوبات متر اس کا آہم اس امری اشد ضرورت ہے کہ محتوبات متر اس کے ساتھ عصری گتری تاریخ مشرکیت اریخ کی روشنی میں یکجاکر کے تجزیاتی مطالعہ و نیا کے سامنے بہیش کی مباتے۔

ا وحدث الوجود اور وحدث الشهود مصوفيه ك نزديك

مخلف فيهسيط أرسب إس وحدت الوجود كوسفرك على البرابن عربي قدس مطل خوب ترقی دی اور اس موضوع براین گتب میں افکمار خیال فرمایا اسی شا گردوک كى كيترتعدادسني ان سك اس نظريه كتشريجات وترضيحات مي بكست مجيد لكماان کی تصانیَعت کی کمِشرِت شرحیں تحمی گئیں اورعالم اسلام میں اس کا خوب رواج ہوا اس سے مقابل معض صوفیہ کرام سنے وحدس الطہود کا انظریہ سپیشس کیا کرصوفیانہ مدارج کی ترقی کی دوسسری شاہرہ اس نظریہ سے آگے بڑھتی ہے ان اکا بر مثاري يس ستب مايال نام يشخ علادالدوله سماني قدس سرؤ (١٥٩-٣٦-٥) كلب جنوں نے وحدت الوجود کوکشلی طور پر ایک تنگ وجامد مقام قرار دیا اور اسکے مقابل وصدست الشهود كے نظريكوميش كركے كيسے دلائل كيے بوزياد وعلى و قابل مت بول تھے۔ ہندومتان میں سے زیادہ اس نظریہ کی ترجمانی صغرست مجدوالعت انى قدس سرؤسفى اسب كى رومانى تربيت كا آغاز بى تفاكراب ن الله الله الله عنوب بنام شيخ خود معنرت خواجه باتى بالله وقدس سرؤ كولكها كرمج لینے خیالات کی شیخ علاؤالد ولہ قدس سرؤ کے افکار سکے ساتھ زیادہ مناسبت

معلم بحتى ب معقد بير.

و المتب متائق ومعارف على المضوص مخاب توحيد و تنزلات مراتب رائمي تواندمطالعه كروخود را دريس باب بحضرت شيخ علاء الدوله ب ارمناسب مي يا بدودر ذوق و حال درين مشله (وحدت الشهود) بشيخ مشارح اليم تعنق است؛ له

مال دری منکه (وحدت الشهود) بیخ مناز الیه منق است. که
افکار صنرت مجدوالعت ان قدس سرهٔ کی بالیدگی کے سلسله بیں یہ بہت اہم
فقرات بیں بعنی آپ آغاز تربیت سلوک ہی سے خود کوشنے علاؤ الدوله بمن قدی ترفر
کے نظریات سے ہم آئٹک پاتے تھے اور آغروقت تک آپ اسی پرقائم ہے۔
خود فر لتے بیں کرمیر سے شیخ صنرت خاجہ باتی بالشرقدس سرهٔ بھی کھے عرصه
توجودی کامشرب سکھتے تھے اسخوالشرقعائی نے انہیں اس متام سے ترتی دی
اور توجید وجودی جو ایک تنگ راہ ہے سے ترتی کرے کھلی شاہراہ بینی توجید
شہودی منکشف بوئی، آپ معنوب شیخ عبالی محدث دابوی قدر سس سره سے
روایت کرتے ہیں۔

معرفت بنابی قبارگامی صنرت نواجهٔ اقدس النهٔ تعالی سرهٔ چندگاه مشرکب آدید وجدی دامستند .... اما آزر کاری سمانه وتعالی سکال عنایت نولیش اذال مقام ترقی ارزانی فرموده بشاهراه انداخته از صنیق این معرفت خلاصی داد ،میال عبالمی کری از مخلصان ایشان د تقل کردند که پیشس از مرض موست ایشال بیک مفته فرموده اند کرمرابعین البقین معسوم شدکه توحید کوچرالیست تنگ شاهراه دبیگر است به می مرکاتیب میں ان علمار ومشائخ پرافسوس کا اظهار کیا ہے جواس وظلمت میں ترویج شراعیت کے بیلے کوشال سیمنے کی بجائے شب وروزشنے اکران عربی قدس مسرهٔ کی تصانیف پڑھانے پڑھانے ادراس کی شروح سکھنے بیرم تغرق سقے۔ المنت المنت

دراصل ان مانخرین نے شیخ اکبر کا نظریہ وحدت الوجود کی ایسی تشریحات و توجیات کی تعین کہ وحدت الوجود کی ایسی تشریحات و توجیات مکتوبے ذریعے جب ملاحس کشیری رحمۃ اللہ علیہ نے آپ سے یہ دریا فت کی کم شیخ عبدالجیری کی رحمۃ اللہ علیہ نے اکھا ہے کہ تق بھا ہے کہ تق بھا کا لم العنیب بنیں ہے تشیخ عبدالجیری کی رحمۃ اللہ علیہ نے آپ نے غیرت و حمیۃ ہے کہ الم العنیب بنیں ہے تو اس کا جواب نے ہے ہوئے آپ نے غیرت و حمیۃ ہے کہ ان نظریات اوران کی قدم کے جیلے من کرمیری رگ فاروقی حرکت میں آجاتی ہے ان نظریات اوران کی تاویلات کریے والوں سے اس طرح بیزاری کا اظہا دکرتے ہوئے الکھا ہے کہ جمیں نصوص سے کا رسبے فض دفعوص المحکم ابن عربی اسے نہیں جہیں فتو حاست مرینہ نوحات میں نفوحات میں نفوحات میں نفوحات کے بونود میں المخاطرة بابی عربی اسے نبیاد کر دیا ہے آپ کے بونود میں المغاظ قابل مطابعہ ہیں .

فقیرا تاب اسماع امتال این سخنان اصلاً نیست بی اختیار رک فاردقیم در حرکت می آید و فرصت تاویل و توجیراک نمی در خائل آن سخنان (حق بسمانه و تعالی عالم بغیب نیست) شیخ کبیری باشد یا شخ اکبرشامی کلام محرع بی علیه وعلی الرانسواة والسلام در کاراست مذکلام محی الدین عربی وصدرالدین قرنوی وعبدالرزاق کاشی مالانمس کاراست منه فقومات مریخ از فقومات می گیر متعنی ساخته است به مکراس سے بھی زیادہ سخت جملے آب کے مبارک کمتوبات میں جابی ای دو در سے مشرب وحد سے او جودا در اس کے قائلین کے میں جابی کے الدین کے الدین کے الدین کے اللی سے داری کا اظہار ہوتا ہے۔

اصل معاملہ رجوع کا بے بعض اصحاب کا کہنا ہے کہ آغاز میں صفرت محدوالف ثانی قدس مسرؤ نے وحدت الوجود کی مخالفت کی اور اواخر عمریں لیسے

رجوع كراياتها ك

ایک صاحب سیرعبدالقادر مهر بان فخری (۱۱۲۳-۱۲۰۳هر) نے وضدالاجود

کے موضوع پر ایک ضغیم کا ب مسل الاصول کے نام سے ۱۹۳۱ سرکو تالیعن
کی اس میں موصو من نے بہی ٹابت کرنے کی کوسٹس کی ہے کہ صفرت مجددالف ثانی قدس سرؤ نے آخر میں وحدت الوجود کی حمایت کرنا مشروع کردی تھی اور مشرب وحدت الشود سے رجوع کر لیا تھی مولف کے دلائل مبت کمزور ہیں۔ ان کا کہنا ہے کہ ایس نے تبدیدالفٹ ٹانی کے زعم میں جہال دیگر مسائل سے اختلاف کیا ہے۔ وال وحدت الوجود سے بھی الخواف کیا ہے۔ تکھتے ہیں۔

بدانکه ایس بزرگوار بزعم تجدیداگفت نانی مرحنپدخواست کدمسکهٔ وحدست الوجرد را که اصل الاصول معارمت العن اول است بریم ندو دولهذا در توحید شهودی دحمایت متنگمین سعیهای موفوره فرموده تلے

مؤلف نے اس سکسلے میں محقوبات صرت مجددالف ثانی قدس سرؤکے مکتوب ۵۸ (حلوثالث) کو تبوت کے طور پر پیشس کیا ہے حالا نکماس میں ہوت الوجود کے مشرب سے رجوع کرنے کا کوئی ذکر شیں ہے بلکہ علمار وعرفا اکی طرح حضرت شیخ اکبرمی الدین ابن عربی قدس سرؤکی تعربیت وتوصیف کی گئی ہے اگراس امرونظرسے رجوع کرنا ہوتا توکون کی چیز مانع مقی جاتب نے لینے مکاشفات

له محرصا وق جدانی کنتمیری ؛ کلمات الصادقین ۱۸۷ کله مکتوبات ۱۸۷ م کله مهر پان ، عبدالقا در فحری : اصل الاصول ، مرتبه محرکوسعث کوکن عمری ، مراس (۱۹۵ م ۲۲۰-۲۲۵) سے بعد تھیں رج ع بھی ف رمانے الفاظ میں رجوع کرنے کا اعلان کیا ہے۔ لہ جلا النے قدم مسلم کی شفی مخالفت کرنے کے بعد اس سے رہ ع کرنا بے الفاظ میں کیونی ممکن تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ آپ نے بعد اس سے رہ ع کرنا بے الفاظ میں کیونی ممکن تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ آپ نے کہ میں اس سے رہ ع کرنا بے الفاظ میں کیونی ممکن تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ آپ نے کہ میں ان دونوں نظریات کے ماننے والے ایک دوسے کی مخالفت میں انتہالیندی اختیار کرے جادہ اس عمل السے کے ایک برگ سے محمد ادفیار کے جادہ اس عمل است میں انتہالیندی اختیار کرکے جادہ اس عمل اس میں انتہالیندی اختیار کرکے جادہ اس میں موحدین کے اس موضوع پر ایک کتاب صلح الفریقیان فی منع تکف پر صوحدین کے اس موضوع پر ایک کتاب صلح الفریقیان فی منع تکف پر صوحدین کے مامنے الیون کا محمد بائی خدش کے میش نظر محمزت شاہ ولی اللہ محمد میں دولوں گروہ ایک دوسے رکی مختیات کے بیش نظر محمزت شاہ ولی اللہ محمد خوال علی دولوں کے مامنے الیا میں مقال میں میں کتھ جنرات کی ورش شرکی کے میں دولوں کے میں خوال علی برخوالے حدیات کو فروع کرنے کی کوشش کی کھی

صنرورت اس امر کی ہے کرصنرت مجدّد العن نائی قدس سرؤ کے مکتوبات ادر رسائل میں سے نظر بات وحدت الوجود اور وحدت الشہود سے متعلی ہجریہا کو سیجا کر کے دوسے رصوفیہ کے خیالات کے بیں منظر میں ایک جامع گاب مرتب کی جائے بھے

نه مجدوالف فی بمحتوبات ۱۹/۱ متحقال منظی تعلیقات ۱۲۱ و ۵۳۲،۲۹ متحالیف ۵۳۲،۵۳ و مقدم ۱۲۱ می است محدوالف فی به محتوبات این ۲۹/۱ می است جیسے مولانا مبارک علی جدر آبادی نے بست عوق برزی سے فصوص الحکم ایڈ کی اور اس پرا یک مبدوط مقدر استی جبیران دونو امشر اور کا تقابل محاکم یا ایک طرح مولانا ابرا کھن بدفا وقی مرحوم نے ملاع ابعلی مجرالعلم کے رسالہ و حدت الوجود کو مرتب کرتے ہوئے اس کے تواشی میں محتوبات محدرت محبدوالف ثانی قدس سرہ کے بعض متعلقہ اقتباسات بھی دیے ۔ اس کے تواشی میں محتوبات محدرت محبدوالف ثانی قدس سرہ کے بعض متعلقہ اقتباسات بھی دیے ۔ میں کیکن یہ ابتدائی نوعیت کے سطی سے کام بین ایک جامع کا ب کا تقاضا پر انہیں کر سکتے ۔

**♦** > مکتوب البهم کے تراجم اس عنوان سے عمت اسی می فاب او جرکام نہیں بڑا بصرت مجددالفانی قدس سرؤسنے جن اصحاب کے نام خطوط تحریر فرائے تھے ان میں سے اکٹراس عيديي كسى ندكسى طرح قابل توجهمعا شرتي مقام يحقق كقير كقي مبياكهم وصاحب كر ہے ہیں کہ آب نے اس وقت کے سیاسی معاشرتی اور مذہبی مالات کا بخربی وبغورجا أنزه سينف ك بعدجوا قدامات فرطئ ستمان مين سسا أيام قدم بديمي المحايا تماكه داسخ العقيده امرائ سلطنت سسك نام آب سن كالمي مكاتيب تحرير فرائے اور انہيں مالاست كى نزاكت سے آگاہ كيا ادرانیں بہت یا کہ آئیب لوگ بادست ہے تربی تعسیق رکھتے ہی اس لحاظ سے آئی سے فرائض کیا ہیں ؟ ان حالات میں بادشاہ کی ممایت و معادنت کے بغیر مندومستان میں اسلام کر جوضعیت اچیکا سیے اس میں تقوتیت نبیں آسکتی ۔ آپ سے ایک ایک امیرکواس عمدے مالات بتاکر کمس طرح اكبرك زماسني مين اسلام اورسلمانون سكي ساعقه ناانصاني كي كني اورابنين بتأيا که اس وقت بهندو ستال مین شلانول کی جوحالت سب وه تباهی کے دعانے بر کھ طرسے ہیں اگر کچھ عرصه مزید وہ اسی حالت میں سے توبیاں سے اسلام کا خاتمه بوجائے گا النيس ترويج مشريعت كيسيا قدامات كرناه سے اسلامی احکام جاری کرفیانے سکے سیام محرر خطوط سکھے اور ان کی کرسٹسش كواتب سنے كتى بارساع اوران كوستوں كرجباد كا درجه ديا اورمتعدد مرتبه اس ك الميدية المورية موسة الحاكماس وقت ايك مُرده منتسك كوزنده كراما خار کوبہ کئے پاس جا کرنفل پڑھنے سے تھی افضل سے لئے اسے امراء و

term sometil Princillo and

له بم سابتدادراق میں مختلف عنوا نات کے تحت اس قسم کے بست اقتباسات نقل کے بیکے ہیں۔

علمائے حق کے اس گروہ کو" جرگہ ممالن دولت اسلام" کا نام دیا اور خوداس میں شمولیّت کی خواہش کا اظہار بھی فرمایا کے

حبب كاس المكتوب البهم صرات كي صحيح مالات معلوم نه موجائين اس وقت تك حضرت محدوالف اللي قدس سره كى تخريب احيائ دين كام المشن سمعين نين أسكا مكتوب البهم كة تراجم كي ساته مي كتوبات تسراحي مين ارد ہونے والے تمام اساء الرجال کے مالات ملی جنبوکرنا اس طرح لازم سبیح برطح مکتوبات کی شرح مکف صروری سبے - اس عهدے تاریخی لطریجیریں اورعلمار و صوفیہ کے نذکروں میں الشخصیات کے مالات ل سکتے ہیں لیکن باسانی نبیں اس کام کے بلے فن نرکرہ نوسی سے پوری واقفیت لازم ہے تا كمتوباست شرلطين كومضايين ۸ - مکتوبا الی موضوعی ترتیب ادر مطالب کے محافظ سے مرتب كرنااكي الگ كين سب د شوار مرطرب ميي وه موضوع ب حب س حضرت تجدّدالف ثاني قدس سرؤ كے تجديدي كارناموں اور مجتهدان مقام بربارہ است روشنى برسكتى بيركام إس التزام كے ساتھ كي جاسئے كدايك طرف فاري تن مواور دو *سسری طرحت اس کا ارُ* دو یا انگریزی ترحمه ب*هر توانشی مین حل مطالب*الفاظ<sup>و</sup> اصطلاحات كي تشريح اورامادسي مباركه كي تخريج بوان كي مقطاركام اور

له مجددالف الني : مكتوبات ا/١٢٧/ ١٢٢٧

کداس سلطے میں بعض بزرگ صفرات منظ ڈاکٹر غلام صطفے خان اور مولا استیدز وارسین مرحم سنے مکتوبات مفرت مجدالف انی کے آخر میں بطور میر مرابات مقرم کی می فرائی ہے لیکن ان صفرات سکے یہ کام انتے نختہ اب کشخصیت کا تعارف اور مولارہ جا آہے۔ اسی طرح مولا انسیاح دفر بری امروم وی سنے تجالیت را نی میں معظم کوتر ایسم کے مالات بھی ایکھے ہیں لیکن بہت سی شخصیّات سے باسے میں کچھ بھی نہیں لکھا۔

المنت المنافع المنافع

محققین کے تایُدی مقالات ہوں کا کہ اس عہد سکے لیب منظر اور ما حول میں آت ب کی تحریب احیاستے دین سکے مقاصد نوج ان نسل بھی سمجھ سکے اور اسے زمانے سکے حالات سے ہم آہنگ کرسکے لے

# ايك عامع شرح كي ضرور

مکتوبات شراعین کی کئی ایک شروح کا ذکر اس سے پہلے آپ طاب ظارکر

چکے ہیں لیکن ان ہیں سے کوئی ایک بھی تینوں دفتروں کی کامل شرع نہیں ہے۔
ان ہیں سے کسی بھی شارح کو آمال مکتوبات کی جامع شرح کرنے کی توفیق نہیں کو اب ضرورت اس امر کی ہے کہ عصر ماضر کے سائے تقاضے سامنے رکھ کرایک ایسی جامع شرح آلیف کی جائے ہو قدیم وجد پرتعلیم یافت ردونوں کرایک ایسی جامع شرح آلیف کی جائے ہوئی ہو۔ آج ہرقسم کے پرلس اور علمی کھلومات انگنت فرائع سے انسان الا مال ہے اس بی مکتوبات صرت مجدد قدیم کو کی ایک ایسی شرح مرتب کی جائے ہو سرج الغہم ،آسان اور عوام و نواص کے بیانی فاہ الیا تنا وہ ہو۔
مشرح مرتب کی جائے ہو سرج الغہم ،آسان اور عوام و نواص سے بیانی فاہ الیا تنا وہ ہو۔
مشرح مرتب کی جائے ہو سرج الغہم ،آسان اور عوام و نواص سے بیانی فاہ وہ ہو۔
مشقین کے بیان مغید ہو۔ آج پورب میں صوفیا رسکے سلاسل کی علی خدمات پر

وسیع پیانے پڑھیقی کام ہور داسہ یکی افسوس کواب کمک کوئی جامع شرح ان
کی تشکی کو پواکر نے کے لیے کسی بھی پور بین زبان میں نہیں اٹھی گئی ۔ جس کا نیتجریہ کہ پور پین مختقین افکار حضرت مجترد العث نانی قدس سرؤ کے سمجھنے اور سمجانے کے سلطہ میں افراط و تفریط کا شکار ہوکر رہ گئے ہیں ۔عرصہ دراز سے پورپ سے تصوف پرج تحقیقی کا ہیں جھیپ کر آرہی ہیں ان میں ان کی کئے فہی اور ہائے ہے بزرگوں سے منعلق ان کی آرار میں غیر متواز ن تفقید کی اصل وجر ہی ہے کہ ابھی نکس ہم نے اس فرم داری کا احساس ہی نہیں کیا کہ ہائے وجر ہیں ہے کہ ابھی نام ہم نے اس وقیق اور مختل متفیات کے در داری کا احساس ہی نہیں کیا کہ ہائے وجر ہیں ان کوکس طرح آسان بنا کر حبر یہ بیل اور ہمیں ان کوکس طرح آسان بنا کر حبر یہ بیل اور ہمیں ان کوکس طرح آسان بنا کر حبر یہ بیل اور ہمیں ان کوکس طرح آسان بنا کر حبر یہ بیل افتہ طبقات کے لیے کس طرح ادر کس نوعیت کا علمی کام کرنا ہے جوان کی بنیا کی افتہ طبقات سے جوان کی بنیا کہ میں ان کور سے آسان کر سے جوان کی بنیا کی میں اس کور سے آسان کر سے جوان کی بنیا کور سے آسان کر سے کور آسان کر سے جوان کی بنیا کور سے کا مار کور سے کور آسان کر سے کہ تا ہی ہو۔

ہم اپنے مک سے علماء ومشائخ سے توقع سکھتے ہیں کہ وہ اس میدان ہیں آگر نمایاں خدمات انجام دیں سے ہمائے سے ہمائے م آگر نمایاں خدمات انجام دیں گے جس سے ہمائے مک کی علمی دنسی میں مجبی عزت ہوسکے۔

## البيتنات بشرح كمتوبات

اہل علم وعسرفان کے لیے نہایت درجہ نوشی کی خبرہے کہ ہلائے ملک کے نامورعالم وشیخ طریقیت حضرت مولانام حرسعیدا حمد مجددی مزفلاً العالی نے ممتر اللہ علی مقربیا حضرت محبردالف ثانی قدس سرؤ کی شرح سکھنے کا عزم فروایا ہے اور نہایہ محموفیت کے لمی ت میں سے کچھ وقت کیال کرمکتر بات شریف کا گوجرالوالہ میں درس نیٹ اور متوبات کی ایک جامع و مفصل شرع سکے کا پروگرام بایا ہے۔

صرت مولانا مجددی عرصهٔ درازسے یہ فدمت انجام نے سہے ہیں اور ان کے رسالہ ماہنامہ دعوت نظیم الاسلام " (گرجرانوالہ) ہیں یہ نشرح بالا قباط شائع ہوتی رہی سے ، اب اسے از سرفر حالوں سے مزین کرکے کا بی صورت میں شائع کر ہے ہیں۔ یہ شرح " البینات مشرح کمتو بات سے کمتو بات مشرح " البینات مشرح کمتو بات میں کا مسے کمتو بات مشرح اپنی گرناگوں خوبیوں کے باعث کی اعتبار مختری اور مشام رکھتی ہے ۔ ایک نظریں اس کے خصال سس طرح و سیکھے جا سکتے ہیں۔

ا- محتوبات كے مندرجات كوقران وحديث سيه مؤيد كيا كياسي

۲- نفس مضمون كوحل كرف كى جرمكن كومشش كى كئى ب-

۳- مکتوبات میں شامل اصطلاحات نصوف کومپلی مترب اننی وضاحت سرور کر میں میں کا میں میں میں میں مرکز میں میں کا میں

کے ساتھ کمتوبات کے سیاق وسباق میں سمجانے کی کوسٹ ش کی گئے ہے۔

٧- حضرت محدد العن انى قدس سرف خود حنى تصاور كمتو بات مين فقد حنى كم مطابق مسائل كا استنباط كياب، يربحات خود ايك وسيع موضوع ب كم

شکرسے کو کو البیناست نے شرح سکے دوران بداہم فرلیف می انجام شینے کی سعی فرائی سہے -

۵۔ مکتو باست بیں شامل احادیث نبویہ (علیہ الصافرۃ والسلام) کی تحزیج ایک وقیق ترین مرحلہ ہے۔ لیکن آج کے دور میں کہ احادیث کے انڈیکی طبع ہوچکے ہیں اور حدیث سے زخا ٹر کی بیوٹرز میں منتقل ہوچکے ہیں اس بیا اب یہ مرحلہ طے ہوجب؟ چلابیت سے زخا ٹر کی بیوٹ کے اور چلابیٹ ہوائی ہے۔ اور چلابیٹ ہارے شارح بزرگ نے اس مقام پر بھی سعی تمام فرماتی ہے۔ اور حدیث مقتبہ کواس کے اصل متون سے مطابقت دسے دی ہے۔

 ۲- کلتوبات کی شرح کے دوران ایک مطاردر شوار گزارہے کہ اس میں روحانی مقامات كاانداج جس طراقيس مواسي آج كا قارى ان مقامات كوسمجين سب قاصر ب ان مقامات كوصرف ومى محماسكا سب حب ريد واردات بوسك بول ور عملي طور ميروه خود يرخ طرافيت معي مووه إن روحاني كيفيات كادراك كرك اسكى تشرح كرسك بوربها كي بزرگ شارح بونكر نود ايك محقق عالم دين بي اور ندعرف سلسلى عالىيەنقى بندىيى كىكىدى كىرسلاسل طريقىت (قادرىيە، چىتىيە، سېرۈردىيە، شازلىدوغىيطا) کے بیرِ ما ِ ذون ہیں اس سیلے النول نے ان تمام روحانی مراحل کو بڑے احن طریقے >- اس شرح کی ایک اور خوبی بدسے کہ شارح نے علوم اسلامیہ کے متعارف ساسے مآخذ راسنے دکھے کریٹررح کی سبے اور ہرمتمام کومستند بنانے کے لیے ال كے حوارے بھی دیے ہیں گو یا اس شرح برعلمی تحقیقات کم کا رنگ غالب ہے۔ ٨- بركمتوب ميں سے صرف دقيق مقامات منتخب كريكے اس كى تسرت كى كئے ہے۔ 9\_ شارح بزرگ نے اس تشرح میں بدالنزام کیا ہے کہ بیلے محتوب شرایت مع جر صدى تشرح كرناب اس كأفارسى متن نقل كياب اس كے بعداس كاأردو ترحمه دياب اورميراس كي شرح بيان كي سبے اس شرح بير حتى الامكان ايسے تمام ا نکات کیجاکر لیے ہیں جن کا اس إقتباس کے فہم و لفیہم کے سیلے ہونا لازم ہے قابل شرح اقتباس کی کمتوبات میں سے دور سطے رجن جل متعامات سے توظیع ہو ہوسکتی تھی اس مقام رپر دہ بھی نقل کر کے اسے آسان بنانے کی کوششش کی ہے۔ الترتعالى كمتوات كي شارح مصرت علامه محدسعيدا حمد مجددي مظلم كومحت تندرستی کے ساتھ کا مطابی کھنے کی توفیق عطا فرائے کہ وہ اس کی مبارا حالتہ کیل فراسکی<sup> آمین</sup>

> دُعاجِ محراقبال مجدری

۲۲ رابريل ۱۰۰۱ ء

## مفدّمہ کے مآخذ

## مخطوطات

- ۱- بیولر، آرنور ؛ فهارس تحلیلی شنگانه کمتوبات احمد سرمندی ، مسوده مؤلف لوزیان ؛ امرکیه ۲۰۰۰ء (فارسی )
- ۲- شفراحمد معصومی : مقامات معصومی (احوال انعلمات صربت خواجه محدم معصوم مسربندی ، زیرطبع مسربندی ، زیرطبع -
- ۳- صنیادالدین ایکزنی فراهی : صیاد المقدمات لمطالعتر المکتوبات، کمآبی ندمخیجش، مرکز تحقیقات فارسی ایران و پاکستهان ، اسلام آباد - نمبر ۱۰۵ ۱۰۵
- ٧- معراً ين بزحتى : تاسج الحرين داسوال شيخ آدم بزرى طليعة تصرب مجد الفيلني حلد سوم مخزونه كتابئ نه انديا آفس لندن نمبر ٦٥٣
- ۵ مطالی، بالربگیک ، محتوبات مجدد العن آنی ، تخریج احادیث ، مقاله برایه حمول درجه پی ای و محاله برای حمول درجه پی ای و محاله ۱۹۹۸ می درجه پی ای و محاله ای و محاله می در در محاله ای و محاله محاله محاله می در در محاله می در در محاله می در محاله محاله محاله محاله می در در محاله محاله محاله می در محاله محال
- ن و مدت ، عبدالا مدسر بهناري ؛ لطالقت المدينه (سوائخ سفرت خواجه محرسويد بن مصرت مجدد العن ثاني بخيت وتعيل محداقبال مجددي ، زر طبع

## مطبوعات عرني

- > \_ زر کلی ، نجیرالدین ؛ الاعلام ، سیروت
- ٨- كخاله، عمريضا بمعجم المؤلفين، إمبدط عسى، بيروست (س ن)
- ٩- محدسعیدنائطی : تشییرالمبانی فی تخریج احاد سیث مکتوبات الامام الرّبانی ، مطبوعه مطبع فتح الکریم ، حیدرآباد ، دکن ۱۳۱۱ هـ
- · ا- محدم ارد قازاني منحى ؛ الدرا المكنونات النغيسية طبع عكسي يستنبول تركيه (س ن)

المنت المنت

۱۱ مرادی ، محد طیل : سلک الدر سکتبه المثنیٰ ، بغداد

## مطبوعات فارسي

۱۲- احد منزوی: فهرست مشترک نسخه کاست طلی فارسی پاکستان،اسلام آبود (علیموم)

١٢- بدايوني، عبدالقادر بمنتخب التواريخ ، كلكته ، ايشيا كك سوسائلي ، ١٨٦٨-١٨٩٩ ع

۱۴- برالدین سرمندی: حضارت القدس مرتبه مولان محبوب اللی ، لامور ، ۱۹۱۱ ع

ان سیعت الدین تر برندی ،خواجر : مکتوبات سیفیه مرتبه غلام <u>مصطف</u>ے خان ، کراچی (سن)

11- صادق كيا: نقطويان ما بسيخانيان ، تهران ، ١٣٢٠هـ

>١- عبيدالتد ، خواجه : خزينته المعارف ، مرتبه غلام مسطف خان ، كرچي ٣١٩١٦

١٨- فريك كرى؛ ذخيرة الخوانين مرتبه عبيل كي ، كرالي ، ١٩ ١٥- ١٩٠٠

١٩- فضلَ الشرمحددي فنكهاري : عمدة المقامات ، فندروسائيس داد ومنده ١٣٥٥ م

۲۰ کیخه واسفندیار: دلبتان م*زاههب مرتبه رحیم رضا زاده ملک، تهران ۱۳۶*۲ ش ۱۳۰۱ میزید و در دلبتان م*زاههب مرتبه رحیم رضا زاده ملک، تهران ۱۳۶۲ ش* 

۲۱- مجد دالعت مانی مشیخ احمد *مسرخندی* اکمتوبات مرتبه نوراحمد مرتبری اطبع عکسی کراچی

۲۲- محد إقراله ورى معنى اكترالهدايات مرتبه نوراحد امرتسرى امرتسر ١٣٣٥ هـ

۷۲- محدصادق بهدانی کنتیری اکلیات الصادقین، مزند محدسکیماً خز، اسلام آباد ۱۹۸۸ء

۷۲- مخرمحصوم مرمندی بخواجه ، مکتو بات حلداقدل، دوم مرتبه غلام صطفے خان ، حلیوم سرتبه نور احمدامرتسری ، طبع عکسی حیدرآباد ، مستده، ۲۶۱ء

۲۵- محدنقت بند ثانی، خواجه، وسلیترانقبول الی التدوالرسول ، مرتبه غلام مصطفے خان و حدر آباد بسندمد، ۹۲ ۱۹ء

٢٦- محد كاشم كشمى ، زبرة المقامات ، تكفو ، طبع لوكشور ، ١٣٠٧ حد

۲۷- محدمولی امرتسری به کیم : مقدمه کمتو بات! ام ربانی بمشموله اُردوزر حبراز مولوی محرمید نقشبندی برکراچی مبداول ، ۱۹۷۳ء

Martin Company Color (Section 2)

⊒∯(∧∧)₩E

مهربان،عبدالقادر فخزی: اصل الاصول، مرتبه محدوسی کوکن عمری، اس ۱۹۵۹

-19

-1.

نصرالتر جوننی مولوی: مشرح مکتوبات امام ربانی کابل ۱۹۷۳ و تین طبد) نصرالتر جوننی مولوی: طبقات اکبری ،کلکته ۱۹۱۳ و ۱۹۳۱ نظام الدین احمد بخشی: طبقات اکبری ،کلکته ۱۹۱۳ و ۱۹۳۱ نوشاهی عارف میتر: فهرست نسخه المی خطی فارشی موزه الی پاکتان ،اسلام آباد وحدت ،عبدالاحد سرمندی ،گلش وحدت ،مرتبر عبدالشرطان فاروتی ،کارچی ،۱۹۲۸ - 41

متقیم زاده ،سلیمان سعدالدین آفندی بشحفتهٔ انخطاطین ، استنبول ، ۱۹۲۸ء

بحرالعُكوم ،علامهِ عبالعلى: وحدست الوجود ، ترحمه الوانحن زير فاروقي، دلمي، ١٩٩١

راج احمد خان: مکتوبات امام ربانی کی دینی ومعاشرتی اجمیت ، کراچی، ۱۹۲۷

غلام على د مُهوى ، شاه : متعامات مظهري ، تَقيتن وتعليق وترجمه محدا قبال محب رُي طبع دوم پلامور، ۲۰۰۱ء

كمال الدين محمراحسان: روضترالقيوميه، لابهور، ١٣٣٥ هـ

نذبيه احمد: اكبري عهد كا فارسي ادب ،مقاله شموله تحقيق شعبه أردوم يونيورسلي دشماره ۱۲-۱۳)

- 39- Buehler, A.F: Sufi Heirs of the Prophet (The Naqshbandiyya and The Rise of Modiating Sufi Shaykh, University of South Carolina press. 1998.
- 40- Story, C.A: Persian Literature, London, 1970.
- 41- Stein, A: Archeological Reconnaissances in North-Western India......London.
- 42- Nizami, K. A: Akbar and Religion, Dehli, 1989
- 43- Wajihuddin, M: Epistles (Trans. Of 213 Maktubat of Sh. Ahmed Sirhindi), Vol.1 Lahore 2000.

النابع المالي ال

# الخطنب

ٱلْحَمْدُ لِلْهِ الْمَلِكِ الْقُدُّ وْسِ السَّلَامِ مُدَيِّرِ اللِّسَكَ الِي وَالْأَيَّامِ الْمُتَفَرِّدِ بِالْبَقَآءِ وَالدَّوَامِ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّكَامُ عَكَلَّى سَيِّدِنَا مُحَتَّدَا فَضَلِ الْآنَامِ وَعَلَىٰ آبِن بَكْرِدِ السَّابِقِ إِلَى الإسكام وَعَلَيْعُمَر الَّذِي إِذَا رَاهُ الشَّيْطَانُ هَامَّ وَعَكَلَى عُثْمَانَ الَّذِي جَهَزَيِمَالِه جَيْشَ الْعُسَرَةِ وَاقَامَ وَعَلَىٰ عكِليِّهِ الْبَحْرِلِ لَخَضِمِ وَالْاَسَدِ الضِّرْعَامِ وَعَلَىٰ سَائِدٍ اله وَاصْحَابِهِ وَاتْبَاعِهِ عَلَى الدَّوَامِ وَنَائِبِهِ وَوَارِيثِهِ في دِينِ الْإِسْكَامِ وَاهِبِ الْفَيْضِ وَالْجُوْدِ وَالْإِكْرَامِ صَاحِبِ الْحَالِ وَالْوَقْتِ وَالْمَقَامِ سَيِّدِ مَنَا وَمَوْلَامَنَا وَمَلْجَأْنَا الْإِمَامِ غَوْثِ الْعَالَمِينَ غَيْثِ الْعَارِفِينَ غِيَاثِ الْكَامِلِيْنَ مُغِيْثِ الْوَاصِلِيْنَ قُدُوَةِ الْوَلَايَةِ

الْمُحَمَّدِيَّةِ حُجَّةِ الشَّرِيْعَةِ الْمُصَطَفْوِيَّةِ بُرْهَانِ الْمَرْتَبَةِ الْقَيُّوْمِيَّةِ سُلْطَانِ الدَّرَجَةِ الْجُدَدِيَّهِ شَيْخِكَ الْأَفْضَلِ إِمَامِنَا الْآكَعُ مَلِ الشَّيْخِ آحْمَدَ الْفَ ارُوقِيّ الْحَنَفِيِّ الْمَانُرِيْدِيِّ النَّفْشَكَبْنِدِيِّ السَّرْهِنْدِيِّ الْعَالِمِ الْوَاصِلِ الْعَارِفِ الزَّيَا فِيَّ الْمُحُدِّدِ وَالْمُنْوَرِلِلْاَ لَفِ النَّا فِي قَدَّسَ اللهُ سُبِحَانَهُ سِرَّهُ النُّوْرَافِيُّ وَعَلَى سَانِرِ اَوْلِيَاءِ أُمَّتِهِ الكامِلِينَ وَعُلَمَاءِمِلَّتِهِ الرَّاشِدِيْنَ وَعَلَيْسَنَامَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ٥ أمَّابَعْدُ

فَاعُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَ انِ الرَّجِيْمِ بِسْسِوِاللَّهِ الرَّحْمُ نِ الرَّحِيْمِ اللَّهِ اللَّهِ الرَّحْوَفَ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَدُوْنَ الآاِنَ اَوْلِيكَاءَ اللَّهِ لَا حَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَدُوْنَ

www.menvener/Lange



عقرب نیرِ عاد فیاللہ صر خوجہ میکے لال<mark>اق با</mark> بدل ہری کیسٹوائیز



مَوْضُوعُ لَا

اسِم النَّطَاهِم كَامَفَهُم ، تَجلَّى كَامَفَهُم ، سَرِسُلُوكَ اسِم انْطابر كَي عَلَى فَطَهُور عُورُولْ كَالباس مِنْ ، تنزر بروشبهم المِم انْطابر كَي عَلَى فَطَهُور عُورُولْ كَالباس مِنْ ، تنزر بروشبهم الطائف عِنْدُوكا تفصيل بان ، حياستِ أبديار وأوليا ر

### مكتوباليه

خواجهٔ بیزنگ الفیالله محمار با فی بالله نقشندی احساری صفرت خواجه محمار با فی بالله دادی قدیم برفوالدیز

من و المعروف برخواجر باقی بالله محتصر المعروف برخواجر باقی بالله مختصر العام المحتصر المعروف برخواجر باقی بالله المحتصر المحتی رخواجه بیزگ ) ہے۔ بیعت و خلافت کا شرف مخرت خواجر المحتی رخمۃ الله علیہ ہے۔ والد ماجد کا اسم گرامی مخروف عالم عبدالسلام خلی سمر قندی قریشی رخمۃ الله علیہ ہے جو لینے زمانے کے محروف عالم باعمل اور صاحب وجد وحال وفضل و کھال بزرگ تھے ۔ محترت خواجہ باقی باللہ قدی مرفر فائب الله قدیم مرفر فائب کی لادت ہوئی اور وہیں شادی فرمائی ۔ آپ کے ناناجان کا سلساؤنسب مخرت شرف آب کی لادت ہوئی اور وہیں شادی فرمائی ۔ آپ کے ناناجان کا سلساؤنسب مخرت شرف ناناجان کا سلساؤنسب مخرت شرف ناناجان کا سلساؤنسب مخرت شرفر فین نے آپ کو میرے النہ بسی سے تعرف مورفین نے آپ کو میرے النہ بسی سے تعرف مرفر فین درج ہے ۔ سے تی بی میں آپ کا شیرو فیسب یوں درج ہے ۔

مصنرت خواجه باقی بالشرین قاضی عبدالسلام بن قاصی عبدالشرین قاصی اجر بن خبین بن حسن بن محد بن احمد بن محمود بن عبدالشرین علی اصغر بن جعفر ذکی خلیل بن علی نفتی بن محد تقی بن علی رضا بن موسلی کاظم بن امام جفرصا دق بن امام محد باقر بن امام فرین برین

بن صنرت امام حبین بن صنرت سبتدناعلی المرتضیٰ بضوان الشرعلیما جمعین . ا به نام طرور به کار میرور ترب می بیدن کار در فرد سر سرکران سرکران

اتب سنے اعظ برس کی تمریس قرآن پاک حفظ کر لیا ۔ اُس دور سے کابل کے مشہور عالم دین مولانا محمدصادق حلواتی رحمۃ الشرعلیہ سسے ٹلنّداختیار کر لیا اور تصور سے ہی عرصہ میں علم وعمل کے افتا سب بن کر حمیکنے سکے اور لیننے زیانے سے اہلِ علم میں شہرت ِوام حاصل کر لی بچین سسے آثارِ تجرید و تضرید اور علامات ِ فصرو درویشی آب کی بیٹیانی سے ظا ہر تھے۔ اسی جنویں آپ نے ما دراء النهر ، سمر قند ، بلخ ، بدختاں اور مبندوستان کے علاوہ مختلف دیار وامصار کاسفراختیار فرمایا۔ مختلف اکا براولیا ، کی صبحت فخدت میں رہ کر ہے شمار روحانی فیوض و برکات حاصل کئے ۔ آپ سرورعالم صلی آعلی آلوم م اور صرت شاہ نقشنبذ بی ری رحمۃ اللہ علیہ کی روحانیت سے بلا واسطہ بطور اویسیت فیضیاب تھے۔

صفرت خواجه مهنگی دحمة الشرطیه نے اشاره فیبی پاکراک کو مندوستان کی طرف ہمجرت کرنے کا حکم دیا اور فرمایا کہ والی ایک عزیز الوجود ہمتی دصفرت امام دبانی کی طرف اشاره تھا ) آپ کے حلقہ ہمیت میں شامل ہوگی جس کے ذریعے تمام عالم منور ہم وہائیگا۔ پینانچے مندوستان میں سلسا دِنقش ندری کو فروغ فینے والے پہلے بزرگ آپ ہمی ہیں جن کی توجہ اپ عالیہ اور انفاس قد سیتے ہندوستان کی قسمت بدل کر دکھ دی ، آپ کے حلقہ فیض وصب سے ہزاروں اولیاء وصلی پیوا ہموئے۔

ہیں۔ نے ہندوسان کے مرکزی شہر دہای میں دریائے جمنا کے کنا رے قلع فیروز آباد

میں تقل قیام اختیار فرمایا۔ آپ کی تشریف آوری سے پانچ چیرسال کے اندراندر وحانی
حلقوں میں انقلاب بریا ہوگیا۔ علی، ومثائخ اورعام المسلین کے علاوہ آمراء سلطنت

میں آپ کے حلقہ بیعت میں شامل ہونے گئے۔ جنانچہ شخ فرید بخاری ،عدالرحم خانخانا
مزا قلیج خان اورصد رجال وغیر ہٹم بھی آپ کے نیاز مندول میں شامل ہوگئے۔ آپ
کی نظر کی یا، توجہ اکسیراور ڈوعا مستباب متی ۔ آپ سے بین خار کرا مات کا خلور ہوا۔ لینے
عظیم روحانی مشن کی تکمیل وقعیل کے بعد بالاخر تمام روحانی نظام صنرت امام ربانی مجد و
العن ثانی قدس سرؤ کے سپروفر کی بروز شنبہ ۲۵ جمادی الاخری ۱۰۱۲ ھ بعد تماز عصر
ڈر اسیم ذات کرتے ہوئے عالم قدس میں جاہینے ۔ اِنّا لِنلو وَانّا الّذِ یَو کُوجُمُون ۔

«نقش بنی وقت " اور " بحر محرف باور "سے تاریخ و فات نکلتی ہے ۔ آپ کا مزار دہلی
میں فیروز شاہ کے قبرشان میں صحون میں دیے متصل واقع ہے ۔

ما در اس مکتوب گرامی میں ترمیر درجوری (وحدث الوجود) کے احوال ومعارف ملحوظه کا ذکرہ جب کر مصرت امام ربانی قدس ستر فی پر اشنائے سلوک میں ترمید وجودی منک شف ہموئی عنی اس کے بعد جب اتب کو توحید وجودی کے تنگ کوچ ہے سے نکال کر قوجید شہودی کے وحدث الشہود) کی شاہراہ پر گامزن فرمایا گیا اور اتب پر توجید شہودی کے علوم ومعارف کو کاب شہودی کے علوم ومعارف کو کاب شہودی کے علوم ومعارف کو کاب مستقب کی تعلیم میں تعلیم کے تعلیم کو تعلیم کی تعلیم کے تعلیم کی تعلیم کے تعلیم کے

The same and the same of the s

## مڪٽوب ۽ ا

در اُثناءِ لاه انقدر بتجلّی اسم الظاهب منتن منتن متجلی گشت که درجیع استیاء بتجلّی فاص علیم ده فلیم ده فلسل مرکشت فاص علیم ده فلیم ده فلسل مرکشت

ترجیم : اثنائے را وسلوک میں حق تعالیٰ اسم ظاہر کی تعلق سے اس ت ر جلوہ گر ہواکہ تمام اشیاء میں خاص تجلی کے ساتھ علیحدہ غلیمدہ ظاہر ہوا .

## شرح

اس محتوب میں اللہ تعالیٰ کا اسم الظّ اهِ رُی تجلّی میں جارہ گرمونا بیان فرایاً گیا ہے للذا مناسب معلوم ہوتا ہے کہ پہلے اسم ظاہراور تجلی کامفہوم واضح کیا جائے تاکہ قارئین کرام کونفسِ محتوب سمجھنے میں آسانی سبے وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِينُق مِسمِ مَنْ ﴿ اللّٰہِ تعالیٰ کے اسملہ سُرِقَ قَفْ مِسمِ سَالَمُ اللّٰهِ تعالیٰ کے اسملہ سُرِقَ قَفْ

الم الظّام كافهوم الم "الظّاهدُ" الله تعالى ك العلاقيفيه الم الظّام كالمفهوم صفاتيرين سے ب قرآن مجيدين ب

هُوَ الْأُوَّلُ وَالْأَخِرُ وَالظَّاهِ مُرَّوَالْبَاطِنُ وَهُوَيِكِّلِ شَيْءِعِلِيُّ مُّ الْمَالِمِ وَهُوَيِكِيِّ الْمُعَالِمِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلِي اللّهُ عَلَيْكُمُ الللّهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلِي اللّهُ عَلِي الللّهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَيْكُمُ اللّهُ عَلَ

بيهٖ فَيُ وقت صرت قاضى ثناءالله بإنى بتى مجددى رممة الله عليه رقمط از بير. وَالظَّاهِ رُفُوْقَ كُلِّ شَنْئُ آئى كَيْسَ هَوْفَهُ فِي الظَّهُوُ رِشْكَى مَ لَهُ توجه، الظاهر (برشے سے فق سبے) یعنی ظہور میں التُرتعالی سے بڑھ کرکوئی شئے نہیں اور التُرتعالی کائنات میں سب سے زیادہ ظاہر ہے ملائے ہوئی برایک حدیث مبارکہ سے حکریم شئے مبارکہ سے حکریم شئی برایک حدیث مبارکہ سے حکریم شئی اللہ واللہ کیا گیا ہے جس میں آ قائے دوجہاں ملی التا فی کے اللہ واللہ اللہ واللہ وا

عنرت علامه اسليل تحقي رحمة التعطيم وقمطرازين -

وَالظَّاهِ مُرَ وُجُودُ الْكَ ثُرُّةِ دَلاَئِكُهُ الْوَاضِحَةُ لَهُ ترجی ایعنی التُرتعالی لینے وجود کے اعتبار سے ظاہر ہے کیزکہ ال کے وجود ہرکٹرت کے ساتھ واضح دلائل موجود ہیں۔

حضرت علامم سيدم محود الوسى (بغدادي مجددي) رحمة الشرعلية تحسيرير
 ترور

روالظَّادِمُ بِأَنَّهُ مُحِيْظٌ بِالْآشْسَاءِ ع

ت رجم ، الله تعالى ك ظامر مون كامعنى يرب كه وه تمام اشاء ير محط وغالب ب .

رُوالظَّاهِرُ) أَيْ بِوُجُودِم لِآنَّ كُلَّ الْوَجُودَاتِ بِظُهُورِمٍ تَعَالَى ظَامِرُ عَهُ

الدابن احبرمات ، مله تفييروح البيان ، مين تلك على مين المعاني الم

تر الله تعالى ظام رہے يعنى كين وجودك اعتبارست كيونكر تمام موجودات الله تعالى كے ظهورسے ہى ظام ہيں.

﴿ حضرت محى الدين ابن عربي رحمة التعليم رقمط الزين .

روَالظَّاهِ مُنَ اللَّهِ مَظَاهِ مِنَ الْأَكُوُّ اِن بِصِفَاتِه وَاَفْعَالِهِ لِهِ الْمَكُوُّ اِن بِصِفَاتِه وَافْعَالِهِ لِهِ اللَّهِ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ الللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ الللْمُ الللْمُ الللْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

## شجلي كالمفهوم

تَجَلَى الشَّكَيُّ أَنْ تَكَمَّنُهُ وَ وَبَانَ وَظَهَرَ " لَهُ
 يعنى تجلى كسى سنے كے منكشف اورظام موسف كانام ہے ۔

تعلی کے معنیٰ ہیں جیکنا ، ظاہر ہونا ، منکشف ہونا ، صوفیاء کے نزدیک تجلی
 کا تصوّر ہے ہے کہ ذات حق تعالیٰ لور ہے بیر نور گویا جب صور توں پہلو پارگر
 ہوکر جیک ہے تو وہ اسی تجلی کوظمور ، سریان اور نظیر سے تعبیر کرتے ہیں۔

حضرت سيد شرابي على بن محد حرجانى نقتبنك دممة الترعليه اصطلامات صوفياء
 کے بیان بیس تحریر فرمات ہیں۔

© حضرت فاضى ثناء السُّر إنى جيّ مجرّدي رحمة السُّر عليه فسروات مي \_

البيت الله المحالية ا

اَلَتَجَيِّلَ ، طُهُوُرُ الشَّكَى فِي الْمُؤَتَّبَةِ الثَّانِيَةِ كُظُهُو دِزَيْدِ فِي الْمِوْلُونَ وكسى شَعْ كے دوسسرے مرتب مین طہور کو جتی كتے ہیں "بعید زید كی مورث كا آئينے میں ظاہر ہونا -

© تصريت امام رباني مجدّد العن ثاني قدس مرو العزيز تحب تي كامفهوم لي المضح

فرات ہیں : تجتی عبارت از طرشی است در مرتبہ انی یا الث یا رابع إلی ماشاء الله عند یعنی سی شئے کے دوسرے یا تیسرے یا چوتھ مرتبے میں (جمال تک اللہ تعالیٰ جاہے) ظامر ہونے کو تجتی کہتے ہیں .

المدر المار الماري الماري الماري الماري الماري الماري المارية الماركة فكمت المارية الماركة فكمت المارية المار

## توحيشهودي درتوحيدوجودي

حضرت ا مام ربانی قدس سرّۂ فرائے ہیں . وہ توجید جو اس بلندگر وہ صوفس اوکو داہ سلوک دفقر میں میسّر آتی ہے دوسم ہے ہے۔ توجید شہو دی اور توحید وجو دی ۔

توسیر شہوری ایک ذات کو دیجینا ہے لینی سالک کامشہود صرف ایک ہی ذات ہوادر توسید وجودی ایک بی ذات ہوادر توسید وجودی ایک ذات کو مرجود وجاننا اور اس کے غیر کو معدوم خیال کرنا ہے اور معدوم خیال کرنا ہے اور معدوم خیال کرنا ہے اور معدوم خیال کرنے ہونیا ہیں توسید وجودی علم الیقین کی قسم توسید وجودی علم الیقین کی قسم سے اور توحیر شہودی عین الیقین کی قسم سے اور توحیر شہودی الیقین کی قسم سے سے ۔ توحیر شہودی اس راہ کے صنروری الموریس سے ہے ۔ کیونکم بغیران کے

فنامتحقق نهیں ہوتی اورعین الیقین کی دولت بھی اس کے بغیرمیتسرنہیں آتی کیزیجہ اکی ذات کے غلے کے باعث صرف لیے ہی دیجینا اس کے ماسواکونز دیکھنے کومتلزم ہے بخلاف توحید و ہودی کے کہ وہ اس طرح نہیں اور بیر صنہوری نہیں ہے كيون علم اليقين توحيد وجودي كى معرفت كے بغير بھى مصل بسے نيز علم اليقين اس ذات کے ماسوا کی نفی کومستلزم نہیں . نهایت درجریہ ہے کہ اس کے ماسوا کے علم کی نفی کومستلزم ہے خبب کراس ایک کے علم کاغلبہ اور زور ہے کے برنیم مشائع کی اصطلاح میں سیر بطالف کے دوران جب سالک برمجبت بدنیم مسرکر اللیہ میں نور حق کا اس قدرغلبہ مہوجائے کہ است یاء کا ثنات غلبه شهود حق كى معيت ميں عين حق نظر كنے لكيں تواس مرتبے كو توحيد وجودي كيتے ہیں۔ اور اگر اشیائے کا تنات سالک کی نظرسے گم ہوجائیں اور اسٹ بیا، کے یردول کے پرے جمال حق کامشاہرہ ہوجائے تواس کو توجید شہودی کہتے ہیں۔ توحید وجودی تعلیفہ روح سے ظاہر ہوتی ہے یا یوں کہرلیں کہ توجید وجودی کا اصاس لطيفة قلب كى سيرمين بهوتا ہے حب كر ترحيد شهودي كا إدراك فنائيت لطائف

# توحير وجودي كى اقسام

واضح کے کہ اس محتوب گرامی میں مصرت امام ربانی قدس سر و العزیز فیصد وجودی کی ایک خاص قسم بیان فرمائی ہے جو آپ پر ظاہر ہوئی ورنہ توجید وجودی کی تعبیرات اور اس کی اقسام صوفیائے وجودیہ کے نزدیک مختلف ہیں جیسا کہ انگی کتابوں سے ظاہر ہے۔

قارئین کی معلومات کے لیے پانچ قسمیں درج کی جاتی ہیں ۔ يهل قنم ؛ سالك لين أب كوعين حق ديمان -دوسری فقمہ: سالک لینے آپ کوظل حق دیجھا ہے تيسري كتمم: سالك بين آپ كواورعالم كوحق تعالى كامظهرا وراتينه مجماب. پوتھی قتیم اعلم کے ساتھ اللہ تعالی کے احاطہ کو احاطر ذاتی جانتاہے۔ بالخوين مم إ. عالم كے ساتھ اللہ تعالىٰ كى معتت كومعيت واتى جانتا ہے ۔ حق پرہے کہ اللہ تعالیٰ کا کا ننات کے ساتھ احاطہ اور معیت ذاتی مرا نہیں علمی ہے صوفیائے وجود سر کی مذکورہ بالا تعبیرات کوان کا مرا عقيده نهيدسمجنا جاسيئے ملكه غلبهٔ حال اورسكِر وقت پرمحمول جاننا چاہيئے كيونكمہ أَنَا الْحَقّ اور سُبْعَانِي مَا اعْظَمَ شَانِي الررمعادُ الله) الكاعقيده موا تو وہ نمازوں سمیت تمام احکام شرعیہ کی بابندی کس لیے اور کیوں کرنے ہے؟ جب كه وه تقولى اوراتباع شريعت كي اعلى منزلوں بريمي فائز تھے جبيا كرهزت منصور حلآج رحمته الترعليه كمتعلق مشهو ليب كه وه سرروز وشب مين فرائض کے علاوہ ایک ہزار رکعات نما زنفل ادا کرنے تھے لے تمام اشاء من تحتربهم ظاہر طهو کا فهم

تمام اسیاء میں کا کہ ام طام کے اگر ممفوم میں میں میں میں میں میں اسیاء میں کا کہ اس طام کے طام کو کا تفہوم میں مصرت امام ربانی قدس میرؤ فرط تے ہیں۔
"اشائے راہ سلوک میں حق تعالیٰ اسم طام رکی تجلی سے اس قدر مبلوہ گر ہوا کہ تمام اشیاء میں خاص تحلی کے ساتھ علیمدہ طام ہر ہوا ؟
اس مضمون کو سمھنے کے لیے درج ذیل تھائق پیش نظر سبنے چاہئیں ؟

 ﴿ طربق سلوک میں جب سالک کامراقبات اسماء وصفات سے گزرہ ا جے توسالک کے لیے چار اسماء یا چار صفات کی سیر بنیادی ارکان کی حیثیت رکھتی ہے اور وہ یہ ہیں الدوّل والدخے کو والظاھر والباط فی

ان مراقبات میں آئیتِ مبارکہ کھُوالْاَوَّلُ وَالْاَحِرُ وَالطَّاهِمُ وَ وَالْسَامِهُ وَ الْسَامِ اللّهِ مُو وَالْسَامِ وَالْسَامِ وَصَعَات بِرَغُور وَتَدَرِّست سالک پر النباطِنُ کامفهم واضح ہوتہ ہوتے ہیں۔خاص کراہم اَلطَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ سالک کے دومانی عروج کے لیے دوئرِیا دو بازوہی جن کے ذریعے عالم قدس کی کے دومانی عروج ہے۔ طرف پرواز ہوتی ہے۔

صوفیاء کے نزدیک اسم الظّاھِ۔ ٹی تجلیات کامقتفلی یہ ہے کہ السّاتعالیٰ ہرچیز پر غالب اور محیط ہے اور ہرشیٰ سے اس کے جارے ظاہر ہوئے ہیں اور اسم الْبُ اطِنْ کی تجلیات سے یہ راز کھلتا ہے کہ وہ ہرشیٰ کی ذات سے میں اور اسم الْبُ کے زیادہ قربیب ہے ان دونوں اسموں کی سیّرے ذات سے میں اس شی کے زیادہ قربیب ہے ان دونوں اسموں کی سیّرے سالک کولقین ہموجا تا ہے کہ تق تعالیٰ ظاہر اتنا ہے کہ ہر چیز کا وجو داس کی نات پر دلالت کرتا ہے اور ذری سے لیکر آفتاب تک سب جھواس کے وجود کی شہادت دیتا ہے اور باطن اتنا ہے کہ قرب کے باوجود ہرشی اس کے تعقق کی شہادت دیتا ہے اور باطن اتنا ہے کہ قرب کے باوجود ہرشی اس کے تعقق کے ادراک سے عاجز و قاصر ہے۔ یہ

برگِ درختانِ سبز درنظ<sub>ِ ہ</sub>وشیار ہرورق دفتریست معرفت کردگار

صوفیاء کرام کے مطابق سیراسماء وصفات کامفہوم اِس ایت سے ماخوذہہے.

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوْهُ بِهِكَ لَهُ

البيت الله المرابع الم

الله تعالى كاسماء وصفات تولاً تنابى بين كين ان سب كا اسماء من مرجع نناؤه اصول مناهيه كي طرف هي انهين اسمائة عنى استعمال المائة عنى المسائد عنى المائة عنى المائة عنى المائة عنى المائة عنى المائة الم

سے تعبیر کیا جاتا ہے۔ اسماء سن کامریح آٹھ اصولوں کی جانب ہے جنیں امہات اسماء امہات اساء کتے ہیں اور وہ یہ ہیں سیات، علم، قدرت، ادادہ، سمع ، بصر، کلام اور تکوین نیتجنا ان تمام اساء کامریح ایک ال کی جانب ہے اور وہ اسم الشرہ ہے جوجا معہد جمیع اسماء اللیہ کا اور شامل ہے جمع صفات اللیہ کو۔

ع بب جمع صفاتِ الليه كو-مرد كائنات صلى التي الله والله وا

ترجیس بیانگ الله تعالی کے ننانوے اساء ہیں جس نے ان کا احصاب کرلیا وہ جنت میں داخل ہوا۔

يهال احصلية اسماء مساء مراد اسمائة تقالى مسيم تعقق اور تنخلق مونا من مراد اسماء كا وظيفه كرنا اوران كالمفظ بالتحرار يا شار مراد نهيس -

دوائر مجست میں بہلادائرہ اسادکا ہے۔ سالک بہتدی جب
دائرہ اسماد مسلی بہنے سک تو اسم سے ہی لینے دل کو تسال ہے۔
لیک ہے۔ اس دائر سے میں سالک کو معرفتِ ذات بواسط اسما، کی تعلیم دی جاتی ہے۔
دو مرا دائرہ صفات کا ہے۔ اس دائر ہے میں سالک دائرہ صفات کا ہے۔ اس دائر ہے میں سالک دائرہ صفات کے برتو سے فیض یاب ہوتا ہے درکائنات

البيتنا ١٠٢ الإستانا المحالية البيتنا

یں ہرطرف التٰرتعالیٰ کی قدرت اورصنعت کے نموسنے اس کی صفات کے مُظهر نظر کتے ہیں۔ اس وائر سے میں معرفتِ ذات بواسطہ صفات کی تزیریّت ہی جاتی سہے۔

دائرة ذات عبسر دائرہ ذات کاسہے۔اس دائرسے کی وُسعت لامحدور دائرة ذات سبے۔اس میں نہ اسما ہیشس نظر ہوستے ہیں نہ صفات

بلكراس مين معرفت ذات بلاواسطد اسماء وصفات كاسبق دياجا تاسيه.

سير دوائم سير درائم الظاهد سير درصفات التي انحر درائم الظاهد سير درصفات التي انحر درائم الظاهد سير درصفات التي انحر درائم الما المست ذات محوظ گردد تعالى وتقدش وسير درائم المباطن نيز مرح پرسير و الما المردولوش اما درضمن انها ذات تعالى وتقدمس گشة مثلاً درصفت العسلم ذات تعالى اصلاً معوظ بيست و درائم العلم لمحوظ ذات است تعالى دربس پرده صفت زيرا كم علم ذات است كه مراورا علم است - خالت يي في العيليم هو الإست والمباطن الإست عرالظ اهر والعلم است - خالت يي في العيليم في الإست والباطن وقيل على هذا سيائر الصفات والاست الما في المست في في الموسلة والمنسوال المون

ترجیس :- ہم الظ اہر کی سیرصفات میں ہے بغیراس باسکے کہ اس کے ضمن میں ذات ملحوظ ہواور اسم المباطن کی سیرعی اگرچر اسماد ہیں ہے لیکن اس کے ضمن میں ذات ملحوظ ہواور اسم المباطن کی سیرعی اگرچر اسماد ہیں ہورجزت ذات سے حجابات ہیں ۔ مثلاً صفت علم میں ذات ملحوظ ہے کیونکو طبیم ایک ذات ہے اسم علیم میں پردہ صفت میں ہیں ہیں میں الظاہد کی سیرسے اور علیم میں سیراسیم اللاطان کی سیرسے واقی تمام اسماد وصفات کا حال اسی قیاس برسے۔

مكوُّ البيت مكوُّب على المرابع المحوِّد البيت المحدِّد المحدد ال

مراقب سم الظامر مع الظامر من القام الظامرين الثناء فيض وه ذات تعالى مراقب مراقب مراقب مراقب مراقب مراقب الكلام الظامر مع الطاقب من المراقب الكلام المراقب الساء وصفات كى تجليات ميں بوتى ہے بغير الاخلادات تعالىت تقد من سيراسا، وصفات كى تجليات ميں مظامراسم الظاهد كى سيرہ اور مالك كى سير تجليات است والباطن كى سيرہ الماء صفات ميں مظامر تجليات است والباطن كى سيرہ الماء صفات ميں مظامر تجليات است والباطن كى سيرہ الماء صفات ميں مظامر تجليات است والباطن كى سيرہ الماء صفات ميں مظامر تجليات است والباطن كى سيرہ الم

سيروسنوك

سئیروشلوک کامقصد تصفیهٔ باطن اورتزکیهٔ نفس کے ذریعے حجابات کو دور کرنا ہوتا ہے - (خواہ بیرحجابات وجوبی ہوں یا اِسکانی) تاکه مطلوب کے سامقہ بے کیفٹ وصلِ عربانی رہے پر دہ وصال ، حاصل ہوسکے .

سالک کے ایک مال سے دوسے رمال ، ایک تجلی سے دوسے رمال ، ایک تجلی سے دوسے دوسے رمال ، ایک تجلی ہونے کا نام ہے .

سيردوقسم برهد سيرافاقي اورسيانفسي جيساكه آيت قرآني هيد.

َ سَكُمْرِيُهِمُ ايَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِيَّ اَنْفُسِهِمُ لَهُ يعنى ہم انتيں دکھاتے ہيں اپنی نشانیاں آفاق وانفس ہيں

آفاق سے مراد کائنات ہے اور اُنفس سے مراد اپنی ذات ہے۔ آفاق اُور اُنفس کے درمیان اجمال و تفعیل کا فرق ہے۔ دونوں اللّٰہ تعالیٰ کی نشانبوں کے

ممل ومنظر دہر جن سے حق تعالیٰ کا پتر جیں ہے۔ سیراِ فاقی میں تجلیات اساء وصفات کاظہور ہوتا ہے اورسیرانفسی مرتجایا ذات کاظہر موتاہے۔ یہی وحبیت کہ سیرآفاقی میں اسم ظام کے معارف وتجلیّات سالک کی تبیہ واوراک ہیں ہماسکتے ہیں لیکن سیرانفسی میں اسم باطن کے معارف وتجلّیات سالک کے احاطۂ إوراک سے وراء ہوتے ہیں کیونکہ ذات کے معارف وتجلّیات، سبے رنگی اور بے کیفی کے سبب سالک کے فہم سے بلند مہوستے ہیں اسی سیلے عارفین نے اسم ظام کے معارف کے متعلق فرمایا.

یعی بس سے السروہ بان کیا اس ی ربان درر ہو ہ ادر اسم باطن کے معارف کے بائے میں فرمایا۔

مَنْ غُرَفَ اللهَ كُلُّ لِيسَانُهُ له

جس نے اللہ کی معرفت حاصل کی اس کی زبان گنگ ہوگئ ۔

خدا تک پینچنے کا وہ راستہ جو بطریق مجاہرہ یا بدر بعیر سیکشنی عیانی طے کیا سلوک کہلاتا ہے ۔ سلوک کہلاتا ہے ۔ سلوک کہلاتا ہے ۔

اُس راستے پر است عامت کے ساتھ چلنے فالے اور ساعت ساتھ پاک ہوالکؤی سالک کتے ہیں ، هُوالکؤی مشکی علی الْمقامات بعت الله لا بعب لُمِه الله علی الْمقامات مطابق مقامات مقام

الله تعالیٰ کی صفات اور اس کے مقدرات کو بطریق حال و عارف مشاہرہ (نہ کہ بطریق مجرد عسلم) پہچا سننے والے کو

عارف کتے ہیں ۔

#### بليتن اس

○ صوفیائے و تو دیہ کے نزدیک تمام اشائے کا ننات کی صورتوں میں التہ تعالیٰ کی تجلیات ظہور پذیر ہموتی رہتی ہیں اور وہ تمام مخلوقات کو سی تعالیٰ کے ظہورات قرار فیتے ہیں اور اسی بنیا دیر وہ اشیائے کا ئنات کو عین وجود حق تسیلم کرتے ہیں اور امکان و وجوب کو جمع کرتے ہیں جیبا کر حضرت ابن عربی قدس ممرؤ فرلتے ہیں .

سكن صوفيا وشہود بداشيائے كائنات ميں وجود مقى كى بجائے شہود حق كے قائل ہيں اور حق تعالى كى ذات كو كائنات سے وراء الوراء جانتے ہيں اور امركان و وجوب كو اليك دوسے ركى ضد طنتے ہيں اور فرمان كالت على صاجبا الصلوات والشيامات رَأْنَيْ كُرِيِّ فِي اَحْسَن صُوْرَةً لِلهُ اور آيت كريم فَايْنَ مَا تُوكُو فَافَتَ مَرَ وَجُهُ اللّٰهِ سَلَمَ

اس سے اللہ تعالی کا شہود مرادیلتے ہیں اور ذات حق کو صور توں اور جہتوں سے منزہ مانتے ہیں۔ البتہ وہ شکلوں وصور توں کو مظام ظلالِ صفات قرار شیتے ہوئے اس شہود کو مجاز اُنتجی صوری کے نام سے تعبیر کرتے ہیں۔ اور اس قسم کی تجلی کو سیر آفاقی کا حصہ قرار شیتے ہیں.

جیسا کہ حضرت امام رہانی رحمتہ التہ علیہ نے فرمایا . تجلیّا تیکہ درصورحِسی ومثالی وانچہ در میرد ڈالوار است ہمہ داخِل سیرِ آفاقی است تھے یعنی وه تمام تعبیّات جوحسی اورمثالی صورتوں اور مختلف انوار کے بردوں میں سالک کو نظراً تی ہیں وہ سب سیرآفاقی میں داخل ہیں

سلسله عالیه نقشبندیه مجدّدیه می اساء وصفات کے اذکار و تکرار کی بجائے تكحرار اسم ذات واذكارِ نفى اتبات كوزيا ده ترجيح شيئتے ہیں كيونكه اس نببت كامنتهاء مقصود فقط ذات حق ہے بذكه صرف اسماء وصفات يہي وجبر ب كراس سلدك اكابر تجليات ظلّيد صفاتير سے قرار سين بحرثت بلكه تجليات اصلت ذاتب سيصبروسكون باتهي اور ان کی نسبت خاصہ بھی تجلی ذاتی ہے بند کہ صرف تجلّی برقی فافہ کے فر واضح كبے كراسم الظاهر والباطن كے انوار ومعارف كاظهور " ياظاهِ رُيا بالطِ مِ"ك وظيفه وتكرار برموقوف نهيس ملكه ان كاتعلَّق مراقب وعرفان توحیدا درمنازل سلوک ملے کرنے کے ساتھ ہے۔ صوفیائے نقشبندیہ نے سالک کی ترقی کے سیسے ابتداء میں تکوار اسم ذات مقرر فرما یا ہے اورمتوسط ومنتہی کے لیے تکوارِ نفی اثبات مرکاب ماناہے اورمنتہی کے لیے ابتداء میں نماز کے باہر تلاوتِ قرآن یاک اور انتهار میں نماز کے اندر تلاوت قرآن پاک کامشورہ دیا ہے اور سی طرلقة ان كے نزديك وصول إلى التركے يا أنسب وأنبق ب ساِلگ کو ابتدائی مرصلے میں تحرار اسم ذات کاسبق اس لیے دیاجا تاہے كه ذكراسيم ذات جذب ومجبت كا ذرايعهب اورعالم ومجبب كيطرف ميلان ويرداز كامؤ ترسبب ب - فرمان رسالت على صاحبها الصلوات كے مطابق مَنْ اَحَبَّ شَيْعًا اَكُنْزُ ذِكْرُهُ لَهُ

(یعنی جوکسی شئ سے مجبت رکھتا ہے اس کا ذکر بھی کٹرت سے کرا رہتا ہے) ذکر مجبوب، علامات مجبت میں سے ہے اور جذبۂ مجبت ہی © سالک کو کٹرت ذکر پر مجبور کرتا ہے کیونکو مسٹی کی مجتت اسم کی مجتت بر دلالت کرتی ہے۔

متوسط نے لیے تحرار نفی اثبات اس لیے مقرر فرمایا ہے کہ وہ ظلال
کی ولایت سے اصل تک پہنچ - منہی کے لیے تلاوت قرآن اس لیے
صنروری قرار دی جاتی ہے تاکہ طلال اور نفس کی گرفتاری سے فارغ ہوکر
الٹر تعالی سے ہم کلامی کا شرف پائے اور اسرارِ ربانی کو سمجھ سے ۔
و باللّٰہِ التّوفینی ۔

اسم الظام رکی مجانی کاظه تو تورتول کی لباس میں من واتقدر مُنقادِ این طالفه گشتم که چه عرض من نمایم و دربن اِلفت اِمضطر اورم ظهور مکیه دربن کِسوب بوده در بیج جانبوده خصوصیا به منموده کطالفت و محتّنات بوده در بیج جانبوده خرین اِلباس مینموده

از میچ مظهرے ظاہر نمیشدہ بہیش ایثان تمام گداخت میں شدہ میرفتم

ترجس، اوراس وقت میں اس گروہ (متورات) کا اس قدر مطع ہوا کہ کیا عرض کروں اور اس انقیاد واطاعت میں بے اختیار تھا۔ وہ ظہور ہو عور توں کے بیاس میں ہوا وہ کسی اور حکمہ نہیں تھا بخصوصی لطالُف اور مسن و جمال کے عجیب نظار ہے جو اس لباسس میں ظاہر ہوئے کسی اور عظہر میں ظاہر نہ ہوئے۔ میں ان کے آگے لینے آپ کو پانی کی طرح پھھلا ہوا محدوکت تھا۔

شرح

مقدّمه کے طور پر بیامر ذہن نے کہ صنوفیائے شہودیہ کے نزدیک ممکنات کی حقیقت ، عدم محص ہے۔ جب اللہ تعالیٰ کا نات بنانے کا ارادہ فروایا تو عدمات محصہ پر اپنی صفات کے ظلال کا إنعکاس فرمایا جس سے کا ننات وجود میں آگئی ، لہٰذا ہر ہر فرو ممکنات میں اللہ تعالیٰ کی کسی نکسی صفت کے ظلال کا پُر تو موجود ہے نیکن ہماری مادی نگا ہیں اس کے اوراک واحاطہ سے قاصر ہیں۔ البتہ اولیائے عادفین کی باطنی نگا ہیں اس کا ادراک واحاطہ سے قاصر ہیں۔ البتہ اولیائے عادفین کی باطنی نگا ہیں اس کا ادراک واحاطہ سے قاصر ہیں۔ البتہ اولیائے عادفین کی باطنی نگا ہیں اس کا ادراک واحاطہ سے قاصر ہیں۔ البتہ اولیائے مارفین کی باطنی نگا ہیں اس کا ادراک واحاطہ سے قاصر ہیں۔ البتہ اولیائے منافر سے سے مراد تعتقات صفات یا تمثال صفات یی مثال جیسے علم کا تعلق معلومات کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ اور اللہ کی مثال جیسے علم کا تعلق معلومات کے ساتھ اور اللہ کی سے ساتھ کی مثال جیسے علم کا تعلق معلومات کے ساتھ اور اللہ کو ساتھ کی مثال جیسے علم کا تعلق معلومات کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ اور اللہ کی ساتھ کی ساتھ اس کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ اور اللہ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی سے ساتھ کی سے ساتھ کی سے ساتھ کی ساتھ کی سے ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کی سے ساتھ کی ساتھ

قدرت کا تعلّق مقدُورت کے ساتھ ہے۔

تمثالِ صفّات کی مثال جیسے آئینے میں زید کی صورت، تمثال زیدہے. بعض اوقات ظلالِ صفات کو مجازی طور پر صفات کے نام سے بھی تعبیر کیا جاتا ہے۔

متن کی عبارت کے مطابق صن ام مبانی قدیم اور می این قدیم این میں اللہ تعالیٰ کے دوران اشیائے کائن میں اللہ تعالیٰ کے اسے والظّاہِ رُکی تجلیّات کا مشاہدہ فرمایا۔ لیکن خاص طور پرعورتوں کے وجود میں میر تجلی زیا دہ شہود ہوئی تخصیص نساء کی مین وجوم است ہوں کتی ہیں .

انسان میں دوطرح کی قرتیں موہود ہیں۔ قرتبِ هاعله اور قرتبِ
جی وجیم منفعہ لد۔ قرتبِ فاعله الز انداز ہونے کی قرت کا نام ہے
اور قرت منفعہ الر فست بول کرنے کی قرت کا نام ہد عور توں میں اولاد کی
تربیت ورضاعت کی استعداد سے قرت فاعلہ کا اظہار ہوتا ہے اور
نظمہ قبول کرنے کی استعداد سے قرتبِ منفعہ لد ظاہر ہوتی ہے۔ لہذا
عور توں کی فطرت میں فاعلیت اور انفعالیت کی تأثیر کے غلب اور
استعداد کی لطافت سے ہی وحب بخصیص مفہوم ہوتی ہے۔

العالی دور کا معادی و حب العیاس کی جو محتلف الانواع آثیرات کائنا دور مسرکی و محتلف الانواع آثیرات کائنا دور مسرکی و محتلف الانواع آثیرات کائنا دور مسرکی و حب بر دارد موقی ہیں اشیائے کائنات ان تاثیرات کو بقد بظون و صلاحیت صلاحیت و حبود میں اُفذ و قبول کی صلاحیت اور اِفادہ و است فادہ کی استعداد زیادہ موجود سبت لہذا انسے دالظا اِھٹ کی محترت این عور تو میں زیادہ ظاہر ہونا ایک لازمی اور فطری اُمرہ بر محترت ابن عربی رحمتہ السم علیہ نے تحریر فرمایا ہے۔

Win Will

فَشْهُودُ الْحَقِّ فِي النِّسَاءِ اعْظُ مُ الشَّهُ وَدُواَكُمَكُهُ، له يعنى عورت كى ذات مِن حق تعالى كاشهود، اعظم اوراً محمل شهوب عورتوں كے باس ميں اسم الظاہر كى تجلى كا يہ شهود مهمه وقتى اور معمد من وحب والحق نو معمد وقتى اور مائل نو تعلى عليہ السّلام نے كہمى كوه طور ميں اور كھى درخت ميں تجلّى مشہود كى مشاہده فرمايا . يم طلب نهيں كه آپ مستقل طور يوكوه طوريا درخت ميں مسلسل يہ تجلّى في مشہود ہوئى .

#### بيتا

© اس گروہ کا مطع ہونے اور بچل جانے سے مراد معاذ التہ مادی یا جنسی مجت میں ملکہ غیر اختیاری اور فطری مجت مراد ہے اور یہ بھی کسی خاص ور سے میں ملکہ خیر اختیاری اور فطری مجت مراد ہے اور یہ بھی ایک خاص حال کا بیان ہے ذاتی طلب نہیں مبیا کہ اہلِ حال پر ظاہر ہے۔

© قرآن پاک میں اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے۔ سریار کی میں دیر دیں میں میں میں میں

وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِلسَّكُنُ الْمُهَا لِهُ يعنى ہم نے آدم عليہ السلام سے ان کی ہوی (حوّا) کو پيداکيا تاکہ وہ اسسے سکون وراحت يائيں .

شقون وراحت پائلیں . ⊚ رومسسری آتیت مایں ہے۔

وَمِنُ اللِّهِ أَنْ خَلَّقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْ وَلِجَالِتَكُنُو ٱللَّهَا

وَجَعَلَ بَيْنَكُ مُ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً مُّلِانَ فِي ذَلِكَ لَأَيَاتٍ لِقَوْمِ تَيَعُكُرُّوُنَ الْمَاتِ لِقَوْمِ تَيَعُكُرُّوُنَ الْمَاتِ اللّهِ تَعَالَى اللّهِ تَعَالَى اللّهِ اللهِ اللهُ ا

آیات بالاسے نابت ہواکم طلق عورت کے وجو دسے رغبت اور مجت انسان کی فطرت میں رکھ دینامشیت ایزدی کا ازلی تفاضا تھا۔ لہذا انسان عورت کی ذات سے مجتب پرمجبور بھی ہے اور مامور بھی۔

قدرت نے عورت کی ذات میں اسے الظّاهر کی تحقی کا الیانور ووت فرمادیا ہے کہ مردائس کی دیدسے اپنے اندر باطنی طور پر ایک ان جانی کی مائوسیت محسوس کرنے لگتا ہے۔ جیبا کہ حضرت ادم علیہ التلام حضرت حوا کو اپنے قریب دیکھ کہ طبیعتاً اور فطاتاً ان کی طرف راغب و مائل ہو گئے تھے۔ اللہ تعالی کی ورئی سٹے سے صفرت حوا کو ہیدا کر فینے پر قادر تھا لیکن سخوا کو ایپ کے جسم کے ایک صفتے سے بنا کرعورت کی مجست کومرد کے لیے ذاتی مجست بنا دیا نیز اس مجمی تعلق کو دونوں کے کو نکاح کے ساتھ میٹر وط فر ماکر نسبت محدید علی صابحہا الصلوات کو دونوں کے درمیان حدید فاصل بنا دیا تاکہ دونوں کی روحانی وجمانی طمارت کا سلسلہ برقرار کہے۔ درمیان حدید فیل صدید نبویت علی صابحہا الصلوات کو دونوں کے درمیان حدید فیل صدید نبویت علی صابحہا الصلوات کا سلسلہ برقرار کہے۔

حضور سرورعا لم صلى الشعليه والم ني ارشاد فرمايا. محبّب إلَى مِنْ دُنْيَاكُ مُر ثَلْتُ الطِّيبُ وَالدِّسَاءُ وَجُعِلَ قُرَّةُ عَيْنِيُ فِي الصَّلَاقِ لَحَ الصَّلَاقِ لَلْهِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ لَلْهِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ لَلْهِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ لَلْهِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ عَلَيْهِ الصَّلَاقِ عَلَيْهِ الْمُعَالِقِ عَلَيْهِ الْمُعَلِّدِةِ عَلَيْهِ الْمُعَلِّدِةِ عَلَيْهِ الْمُعَلِّدُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللللللّهُ اللللللللللللللّهُ الل

یعنی مجے تمہاری دُنیا سے تین چیزوں کی مجتت دی گئے ہے اور وہ خوشبو

ہے ، عورت ہے اور نماز میں میری انکھول کی ٹھنڈک دکھدی گئے ہے۔
اس حدبیث سے معسائوم ہواکہ حضور صلی اللہ علیہ وظم کے لیے اسما، وصفا کے مطاہر کے مشاہدے کے دوران وُنیا کی پسندیدہ است یا دمیں خوشبو اور نمازکے علاوہ عورت کے وجود میں بھی تنجلی اسم المطاھر مشہود ہوئی .

بن نر مم تجلّیاتِ اسماه وصفات لاتعداد بی اور صفور سرورعالم صلی لتاعلیه م بین ترمیر کے مراتب مثابرات میں بے شار ہیں .

شہودِ مکنات کے مُرتب ہیں آپ اسے الظّاهر کی تجلیّات مثابرہ فرطنے اور شہودِ ذات کے مرتب ہیں اسے مالباطن کی بے کیف تجلیات سے فیضیاب ہوتے عورت کا وجود شہودِ مکنات کا مرتبہ ہے ، خوکشبواور نماز شہودِ ذات کا مرتبہ ہے ، کیو کہ خوکشبوروا کے طیتبہ سے ہے اور اس کا تعلق نفس اللی اور دیج الرحمان کے ساتھ ہے۔ جیسا کہ مدیث میں ہے۔ اِنّی لَاَجِدُ نَفْسَ الدّی حَمَانِ مِنْ هَا هُمَالُ

اور نمازر وُیتِ اللی ، مشاہرۂ ذات اور معارج المومنین کا مقام ہے جیا کہ حدیث احسان میں سیے آن تَحْرِفُ دالله گانگ تَکُان کُا

ینی وحب ہے کہ شہودِ ممکنات کے مرتبے ہیں آپ نے عورت کو اور شہودِ ذات کے مرتبے ہیں نُوسشبواور نمازکو محبوب قرار دیا جب آپ شہودِ ممکنات (مثاہدہ تجلیات اسموالظا ھی سے فارغ ہوتے تر لِیٰ مُعَ اللّٰهِ وَقُتْ لَا يَسَعُرِىٰ فِيْءِ مَلَكُ مُقَرِّبٌ وَلَا نَبِیْ مُرْسَلُ کے

له ذكره السيوطى فى الجامية الكبير واشادالى السن يردوايت ان الغاظ سيم التي بن الدحد نفس الرجن من من قبل السيوطى فى الجامية الكبير واشادالى السن يردوايت ان الغالم سام ميلاً سك قال الامسام السناوى الميد المستوفة المدور الميد المت الله وقت لا يسعى فيه على ولا نبى موسل يذكره المتصوّفة كنيرًا وهو فى الرسالة القشيرية الكن بلغظ لى دقت لا يسعى فيه غير د بى - ويشبه ان يكون معلى حاللة ومديث طويل كان صلى الله على على على قد ديث طويل كان صلى الله على على المتحديث طويل كان صلى الله على على الله و المن واهوية فى مسنده عن على فى حديث طويل كان صلى الله على الله

مرتبرشهودِ ذات دمشائدهٔ تجلیاتِ است الباطن) مین صروف بروباتے لیکن چنکه آپ جامع شهودِ تجلیات تصالندا ایک بهی وقت میں تجلیات معلمه سے تطعف اندوز کہتے ۔ آپ کا ظام ترج تیات است والظّاهراور باطن تجلیات است والب طن سے شاد کام رہما۔

أوصر الترسي واصل إدهر مخلوق مين ال خواص اس برزخ كرامي ميسي حرف مشددكا

#### بلیک استا

و مدین ندکور میں محبت (بلفظ مجمول) فرایا گیا ہے لیے یہ یہ یہ اشیاد میں اسیاد میں اسیا

له شرح قصيده خربيتى ك دفترسوم محتوب نبروا

(ماشیرمتفحدگذشته) ا

وأله وسلم إذا أتى منزله حبر أدخوله ثلاثة اجزاء جزاً يَتْمِ تعالى وجزاً لا هِله وحزاً لنفسه تُعجزاً جزأه بينه وبين الناس لالقاصد الحسنه مثث عاشاتل ترصدى صكا) .

یعن جس قدر بھی باریک نظری کے ساتھ ممکنات عالم کے صیفے کا مطالعہ کیا جاتا ہے حضور صلی الشرعلیرو کلم کا وجودِ مبارک عالم ممکنات میں دکھائی شہیں دیتا ۔

اسی مکتوب گرامی میں پندسطور کے بعد آپ فراتے ہیں

مرجول وجود انسرور عكين وعلى المه الصّلوة والسّكة ورعالم ممكنات

نباشد مكبه فوقِ اين عالمَم باشدنا چار أوراسايه نبود.

یعنی جب حضور سرورعالم صلّی النّه علیه وسلم کا وجد مبارک عالم ممکنات بین سے نہیں بلکہ اس عالم سے بلندسہ تولاز ما آپ کے جم مبارک کا سایہ نہیں ہوسکتا حضرت امام ربانی قدس سرؤ نے سرورعالم صلی النّه علیہ وسلم کا سسایہ

ىنە ہوسنے كى دووجبيل بيان فىرانى بيس

ہبلی دحب۔ بیرکہ آپ کا وجود مبارک عاکم ممکنات سے بلندہے اور شمر ق قرکا نظام ممکنات کے ساتھ وابستہے ۔

> برد برتر ز الخبسم وافلاک زاں نیفتاد سایہ نمشس برخاک

دوسری وجربیسے کہ آپ کا وجود مُبارک نور ہونے کی بناد پرتمسام ممکنات سے تطبعت ہے لہٰذا آپ کے جمر مبارک کی اعلی لطافت کی وجہت آپ کاسایہ کیلئے ہوتا کیونکرسایہ جم سے زیادہ تطبعت ہوتاہے اور آپ کاجم مبارک سائے سے می زیادہ تطبعت تھا۔

© واضح ہوکہ آپ کے لیے ڈنیا میں صرف ہیں چیزی محبوب بنائی گئیراس کی وجہ بیر معسوم ہوتی ہے کہ آپ کی ذات مبارکہ مظیر کمالات ٹلانڈ ٹابت ہ ظاہر ہوجائے۔ میساکہ صوفیائے کرام نے صراحت فرمائی ہے کہ صور کی میائی کا کمالات بشری ملکی اور حتی کے جامع ہیں۔

عورتوں کے نباس میں آپ کے بشری کمال کا اظہار ہوا اور نماز کی صورت

المنت المنت المنافقة المنافقة

میں آپ کے ملی کمال کا مظاہرہ ہوا اور تُوکٹ بو کے رنگ میں آپ کا حِتیّ کمال ظاہر کیا گیا۔ وَاللّٰهُ اَعْلَـمُ جِعَقِیْقَةِ الْحَالِ رَبِّنَا لَا تُـوُ اَحِـنَدُ نَا إِنْ نَسِیْنَا اَوْ اَخْطَأْنَا

مختلف اشاءمين طهور تحبيات

من وهم چنین درطعام و شرابی و کسوت مرا مرا اعرام المتحلی شد لطافت و حینے که درطعام لذیذ پر تکلف بود درماوراء آن نبود و در آئی شدین تا آئی علی شدین همین تفاون شیرین تا آئی تفاون سیس لفاون شیرین همین تفاون شیرین کمال علی تفاون سیس لذیذ و شیرین یک خصوصیت کمال علی تفاون سیس الدر و الدر ما این محلی دا به محربی بود شاید خصوصیات این محلی دا به محربی می می این محلی دا به محربی می می در شاید معربی و شاید و شاید

ترجیس اوراسطی آم الظّاهِ دکی تجلّی کاظهور کھانے ، پینے اور پہننے کی چیزوں میں الگ الگ ہوا جوعمدگی اور خوبی لذیذ و پُرٹمکلف کھانے میں تقی وہ کسی الگ الگ ہوا جوعمدگی اور خوبی لذیذ و پُرٹمکلف کھانے میں تقی اور میسطے پانی میں بھی دوسے ریانی دکھاری) کے کسی اور کھاری) کے

مقابلہ میں ہی منسرق تھا بلکہ ہرلذید وشیری چیز میں خصوصیات کمال میں ہے البنے لینے دیجے کے مطابق الگ الگ ایک خصوصیت تھی۔ یہ خاوم اس تملی کی خصوصیات کو بذرایع تحریر عرض نہیں کرسکا۔ اگر اس نجناب کی خدمت عالیہ ہیں حاصر ہوتا توشائد عرض کرسکا۔

### شرح

کھانے پیلے کی پُر محکف اور لذیذا سنسیا میں وو مری عام اشیائے خور دو نو سنسے باقی اور لطافت کا معلوم ہونا اور میسے باقی سے لیکر پیسے کے اشیابا محکفات عدم سے طور میں آئی ہیں اور عدم مرام ظلمت ، کد ورت اور کڑواہٹ ممکنات عدم سے طور میں آئی ہیں اور عدم مرام ظلمت ، کد ورت اور کڑواہٹ سے میں میں میں میں اور کو داہوں سے مہمنات کے پُر تؤسی وجود کا اس بیا ہوئیں سے اسم سیا و ممکنات میں حوث فر بی اور لذت و صلاوت کی خصوصیات بیا ہوئیں لیکن چو کہ لذیذ کھانے اور سیسے بانی ہیں اِنعکاس کی می یا زیادہ تھا اور غیر لذیذ وکڑوی اشیاد میں انعکاس کی کمی یا زیادہ تھا اور غیر لذیذ وکڑوی اشیاد میں یہ جدا گانہ خصوصیات نظلالے صفات کے انعکاس کی کمی یا زیادہ تی اور ان کے میں یہ جدا گانہ خصوصیات نظلالے صفات کے انعکاس کی کمی یا زیادتی اور ان کے درجات واستعدادات کے اختلاف کی بنا پرمشہود ہوئیں۔ (واللہ انعک کے وختلاف کی بنا پرمشہود ہوئیں۔ (واللہ انعک کے بیا گونہ تھے الحک اُن

رفسنية إعلل

من امادر اننائے این مجلیات آرزوئے رسنیق من اعب بی داشتم

ترجم لین ان تجلیات کے وقت رفسیق اعلیٰ کی آرزو رکھتاتھا۔

## شرح

چونکہ سالکین صرات اپنی اپنی استعداد میں تفاوت رکھتے ہیں۔
بعض ناقص استعداد والے اس قسم کی تجدّیات کے سامنے مغرُّور یا مفرور ہور کوللب
اور عروج سے باز رہ جاتے ہیں اور اسی مقام پر قناعت کر لیستے ہیں اور بعض
کامل استعداد والے مشاہدہ مجدّیات کے وقت نابت قدم سہتے ہیں چونکہ
امام ربانی کی استعداد کامل تر اور ہمت بلند تر تھی اس لیے ان تجلیاتِ ظلالِ صفا

کے سامنے آپ کے حواس مجی قائم سہے اور رفیقِ اعلیٰ (ذات حق) کی طلب مجی بدستور موجود رہی -

رفیقِ اعلی " الله تعالی کا ایک اسم مبارک ہے بعض کے زدیک اللہ مبارک ہے بعض کے زدیک اللہ مبارک ہے بعض کے زدیک اللہ مبر کا ایک اسم مبارک ہے بعض کے زدیک اللہ مبر کے رفیق اللہ علیہ سے بعض نے دفیق اللہ علیات ہے ۔ نزع کے وقت مجبوب فُدا صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان اقدس پر سرکلمات تھے ۔ اَللہ علیہ وسلم کے دفیق اللہ علیا ہے ۔ یعنی اے اللہ مجھے دفت بی اعلی سے ملاقے ۔

له صبح بخاري ما المله واللفظ له الملم ملم ملكم ٢٦

پخ فرزیج حدیث : بیال اس مدین کی طرف اشاره بے جس کو امام بخاری و مسلم نے خرت کے حدیث در است میں است کے بیان میں وایت کی ہے سیرور عالم صلی اللہ علیہ وکلم کی رحلت سے بیان میں وایت کی ہے

نسبیتِ تنزیهی جنگ ندار د و باطن سمین ان گرفت اِ آن نسبت است بظاهم راصلاً مملتفِنت نیست

معیوفت میست قرچس، اسی حالت میں معلوم ہوا کہ رہے تی (تشبیبی نسبت) اسس تنزیبی نسبت سے خلاف نہیں اور بالمن فریسے ہی تنزیبی نسبت میں گرفآر ہے اور ظام رکی طرف بائکل متو تبر نہیں ہے۔

#### شرح

اسم ظاہر کی تجتی کے شہود کے وقت حضرت امام ربانی کا ظاہر ہونکہ
کشرت اور دوئی کی طرف متوجہ تھا اس لیے وہ اسم الظّاهد کی تجیّیات
سے مشروف ہوالیکن باطن اسم الظاهد کی تجیّیات سے ہرگز متاثر نہ ہوا
کہ اس پر تنزیمی نبعت کا غلبہ تھا اس فرمان کی بنیا داس بات پر ہے کواون
ظاہر اور باطن کی ہر دوکیفیتوں سے مشروف ہوتا ہے اس کا ظاہر تجیّیا ہو
صفایتہ ظِلیہ میں مشغول ہوتا ہے اور اس کا باطن تجیّیات ذاتیہ اصلیت میں غوطہ زن دمہتا ہے وہ تشبیمی نبعت کے باوجود تنزیمی نبعت سے می علی غلبہ تھا لہٰذا آپ عارضی طور پر وار دہونے والی تشبیمی نبعت سے ہرگزمتا اُلی غلبہ تھا لہٰذا آپ عارضی طور پر وار دہونے والی تشبیمی نبعت سے ہرگزمتا اُلی نہوں کے جیسا کہ ایک منام پر آپ فرطت ہیں .
"طریقی من طریقی میں است کہ از رہ تنزیمہ رفت مام کے اس کو ایک شور سے ام کے اس کا مام کے اس کے ایک منام پر آپ فرط تے ہیں .

یعنی میراطربیت ، سبحانی طربیت ، سبے کیونکہ میں تنزیب کی راہ سے فگدا تک پہنچا ہوں .

واصع ہو کہ نسبت تشبیبی توجید وجودی میں عیاں ہوتی ہے اور نسبت تنزی توحید شوری میں حاصل ہوتی ہے گویا آپ فراتے ہیں باوجود بکے میرا ظاہر توحی پ تشبیسی سے بہرہ یاب تھا لیکن باطن ترجیدِ تنزیبی سے بہتورمشرف رام اور كچەمدت كے بعداسم الظّاهِرى تبليات اس طرح بِرِشيره ہوگئي گرياكمج بقى بى نىيى اور توجيد تشبيى سلمے عارضى أحوال ومعارف محل طور برزائل ہو گئے. حقیقت مطلقه ( ذات یق ) کومظا مرکونیه کی صورتوں میں ملاحظ کرنے بليم كوتشبيه كنتے ہيں۔ تشبيه كے معنی ہيں مشابهت دينا ،علم كلام كى اصطلاح میں خابی کومخلوق کی صفات سیمتصف کرنے کا نام تشبیہ ہے۔ حقیقت ِمطلقه ( ذات حق) کونقالصِ امکانیه سے بری جاننا اور خالق کو مخلوق کی صفات سے متصفت ہونے سے پاک ماننا تنزیم ہے دتنزیر کامعنی ہے پاک کرنا) سُبِعُانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّ قِعَمَّا يَصِفُونَ ﴿ حضرت ابن عربی قدس سرهٔ حق تعالی کی ذات میں تشبیبه وتنزیمیه دونوں کو جمع کرتے ہیں جب کہ حصرت امام ربانی کا اصرارہے کہ انبہ میا، ومسلین علیهم الصلات والتیلهات کی تشریعتول میں توجید تنزیمی کاسبق دیا گیاہے مذکہ توحید تشبیهی کا للندا کشفی عسب اُرم ومعارف کو وی کے علوم ومعارف پرترہیج دسین کسی طرح بھی جائز نہیں ۔ توحید تنزیلی ہی اصل میٹ آنی توحید ہے کیونکہ تکمیل و بقا، کے مرتبے میں توحید نشیسی کے انوال ومعارف بکیسر گرم ہو جاتے ہیں. صُوفيائے وجوديدرج ذيل آيات سي ترخيد وجود كالمتنباط كتے ہيں۔ هُوَالْاَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّامِرُ وَالْبَاطِنُ لِهُ

وَمَارَمَيْتُ إِذْرَمَيْتُ وَلِكِنَّ اللهَ رَمْل لــ

تَدُاللهِ فَوْقَ آيْدِيْهِ فَرِكَ

0

وَفِي اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبُصِرُونَ عَـ

وَخُنُ اَقْرُبُ إِلَيْ عِمِنْ حَبْدِلِ الْوَرِيْدِ عَ

وَهُوَمَعَكُمُ آيُنِكُمَا كُنُتُمُ فَعُ

اوراس کے علاوہ ویگرایات واحاد کیف سے بھی اویلات بعیدہ کے ساتھ توحید تثبیبی ٹابت کرتے ہیں اوراس کوصوفیائے عارفین کا مشاہرہ بھی قرار کیتے ہیں اور اس کوصوفیائے مائن کی مشاہرہ بھی قرار کیتے ہیں اور تنزیب ورتنزیب کے قائل ہیں اور ذات بی کو جا مع الاضاد و بکہ عین الاصنداد جگہ عین الاصنداد قرار نیتے ہوئے جامع تنزیب وتشبید نابت کرتے ہیں، حالانکی صوفیائے مقتین اور علمائے میں کا کمین اہل سنت میں کورہ بالانصوص معانی ہرگزم ادنہیں سیلے جیساکہ علمائے اہل سنت کی مشتل معانی ہرگزم ادنہیں سیلے جیساکہ علمائے اہل سنت کی مشتل معانی ہرگزم ادنہیں سیلے میساکہ علمائے اہل سنت کوئیٹ میں مشتل معانی ہرگزم ادنہیں سیلے وردن کا مائے وردنے کی میں کوئیٹ کے الحال کرنے میں کا میں سیالہ علمائے اہل سنت کوئیٹ کے الحال کے ایک کا میں سیالہ علمائے اہل سنت کوئیٹ کے قائد وردنہیں میں کا میں سیالہ علی کے الحال کی کا میں سیالہ علی کے الحال کا میں سیالہ علی کا میں سیالہ علی کوئیٹ کے الحال کا میں سیالہ علی کوئیٹ کے الحال کا میں سیالہ علی کوئیٹ کے الحال کی کا میں کوئیٹ کے الحال کی کوئیٹ کے الحال کی کا میں کوئیٹ کے الحال کی کا میں کوئیٹ کے الحال کی کی کوئیٹ کی کوئیٹ کے کا میں کوئیٹ کے کا میں کوئیٹ کی کوئیٹ کوئیٹ کے کوئیٹ کی ک

# تعير بحبدي تعير على

منن وبعد ازان یکب فناء خاص رودار و مننی مننی و بعد از عود تعین همنا که آن تعین علی که بعد از عود تعین پیداشده بود دربن فست گم شد واژب از مناند منطان انا نماند

تر اس کے بعد ایک فاص قسم کی فٹ ظاہر ہوتی اور بے شک وہ تعیین علمی جو تعیین ذاتی کے عود (واپس لوسطینے) کے بعد ظاہر ہواتھا وہ کسس فنا میں گم ہوگیا اور انائیت ونفسانیت کا کوئی اثر باتی مذراط یہ

### شرح

واضع ہوکہ تعین دوقسم برہے ... تعین جدی اورتعین علمی،
جب سالک روحانی عربی دوران اپنی ذات اورجم کی قیدسے باہر
آجانہہ اور اپنے آپ کوئنیں دیجتا اور اپنے تعین جدی کوفرائوش کو دیتا
ہے تو اس دقت وہ دوحال سے خالی نہیں ہوتا - یا تو اس کو لینے سابق وجو د
(تعین جدی) کاعلم وشعور ہوتاہ یا لینے سابق تعین سے بھی بے خبر ہوجانہ ہے۔
اور لینے تعین جدی وعلمی سے گزر کر دائرہ لا تعین میں داخل ہوجانا ہے سویے
روزہ دارشخص ون محرشد یہ پیاس محکوس کرتا رہتا ہے لیکن جب افطار کے قت
بانی پی لیتا ہے تو وہ بھی دوحال سے خالی نہیں ہوتا یا تو دن بھرکی پیاس برستور
یا در کھتا ہے یا بالکل مجول جاتا ہے .

بیلی حالت میں اگر جہد رہایس کا تعیّن جدی معدوم سبے نیکن اس کافیّن علی باقی ہے دومسری حالت میں ہیاس کا تعیّن علی مبی باقی مذر کا .

بیاس کا یا د رم نایہ نعین علمی سہدا در محبول حانا تعین علمی کی فناہدے۔ اکب فرطتے ہیں کہ عروج سے مرسطے میں وہ تعیین علمی (اپنی انا کا متعور) تجعین ذاتی دجیدی) کے عود سے بعد پیدا ہواتھا وہ اس فنائے خاص میں گم ہوگیا ہمیٰ رسر سرس

سالک کوکھی عُروج ہوتا ہے اور کھی نزول ہوتا ہے عروج کی حالت بیل تعیین علمی فراموش ہوجا کہ ہے اور یہ علمی فراموش ہوجا کہ ہے اور یہ علمی فراموش ہوجا کہ ہے اور یہ عروج ونزول کی کیفیات کھی تھوڑی دیر کے سیلے طاری ہوتی ہیں اور کھی لمے

فرری ورون کی چیاہے کی مور عرصے کے لیے باتی رہتی ہیں۔ یماں آپ فنا کے ایک خاص مرتبے کا بیان فرائے ہیں جمال آپ پر اپنفس کی اناکا کوئی اثر باقی نہ را اور شرکی ختی (تخبر، ریا، خواہش ت نفس وغیرطا) کے دور ہونے کی علامات ظاہر ہوئیں اور حقیقی اسلام کے آثار رونما ہوئے اور پانے اعمال کو ناقص اور نتیتوں کو تہمت زدہ جانناظہور میں آیا ۔ ہی وہ مقام ہے جب اس بندے کو عجز ونیاز اور نتیتی وبندگی کے آصل نشانات کا سارغ ملاہے اور مقام وجودیت و ظلیت سے گزر کرمقام عبدیت پر فائز ہوتا ہے و ذایا کے کھوالفؤل

عُرْجِ فُوق العسرش « وعروماسك برفوق محدِّد بسيار منتن واقع ميشود

ترجي ا عرش بربهت دفه عروج واقع بوسته بير.

شرح

صُرفیائے طرفیت کے نزدیک ارواع لطیفہ اور لطائف نفیس، کا ذکر ہم ذات ونفی اثبات و فنائے لطائف کے بعد عرمشس و فوق العرش سے عالم وجرب ہک رومانی سیروع وج فرانا ایک ایسی حقیقت ٹابتہ ہے جو تواتر و تواث کا درجب رکھتی ہے اور اس امر پرکٹرت سے دلائل شرعیہ، سمیتہ، ذوقیہ موجود ہیں۔ سیر کرمیہ تکورم المسلام کے والم وقع الیہ کے الیہ کے المسلام ماخذ

كيا جاتاي .

و مندق سے اِنقطاع اور مشاہرۂ ذات وصفات میں اِستغراق کا نام عرص علی اور رُوی ہوتا ہے۔ عرص علی اور رُوی ہوتا ہے۔ اولیاء کرام کا بیعود علمی اور رُوی ہوتا ہے۔ اللہ تعالی کی تجلی سے ذاتیہ وصفاتی کا مرکز سبے الدَّحْمالُ علی کے ا

عرش الْعَدْرْشِ السُستُولِي لِهِ

عرش سات آسمانوں اور جنت سے اوپر محیطر کا نناست سبے عالم امراد معالم منت کے درمیان حدِفاصل ہے۔ دونوں کے ساتھ مناسبت کے باوجود دونوں کے آثار واُحکام حُداگانہ ہیں۔

عالم خلق صافح کے عن السّبَبِ وَیُطَلَقُ بِازَاءِ عَالَمِ السَّهَادَةِ عَالَمُ السَّهَادَةِ عَالَمُ السَّهَادَةِ عَالَمُ السَّهَادَةِ عَالَمُ السَّهَادَةِ عَالَمُ السَّهُ السَّهُ اللَّهِ جَال (سبَّجِيه) سبب سے ذریعے وجود میں آئے ، اس پر عالم شادت کا اطلاق آتا ہے تعنی مادہ ومقدار سے بیا ہونے والی مخلوق کو عالم اسبب علم سکتے ہیں (بیسے عناصرار لعمد وارضیات وغیرها) عالم خلق کو معالم اسبب عالم اور عالم ناشورت کے ناموں سے بھی پکارا جاتا ہے ۔ ان سرہ مجوعے کو عالم مادیات میں کہتے ہیں ۔

ا غرضيكه عالم ملق، كالنات ادى برشتى به حسى بن ترتيب وتدريج ب اور من كي تخلق السّائق السّائق السّائق السّائق السّائق السّائق والأرض في يستّنة أيّام على يعن السائون اور زمينون كي تخليق جدونون بين موئى ون من مراد بزار سالدن ب و وات يوم اعتماد كريّك كانف سسّنة وسّمة وقد كوري كي بهاي سيرار سالدن ب في يُوم المعالق السست على السّائة وسّمة المعن سسّنة و السّرة عالى كم علم كم مطابق اسست على خميسية كالمعن سست على السّرة عالى كم علم كم مطابق اسست على

براون مراسب روالله أغكم

یعنی ما ده و مقدار اور ترکیب عناصر سے خالی اور فقط امرکن سے بیا ہونے والی مخلوق برعالم امرکا اطلاق آئا ہے (بحیسے انسانی روحیں، طائحہ اور لطائف مجرده وغیرها) عالم امرکو عالم غیب، عالم ارواح، عالم لاہوت اور عالم جبروت سے می اور کیا عالم اس سے ان سب کے مجموعے کو عالم مجردات بھی کستے ہیں۔

یادکیا عاتا ہے ان سب کے مجموعے کو عالم مجردات بھی کستے ہیں۔

یادکیا عاتا ہے ان سب کے مجموعے کو عالم مجردات بھی کستے ہیں۔

تُسَكِّرُ مِيهِ اَلاَ لَهُ الْخَسَلُقُ وَالْأَمُولِيّهِ مِن اسى عَالِمِ طَلَّ وَامرِ كَا طُوتُ الْمُدُولِيّة مِن اسى عَالِمِ طَلَّ وَامرِ كَا طُوتُ الْمُدُولِيّة مِن اسى عَالِمِ طَلَّ وَامرِ كَا طُوتُ اللّهُ اللّ

#### لطائعن يحشره

حضرت امام ربانی قدس سرہ فرطتے ہیں انسان کی ساخت دسس اجزاء سے ہوئی ہے ان میں سے پانچ عالم خلق کے اجزاء ہیں اور پارچ عالم امرکے اجزاء ہیں ان ہی اجزائے عشرہ کو لطائعنِ عشرہ کہا ما تا ہے۔

َ انسان لطالقت عشَرہ سے مرکب ہے ان میں پانچ لطالعت عالم خلق سے ہیں جوعرش کے نیچ کی نمائی خلق سے ہیں جوعرش کے نیچ کی نمائی خلاق سے میں جوعرش کے نیچ کی نمائی کا میں ہیں۔ اگل ،مٹی ) اور لطبعۂ نفس ہیں۔ دوسے رپانچ لطائف عالم امرسے ہیں ہوعرش سے اُدر کی مخلوق سے تعلق کے سے تعلق کے سے تعلق کی مخلوق سے تعلق کی کھنے ہیں ان کا مرام اور اور کھتے ہیں اور وہ قلب، روح ، مِتر بُھنی، انتخابی انتخابی اور وہ قلب، روح ، مِتر بُھنی، انتخابیں ۔

تجیم انسانی میں ہیں وہ مواضع ہیں جن پرانوار واسرار اور فیوض و برکات اللیہ کا مندول ہوتا رہا ہے اللیہ کا مندول ہوتا رہا ہے گویا یہ لطالفت اللہ تعالیٰ تک بینچائے کے مختلف الستے ہیں اور مرراستہ ایک اولوا لعزم رسول کے زیر قدم ہے انسانی جم میں اگرائی ورانیت وائل ہوگئی ہے اس بے اس کے سالکین ذکر کرنے کے ذریعے دوبارہ ان کو تورانی بنا سیلتے ہیں ۔

# لطائف کے نام فرآن ہیں

مُوفیائے کرام نے لطالف کے اصطلاح نام قرآن تھی سے لیے ہیں۔ مثلاً قلب، روح ، سر، خنی ، اختی اور نفس کا ذکر درج ذیل آیات ہیں ہے۔ اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَذِکْری لِمَنْ کَانَ لَهٔ قَلْبُ کے

قُلِ الرُّوْمُ مِنُ اَمْرِرَيِّيُ لِهُ فَإِنَّهُ يَغُلُمُ البِّتَّرُّوَآخُفَى لَهُ أَدُعُوا رَبَّكُمُ لَضَرُّعًا وَخُفْيَةً عَ وَنَفْسِ وَمَا سَوُّهَا که

صرفیائے محققین کے نزدیک لطائف کے افرامیں جواختلاف ہے معتمر وهكشوفات ك اغتبارك اختلات ب لنزا لطالف كانزار كورنگوں كے ساتھ مخصوص ومقية جاننا لازي نهيں كيونكم مقصود، دائمي ملكهُ ذكر ہے ىنركەرنگ ونۇر، البتە اگرىطا ئەن كى رىگ كىجى ظامىرىجى بول تومضا ئقىنىيى .

مقامات لطائفِ عالمِ أمر بطيفةٍ للب كامتام انسان كي جيم ميں بائيں پيتان كے نيچے لطیف قلب دوانگشت کے فاصلے پر مائل بر سیار ہے اس کی فنا، قلب يرالله تعالى كي تجي فعل كاظهورب اس كى علامت، ذكرك وقت ماسوى السُركا نسیان اور ذاست حق کے ساتھ محتبت ہے داگر میسے تھوڑی ویر کے لیے ہی اس کی تاثیر رفیع غفلت اور دفیع شهوت کی صورت میں ظامر ہوتی ہے اسکانو زرو<sup>ہے</sup> اس کا مقام انسان کے سینے میں دائیں بہتان کے نیجے دو اطبیقہ روح انگشت کے فاصلے پر مائل برہو سے اس کی فیاروج بر السُّرْتِعالَىٰ كَيْ عَلِي صفات كاظهورسب -اس كى علامت ذكرك وقت كيفيات ذکر (قلبی و روحی) میں اصافہ ونعلبہ ہے ۔اس کی تاثیر غصّہ وغضب کی کیفیت ىمى اعتدال اورطبتيعت ميں اصلاح وسكون كى كيفيت كاظهورسے أسكا فورسرے <sup>م</sup>

لطبیفه سر انگشت کے فاصلے پر مائل به وسط سینہ ہے اس کی فنا لطيف بسرير السّرتعالي كي صفات كي مشيونات واعتبارات كاظهورب. اس کی علامت ہر دوسابقہ لطیفوں کی طرح اس میں ذکر کا جاری ہونااورکیفتیا میں ترقی رونما ہوناہے. ﴿ یاد سے کہ بیمثابدہ اُور دیار کا مقام ہے) اس کی کثیر طمع اور حرص کے خلتمے نیز دہنی انمور کے معاملے میں بلائکاف مال خرچ کرنے اورفكر آخس ك جذبات كى بيارى سے ظاہر ہوتى سے اس كانۇرسفيد ہے اس کامقام انسان کے سینے میں دائیں پیتان کے بابر دوانگشت لطیف میں کے فاصلے پر مائل بوسط سینہ ہے۔ اس کی فناصفا سلبیہ تنزيهيه كاظهورس واس كى علامت اس مين ذِكر كا جارى مونا اورعجيب مغربیب احوال کاظهورسے ۔ اس کی ناتیر حسد و بخل اور کینه وغیبت جبیبی امراض مع مکل مغات حاصل ہوجانے سے ظاہر ہوتی ہے۔ اس کا نور سیاہ ہے. اس کا مقام انسان کے جم میں وسط سے بنہ ہے۔ اس کی فنا مرتبهٔ تنزیبهاورمرتبهٔ احدیت مجرّده کے درمیان ایک برزخی متے كخهوروشهموس والبستدب اوريه ولايت محدبيالي صاجها الصلوا كامقام اس کی علامت اس میں باتکلف ذکر کا جاری ہونا اور قرب ذات کا اصار ہ شہودہے اس کی تا نیر تکبر، فخرو طرور اور خود لیندی حبیبی مُهلک رُوحانی امراض سے رائ پانے اور محل حضور و المینان محصصول سے طہور پذیر ہوتی ہے . اسس کا

رر برسب ، واضح ہوکہ لطالعب عالم امرکو کمالات ولایت کے ساتھ تمام بین نم مرکب ولایت کے ساتھ تمام بین نم مرکب بین مربس سے اور لطائف عالم خلق کو کمالات نبوت کے ساتھ زیادہ میں سے مراکب لطیفہ کو عالم خلق کے کسی نہ کسی سے مراکب لطیفہ کو عالم خلق کے کسی نہ کسی

لطیغہ کے ساتھ منامبدت ہوتی ہے ، مثلاً لطیفۂ قلب کولطیفۂ نفس کے ساتھ لطیفۂ روح کولطیفۂ آئب کے ساتھ، لطیفۂ پِترکولطیفۂ باد کے ساتھ، لطیفۂ خفی کولطیفۂ نار کے ساتھ، لطیفۂ اخفیٰ کولطیفۂ خاک کے ساتھ لیے

نیزریدامربی ملحوظ سب که عالم خلق کے بطائف عالم امر کے بطائف کی اصل ہے اولطیقہ اسل بیں ایعنی لطیف ڈ نفس کا معاملہ ، لطیفہ قلب کے معاسلے کی اصل ہے اولطیقہ باد (ہوا) کا معاملہ لطیفۂ روح کے معلسلے کی اصل ہے ۔ لطیفۂ آب ریائی ) کا معاملہ لطیفۂ تحتی کے علیف لطیفۂ میں معاسلے کی اصل ہے ۔ لطیفۂ نار (اگر) کا معاملہ لطیفۂ تحتی کے علیف کی اصل ہے ۔ لطیفۂ فاک رمٹی کا معاملہ لطیفۂ اختی کے معلسلے کی اصل ہے کہ

## مقامات لطائف عالم خلق

لطائعت (ہوا، پانی،آگ اورمٹی) پرشتل ہے۔اس کامقام سارا قالب رجم ہے
د بعض کے نزدیک متصل ناف ہے ) اس کی علامت ہر ہر جرنو بدن اور بالیال
سے ذکر کا جاری ہوجانا ہے ۔ اس کی تاثیر روائل بشریے اور علائق دنیویہ سے مکل رط کی پلینے سے ظاہر ہوتی ہے اس کا فرراتش نماہے لے

#### مقامات لطائف كاثبوت

لطائف کے متفامات کے تعیّن وثبوت کے لیے صوفیائے فرط لقِت کی تصریحات وتعلیمات ہی دلیل کے لینے کا فی ہیں کیونکہ وہ احکام روحانمیت باطنیہ کے مجتمد ہوتے ہیں ۔

جس طرح فقهائے مجہدین احکام ظنّیہ ، طاہرہ کا استنباط کرتے ہیں اور ہیں اسی طرح صوفیائے مجہدین بھی احکام ظنّیہ باطنیہ کا استخراج کرتے ہیں اور جس طرح قیاس ورائے کی صحت کا معیار کتاب و شنت کی مطابقت ہے اسی طرح کشف والہام کی صحت کا معیار بھی کتاب و شنت کی موافقت ہے اور یہ امر ہمی شخصر رہے کہ کشف والہام اور فراست و بھیرت کا فور صوفیاء و فقہاء یہ امر بھی کرتا رہتا ہے۔ جیبا کہ ارتباد باری نعالی ہے۔

"اُفْكُنْ شَرَحَ اللهُ صُدْرَهُ لِلْإِسْلاَمِرِفَهُوَ عَلَىٰ نُورِمِّنْ رَبِّهُ لاهِ "اَفْكُنْ شَرَحَ اللهُ صُدُرَهُ لِلْإِسْلاَمِ فَهُو عَلَىٰ نُورِمِنْ رَبِّهُ لاهِ يعنى توكياجس كامسينه الترتعالى في الله على الله

رت کی طرفت سے نور برہے . فتح الباری میں ہے ۔

إِنَّمَا الْإِ لُهَامُ نُورٌ كَيْخَتَصُّ بِهِ اللَّهُ تَعَالَى مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهٍ عَ

يعنى الهام ايك نورسب الله تعالى بين بندول ميس سي حرك معابرات اسكے ساتھ مخصوص فروالیا ہے۔

بین م و فقهاد کا اجتها دمرتب میں مقدم ہوتا ہے کیونکر صوفیائے کرام بین مربسر فقها وعظام کے مقلد موسے ہیں اس کی دلیل مبی صوفی اوکا تعالى سے لىذامسائل شرعيّر، فقبيّديں على دوفقهاء كے اقوال كرمعتبر تحجب جائے گا اورمسائل روحاسب ذوقیہ واحکام اطنیہ میں صوفیاء کے اوّال اوال كا اعتباركيا جائے گاكيونكم ليڪيل فين رِجال كے مطابق ہرفن كے ليے مخصوص افراد ہوستے ہیں۔

صُوفِيائے کرام نے لطائف کے جن مقامات کی رو ایس کار مرد من مند من مند من مند من مند صربیث الومی ورو صوفیا سے سے سے سے باس کی تاید میں مندرج

ذیل صربیث مبارکه ملاحظه جو۔

ثُمَّرُوضَعَ يَدَهُ عَلَى نَاصِيَةً إِبِي مَحْذُوْرَةَ ثُمِّرًامَرُهَاعَلِي وَجْهِم مِنْ اَجَيْنِ تَنْ ذَيْتَ يُهِ فُرُمَّ عَلَى كَيْدِهِ فُرُمَّ بَلَغَتْ يَكُ رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ سُرَّةَ إَلِى عَنْدُ وُدَةَ ثُسُرَّفَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْتٍ وَسَسَكُمَ بَادَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَادَكَ

ت وجهر، بهرمسرورعالم (صلّى الشّعلية الأولم) في ابُومخدوره كم ما تقع برّ ما بقد رکھا پھراپنا ہاتھ مبارک ان کے بہرے پر بھیرتے ہوئے بسینے پر لے سکتے 

فے اور تجھ بربرکت ازل فرائے۔

بین تمریز مرکورسے معاؤم ہواکہ صور علیہ السّلام نے صفرت بین تم بر ابُر محذورہ رضی السّرعنہ کے سرسے لے کرناف کے ماتھ بھیلاور برکت کے لیے دُعامانگی۔ اِرادی طور برجبم کے اتنے حصتے پر ماجھ بھیے ناکسی سرح بھی حکمت سے خالی نہ تھا جیسا کہ اہل بھیرت برطام ہے جب کہ جبم کا بہم تا لطائف کے مقامات کا حصہ ہے۔ بہرحال حدیث سے ان مقامات کا اہم اور متعیّن ومتبرک ہونا ثابت ہوگیا۔ (فہو کا لُمور) دُ

الطيفه جارى بونيكام طلب مركز نبير كه مُضف الطيف مركز نبير كه مُضف ا

گوشت یا بطیغه کامقام جنش و ترکت کرتاہے۔ بلکہ سرکت زکراز دل برسمع خیال برسد "یعنی دل سے ذکر کی حرکت خیال کے کانوں تک پینچتی ہے اورخیال کے

كان دِل كا ذكر إلغظِ التّركاتكرار) شنت بي -

بعض منائخ مُبتدی کے لیے مُضغهٔ گُوشت کی ظاہری طور پر حرکت و جنبش کو ضروری سمجھتے ہیں اور اسی طریق پر مُریدین کو ذکر القاء کرتے ہیں لیکن جققتُ الامریبی ہے کہ ذِکرِ قلبی وغیرہ میں مقام لطیفہ کی حرکت صروری نہیں بحضورِت بی (یعنی غفلت کا مذرم بنا) اور اخلاص کے ساتھ اور حضور مُعَ السَّر بی لطیفہ جاری فئے کی صروری علامت ہے وَ ہُو الْمَقْصُودُ وَدُ

> مَاكِمِثَاكُمْ نَهُ فَرَايا حَقِيْقَةُ الذِّكْرِرَفَعُ الْعَفُكَةِ

يعنى ذكر كى حقيقت غفلت كانبر رمنا ہے.

اَلْفَتَاءُ عَدَمُرُوُفِيةِ الْعَبُدِ كَالْمُفْهُمُ لِفِعُرِلهِ بِقِيامِ اللهِ عَلَىٰ ذَالِكَ لَا اللهِ عَلَىٰ ذَالِكَ البيت المحالية المعالمة المعال

وَالْبُتَعَاءُ رُؤْنِهُ الْعَبُدِقِيكُمُ اللهِ عَلَى حُيِلَ شَيْبِيءِ له توجه من اللهِ على حُيل شَيْبِيءِ له توجه من اللهِ على حُيل شَيبيءِ له توجه من الله على ورغبه كربب الله فعل كونه في اور لقايه به بنده برجيز برزات من كا قيام اورغلبه مثابه وكرب فعل كونه في الرباع الذام كارواوا فل اوراتباع شنّت وتمريعت كالتزام كوني من الله كارواوا فل اوراتباع شنّت وتمريعت كالتزام كوني من بعد من عنايت فلاوندى سے سالک كوئاسوى الله كا ايمان الله عليه موجا آب كرسائك استفراق في الربيت كى لذّت سے آمن نام وكربين آب كواسي كيوك كرديتا ہے كہ الله كرديتا ہے كہ الله كرديتا ہے كہ الله كرديتا ہے۔

رريائے۔ يهي مفهوم لَايزَالُ عَبُدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ فِي والى مديث سنال برتارہ صون کا و فرورت

سے ظاہر ہوتاہے صوفیائے کرام فرماتے ہیں

آوصاف ندمومه کاسقوط فناگهلاً اسے حبیباکد اوصاف محمودہ کا وجود لقاکهلاً اسے دفا فی کشیر،

#### حيات انبياء واولياء

 ه البيت الله المعالم المعالم

انهیں پاکیزہ زندگی عطائی جاتی ہے اور وہ زندہ جاوید ہوجائے ہیں ان کے اطالک میں ان کے اطالک میں ان کے اطالک میں اور ان کے اجسام بربنا سئے لطالک میں اور وہ تا قیامت اپنی مستبور معدس میں زندہ وسلامت سُبتے ہیں ۔ معدسہ میں زندہ وسلامت سُبتے ہیں ۔

محضرت قاضى ثناء الله مجدّدى تخرر فرطت بي كدية كم شهداء كم ساتفرفاص نهيل كيوكم شهداء كم ساتفرفاص نهيل كيوكم البياء اورصدّ لقين ال سے زيادہ بلندم تروں والے بي جيباكه مديث يك ميں ارشاد فروايا كي .

إِنَّ اللَّهَ حَتَّرَمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَأْتُكُلَ اَحْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَسَرِيًّ اللهِ حَتَّرَمَ عَل اللهِ حَتَّى يُرْزَقُ لِهِ

یعنی الله تعالی ستے زمین برنبیوں سے جہموں کو کھانا حرام کر دیا ہے کیپ اللہ رکے نبی زندہ ہوستے ہیں اور رزق فیسے جاستے ہیں ۔

مدیثِ مذکور کے مطابق انبیاد کے اجہام گلنے سٹرنے اور صنائع ہونے
سے محفوظ ہوجائے ہیں اور انہیں قبروں میں کھانے پیٹینے والی زندگی عطا ہوتی ہے
صلی الشرطی آلہ ولم کی اِقداء میں نمازادا فرمانی اس امر پر واضح دلیل سبت کہ وہ اپنی
قبروں میں جہانی طور پر زندہ ہیں ، نمازیں ادا فرطتے ہیں ، رزق کھاتے ہیں اور عرش و
فرش پرجہاں چاہیں تصرف فرلتے اور آتے جاتے ہیں جبیا کہ سرور دوع الم
صلی الشرطی والروستم کا ارشادگرامی ہے ۔

ٱلْاَنْبِيَا وَٱلْحَيَامُ يُصَلَّونَ فِي قَبُوْرِهِكَ مِنْ لَهُ يَعِيَا بْيَاء زَنْهُ اللَّهِ الْمُؤْرِهِ مِن بِي ادرايني قبرول مِين نمازي پُرصتے ہيں۔

نیز حدیثِ پاک میں ہے۔

مَرَرُتُ عَلَى مُوْسَى .... وَهُوقَائِكُمْ تُصَلِّى فِي قَابُرِهِ لِهِ یعنی میں نے شب معراج موسی علیہ السّلام کو اپنی قبریں کھ طری نے نسب ز براسصته ديجها ظامر بي كدنما زجها في طور بريى ادا بوسكتي بيداور برحيم كاصفت ے البذا قبروں میں انبیار کی حیات، جمانی می مانی جائے گی۔ اسی طرح بعض وال میں آیا سے کر علماء ، حقاظ اور مؤدّنین کے اجبام بھی قبروں میں سالم <u>سبعتے ہیں تل</u>ے واضح ہوکہ انبیاء کرام کے باسے لی توبیع قیدہ نقِ مدین سے نائب ہوستے ہیں اصولی طور برمتبوع اور مناب کے تمام کمالات ، تابع اور اسب كولطوراتباع ونبابت حاصل بوجات بي ركمًا لا يغفى على اربالعلم نیزامت کے تمام اصحاب سلوک ومعرفت کا مزارات پرجانا ،سلام کهنااور ان سے سلام کا جواب شغنا ، مراقبات کے ذریعے اہل قبورسے فیوض فرکات حاصل كرنا ،قرس كحفلنے بران كي جمول كوسلامت ديكھنا سلف صالحين ك كرآج كك دوزمره كم معمولات امشا داست وتخربات اور تاريخي واقا سے تسلسل اور توانز کے ساتھ عقلاً ونقلاً ثابت ہے اوراس پراکا برین امت كاتعامل بجائة خود بطابق مدسيت ماراه المؤمنون حسنا فهوعندالله حَسَنُ مله وليلِ شاني ومسندكاني ب-

له صيح مم مهم الله المن مهم الله عن النبي صلى الله عليه وَالله وَسَلَم إِذَا مَاتَ حَامِلُ القُوْل وَوَلَه الله والى الدَّرْضِ أَنْ لَا تَأْشُكُ لَمُنَهُ قَالَتُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَم إِذَا مَاتَ حَامِلُ القُول وَ وكنزالها صفيه ما الدلمي مهم الدلمي مهم (المُؤَوِّق ) وَإِنْ مَاتَ لَمُ مُدُود وَ فَقَدْم وكنزالعال مهم الدلمي مهم الدلمي مهم الدلمي مهم الله عن الدلمي مهم الله عن الدلمي مهم الله الله عن الدلمي مهم الله الله عن الدلمي مهم الله الله عن الله عن الله عن الدلمي مهم الله الله عن الل

## جنت عرش کے نیچے ہے

من چون بر فوقِ محدِّد رسسيد دارِ خلد از من آنجا بما تحب مشهود گشت

ت جس یعنی جب بہلی مرتب عروج واقع ہوا اور میں عرش پر بہنی ا توجنت عرش کے نیچے مشاہدے میں آئی ۔

### شرح

البيتنا الله المراب الم

اورمشاہ ات علوم شرعت رہے عین مطابق ہیں ۔ یبی و صب کے کہ نسبت مجازیمیں اسماع شریعت کے نسبت مجازیمیں اسماع شریعت اورالتزام سندت کا لحاظ غالب ہے ۔ نیز بیری محمد وم ہوا کہ علم امرے پانچوں لطائف کا وطن اصلی عرش سے اُوریسہ للذا عکم اسے یونان کا یہ قول کہ معرش سے ۔ قول کہ معرش سے ۔ قول کہ معرش سے ۔

# عرش يرمقامات لنبياء واولياء كامشامره

منن مرتبية دوم بازعوم واقع شد (الياخره)

تن جس می بدوسری مرتبر بهرعون واقع بروا داس سیرع درجی میں بڑسے بڑے مشاطع والم بیت اور خلف نے داندین کے مقامات اور صرب رسالت بناه صلی الشرعین الرفول اور مسب بناه صلی الشرعین الرفول الله مقربین فرست ول کے مقامات عرش کے اور مشاہدہ میں اسکے اور سب بزرگوں کے مقامات حرب مراسب مثابدہ فرطئے اور سب ورکائنات مسلی الشرعین الرفول کے مقامات حرب مراسب مثابدہ فرطئے اور سب ورکائنات صلی الشرعین الرفول کے مقامات حرب مراسب مثابدہ فرطئے اور سب کو مسل الشرعین الرفول کے مقامات مقامات سے بند ترتبالی طرح آب کو مضرب خواج سب شاہ تعقیم الدین کرخی ، صفرت شیخ الومین الشریف الرفید خواز ، صفرت شیخ علاؤ الدّول سمن فی ، صفرت شیخ بخم الدین کرخی ، صفرت شیخ الومین اللہ تعلی المت میں الشریف المت میں اللہ تعلی المت میں نظر آئے ۔

شرح

سلوک میں اہل الٹیرے دوطرح کے مقام ہوتے ہیں ہیلامقام عروج ہے اور دوسلرنز ول ہے میقام عروج یہ سہے کہ انسان بشری صفات سے الگ بوكر ملى اور قدسى صفات كالباده بين ساوروه عالم ملكوت وغيرها ميس سيركرس اس كوسيرالى الشروقي الشركية بي -

مقام نزول یہ بہ کہ انسان صفات بشریہ سے آنگ ہوسنے کے بعد دوبارہ صفات بشریہ کا لبادہ اوڑھ کر دوسے راگوں کو الشرکی طرف دعوت بینے کے بیدے واپس لوٹ آئے اس کوریزش الشر بالشرکہا ما آہے۔

#### جندشوابد

واقعة معراج كيضمن مين مافظ ابن كثير رحمة السُّعلاية ملازين مندي من فط ابن كثير رحمة السُّعلاية ملازين مدين من والم ثن من أوكاح الأنبيت و فاشنوا على رقب فرق تعريب من ومن السُّعلا والهولم من معراج كي رات البياء كي ارواست ملاقات فرائي اوران ارواح في السُّعلا والله والم من مدوثنا بيان كي و مدود كائنات صلى السُّعلاية الدولم في فرايا . و مرود كائنات صلى السُّعلاية أسْرِي بِي فَقَالَ يَا حُسَمَةُ وَاقُرَعُ المُسَلِّد وَ السُّرِي بِي فَقَالَ يَا حُسَمَةُ وَاقُرَعُ المُسَلِّد والسُّرِي بِي فَقَالَ يَا حُسَمَةُ وَاقُرَعُ المُسَلِّد وَالْهُ مِنْ فَقَالَ يَا حُسَمَةُ وَاقُرَعُ المُسَلِّد وَالْهُ مِنْ فَقَالَ يَا حُسَمَةً وَاقُرَعُ المُسَلِّد وَالْمُ اللَّهُ السُّرِي بِي فَقَالَ يَا حُسَمَةً وَاقُرَعُ المُسَلِّد وَالْمُ المُسْتَعِلَيْ السُّرِي فِي فَقَالَ يَا حُسَمَةً وَالْمُ المُسْرِي اللهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْرَى وَالْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسَلِّدُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسَلِّدُ اللَّهُ المُنْ الْمُسْتِدُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ السُّرِي الْمُسْرَى اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ الْمُسْتَعُ السُّمُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُّ الْمُسْتَعُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُلُّ الْمُسْتَعُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعِلَى الْمُسْتَعُ اللَّهُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُولُ الْمُسْتَعُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُّ اللَّهُ الْمُسْتَعُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُ اللَّهُ الْمُسْتَعُلُّ الْمُسْتَعُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْتَعُ الْمُسْتَعُلُولُ اللَّهُ الْمُسْتَعُ

مِنِى السَّلَامَ وَاخْبِرُهُ مُانَّ الْجُنَّةَ طَيِّبَةُ التُّزُبَةِ عَذْبَهُ الْسَّكَامُ وَانَّغِرَاسَهَا سُبُعَانَ عَذَبَهُ الْسُهَا سُبُعَانَ اللهِ وَالْمُاسَعَا سُبُعَانَ اللهِ وَالْمُاكِبُرُ لِهِ اللهِ وَلَا إِلَّهُ اللهُ وَاللهُ اكْبُرُ لِهِ

ترجى، معراج كى دات ميرى الاقات ابرائيم (عليالسلام) سيموتى النول في النول في النول في النول في النول في النول في النول الني أمرت كوميراسلام بينجائي اورانني بنائي كرجنت كى ملى بالسب الوريان ميشاب وساف اورجم ارميدان سيداس بين باغ تكان والدي والحكمة والله وكاران والآالله والحكمة والحكمة والله والحكمة والله والحكمة والله والحكمة والمرابع الله والمرابع الله والمحكمة الله والحكمة الله والمحكمة الله والمحكمة الله والمحكمة الله والمحكمة الله والمحكمة والله والمحكمة الله والمحكمة والمحكمة الله والمحكمة المحكمة والمحكمة والمحكمة

نيزارشاد فسرماياء

مَّرَرُثُ عَلَى مُوسى فَقَالَ مَا فَرَضَ اللهُ لَكَ عَلى اللهُ لَكَ عَلى أُمِّتِكَ قُلْتُ اللهُ لَكَ عَلى أُمِّتِكَ قُلْتُ وَرَضَ خَمْسِينَ صَلَوْةً لَه

ترجی، بعنی بس موسی (علیدانسلام) پرمیراگذر ہوا انہوں نے پوچھا اللہ تعالیٰ نے آپ کی امت برکیا فرض کیا ہے میں نے کہاردوزانہ) بچاس نمازیں فرض کی گئی ہیں -

ت تصنرت الزُمبريه وضى السُّرِتِعالى عنهُ سے روایت ہے كه سرورعالص العُّر المُّما نے فروایا رَائیتُ جَعُفَرُا يَطِی رُفِی الْجُنَّةِ مَعَ الْمَلَادِئِكَةِ لَه بعنی لیں نے جعفرطیار (مُضی التُّرعِنُ) کوجنّت میں فرشتوں کے ساتھ اُٹرتے دیجھا۔

🔾 ایک اور حدیث میں ہے۔

قَالَ رَرَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مَرَرُتُ لَيْ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مَرَرُتُ لَيْ لَةً السُرِى فِي نُورِ الْعَرْشِ عَه

که تر ندی صبیه مشکوة المصابیح متند که صبح بخاری صبه که تر ندی میراند که زرقانی صبید قر المعارضي الله على الله والمائية والمواجوع ش كالمائية والمواجوع ش كالمائية والمواجوع ش كالمائية والمائية والمائية

صنگرت کعب بن مالک رضی الاتیزناسے روابیت ہے صنور متی التیزاؤلم نے فرمایا استکا نیٹ سکتا اللہ موقومین کلائیں کے بعنی مومن کی روح پر ندوسہے حوال جاری سے معلم براتی ہے۔

جهان جابى سبير جلى جاتى سبير و التراس من التراس و التراس التراس التراس و التراس التراس التراس و الترا

# دُنیائے انٹیرکے شواہر

○ عصرِ حاضریں سائندانوں کے نزدیک دنیائے اثیر (کا کمک یا آسٹرل ورلڈ) ایک مسلّہ حقیقت ہے۔ مذہبی نقطۂ نظرے اس کرعالم مثال کہ پلیخ درص عالم اثیر کا ننات کا دماع ہے جس میں اُزل سے اید بھک تمام تصاویر اُصوات واقوال، افعال واعمال محفوظ ہیں۔ غالباً قرآئ میں اسی جانب اٹٹا و ہے وَكُلُّ شَكَعُ فَعَلُوهُ فِي الزَّبُرِ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَكَبِيرٍ مَّسُتَطُرُ الْمُ ترجی اور ج کچرانوں نے کیا ہے وہ ان کے نامدُ اعمال میں درج ہے اور ہرجیوٹی اور بڑی بات اس میں تکمی ہوئی ہے۔

ونیائے اثیر کے محققین کا خیال ہے کہ عالم اثیر کے متعلق حیّاس دماغ
 جب چاہیں انکثافات حاصل کرسکتے ہیں، ارواح سے رابطہ قائم کرسکتے ہیں
 ان سے باتیں کرسکتے ہیں ایک بادری لیڈ بیٹر نے اپنی کی ب

ان سے بایں مرصے ہیں ایک جورتی میر بیر سے بہاں ما ب INVISIBLE HELPER بیں ایک عورت منر پالیٹر کا ذکر کیا ہے ہو خود کو ہے ہوش کرکے ارواح کو ملاتی تھی اور بچھڑسے ہوئے عزیز وا قارب سے ملاقات کرتی اور کرواتی تھی .

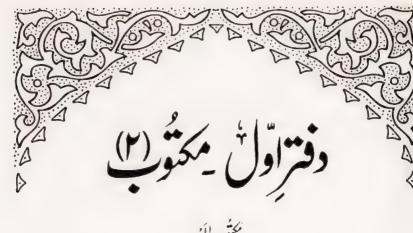
باباگورونانک کے متعلق عام لوگوں نے مشہور کررکھاہے کہ وہ بیک وقت لاہورا ورکعبہ میں موجود ہوتے تھے۔ بلکہ آج کل توعام لوگ بھی جبر لطیعت پیں گھو منے بھر نے کے دعویار ہیں۔ ۲۰۹ء میں انگلتان کے ایک اخبار میں سوال اُٹھاتھا کہ کیا کسی شخص نے جبم لطیعت میں سفریا پرواز کی ہے دو عور توں نے اعترا فی جواب دیا کہ جہیں یہ طاقت حاصل ہے ان کے نام شخص ۔ ممنز بی ای بلیراور الے ولیم۔

تھے۔ مسز بی ای بلیراور لیے ولیم۔ پیسوال وجواب پاکستان ٹائمز کی اشاعت ۱۲ راکتوبر ۱۹۵۷ء میں بھی در ہر سر سر سور س

مِعَوْدِ الْمِيْتِ اللهِ ا

عبادتوں اور مجاہروں کے ذربیعے کمالات عجیب اور کوامات نفیسہ کا ان سے بڑھ کرمظام و کیوں نہیں کرمظام و کیوں نہیں کرمظام و کیوں نہیں ماصل ہوتی ہے ، توجر انبیاد کرام عیبم الصلوت والتسلمات اوراولیائے عظام علیم الرحمۃ سے بطور معجز ہ وکرامت اس قسم کے کمالات نظام مہونے کا انکار کیسے ہوسک ہے ؟ کمرہ تعالی صفرت امام ربانی قدس ستر و النورانی کے ارشاوات عالیہ نعتا و جیات ، حکا واجتہاداً ، روایتاً و درایتاً ، حقال و نقلاً مبنی برحق و صواب ثابت ہوسے اللہ تعالی سے التجاہے کہ وہ سمجھنے اور ماننے کی توفیق عطافہ لے کہ یہ دو کہ کہ یہ دو کہ کہ یہ دو کہ کہ کہ دو سمجھنے اور ماننے کی توفیق عطافہ لے کہ یہ دو کہ کہ کہ دو سمجھنے اور ماننے کی توفیق عطافہ لے کہ ہوں۔





مَعَوْبِ نَيْرِ عارف الله الشراع المجار القول الله المراه المراه المراه المعرف المراه المراه



مُوَضَّوِّ اللَّهِ اللَّهِ مَا اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللِّهُ اللللْمُواللَّهُ اللللِّهُ الللِّهُ الللِّهُ الللْمُواللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُلْمُ الللْمُلِمُ الللِّهُ الللْمُلْمُ الللْمُلْمُ الللِّهُ الللْمُلِمُ الللْمُلْمُ اللللْمُلِمُ الللِّهُ الللْمُلْمُ اللللِّهُ الللْمُلِمُ اللللْمُلْمُ اللْمُلْمُ الللْمُلْمُ الللْمُلْمُلِمُ الللِّهُ الللْمُلِمُ اللْمُلْمُ الللْمُلْمُ اللْمُلْمُ الل



# مڪنوب - ٢

امر باستخاره تقبل ما و مُبارُكِ رَمُضان منت منت مولانا شاه محد رسانید آن قدر مشرجه ندید که تا ما و رمضان خود را بعتبه بوسی مُشرَّ ف تو اندساخست بصرورت بُرُضِی آن خود را تسلّ اد

در ا ، ماہ رمضان مبارک کے تصل ہے تخارہ کا حکم مولانا شاہ محدیثے پہنچا یا۔ ماہ رمضان کک اتنی فُرصت ندل کی کہ اپنے آپ کو استانہ بوسی کے نثر ون سے مُشرّب کر الاچار اس مدت کے گزرجانے سے اپنے آپ کو تسلی دی ۔

#### شرح

حضرت خواجہ ہاتی اللہ دہاوی رقمۃ اللہ کائیہ نے امام رہانی قُدِّس سرہ کو کولانا کے گئی معرفت یہ کھی اللہ دہاوی رقمۃ اللہ کارہ کے آستان بوسی کے لیے، دہلی آئی آپ نے جہ اس نے جہ نے کہ ماہ ورصنان المبارک کے فور ا بعد مناسب جان کر اپنے دل کو سنی دی ہے کہ ماہ ورصنان المبارک کے فور ا بعد قدم بوسی کا مشرف حاصل کروں اور سردست تحریری طور پرجا ضربوجا وَں ۔

#### إستنخاره

ہراہم وجائز کام کے لیے ستخارہ کرنا سُنّت نبوی علیٰ صَاحِبُها الصَّلاٰت ہے۔ ای بنار پر حضرت نواجہ ہاتی باللّہ علیہ الرّحمۃ نے آپ کوسفر د ہلی کے لیے بھی ستخارے کا حکم فرمایا۔

استخارہ کا لغنو ی عنی ہے " خیرطلب کرنا "

اُمادیث بیں اس کی بہت ترخیب آئی ہے بحضرت جابر رضی اللہ عنہ سے م مروی ہے کہ رسول اللہ مُسَافِ اُنْ اِنْ اِنْ اِسْمَام اُمور میں ہم کو استخارہ کی اس طرح تعلیم دیتے تھے جس طرح ہم کو قرآن پاکس کھاتے تھے لیے حدمیث بیٹر بیٹ میں وار دہے :

قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مِنْ سَعَادَة ابْنِ ادْمَ اِسْتَخَارَةً إِلَى اللّهِ وَمِنْ شَقَاوَة ابْنِ ادْمَ تَرْکُهُ إِسْتِخَارَةَ اللهِ وَمِنْ شَقَاوَة ابْنِ ادْم ترجمہ: یعنی رسُولِ اکرم سَل اَعْلِیَ مِنْ ضَافِا ابن آدم کی سعادت اس بات میں ہے کہ وہ حق تعالیٰ سے استخارہ اطلب خیر، کر اُرسے اور اس کی بریختی بہے کہ استخارہ ترک کر دے۔

رات کوسونے سے پہلے یا کسی فلی وقت رات کوسونے سے پہلے یا کسی وقت دورکعت نفل ستخارہ کی نتیت سے ادا کرے بہلی رکعت میں فاتح کے بعد سُورہ کا فبنسڈون دوسری رکعت میں فاتح کے بعد سُورہ اخلاص ریاح کچھ یا دہوں پڑھے نفل ادا کرنے کے بعب وکم می سے یہ دُعا پڑھے۔

له ميم بخاري ميم الم يستدك على كم ميم الله واللفظ له بمسندامد مير المع ترمذي ميم

اللهُمُ إِنِ اَسْتَغِيْرُكَ يِعِلْمِكَ وَاسْتَقْدِرُكَ بِقُدُرُتِكَ وَاللهُمُ إِنْ اَسْتَغِيْرُكَ يِعِلْمِكَ وَاسْتَقْدِرُكَ بِقُدُرُتِكَ وَاسْتَقْدِرُكَ بِقُدُرُتِكَ وَاسْتَقْدِرُ وَلاَ اَقْدِرُ وَاسْتَعْلَمُ الْعُنْ وَاسْتَعْلَمُ الْعُنْ وَالْمُعْمَ اِللّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ الْعُنُوبِ اللّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اللّهُمُ الْعُنْ وَيَعْلَمُ الْعُنُوبِ اللّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اللّهُ مُولِ اللّهُمُ اللّهُ مُولِ اللّهُمُ اللّهُ اللّهُ مُولِ اللّهُ الل

استخاره کے بعد بیند کرنا ضرور گنہیں نیز خواب میں کسی چیز کا نظر آنایا

محى آواز كاسننا بھي تشرط نہيں اگر ايا ہوجائے توم صا كفتہ بھي نہيں ۔

استغارہ کی اصل حقیقت یہ ہے کہ استخارہ کرنے کے بعد اپنے دل کی طرف دھیان کرنا چا ہیتے اگر دل میں کوئی پختہ ادا دہ جم جائے یاکسی کام کے کمنے یا نہ کرنے کی ابہت ازخود رُجحان بدل جلئے اسی کو استخارہ کا بیجہ مجھنا چا ہیئے اور طبیعت کے غالب رُجمان پر عمل کرنا چا ہیئے۔



متن ابتداءِ عالم صحو ولفت از اواخِر ماہ ربع الاَخِر متن است و تاحال بہ بقائے خاص در ہر کیس مدتی مشرّف می سازند

ترجمہ: عالَمِ صحوا وربقا کی ابتدار ماہ ربیعُ اللّٰ نی کے آخری ایّا مصصل ہوئی ہے۔ اور اس وقت تک ہرایک مدت میں کسی خاص بقا کے ساتھ شرف فرماتے رہتے ہیں ۔ فرماتے رہتے ہیں ۔

#### شرح

حضرت امام رّ بانی قُدِّس سِرَهُ النُّوْرانی این مرشد بزرگوارعارف حقّانی مسترخواجه باقی با لئد و بلوی قُدِس سِرُهُ النُّرِیانی کی خدمت میں اپنے آخوال کی ترقیم بارے بین رقم طراز ہیں کہ النُّر تعالیٰ کی عنایت خاصہ اور آپ کی تو تجہ کے طفیل مراتبِ سلوک میں دن بدن اضافہ نصیب ہور ہاہے۔ ما و ربیع اللّ فی کے آخری و نون تک عُرُوج ہمسکر اور فنا کا غلبہ رہا لیکن اب صَحوا ور بقا کے مراتب میں ترقی کی ابتدار ہوئی ہے اور کھے بہ کھی آج ایک سی خاص بقا کے ساتھ مراتب میں خرات رہے ہیں۔

# مراتب لوک

سُلوک کے مرتبے عُروج وزول، فناوبقا اورسکر وصحرت مل ہیں۔ان کی مختصر تشریح حسب ذیل ہے۔

ع مرسر على المنطقة عن المنطقة الموروس المنطقة المرسول المنطقة المرسول المنطقة عن المنطقة المرسول المنطقة الله المنطقة المنطقة

حَدُّ البيتَ اللَّهِ اللَّهِ اللهُ اللَّهِ اللهُ اللَّهِ اللهُ اللَّهِ اللهُ اللَّهُ اللهُ اللهُلِمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ

مُبِّراہے۔ گویاخلق سے خالق کی طرف توجہ کا نام عُرُوج ہے۔ اس مرتبے ہیں میر کرنے والوں کومُستہلکین کہاجا آہے۔

وست برطب الله بالله بالله سع الله بالله سع المبير لياج المبير متوج الله بونانز ول بهدالله تعالى كرم ست عميل وارشا دك يد فناوق كي طرف متوج مونانز ول كه لا آئے داس مرتب ميں سالك كو فناق كے ساتھ گرفتارى بهين وق بلكم اس كو واپس مقام قلب پر لا كر محم ديا جا آئے ہو واپس جا كر اسى رستے سے دوسرے ندوں كو بھى ميرى طرف لاؤ يم تقام وعوت و ارشا دہے۔ اس ستم كے سالكين كور آجين كہا جا آہے ۔

ف طریقت کی منطلاح میں سالک کو اسری اللہ کا نسیان فناکہلاتا ہے بعنی ذات حق تعالیٰ کی سی مطلق کا سالک کے ظاہر باطن

پر ایسا فلبہ ہوجائے کہ اس کا اپنا وجودِ اعنیا فی معتبرنہ رہے اور صرف وجود تھیں مفسنتھ شردہ جلئے۔ اس طرح کہ بندہ اللہ تعالیٰ کی رضا اور خوشنو دی کے تابع ہو جائے اور اس کے اعضار وجوارح سے اللہ تعالیٰ کی مرضی کے خلاف کوئی کام

ئىرژونەپو ـ

عاشقی جیست گجوسب دہ جاناں لُودن دل بیست دنگیرے دادن وحیراں لُودن من من معند کے صاب سمبہ میں میں سولان

فناوبقلك منهوم كى صلية آيت مباركر ب كُلُمَنْ عَلَيْهَافَانِ ﴿ وَيَبْقِلْ وَجْهُ رَيْبِكَ ذُقَ الْجَلَالِ

والإختام

جو البيت المحالية ال ماسوى الله دوجيزي بي آنت ق ماسوى الله سي كافهوم ماسوى الله سي كافهوم ماسوى الله سي كافهوم ماسوى التدكي نسيان كامطلب بيب كرسالك كونه كائنات كاعارب نزاینی ذات کا اور یہی فناہے۔ یا بوسمجیس کہ ماسوی سے مرا دہروہ چیز ہے جس کاسی سے کوئی تعلق نہ ہوا ورجس شی کا تعلق میں سے ہو وہ ماسولیٰ بہیں۔ محمود : جيسعلوم دينسيه مين شغولتت اور حوُنُ الله وهو قُ العباد مذموم: جيسے أمورِ معصيت وعادات ر ذيله . جیبے دنیا ویعلوم اورمخلوق سے رابطہ وغیرہ دبشرطیکہ ، کسس مُباح ، میں کلی حرفتاری نہ ہو۔ فناکے دو درجے ہیں فنائے واقعی اور فنائے علمی ۔ یہ ہے کہ سالک کو ہرفتم کے گنا ہوں سے مجیٹ کاراع ال فنائے واقعی ہوجائے اور ماسوی کی تُمُل مُعبّتیں دل نے کل جائیں. يرب كه برماسوي الندول سے دمرتبولم ميں كل جائے

یہ جے کہ ہر ماسؤی اللہ دل سے دم تر تبریم میں کل جائے فیائے ممی یعنی کسی چیز سے تعلق علمی ندرہے اور اشیاستے کا کنات کے ساتھ فنا سے پہلے کی طرح قلبی لگاؤ اور گہری واب تنگی نہ ہو اور یا دواشت کا ملکہ راسخ ہوجائے۔

> ا قسام فسن اوّل ؛ فنائے خلق یعنی خلق سے اسک داور خوف نہ رہے۔ دوم ؛ فنائے ہوا یعنی ذات کے سواکوئی خواہش ہے۔

سوم ؛ فنلئے ارادہ یعنی تحوتی ہی ارادہ دل میں ندرہے۔ جہارم ؛ فنائے فعل یعنی فعل میں ایٹاندرہے۔

اس كى دومالتين بين مالت يه كدبنده محض آله بواوري تعالى فاعل جيه ومنارمنية إذ رَمَيْت وليك نَ الله رَمِيْ له ومري مالت يه ومري مالت يه كدبنده فاعل بواوري تعالى آله جيس لا يزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِنَّى بِالنَّوافِلِ حَتَى آخِبَتُهُ فَنا ذَا آخِبَتُ نُهُ فَكُنْتُ مَنْ مَنْ اللهُ عَبْدِي مَنْ مَنْ اللهُ عَلَيْهُ مَنْ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ مَنْ اللهُ ال

مرتبهٔ فِنا میں جن اسپار آفاق وانفس، کانسیان ہوگیا تھا سالک کوجرد وسروں کی تھیل وہدایت کے لیے اہی اشیار

کی طرف وابس لوا دینا "بقا" کہ لا آئے تعنی کامل فناکے بعد سالک کو جکھیے ہے۔ ماصل ہوتی ہے اس کو بقا کہتے ہیں اور فنار الفنار کے بعد ماصل ہونے والی کیفیت کو بقار البقا کہتے ہیں آہیت کرمیہ واللہ تحسیر کی آبفی کے میں

معنی بقائی طرف اشارہ ہے۔

بر بر با یا در سے کہ مرتبہ بقا میں اشیار کے ساتھ سالک کاملی تعلق فیا بر بین ممبر سے قبل کے تعلق میں اشیار کے ساتھ سالک کی توج قطع اغیر سے میں مختلف ہوتا ہے۔ اس ترب میں مختلوق کی طرف سالک کی توج قطع اغیر اختیاری ہوتی ہے اور اس معاملے میں اللہ تعالی کی رضا غالب ہوتی ہے نہ کہ سالک کی ذاتی رخبت کیونکو سالک تو اس مرتب میں مقام المینان پرفائز المرام سالک کی ذاتی رخبت کیونکو سالک تو اس مرتب میں مقام المینان پرفائز المرام اور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن رَا ضِیبَة مُن رَضِید یَّة کے سے شاد کام ہوتا ہے۔ اور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن رَاضِیت مُن رَضِید یَّة کے سے شاد کام ہوتا ہے۔ اور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن کے راضیت مُن رَضِید یَّة کے سے شاد کام ہوتا ہے۔ اور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن کے راضیت و ایک راستہ کی دور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن کے راضیت اُن رَضِید یَّة کے سے شاد کام ہوتا ہے۔ اور اِرْجِعِی اِلی رَبِّن کے راضیت اُن میں میں میں کو ایک الم وقی ا

له الانفال ۱۷ کیمنگوه میدامیخ باری طلاح ۲ مسند احمد صلی ۱۶ کی طلاح ۱۷ کیمنگوه میداد میرود کا طلاح ۱۷ کیمنگوه می

البيت المحالية المحال

ٱلتُكُورُغَيْبَةُ يِوَارِدٍ قَوِيٍّ وَالطَّخُورُجُوعُ سكر وصحو إلى الإخسَاسِ بَعْدَ الْغَيْبَةِ بِوَارِدٍ قَوِيْ لِهُ يعنى قلب ركسي وارد قوى كاغلبه موجلن سيغيبت طاري موجانا سكرہ اورغيبت كے بعدكسي وار د قوى كے سبب إحساس كاعُود كرا ناصوہے صفاتِ الهيهِ كُيْحَتِي ما ثُوابِ وعذاب كَے خيال كاغليہ ہو كرسالك كيحواس معطل هوجائين اورخلق سه بلي خبر ہوجائے تواس کوغیبت بہتے ہیں اور جب حواس درست ہوجا بیں اور سالک ہوش میں اجائے تو اس کو حضور کہتے ہیں الوار عنیب کے <u>غلبے سے</u> ظاہری و باطنی احکام میں اِمتیاز اُٹھ جانا سکرہے اورغیبت کے بعد کسی وار د قوی کے سبب إشت بياز واحساس كا وابس لوط آناصحوب حالت محربين غلبراحوال میں اہل مسحر سے حواقوال و اُفعال صادر و سَرزَ دہوں وہ پایدً اعتبار سے ساقط ا ورنا قابل سند ہوتے ہیں اسی حالت میں صادر ہونے والے کماسے کو شطحیات کہتے ہیں اور حالت صحومیں ان کا تدارُک لازم ہو تاہے۔ محراوليارك مرتب سيتنق ركهتا ب اوصحوا بميارك مرتب س متعلق ہے۔ یہی حق ایقین کامرتبہ ہے جہاں سالک ممکن کوممکن اور و اجب کو واجب جانتا ہے اور اس برمقام عبدست اور مقام بقا کی حقیقت ظاہر ہولی ب صوفيات كرام نے آيت مباركه شعة بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ آي انجے زَبَیْنِ آخصلی لِمَا لَبِتُوْا آمَدُ اللّٰہ کوصحوبعدُ النّٰکر کی کیفیت پر محمول فرما یاہے رواللہ اعلم، متن ابتداً ازجلی ذاتی صنرت شیخ می الدین است قدس مرؤ ترجم ابتدا حضرت شیخ می الدین ابنِ سَدِی قُدِسَ ستره کی تجلی ذاتی سے موتی ہے۔

### شرح

حضرت امام ربانی قد سیم و فراتے ہیں کہ مراتب سلوک میں مزید ترقی کی ابتدائی فاتی سے ہوئی ہے۔ یہی وہ تجا ہے۔ یہی وہ تجا ہے۔ یہی وہ تجا ہے۔ علیہ اپنے ساتھ مخصوص جانتے ہیں بحضرت امام ربانی کے نزدیک تجائی ذاتی سرورعالم سل النبیا و کا میں مائی ہے اور آب کے حق میں دائی ہے اولیائے محبوبین محدی المشرب بھی بواسطر متابعت ومناسبت سروی الم صفالت محبوبین محتی فراتی سے مشرف ہوتے ہیں۔ اکثر مشاکنے کے نزدیک یہ تجالی من النہ النہ اندائی فراتی کی مانند تصور ہے سے وقت کے بے جابات اُٹھتے ہیں اور بھر اسمار وصفات کے بردے وال دیتے جاتے ہیں لیکن اکا برقت بندیہ بھر اسمار وصفات کے بردے وال دیتے جاتے ہیں لیکن اکا برقت بندیہ قد تس اللہ اندائی آرم کے نزدیک یہ تجالی ذاتی دائی ہے تھی ذائل اورغائب نہیں ہوتی ۔ یہی ان بزرگول کی نسبت فاصد ہے بینی دَوَامُ الْدُحضُدُورِمَعَ الله به وقی ۔ یہی ان بزرگول کی نسبت فاصد ہے بینی دَوَامُ الْدُحضُدُورِمَعَ الله به وقرایی ؛

اِنَّ نِسْبَتَنَا فَوْقَ جَمِيْعِ النِّسَبِّ عِنى جارى نسبت سبسبوں سے الا ترہے . مَّا يَكُونُ مَبُدَ وُهُ الذَّاثُ مِنْ عَندِ اغتبارِصِفة مِن الصِفاتِ مَعَهاوَ ان كان كايحصُلُ ذَالِك الآبواسِطة الاسماء والضِفات إذ لا يَتَجَلَى الْحَقُ مِن حَيثُ ذَاسِهِ عَلَى المَوْحُودَات إلاَ مِنْ وَرَآء حِجَابٍ مِن الْحُجُبِ الْاَسْمَا تَيَة لِهُ

ترجمہ اتحلی ذاتی وہ ہے جس کا مبدأ ذات ہوا در اس کے ساتھ صفات ہیں سے کسی منات میں سے کسی منات کے داستے کے بغیر صل کسی صفات کے واستے کے بغیر صل کسی منات کے داستے کے بغیر صل نہیں ہوتی کیونکر حق تعالیٰ موجودات پر اپنی ذات کی حیثیت سے تجلی نہیں در ما آ بلکہ اسمار کے بردوں میں سے کسی بردے کے بیٹے سے تجلی فرما آ ہے۔

بير مرم التحقق داقى مين فنائينت عبد كالبعد بقائية تت باق مون الميد مرا الميد الميد

متصف ہو کر بلا تعیین جمانی ورُوحانی اپنے آپ کو اِطلاق کے رنگ میں یا آ ہے اور کھال توحید عِیالی سے سرفراز ہوتا ہے۔

تَحَلِّى صِفَاتَى مَا يَكُوْنُ مَبْدَءُهُ صِفَةٌ مِنَ الْعِيفَاتِ مِنْ الْعِيفَاتِ مِنْ تَحَلِّي مِنْ الْمَاعِنِ الْذَارِي فِي

ترجمہ : تجلی صفاتی وہ۔ بیجب کامبداحی تعالی کی صفات میں سے کونی صفت ہو لینے تعیین اور ذات سے امتیاز کے اعتبار سے ۔

اس تخبی میں سالک حق تعالیٰ کو اُ متہات مِصفات اِصفاتِ شانید، میں تنجلی با تاہے اور وہ حیات ،علم، قدرت، الاوہ

بتينه نمبره

سمع ، بصر، کلام اور تکوین ہیں علمائے اشاء و کے نزدیک اُتہاں صفات سات ہیں وہ تکوین کو قدرت وارا دہ کی فرع جانتے ہیں لیکن مختفین ما تریدیہ کے نزدیک اُ بہات صفات ،صفات مضاح تیقیہ اُٹھ ہیں صفرت امام ربّا نی قُدِس سرّ وٰ کی تحقیق بھی علمائے ما تریدیہ کے موافق ہے۔ جیسا کہ مبددار و مُعادمِنْهَا ۱۲ میں آپ نے واضح فرمایا ہے۔

ودر نزول وعرفه علوم غریسب ومعارف منگن عجیبه افاضس می فرایند و باحیان وشهود خاص در مهر مترسب که مناسب بقائے آل متعام ست مشرف می سازند بتاریخ ششم ماه مبارک رمضان ببقائے مشرف ساختند واصابنے میشرشد کر حسیب عرض نماید۔

نوچه ۱۰ اورنزول وعروج مین مختلف نئے علوم اور عجبیب وعزیب معارف کافیضان عطا فرماتے ہیں اور ہر قرمب میں ہجراس مقام کی بقاکے مناسہ ، احسان اور شہودِ خاص کے ساتھ مشرف فرمانے ہیں، ماہِ مبارک رمضان کی جھٹی تاریخ کو ایسی بقاکے ساتھ مشرف فرمایا اور ایسا احسان میسر ہوا کہ بندہ کیا عرص کرہے۔

## شرح

نزول وغرُوج میں علوم غربیب اور معارف عجیبہ کے ورُو دسسے مُراد وہ انکٹافات ہیں جو توحید وجو دی کے منافی تصے کیونکہ اس وقت توحید وجودی ہی متعارف تھی اور آپ کے ابتدائی آخوال بھی توحید وجو دی کے مطابق تھے اسى ليصان انكشا فإت كوعزيب اورعجبيب فرمايا كيار

إصان اورشهو دِخاص سے مراد کھالِ اخلاص اور مراتب وجرب کامشاہدہ سہے اور بقاسسے مراد اِنعکاس صفات کی قبولتیت ہے۔ ماہ رمضان کی چھٹی آریخ کو جوخاص بقا اور احسان میسر ہوا غالبا اس سے مراد مرتبرُ ذات کاشہود بلاکیون ہے۔

هُوَالْتَحَقُّنُ بِالْعَبُودِيَّةِ عَلَى مُشَاهَدَةِ إحسان حَضَرةِ الرَّبُوبِيَّةِ بِبُورِ الْبَصَيْرَةِ لَهُ

یعنی سالک کاعباوت کی حالت میں نُورِ بِصیرت کے فریدے اللہ تعالیٰ کامشاهدہ کرنا احسان کہ لا آ ہے جبیبا کے حدیث پاک میں احسان کے بارے میں ارشا دفر مایا گیا ؛

أَنْ تَغَبُدَ اللهَ كَانَّكَ تَرَاهُ فَالِنْ لَـمُ تَكُنُّ تَرَاهُ فَالِنَّهُ عَرَاهُ فَالَّهُ وَاللهُ عَرَاهُ فَاللهُ تَعَرَاهُ فَاللهُ عَمَالًا لَهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عَلَي

یعنی احسان بیسہے کہ توالٹد کی عبا دست اس طرح کرے کہ گویا تو اُسے دیجھ تاہے ہیں اگر تو اس کونہیں دیجھ سکتا تو وہ یقینًا بچھ کو دیجھ تاہے۔

برین میرا اصان بر ہے کہ بندہ عبادات وطاعات کو اس طرح سنوار برین میرا کر بیش کرے کہ گویا وہ اللہ تعالی کے اسمار وصفات کے آنواد اللہ میرا مسان میں میں سب سے اعلی تصوّر برہونا جا ہیئے کہ فقد اللہ میرے سامنے ہوں اور کم سے کم بیتصور ہو کہ اللہ میرے سامنے ہوں اور کم سے کم بیتصور ہو کہ اللہ تعالیٰ میری طرف دیجھ رہا ہے ہی مراقبۂ اِحسان ہے اور ہی ہمرل کی جان ہے اور اس کے اس کے سامنے ہوں اور ہی ہمرل کی جان ہے اور اس کے سامنے والی ہمرل کی جان ہے اور اس کی اس عملی صورت ہی کا نام تصوّف وطریقات ہے۔

البيت الله المالية الم

متن وجهت جذبه اكنون مت ام شد و مشروع متن و مشروع متن در سير في التُدكه مناسب مقام جذبه است واقع شد .

نوچى، اورجدى جهت اب پورى جوگئى ہے اورسَير فى الله بيں جو كم مقام جذبه كے مناسب سے سير شروع جوگئى ہے ۔

# شرح

حضرت امام ربانی قدِس سر فراپنے مُرشد بزرگوار کی مدست میں اپنے بالمنی
اکوال تحرید فرماتے ہیں کہ اس فقیر کے لیے جذب کی جہت پوری ہوجی ہے اس
سے مرا د جذب اولی د جذب موری سبے جوطر بقہ نقشبندیا کا فاصد ہے۔ اس کے بعد
فرماتے ہیں کہ اب سیر فی النہ نفر وع ہوگئی ہے جو کہ مقام جذب کے مناسب ہے
اس سے مرا د جذبہ ثانیہ رجز چقیقی ہے جو تمام سلاسل طریقت ہیں ختے کہ ہے۔
اس سے مرا د جذبہ ثانیہ رجز چقیقی ہے جو تمام سلاسل طریقت ہیں ختے کہ ہے۔
مرا د جذبہ ثانیہ رجز چقیقی ہے جو تمام سلاسل طریقت ہیں جو جب ہیں حرکت
سمبیر فی العبد تقدیبات و تعزیبات کے مراتب وجوب ہیں واقع
ہوتی ہے جو انہیا بطیع مراسی کو لقایت ہے۔ اس ئیر کے تمام کمالات التہ تعالی
موتی ہے جو انہیا بطیع میں اسلام کی ولایت ہے۔ اس ئیر کے تمام کمالات التہ تعالی
کے اسم الظّل اہر کی سرے تعتق رکھتے ہیں اس ئیر کے تمام کمالات التہ تعالی
ادر ہیں وہ سیر ولایت مُنیا میں واقع ہوتی ہے جو فرست توں کی ولایت ہے
اور ہیں وہ سیر ولایت مُنیا میں واقع ہوتی ہے جو فرست توں کی ولایت ہے۔
اور وہ ئیر نی اللہ کا دُوسرا اور اعلی درجہ ہے۔

#### جذب سلوك

چونکہ اس صنمون کو سی کھنے کے لیے جذب وسلوک اور جذبہ صنوری وجذبہ سختی کے مفہوم سے آگاہ ہونا صروری ہے فیلھذا قدرے وضاحت سے سی تاریخ اللہ المؤوقی قاریکن ہے۔ وَاللّٰهُ الْمُوقِيقُ

تُک زہیننے سکے۔

سکوک کامعنی ہے" راستہ" یعنی اللہ تعالی کے قرب اور وضل کے راستہ
 پرجیانا سالک وہ ہے جو قرب حق کے راستوں اورطریقت کی منزلوں کو مجاہد ہو ریافنات اور اتباع سنت ویشریعت کے ذریعے طے کر کے قصو ڈ ک پہنے۔

سائکین کوکھی وصول إلی التیکید ماصل ہوجا تاہے پیر شوق عبا دت اور ذوق ریاضت اس کے بعد بیدا ہوتا ہے۔ اس کوطر لی مغذب کہتے ہیں اور دوق ریاضت کا شوق بہلے بیدا ہوجا تاہے اور وصول الی اللہ

بعدمیں متیر ہوتاہے بہس کوطر بق سلوک کہتے ہیں۔

صوفیارک نزدیگ آیت قرآنیه اللهٔ یَجْتَبِی اِکْدِمَن بلینه ممبر یَشَاء وَیَهْدِی اِکْدِمَن یُنِیْنِهُ میں اِجتبارے مُراد جذبہ ہے اور اِستدارے مرادسلوک ہے۔ نیزسلوک پرجذبہ کی تقدیم بھی النا الله المناسطة المالية المناسطة الم

ثابت ہوئی۔ اسی پیے مشائخ نقشبند پر جذبہ کوسلوک پر مقدّم رکھتے ہیں اور مجذوب سالک کہلاتے ہیں۔ اسی طرح وَالْجَنَّبَیْنُ اللهُ مَ وَهَا دَیْنَا هُهُمْ اِلیٰ حِسرَاطِ مُسْتَقِیْتُمْ ہیں اوّل کا حاصل جذب سے اور ثانیٰ کا حاصل سلوک ہے۔

اقعام كالك

سالک کی دوسمیں ہیں سالک مجذوب اور مجذوب سالک سالک مجذوب وہ ہے جس کوسلوک کی انتہا میں جذبہ نصیب ہو۔ مجذوب سالک وہ ہے جس کے سلوک کی ابتدا جذبہ سے ہو۔

نقشبندی مشائخ مجذوب سالک ہوتے ہیں ان کا سلوک حب ذبہ سے م

شروع ہوتاہے۔

مند بسیم مرکز کا مند بسیم مند برسی مند برسان کے ساتھ مبلدی میں مند برسی کے ساتھ مبلدی میں مند برسی مسلست مند برسی مسالک کو نسبت مند برخد برت مند برسی مند برسی مند برسید کا م

دوسے سلوں میں سب سے آخر میں نسبت جذبہ عطائی جاتی ہے لیکن شہندی مشائخ ذکر قلبی کی توجہات کے ساتھ ہی جذبہ کی ابتدائی توجہات کے ساتھ ہی جذبہ کی ابتدائی توجہات تو بھی سرفراز فرما دیتے ہیں۔ ناکہ مرید اگر نسبت جذبہ کی تمیل سے پہلے مرجائے تو

محروم طلق ندمرے كم اذكم جذب كى لذت توجيح الے۔

#### اقسام جبنه

جذبه كى دوسمين بين ؛ جذبصور كى اورجب زبيقيقى

وه جذب جوسیرنی الله سے قبل ابتدائے سلوک بدت صفیہ جذب جسکوری اللہ سے اللہ عاصل ہوتا ہے اور صرف تبہیل نازل

سلوک کے بیاے عطاکیا جا آ ہے اس کو جذبہ صوری کھتے ہیں اس کو جذبہ بدایت یا جذبہ اُولی بھی کہا جا آ ہے۔

حفر معتبره می وه جذب جرسیر فی الله کے دوران انتہائے سلوک بیں حاصل جذب بیری اس کوجذئر نہایت یا جذب بیری کی جنتے ہیں اس کوجذئر نہایت یا جذب تانید بھی کہتے ہیں اس کوجذئر نہایت یا جذب تانید بھی کہاجا آ ہے۔ جذب بعقی بلاا متیاز تمام سلاسل طریقت میں موجود ہے لیکن حذبہ موری طریقہ تعشین میں خاصہ ہے اور نیعمت حضرت خواجۂ بزرگ شاہ نعشین کو بلو خورات وصد مت جاری طالب خوالی ہے۔ خوالی ہے۔

اس خنیقت کا اظہار آب نے بونے سرمایا ہے:

"مانهايت را در بدايت درج م كنسيم" له

یعنی وہ جذبہ جرتمام سلاسل کے سالھین کو آخریں دیاجاتا۔ ہے ہم بہندا تھا گا اپنے سلسلے کے مریدین کے لیے اس کو انتہاسے ابتدا میں تھینج لائے ہیں جینا نچر باقی سلاسل کی ابتداعا لم ضلق کی سیرسے ہوتی ہے اور انتہا عالم امرکی سیر پر ہوتی ہے۔ بیکن سیار تشریف میں اس کے برعکس عالم امرسے سیر مشروع ہوتی ہے۔ اس جذبہ کی تعریف میں آپ نے فرمایا :

جَذْبَةٌ مِّنْ جَذَبَاتِ الْحَقِّ تُوَازِيْ عَمَلَ الثَّقَلَيْنَ الْمُ

المنت المنت

یعنی ایک جذبہ اللہ تعالی کے جذبات سے ساری کا تنات کے حبتوں اور
انسانوں کے اعمال کے برابرہے۔ بیج نبہ اللہ تعالی کے صوصی عطیات میں سے
ہے اور اسس کے نفنل و کرم پر موقوف ہے۔
ایس نے فرطیا مافضہ لیا انسے انسے میں مافضہ لیا انسے میں اللہ تعالی کی نسبت نفنل ہم کوحاصل ہے یہی وجہ ہے کہ
دوسروں کی نہایت ان بزرگوں کو بدایت میں متیرہے۔

ے اگرازجانب معشوق نبا شد کشنے کوششش عاشقِ بیجار ابجائے زسد

بین مراد وہ علم ہے جودلیل کے ذریعے سے بین مراد وہ علم ہے جودلیل کے ذریعے سے بین مراد وہ علم ہے جوکشف کے ذریعے ماصل ہوتا ہے۔ ماصل ہوتا ہے۔

صروری سے مراد بدیمی تعنی وہ علم حوبدا ہت کے طور برحاصل ہواور دسیل وفکر کامحتاج نہ ہو مجل علم کامفصل ہونا یہ ہے کہ حوعلم بیہلے اِختِصار کے ساتھ حاصل ہو بھرشصیل کے ساتھ حاصل ہوجائے۔



ئىخۇبائىر مارفىياللىت زارىقىكىلىلىق بارلىلىرى بورگىشىڭ لىزز



موضوعك

سالكين كي أقبام ، توجه يشيخ كالفصيلي بيان حساب المرارسيات المقرين كامفهوم حيرت



### مڪٽوب ۔ ٣

منن عرضداشت آنکه یادانیکه این جا اندویم چنین یادان آنجائی هرکدام بمقامی مجوس اند طریق بر آوردن آنها ازان مقامات متعرست آن قدر قدرت که مناسب آن مقام ست درخودنمی یا برحق سبحانهٔ به برکت توجهات عکیته صنرت ایشان ترقی بخشد

توجه ۱۰۰ گزارش ہے کہ وہ یار جربہاں ہیں اور ایسے ہی وہاں کے یار ، ہرکوئی کسی

نہ مقام پر رُکا ہو اہے ان کو ان مقامات سے با ہر نکالنے کا طریقہ مشکل ہے بیہ

فقیر اپنے اندر اس قدرطاقت نہیں یا ناجو کسس مقام کے مناسب ہے۔التّد تما

آپ کی بلند توجہات کی برکت سے نہیں ترقی بخشے ۔

آپ کی بلند توجہات کی برکت سے نہیں ترقی بخشے ۔

## شرح

حضرت امام ربانی قدس سرہ اپنے یا ران طریقت کے باطنی حالات کا تجزیہ اپنے مرشد بزرگوار کی فدمت میں تحریر فرماتے ہیں کہ وہ احباب جو بہاں سرب شریف میں زیرز بت ہیں اور وہ یا رجو آپ نے دہلی سے بندہ کی تربتیت ہیں لوک طرک نے کے لیے بیصبح ہیں وہ کسی ندکسی خاص مقام میں ہینج کرڑ کے ہوئے ہیں اور آگے ترتی نہیں کررہے یہ فقیر بھی راھی تک، اپنے اندر آئنی ہمنت اور وسعت نہیں بانا کر انہیں ام شکل سے نکال سکے ۔ اس لیے ہی دُعا ہے کہ اللہ تعاسلے آب کی توجهات عالیہ کی برکت سے انہیں ترقی عطا فرماتے۔ ياران إينجا سهمادصوفيات سرمند تتربيف اورآب كيفاص فدامين ياران أبنحا سهما وصوفيات وبلى تنريف أوروه فاص فدام بين وصات خواج قدس سرہ نے منازل سلوک مطے کرنے کے بیے صفرت امام رہانی کے زیر تربتیت رہنے کے لیے بھیجے ہوئے تھے۔ سيار فارى زبان كالفظ ب جردوست بمليل محب اورمحبوب كمعنى يت معمل هيد اصطلاح طريقت مين مُريديا بيريطاني كوياركها جاياً ہے۔ قرآن کریم کی رُوٹ مِتنقین کے اہمی اُفلاص و تعلق پر ضی یالفظ صلادق ٱلْآخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضِ عَدُقٌ إِلاَ الْمُثَقِيْنَ اوردديثِ مِبادكر آيْنَ الْمُتَّحَاتُونَ بِعِسَلَا لِيْ لِحَجى اسْ مَهْوم كَيْمَانِهِ سالكين كي تيراقسام منازل الوك ميں سيركرنے والے تين تم كے لوگ الوستے ہيں . واقفين قفن واسين ا شائے سلوک بیری کئی مقام برتھوڑی دیر کھیلیے گرک جانے والوں کو واقفین کہا جاتا ہے۔ یہ ین ہوں ہوں ہے۔ وہ سالک جوزیادہ دیر تک کسی مقام میں رُکے رہیں اور ترقی ند کریں انہیں راجعین کہاجا تا ہے۔ یہ مقام خطر سے حعب را بین

المِيْتِ اللهِ سے خالیٰ نہیں زیا دہ دیر رُکے رہنے سے رعبت واقع ہوتی ہے اور سالک تنزل كاشكار ہو كر اپنے تقام سے گرجا تاہے۔ وہ خوش نصیب سائکین جورثمت بغدا وندی سے ہر آت قی پذیر ہوتے رہیں اور قرب و وصل کے مقام یک جاہیٹی ن مابقين كهلاتي بنايت قرآنيه السَّابِقُونَ السَّابِقُونَ أَوْلَيْفِ كَ الْمُقَرِّدُونَ لَعِيلِيهِ بي مال ومقام كى طرف الثارة بند . بتر نرمبرا حضرت امام رّبا فی قدس سَرَهٔ نِه اس مکتوب بی<u>ں اپنے یاروں</u> بتر نیم مبرا کی دوران کر زبار کر نام كى دوصالتول كا ذكر فرما ياب كه جمار ك يعض يار و إتفنين ہیں اور بعض سابقین ہیں لین ہمارے یار راجعین کے زُمرے بین ہیں آتے۔ آپ نے یاروں کی باطنی تھیل کے بارے میں جو اپنے بجر کا اظہار فر <del>مایا ہ</del>ے یہ آپ کی کسرفنسی ہے یا اثنا تے الوگ میں ہونے کی وجرسے اپنی ہمت صرف كرنے كى بجائے اپنے شیخ كى توجە كوزيا دە ئونزا ورمفيد تمجھ كربيع ضدا شت مېش شيخ كالبنى قوتت إلا دى اورقلبى طاقت سيطا لب كيول پرا تز ڈال کر اس کی باطنی حالت میں تبدیلی پیدا کر دسین توجبركهلا باب

سلوک کی منزلوں پیٹ پیخ ہربق کے لیے توجہ کے ذریعے طالب کے لطائف پر بنیض القاکر تاہے اس کو تصرّف یا ہمت بھی کہا جا تاہے۔

# توجه كاثبوت قرآن مدسي

توجے کے سم فہوم کی قرآن وحدیث سے تائید ہوتی ہے جیسے کہ صنرت یعقوب علیہ السّلام کی توجہ اولا دے لیے اصلاح احوال کا ذریعیۃ ابت ہوئی۔

ارست دِبارِی تعالیٰ ہے ،

یَخُلُ لَکُمْ وَجُهُ اَبِیْکُمْ وَتَکُونُوْا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِیْنَ لِهِ یعنی تہارے باپ کی توج تہاری طرف ہوگی تو اس کے بعد تم

صالحین بن جاؤگے۔

0

0

یہاں صالحیت سے مراد صلاحیت تیستیہ تھی ہے اور دنیویہ تھی زانہی دوسری مجگرارشا دِمت را نیہے :

إِذْ يُوْجِيْ رَبُّكِ إِلَى الْمُلتَّكَةِ اَنِّي مَعَكُمْ فَثَيِّتُوْل

الَّذِيْنَ امَنُوْالُه

"یعنی یا دکروجب تمہار ارب فرشتوں کو حکم دیتا تھا کہ میں تمہارے ساتھ
ہوں بس تم ایمان والوں کو ثابت قدم رکھولیجنی ان کی ہمت بڑھا و "فرشتوں
کے ایمان والوں کو ثابت قدم رکھنے اور ان کی ہمت بڑھانے کی یہی
صعورت ہے کہ ان کے دلوں میں ایسی قوت اور جذبہ القار کریں کہ وہ کفار
کے مقابلے میں ضبوطی دکھائیں اور ڈط کر لڑیں ٹیمل بھی توجہ ہی کہ لائے گا
اسی طرح پہلی وحی کے نز ول کے وقت جبریل امین علیہ السلام کا حضور تر اسی عالم منی الدیمات ہمت کا واضح عالم منی الدیمات ہمت کا واضح

ای طرح احادیث مبارکہ میں صنورعلیہ التلام کا حضرت سیدنا عمر ، مصرت علی المرتفیٰ ہصفرت الولمحذورہ اور دیجے صحابہ کرام علی المرتفیٰ ہصفرت الولمحذورہ اور دیجے صحابہ کرام وضی اللہ عنہ کے اتھ پچوا کر ، سیسنے پر ہاتھ رکھ کر ، سرسے ناف نک ہاتھ بھیر کر ، نظر خاص فر ما کو توجہ کے ذریعے احوال و کیفیات بدل دینا توات کے ساتھ ثابت ہے اسی طرح اولیا برکرام کی توجہات اور تصرفات سے بشیار انسانوں کے دلوں اور دما عوں میں انقلاب بیدا ہونا توبہ کی توفیق طمنا اور فیض ولایت ماصل ہونا بھی تسل کے ساتھ ثابت ہے جس سے سے سے بھی ابراع قل و فیم کو انکا زمیں ہوسکتا۔

الله المراح المستنبي المستنبي

لے بخاری صلّ ج اسلم صفی ج استے ہجبتہ النوس سے تفعیدلات کے بیامتدک مکٹ ج ج اسم

المنت المستال الماكون الماكون الماكون المحالية المنت المحالية المنت المحالية المنت المحالية المناسخة ا

رول اكرم سَلَ المعنية الم الوطالب وعيره برتوم كيول ندفراني .

دوسر اجواب یہ ہے کہ اہل اللہ کی توجہات عکمت فدادندی کے تابع ہوتی

ہیں کیونکہ ہدایت اور صلالت اللہ تعالیٰ کی مشیت پر تحصر ہے۔

يُضِلُ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِئ بِهِ كَثِيرًاكُ

أقبام لوحبت

صوفیا کرام نے توجہ وتصرف کی مختلف اقسام بیان فرمائی ہیں جن میں سے

تین اقسام زیاده معروف ہیں ۔ تارس جیسے پیز پر شیشے یا روشنی کاعکس اور پر تو پوٹا یا اہمجیس تارس سے جیسے کی چیز پر شیشے یا روشنی کاعکس اور پر تو پوٹا یا اہمجیس كاعطروغيره كى خوشبويا كالعكاسي توجه كے مشابہ ہے۔ يہ توج

وتتی اورعارصنی ہونی ہے۔ اس قتم کا اثر بھی تھولوی در کے لیے ہوتا ہے اس لیے یہ توجہ

اگرچنعیف ہوتی ہے نیکن فائد سے خالی نہیں ۔ اگر چنعیف ہوتی ہے اس توجہ کی مثال یوں ہے جیسے کوئی شخص دیئے میں بتی اور ۲ کو چبرالعاتی تیلِ ڈال کرلایا تو دُوسے نے آگ لگا کرروشنِ کردیا۔ یتاثیر کچھطاقت کھتی ہے اور کچھ دیر اس کااڑیا تی رہتا ہے لیکن حب کوئی بیرونی صدم پہنچے مثلاً اُندھی، بارش وغیرہ تو اس کا اثرجا آبار ہتا ہے اس لیے یہ توخ کسی حد تک مفيد صنور بي كيكن لطائف كي مكل إصلاح نهين كرسكتي واس يعيد مريد كومجاهده كي

صرورت ہوتی ہے۔ ی توجہ کادی ہمت طرف کرکے اپنی رُوح کے کالات طالب کی رُوح کے کالات طالب کی رُوح

میں القار کر دیتا ہے اس طرح کر وونوں ٹرومیں باہم جذب ہوجاتی ہیں جیسے کر حضرت خواجه باقی بالله رحمة الله عليه نے ايک نا نبائي كو توخر اتخادى دے كراس كفظاً مروباطن كواين مبيا بنادياجس كووه ضبط ندكرك وصال إكياله اُولِيائے کرام سے ازالہ گناہ ،القاستے توبر ،حل شکلات سلب امرامن اورالبيائ اموات كميلي تحي توخروان أبهت ہے اور بیمعاملہ ان کی کرامات کے زمرے میں آ تاہے۔ مشيخ مريد كومامئ بمحاكرا پيخ قلب كواس كے قلب پر طراقی توجیم مید توسائے بھار اپسے سب واسے سب پہ طراقی توجیم مالیہ کرسے اورخطرہ غیر کو اس کے قلب پر آنے ہے روک كرجذ برقلبى كرسائقه فرييك ول يرابني نسبت القاركرك اور البنة آب كو مرتم كيفيالات معالى كرك البيضننس اطفه كي طرف اس نسبت مين توجه وعائي عِس كوطالب كے دل ميں ڈالنامنظور ہوادرابني بوري باطني ہمت كے ساتھ يہ تفعور كرسے كرميرے ول سے فيوض والوارط الب يامريد كے ول ميں سرايت كر رہے ہیں اِن شَارَ اللّٰہ تِعالیٰ طالب کی قابلیت اور ہستعدا دیمے مطابق <sub>ا</sub>س کو فيوض وبركات مامسل مول محي اسيطرح مربد كيحس لطيفهين ذكرجاري كزنا قصود مولينيا ك لطيفه كومُريد كالطيف كم مقابل مجور بقرم كي خيال كو دوان طرف سے روک کر مرید کے دل کو اینے ول کی طرف تھینے اور اسم ذات کی ضرب کاکئے تاكاس توج اورضرب كے الرسے مربيك اس كطيف مير جنبل بيدا موكر ذكر عارى موجائے العطرح ويرتك متوجر رب اور روزاند اس عمل كا تكوار جارى ركھ تاكە توخەكى تاثىرات راسخ ہوجائيں اور قمر پيك دل ميں حرارت اور نفئ خانك ماك

كيعنيت بيدا مومات اكرمربد عنرحاه رموتواس كي صورت كأتفتور كركي فائبانه توج بھی دی جاسکتی ہے مبیا کر بعض مشائخ کامعمول منفول ہے۔



مَرف بِمِّنت کامطلب یہ ہے کہ دل میں مبیت اور تحیوتی رہے ادرارادہ مضبوط رہے تاکہ دل میں سس مراد کے سواکوئی روسار خیال نہ آسکے۔

یک کس از خویشان این کمیینه ازان مت م ترجمہ ، ایک شخص اس عاجز کے یاروں میں سے پہلے مقام سے ترقی کرکے جلیات ذاتمب کی ابتدار کہ جہنچ کیا ہے۔

#### 8

حضرت امام رتبانی قدس سترہ فرماتے ہیں کہ اس نقیر کے زیر ترسیت صوفیائے سر میند شریعیف میں سے ایک سالک ترقی پاکڑنی ذاتی کے ابتدائی مرتبے تک رسائی عاصلَ کرجِکا ہے۔ وُ وسروں کے تعلق عبی أمید قوی ہے کہ نفضنلہ تعالَی منزام مِضود یک بہنچ جائیں گے۔

اس تحلّی کے بارے میں محتوب دوم میں صراحت ہوئی مزید قدر وصناحت عرض ہے اس کے دو مفہوم بیان کیے گئے ہیں ۔ تجلى ذاتى صوفیائے وجو دیدکے نزدیک ذات عجت احدیث کے مرتبہّ ببالاغهوم

· طهور کوتعین اول اور تخلی ذاتی کهامها باسهے .

صوفیائے شہو دیہ کے نزدیک سانگین کے دلوں پر الزار الہیر کی بے زنگ اور بے جہت بحلی کو تحلّی ذاتی کھا جا تا ہے۔

ذاست بارى تعالىٰ حل مجده الحريم كولاتعيّن ، ذات مِطلق ، ذات حِقْ ذات ساذج ،غيب الغيب ٰ، مرتبالوميت واستجت ذات ج

ذات ذات ِصرف ، ذات ِ احدتیت ، ذات ِهُوهوهی کها جا تکسی*ے پیسب اطلا قاست* 

, دۇسراقېوم

المنت المنت المناس المن

قريب المعنى بير تعيى متقل وقائم بالذات اور وجردحق بلا اعتبار صفات وتعييّات سُنِعَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِـزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ لَهُ

منگر بعضی از یاران آنجائی بطریق مقبن منگ مناسبت ندارند موافق حالِ آنها طریق

برر بسیسے اسے کہ وہاں نے یاروں میں سے بعض یار مقربین کے توجہ، دور سے بیعوض ہے کہ وہاں نے یاروں میں سے بعض یار مقربین کے طریق کے ساتھ سناسبت نہیں رکھتے ان کے حال کے موافق ابرار کا طریق ہے

### 8

امام رّبا نی فرماتے ہیں جو نکرسانگین کی استعداد ایک جسی نہیں ہوتی لبصن سانگین عروج ِ ونز ول اور فنا و بقا کی کامل استعداد رکھتے ہیں اور بعض نہیں رکھتے اس کیے مشائخ طریقت نے ابرار ومقربین کے اسباق و وظائف علیحدہ علیحدہ تخويز فرمائي بين ناكم منادل سلوك ط كرف مين أساني رسيداو مختلف طريقيون پرعمل کرئے ہوئے وصول الی الله کی منزل مکت بنجیں اسی لیے فرمایا کہ الطگر ف إلى اللهِ بِعَبَدُدِ آنْفَاسِ الْخَلَابَيْقِ اللهِ بِعَى اللهُ تَعَالَىٰ مَك رَمَا لَيْ كَ طريقے مخاوق كى سانسوں كى تعدا دے برابر ہيں ان طریقوں میں د وطریقے زیادہ معروف اورجامع ہیں ۔ پہلا طریق ابرار دوسراط یق مقربین ۔

وہ اُولیائے کرام جواحکام شرعیہ ریمل کرنے کے عسلاوہ طرلق ابرار مجاہدات بشدیدہ اور ریاضات شاقیکے ذریعے مراتب

البيت المجاهدة البيت المجاهدة المجاهدة

سلوک طے کرکے وصل بحق ہوں ابرار کہلاتے ہیں صاحب رُوح البیان نے فرمایا اِنَّ الْاَبْرَارَ اَی الشُعَدَاءُ الْاَتْ فِی اِن الْاَبْرَارَ اَی الشُعَدَاءُ الْاَتْ فِی اِن اِنْ اَلْاَبْرَارَ وَهُوشُ نصیب ہیں جونفسوں کی بُری مفتوں سے محفوظ ہوں۔

وه أوليائے كاملين جوذكر وقحر، مراقبات، تجريد وتفريه مراقبات، تجريد وتفريه مراقبات مقربين فنا وبقا اور جهلاك و استغراق كے ذريع منازل لوك على مقربين كهلات بين ان كاطريق محبت عشق اور غير حق سے كامل تجرد حساحب رُوح البيان نے فرما يا المنظر تُوبَ في الله وبالذَات والحيد فات والا فنعال كافرن بيالله بالذَات والحيد فات والا فنعال كام يون مقربين وه والب فرن بيالله بالذَات والحيد فات والا فنعال كام يون مقربين وه لوگ بين جو الله كي ذات ، صفات اور افعال مين فاني بون اور انهى كے ماقد باتى لوگ بين جو الله كي ذات ، صفات اور افعال مين فاني بون اور انهى كے ماقد باتى

لع تغییروح البیان صنی ج. ۱ می المطفقین ۲۲ - ۲۳ کی المطفقین ۲۹:۲۵ کی المعتقبین ۲۹:۲۵ کی المعتقبین ۲۹:۲۵ کی انتخاب

المنت المنافع المنافع

بھی ہوں ۔ قرآن پاک پیم مستر بین کی شان لیوں بیان گی گئی ہے ۔

اَلْتَا بِقُوْنَ الْتَا بِقُونَ ۞ أُوْلَيْكَ الْمُعَرَّدُ بُوْنَ لَهِ ترجه: بركارخيرين آگے رہنے والے وہ اس روز بھی آگے آگے ہوں

مے۔ وہی مقرب بارگاہ ہیں۔

وورے مقام پرارشا د فرمایا۔
 مِزَاجُہ وَ مِن تَسْنِیْم عَیْنًا نَیْثُ رَبُ بِهَا الْمُقَرَّ بُونَ نَے

ترجمه اس می سنیم کی آمیزش ہوگی پیچیمہ وہ ہے جب سے صرف قربین

یتیں گے۔

آبات فرقت می تشرب می شرق آبات فدگوره بالاسے واضح مواکد اُبرار کو ابرار و مقر بنائی تمام الم حبّت کویہ شاہب نوش کوائے جانے کانجمیں ذکر نہیں فرمایا شاہب نوازیں گے جبکہ باقی تمام الم حبّت کویہ شاہب نوش کوائے جانے کانجمیں ذکر نہیں فرمایا باقی الم حبّت کی شارب رابرار کی شارب کو حبثمہ تسنیم کی شارب پر ملائے جانے کیسا تفضیلت

بخشی ہے جبکہ تقربین کی شار خالصتاً تنیم ہے واضلے ہے کہ جبّت کی نہرینے بیات بیتفاوت بیں سب سے افضل نہر نیم ہے اورام کے بت میں سب سے افضل مقربین ہیں۔ یہاں یہ بات ذہن شین رہے کہ کسی شراب میں دوسری شراب اس

کیے طانی جاتی ہے کہ اس کے نشے کو دوبالا اور دوچند کردیا جائے۔ گویا پہلی مشراب میں ایک طرح کی کمی رہ گئی تھی جو دوسری شراب کی طاوط سے بوری کر دی گئی مگر اس خالص شرائب نیم کی کیا بات ہے کہ جس میں خود اس قدر لذت وستی ہو

كه دُور ري شراب مل ئے كى طنرورت ہى مذرہے .

ابرار ومُقرّبين كي شراب مين بني فرق ب كدابرار ملاوف والي شراب

البيت المحالي المائي ال

چیتے ہیں جبکہ مقربین خانص مشراب سینم سے لطعت اندوز ہوتے ہیں۔ (اَللّٰهُ مَّ ارْدُقْنَا شُرْبَهُ)

أبرار وستربین کے اعمال و وظائف کا فرق مجهدین طریقت کے نزدیک اعمال کی دفتمیں ہیں ۔ مجهدین طریقت کے نزدیک اعمال کی دفتمیں ہیں ۔ اعمال ابرار اور اعمال محت بین دولؤں کا اجمالی مقت رصب ذیل ہے۔

ابرارك إعمال سيمقصو وإمتثال امرا ورحصول تواب بوتا ہے۔ وہ تحوار اہم ذات ونفی اثبات کی کثرت سے علم دج كى جانب عروجي منادل طے كرتے ہيں اور نفلى روزوں كى كثرت كرتے ہيں ماكيفس ك مغلوب اون سي كرش وت او جديدا كدوريث مي ب خصاء أمتي الصتيام كه اس طرح وه بطر كن سلوك اعمال بجالات بين تاكة تزكية عناصر وتصفية نعس عاصل موان كے نزديك زهدورياضت اورجهاد بالنفس نبيادي طريقة مقربين كے نزديك إعمال مصقصود انتثال امراد حِسول اللى كالصول موقاب وة كرار اسم ذات ونفى الثبات كرسائة كثرت تلاوت د اخل نماز وخارج نماز، سے جمکی کام یہتے ہیں تاکہ عالم وجوب کے ظلال کی گرفتاری سے رہائی پاکرعروج کے بعد نزول اور فناکے بعد نقا سے عتق ہوں۔ وہ نفلى روزوں كى بجائے نفلى نمازوں كى كترت كرتے ہيں تاكہ وصل وقربت كا حصول ہو وه بطابن مديث قدى لا يَزَالُ عَنْ دَى يَتَقَرَّبُ إِلَى بِيالِيَوَافِ لِ الطريق

جذب اعمال کی ادائیگی کاطریقتہ اختیار کرتے ہیں ناکر معرفت و حقیقت اور شاعدہ محتی محتیقت اور شاعدہ محتی محتی محت می جلدی حاصل ہوجلئے ان کے نزدیک فناو بھا نبیا دی طریقہ ہے۔ مولانار وم مست باد ہ قیوم علیہ الرحمۃ نے دولوں کے اعمال کو ایک ہی

> شعریں بیان سنر مایا ہے۔ مسرز احد ہر شنے یک روزہ راہ سیرعار ف ہر دھے انتخت سناہ

مصل بیکه ابرارکے اعمال و وظائف بمنزلهم وظل ہیں اور مقربین کے اعمال و وظائف مبنزلہ رُوح و اصل ہیں اس بیے عارفین کے نز دیالئے کئے کیاں معتسبر بین کے گناہ شمار کی جاتی ہیں .

حَسَناتُ لاَرُارِسِيّنا وَالْمُقْرِبِيَا مُعْمِمِ

صوفيار كوام اور المعلم وحال نيك ومقوله كمتعد دمقهوم بيان فرمائ

من موقع المراد کے نزدیک بدعت بسند ہیں وہ مقربین کے بہال فہوم نزدیک بدعت بسند کی الم میں کا فہوم کی نزدیک بدعت بسند کہلاتے ہیں جیسا کہ فرمانِ نبوی ہے گال کے اللہ فی النّارِّ گویا مقربین بدعت بسند اور سستند کی طون تقیم کے قائل ہیں ہوتے وہ ہر بدعت کوستیند قرار دیتے ہیں۔
و مرام فہوم ابرار کا نسیان مقربین کے لیے عصیان ہے جبیا کہ فنسین فی وسمر فہوم ادر وعظمی ادم کر تبدیلت کے کلمات بین نسیان کو وسمر فہوم ادر وعظمی ادم کر تبدیلت کے کلمات بین نسیان کو عصیان کے عنوان سے تبدیل موران وندامت کی راہ سے آدم علیہ اسلام کی مبلالی عصیان کے عنوان سے تبدیل وندامت کی راہ سے آدم علیہ اسلام کی مبلالی

≣ محرُّب هيڪ تربتيت فرما في فحئ المرعبدتيت ومعليه استسلام خلافت اللبيه كالوجع المحاسيحير وصلت عامه حجاب خاصدان طاعبت عامركست و نمامسگال ابرار کی حباوت میں عذاب کا خوت اور تواب کا طمع مطلوبے بیونها فهوم ابران جارت یا می این کی عبادت کا منشار رصائے می و می در این کی عبادت کا منشار رصائے می و مخبت ِذاتی ہوتا ہے اور س کیسیس اس اعتبار سے اُبراد کے اعمال مقربین کے اعمال كے مقابلے مين سئيات كهلاتے ہيں۔ كيوبكم ابرار كي يجيان بن وُجرحنات بين اور من وُجرستيات جبكه مقرّبين كي نيڪيان مِن كُلِّ الوجرة حسنات محصنه بين ـ من کاعمل ہے بیے عرض ان کی جزا کچھ اور ہے حور وخیام سے گزر بارہ وحب مے سے گزر الببتة مقرلبين مجى مرتئه نزول ولقالي تحميل كي بعد خوف اورطمع ليه ممبراً كي كيفيات سيبره اندوز موت بينكين ان كاخوف اور طمع نفس کی اَلائش سے مُبَرا ہو اسے ان کا خوف النّہ کے غضب واراہ کی سے بوتلب اوران كاطمع الله كى رضاك بيه بوتلب كويا وه دوز خسد اس بي ڈرتے ہیں کہ وہ اللہ کے غضب کامحل ہے اور جنبت کا اس لیے طمع رکھتے ہیں

كه وه الله كى رضا كامحل بيطي .

جۇ ابنىت كۆرىدى ۋە (١٨١) ۋە سىۋىت ھ

ر خوامن می می اعتبارسے ابرار کا درجۂ ماسبق مینی عمل متروک تقربین می انجوام می می می است سے درجۂ ما بعد مینی عمل مامور کی نسبت سے ذَنب کہلاتا ہے اور وہ اس پہلے درجہ سے استخفار کرتے ہیں جیساکہ اللہ تعالی نے

ڵڽڿؙڡۻڔ*ڔڮۄٛڡؙ*ڶ۩ؙۺڟؿٷۻڝٷڔڡؖٳ ۅٙٳۺؾۼٚڡؚڹڒٳۮٙڹ۠ڸؚؚؚؚڬ<sup>ڮ</sup> دو*سری جگه*ارشادفرمایا

لِيغْفِرَ لَكَ اللهُ مَسَاتَفَدَّمَ مِسِنْ ذَنْبِكَ وَمَسَاتَا خَرَبُهُ نيزحنورعليهالتلام نے فرايا :

مَّرَجَهُ وَلِلْهُ وَاتُوبُ النَّهِ فِي الْيَوْمِ الْكَثَرِ مِنْ سَنَعِيْنَ مَكَةً لَهُ اَسْتَغْفِرُ الله وَاتْ مِن النَّهِ فِي الْيَوْمِ الْكَثَرَ مِنْ سَنَعْارِكُمَا مُولَ -ترجمه ومِن وان رات مِن ستر (٠) بارسے زیادہ استغفار کرا مول -

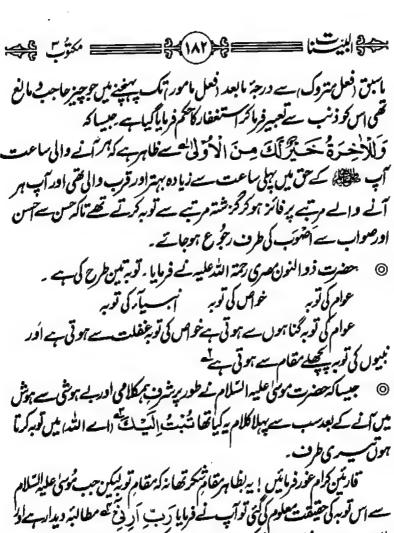
ایک مدیث مبارکریں ہے سو (۱۰۰) بار استغفار کرما ہو آ

 آیات بالا اوروریٹ بیں ذنب سے مُرادگناہ نہیں اور استغفار فرما اسمعیت
کی وجسے نہیں کی ذکر بی مصوم ہوتا ہے یہاں ذنب کا اطلاق مجاز اسے اور اس یعی
ذنب کے ذکر سے پہلے مغفرت کی لبتارت ہے اکتر قلب مجبوب سی الدعلیہ والدو الم میں اطلاق مجازی کا بھی قلق و ملال نہ رہے۔

#### بليتكاس

حضور کا فیمل عبادت تھا بہاں آپ کے علی متروک کو مجاز ا ذنب فرما کراس کے مقل بلے میں آپ کے فنمل مامور کو زیادہ نضیلت و اہمیّت دی گئی ہے اور درجۂ

لے محستد آیت ۱۹ کے الفتح ۲۰ کے بخاری ملی جو ۲ کے کم ملی ج ۲ ، ابن ماہر مند ۲



له الفنعي م منه مناب اللبع صبيع ملي كه الاحراف ١٩٣ كله الاحراف ١٢٣ هيمكتوبات صدى كتميب

البيتنا الله المالية ا

سے رقی کرکے مرتبہ اُعلیٰ پر پہنچیااس راہ میں فرض ہے ورندسلوک اتمام رہے گا۔ اس لیے کم ہے قید م قوالی اللیام اصر سینی قواست بق المدم قور فرق کینی

الله كى طرف دور واور مُفرِدون سے آگے سيركرو . من لَمْ يَكُنْ لِلْوِصَالِ آهنالا فك لَهِ آخسانِه فَوْنُهُ اللهِ مَنْ لَمْ يَكُنْ لِلْوِصَالِ آهنالا اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال

متن میرستید شاه حین در مشؤلئی خود بنان دیدند که گویا بدردازهٔ کلان رسیده است میگویند که دردازهٔ حیرت است درون او که نظر میکنم حضرت ایشان راو ترک بینم مرحبت دسعی میکنم که خود را درون اندازم بیسئے من یاری نمیکند

ترجمہ امیسید شاہ مین نے اپنے مراقبہ میں بوں دیکھا کر گویا ایک بڑے در وازے بر پہنچا ہے وہ کہتا ہے کہ وہ در وازہ جیرت ہے اس کے اندر جونظر کر کہے صنور کوال<sup>و</sup> اس فاکسار کو دیکھیا ہے اور ہر حزید کو ششش کر تاہے کہ اپنے آپ کو اس کے اندر ڈللے لیکن اس کے پاؤں ساتھ نہیں دیتے۔

شرع

اس بمُك بين صنرت امام رباني قدس سرَّ واپنے مرشد برحق صنرت خوجب

📰 مُحَوَّبٌ عِ باتی بالندرجمة الشوليه كى خدمت ميں اپنے ايك يارميرتيد شاھىين كے مراتب كا اجمالی منظر پیش کررہے ہیں جس سے قصور اپنے یاروں کے احوال باطنی کا تجزیہ اور ان كئىتىلىن حصول آگاى اور تربتيت واصلاح كامعامل آگے برها ماہے۔ تميرستيرشاهمين نع جربير باطني كيد دوران حنرت نواجه بربك عليه الرحمة اور حضرت امامرباني عليه الرحمة كودروازة تيرت كاندرشاهده كياا ورخودكوست ترك باوجود اس دروازم ك اندرقدم نهين ركوسكاغالباس كامطلب يب كدوه الجي مقام حرست مكب رسائي حاصل نهيس كرسكا جبكه آب دونول حضرات مرتبه جيرت پر فائز المرام ہیں۔ وَاتْحَدُّ سُرُعُلُ وَالِكَ يطربيت كانتهاني مقام بييس كالمطلب أكثاب عتيقت بر مقام جيرت يران اوجانات عديث بين بعدد دورعالم من ديد المر يه دعا ما نگا كرتے تھے اللّٰهُمَّ إِذْ فِي تَحْتَ ثِرًا فِينِكَ اسے اللّٰهُ مِحْدِ إِنِي ذات مِن حيرت كى فراوانى عطا فرما معوفيلہ نے اس كى دومين سبب ان فرمائى ہيں . حيرت لمرثوم اورجيرت مجمود حبرست مذمنوم يحرب جهالت كالسبحه اوتنزل كالنبست محب و و میرت علم کات بروقی ہے اور و دن در تی کا سنب تی ہے اہل طریقیت نے اس کے عنگف مغہوم بیان فرملتے ہیں . سالک پر اچانک طاری ہونے والی فیفیت ہے جو قلب عاد فین پر یا قاق خار ا درخور و فکر کرنے کے وقت وار د ہوتی ہے اور نہیں ناتاج صورا ورغور و فکر سے

دۇرىلىجاتى بىڭ. كەكتاب الىم مىز

 سالک کامرتیز احدیت میں تحوہ ونا اور تحتی ہم روشو" کامشا ہدہ کرنا حیرت ہے ہے۔

مودنت كي خرى مزل جهال عارف مما عَرَّفْنَاكَ حَقَّ مَعْدِ فَتِكَ كَا اقرار كرناسب اور تجليات بلاكيف وجهت اور مثنا بدة بلا حجاب كي دسعت سع بهره ياب بوتاب صوفياء اس تقام كوفنائ عند برسع بلعبسير فرمات به تلع.

مارف کا پہلا درجر حرب سے شروع ہوتا ہے اور آخری درجہ جی جرب بہر تمام ہو اہے۔ پہلی جرب شکو تعمید میں ہوتی ہے اور دو مری جرب ن کر دصلت میں ہوتی ہے اور دو مری جرب ن کر دصلت میں ہوتی ہے کہ یاصا حب جرب کا حال کچر ہوتا ہے۔

بہ تو اب اہل جنت بہ عقاب اہل دوز خ
من ازیم سیاں ندائم کہ کیا نم از کدا مان
خوج ہے عظار در ماتے ہیں کہ مہ کو جب عظار در ماتے ہیں کہ مہ کارعا لم حمیدت است وغیرت ہت محرب اندرجر ب ست میں ندا ندرجی سے سے مرت اندرجی ب مرکب رکی میں ندا نم حمیدت ادرجی ب رکی میں ندا نم حمید ب رہ کے جارگی



مُحَوَّبِ لَيْهِ عارف لِاللهِ صَرْخِرِجِهِ **حَجَ** لِمُعْ الْحِيْلِ لِللَّهِ لِمُعَالِمِينَ عارف لِاللهِ صَرْخِرِجِهِ **حَجَ** لِمُعْلِمِينَ الْعِنْ لِللَّهِ لِمِنْ الْمِنْ الْمِنْ



موضوعك

دات ، صِفت ، شيوات اورا عتباري تعربفات دوارو ظلال کالبان ، خفيقت محريد کافصياما بن مدين ورولولاک کي عين ونخريج ، حقيقت کعبله حديث ورولولاک کي عين ونخريج ، حقيقت کعبله حقيقت قرآن کا تفصيلي بيان ، حقيقت رمضان

# مڪتوب - هم

منن قدوم ماهِ مبارَكِ رَمَضان مُبارك باشداین ماه را باقرانِ مجید که حاویِ جمیع کمالاتِ ذاتی وستُ یُونیست وداخلِ دائرهٔ اصل ست که رسی نظلیّت با وراه نیافت م است و قابلیّت اُِولیٰ ظلّ اُوست مناسبت ِتمام

س بن م

ترجمہ ؛ ماہ مبارک رمضان شریف کا آنامبارک ہو، اس مہینے کو قرآن مجید کے ساتھ حج تمام ذاتی اور شیونی کھالات کا جامع ہے اور اُس دائر ہ اصل ہیں ہے جس میں محی طلبیت کوراہ نہیں اور قابلیت اُولیٰ رحقیقت فج تمیم علی صاحبہ الصلوات، اس کا طِل ہے بڑی مناسبت ہے ۔

# شرح

زیرنظر کمتوب علوم و معارف کا بحرنابید کنارہ اور شکل ترین کمتوبات میں سے بہت جبار محتوبات میں سے بہت جبار محتوب کے مسلمات کی تونیعات ندر قاریکن ہیں اکر اصل محتوب کا مفہوم واضح ہو سکے ب

م ذَاتُ الشَّيْمُ نَفْسُ الْوَعِينَ الْمُعْ لَعَيْنَا اللَّهِ لِعَنْ كَانَ اللَّهِ اللَّهُ الللِّلْمُ الللِّلْمُ الللِّلْمُ اللللْمُولِي اللللْمُولِي الللللِّلْمُ اللَّلْمُ اللللْمُولِي الللللْمُولِي الللللْمُولِي الللْمُولِي اللْمُولِمُ اللللْمُولِي اللللْمُولِمُ الللِمُ اللِمُولِي اللْمُنْم

اعتبارصفات وتعیّنات "کوذات کهاجا آہے بعنی اللّٰدتعالیٰ کا وجودِ طلق حوصفاو تعیّنات کے اعتبارات سے برترہے ۔

اباتصدّف كنزديك ذات حِق، ذات بِسا ذج، ذات بِحت، ذات مِن ذات واجب، ذات بِهُوهُو، لاتعيّن ، عبُوديت بِصرفه، باطن غيب لغيب مُبدار فياض ، حضرت الجمع ، حضرت الوُجود ، أزل الأزال ، مرتمةُ الهويّد ، الغيبُ المسكُوت عنه ، عينُ الكافر مجبول النّعت ، مرتمةً ذات بي كم مختلف تبعيرات و صطلاحات بين

حضرت امام رّبانی قدّس سرّهٔ فرماتے ہیں : ذات آنست کہ قائم بنضبہ باشد وصفات قائم باُولے

یعنی ذات اس کو کہتے ہیں حرخود اپنے نفس کے ساتھ قائم ہوا ورصفات کجو اسی ذات کے ساتھ قائم ہوں ایکن ذاتِ پر وجودِ زائد کے ساتھ خارج میں موجِد دہمُوں۔

هِ الْآمَارَةُ اللَّازِمَةُ بِذَاتِ الْمَوْصُونِ الَّذِي صفت يُعْرَفُ بِهَا لَهُ يَيْنَ صفت ايك اليى علامت جه جه

موصوف کی ذات کے ساتھ لازم ہے اورموصوف کی پیجاِں کا ذریعہ ہے۔

بر میں اور ان کے وغود کو اہلے تھا ہے قائل ہیں اور ان کے وغود کو میں میں میں اور ان کے وغود کو میں میں میں میں اور حکما رصفات کی نفی کے قائل ہیں اور صفات کو عین ذات کہتے ہیں مِتاَ خریج سوفیار ہیں سے معض

ی می سے حال ہیں در رصفات و مین دات ہے ہیں۔ ساطری و عیاد ہیں سے بس حضارت جو وصدت الوجود کے قائل ہیں صفات کی تفیٰ کے سئلہ میں معتزلہ اور حکمار کے ہتر متذہ

علی میں اہمئنت کی تحقیق کے مطابق صفات لاھ کو وَلَا عَدْوُهُ ہیں میں معنوات ذات وصفات کے درمیان ایسی معنوات ذات وصفات کے درمیان

جو البيت الله المالية غيرتية اورمينيت كالطلاق كزنا منعب حضرت امام رباني فيس سرة كالجعي بيكك مبیاک حضرت امام ربانی قدس سرونے اس مسکے کی وضاحت مسدمائی ہے بعضَ سَاكُخ نے جو واجب تعالی جل شان كی صفات كے دالگ، و مُو د ہے انكاد كرديا ہے اور انہوں نے صفات كوخارج ميں عين ذات كہد ويا ہے تو اس كى جم یے کہ بیصنرات تجلیات صفاتیہ کے مرتبہ میں ہیں مصفات ان کے لیے ذات جَلِّ شَانهُ كَيمِشَا هدے كے آيئے بن گئي ہيں اور آئينه كي صورت يہوتي ہے كہ وہ خود ویکھنے والے کی نظرسے خفی ہوجا تا ہے ﴿ اور وہی چِیزنظر میں اُتی ہے جَ ٱسِیّنے کے بالمقابل موتى بهذا صفات لامحاله أئينه بن جاني تحمكي وجرس ان كي نكامول سے بوسٹیدہ ہوگئی ہیں اور چونکے صفات انہیں نظر نہیں ہتیں اس لیے وہ فیصار نے ویتے ہیں کہ وہ خارج میں عین ذات ہیں اور علم کے مرتب میں حرانہوں نے ذات تعالیٰ وتقدّس كے ساتھ صفات كى مُغائرت دغير ہونا أثابت كى ہے تو وہ محض اس بنار پرہے ناکہ بالکلیہ صفات کی نفی لازم نہ آجائے اور اگر بیعجن حضرات اس مقام سے اور أور پہنچ جاتے اور ان کاشہود صفات کے ان المینوں سے باہر کل جاتا تع واق

اور الرباق بالمسابق اور الله المستحدين المستحدين المستقدة بالمرسلة المستحدين المستقدة المستقدة المستقدة المستقدة والتلام والتي تتسب ماخوذ

ہے کے صفات الگ موجود ہیں اور وہ ذات پر زائد ہیں ' نثونار میں مجمع الحمع کاصیعنہ ہے اس کا مفرد شان ہے اور شہون اس کی سکونار میں

جمعب بشان كانعنى حال اورام بالمعنى حال المحكل

یَوْمِ هُوَ فِیْ شَارِ<sup>نے</sup> اس مرتب اور اصطلاح کی اصل ہے۔ اللہ تعالی جب اپنے بندے پرتجلی فرما تاہے تو اس تحلی کوحی کے اعتبار سے

شان الہی کہا جا تا ہے اور بندے کے اعتبار سے حال کہتے ہیں ۔

حضرت امام رباني مجدّد العث اني عليه الرحمة شيونات كي تعرلفي ميس رقم طرار

ہیں . اُردو ترجم حسب ذیل ہے .

الله تعالى كي شيونات اس كي ذات كي فرع بين اور اس كي صفات ان شيونات بر ہی متفرّع ہیں اور اس کے اسمار جیسے خالق ورازق ، وغیرها صفات برمتفرّع ہیں اور اس کے افعال ان اسمار پرمتفرّع ہیں اور تمام موجو دات افعال کے نتا گئج ہیں اور ان ہی برمتفرع ہیں - (الله تعالی ہی بہتر جانتا ہے) بین علوم ہوگیا کہ شیون اور چیز ہیں اورصفات اورچيز اورسشيون خارج مين عين ذات بين اورصفات خارج مين وات يرزا مدبي كم

ميز صنرت امام رباني فَدِّسِ سَدَهُ مِزيدِ فرملت بين

و ہنین حرجی تعالیٰ کی طرف سے سالک کو پہنچیا ہے دوقسم کا ہے۔ ایک قسم وهبيحس كاتعلَّق إيجاد (موحرد كُرنا) إلقاً القي ركفنا تخليق (بيداكرنا) ترزيق (رزق دینا) احیار دزنده کرنا، اماتت رمارنا، وغیرهاکے ساتھ ہے اور دُوسری قسم وہ ہے جوامیان بمعرفت اور مراتب ولایت ونبوت کے تمام کمالات سے تعلق ہے۔ بہاقیم کا فیض سب کوصفات کے ذریعے سے آتہے اور دُور رقیم کافیصل عبن كوصفات كے ذريعے سے اولعض كوشيونات كے واسطے سے الم الم اورصفات وشونات كدرميان ببت باريك فرق ب حرفحري المشرب أوليار كعلاوكهي پرِظ ہزہیں ہوا اور مذہ کے سی اور نے اس کی نسبت کلام کیا .... اس بیان کوہم ایک



مثال سے واضح کرتے ہیں مثلاً بانی بالطّبع أوبر سے نیچے کو آ باہے بیلبعی فعل اس مي حيات ،علم، قدُرت وإرا وه كا اعتبار بيد إكر تاسب كيونكرصاحبان علم اسيخ لقلّ کے باعث تبقطنائے علم اوپرسے نیچے کو آتے ہیں اور فوق کی طرف توخرانہیں کرتے اورعلم حیات کے نابع ہے اور ارا وہ علم کے تابع ہے۔ اس طرح قدرت بھی ابت هو گئی کمیونکه اراده میں اُحدُ المقدُ ورین ( وومقدور وں میں سے ایک کو اختیار کرنا) کی خصیص ہے ہیں بیراعتبار ات جریانی کی ذات میں نابت کیے جاتے ہیں برنزلہ شیونات کے ہیں اگران اعتبارات کے باوجودیانی کی ذات میں صفات ِزاَّدہ اُہابَ ہوجائیں تو وہ وجود زائد کے ساتھ صفات موجودہ کی طرح ہوں گے۔ یانی کو بہتے

اعتبارات کے کما طسے حق ، عالم ، قادراور مُرید نہیں کہ سکتے ۔ ان اسموں کے ابت كرنے كے يصفات زائدہ كانابت كرناضرورى ہے۔ النداح كجيعبس مشاسخ كي عبارات بي ياني كي تعلق مندرجه بالا إسمول كي شبوت

میں واقع ہواہے ان کی نبیا دشیون وصفات میں فرق نذکرنے کی وجرسے ہے اور اس طرح صفات کے وجود کی نفی کا حکم بھی اس فرق کے معلوم نہ ہونے برجمول ہے

اورشیون وصفات کے درمیان دُور اور سبعے کرمقام شیون صاحب شان کاموم (رُوبرو) ہے اور مقام صفات ایسانہیں ہے لیہ

حضرت اہام رّبانی قدس سرّف کی نظر میں شیون وصفات کے درمیان فرق کی بنياديه ہے كەحوجصنات صرف شهود صفات كك بيهنچے ہيں وہ انھى مرتبۂ ذات بك وصول کی معادت سے مشرف نہیں ہوئے اور جوشہود شیونات کے مرتبے سے شاو

كام بين انهين وصول وات كامرته بهي حاصل ب كيونكوشبونات وات حق تعالى مير

المنيت المحالي المالي المالي المالي المالي المالي المالي المالية المال

زائد نهیں اور نہی ان کا وجود خارجی نابت ہے لیکن صفات وات پر زائد ہیں اور وجود خارجی نابت ہے لیکن صفات وات پر زائد ہیں اور وجود خارجی نابر سے لیکن صفات پیش نظر ہوتے ہیں اور وہ ممکنات ہیں اس مرتبے میں عارف مرتبہ ذات سے و ور رہتا ہے کیونکہ میعت مصفات کا ہے لیکن مقام شیون مرتبہ ذات تک وصول کا نام ہے لہذا مقام شیون کو مواجه زامت قرار دیا گیا ہے۔ والغائم علم

عمر فات كے يوم ابت جو ذات كے ساتھ قام ہو ذات كا عبراً اعمر النظر في المسكر عمر البت يہدك محو النظر في المسكر عمر البت يہدك محو النظر في المسكر عمر المار ال

التَّأْبِتِ أَنَّهُ لِأَيِّ مَعْنَى تَبَتَ وَإِلْحَاقُ نَظِيْرِهِ بِهِ وَهَلْذَا عَنَيْنُ الْمُأْبِتِ الْمُعَلِيْرِةِ بِهِ وَهَلْذَا عَنَيْنُ الْمُعَلِيْنِ إِي طُورُ وَفَكُرُ لَا كُنَّ الْفِيَاسِ لَهِ يَعِيْدُ وَحَكُمْ وَبِيهِ سِينًا بِت بِاسْ مِن إِي طُورُ وَفَكْرُ لَا كُنْ الْمُعَلِيْنِ الْمُعْلِيْنِ فِي وَهِ حَكُمْ وَبِيهِ سِينًا بِت بِاسْ مِن إِي طُورُ وَفَكْرُ لَا كُنْ اللهِ الْمُقْلِيلِ اللهِ عَلَيْنِ وَهِ حَكُمْ وَبِيهِ سِينًا اللهِ عَلَيْنَ وَمُ حَكُمْ وَبِيهِ اللهِ عَلَيْنَ وَمُ حَلِيمِ اللهِ عَلَيْنِ اللهِ عَلَيْنَ وَمُ حَكِمْ وَبِيهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ الللهِ اللهِ اللهِ

حکم کی عِلْت معلوم ہوجا لئے پر دوسری چیزیں وہی علّت معلوم کرکے وہ حکم ماہت اس چیز میں بھی ثابت کیا جائے اس کا مام قیاس ہے۔

باب فرات کے ساتھ صفات کے قیام سے مراد قیام بلاکیون ہے اور بب بنی ممبر است است کے قیام سے مراد قیام بلاکیون ہے اور بب بنی مبر الضمام و اِنتزاع سے سنٹی ہے شیونات اور اعتبارات کا مقام شیات فارجی نہیں رکھتے لہذا اُمور منتز عرصے ہیں ۔ اسی وجہ سے اعتبارات کا مقام شیات کے مقام سے بلند ہے اور شیونات کا مقام صفات کے مقام سے بلند ہے اور شیونات کا مقام صفات کے مقام سے بلند ہے اور شیونات کے اور اگری میں اُسکتے ہیں لیکن اعتبارات کے مرتب ورب نا دراک سے ورار ہیں ۔ ورب بیں ۔ ورب میں اور ایس ۔ ورب ہیں ۔

## دَوارَ وظب لال

واضح ہوکہ مجبدین طرافقیت نے وائرے کی اصطلاح تفہیم تقامات کے لیے

مكونس ع وضع فرمانی ہے جے نکہ قُرب الہی کے مراتب ومقامات لاتعداد ہیں لیکین سالک کو عالم مثال میں مشف کی نظرے وہ تمام مراتب ومقامات ایک وائرہ کی طرح نظر تے ہیں اور سالک اپنے آپ کو عالم مثال میں اس طرح دیکھتا ہے کہ گویا وہ سیر کرر با ہے اور دم مَدِم ترقی کررہاہے ۔ یہاں تک کوظلال کے دائرہ میں داخل ہوجا تا ہے اور مرر رکتے ہوئے اپنی اس کو ہینج جاتا ہے۔ اسی وجے سے اِن مراتب قرُب کے في دار ك لفظ بولاجا ما ب اور ابني اصل كى طرف ترقى كوئيركها جاماب، جسطرح دائرہ ہرطرف سے برابرہوتا ہے اور نہیں کہاجا سکتا کو اس کا ایک سراکہاں ہے اور دُوسر اکہاں ہے ؟ اس طرح قُرب کے مقاموں اور مرتبول کی ججی فی مدُعلوم وهنهوم نهيس بوتى سالك كودائره ك اندر حكير لكان وال كرطرح يهال وائه تعِبُ اور حرات کے مجھ ستنہ میں علیاً. حکمت الهید کے تحت ظاہر و باطن کی دولؤں اُٹھیں دائرے کی طرح کول واقع ہو تی ہیں <sup>ی</sup>ے نکھ کی تیل جبی دائرے کی مانندہے لہٰذاسالک کی نظر جب عالم امکان و وجوب ماتب برطر في المع تووة عام مراتب مقامات الكلول أي كولا في كاطرة كول نظرت بین سالک مقامات کی اس گولائی ای وجرسے ان کو دائرے کا نام دیتے ہیں۔

ہیں سالک مقامات کی ہی تولائی کی وجہ سے ان کو دائر سے کا نام ویہتے ہیں۔ © صوفیائے کرام نے راہ سلوک کے ہر مرتبے کو دائرہ قرار دیا ہے کیو مکی ملت کئے مفرّعہ کا ہرصتہ اوّل و آخر، بالا و بیت اور مین و بیبار ہوسکتا ہے اور دائرہ کی ہی شت ہوتی ہے۔ وَاللّٰہُ اَعْکُمْ

#### دائرة إسسل

صُوفیارکرام کے زدیک دائرۂ اصل سے مُراد ذات کے اسمار وصفات اور شیزمات واعتبارات کے مراتب ہیں۔اس دائرے کا تعلق عالم وجُرب سے ہے بیرمرتبہسی لفظ ،حبارت ،اشارے یا کنائے کے ذریعے بیان ہمیں کیا جاسکتا ہی البيت الله المرابع الم

مرتبے میں سالک کوئیر علمی واقع ہوتی ہے۔ اس ئیرکانام ئیرنی اللہ ہے۔

#### دائرة طيسلال

صُوفیار کرام کے زدیک تمام موجودات ،اسمار وصفات باری تعالیٰ کے ظلال بیں اور اسمار وصفات کی طرح ان کے ظلال بی ب انتہا ہیں۔ ارشادِ باری تعسالی بیں اور اسمار وصفات کی طرح ان کے ظلال بھی بے انتہا ہیں۔ ارشادِ باری تعنی جرتمہارے بے مساعِت کہ ایک میں ہے دہ فاتی ہے۔ پاس ہے دہ فاتی ہے۔

جب سالک اُسمار وصفات کے ظِلال سے اسمار وصفات کی طرف ئیر کرتے ہوئے دائر وُظلال میں داخل ہوجا تا ہے اور اپنی اصل کو پہنچ جا تا ہے تو ہس ئیر کو ئیر اللٰ اللہ سکھتے ہیں۔ دائرہ ظلال کو دائرہ اسمار وصفات، دائرہ ممکنات اور دائرہ ولایت صُِنغریٰ هی کہا جاتا ہے۔

ظلال مفوم ظلال كالفهوم فلرشي عبارت ازظهُ ورشي است اگرچ كبشِنبه ومثال باشد در ترسب ووم كه

یعن طِلِ شی سے مراد اسٹی کا دُور سے مرتبے بین طہور ہے اگر چیہ شہر اور مثال کے طور پر ہو۔

حضرت قاصنی ثنازُ الله با فی بتی علیه الرحمة فر استے بیں کہ اصطلاح صوفیار میں یہاں خطر سے مار نہیں جب سے کا لطافت میں معاذ الله نقص کا وہم بیدا ہو بکہ خلال مخلوقات اللہ میں سے ان طیفوں کو کہا جا تا ہے جن کو الله تعالیٰ کے اسمار وصفات سے بُوری نیُری مناسبت ہے اور وہ مخلوق تک اُسمار وصفا کے فضن

چه ابنت است المحرف المرتب المحرف محرف الم

يهنبان كيديد واسطه موت بين انهى لطيفون إور واسطون كواساني كيساته منعض كي يد فلال كهرويا جابات اوريه ممكن ب كرسالك محروم وروشي كےعالم میں ان طیفوں کوظلال سمجھ لیتا ہوئے

بعض صوفیار نے فرما یا ظلال سے مراد تعلقات میں جیسے علم کاعلق معلومات کے ساتھ اور قُدرت کا تعلق مقد ورات کے ساتھ ہے یا ظلال سے مراد صفات کی تمثال اور نمونے ہیں جیسے زید کی صورت آئینے میں زید کی تمثال اور نموند

صوفیار کے نزدیک خِلال سے مُرا دائسمار وصفات کے جابات ہیں کیونکہ خِلالی پہکلیوں کی شکلوں نے ہی لوگوں کو ذات کی دیدا ور ملاحظہ سے روک

اسمار وصفات کے ظلال ہی حق اور خُلق کے درمیان حائل ہیں اگرین طلال خالق اور خلق کے درمیان حائل ہیں اگرین طلال خالق اور خلوق کے درمیان حائل نہ ہوتے تو ذات وصفات کی تجلیّات کا کنات کو مُلا دیتیں مبسیا کہ حدسیثِ پاک میں ہے :

حِجَابُهُ النُّورُ وَفِي رِوَايَةِ آبِي بَكْ رِاكَارُ لُوْكَتُفَ لآخرقت سُعِجَاتُ وَجَهِم مَا إِنتَهِى الْكَيْدِ تَصَرَهُ

یعنی الله تعالیٰ کے نور کے حجابات ہیں اور ابُوں بحرکی روایت میں نار کا لفظہے اگر وہ حجابات وُ ور ہوجائیں تو ذات کی تجلیات جہاں مک بینجیں مخلوق کو عبلا کرر کھ

بعض روايات مين ب دُونَ اللهِ سَنْعُونَ الْفَ حِمَابِ

مكون ع

مِنْ نُوْرِيَّ وَظُلْلَمَتَةِ العَلِهُ یعنی اللّٰدتعاً لی کے نور وظلمت کے ستر ہزار حجابات ہیں ۔

#### بليت اسا

لُغت عرب کے محاورہ میں سبعُون کا لفظ کسی تعداد کی کثرت کوظا ہرکنے کے لیے بولا جا تا ہے اس کا بیطلب نہیں کہ نور وظلمت کے پر دے صرف متر ہزار ہی ہیں ۔ وُالتُّدُ اِلْمُ

مدیبیث میں جن حجابات کا ذکرہے صوفیلئے کرام کے نز دیک ان سے مُرا و ظلال بین توحدیث کامطلب بیرموگا کم اگرطلال منر موت تو تخلوق اینے منگ عنائی تعداد اورسيتي مرتبه كي بناربر ذات وصفات حق تعاليٰ كے حبلال وجبرُوت كي ماب ندلائحتي اورمبحب أيركميه إنَّ الله لَعَن يَعْن الْعَالِينَ في الله الله لَعَن عَن الْعَالِينَ في الله الله الم

سي ب نياز ١٠٠٠) بغير واسطهٔ ظلال و حجا بات اقتباس فيض كي متعداد وصلاحيت نه ر تحضنے کی وجهسے بالکل نمیست و نا برُد ہوجاتی ۔

 صوفیائےعظام نے اسی صدیث کی روشنی میں فرمایا ہے کہ ومنوں کے مبادی ا تعینات بورکے حجاب ہیں جو اہم اٹھا دہی کے ظلال ہیں اور کا فروں کے مُبادی تعینات ظلمت کے جاب ہیں جو ہم الصبل کے طلال ہیں ۔ وَاللّٰهُ اَعُمْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّ الله حضرت عون اللّٰقلين سيدنا شيخ عبدالقادر حبلاني رحمة الله عليه كايدار الله الله الله الله الله الله الله ا

اسى مفهوم كى خرورتياب ـ

يَحَرَقْتُ جَيِنِيعَ الْحُجُبِ حَتَّىٰ وَصَلْتُ إِلَىٰ مُقَامٍ لَعَد كَانَ جَدِّى مَنَا ذَكَانِيْ

یعنی میں نے تمام کر دوں کو پھاڑ ڈالایہاں کک کئیں وہاں پہنے گیا جہاں میرے کرایا ۔ میرے کرام امادا ) منے تو انہوں نے مجھے قریب کرلیا ۔

مطلب یہ ہے کہ میں نے ظلال کے تمام مربوں کو مطے کر لیاجس کو ولایت صُغریٰ کہتے ہیں اور اس مگر سے سرورِ عالم من الله الله وظری کے مبدار تعیق بر چہنچ کیا جو کہ اسمار وصفات کے مرتبہیں ہے اور اس کو ولایت کر کی کہتے ہیں رواللہ اعلیٰ م

#### مبادئ تعتيبات

مر فرات خوات به فرات که این این میدار فیاصل ہے کیونکہ کا نمات کی ہرشے می ہرائے می اور ہر جیز میں میں اور ہر جیز می**بدا فیاصل** اسی ذات سے ہر ترم کا میضن هاصل کرر ہی ہے اور ہر جیز کی ابتدار اور انتہار اسی کی طرف لوٹسی ہے۔

مرم و و فیض کی مختف صورتوں اوشموں کے اعتبار سے اللہ تعالیٰ کو مرب را تعمیل مختلف موں اور مفتوں سے بہر العمیل مختلف اسموں اور مفتوں سے بہار اجا تا ہے ان میں سے ہر اسم اور صفت کوکسی نکسی مختلوق کے ساتھ خاص مناسبت ہوتی ہے اور و مختلوق اس کے فیصل سے و ور مرب ہے ہموں اور صفتوں کا فیصل مام و صفات اس مخلوق کے مبادی طرفیت میں اس کے مرتی کہ لاتے ہیں بس ہی ہمار وصفات اس مخلوق کے مبادی تعینات ہیں لیا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے اسمار وصفات نبیو الور فیصل و مستوں کے مبادی اور ان اسمار وصفات کے طلال و کو سرے فرمشتوں کے مبادی تعینات ہیں اور ان اسمار وصفات کے ظلال و کو سرے انسانوں اور باتی مخلوق کے مبادی تعینات ہیں ۔

### ذات اورممكنات

حضرت ابن عربی رحمة الله علیه کے نزدیک اسمار وصفات ،حقالَق ممکنات بیں ادر حس طرح آئیں میں ایک وُومرے کاعین ہیں اسی طرح عین ذات ہیں جبیا محتصنرت ابنء في رحمة التدعليد في تحرير فرما يا

سُبْحَانَ مَنْ اَظْهَرَ الْاَشْيِكَاءُ وَهُوَعَيْنُهَا لَهُ

لینی پاک ہے وہ جسس نے استیار کوظا ہر کیا اور وہ ان کاعین ہے.

مصنت المام ربانی قدس سر فرکے نزدیک حقائق ممکنات عَدَمات ہیں جو اسماُ و صفات کے نقائفس ہیں۔ آپ سے نزدیک عالم، فارج میں وجُودِ طلق کے ساتھ موجود سے عبس طرح اللہ تعالی فارج میں وجُودِ اصلی کے ساتھ موجود ہے۔ فارجی عالم ہیں کے وجُودِ فارجی کا ظل ہے۔ لہٰذاعالم کوعین حق نہیں کہرسکتے کیو بحرظ تحضر عین شخص نہیں ہوسکتا ہے

حضرت ابن عربی رحمة الله علیہ کے نزدیک بطل کا شہوت صرف وہم اور خیال میں سہت ان کے نزدیک بطل کو خارج کی ہوا انگ نہیں نگی ہے۔ وہ فارج میں صرف امریت مجرق وہ کو دعمی صرف المدیت مجرق وہ کا وجُود میں صرف خانہ ملم کا وجُود میں مرف خانہ میں ہوا تک نہیں نگی ہے۔ وہ فارج میں مرف خانہ میں ہوا تھا ہے ہوا تک میں سے خارج میں نہیں وہ کڑت ہو ہور کو وحدت ہم جو وہ کا جل قرار دیتے ہیں ہو مکمنات کا اثبات خارج میں کیا ہے جبکہ علمائے اہمسنت نے صفات شمائید اور ممکنات کا اثبات خارج میں کیا ہے اور ممکن و واجب ہیں جو سکتا ہے اور ممکنات واجب تعالیٰ کا ظل نہیں ہیں اور ممکن و واجب تعالیٰ کا ظل نہیں ہیں بیکہ اسمار وصفات کے ظلال ہیں ۔ حضرت امام ربانی قدّس سرّہ کا بھی بہی توقف ہے۔ بلکہ اسمار وصفات کے ظلال ہیں ۔ حضرت امام ربانی قدّس سرّہ کا بھی بہی توقف ہے۔

# حقائق ستبعكه

حقائق کے سات مراتب ہیں ۔ ان کو حقائق سبمہ کہا جاتا ہے اور دہ یہ ہیں حقیقت مجمدی ، حقیقت احمدی ، حقیقت ارا ہیمی ، حقیقت بُوسوی ، حقیقت

المنعلت الانس ترجم ملك ، كمد دهر دوم كتوب كم تصوص كم كله ديسيد وفر دوم كتوب كم وفر دوم مكتوب

كعبه بنقيقت قرآن ورخيفت صِلوة .

بہد چار حقائق کو حقائق کو نیہ اور آخری تمین حقائق کو حقائق الہسسہ کہا ہے۔

م حقیقت کعبه ،حقائق کونیه سے افضل ہے کیونکی حقیقت کعبه "ظہور تنزیبه صرف ذات حق تعالیٰ " ہے اور یہ مرتبۂ وجوب ہے اور حقائق کونیز ظہورات مرتب وجوب ہیں ندکہ خود مراتب و حجُب ۔

اسى طرح حقیقت قرآن باعتبار مبدأ وسعت اورحقیقت صِلوة باعت بار وسعت ِ ذات ہونے کے حقیقت کِعبہ سے بھی افضل ہیں ۔

# حقيقت يعبظمه

ا نُفت بین لفظ حقیقت سے مُراد ذات ِشی یا کسی لفظ یا عبارت کا بنیا دمخیم م سے۔ اصطلاح بین کسی شی کی استیت کند ، جو ہراور باطنی پیلو مُراد ہے صوفیائے کرام کے زردیک حقیقت سے مُراد کسی شی کا مُبدأ تعین سے جہاں سے وہ شی فیض و تربیت یاتی ہے۔

حقیقت کعبہ کے تعلق صوفیائے کرام نے متعدد اصطلاحات استعمال فرمانی این مثلاً حضرت انجمع ، مرتبۂ احدیث ، مرتبۂ وحدت ، مرتبۂ واحدیث ، تمرب کمنۂ منظہر اللہ حقیقت احمدید جقیقت محمدید ، وجہ المحبوب ، معبداقل ، مرکز کا تنات مظہر اللہ حقیقت الارض ، اُم القری ، مثال عرش مجید ، مثیل مبیت محمور ، دار الامان ، مهبطوحی قبلهٔ المسلمین ، مرجع اسبیار ، مشہداولیار ، مظہر مجودیّت و عبودیّت ، محلِ طهور فیری مرب دارت حقالی وغیرہا ۔

مصرت ابن عربي رحمة التنطيرة التكريرة مَنْ حَجَةَ الْبَيْت كَلْسَير مِن فرات مِن اَى بَلَغ مُقَامَ الْوَحْدَةِ الذَّايِيَّةِ وَوَخَلَ الْمُحَضَّرَةَ البيت المحالية المنتا المحالية المنتا المحالية المنتا المحالية المنتا المحالية المنتا المحالية المنتا المنت

ا في المنطقة المنطقة كم المنطقة المنط

ا بہتے ہے۔ حضرت امام رّبانی قدس مرّہ و ماتے ہیں کہ حقیقت کعبہ عبارت از ذات بیجُن واجبُ الوجُورست .... وشایان سجُودیّت ومعبودیّت ست کے کیعنی حقیقت کم مبسے مُراد ذات ہِی تعالیٰ ہے جسجہ سے اورعبادت کے لا اُن سے

# حقيقت ميح بنديه كلصاحبهالقسلوا

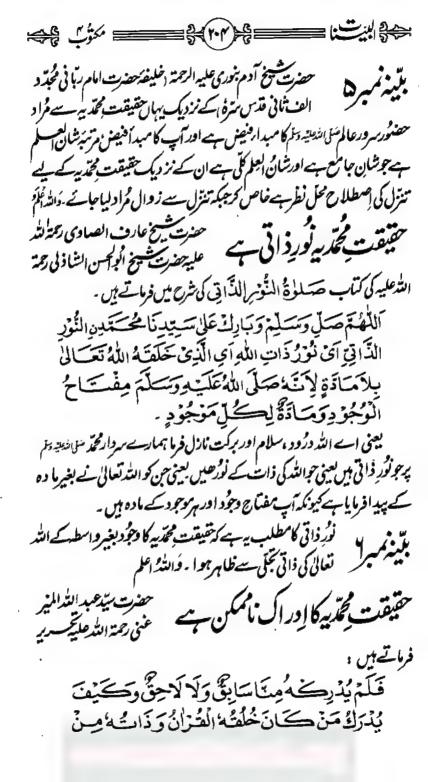
مراتب كالمم عظم كم أما مآئے و الله أغام مائي الله الجسامع الله الجسامع الله الجسامع الله الجسامع المتحقيقة المحتقد لائت مساحب المنتم الأغظم المحتقد المتحقيقة المحتقد المتحقد المتحقيقة ا

يد صنع ومن التعليدولم صاحب الم عظم بي .

عنی<u>ت سے</u> مُرادمبداً فیصل ہے منریث بی عبداللبی شای قتس میں اسلام میں اسلام

قَالَ سَيِدُ نَاشَيْحُ الْمُشَائِعِ سَيِدِي شَنَعِ أَدَمُ قَدْسَ الله سِرَّهُ إِنَّ حَقِيقَةَ الْمُحْسَدِي الدَّاثُ الْجَامِعُ الْمُنَّرَةُ عَنِ الْتَنَوُّلِ بِسِ بِيدِ فَهِيدِ كَمَ اطلاق حقيقت برجيد وجر است در بنجا مراد الرحقيقية مبدر فنفن است نرهيقي كرمركب از منس ونوع باسند تاميل اعتراض كرود له

یعنی ہمار سے المتنائ فی ادم (بنوری قدس بترؤ نے فرمایا کر حقیقت کی ایک ہارے المتنائی فی ادم (بنوری قدس بترؤ نے فرمایا کر حقیقت کی ایک ہامع ذات ہے جہ ہوتم کے تنزل ( دوال سے پاک ہے البی جانا چاہیئے کہ حقیقت کا اِطلاق کئی وجہ سے ہوتا ہے یہاں حقیقت سے مراد نہیں جرمنس اور فوع سے مرکب ہوتی ہے کہ اس پر اعست رامن کیا جاسکے ۔



**₩**{1·0}\$ 📰 مڪتوُب ع نُّوْرِ ذَاتِ الرَّحْمَانِ وَمَنْ لَهُ كُلُّمَرَاتِ الْإِخْمَانِ وَهُوَالْحَيِنِهُ الْآحَدُمُ وَالْمَخْصُوصُ بِالنَّجَلِيّ الْآعْظَيمَ وَمِنْ هُنَاقَالَ بَعْضُ الْعَارِفِيْنَ رَحِمَهُمُ الله أجمعين لوانكشفت حقيقة المكحكتدية صكى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ لِلْحَلْقِ لِانْهَدُوْ الْجَمِيْعَالِهُ يعنى بس بم من سيكسى سابق أور لاحق في تعبيق بمريد كاادراك نهيل كيا اور آب کس طرح اور اک میں آسکتے ہیں حالانکہ آپ کا خکن قرآن ہے اور آپ کی ذات الله تعالی کی ذات کے نور سے ہے اور آپ کے لیے احسان کے تسک م مراتب ہیں اور آپ مبیب اکرم ہیں اور تجلی عظم کے ساتھ مخصوص ہیں۔ اسی لیے بعض عارفین نے فرمایا ہے کہ اگر حقیقت محمدی طلق پر ظاہر ہوجائے ترسب ہلاک ہوجائیں ۔ قَالَ ٱبُوْمَيٰزِنْية لَوْبَدَءَ لِلْحُلْقِ مِنَ الْكَيِيِّ ذَرَّةً كُمْ يَقُمْ مِنَا دُوْنَ الْعَسَرَيْسِ. يعنى بايزيدلبطامى رحمة التُعليب فرايا أكر مخلوق كيدي أُورِبي سے ایک ذرّہ ظاهر ہوجائے توج کچھ عرمشس کے بنیچے ہے قائم نرہ سکے۔ حقيقت مُحِمّد نظهورا قل وحقيقت الحقائق بينے حضرت المم رّبانيُ قَدِّسُ سِرُهُ العزيزِ فرات بِي ؛ حقيقت مِحَدَى عَكَيْسِهِ مِنَ الطَّهَ كَوَّاتِ اَفْضَهُ كُهَا وَمِنَ الشَّنِيلِيْسَاتِ

يعنى هيقت محمدى عليه من الصلوات افضلها ومن السليمات المملها جوظهور اقل اورهيقت الحقائق ہے اس كامطلب بيہ ہے كد دُوسر سے حقائق كيا إبيا الكلم كي هائق اوركيا ملائك عظام عليه وعليهم الصلاة واستلام كے حقائق سب اس كے فلال كى مانند بيں اور وہ تمام حق ئق كى طمل ہے ۔ رسول الله سائليم نے فرمايا كه سب سے اقل فدا تعالى نے مير سے اور كوبيد افر مايا ۔

#### لے دفتر سوم تحتوب ۱۲۲

﴿ تَحْرُ مِنْ فَعْنِينَ حَدِيثُ لُورُ ولولاك حضرت المامرة في عليه الرحمة كا حديث ورا در حديث لولاك كا متعدّد بار ذكر فرما أا در ان سے استدلال كرنا آب كے على اور تمينقى مقام كے بيش نظران مدينوں كى صحت فظى بعنوى فئى وصفى پر دليل كانى ہے تاہم أمست كے مليل القدر محدّ بين اور آئر كرام كے نزد كي تعجى بير مدينتا مير محمم الدر ثابت الله .

علاً رَعْقُ الم عبالِغنى المبى اقطب ثام رحمة الله عليه رقم طراد عين ، قَدْ مُحِلِقَ كُلُ مَنْ قَامِنَ اللهُ عَلَيْ عَلَى اللهُ عَلَيْ وَسَلَمَ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ وَسَلَمَ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ وَسَلَمَ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ وَسَلَمَ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ وَسُلَمَ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ مِنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلِي اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللّهُ عَلِي الللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلِي اللّهُ عَلَي

رین این میرنی کوم افید و کورسی بی میریا که مدیث میری دارد جوالب . این سیات ملامه البسی ملید الرحمة علامه ابن عابدین شامی علید الرحمة کے است افر جلیل بین آب نے مدید با اور کے میری جونے کی تصریح فرا دی ہے .

© حضرت شيخ معقق عبد انحق محتث و بلوى رحمة الله عليه فرملت بي ؛ در مدسيف ميم وارد شُده بست اقَالُ مَسَا حَكُقَ اللَّهُ نُنْوِرِي ؛ مدارج النبرّة )

 اسی طرح مدیث مابر (جومدیث نور کے ہم معنی ہے بھی باعتبار روایت بالمعنی قدیماً و مدیثاً تفطیق و کلمات آئر و محدثین و اولیار و مارفین میں مذکور و مشہور و ملقی بالمقبول ہے ۔

حدىميث جأبر حضرت ميدناهام مالك وعنى التدعنه ك شاگرد اورميّدنا امام احمد بن منبل وينى الله عند كركميّاد

الرَّدُونِيَّةَ رَا درين مقام بايطلبيد. ترجمه: عَرِّجِهِ آخر كار مراتب طلال ك ط كرنے ك بعداس فقير رمينكشف

بقيما مشيه فوگامشة

اورامام بخاری وامام ملم رحمهما الله تعالی کے اُستا ذالات ذر معافظ اکدریث مصرت علامرامام عبدالرزاق الرجم بن حمام رحمة الله علیدسف اپنی "مصنف" بین صفرت میدناجا بربن عبدالله الانصباری وضی الله عندسسے روایت کی سے کرمنور مرود عالم مل مند و بنا نے ان سے ارشاد فرایا کیا جابر اِن الله کے کمان تھیٹ کی الله مشکل تھیٹ الانشہ بیا ی نوش مندید کے میٹ نگورہ بعنی اسے جابر اسے شک الله تعالی نے تمام ہشیاست پہلے تیرسے نبی کا نُرد اپنے نورسے بیدا فرایا۔

المم بیقی نے دلال النبوة میں امام سلکانی نے بواہب لدنیرصا ج اسع شرحہ میں علامہ زرقانی نے شرح مواہب مدارج امیں علامہ دیا دیجری سے ارسی خمیس میں علامہ میں حمد ابحق محدت و هلوی نے مدارج النبوة میں علامہ ابن جرمی نے فیا دی حدیث میں علامہ ناسی استرات مدارج النبوة میں علامہ ابن جرمی نے فیا دی حدیث میں علامہ ناسی نے علی المترات مدارج النبوة میں علامہ ناسی النبوة میں علامہ ابن جرمی نے فیا دی حدیث میں علامہ ناسی میں النبوة میں علامہ ناسی النبوت الن

مواہ یہ ہے کہ حقیقت محتی عرصیقت اکھائی ہے اس فت کا تعین اور طہورہ ہے جو طہورات کا مبدار اور خلوقات کی پیدائش کا مشارہ ہے جسے کہ اس عدیث قدسی میں آباہ ہے جو شہورہ سے " میں ایک پوشیدہ خزانہ تھا میں نے جا ہا کہ بہجانا جا وَں بِس میں نے خلق کو بیدا کیا " قل اقل وہ چیز جو اس پوشیدہ خزانہ سے میدان ظہور میں آئی کہ بہرائی کی میت ہوتی ہوتی تو ایجاد کی میت ہوتی ہوتی تو ایجاد کا در وازہ نہ کھلتا اور عالم، عُدم میں راسخ اور ستقربہا ۔ عدیث قدسی کو آلا ایک کے بیتر کو جو کے در وازہ نہ کھلتا اور عالم، عُدم میں راسخ اور ستقربہا ۔ عدیث قدسی کو آلا اللہ کے بیتر کو جو سے مناز ہوتی آلا فی آلا کے بیتر کو جو اللہ کہ قدم کو اس مقام الرک کہ تو ایک ایک ایک کے بیتر کو جو الرک کہ تو ایک کے ایک کے بیتر کو جو الرک کہ تو ایک کے ایک کو اس مقام الرک کہ تو نہ ہوتا تو میں اپنی رائی ہوتا ہونہ کرتا کی تقیقت کو اس مقام میں طلب کرنا چا ہے ۔

بقية حامشيم نعى گذشة

علاً مرعلى بن أربان الدّين لمي نيرب ملبيدين علامر ويسعف بها في نتيجة الله على العالمين اور انوارمحة يدين الأ عمر بن احمد خربي ق ني محقيدة الشهده بين إس حديث كوفق فر ماكر استساد فرما يا اور سمى في اس برتعديل وإحستماد فرمايا ب منيز بير مديث تذكفي أمّنت بالفت بول كا خصب بحتى بعد اور بلاشيد محموم سن اصارح المعتسبول اور معتمد ب

 واضع رہے تنقی اُمت بِانقبول وعظیم نصب ہے سے بعد طاحظ سندی عاجت نہیں رہتی کیا۔ اگر سند عیف جی ہو تو حرج نہیں کرتی۔ ۱ و سند انحمد،

ِ حِدِيثِ لِولاک اَمُرَصِيثِ نے تَصرِیحَ فرانی ہے کہ مَدِیثِ وَمُدی لُوٰلا كَ لَمَا حَكَفَّتُ الْاَفْلاكَ معنّا ثابت ہے دیکن (لفظِ افلاک کے ساتھ انفظا ثابت نہیں ۔

نيزر قمطرازين:

باید دانست که درتعین اول که تعین مجتی ست چن بدقت نظر کرده می شود بقضل الله ننجانه معلوم می گرد د که مرکز آن تعین حُبّ ست که حقیقت مِحدَّی ست عَلَیْ و عَلیٰ الله الطّسَلاّة و واللّسَالاً مُ ترجمه ، جاننا چاہیئے که تعین اول بین جو که تعین مُحتی ہے جب بطری باریک نظر

له العنكوت 1

بتية مكشيه فحركذ ضتر

حفرت الأعلى قارى رعمة الشرمليد فرات بين ، قَدَّالَ الصَّنْعَافِيُّ إِلَّهُ مُوضَوْعٌ ؟
 كَذَا فِي الْحُكُوسَةِ لِلْكِ نَ مَعْزَاهُ صَبِيعِ ؟ مومنوعات كيومله الله .

© مولانا عبد المحرى فرجى محلى قدس سرؤ عكفته إي كرمديث إنَّه اورمديث ولاك دونون معنا تأسبت معين اور

لعظاً تأبت ببين.

فُلْتُ نَظِيْرًا قُلُ مَاخَلَقَ اللهُ نُوْرِيْ فِي عَدَم تُبُوْتِهِ لَفَظاً وَوَرَدَهُ مَعْتُ اللهُ نُورِيْ فِي عَدَم تُبُوْتِهِ لَفَظاً وَوَرَدُهُ مَعْتُ اللهَ لَا اللهَ تَعَرَّمُ لَا اللهَ تَعَلَيْتُ الْإِفَلَاكَ مَا اللهَ عَلَيْهِ اللهَ عَلَيْهِ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلِيْ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ كُلُولُكُ اللهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عِلْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عَلِيْكُ عَلِي عَلِيهُ عَلَيْكُمُ عَلِي عَلَيْهُ عَلَيْكُمُ عَلِي عَلَيْ

توصینحات مشرح نخبته الفکرمی<sup>۸</sup> پرعلمار دسول حدمیث کی یہ تصریح درج ک*گ کئی ہے ک*صدمیث کی روامیت مالمعنز احارز سے .

ی بعض اما دیث بین لولاک کے ساتھ افلاک کی بجائے لفظ سمار کی صراحت موجود ہے عظام فحد

جوالبيت المسائل الأوام ال

سے دیکھاجا ناہے تو اللہ تعالیٰ کے ضل سے علوم ہوتا ہے کہ اس تعییٰ کا مرکز حُب

ے جو حقیقت و محدی ہے۔ اگب پر اور آب کی ال بچسلوۃ وسلام ہوں ملاء ٹرے مدیث کمنیت کے نیزا مخفی یا سے علوم موا کہ تعیق جُتی بہلا میر ممبر اعتبارہے ویخلیق کائنات کے لیے ظاہر ہواا ورتعین حتی کا مرکوز

حقيقت مجحديب اور مدريث لولاك سيتابت بواكتعين ومؤدى وورااعتبار ہے جوایجا دِعالم کامقدّمہنا ۔

گویاتعیّنِ وجُوری ،تعیّنِ مُبّی کاظل ہے اورتعیّنِ مُبّی ،تعییّنِ ومُجردی کے لیے واسطرسے - (فسَشُدُرُّر)

حقيقت مُحتربيت بيخ اكبركي نظرين

حصنرت بین می الدین ابن العربی قُدِّسَ بِرُوْ اور آپ کے آبعین صوفیائے وجودیہ کے زدیک صنیفت محدید علی صاحبها الصلوات رعب کونعین اقل اور تعین حتی کہا جاتا ہے، مرتبۂ وحدت کا نام ہے اور تعیین ان کو واحدیث سے تعبیر کرتے ہیں اور

بقيهما مشبهم فوكذشة

بن فوسعف صالحی شامی فرماتے حسیں ،

كِتَابٌ شِفَاءُ ٱلصُّدُونِ لِإِبْنِ سِبْعِ عِنْ عَلِيَ رَضِي اللهُ تَعَالِ عَنْهُ عَيْنِ النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنِ اللهِ عَزَّ وَحَلَّ قَالَ يَا تَحْتَمَّدُ وَعِزَقِ وَحِسَ لَالِي لَوْلَا لَدَ مَا خَلِفُتُ اَرْضِي وَلَا سَمَا فِي وَلاَ رَفَعْتُ هٰذِهِ الْحَصْرَآءَ وَلاَ بَسَطْتُ هَ إِن الغَبَ بَرَاه الصِّبلُ الحدي والرشا وصف ج ا)

يعنىصاحب كتاب شفاء العتدوي فيحضرت على ابن انى طالب بينى الشحندست انهول سني حنور 🚓 سے اور آب ماند الله الله درب العرب العرب العرب المرب الديمان كياكم الله تعالى في وايا الدم تد مناطعة المرسيم الني عرّت وملال كانتم الرّاب نهمت تومين نادين بدياراً مذاكس ندين كيون جهت بلند كحمقا اورنه فاك فرش بنامآ به اورضوص الحكم ميں ہے: وَاَعْيَا مُنَا فِي نَفْسِ الْآمْرِ خِلِلُهُ لَا عَنْدُهُ لِلَّهِ يعني بهارے احيان ثابتہ رحقائق ممكنات جقيقت بين حق تعالى كاظِلَ ہيں

نه که کسس کاغیر .

ان کے نزد بک اصل اور ظل میں عینیت ہے اور اعیان ٹابتہ کو اسمار الہیہ کی صمور علمی کاظہور کہتے ہیں اور حقیقت مجمدیہ سے صفرت اجمال علم مُراد لیلتے ہیں اور اس کو مرتبہ لا تعین کا تعین اقل اور تعلق ذات سمجھتے ہیں اور اس تعین اقل کو تعین علمی اور صور رنب شاں لعلم قرار دے کرخارج میں میں ذات کہتے ہیں۔ کیونکہ ان کے

#### التحقيق الحق في كلة الحق مترجم مناهُ ، رفته سوم كمتوب - ١٧١ كمه نصفيص الحكم كلمه يوسفيه

(بقيره الله مع المرفاس على الرمين فرايا، وفي تحديث عُمَرَيْنِ الْحَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عِنْدَ الْبَيْهِ قِيْ فِي دَلَا يِثْلِهِ وَالْحَاكِ مُ فَصَحَتْ وَهُو كَوْلُ اللهِ تَبَازَكَ وَتَعَالَى لِادْمَ عَلَيْهِ الْمَلَا اللهِ مُسَلَّدًا مَا خَلَفْتُكَ وَبُرُونِي فِي حَدِيْثِ الْحَرَلُولَاهُ مُسَاحَلَقَتُكَ وَ لَا خَلَفْتُ سَنِياً وَلَا اَرْضَنَا . (مِطالِح المرات شرح ولال الخيرات مثلاً)

يعنى امام سقى اورها كم في مديث عمر مين ذكركيا اور اس مديث كوسي قرار ديا اور وه الله تبارك وتعالى كاحضرت أدم سعد يدفران است كراكوم كدنه ويت قرين تم كوبيدا ذكرتا اور ايك دُوسرى مديث بين ب اگرمخدنه وست تومين نرتم كوپيدا كرا اور نراى اسمان وزمين كوبيدا كرا .

اسی طرح علّارعدالری نصفوری علیدالریمتنے فُرْصة المجانس ہیں امام قسطلا فی علیدالریمتہ نے مواہد لین میر بیں امام نے محمد طاہر علیہ الرمتہ نے مجمع مجازُ الانوار میں کس مدیث کو ذکر کیا ہے۔ بیں امام نے محمد طاہر علیہ الرمتہ نے مجمع مجازُ الانوار میں کس مدیث کو نسخت میں میں میں میں میں است

علآم محمدة لوسى بغدادى رحمته المتعليسف وتعنسير وح المعاني مي الفط افلاك كساته مير عديث لعسل

نزدیک خارج میں ذات مجھن کے علاوہ کوئی چیز موجو دنہیں ۔

حقيقت مِحُدَّيهِ امامِ رَبَّا فِي كَيْظُر مِن

حضرت امام رباني قدس سرة اور دبير صوفيات شهوديه ك نزديك حقيفت محرم على صاحبها الصُّلات بقيقت الحقائق ،تعييّن حتى تعييّن وحِرُدى اوز فهوريفس م اللی کا نام ہے۔ انبیائے عظام اور الأسح کوام وغیرہ کے حقائی حقیقت محقید کے طلال کی مانند ہیں اوروہ اس حقائق ہیں۔ ان حضرات کے نزدیک ذات واجب (لاتعیق) ك ييتعينات، تنزلات وظِلال كااطلاق جائز نهير صرب المام رباني وتس مترؤ

ن فيراين فقير بيرج تنعينغ وستعينغ نيست كدام تعينُّن بود كه لا تعينُّن رامتعين سازو یعی فقیر کے نزدیک کوئی تعین اور تعین نہیں ہے وہ کون ساتعین ہے جو لا تعین روا

كى طرف يىل است ده فرماياس.

کے دفتر سوم محتب ۱۲۲ دِمِيَيَماشِيم خُرُكَدْشت، فرانَ ہے • وَالنَّحَدَيُّنُ الْأَوَّلُ الْمُشَارُ اِلْيَدِهِ بِقَوْلِهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وتشكم أؤل مكاخكق الله ثورنبيك ياجابر ويواسطيه تحصكي الإفاضة كَتَمَا يُشِيْرُواكَنِ وَلَوْلَاكَ لَمَا خَلَقَتُ الْآفَلُاكَ رُوْح المعانى ملا جَار يعن تعيِّن اوّل كاطرف حضور ك فران أوّل مَا خَكَقَ اللّهُ مُونِينِيكَ بِس الثاره ب اوراسي كم علمط مسعلوق كوفيهنان موا اورس كوطرف كوكاك كسما حكفت الحافظ كالدكيس الثارميد. واضح ہوکرصاحب رُوح المعانی المسنّت کے معمّد معمّق ادر مُتا فرین مُعشّرین میں اعلیٰ بائے کے مفسِّر السندملست عين عِلَى ثَعَا بهت اورحديث يرجرح وقدح كرسندين ان كي نغرمدَث ابْ جزى عليه الرحمة مسكسي كم نهيل مهد المسطيطيم مفتِّ اورنا فِدوريث كاحديث لولاك كمّا لَحَالَمُ لَعْدُمُ الكفكاك سيك تشهاد فروا اس مدميك كاصحت برنهايت قرى اورهاول شهادت معد حضرت علامر بوميرى وممتر الشرعليد نعطرني زبان ك شووتصيدة بركده شريفيد مي وديث ولاك

جه المنت الله المرابع المائح المائح

واجب حق تعالى كومتعين بنائے.

نيزايك سوال كيحراب مين آپ فرماتے بين ـ

"درعبارت فقيراب قيم الفاظ الحروا قع شودان قبيل منعت مُشاكله بايد ذلهت" يعنی فقير کي عبارتوں پر ساست مے الفاظ اتعین اورظل وغیرہ) اگر واقع ہوں توان كوصنعت مِشاكله كقبيل سے جانا چاہيئے۔

صنعت مِثَاكِل الْمُشَاكَلَةُ ذِكُرُالشَّنِي بِلَفَظِ عَيْرِهِ لُوقُوعِ فِي صُحْبَيّه كَفَوَلِهِ تَعَالَىٰ جَزَلَهُ سَيِنَةٍ سَيِئَةٌ مِّنْلُهَالُهُ

رحمه بحسي كاكسى دُوسرك لفظ كے ساتھ اس كى مصاحبت كى وجه سے ذكر كرنامشاكليكهلانات مبياكدالله تعالى كارشادى ووكفنوه كى مزااسى كى مثل كناه ہے '' بعنی گناہ کی مزامیں ہی گناہ کی مناسبت سے گنہ گار کو عذاب دیا جائے گا پر مطلب نہیں کد گناہ کی سزاگناہ ہے۔ یہاں دُوسرے لفظ ستیتے کے کامفہوم بہلے

(بِقِيَمَا شِيهِ صَوْلَا شُتَهُ لَوْ لِكُاهُ لَمْ تَحْسُرُجِ الدُّنْسَامِ نَ الْعَسَدِمِ يعنى اگراپ نيوت تودنياعدم سے وجو ديس نراتي

مولانا ذو الفقارعلى دىيىندى نے عطرا نوروہ شرح قصيده برُده ميں امام بوصيري كے اس شعركو مديث ولاك كالتباس قرار دياب توقفو له كؤلاهُ إفيتباس فين حديث لولاك لمسا خَلَقْتُ الْأَفْلَاكَ

 مُحدّت ابن جوزى عليه الرحمة كے شاگر ورشيدا ورحضرت شخ شهاب الدّين مهرور وي رحمة الله عليه كے مريغاص حضرت شيخ معدى عليدالرحمة باركاه رسالت على صاجبها الصلات مين عرض كريت بي.

ه تراعز لولاك تمكين بس است ثنائے تو طار وکیسین بس است

هو البيت الله المارك المارك

لفظ مت بینکه سے مختلف ہے کیونکہ پہلا لفظ سے بینکہ اپنے اصل خہوم بہب اور دُور الفظ سے بینک دُور ہے منی میں انتعال ہوا ہے اس طرح مشائخ وعلمار کا ریں میں میں میں میں میں میں استعمال ہوا ہے اس مشائخ وعلمار کا

كلام مح بعض او قات صنعت مُِشَاكلہ كے قبیل سے ہو تا ہے۔ حضرت امام رّبانی قدّس سرہ كے زدیك بہدے دولو تعتیوں كوتعیّن وعُ بی كہنا غلط ہے كيونكر حب عقیقة الحقائق (سب سے بہل حقیقت مخلوق وحادث ہے تو

دُور کے ابعد کے حقائق تھی مخلوق وحادث ہوں گئے تبعیق وجو بی مکناسے کی حقیقت نہیں ہوسکنا مِمکن کی حقیقت تھی ممکن ہوگی نہ کہ واجب۔ آپ کے نزدیک

عقیقت محمدید کامخلوق بونا مدیث نبوی اَقَلُ مَسَاحَکَقَ اللّٰهُ نُورِی سِظْبِت حقیقت محمدید کامخلوق بونا مدیث نبوی اَقَلُ مَسَاحَکَقَ اللّٰهُ نُورِی سِظْبِت

ب اور اس طرح الم رباني قدّس مرة ك زديك قبل حَلْق السّلوات و بالفرّ على السّلوات و بالفرّ على السّلوات و بالفرّ على المراس كالله و الفرّ على المراس كالله و الفرّ على المراس كالله و الفرّ على المراس كالله و المراس كاله و المراس كالله و المراس كاله و المراس كاله و المراس كالله و المراس كاله و المراس كالمرس

اماديث مين مين فرقت كا وقت متعالى هي نابت بوتا سيد وعتيقت محد تي على اجها المنطوت كي محدة على الماجها المنطوت كي مخلوق اور ما وت بون كي دليل سبد .

حضرت ابن عربي قدّس سرّه كاحقائق ممكنات العنى اعبيان ثابته) كو ذاست

له المواجب للترسيب مع الزرقاني ملك ج ١

ا بقیرماسشیه موگذشته ) حصارت ملامراهام احدرصافاصل بر بلوی دعیته الته معلیه سندیجی اپنید اس شعرش مدیث بولاک کی طر اشاره فرمایا ہے . ه بهوت کهان خلسی و بنا کعسب و بهنی لولاک و اسے صاحبی سب تیرسے گھرکی ہے اولاک و اسے صاحبی سب تیرسے گھرکی ہے . ه مولانا خلفر علی خان مرحوم نے بھی اسی مدیث کے خلوم کو اپنے شعریں این بیشیس کیا ہے ،

یرزنگ نه هو گمزارون میں یہ نوگر نه هوسستیارون میں **خلاصتُهٔ المرام** حضرت امام رّبانی مجدّد العث الی فُدِّسِ سُرُه العزیز کا دفتر سوم محتوب ۱۲۲ اوریکتوب ۱۲۳ چیں مدیریٹِ نولاک سے استدلال کیا اس مدیث سے معناصیح اور ثابت ہونے پر آ فاآب سے جه ابنيت الله ١١٥ الم المالية المالية

واجب تعالی کاظِل قرار دبنا بھی تقیقت بمعاملہ تک نارسائی کی وجہ سے ہے کیونکہ کوئی مخلوق خالق کاظِل نہیں ہوسکتی۔ ذات واجب تعالیٰ کے ساتھ مخلوق کو مخلوقیت کی نسبت کے سوا کوئی نسبت حاصل نہیں جھٹرت امام ربانی قدس سرق فی نے وضیات فرمائی ہے کہ جب یہ فقیر مرتبہ طلبت کی سریس تھا تو اس قسم کے علوم سندہ برجمی وار دہوئے سے بعد ہیں جب معاملہ آگے بڑھا تو ظاہر ہموا کہ وہ علوم ومعارف سکریہ تھے جب یا کہ

ايق مُعُكُوْم كدا ثبات نسبت نمايد درميان واجب تعالى وممكن وشرع بشوت آنها وار دنه شده است بهمداز معارف بُسكريه است واز نارسائی ست چقيقت بمعامله عُممكن چه لود كفلِّ واجب باشد. تعالى و ولجب راجيب اظل لود كفلِل مُوم توليد بيش ست فينبي از شائبة مَدَم محمالِ لطافت إصل برگاه محدّر رُول الله را از لطافت ظلِّ نبود خد است فيدرا جيُون ظلّ باسث راه

ترخمہ اس فتم کے عُلوم جو واجب اورمکن کے درمیان کسی نسبت کا اثبات کریں کرجس کے ثبوت میں ٹرع وار دنہ ہو وہ تمام علوم مَعادث ِسکریہ سے ہیں اور حقیقت مِعاملة تک نہ ہنچنے گی وجہ سے ہیں یمکن کیا شی ہے جو واجب تعالیٰ کا ظل کیسے ہوسکتا ہے کہ ظِل سے تولید مثل کا وہم ہو آ

لے وفتر سوم محتوب ۱۲۲

بقيدما شيسخه گذشته

زیادہ روش دلیا ہے اور اس رِصوفیائے محققین اور علمائے محتثین کی بایئدات و توثیقات و تصریحا<del>ت ہے</del> یہ امر و اضح ہوگیا کہ مدیث بولاک کی نفظ افلاک کے ساتھ روایت بالمعنیٰ درست ہے اور سمار ، ارض جبّت نار اور دنیا کے الفاظ کے ساتھ اس کی روایت بالگفظ صحح ہے ۔ بس مدیث بولاک روایت ، در ابیت ترکیب نحوی اور اعراب کے احتبار سے بالکل ثابت اور بے عنبار ہے ۔

كَمَالَايَخُفَاعَلَ ٱرْبَابِ ٱلْبَصِيْرَةِ

ہے اور کھالِ لطافت کے نہ ہونے سے خبر دیتا ہے جبکہ اللہ تعالیٰ کے دیٹوا مجسستد مئل لئیلنیہ والم کاظِل لوجہ کھالِ لطافت کے نہ تھا تو محد مثل لئیلنیہ والم کے خدا کاظل کیسے ہو سکتا ہے ۔

حضرت امام ربانی قدّس سر فرکے نزدیک حقیقت محتریہ ذات کے مرسم شالعبل کے اعتبار سے قابلیت اُولی کا نام ہے جنعنس اسم اللی کاظہور ہے ذکہ اس سم کی صورت علمی کاظہور کیونکر کسی چنر کی فسس شی اور اس کی صورت علمیہ کے درمیان بہت طرافرق ہے حبیباکر ففس آگ اور اس کی صورت علی ہیں فرق سے واضح ہے نیمیہ نارشا دفر ماتے ہیں ؛

وبغیر اسرورعلیه وعلی المهالقت او است الم بسی کس در نظر نصب در آید کنطه درنفس اسم اللی باشد تعالی إلا قرآن مجید که آن نیز ظهو نونس اسم اللی ست مجل شلطا مذبی نانچیشمتهٔ ادان بالا و کریا فته است خایدهٔ مسایی المباب منشا زله درقرانی از صفات حقیقیه است ومنشا زلم در محدی از صفات اصافیهٔ ناچار آن را قدیم وغیر مخلوق گفته اندواین راحا دیث و مخلوق و معاملهٔ کعبر آبانی ازین دوظه در اسی بم عجیب ترست که آنجا ظهور معن تنزیبی ست ب کسوت مشور و اشکال ا

ترجمه: اور السَورصلى الله عليه واله والمسك علاوه كوئى شخص ايسانظر نهيل الم جنفس الم اللى (تعالى) كاظهور مو البقة قرآن مجيد كم وه جي نفس الم اللى كاظهور سب مُلَّ سُلطانه جيسا كه اختصار كساته اوپر كزر حيكا فلاصة كلام بيسب كه ظهور قرائى كانشا صفات جي في سب سب السيك الس كوقديم اورغيم عنوق مجت بين اورظهور محدى كا منشار صفات اصافية سب الهذا الس كوما درث اور مخلوق كم السب اوركعبة ربانى

کامعاملدان دونون ظہور اسمی سے بھی زیادہ عجیب سے کرو ہاصمور توں اور شکلوں کے لبكسس كے بغیر عنی تنزیہی كاظہور۔

قول فتصل

طائفهٔ علیّه صُفایعلیّهم الرحمة کے نزدیک حقیقت بشی سے مُرا و اسم اللی ہے جو کہ اس شنی کامبدار تعیّن ہے اور بیثتی اس اسم کے سیلے ظِلّ اورعکس کی ما نزہے۔

حقيقنت محقد يرسع ممراد وات محقرينهي للجدوه اسم الهي ممرا وسب حوصت وسألا

منیونم کے عالم خلق کا مُر بی ہے اور وہ شان اٹھ ٹم ہے ۔ معتبقت کِعبہ سے مُراد وہ مرتبۂ وجوب ہے جو صنور سرور عالم سار مدیدیا کے عالم امركام في بهاورشان العلم ي بلندتسهد اس اعتبار يقعيقات كعيقيقت

برحقيقت كعبه عالم أكوان كي لي مجود ب حمكة عيقت ومحديد ساجد ب نذكه مجود والمذاحقيقت كعبرتا إم بحورتيت كى وجرسي عقيقت محديدس افضل س اورساجدتيت وسنجردتيت كافرق الماعلم دفهم بر واضحه يسا كر مصرت امام رباني

اين عَتيقت َرامِلُ مُلطَانِها الرَّمْسِودِ عِتيقت مِحدَى گويندچهِ محذ ور لازم ين يا مسلم المنظم المنظم المنظم المنظم المنظم المنسل ست آيد .... براريج عليقت محترى از حقائق سائرا فرادِ عالم الفنسل ست الماحقنقت كعنيعظم إزعاكم عاكم نيست كمه

ترجمه: اگركعبه كى اس حقيقت كو (جوكه ذات بير غين اورشايان مجو ديت يهم) مجؤة عِيقت مِحْدى كَهَامَاتَ توكون ساأمر العب بالحقيقت مِحدَى تمام افرادِعالم کے مقائق سے افضل ہے کی حقیقت کھیمنس عالم سے نہیں ہے۔ اس سکر کا شافی حل صرت امام رہانی قدس سرؤ کے فرزند ارجمند صدت خوجہ م محکمت عید سرجمندی قد س سرؤ نے ایک سکتوب ہیں بیان فرمایا ہے جو علمائے حرمین شریفین کے مام تحریر فرمایا تھا نیز مصرت شیخ عربُدالتی شامی نقشبندی خلیفۂ مجاز صر شخ آدم سنوری قدس التد برئر حمل نے مجموعتُ الائر ار میں ارقام فرمایا ہے۔ دو نوں کتا بعل سے علی التر تیب احتباسات ملاحظہ فرماییں۔

ثُمَّ اعْلَمْ أَنَّ لَفَظَةَ الْحَقِيْفَةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ. عِبَارَاتِ شَيْخِنَا وَإِمَامِنَا الْوَاقِعَ فِي تَصَانِيْفِهِ الشَّرِيْفَةِ عَلِى مَعَانِ مُغْتِلِفَةٍ وَإِنْحَاءٍ شَتَى فَمَتَىٰ قُوٰلِكَ بِالْحَقِيَّقَةِ الْآخَمَدِيَّةِ وَالْكَعَبَةِ الرَّبَّانِيَّةِ مُوَادُبِهَا الْمِسْمُ الْإِلْهِيُّ الْجَامِعُ الَّذِي يُنَاسِبُ تَرْبِيَةَ الْعَالَمِ السِّفِلِيُّ وَمَتَىٰ قُوْدِيكَ بالْحَقِيْقَةِ الْإِلْهِيَّةِ مُرَادُيِّهَ الشَّانُ الدَّاتِيُّ الْجَامِعُ الْكَيْن يَتُولَىٰ تَرْبِيرَةِ الْعَالَيمِ الْعَكَوِيِّ وَهُوَحَاوِعَ لَلْ جَمِيتِيعِ الشه يُونَاتِ الذَّاتِيَّةِ وَأَصْلُ وَمَبْدَاءٌ لِلْإِسْمِ الْحِسَامِعِ الْمُتْضَنَّن لِجَمِينِعِ الْآسْمَاءِ فَيَكُونَ هَٰذَاالَّالَاكُونُ كُلِّ ليسَائِرِالْحَقَائِقِ وَهِيَ اَبْعَاصُهُ وَإَجْزَاوُهُ وَهِيَ الْمُعَبَّرَةُ بِحَقِيْقَةِ الْحَقَائِقِ وَهِي حَقِيْقَتُهُ الْتِي لَا وَاسِطَةَ بَيْنَهَا وَكِينَ الذَّاتِ الْمُقَدِّسِ كَمَا ذَكَرَهُ رَضِي اللَّهُ عَنْهُ فِي ٱخِرِمَكُنُوْبِ لَهُ تَعْبُلُ وَفَايتِهِ مِانًّا مِ قَلِيْ لَهِ اَنَّ الْحَقِيْقَةُ المخسئديّة فؤق جمينع التحقائق لم ترجمہ بحقیقت محقید کے الفاظ بہار سے شیخ اورامام کی تصانیف بیر مختلف بمعانی اورامام بیں استے ہیں جقیقت بمحقید جب حقیقت احمد بہ اور حقیقت کے جہ رہانیہ کے مقابلے ہیں بولی جائے تو اس سے وہ جامع اسم اللی محراد ہے جوعالم سفلی کی تربیق کے ساتھ میں بولی جائے تو اس سے اور جب حقیقت اللہ یہ کے مقابلے میں بولی جائے تو اس سے مراد وہ جامع میں بولی جائے تو اس سے اور مسافی مناسبت رکھت ہے اور متاب اور میں میں اور ہوں جو مالم علوی کی تربیق کے ساتھ مناسبت رکھت ہے اور مناسبت رکھت ہے اور مناصب اور جامع شان ذاتی ہے جو مالم علی کی تربیق کے ساتھ مناسبت رکھت ہے اور اور جامع شامل ہے۔ بیس بیر شان تمام حقائی کا کل ہے اور باتی حقائق اس کے اجزار ہیں اور سے حقیقت ہے کہ اس کے اور ذات براسے مقت میں اور بورہ حقیقت ہے کہ اس کے اور ذات مقت سے جندون کی واسطہ نہیں جیسا کو حضرت مجدور صنی التہ عند نے اپنی وفات سے جندون ہے اپنی وفات سے جندون ہے جام کی توب ہیں کو ریز فرمایا کو حقیقت محمد بیر سے محمد میں محق تی سے جندون ہے اپنی اور بیر فرمایا کو حقیقت محمد بیر محمد محمد بیر سے فرق ہے۔

حضرت شيخ عبد النبّى شام نقشبندى رحمة الته عليه المتونّى المه اله و دقمط الزايل.

با يذهم بيد كو حضرت كعبد را دو حقيقت است حقيقتى است عليه السلام وحقيقى است عليه السلام وحقيقى است ورم تنبّ وجُوب كو صفت معبُود ترت بُرجُود له است كهم ان حقيقت است درم تنبّ وجُوب كوصفت معبُود ترت بُرجُود له است كهم ان حقيقت مقتضى مجدد اليه لؤدن كعبه است وحصنرت راصلته الله تعالى عليه وسمّ و حلى الهوسم نيزد وحقيقت است حقيقتى درم تربخلوق كه ذات أوراق است مواسب جامع برجميع قابليات كرحقيقت التي عبد قابليت واست ورم تنبه وجوب كران قابليت ذارت است مراسب المعنى را تا متعلق شود بالجميع شيونات وصفات لطرايي اجمال مراين قابي على را تا متعلق شود بالجميع شيونات وصفات لطرايي اجمال مراين قابيت فابيت الميان فضيلت عرب براعت ارتقابليات مواين قابيت دارق الميات المقادة المناسبة والمناسبة المناسبة والمناسبة و

ترجمہ بعلوم ہونا چاہئے کہ صنرت کعبی دو تعیقتیں ہیں ایک حقیقت مرتبہ نموی کے اور دو مری یہ نوراقل کی قابلیتوں ہیں سے ایک قابلیت ہے۔ وہ نوراقل نور فرقری ہے اور دو مری حقیقت مرتبہ وجونب کی ہے جو بعیودیت بعین جس کو مجدہ کیا جائے کی حقیقت ہے اور کی بھی حقیقی کی بہی حقیقت اللہ تعالیٰ کو مجدہ کرنے کی حقیقت ہے اور کی خورت کی ایک حقیقت مرتبہ بیں ایک حقیقت مرتبہ بی ایک حقیقت مرتبہ والی ہے اور کہ ایک تعابلیت ہے اور کہ والی ہے اور کہ میں میں ایک قابلیت ہے اور کہ والی ہے اور کہ ایک تعابلیت ہے اور کہ والی ہے والی ہے اور یہ قابلیت ہے اور کہ ایک تعابلیت ہے اور کہ والی ہے اور یہ قابلیت ہے اور کہ ایک تعابلیت ہے اور کہ ایک تعابلیت ہے تاکہ تمام طیو وہ صفات و موجو ایک خوابلیت ہے اور یہ قابلیت ہے اور ہی تعابلیت کے تاکہ تمام طیو وہ صفات کو ایمان طریقے سے جمعے کرنے والی بنے اور یہ قابلیت میں وہ کو ایک تعابلیت کے قابلیت کو بہتے کہ دیک تعابلیت ہے تاکہ تمام طیو کے دیک ایک تعابلیت کے تاکہ تمام طیو کے دیک مستحق کو دیک کے دیک مستحق کے دیک مستحق

وَلَلْاَخِصَرَةُ بَحَدِيرٌ لَكَ مِنَ الْأُولِيْ لَهُ مِردُم عَرِدَى لا مّناهى سيمشرف ہے نیز صورت کعبینلوق ہے اور حقیقت محدر سب طہور علوق ہے اس بنا پر مرفر رعا لم من اللہ علایہ م

افضل المخلائق بين اس هام كاحل يهد كرهيقت محديد مورت كعبر سي أفضل بد اورهيفت كعبر هيفت محديد سي انضل ب. والتد بعائد وتعالي عُلمُ

المِلْحَقيق بِهِ أَمْرَ عَنِي رُوشْ ہے كر تعفرت المام رَبَانی فدس سرہ کے مُكاتیب وُدّتیہ اورتصانیف براستهال ہوا اورتصانیف بشریف بی فظر تقیقت مجھ بیمنتف معانی اور تتعددات ام برہ ستمال ہوا ہے ہر جگد ایک ہی خصوص معنی یافتم مراد لینا فہم تھی کی علامت ہے۔ لہٰذا جمعیقت محدید تقیقت کے مدید تھیں اور الم اللہ موگا جو عالم سفلیات کی محدید تھیں تعلیات کی محدید تھیں تو الم اللہ موگا جو عالم سفلیات کی تربتیت کی مناسبت رکھتاہے اور جب حقیقت اللہید کے مقابلے میں بولا جائے گاتو مُراد شان ذاتی ہو گی حوعالم علویّات کی تربتیت کامتونی ہے اور تمام شیونات داتیہ کوحاوی ہے ۔

حقيقت مُحدِّدِيمُ على صَاجِبِهِ الْمُسْلَوْتُ كَي مُخْلَفْتُ عِبْرِتُ طَلَاحًا

صوفیا بکرام کی تصریحات کے مطابق مرتبۂ وحدت و قلمُ الاعلیٰ ٥ اسمِ اہلی ٥ امرات اسم عظم ٥ مبدأ اقل ٥ تَجْلِيّا قل ٥ نُورِاقل ٥ ظَهُورِاقل ٥ شهودِاقل ٥ تعيين اقل ٥ نزل اقرلْ ه فيضِ اوّل ٥ رُوحِ اوّل ه ظرّل اوّل ٥ قلم اوّل ٥ لُوجِ اوّل ٥ عقرِل أوّل ٥ عنيقةُ أُ الحقائق و قابليت أولى و برزخ البرازخ و برزخ كبرى و سدرة المنتلي ومدِّ فاصل مرتب صورت حق وانسان كامل وأمّ الكتاب والقلب الوصل والكتاب المنطور رُوح الفُدْس ، رُوح الاعظم ، رُوح كلّ ، الامامُ البُين ، مِرَاهُ الحق ، المادةُ الأولى المُعُمِّمُ الأوّل ٥ نفنس الرحمٰن ٥ مُرَاّةُ الْحُصْرَتين ٥ البرزح الجامع ٥ مَجْمِعُ البحرِين ٥ مِراُةَ الون م كزة الدَّارَة ٥ مِفتاح الوجُوه ٥ الوجُود السّاري ٥ نورالالوار ٥ مِترالا نسرار ٥ نفسس الأنفاس ٥ عرشس العُروش ٥ طامة الحقائق الكُبري ٥ بصرْالوجُود ٥ بَصِيرةَ السَّسِبُود الرُّوح القُدُّوسي والسّرام يُوحي وصورت ناسُوت خِلق ومعني لا بموت حِق و بحجر قاموسِ والمجمع المُطْمَطَمُ ٥ طرازُ روارِ الكبريائِ المطلسم ٥ حرث الغين المعجم ٥ نقطة الحقالبَم مبدار الكل ٥ مرجعُ إكل في إكل ٥ قرآنُ حقائق الدّات ٥ فرقانُ تجليّات الصِّفات ٥ حضرت الاسمارِ والصّفات ٥ الحق المخلوق به كُلُّ شيع ومظهر كامل عالم حبروت عَلْمِ الْجِمَالِي وَ حَقِيقَت إِنسانيه ٥ حُبِّ ذاتى ٥ نُورُ ذاتى ٥ حُبّ جبروتى ٥ لؤج تُصَلَ تعلى حُبّى ٥ تعبين وحُرِدى ٥ رابطه بين اظهور وابطوُن ٥ أوَّلُ مَا خَلِقُ الله لوُرِي ٥ اقِلْ ما خُلِقُ التُّدُ الْعُقِلْ ٥ اقِلْ مَا حُلُقُ التَّد اللَّوح ٥ أقِلْ مَا خُلُقُ التَّد الْقَلْم ٥ اقَال مَا خُلُق الله ورةً بَهِينَا وغيرها حقيقت محديه على صاحبها الصّلات والتبنيمات هي كالخنتف تعبيرات ،تشركيات اورضْطلاحات بين ـ

حقيقت كعبر ختيقت مجر تيسي فضل ہے

حضرت امام ربانی فُرِس سِرُهُ فرمات بین :

حقيقت قرآني وتقيقت كِعبَرَبّاني فوقِ عَيقت مِجْرًى مت عَلَى مُظْهِرهَا الصَّلْوةُ والسلام والتمية لهذا حقيقت قرأني امام حقيقت محمدى آمد وحقيقت كعبراباني

مبخود ختيفت محتري كشت له

بود بیست عدی سب ترمبه جقیقت ِقرانی اور حقیقت کِعبَ رَبّانی کا درجبحقیقت ِمحدی علی مظهر صاحبًا لوّة وكسلام وإنتيتر سوأوبرب لهذا حقيقت قراني جفيفت بحدى كى امام اورميثوا بوئي اورهتيقت كعبررباني جفيقت محدى كي مجود موني -

چندسطورکے بعد آگے رفتطراز هیں :

باید دانست که مورت کِعبهٔ بمجنّال کمسجُ دِصُورِ اشیارست هیقت کعبه م

نیر سجود حقائق آن ایشیاست .

بعنی جانناچا ہیئے کے جب طرح کعب کی صورت اشیار کی صور توں کی مجد دہے اسىطرح حقيقت كعبدان اشياري حقيقتوں كى مجود ہے۔

نَيْرُ مُحَوّبات وفتراوّل مُحِتّرب ٢٠٩ مين هجي آب ني اس سُلد يُحقيق بيان في ماناچا جين کو حضرت امام رَباني قدس سرؤ ف ايک محتوا بي مينوت مينوت

حقیقت کِعبدکو "فلہور تنزیہ صرف ذات بن تعالیٰ" فرمایا ہے۔ آب کا برکلام

تضاد رمجمول ندكيا جائے ملكه أختلاف أحوال ومقامات يرمينني تمجھا جائے بعيثي تيقيد

النيت المناف المنافع ا

کھبرکوشان املے سے بلند قرار دینے بیت مقیت کعبہ کے طلال کابیان ہے اوراس کولہور منزیم مرف ذات بی معالی قرار دینے بیت مقیت کعبہ کی امل کابیان ہے کیونکہ چھیقیت اینا اصل اور ظل رکھتی ہے۔

بر بر مر موسی می می می امام ربانی قدّس سرهٔ کے معین میصد علمار نے تقیقت کعباور بر بر مر مر حقیقت محدید کے درے میں آپ کے مُوقف سے جو اختلاف طلیمر کیا تھا اس کی وجریز تھی کہ انہوں نے لفظ حقیقت بشتی کو ذات بشی برمحمول سمجھ رکھا تھا اور وہ طائعۂ عُلِیّہ صنوفیہ کی اِسطلاح سے بے خبر تھے جیسا کہ آجکل کے معین نام

حقيفتت حرآن

نهاد محقق هي اسي غلط فنهي مين سبلابي -

وربر : من و ... حضور عليه المتعلقة والشلام في فرمايا : قران عمر موق من المتعلقة في فران الله عن المتعلقة في فران الله عن المتعلقة في فران المتعلقة الم

ترحمه : قرآن الله تعالى كاكلام ہے جوع بمخلوق ہے بسے ہے اس کومخلوق کہا اس نے گفر کیا۔ عُکما سے متکلمین اہسننت کے نزدیک قرآن اللہ تعالیٰ کا کلام ازلی ،غیرمخلوق اوصفعہ یہ جومہ ہیں۔

حضرت امام رہانی قدس سرؤن نے فرمایا ہے کی حضرت امام عظم الجو منیفہ اوُر حضرت امام الجر نوسف رضی اللہ عنہما نے علق قرآن کے مسئلے میں جھیے ماہ کک بیس میں مجنٹ ومرز اکرہ کے لبعد متفقہ طور رپر یہ فیصلہ فرما یا کہ قرآن کو مخلوق وحادث بجنے والا کا فر ہوجاتا کہے اور اسی پر اُمّت کا اِجماع ناست ہے۔

وحاشيه ۱ اله مسندالفروس منه جوم المسنن الأبرلي هنه جوم الله دفترسوم محتوب <sup>۸۹</sup> الاساً ولعسفالبيه عليه المساعية المستقالية المستقالي جه البيت الله المراكبة المحالية المحال

مَدِ مُرْبِ مُلكَ مُقَلِّينِ نَے قَرَآن كَيْ تَعْرَفِينَ مِن فرمايا : تعرفي قران هُوَالْعِلْمُ اللَّهُ فِي الْإِجْسَالِيُّ الْجُعَامِعُ لِلْحَقَادِيْقِ

صفات ثمانيد لي سے ايك صفت ہے جونك ذات كى برشان اور برسفت بمسلم شيونات وصفات كونتصنت ساء اكرابيانه موتونقص لازم آئ كأر وَيَعَسَالَى اللَّهُ عَنْ ذَالِكَ عُلُقًا كَيْدِيرًا اسى بنار رصفت الكلام صفات ثمانيه كى مامع ب اورشان الكلامشيونات واتيريها وى ب بصرت امام رباني قدس سرؤ في فيمم كوثابت فرمالنے كے ليك قرآن كوشان الكلام اور صفّة الكلام كے تمام ذاتى وسسيونى

کالات کاجامع قرار دیاہے۔ عالات كاجا ح فرار ديا ہے۔ بير فرا حضرت المام ربانی فيس سُرؤك نزديك فيقت بقرآن مبدأ بير من مبر وسعت بيري ن صرت ذات "كانام بي فجرائ آيت قرآنی

إِنَّ اللَّهُ وَاسِيحٌ عَلِيتِ مُ لَّهِ

البصن صوفيار كي رزديك قرآن" ذات مجصن بحثيثيت أمدتيت "كانام ب جس میر مبایسفات بلاامتیاز محفی بایس اور قرآن کے دفعتّا وامدّة اسمان دنیا کی طرف نازل بوفي مي اسمار وصفات ك ظبور كي طرف الثاره بعد والتدافل ب نرمصحف رُوئے أو نظم ركن خسروعنسندل وكتاب تاكے

کلام کی دوسمیں : منگلمین کے نزدیک کلام حق کی دوسمیں ہیں : کلام کی دوسمیں ہیں : کلام کی دوسمیں ہیں : کلام کی دوسمیں ہیں : اسلام نفظی اسلام نفظی کا مفظی مادث ہے اور دال سے کلام نفشی پر جو کہ قدیم ہے اور کا سرکا مدلول ہے ۔ اور سرکا مدلول ہے ۔

نیز کلام تفظی سے فراد وہ کلام ہے جو مُرون و اُصواتِ مُرتبہ سے مرکب ہے۔ اس کلام کی سبت حق تعالیٰ کے ساتھ اس نسبت کی ماند نہیں جو کلام کو متعلم کے ساتھ ہوتی ہے مبکہ اس نسبت کی طرح ہے جو مخلوق کو خالتی کے ساتھ ہوتی ہے۔ لہٰذا کلام کی دونوں میں حقیقت میں کلام حق مِل وُعُلا ہیں جب سیا کہ حضرت امام ربّانی قدس سترہ نے دفتر اقل محتوب ۲۲۲ اور ۲۷۲ میں صراحت فرمانی ہے۔

کلام منسی سے مُراد کلام بیط اورصفت قدیم ہے جو حُروف واُصوات سے پاک ہے اُمرونہی اور اِخبار وغیرہ کی طرف تقیم نہیں ہونا اور اِس کا تعلق ماصلی ،حال اِستعبّال کے ساتھ تعلقات اور اِصافات کی بنار پر ہوتا ہے جیسے کرعلم فدرت اور

ميسا كه علامة تفتار اني عليه الرحمة رقمط از هين:

الْقُرْانُ كَلَامُ اللهِ تَعَالَىٰ عَنَدُ مَعَ لُوْقٍ وَهِي صِفَهُ قَدِيدَمَةُ مُنَافِيةً لِللهُ كُوْتِ وَالْافَة لَيْسَتْ مِنْ جِنْسِ قَدِيدَمَةُ مُنَافِيةً لِللهُ كُوْتِ وَالْلافَة لَيْسَتْ مِنْ جِنْسِ الْحُرُوفِ وَالْاصَة وَالْمَاضِي وَالْلافَة لِي الْمَاضِي وَالْمَافِي وَالْمُولِي وَالْمَافِي وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِيقُولِ وَالْمُلْمُ وَالْمُعْلِي وَلْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَلْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَلَمْ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُعْلِي وَلَامُوالْمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَلْمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُوالْمُ وَالْمُعْلِي وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُوالِمُ وَالْمُعْلِي وَلِمُ وَالْمُعْلِ

جه ابنت الله الإسلام (۲۲۱) الهجاب علي المام ال أس كاكلام أوانس الك بداوريرة آن ظيم بركوم ما بني زبان سي تلاورت كريت فصاحف اس كحصته بين اسى كاكلام قديم بلاصوت بساور بريمار المرصاكف اورية وازمادت بعنى ممارا بإصنامادت مصاورتهم سفريها قديم اورمار الكحت مادت اورج لكها قديم بماراسنامادت بداورج بم في منا قديم، بمارا مفظراً مادث سے اور جو ہم نے خط کیا قدیم بعنی تجلی قدیم ہے اور تحلی حادث کے كلام التدكي رمراتب بعض ارباب كشف نه كلام التسكيمار مرتب بيان فرمائي . ببهلا مُرْسِب ، كلام تعظى انهول ني سس مرتب كوم كلام الله بي كباسي. ووسرام تنب وصفة الكلام يهي كلام اللهب تمیسرا مرتب : سنان الکلام بیمی کلام الله بی بیمی کلام الله بی بنده ترب در می و در است می الله و تربی الله كَلَامٌ سُ تَعِيرِكِيا كَيْكِ. كلام التدك سات مراتب بعن امل باطن ن كلام الله كام الله كام التدك سات مراتب مرتب بيان فرائد بين اور البندك كشف كى بنياد ايك مديث مباركد يركمي سي اور وه يرسي . رُسُول اللهُ سُول اللهُ عَلَى اللهِ اللهِ اللهُ الْمُعْدِل الْمُعْدِلُ مُعَلِي مَسْبَعَ فِي الْحُرُف لِي بعنی قرآن سات حروث پر نازل کیا گیاہے. قرُ ار کے زدیک سات حروف سے **ق**راد سات قرأ میں میں . احل فالعرك نزديك سات حروف سے مُرادسات معاني حيل احل باطن کے نزدیک سامت حروف سے مُرا د سامت بُطِوُن (مع تبے ، ہیں ۔

مبساكه صنرت يخ عبدالتبى شامى تقشبندى قدس سترة ف صفرت ينح أدم نورى قدس برہ کی تقیق کے مطابق صراحت فرمائی ہے۔ اسى كتوب كي تحت " فائده "كي عنوان سے رقم طراز هيں: بدانكه كلام حضرت قرآن را همفت مرتبه است ،سه مراتب وحوبی وجها مراتب إمكاني سه مراتب ابنيست وجود كلام ،نور كلام وظهور كلام تركم تم چهارمراتها می اقرانفن مُدّعا که حرف وصورت را اگرچه نورانی باست. د تخنجائش ميست دوم حرف وصوت نوراني كدبهره ازان برجبرائيا علية الأم شده چنانچ مقرر است إن جِنرائي لسيمع صورتًا وإلى اخره، این دومرتبها گرچیخلوق انداما تصرف میرمخلوقی را درین گخباکش نعیب سیوم مرتبه حرف وصورت عرماني جيانجه بيان حضرت جبرائيل عليه السلام به كلاملي كوعير نبي صلى الله علينه وسلم اطلاع نداشت جهارم حرف وصوت وبنما في چنانج بيان صنرت عليه السلام رصحابر كرام باصافه عام له ترجمه بمعلوم بوناچا ميئے كد قرآن مجدك كلام كے سات مرتب بين ، تين مرتب وتربي اورجيار مرتبي امكاني مین و عُرِبی مرتبے یہ ہیں :

نُورِكلام سوم ظهورِكلامْ تَكُمّ بِهِ اوّل وغُرِد كلام دوم اورجار امكانی مرتب يدين :

اقل ؛ نفنس مدّعا كهجهان حرف وآواز أكرجه نوراني مؤن مخبائش نهير تحقيّة دوم: حرف و آواز نورانی عب سے صنرت جرائیل کو حبته ملاجنانچه کها گیا جرائيل نے ايك أوارشني را خرتك،

البيت الله المرابع الم

موم حرف وآواز جرمانی جبیبا کرحنرت جبرائیل کا فرشتوں کی زبان میں بات کرناجس کی سوائے نبی علیہ اصلاۃ و کہت لام کے کسی اور کو کو ئی طلاع نبھی .

جهادم حرف وآوازجهانی جبیا کونبی علیه الصلاة واستلام کا حضارت محابه کرام وضی الله عنهم خبعین سے بیان کرنا ۔

کلام کی میم و بیان مرات کی توجیه طون سف اور است به اور است ای اور است است ای توجیه می ایستینی کی توجیه می مرات سے تابینی ایم است اور اس کا مقصد معزله کولاجواب اور خاموش کرنا تقا مذهب ق یمن اخرین کی ایجاد ہے اور اس کا مقصد معزله کولاجواب اور خاموش کرنا تقا مذہب ق یہی ہے کہ اللہ تعالی کے کلام ازلی میں تعدد و تک شرو تو نیز نہیں حضرت امام رتا فی قد س سے کہ اللہ است کو اُرا اُرا نی اللہ بہمان یک کلام گوئیا است کو اُرا اُرا نی اللہ بہمان یک کلام گوئیا است کی الله می تقدیم اور مراتب کا بیان تعلقات و اِضافات کی جہت سے ہے۔ و الله والم می تعقیق اُلی کے کھی تھے اُلی الله می تعقیق اُلی کے ایک کوئیا است کی جہت سے ہے۔ و الله والم کی تعقیق اُلی کی تعلق اور مراتب کا بیان تعلقات و اِضافات کی جہت سے ہے۔ و الله والم کی تعقیق اُلی کی تعلق کے ایک کوئیا کی تعلق کے کا کہ کا کی تعلق کے کا کی تعلق کوئیا کی تعلق کوئیا کی تعلق کے کا کوئیا کی تعلق کوئیا کوئیا کی تعلق کی تعلق کی تعلق کوئیا کوئیا کوئیا کوئیا کوئیا کوئیا کی تعلق کوئیا کی تعلق کوئیا کوئیا کی تعلق کوئیا کی تعلق کوئیا کی کی کوئیا کی کوئیا کوئیا کوئیا کوئیا کوئیا کی کوئیا کوئیا

تو آن داره اصل سے معین قدر مقدم میں اللہ کامل سے محاور بدات کا ایک مرتبہ ہے اور بدات کا ایک مرتبہ ہے اور بعض مونیا رکے نزدیک مرتبۂ ذات میں اللہ کلام بھی صادق آ آ ہے جبکہ حقیقت محدیث مون کے مراتب میں سے ایک مرتبہ ہے۔ مرتبۂ ذات اصل ہے اور حقیقت محدیث سے المرتب کا مرتبۂ تان طب مونی ہوں کے مرتبۂ نور سے جبی بالا تر سے محدیث المرتبانی مرتبۂ تور سے جبی بالا تر سے محدیث المرتبانی مرتبۂ تور سے جبی بالا تر سے محدیث المرتبانی مرتبۂ تور سے جبی بالا تر سے محدیث المرتبانی وقت مرتبۂ توران مرتبۂ تور سے جبی بالا تر سے محدیث مرتبۂ تور سے جبی بالا تر سے محدیث المرتبانی وقت سے مرتبۂ تور اللہ تور سے محدیث المرتبانی وقت مرتبۂ تور سے میں اللہ تر سے محدیث المرتبانی وقت سے مرتبۂ تور سے محدیث المرتبۂ تور سے مرتبۂ تور سے مرتبۂ تور سے میں بالا تر سے مرتبۂ تور سے تور سے مرتبۂ تور سے مرتبۂ تور سے مرتبۂ تور سے مرتبۂ تور سے مرتبۂ

ترجمه، اس مرتبهٔ مقدسه بین جن محققت قرآن مجید " کهتے بین نوسکے للاق کی جی گنجانش نہیں ہے اور دُور سے تمام کالات فراتید کی طرح نور مجی راہ میں ہی ہ جاتا ہے۔ وہاں وسعت ہے جون اور انتیاز بے جگون کے علاوہ سی چیز کی گخبائش نہیں اور آبیت برکمیہ قذہ کا چھے تم مین الله فرو حرک ہے (بے شک التا کی طرف سے تعمارے یاس نور آبیا، میں اگر لؤرسے مُراد قرآن ہو تو ممکن ہے کہ از ال تنزل کے اعتبار سے ہو جو بیا کہ کل قد ہے آء سے تُم فیس اسی طرف اشارہ ہے۔ بی مرم میں واضح ہو کہ آبیت مذکورہ میں اکثر مفترین کے زدیک نورسے مُراد بیر مرم میں اس کے دور مالم منی الدین کی ذات مقدسہ سے میں نے فرسے مُراد

قرآن مجید هی لیاسب کین مید دوسری قراد لطریق تاویل و مجاز درست ہو کئی ہے بیا کمی محصوبیا کی محصوبیا کا محصوبیا کا محصوبیا اللہ محتال محصوبیا کا محصوبی اللہ محتال محصوبی اللہ محتال اللہ محتال اللہ محتال مح

ا وفترسوم محتوب ،، المرازة «



### حقيقت رمضان

صوفیائے کرام نے کشف و جُہود کی بنیا دیر حقیقت رمصنان کوصفتہ الکلام کے مرتبے میں قرآن کے کالات کا نیتجہ وا ترقرار دیا ہے کیونکہ ان کے نز دیک حقیقت قرآن شان الکلام ہے اور حقیقت رمصنا جمعتہ الکلام ہے اور ممکنات کے شام

کھالات صفات مثانیہ کے کالات کے فیلال کا اثر ہیں ان کھالات کی صل عالم وجمہ میں ہے اور ان کافیل عالم م کان میں ہے۔

حضرت امام رتبانی قلس سرف نے فرمایا کد قرآن کمالات والتی شیونیه اصلیه کاجامع ہے اور ژمضان کمالات صفالیہ طلبیہ کاجا معہدے بینی برکات واتی وصلی قرآن میں ہیں اور برکات صفاتی وظلی رمضان میں ہیں جیسا کے مدیث میں وار دہے کہ تمام ال

کی برکتیں ماہ زرصنان میں نازل ہوتی ہیں اور اس کے بعد وُوسرے مہینوں کو تفت ہے ہوتی صیں لیے

بلید فرسور واضح موکه ذات بی تعالی برشان اور بیرفت تمام شینات اور بر مینان و میرود است می است اور میرود می است می است و مایا می میرود است و می است

مب كرقرآن مجيد تمام كالات داتى وشيونى كوحاوى سب يعنى شان الكلام تما بشونات داتيه كوا ورصفنت الكلام تمام مبفات بثما نيه كوشامل سب كيونكه ذات وي تعالى كي مر

عَكَابِصِفُونَ لَه -

لمەمشرح كمتمات قُدس آيلت بكتوب؟

المنت الله المنافقة ا

#### رس قران رمضان میں سنابت

قرآن مجیداور ماہ رمضنان کے ماہین مناسبت کے سلسلے میں قرآن وحد میٹ میں واضح رمسنمانی موجود ہے میٹال کے طور پر

وری حروب میں مردوب میں سیار کی میں ارشاد باری تعالی ورب مرصان و فول مربار کی بیس ہے، ھذاکی آفزان کا ایک آفزان کی میار کی بیس ہے، ھذاکی آفزان کی ایک رات کے تعلق فرمایا ، اِن اَنْ ذَاکَ اُسْفَالُ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلِی کُلِی کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلُولِ کُلِی کُلُولِ کُل

ور مرسورها الم المنطقة المنطق

اَلْصِحَدَامُ وَالْفُتُرْآنُ يَنَشَفَعَانِ لِلْعَبَدِيْهُ تَعِنَى روزه اورقرآن بنده كے سيكے شفاعت كريں گے چونكر روزے كافر دِ كامل ماه رُصنان ہے البندا رُصنانُ قرآن ولوں شفاعت كرنے و اسے بیں۔ ثابت ہوا كہ بركت، هدايت اور شفاعت كے كالات اصلينت اور ظلينت كے فرق كے ساتھ قرآن اور رُصنان دونوں میں مشتر كہ طور برُروجود بیں اور دونوں كے مابین مناسبت كی خروستے ہیں صوفیا ئے كرام كی تحقیقات سے یہ ام بھی واضح ہوتا ہے كہ قرآن كالات نمانيد كاجا مع ہے اور رُصنان ان كالات كا جه البيت الساج (٢٣٢ في المجانب المجان قران صفت الكلام كامظهرا الدر رصنان صفت الكلام كالترب . تران كامبداً فيض على سفت الكلام ب اور رصنان كامبدار فيض معي صفت . قران كامبداً فيض على سفت الكلام ب الدروصنان كامبدار فيض معي صفت اهرام کاشفہ ومشاهدہ کے نزدیک قرآن کے الوار و تجلیات فہرت بتبيذتمبرا أزواج بشرته كي طرف فائفن وجاري ريت بين محرعلا نوح بشرتيان کے وُرود وظہور سے راستے بیں حاجب و مانع ہوتے ہیں ان علائق کے اِزالہ کے بياروزه سب سے قوى اور مُوثر ذرابعر سے . اس خقیقت کومان لینے سے واضح ہوجا تا ہے کہ قرآن کے انوار وبرکات ماہ رمصنان من صوصى طور برروزه دارول كے قلوب وأرواح بر وار د ہوتے رہتے ہیں اويمطابن أبيت قرآني شكف وُ رَمَعَهَانَ الَّذِيّ أُنْزِلَ فِيسْدِ الْعَتُرَانُ يُصْلَانَ کے مہینے میں نزول قرآن کی حکمت میں جی ہی مناسبت کار فرمامعلوم ہوتی ہے۔ ماہ رُصنان اور قرآن کے مابین اسی مناسبت کی بنار پر حضرت امام رہانی قدیس مرقو بنے فرمایا ہے کہ تمام کھالات ہمسلی قرآن میں ہیں اورتمام برکات بنتی ماہ اُرصنان میں حقيقت مُحُدِّيهُ صفات كي وجبر قابليّت ذارِت نہیں ملکرٹ ان الم کے اعتبار سے سے منتن قابليت أولى كه بالامذكور شد وحقيقت مِحدَى عبات ازان ست على مظهرها الصَّالُوثُ والشَّيلمامُ في البِّيتِ

ذات ست مراتصاف جميع صفات راكماً حكيم كَمْ تَعْصَى بَكُمْ قَالبَيْتِ ذات ست عز سُلطان مُراعتبارِعِلم راكم متعلِق شُود بجمبِع كمالات ذاتى وسنيوني كه ماصل حقيقت مُوران مجيداست

توجہ من قابیت اُولی میں کا اُورِ ذکر ہو جیکا ہے اور میں سے مُراد تفیقت مِحدی ہے۔ اس کے ظہر رصلوات وسلام ہوں وہ ذات کی قابلیت تمام صفات میں سے متحد کے است میں ہے۔ بعض سے میں کہ میں ہے جیسے کہ مجاب میں ہے۔ اس کی قابلیت اس علم کے اعتباد سے ہے جوان تمام ذاتی اور شیونی محمالات سے میں میں ہے۔ جو آن محب کے حقیقت کا حاصل حیں ۔

شرح

النيت المحالي المناسبة المعالمة المعالم

مُوقف بيہ کو تقت مِحْدِية قابليت في الله البحر بنان الم كے ہے اور شونات كامر تبه صفات كو رقب بنت باريك ہے جو كم صفات كے مرات سے بهل لبند ہے صفات اور شونات كافرق بہت باريك ہے جو كم ہم اس سے قبل اجمالاً بيان كريے كے بين جن اوليا ركرام نے بہلا موقف اختيار فرمايا ہے در اصل وہ شيونات كے مراتب تك نہيں بہنے ۔ انہيں صرف شہو دِ صفات مك سائى حاصل ہوئى ہے حضرت امام ربانی قدس بترہ كا كشف و نہود چو مك بہت بلند ہے اور آب كو شہود رشيونات مك عمود ج حاصل ہے اس ليے آب كے معادف جى دور مرول كے معادف سے بلند ہیں۔

صوفياركا اختلاف واضح رب كرمعارت تصوف يرصوفيا كالفتان علمارك اختلاف علمارك اختلاف كاطرح نهين كيونكوعمار كالفتان

## إنسان سخرجامعهسب

السّان سُخ سِها مُعدِهونے کی حثیبیت سے دو تقیقی تل کا جا مع ہے۔ ا - حقیقت بِام کا فی النيت الله النيت الله المعالمة المعالمة

حقیقت مکانی انسان کاعالم خاتی اورعالم امرکے ساتھ تعلق انسان کی حقیقت امکانی ہے جبیا کدانسان کے وجو دہیں عالم

فلق اورعالم أرك اجزار ولطائف موجودي . حقيقت وجوجى عالم وجب بين النان كمبدأ فيفن كواس كي حقيقت بمحتفيقت ويجوجى ورجوب كي صفات ورجوب كي صفات

كامظهريه.

یعنی الله تعالی کی صفات بنمائی هفته یا انسان می طور هنتیت کے ہرگر موجود نہیں کیونکریصفات خاصد وجُرب ہیں۔ انسان میں مصفات بطور مؤرت کے موجود ہیں اور انسان پر ان کا اطلاق از قبیلِ مشارکت نفظی واسمی ہے نہ کہ ارتبیلِ مشارکت حقیقی ۔

نکوره بالانصول کی روشنی میں انسان صورت صفت علم اور مورت صفت کام اور مورت صفت کام اور مورت صفت کام اور مورت میں انسان کے کام اور مورت صفت کے دریت وغیر صاکا منوز اور نظیم تو کہ لاسکتا ہے لیکن انسان کے لیے مقتب کے طور پر ان صفات کا إطلاق جائز نہیں جیسا کہ احل علی کے نزدیک صورت اور حقیقت کا فرق واضح ہے ۔ حدیث نبوی علی صاحبها الصّلات ہے وجو بی اللّٰه کے گئی اُدم کے لیا صفوت ہے کہ میں مورت سے فراد صفات وجو بی اللّٰه کے گئی اُدم کے لیا صفوت ہے میں میں کام جو فرات وقد الله کے دیا جائے تو ذات کے ساتھ انسان کی مماثلت تابت ہوگی جو بھوائے کہ اُسکی کو لیا جائے تو ذات کے ساتھ انسان کی مماثلت تابت ہوگی جو بھوائے کہ اُسکی کے دیا جائے اُسکی کی مرجو واس طرح کے میں شکی کی کہ باطل ہے اور اگر ضمیر کام جوجو ذات کے مہوتو اس طرح کے میں شکی کی کہ باطل ہے اور اگر ضمیر کام جوجو ذات کے مہوتو اس طرح

ميص آدم كوئي معني نهيس ركھتى كيونكوية امرظا ہرسے كه ہرچيز اس چيز كي صورت پرئيدا فنين کی دوسسیں سالک کو ذات حِی تعالیٰ مُبدأ فیاص ہے دِین پہنچیا ہے اس کی دوممیں ۱- فیضِ تخلیقی ۲- فیضِ کمالاتی و انسان کی ایجاد و تخلیق کاسبب فیض تخلیقی کهلا تا ہے۔ فیصیٰ انسان كوصفات كي توسط سي حاصل بوتاب. السان کے ایمان ومعرفت اور کمالات نبوت و ولا سکا ہیں کمالاتی اسان ہے ایاں سرے کمالاتی فیض کمالاتی کملاناہے ۔ پیفین مصن کوصفات کے توسّط

سے اور معبن کوشیونات کے توسط سے حاصل ہوتا ہے مشلاً سرور کا تناست خلاصة موحو دات علبته التحبات والصلات كامميداً فيض تخليقي صفات بي اورسب أفيض کمالا تی شیونات ہیں ۔

 آپ اینے مبدأ فیصل کمالاتی میں سار مخلوق سے منفر دوممتاز ہیں اور کسی مرتبيمين أب كالحوتئ شركك نهيل وانبيار ومسلين عليهم لطشلونت اور اوليان كاللين عليهم الرحمة كو أب ك ال مرتب سنال العلم ك فللل الصفيل ملما بد. مُنَزَّةٌ عَنْ شَرِيْكٍ فِي تَحَاسِينِهِ

جَعَوْهَ مُ الْحُسُنِ فِينَهُ عَنَيْرُ مُنْقَسِ حضرت الم ربّانى قدس مترة كا قول مرورِعا لم مَنى سُعِيدِيم كم مبدا إن في كما لاتى مُدّد

# توسيح مطالب

ندكوره بالامطالب كى مزيد توفيح وتشريح كيدينداصطلاحات كى وحنا پيش خدمت ہے ملاحظه فرمائيں . رؤ بالتنر التوفيق

وان اور است اور است اور است اور است کے درمیان نسبت کو اللہ میں است کو است کا ا

فسببت فللط فين يارابطه بين الطب وفين كانام نسبت ہے۔

فابلتیت اُولل حقیقت محتریمالی مناجها الصّاطِت کو قابلیّت اول کها جا الصّاطِت کو قابلیّت اول کها جا تا ہے۔

مبداً فیص مالم وجب بین حس ایم، شان معفت یا ظل کے توسط سے مبداً فیص سالک کو نیف آیا ہے اس کومبدار فیف کہتے ہیں۔ مبداً فیاص مبداً فیاص صرف ذات باری تعالیٰ ہے اور ہرانسان ابنی تعداد مبدار فیف سے وصلاحیت کے مطابق عالم وجونب میں اپنے مبدار فیفن سے

م معلم من من من و صلاحیت میں منام وجوب میں اپنے مربدار مقبل ہے۔ تربیت وپر ورشس پا ماہے ۔

ابليار ومركن كم مباوئ فوض انبيار ومركين عليه التلام كيمبادئ ابليار ومركين عليه التلام كيمبادئ البيار ومركين عليه التلام كيمبادئ فيوض على المنافي المؤرد والمناف المعلم المؤرد المناف المعلم المؤرد في علم المؤرد المنافي المن

حضرت آدم علیه السّلام کامبدار فیفن صفت التکوین ہے جبیا کہ اس آیت سے فل ہرہے۔ حکف کو یہ فی کو یہ کے میں ایک کا کہ دی کو یہ کے کا کہ کہ کا کہ کی کہ کا کہ کہ کا کہ

© مصرت نور عليه السُّلامُ كَامبدار فيض صفت العلم بصبيا كدفر مايا والعَلَم بِعلم السَّلام كَامُونَ لَهُ وَاللهِ مِمَالاً تَعَلَمُونَ لَهُ

و حضرت الراهيم عليه التلام كامبدار فين صفت العلم بدار شاد بارى بدر و كفت التين البراهيم المين ا

© خضرت مُوسیٰ علیہ استُلام کا مبدار فنصن صفت الکلام ہے۔ فرمانِ باری ہے سے یہ یہ وود ریستا ہے۔ ہ

وكلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكُلِّيمًا ٥

حضرات عيى عليه السّلام كامّبدار فيض صفت القدرت بع عبيا كم آيت و مضاهر به عنيا كم آيت و مضاهر به و المّن المطين كه مني المطين كه مني المطين كه مني المستوق المستوي المنتوق إبا ذن الله المه المن و المحمدة قايم المناه الله المن المن و المناوت عنيا و المناوي ال

فیوض میں انہی صنران کے ' انتقام شار کت رکھتے ہیں ۔ رؤالگاڈ اُمامُ ، میر سم سر سر سر میں اولیاد ووقت رکھتے ہیں۔ روالگاڈ اُمامُ ،

اولیارگرام کے مبادی فیوض اولیار دونتم پر ہیں اولیارگرام کے مبادی فیوض المحتی المشرب اغیر محتی کالمشرب مردعالم موسی المشرب ولیا علی صاحبا الصّادات ہوتے ہیں سرورعالم محدی مسترب ولیا علی صاحبا الصّادات کے زیرِقدم ہیں اور آپ کے ہی مشرب اور مبدار منین سے إقتباسِ فین کرتے ہیں اس ہے اُن کے

له آل عمران ۵۹ که الاعراف ۹۲ که الانب آر ۵۱ که مریم ۲۳ هه الانب آر ۱۵ که مریم ۲۳ هه الانب آر ۱۲ که مریم ۲۳ هم

جه ابنت الله ١٢٣٩ المالية الم

مبادئ فیون «ظلالِ شُیوناتِ عِلْمِ» ہیں ۔ • ورس موال من اس سے اس سے اولیا رمحبُوب بالعُوض یا محُت ہوتے عیبر کاری منسرب ولیار ہیں دیگر انبیار و مرسلین عیبی ماسکون والتسليمات كوزير قدم بس اوران كالمشارب مبادئ فيوض سيلعلق الطفتي بي اس يعان كيمبادئ فليض " ظلال صفات ببوتيه" بن ب

 سالک جب گدورات بشریه سے صاف ہو کر ترکی تفن کا مرتبہ ماصل کر لیتا ہے تواس وقت وہ اللہ تعالیٰ کی صفات شیونات یا ظلال کامطہر بن ما تاہے توان صفات وظِلال کی تجلیات اس کے وجود میں ظاہر جونے لگتی ہیں اور وہ صفات واخلاق الهبيه سيتضعف ومتخلق موجا تاسء حدكيث قدسي لآيزال عَبْدِئ يَتَقَرَّبُ إِلَى بِالنَّوَافِلِ لَهِ الْمَ الْحِكَامُفَهُوم اسى مرتبيرِصادق آتا ہے۔

منتن وقابليت إتصاف كدمناسب خانه صفات ست وبرزخ ست ميان ذات عَبِّل شانه وصفات اُوحقائق انبيارِ دگرست على نبيّنا وعليهم لصّباوات ولتسليمات والتحيات بمين قابليت بملاحظ اعتبارات کدمندرجه اند در وی حقائق متعدّده گشته قابليتي كرحقيقت محمدى ستعلينه الصلاة والتحبية اگرچهٔ طِلبّتت دار د امّا رنگ صیفات با ومُمتیزج نکشتهٔ 

## است و ينج حائك درميان نيامده

نوهان کو استان کی قابلیت جرفانه صفات سے معلق رکھتی ہے وہ المترتعالی کی ذات اور اس کی صفات کے درمیان برزخ اور بردہ ہے۔ یہ دوریرے انبیار کرام علی نبینا وعلیہ الصلوت والسلیمات کی حقیقت ہے۔ یہی قابلیت بعض اغلیار کرام علی نبینا وعلیہ الصلوت والسلیمات کی حقیقت ہے۔ یہی قابلیت بعض اعتبارات کے کافر سے جراس میں پائے جاتے ہیں متعدد حقیقت کی شکل جسید کرجکی ہے جو تیقت مجمدی مجمدی مجمدی محمدی کرجکی ہے جو تیقت مجمدی محمدی کو طلیقت رکھتی ہے تاہم صفات کا رنگ اس سے آمیزش نہیں رکھتا اور کوئی واسطہ ورمیان میں حائل نہیں ۔

## شرح

جو البيت الله الماكون الماكون

وَكُلُهُمْ مِّنَ رَسُولِ اللهِ مُلْتَمِسَكَ عَنَرُفاً مِّنَ الْبَحْدِ أَوْ رَشْفاً مِّنَ الدِّيم يعنى تمام انبيار كوام آب سے اس طرح التماس كرتے ہيں جيكے ممندرسے ايك جينوا ور تُوسلا وصار باكر شسسے ايك قطره .

الله في المستحديدة الت كاليك اعتبار المستحد المسليت كى شان المعلم المستحد المسليت كى شان المستحد المسليت المرافعة المستحد الم

ميساكه عارف ما وى عليه الرحمة في صنرت امام الموكس شا ذلى رحمةُ الله عليه كي من مرورعالم من المعلية والموردياء عليه كي صلاة نورُ ذاتى كى شرح مين مرورعالم من المعلية ولا محد المؤرداتى قرار دياء الله منهم حسل وسكيم و كبارك على سيبيد كالمحسسة والنور الذاتي الحد نوري دات الله المي الذي حكمت الله تعسالي

اورنور واتی مونے کامطلب یہ بیان فرمایا کہ آپ کی حقیقت کو اللہ تعالیٰ فرمایا کہ آپ کی حقیقت کو اللہ تعالیٰ فی م

منتن وحقائق جاء مُخترى المُشرَب قابليّات ذات سن عَرْضَانُهُ مراعتبارعِلم راكم متعلّق شود بديعض أن كمالات وأن قابليّت مُخديه برزخ ست ميانِ ذات عَلِّلُهُ لطأنهُ وميانِ اين قابليّات مِتعدّده وُحكم آن بعض لو اسطهُ آنست كد أورا در فائرصفات قدمگاه ست وسس و نهایت بر مرصفات قدمگاه ست لاجر م نهایت بر فروج آن فائه تا بآن قابلیّت ست لاجر م آن را بآن مروز سبت كرده علیه الصلاه قراست لام و التحیّة وچون این قابلیّت و تصاف برگرد مرتفع نمی شود آن بعض نیز هم کرده با نکم هیقت مِحمّدی بهمیشه مائل ست به

توجه ۱۰ اور محدی المشرب جماعت کی حقیقتیں ذات عربشانی کی بیات
ہیں اعتبارِ علی کے ساتھ جو بعض کما لات سے تعلق ہے اور وہ قابلیت محدید الیجن واجب تعالیٰ اور ان قابلیات مُتعددہ کے در میان برزخ دیر دہ ہے اور الیجن کا حکم اس واسطہ سے ہے کہ ان کا قدم خانہ صفات ہیں ہے اور بس اور اسرخانہ صفات کا مہم اس واسطہ سے ہے کہ ان کا قدم خانہ صفات کی ہمایت وجر اس کی سبت مصفات کا مہمایت وجر اس کی سبت اسکون برگرز مرتفع نہیں مسئون تا بایت محتی ہے اور جو اس قابلیت اسکون برگرز مرتفع نہیں ہوگئی تو ان بعض نے بھی ہے کہ گئی ہے اور جو نکہ یہ قابلیت اسکون کی دات میں نظر سے ہوگئی تو ان بعض نے بھی ہے کہ گئی ہے اور انصاف کی قابلیت محتی ہے ور نہ قابلیت محتی ہے اور انصاف کی قابلیت بھی قابلیت محتی ہے اور انصاف کی قابلیت بھی اور تقداع ممکن ہوچکا ہے اور انصاف کی قابلیت بھی اور جو ایک اعتبار ہے لیکن برزخیت کی وجہ سے صفات کا دنگ اختیار کرچکا ہے اہلا المحتی میں ذائد وجود کے ساتھ موجود ہیں اور جن کا ارتفاع غیم کمکن ہوچکا ہے اہلا المحتی میں ذائد وجود کے ساتھ موجود ہیں اور جن کا ارتفاع غیم کمکن ہوچکا ہے اہلا احتی میں دائد وجود کے ساتھ موجود ہیں اور جن کا ارتفاع غیم کمکن ہوچکا ہے اہلا المحتی موجود ہیں اور جن کا ارتفاع غیم کمکن ہوچکا ہے اہلا المحتی میں ذائد وجود کے ساتھ موجود ہیں اور جن کا ارتفاع غیم کمکن ہوچکا ہے اہلا المحتی مطرور پر بیر اقصاف تم ہیشہ حائل دیں ہے۔

## شرح

تطوربالامیں حضرت امام رہائی قدس ترؤ العزیز حقیقت مجمّدید کی برزخینت کے سلسلے میں اُولیار کرام کا اختلاف احوال و مقامات بیان فرمارہ ہیں مختقر بیرک معتبر اولیار حقیقت مجمّدی مئل النبیائی میں کو ذات اور عارف کے درمیان مہیشہ حائل اور و اسطہ حائل اور و اسطہ نہیں ۔

حقیقت محقیقت کے گذرہے کے ماتل نم ہونے کا جوم من اولیار کوام کا عوج مختیقت کے گاہوم منات کے ہوں اولیار کوام کا عوج مختیقت کے گئی منات کے ہوں اورجن کا عروج صفات سے آگے شیونات کک ہوجا کا مرح ان انداز میں جانتے کیونکے صفات کا دیجو وفارجی زائد موجود دہیں جومائل ہمیں جانتے کیونکے صفات کا دیجود نہیں اور وہ انمور انتزاعیہ میں سے ہیں۔ البلا احد مائل نہیں ہو سکتے۔

 جود البيت الله المام ا مقرّب ہو وہ اپنے غلام کا بادشاہ سے تعارف کروا دسے ،اب اگروہ غلام لینے آقا کی ظاہری وساطت کے بغیر بھی بادشاہ کی شحبت سے مشرف وفیض یا بہو آ ہے تو اس میں کیا مضا نقۃ ہے ' دفتہ تر) مثابعت کے دومعنی ہیں سرور کائنات مناسطینی والم کی مثابہت کے دومعنی ہیں۔ ١. مما بعت معنى اتبًاع شريعت وسنّت ٧. متابعت معنى اخذِ كمالات وغروجات منابعت ممعنی اوّل ہرانسان (عارف وغیرِعِارف) کے لیے ناقیا فرض ہے۔ مثالجدت معنی ما فی مسروقت تک ہے جب تک کہ عادت تھی تا ہے۔ مثالجدت معنی ما فی محدیہ سے باریاب نہیں ہوتا۔ قابلیّت محمّد بیرے ذات اور قابلیّات مِتعدّدہ کے درمیان برزخ ہونے کا مطلب بيهب كمحمدى المشرب اوليا جعتيفت محديبك توسطك بغيرذات حق بلا کیف تک رسانی حاصل نہیں کر سکتے ۔ بیمعنی نہیں کہ حقیقت محدید ان کے بلیے حجاب بن جاتی ہے بہاں برزخ مبعنی مرتبہ متوسط ہے (واللہ اعلی منن مُقامِطبتيت منشاءِ دقائقِ عُلوم مِقامِ طبّي ست ومرتئبهٔ فردتیت واسطهٔ ورُودِ مَعارِفِ دَائرهٔ اِسل متیاز میان طل واسل بے اجتماع این دو دولت میر نمسیت ترجمہ ، قطبیّت کا مقام حودقیق علوم کا فشارہے ظبّی مقام ہے اور فرویّت کا مقام حودقیق علوم کا فشارہے ان ودولتوں مقابط بیت و کا داسطہ ہے۔ ان ودولتوں مُقابِط بیت و



فردتیت، کے حسمول کے بغیر ظل اور اصل کے درمیان فرق وامتیاز نہیں ہوسکتا۔

## 850

مُطور بالا میں آپ نے مقام قطبتیت اور مرتبہ فردیت پر اجمالی فقتگو فرمائی ہے اس صفرون كي تفهيم كے يد مندرجه ذيل أمور ريخور فرمايس.

وارثان نتوت کی دوشمیں ہو تی ہیں ۔ بنی کی نبوت کے کمالات کے وارث

بنی کی ولایت کے کمالات کے وارث

اقل الذكر الحراهل من بي تواما من كي منصب اور مرتب يرفائز ہوتے ہیں اور اگر اہل منصب نہیں تو کمالات امامت کے مرتبے پر فائز ہوتے

بي

ثانی الذکر اگر اهل منصب ہیں توخلافت کے منصب کے حامل ہوتے ہیں ورنه کمالات مِنلافت مصحِصّه پاتے ہیں ۔

كمالات ِامامت كاتعلّ معاربْ ذاتيه اصليّه كے ساتھ ہوتا ہے ۔ 0

كمالات خلافت تجليات صفاتيه ميتعلق موت بس 0

منصب امامت وخلافت كاتعلق دائرة إصل سے ہے۔ 0

مقام قطب ارشاد وقطب مدارظ ِ مقام صل ہے۔ 0

قطب فردكا مرتبهمعارف دارئ إصل كے ور ودكا واسطه ہے ظاہر كجے قط 0

ارشاد وكدارك قطب فردكا درجه مبند هوتا ہے كيونكه امامت كامنصب خلافت تحكم منصب سے اعلی ہے جبیا کہ اصالت اور طلبیت کا فرق و اضح ہے۔

0

قطب مدار مورکوننیټ بر مامور ہوتا ہے۔ 0

قطبَ إرشاد وعوت وصدايت كا فرلصِنه انجام ديباہے ـ





مُعَوَّبُ لَيْهِ عارف بِاللهِ صَرْمُوجِهِ **حَجَ** لَكُلِ<mark> قِي بِا</mark> لِكَلِيرُ المِرَى مَسِّنُ الرُرْ



مُوضُوعُ الله المسلسلة الاحرار رساله سيسسلة الاحرار رُباعيات حضرت خواجه باقى بالله يمسئلاً زِ



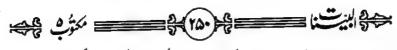
#### مکتوب ۔ ۵

من عرضداشتِ اُنْحَدُّر الْنُحُدُّم اَلَّه رساله در بیان طریقت حضراتِ خواجگان قدین اللهٔ نَعَالَیٰ اَسْرَادهٔ نُه نُوسَتُ ارسال داست به است بنظر مبارک خوابد درآمد مهنوز مسقوده است خواجهٔ بُرهسان بسُرعت دامی شدند ف رجهٔ براس این نشریحت که جعف عسائوم دیمیم بیاض می شوند

ترجمه بحضور کا حقیر خادم عرض کر تاہے کہ ایک رسالہ حضارت خواجگانی شبندیہ قدس سترہ تعالیٰ اسرادهم کی طریقت کے بیان میں لکھ کر ادسال خدمت کیا گیا ہے کو حضور کی نظر مبادک میں آئے گا ابھی متودہ ہی ہے چڑنکہ خواجہ بُر ہان علیہ الرحمة جلدی روانہ ہوگئے اس و اسطے میجے نقل کرنے کی فرصت نہ ملی خاکسار کا خیال ہے کہ سس رسالہ کے ساتھ اور علوم بھی ملائے جائیں.

## شرح

نقر الطرافيت خواجگال شنبندىي مرشد رحق ئى خدمت ميں عرض پرداز بيں كه نقير ني "طريقت بخواجگان نقشبنديه" كے نام سے ایک رسالہ تحرير كركے خواج



برہان رحمتراللہ علیہ کے اجھارسال کیا ہے مصنور کی نظرمبارک سے گزرے گا۔ خیال ہے کہ اس رسالہ کو مزید علوم ومعارف کے ساتھ مزین کردیا جائے۔

ترجمہ ایک دن دسالہ سلمہ الاحراد نظرے گزرا اسی وقت دل میں بیرخیال آیا کہ حضور سے عرض کر درا اسی وقت دل میں بیرخیال آیا کہ حضور سے عرض کر دول کے حضور سے عرض کر دول کے حضور سے عرض کر دول کر اس کے بارے بیل کچھ کی تھے کیا اردہ نہا بیت بختہ ہوگیا کہ اسی انتار بیں اس موردہ کے لیمن علوم خالفن ہوئے ۔

شرح

رساله مسلم التحرار عادف بالترصرة خواجر مراقی بالته دانوی و متراله مسلم الاحرار عادف بالته دانوی و متراله مسلم الاحرار و مترح فرما کراس کانام مسلم الاحرار و که است می مترح فرما کراس کانام مسلم الاحرار و که متنات غامضه وقیقه میں سے ہے۔ اس میں آپ نے توجیدی علوم و معادف بیان فرمائے تھے ۔

> رُباعیات چضرت خولجرباقی بالتد در سرترو تشبهان الله زهه خدائے متعال عالی زنصرّر ومسبدا زخیال از نور لطب بنشش ضمب ترمشحون از نور لطب بنشش ضمب ترمشحون

> > وزسر سراتيشن جب ں مالامال

d

المنت المحالي الماكم المحالية المنت المحالية المنت المحالية المنت المحالية المنت الم

محریند وجود کون ، کون سسی میسی و سیمول نورسی بجزاز کون نه کرده است قبول والله که دری پرده نسان الغیب است برطبق قواعب داست بر و فق محمل

بشنگسس که کا تنات رودر عدم اند بل در عدم کست ده ثابت تسدم اند وین کون مستق از خیال دو هم است با تی همسگی ظهور نور فست دم اند

دو گربامیات کی شرح خود مصرت خواجه نے گریز فرمائی تھی از ال بعد مصرت امام آبانی قدس سرو نے مینوں رباعیوں کی شرح فرما کر توحید وجردی اور شہودی کے علوم ومعارف کو باہم ملا کر شربیت حقہ کے ساتھ تعلیق دسے دی تھی۔ ان تشرکیات بی شربیعت اور طربیقت کے حقائق ومسائل کو واضح فرمایا گیا ہے اور تصوف کی شکل شربیعت اور طربیقت کے حقائق ومسائل کو واضح فرمایا گیا ہے اور تصوف کی شکل ترین اصطلاحات مثلاً کون جصول ، وجود ، شورت ، تعییات ، تنز لات ، ایجیان ابتر کی تحدد امثال ، ہمداوست ، ہمداز وست وغیر ہاکو دل شین انداز میں سبب ن فرمایا کی اسے لیے

من خواجبر برمان درین مدست کارخوب کردند و منگن از سیر بروم که مناسب مقام جذربه است -----

ئے آجکل شرح رُباعیات خواجر ہاتی بالمشرد لمری رحمۃ الشرطیر مع حواشی و تعلیقات صنرت امام رّبانی قدس سرؤمع اُردوتر مجرک آبی صورت بیس دستیاب سیے جس کوادارہ محبّد ریر (نالم آباد نمبر ا کراچی نمبر ۱۹) نے شائع کوایا ہے المنت المنت المنافقة المنافقة

نيز نصيبي يافتند

ترمبر انواجر فران نے اس مدت میں انجھاکام کیا ہے اور تیسرے سیرسے می جومقام مذہر کے مناسب ہے حصر پالیا ہے۔

# شرح

حضرت امام ربانی قدس سرۂ نے خواجر بُر ہان علیہ الرحمتہ کی سفارش کے ساتھ ساتھ ان کے باطنی مقام کی طرف بھی اشارہ فرمادیا ہے کہ وہ تیسری سیرسے حصّہ با رہے ہیں جو کم مقام مغد ہر کے ساتھ مناسب ہے ینواجہ بُر ہان کا ذکر حصارت لقدس دوج حسّب ہم کر است ہفتم میں آتہے۔

تیمری سرکو اصطلاح طرفیت میں سیمون اللہ باللہ کہتے ہیں۔
میمری و جو کت علمیہ سے عبارت ہے۔ اس سیمیں سالک کوعلم علی
سے علم سفل کی طرف اور اسفل سے اسفل ترکی طرف لایا جا تا ہے۔ اس فتم کے عب
دولت خوش نصیب کوجب عروج کے بعد نزول ہوتا ہے تو اس کو اللہ تعالے کی
طرف سے میم ہوتا ہے کہ جس راستے سے تم خود آئے ہو واپ جا کر اسی راستے
سے میرے دوسرے بندش کو بھی میری طرف لاؤ۔ یہ سالک مسند تلقین وارشا دپر
فائز ہوتا ہے۔ اس کی تمام تر توج مخلوق کی طرف ہوتی ہے لیکن باطنی طور پر اس کو

مخلوق کے ساتھ کسی تم کی گرفتاری نہیں ہوتی بلکہ مقام مشاہدہ سے باریا ہے ہوتا ہے اور اس کے دجود کی برکت سے مخلوق خدانعنس کے اندھیروں سنے کل کرفڈ انگ رسائی حاصل کرتی رہستی ہے۔







مُوَضِّحُ الْ تعبیاتِ جمال ٔ وجلال ، مراتنب یقین عارف کے مراتب نزول وعروج کا بیان



مكتوب - ا مكتوب - ا عض داشت كمترين بندگان احمداً نكر مُرث بِ من عكى الاطلاق جلَّ شَانه برركت تِوجِّرِعالى بهردو طريق جذبه وسُلوك تربيّت فرمُود وبهرد وصيفَت جمال صلال مُر بيُّ ساخت عالاجمال عين علال ست وعبلال عين جمال.

ترجمہ احضور کا تحمقر تن خادم احمد عرض کر تاہے کہ طلق طور پر ہدایت کرنے والے مینی اللہ تعالیٰ مِلَ شَائن نے آنجنا ہے کی توجہ عالی کی برکت سے جذبہ اور سلوک کے دونوں طریقتوں اور جال وجلال کی دونوں ختوں سے تربتیت فرمائی ہے۔ اب جال میں جال ہے ۔

# شرح

ابتدائر عتوب میں صنرت امام ربانی قُدِسَ بِیُرہ نے ذات جِی سُجانہ و تعالے کے لیے ، مُرسِف مَلی الإطلاق "کے الفاظ استعمال فرمائے ہیں کمیونکہ رُشد وہائیت وراصل اللہ تعالی کے فضل و کرم پر بوقوف ہے اور وہی تقیق طور پر مُرشد وہا دی ہے بندگان فُد ا پر لفظ مُرشد وہا دی کا اطلاق مَجان اُسے ۔ بعداز ال حضرت امام ربانی قُدِسَ بِدُون فَد اللهِ عَن مَا اللهِ مَعَان اُسے والله و مبلال کی دونون فتول مِرْق نے اپنے تعلق جذبہ وسلوک کے دونوں طریقوں اور جال و مبلال کی دونوں فتول سے تربیت باطنی کی فعمت حاصل ہونے کا اظہار فرما یا ہے۔ اس مضمون کو قدر سے

تفسيل سے بيان كياجا آست ناكه الله الله واضح موسكے . وَبِالله والسَّوْفِيْق جذبه ومسلوك جذبه، مَينُومُنى كان م ب الله تعالى كضل اور مُرشدكا مل كى توجّبات سي مَينُومُ الله عنه المرام كوجّبات سي مَينُ والمرام كوالما تعن ابنی صل میں فنا ہوجائے آیں یک یفینٹ مَذب ہے اور اس تربتیت کے ماصل كرف والے كومجذوب كيتے بيں۔ و کے سُکوک ئیرِ آفاقی کا نام ہے۔ مُرشدِکا مل کی ہدایت کے مطابق، إِنّباع مُسلوک مُنت و شریعیت اور ریاضت و مجاهدہ کے ذریعے مہارت غِنس ہ عناصرحاصل كرنائير إفاتى كيداس كوسلوك كيت بين اوركست قيم كى ترسيت ماصل كرنے والے كوسالك كماجا كا ہے۔ م جذبهٔ لوک سے تُقدّم ہو تو ایسے مُرید کو مجذوب سالک ہجتے ہیں م مر اگرسلوک جذب پرمقدّم ہوتو ایسے مُرید کوسالک مجذوب کہتے ہیں بھنے است نیشند یہ جذب کوسلوک پر مقدم سیکھتے ہیں اٹنی بیے اکثر نقشبذی صوفیاً مجذوب سالک ہوتے ہیں دمجر سلاس کے بزرگ سلوک کو جذبے پر مُقدم کرتے ہیں ای یا ان کے اکثر صوفیارسالک مجذوب کمالے ہیں۔ بہاں مجذوب کاعوام میں متعار ب معنی مراد نہیں ملکہ مجذوب کا لفظ توجہ شخ سے فینسیاب ہو نے والے بابندیشر لیست مئونی پر استعمال فرمایا ہے۔ مېذىبەكى دوقتىي بىل -ا، مِذبة بدايت ١١، مِذبة نهايت مذئبز بدابيت كومذ ببشوري اورجذ تبزنهايت كوعذ يتبتقى يجيته بإس يعذبته إليت

البنت المحادث المحادث

سلسانىقىنىدىدكافاصە ئىسى جوحضرت خواخىقىنىدىخارى رحمة اللەعلىدى نىبت كاخصوصى فىضان ئىسىداندرائ النهايت فى البدايت كامبى بىي مفهۇم سے

ہذبہ نہایت تمام سلاس طریقت ہیں شترک ہے۔ تع**بیرات ِجمال عبلا**ل

منبیرات بمالح قبلال کاه سرزن که جمال وعلال سرمته برخده مد مثانی

صوفیائے کرام کے نز دیک جمال و حبلال کے متعدد کفہوم ہیں شلا جمال سے مرا دالٹر تعالیٰ کا إنعام واکرام ہے جراحبٹورت راحت و رحمت اور

صحت وشفارظام ہوتاہے۔ ملال سے مراد اللہ تعالیٰ کا قہر وغضب ہے جوبصبُورتِ رنج والم وتکلیف م تصییبت ظاہر ہوتا ہے ۔

جال سے مراد کی کطف ورحمت ہے ہمام افعال و آٹا رُخیرات وطاعاً
 اور اعمال عبادات وصنات کاصدور اس تحلی جال سے وابستہ ہے۔

0

اور اعمالِ عبا دات و صنات کا صدور اسی علی جال سے واہستہ ہے۔ • جلال سے مُرادِ مُجلّی قہاری ہے۔ تمام افعال و انارُضلا ات و شرارت اور

اعمال کنافت کاصدور اس تخلیجب للل سے ظاہر ہوتا ہے۔ • جمال سے مرتبۂ وحدت اور جلال سے مرتبۂ اُحدیثیت بھی مُرادیا گیا ہے۔

بر مالک بب ترکیفِن کے بعد مقام معرفت بر فائفن ہو ہاہے برین مبر اور جذبے سلوک کی دونوں جہتوں سے صند پاتا ہے اور جمالی و الاصفاق کے ماتا تا تا تا ہے ہاں جاتا ہے اور جمالی و

عبلال صفتوں کے ساتھ تربتیت یا تاہد تو اس کو ذات حق سُجانۂ وتعالی کے ساتھ محبت ذاتی کام تبر حاصل ہوجا تا ہداس مرتبے میں اسے جمال اور جبلال دونوں اللہ تعالی کے فعل ہیں مجبوب کیساں نظر آتے ہیں کمیونکہ جمال اور جبلال دونوں اللہ تعالی کے فعل ہیں مجبوب

کے فعل بھی محبوب ہوتے ہیں۔ اسی بیے جمال و مبلال کی خصوصیّات اس کی نظر سے او محبل رہتی ہیں اور اس کی ساری تو تبرصر و محبوب کی طرف رہتی ہے۔

است وعبارت محمول برظا ہرخودست قابل انحسب ان

ی میں ہے۔ ترجمبہ ، رسالہ فکرسیہ کے معبن حاشیوں میں اس عبارت کو اپنے ظاہری مفہوم سے پھیر کر اپنے موہوم مطلب (اپنی مجھ کے مطابق ما ویل کر دہ معنیٰ) پڑھل کیا ہے حالانکہ عبارت ابنے فی ہری عنی برجمول ہے۔ الذاظا ہری عنی سے بطانے اور تاویل کے قابل نہیں ہے۔

#### شركح

محضرت المام رباني رخمة الدعكية نع رساله فمرسسته كي شرح كرف وإليكسي مخشی کی طرف اشارہ فرمایا ہے کہ اس نے جہال و مبلال کے نا ، ری منہوم کے میکس لینے وبم كي مطابق جمال وجلال كي تا ويل كي بيع جبه جمال كاظابهري مبنوم العام واكرام ہے اورمبلال کا ظاہری عبوم رنج والم ہے طلب یہ ہے کہ سالکین رمجات فراقی کے مرتبے میں انعام و إیلام دونوں بالر ہوتے ہیں اور سس مفہوم کو نظرانداز کرنا سرط مرحم میں اور انداز مسى طرح تفي مناسب نبيلي ـ

يەرسالەمباركەمضارت خواجۇئان ئىدىم دىبا ۋالان رسالەقدىمسىتىم ئىششىندادىيى نجارى دىنى اللەتھالى ئىندىكى لىفوظات

اوران کی تشریحات بنتی سے جس کو صفرت خواجر محقد پارساد مند اللہ علیہ نے مرتب فرمایا ہے۔ یہ رسالہ نقشبندی مکتب فکر کے بیے لائے عمل کی حیثیت رکھا ہے جھز المام ربائی نے محقوبات میں جابجا اس رسالہ کی عبارات کا حوالہ دیا ہے۔
محضرت خواجر محمد پارسا قبرت و محضرت خواجر محمد پارساکا اصل نام خواجر محضرت خواجر محمد پارسا قبرت و محفود الحافظی ہے۔ ایپ لائٹ میں بدا ہوئے بعضرت خواجر نقشبند بخاری رضم اللہ کا مقسبند یہ کے فروع میں رہ کو محسوب میں رہ کو محسوب میں رہ کو تصریحارفاں میں رُوحانی تربیت حاصل کی آپ نے طریقت بقشبند یہ کے فروع کے بیے بہا خدمات آنجام ویں۔ آپ کی گواں قدر بے بہا تصابیف و رہ میں اس کی گواں قدر بے بہا تصابیف و رہ میں اس کی گواں قدر بے بہا تصابیف و رہ میں اس کی گواں قدر بے بہا تصابیف و رہ میں اس کی گواں قدر بے بہا تصابی میں میں میں ہوا اور حبت ابقیج میں صفرت سیدنا سے کا دھال معمرت استدنا میں مورد جمعوات مدینہ موردہ میں ہوا اور حبت ابقیج میں صفرت سیدنا

عَمَانَ عَن مِنَى اللَّهُ تَعَالَى عَن كِ قُبْر شرافِيكَ قريب مدفون موسِّر بآب كاسفِسال

آپ کی مغروف آلیف نصل انظاب کے نامصل خطابی کے اعدا دسے کا آہے

وعلامت این تربتیت تحقق شکرنست مجبت من و معلامت این تربتیت تحقق آن امکان ندار و و مجبت فی اتبا معلامت از اتبان ماسو است بین معلامت فناست و فنا عبارت از نسیان ماسو است بین آزمانیکه مُلوم بنام از ساحت بسینه رفته نشود و برجبل مطلق متحقق نشود از فنا بهره ندارد و این چرت و جبل دائمی ست امکان زوال ندارد نه انست که کا سے عاصل شود و گا سے



زائل گردو وغایته مافی الباب بیش از بقیا جهالت محض بی بعد از بقالجها وعلم باهم حمع اند درعین نا دانی بیشعورست و درعین حیرت کجننورکد این موطن حق الیقین ست که علم وعین جاب یک دیگیزیستند به

ترجمہ: اور اس تربت کی طلامت محبت فاتی سے ساتھ محقق ہونا ہے اس کے محقق سے بہائے مکن نہیں ہے اور محبت فاتی فنائی علامت ہے اور فناسے مُراد اللہ تعالیٰ کے سوا ہر چیز کا فراموش ہوجا ناہے لیں جب بک تماد علوم فیرے طور پر سیف کے میدان سے صاحت نہ ہوجا نئیں اور سالک جبل طلق کے ساتھ محقق نہ ہوجائے وہ فنا سے بہرہ ور نہیں ہوسکتا اور پرچیرت وجہل دائی ہے۔ اس کا زائل ہوجائے ہونا ممکن نہیں ہے اور ایسا نہیں ہے کہ معمی صاصل ہوجائے اور محبی زائل ہوجائے ماصل کلام یہ ہے کہ محال ہوجائے ور محبی زائل ہوجائے ماصل کلام یہ ہے کہ محال بھا باللہ صال کا میں نا دائی کی صالت ہونے کے بعد جہالت ہوجائے ہیں سالک عین نا دائی کی صالت ہونے کے بعد جہالت ہوجائے ہیں سالک عین نا دائی کی صالت ہونے کے بعد جہالت اور علی حرب ہے دو تو ہو ہے۔ اس میں عمل اور عین ایک دو سرے کے لیے میں شعور کے ساتھ ہوتا ہے ہوتا ہے اور یہ محال ہیں ہیں۔ اور یہ محال ہیں ہیں۔ اور یہ ہیں ہیں۔ اور یہ ہیں ہیں۔ اور یہ ہیں ہیں۔ اور یہ ہیں ہیں۔

شرح

سالک کوجب عالم امری طون محبّ ت این علامت فیاہے عروج نصیب ہوتا ہے اور اس بر اللہ تعالیٰ کی جمالی اور مبلالی مفتوں کا اِنعکاس ایر تو ، ہوتا ہے تو وہ ان صفات

= 3 ( YYY )= G = مے تصعف اور زنگین ہو کرفنا فی الصفات ہوجاتا ہے۔ اس مقام برسالک تزکیر نغن سے مضرف ہوکرالٹا تعالیٰ کی ذاتی محبّت میں مبلا ہوجا ہاہے مِحبّت ِ ذاتی کے مرتبع بين سالك كے بلے جال وجلال كى تتقاباص فتيں آپس ميں اس طرح متحد ہواتى ہیں کرسالک کوجمال عین مبلال اور حبلال عین جمال معلوم ہوتا ہے بینی د ولوص فیتیل س كو برا برنطف اندوز كرتى رتبتي بين كيونكة تزكيفِنُ كي وجه مسيفن انعام وإيلام اور راحث ألام سے بے نیاز ہوکر اپنے جبلی تقاصوں سے دست بردار ہوجا تا ہے اور جا او جالال كوالينے محبوب كے أفعال وصفات مجه كرمحبوب وم غوب بناليتا ہے۔ وہ ع بّت و ذآت رحمت وزحمت وولول كومحبوب كي عطائم بحد كر قبول كرمّا ہے اور كسس كے زديك كُ مُن مَا يَفْعَلُهُ الْمَحْبُوبُ مُعْبُوكِ مُعِبُوبِ مُعالِمِي محبوب ہی ہوتے ہیں ۔ لہذا جالِ وجلال کی خاصنیتوں اور انعام کی راحتوں اور ایلام کی مصيبتوں براس كي نظرنہيں طِي تل بلد محبوب ہي ہروقت بين نظر رہتا ہے۔ سالک كي الى كيفتت كومحبت ذاتيه سي تعبير كياجا تاب ادريبي كيفتت علاست فناس حضرت المرَرّ بانى قُدِّسَ بيُّرهُ فرمات بين كرجال وحلال كا إتحاد اورمحبّت ِ ذاتى كالحقق فناكى علامت بصاورفنانيان ماسوى التدسي عبارت بع يجب ك سالک سے سیننے سے میدان سے تمام علوم بورسے طور بیصاف نہ ہوجائیں اورجہل مطلق كانتفق نه بهوجلتے فیائے كا مل ماطنل نہیں ہوتی جہاں طلق در صل فیلتے مطلق ہی کا دُوسرانام ہے ۔ حافظ شیرازی علیہ الرحمہ نے فرمایا ۔ ۔ تواز سرائے طبیعت نمی روی بیرو<u>ل</u> كجا بحوكة حقيقت گذر تواني كرد حيرت وتبل سي مُراد اشيائے كائنات سے لاَعلَقي و خيرت وجهل بے خبری ہے جب کثرت ذکر اور فرط محبّت کے غلبے سے عارف اپنے محبوب حقیقی کے مشا ہدے میں ڈوب جا باہے اور محبوب کے موا



سب کچھاس کی نظرے پرسشیدہ ہوجاتا ہے ادر مرتبۂ احدثیت میں موہو کرتجاتی ہم حکو کا مشاہدہ کرتے ہو کو کھاتے ہو کے مرتبہ کا بکارہ جاتا ہے تواسی حالت کو حرت جہل کہا جاتا ہے لیکن میرست وجہل محمود ہے نہ کہ مذموم، اس کو صوفیا، کرام فنا منطق تا جہل کہا جاتا ہے لیکن میرست جی جہل محمود ہے نہ کہ مذموم، اس کو صوفیا، کرام فنا منطق است اس کے ایک مرتب ہے کہا تھا تھا تھا ہے گئے ہوں جہ جہتے ہی سیستوی اللہ سب اس مرست کے انرات و خمرات ہیں ۔ اکست کے اری معند کہ ور ون کے مطابق ان کے لیے افرائ کوری کی جاتی ہیں۔ اکست کے لیے افرائ کوری کی جاتی ہیں۔ الت کے لیے افرائ کوری کی جاتی ہے۔

#### مراتبين

صوفیارکرامنے مشاہرہ ذات کے بارسے میں تقین کو تمین مرتبوں مِ تُعَتَّيم فرايا ہے علم البقين الله تعالىٰ كى ان البيوں اورنشانيوں كے مشاهده كرنے سے مراد ہے جراس كى قدرت پر دلالت كرتی ہيں سالک كوغروج سے پہلے وعلم ا تاہے وہ علم ایقین کہلا تاہے۔ اس مرتبے میں وجُرُولِشری عنصری باتی رہتاہے اورسالک مِقام فنا تگ بنیں بینج سکتا۔ ان نشانیوں کے شہود کو سیرِ . ا فا قی کہتے ہیں اور بیسب کھر سالک اپنے باہر میں تلاش کر ما ہے تِصوّف کی طِطلَع میں اس کوسیر تنظیل تھی کہتے ہیں۔ م

بیمشا ہماہ چونکہ مقصود کی خبر نہیں دیں اور سوائے نشانی اور دلیل کے اس کا کچھ حصنورنہیں بخشا اس لیے دھوئیں اور گرمی سے مشاہدہ کی طرح ہے جو آگ کے دجود

ر ایقین سے حق تعالیٰ کی قدرت کامشاہدہ کرنے کے بعد حو مشاہرہ حق تعالیٰ کی ذات اور صغور میں عاصل ہوتا ہے عین ایقین کہلا آ ہے اور وہ مبن کے نز دیک سالک کے اسینے نفس میں ہوتاہے اس ليے کہا گياہے مَنْ عَرَفَ نَفْسَدُ فَقَدْ عَرَفَ زَبَ الْأَرْصِ نَ لینے نفس کو پیچان لیااس نے اپنے رت کو پیچان لیا،اس ذاتی شہود اور حضور کوسیر انفنی کہتے ہیں۔ اس کا نام نیٹرستدریھی ہے اس شاہدہ میں سراسر حیرت وجہل ہے علم كى اس مير مخبائش نبيل بية اور سالك متن عير وت رية و كيك كُلْيانه هُ یعنی عس نے اپنے رب تو پہنچانا اس کی زبان کونگی ہوگئی کا مِصداق ہوجا تاہے۔

سالک اس مرتب میں کمیل عروج سے وقت عالم وغرب کامشاہرہ کر اہے اس بيهاس كا وحود بشرَى عنصرى باتى نهيس ربتنا اورمقام فنلسئة طلق حساصل

aga(YYY) <del>P</del>@i ہوجا ماسیے۔ مرير المقال السيل يه مرتبه بيها دونول متبول سے مبندہے جب عارف فنا ک اسین کے ایک میں اللہ کے مقام میں لقا باللہ سے مقرف ہونا ہے اللہ اللہ میں اللہ کے اپنے ساتھ اور دِی بھیا ہوا ا وَن يُبِصِورُ ويعنى مجدس سناب اورمجدس ويحتاب كامرتبه مامل كركيتا بوتو فالمفطلق عاصل كرف كدياس كوح تعالى محص إبى عن يس ابك اليها وجود وموموب حقّاني عطاكرتا سي كمعار ف سحرا ورسينخو وي سيدر إني ياكر صحواور بوشياري مين آجانا ب اوراس مقام مين ملم اورعين ايك دورس كاحجاب نهيس رست بلكه عارف عين شاهره كي حالت ميں عالم اور عين علم كي جوالت ميں شاہده كرنے والا ہو ناہے یہ فنا کے بعد بقا باللہ كامرتبہ ہے اس مرتبے كو تخلق باً فَالاَق الله سے بھی تعبیر کیا جاتا ہے ہی مرتب و ایقین کہلا تا ہے جہاں عروجی مراتب کی تعمیل کے بعدعارف مراتب نزول كىطرف فيتعدمونا بصاس وقت اس كوالترتعالي كي ذات کاعلم اور مایوکی الله کاعلم دونون علم ماصل رہتے ہیں ۔ میں فریر مہم کیفین کیے اِن تینول مرسوں کو ایک مثال سے مجھام اسکتا ہے۔ مثلاً كونى شخص منبوط وكيول ادر قرينول سيديد بات جان ك ك أن يُرمِلا المعديم القين بداور الركسي وأكسي مبا موا ويكه و توبير عین الیقین سبے اور اگر خود آگ میں مل کرم جائے تو یہ فی ایفین سبے۔ من وعلمے کرمیش از جنیں جہالت عاصل شود از منن چنراعتبار فارج ست باوجود آن اگر علم ست ر خودست واگر شهو دست ېم درخو د واگرمعرفت ست يا



چرت نیز درخو دست تازمانیکه نظر در بیرون ست بے عاصل ست اكرجير درخو دهم نظرد كهث نته بالثذ نظراز بسرون بالكامنقطع مي بايد كهشود حصرت خواجه بزرگ قدس التدرية ه مى فرمايند كه ابل التد بعدار فنا ولقا هرحيه مي سبيند ورخو دمينيد وهرحب مى شناسند درخو دمى شناسند وجيرت ايشان در وُجودِ

حودست ترجمہ ، اور وہ علم جواس تسم کی جہالت سے پہلے حاصل ہو تاہیے وہ اِحاطر <sub>ا</sub>عتبار حریب سے خارج ہے ، کینی اعتبار کے لائق نہیں ہے، اس حالت کے باوجود اگر علم ہے تواین آپ میں ہے اور اگر شہو کہ ہے تو وہ می اپنے آپ میں ہے اور اگر معرفت یا حیرت ہے تو وہ بھی اپنے آپ میں ہی ہے جب نگ نظر ہا ہر کی اثبیار میں ہے کے عاصل دبیکار، ہے اگرچہ اپنے آپ میں بھی نظر رکھتا ہو۔ بیرونی اِشیار سے نظر بالکل منفقطع بوجاني حياسيئ حصرت خواجة بزرگ دخواجه بها والدين بقش بذبخاري قدس الله رِتَرَهُ) فرماتِته بین که" ایل الله ُ فنا ولقل کے بعد حوکچیو ویکھتے ہیں ایپنے آپ میں *ایکھتے* ہیں اور عَرَجُهِ بہجانتے ہیں اپنے آپ میں ہی پہچانتے ہیں اور ان کی حیرت اپنے وجود

# شرح

عارف دوقسم سي علم ركه تأسب . اولا مايوى الله كاعلم . ثانيا واست يحق تعالى كا علم - آپ فرملتے ہیں کم جوعلم جیرت وجہل سے پہلے عاصل ہوتا ہے اس کا کوئی اعتبار



نبیں کی نکہ ماہوئی اللہ کا وہ علم حوفاسے قبل ہے وہ تو ہراکی کو حاصل ہوتا ہے ایکن بے حاصل ہوتا ہے یہاں عارف کے علم سے مُواد وہ علم ہے جوعارف کو فن اور نسیانِ ماہوئی اللہ کے بعد حاصل ہوتا ہے اور وہ ذات جی تعالیٰ کاعلم ہے۔

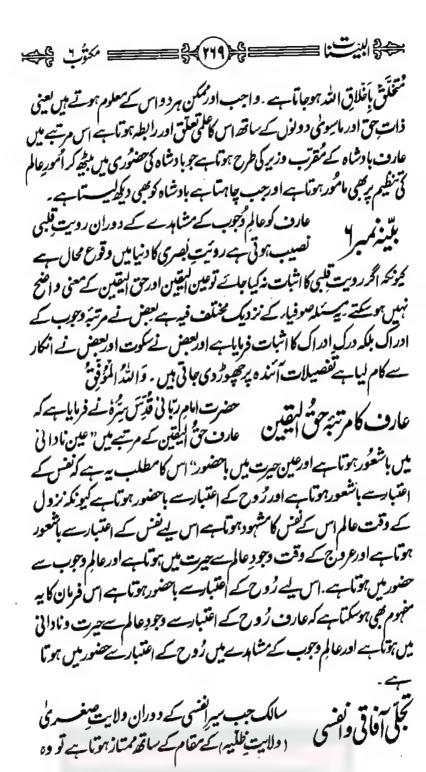
مايوى الله كعدما صلى موتاب اور وه ذات عن تعالى علم بعد.
مايوى الله كالمراب واضح موكه ذات عن تعالى كعلم سع عالم وجرب كامشاهده ما مني مرادب اورهديث الا تنتف كر قرا في النحالي النحالية المناهدة المرابع المراب

مین سر تفکر سے نہی وار د بے وہ نفکر فی الدّات ہے یا کیفیّت مثال اور تقدار کا تفکر ہے۔ یا کیفیّت مثال اور تقدار کا تفکر ہے بیس کوفارسی میں تفکرِ جو نی وجندی کہا گیا ہے عار ف جب فنا وبقا کی نزایس طے کر لیبا ہے وہ تفکر ہے کیفٹ و کم اور ادر اک بے چون کی صلاحیّت سے نزاز اجآیا اور یہ ژوج کا مرتبر کھال ہے جیسا کہ عالم ارواح ہے چُون ہے اور رُوحوں کوعی کم

ار و اح میں شاہدُہ کی دولت مصل تعلی اور مدیث نَفْتُکُرُّ مِسَاعَ فِهِ بَحَتْ بِرُحِیِّ کُهُ قِیکامِ کَشِیکَ فِی<sup>ع</sup> مِی لِفَکْرِسے مُرا ذِلْفَکْرِ ہے جِی ہے جس کو تفکر فِی الصّفات مجتمع ہیں۔

عارف کاتمرب مزول عارف کے مرتبہ زول کو دوسیں ہیں۔
و کالات ولایت کے صول کے دفت ہونا ہے جبکہ عارف کافنس ہیں۔
ہملا نرول عروج کے بعد نزول کرتا ہے اور اس کی روح عروج میں رہتی ہے۔
اس مالت مین نفنس مالیوکی الٹدکامشا عدہ کرتا ہے اور رُوح عالم وُجوب کے مشا ہدے میں مصروف رہتی ہے۔

و کو کالات برقت کے صول کے وقت ہونا ہے جبکہ عارف کا و وسر اور ول کرتے ہیں اور ہس کا و وسر اور ول کرتے ہیں اور ہس کا ایمان جو دونوں نزول کرتے ہیں اور ہس کا ایمان جو دونوں نزول کرتے ہیں اور ہس کا ایمان جو دونوں دوبارہ ایمان غیبی کے ساتھ تبدیل ہوجا تا ہے۔ اس مالت میں عارف





يوتخلى مى ديجة اسداين ذات مين ديجة تسهدنيز معرفت ماسيرت معى ابني ذات مين مي المنظركراب اوراس تخليس اس كي حيرت كى وجريد سه كدوة عالم وجوب كي ليكيف تخلی ہوتی ہے جوسالک کے عدم اور اک کی وجہ سے سبب حیرت بن جاتی ہے۔ اس کو تحل الفني كيت بين يسس مقام ميس الك وشش كرما ب كر على أفاتى روحي الفني كا فل ب منقطع بوجائے كيون كرجب ك تجلى فاقى منقطع نر بوجائے فاستے كالل

ماصل بهين ہوتی اورجب فنا ناقص ہوگی تربقا تھی ناقص ہوگی اس بيا كہ كہ بقالقدر فنا مواكر تى ہے اور فنائے مطلق وطلق فناميں فرق يہ ہے كرفنائے مطلق افناسے ا

ہے اور طلق فنا ، فنائے ناقص ہے ۔ فنائے طلق کیں سالک کو ماسوئی کانسیان تام بوجا ماسي اوراس كالطيفه الين مبدار فين كب يهنج جانا سي جبكم طلق فما ميس ايسا

نہیں ہوتا بمولانا روم ست بادہ قیرم مکیٹہ الزخمۃ نے فرمایا ۔ ۔ بے فنائے مطلق و کھب ذہب قوی تخصيري وصل دامحسيرم ثوى

واضح ہوکہ عارف کا پڑھہود ، سیر افشی کے دوران ولایت مِسغریٰ حبس کو ولايت خِلْيهُ هِي كَهُتَةِ بِينِ كَيْصُولُ كُو وَقَتْ ہُوٓا ہے ليكن حِسْ وَقَتْ عارِفْ كحالات ولايت ببوت سيمشرف بولب تواسيمعلوم بوتاب كمشهو دانسي بھی خلاا مطلوب سے ایک ظِلِّ ہے اورطلوب ابھی ما ورار کہے۔

# مطلوب فاق والشسس وراب

بصرت امام رّباني فَدِّينَ بِمِرْهُ نصصرت خواجَه بزرگ خوا خِيشنبندا وسي مخاري رضى اللهُ عَنْدُ كَا حِوْمًا يَبِلُدى قول نقل فرواً ما بسب إس مستعلوم موّ ما سبع دو نول بزرگ اس وقت كالات ولايت كے مقام میں تھے اور شہودِ انعنلی كو اصل اور مقصو د جانت تصلین اس کے بعدجب کا لات ولایت نیزت کے مرتبے سے النيت الله المرابع الم

مشرف موت توصفرت المام بالن في فعوالي مطلوب ورائد أفاق و إنفس است يعنى طلوب أفاق اور إعن سع بهت أسكه بهدا و رصفرت نواج نِقش بند أهر س يتره ف فرايا يه برچ ديده شدو و النسته شد آن بمرغيراست "يعني و كچه ديجها اور جانا گيا ہدوه سب مجه ع برہ ديد .

عب كارست اوّلا بربلا ومصيبت كه واقع من مين من شدباعث برور و فرحت مي شد و هكل مين من يويد مي گفت و برجياز أمّتِعهٔ ونيوية كم مي شدخوش مي آمد ...... و جمچنين اگر دُعام كر د از برائ و فع بلا ومصيب يقصنود از و ندر فع آن نُود بلكه انتثال امرا دعوني بود حالامقصود از دُعا رفع بلبية و مصائب است ـ

ترجمه: میتجیب بمعامله ہے کہ پہلے جو بلا ومصیبت بھی واقع ہوتی وہ فرصت نوشی گاباعث ہوتی مخی اور پرفقیر کس سن میز نیجید رکیا اور زیادہ بھی ہے کہا تھا اور دنیا وی ساز وسامان میں سے جو تجھ کم ہوجا آتھا اچھامعلوم ہوتا تھا اور پہنقیہ اِی تسم کی خواسٹس کر اتھا اور اب جبکہ عالم اسباب میں نزول واقع ہوا ہے اور اپنی عالم بی محاجی پرنگاہ پڑی ہے اگر تھ وڑا سامجی نقصان لائق ہوجا آ ہے تو پہلے ہی جھٹے میں البيت الله المرابع المالية الم

ایک قسم کارنج وغم پیدا ہوجا آہے اگرچہ وہ جلد ہی وُور ہوجا آہے اور کچو بھی باتی نہیں رہنا اور اس طرح اگر پہلے بیرعاجز بلا وصیبت کے دور ہونے کے لیے وُعا کو تا تقالوں سے بلا ومصیبت کو دُور کرنامقصو دنہیں ہوتا تھا بلکہ اس میقفہ وُ التٰہ تعالیٰ کے کم راُدعو فِن .... تم مجرسے مانگی کی میل و فرما نبرداری بجالا تا تقالیکن التٰہ تعالیٰ کے ماسے تقسود بلا وَں اور صیبتوں کار فع کرنا ہے ۔

شركح

سطور بالامين عارف كي وه كيفيات بيان كي كئي بين بجوعروج وزز ول محمراتب میں سیرکے دوران ظاہر ہوتی ہیں۔ اس لیے سالک عروج کے وقت ہو نکہ عالم ورو كى طرف مُتوخِه بوتاب اس يه دنيا و ما فيها سه بيغ روب في كر موجا تا ہے كس مقام كين دنيا وي صائب وتكاليف اس كيديدعا لم وجوب كي طرف مزيد توجداور ترقى كأسبب بن جاتى ہيں بيكن نزولى مرتبے ميں چينكه عالم اسباب كي طرف مُتوجه ہوتا ب اس بيد بلا كوبلا ا ورصيبت كومصيبت مجمتاب الى طرح عارف جب عروج كوقت دعاكر استواس كالمقصد دعلسه دفع بلانهين موتاصرت الله ك المعرف و المعرف الله مجد سه مانگو "كيميل مقصود الوتى ہے ۔ اس وقت اس كا حجان بيلهوتا بيء كمرانبيار كرام كي دُعا وُل كامقصدهمي دفع بلا ومصيبت نهيي بوّاتها بلكه وه بھی صرف تعمیل حکم کے کیلے دُعائیں مانگتے رہے ہیں لیکن عارف کو نزول کے مرتبے میں یہ امر مجھ لیں اجا تاہے کہ اہسبیار واولیار دفع بلا ومصیعبت یجیلے جو دعائيں ماننگتے ہیں اُن کامقصد صرف تعمیل حکم ہی نہیں ہوتا بلکہ واقعیّا مصائب و تكاليف رفغ كرانا تجمي تقصود جوتاب كيونكه عالم سباب بين وام ص جيز كيحتاج ہیں صحوا در نرول کے مرتبے ہیں خواص ہی اس کی امتیاج رکھتے ہیں کیونکہ اُن کی نظرعالم اسباب پرہوتی ہے اورعالم اسباب کا یہی تفاصل ہے۔



نمئوبائیرِ عارفیالل<sup>ت</sup> زار **هیکرا جی ب**الدر ہو*گائیڈٹالیز* 



موضوعك

ىيىورارىغىكاتىفقىيلى بىان مناہدات رۇھانىيە، كابرارىغىقىت ندىتى

፟ፙፙፙ<del>ፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙ</del>ፙ

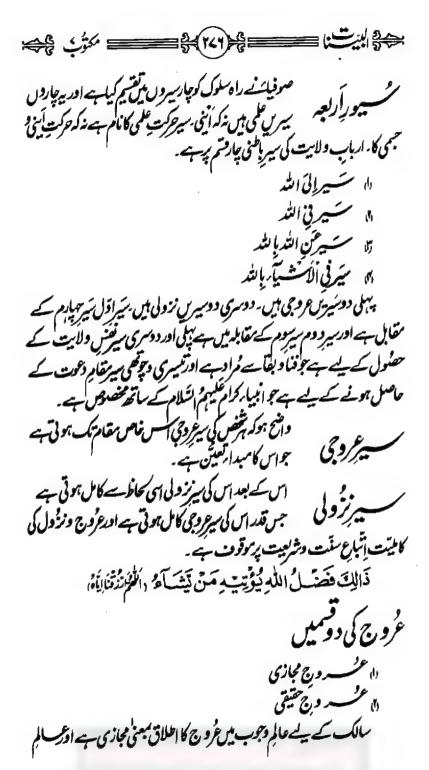


# مڪنوب ۔ ٧

من عرضداشتِ کمترین بندگان احمد آنکه تقامیکه منگون فرق محدو بر در و خود را بطریق عُروج و را بطریق عُروج در آنجا می یافت و آن مقام بحضرت خواجهٔ بزرگ و ترکس فرسی الله می یافت و آن مقام بحضرت خواجهٔ بزرگ و ترکس اختصاص داشت بعب داز در جهان مقام یافت . در جهان مقام یافت . ترجمه بخشور کالیک محمترین فادم احمد عرض کرتا ہے کہ جمعنا محمد دینی عرش کے اُو پر ہے ابنی رُوح کو بطری عُرق کے اُو پر ہے ابنی رُوح کو بطری عُرق کے اس مقام میں باتا تھا اور وہ مقام صفرت خواجهٔ بزرگ یعنی صفرت خواجهٔ بزرگ لیسی صفرت خواجهٔ بزرگ لیسی مقام میں بایا تھا اور وہ مقام صفرت خواجهٔ بزرگ لیسی صفرت خواجهٔ بزرگ لیسی مقام میں بایا ۔

### شرح

حضرت امام رتبانی قُدِّش سِرہ نے فَوق العرش عُرُوج کے دوران پیش آنے کیا ہے۔ عجیب وغریب مشاہدات کا ذکر فرمایا ہے۔ بیشنا ہدے سالک کو صب مراتب سپر عُرُوجی وَنزُ ولی کے دوران حاصل ہوتے ہیں۔ رُوح کو عُرُف کے سے طراقی برج سپررُ وحالیٰ میسر کی ہے وہ سیمری ہوتی ہے نہ کہمی ۔ میسر کی ہے وہ سیمری ہوتی ہے نہ کھم ی



فق بخت بمین بنمال وغیر بایینی اطراف و اکناف بهیں رکھتے۔ نیز عالم امکان میں عُرُوج کے وقت سالک عاشق ہوتا ہے اور عشق اس میں سیر کرتا ہے جبکہ عالم وجوب کی سیر کے دوران سالک معشوق ہوتا ہے اور عاشق اس میں سیر کرتا ہے۔ اس لیے سالک ببیب نیبانِ عالم اپنی ذات میں عشوق کے طبور کے لائق ہوتا تا ہے اور عالم وجوب کے کھالات اس میں ظاہر ہونا شروع ہوجاتے ہیں۔ رو تو زنگار از رُخ خود یا کے گئ بعد ازاں آن نور را ادر اکس کئ

جب سائک علم الله الله وصفات الله کی طرف بیر کرتا ہے تو ترقی کر کے ہوئے اپنی سے الله کی طرف بیر کرتا ہے تو ترقی کر کے ہوئے اپنی اسل کو پہنچ کر اپنے آپ کو اس میں فانی پانا ہے تی کہ اپنا کوئی اثر اور اپنی کوئی اصلیت نہیں پاتا اور صرف وجو دمیں اس کی کامشاہدہ کرتا ہے ہیں اسس دائرة طلال کی میر کو اسطلاح صوفیار میں سیر اِنی اللہ کہتے ہیں اور بہی دائرة ولایت صغر لے داور یہ کا دائرہ ، ہوتا ہے۔ اس دائرة ولایت میں توضیل سیر اَبدُ الاَ بَا دَکمتِ مَن اَبْرِی وَلایت مِن کُرت ہوتا ہے۔ یہاں پر فنار کلی نہیں ہوسکتی۔ شخص آئی سیر کرتا ہے جہنا کہ اس میں اس کا حق ہوتا ہے۔ یہاں پر فنار کلی ماصل ہوجاتی ہے اور حضرت مولانا روم سست ِ با دہ قیوم رَحْمَۃُ اللہ علیہ کے مضعر کا یہی مفہوم ہے۔

'۔ ہفت صب ہفتاد قالب دیدہ ام ہمچوسبزہ بار ہا روسیک دہ ام یعنی میں نے سات سوستر قالب د ظلال کے پروسے، دیکھے ہیں اور ران میں فنا ہوکن سبزے کی طرح بار ہا گا ہول ۔

اس كے بعد اگر الله تعالیٰ كا نضل سالك كے شامل حال ہو مستيرفي التلد جائے اور مقت و شربعيت پر استقامت نصيب ہوجائے توسالک کو ترقی کرتے ہوئے اسماً وصفات کے دائرہ میں رج خلال کے دائروں کی صل ب، واخلومتير موجائة توسالك الله تعالى كي صفات اوراسمار وسن يونات و اِعتبارات وتقديسات وتنزييات ميس يركرتاب يس وجوب كان مرتبول ميني اسمار وصفات وغير إلى مرجو كركت علميه اسيملكي واقع بوتى بداس كوسيرني التدكهة ہیں اور بیرمیرولابیت کبری میں واقع ہے جوانبیا رکرام میٹم انسکام کی ولایت ہے۔عالم امرے پانچوں تطیفے اس دائرہ کی انتہار ہیں اور پرسیراس مرتبے کہ بہنج تی ہے کہ جس كوكمى عبارت الثاري بالمسيبان بهي كياجاس كاراس سركانام تقارها كياسي بيد سيرآفاتي اور نفشًى سير العيني سيرالي الله مص منزلون دُورا ور ورار الورار سيدير آفاتي كو سيرالى النداورسير إفسى كوسيرتي التدكهنا ففنول سب كيونكه إهن محي أفاق كي طرح وائره امكان ميں داخل سبے تو اس صورت ميں دائرة إمكان كا قطع كرنا ناممكن ہوگا اور اس بميشكى ناأميدى اورنقصان كيسوانجهماصل نهروگا نرتهبي فناثابت بموگى نه بقاتصترر كى جاسيح گى يھىرخداتعالىٰ كا وصال اور إتّصال كيسے ہوگا اور اس كا قرُب وصال كيا حاصل ہوگا۔

۔ سچوں توئی کے یار گرود یا رِ تو تانسب شی یار ہاسٹ، یارِ تو یعنی جب تک توہے یار تیراکب یار ہوگا تو اپنے آپ کوفنا کر دیے لیں جب تونہیں ہوگا تویار تیرا یار ہوگا ۔

یهی وه مقام ہے کہ جہال نفس کو اِطمینان عاصل ہوتا ہے اوراسی مقام پر شرح صدر ہوتا ہے اور سالک حقیقی اسلام سے مشرق ہوتا ہے اور نفسِ مطمئة صدارت کے تخت پر بیٹھتا ہے اور رصا کے مقام کی جانب ترقی کرتا ہے۔ اللہ تعالی فرما ہے۔ اَفَ مَنْ شَرَحَ اللهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْكَامِ فَهُوَعَلَى نُوْسٍ مِنْ زَبِتِهِ لَهِ

ترجر، بس و فضص كاسينه الله تعالى نه اسلام قبول كرنه كه يد كهول دياوه ابينه رب كي طرف سه نور برب يعني ايمان كي روشني ركه ما ب اوراس كواسلام كي تعتت كايقين آجا ما سه د والله الموفق

سیر فی اللہ کے تمام کرنے رسالکین کے دوگروہ ہو سیر من اللہ ماللہ جاتے ہیں۔ بہلاگروہ سہلکین کا ہوتا ہے لینی وہ لوگ جو ذات باری تعالیٰ کی محبّت میں فنا ہو گئے اور حبالِ الہی کے مشاہدے میں ہی رہ گئے ہیں۔

دُوسِ اَگُروہ راجین اِلَى الدَّعوۃ کہلا ہے۔ ان کو واہب تقام قلب بیں لایا
جاتا ہے اور اللہ تعالیٰ کی طرف سے کم ہونا ہے کہ بیرے بندوں کو اسی راستہ
سے جس سے کہ تم خود آتے ہوئیہ ری طرف لاؤا ور ظلوق کے ساتھ میں جول رکھو
تہار امشاھدہ اب بند نہ ہوگا۔ پہلے سی عاشق کی معشوق کی طرف تھی اور آ بہت کریم
قُل اِنْ ہے نُہُ ہُ نُہ ہِ بِیُونَ اللّٰهَ فَا اَبِیعُونِ فِی عاشق کی طرف ہے اور آ بہتہ مذکورہ
معنرت جِی سُجانہ ملحشوق اب میمعشوق کی عاشق کی طرف ہے اور آ بہتہ مذکورہ
سے و و سرے مُر بی نی بیا ہے کہ م اللہ کہ سے سٹر ف ہوجا آ ہے کہ و کہ میں اللہ علیم میں
اللہ تعالیٰ اپنامشاھدہ اس کو دیتا رہا ہے تو اس حالت میں سالک ہو دی کا ہونوں
باعث مشاھدہ ہی ا جے ہی اس می حصاحب و ولت کو جب دنیا کی طرف لانا بیا مورف کو اسے نکا لانا بیا مورف کو اسے نکا لانا بیا مورف کو اسے نکا لانا بیا مورف کو اس کے وجو و شرکھنے کی برکت سے نفسانی اندھیروں سے نکا لانا بیا اور خلوق کو اس کے وجو و شرکھنے کی برکت سے نفسانی اندھیروں سے نکا لانا بیا اور خلوق کو اس کے وجو و شرکھنے کی برکت سے نفسانی اندھیروں سے نکا لانا بیا اور خلوق کو اس کے وجو و شرکھنے کی برکت سے نفسانی اندھیروں سے نکا لانا بیا اور خلوق کو اس کے وجو و شرکھنے کی برکت سے نفسانی اندھیروں سے نکا لانا بیں اور خلوق کو اسے نکا لانا

چا ہیں تواس کو صوفیوں کی صطلاح میں سیر عُن الله بالله کے طریقے برجہان کی طرف ہے آتے ہیں اور اس کی توجہ تمام تر مخلوق کی طرف ہوتی ہے تیکن ہے تو مخلوق كے ساتھ محتی کم کرفتاری نہیں ہوتی اُگر چیا ہویں وہ مُبتدی کا شر کیب حال ہے سکین گرفتاری اورعدم گرفتاری میں بڑا فرق ہے اورخلق کی طرف توجہ کرنا اس متھی کے حق میں ب اختیاری بے اور اس میں وہ اَبنی رغبت کچھ نہیں رکھتا ۔ ملکہ اس توجہ میں لندُتعالیٰ كى رصنامندى بد - برخلاف مُبتدى محكداس ميں اپنى ذاتى رغبت اورحق تعالى كى نارصامندی ہے دیں اس سریں سالک علم اعلیٰ سے علم اخل کی طرف اور اسفل سے افل تركی طرف رجوع كرتاب حتی كدواب ممكنات كی طرف ریجوع كرتا ہے۔ يدسالك كى تۇتقى سىرىت جورجوع كے بعد اشيابىي ميار بالتد يداورسراقل بين جراشار كي علوم بالكل مك كئے تھے اب بھريكے بعد دلگرے ماصل ہوجاتے ہیں اور سالک بفا ہر كل طور پر مخلوق كيسانه بلافبلا رتبلها وراكر جبطاهريس اس كيتمام افعال عوام كي طرح دنیا کی شغولی میں گذرتے ہیں <sup>ہ</sup>ین وہ اصل میں ا*س شعر کا*مصداق لہوتا ہے۔ از درُول شوامت نا وز برُول بیگانه نوشس ایس بنیں زیبار وشس کم می بوَداندرہب ں يعنى ايينے باطن ميں ذات حق سے واقفي ہوجا اور ظاہر ميں بنگايوں کی طرح رہ اور اس فتم کے طریقے والے لوگ دنیا میں بہت کم ہوتے

کٹر دیجھاگیاہے کہ دیہا توں کی یانی جرکز لانے والی عوتیں کئی کئی سٹکے اوپرینیچے سر پر دکھ کر بظاہر بے تکفٹ ایک ڈوسری سے ہائیں کرتی ہوئی علی جاتی ہیں کیا مجال جوان کی دفتار میں فرق آجائے یا مشکوں میرصقیم کی خبش ہوا و تصلیکیں کیونکہ دل کی توجہ پورسے طور پرشکوں پرنگی دہتی ہے اور یہ توجہ ان میں راسخ ہوکران کی طبیعت المنيت المعالي المعالج المعالج

بن جاتی ہے۔ یہی مال سالک کامل کی توجہ کاحق کی طرف ہے کہ وُنیا کے ساتھ تھی رہتے ہیں اور حق تعالیٰ کی طرف تھی لپری طرح متوجہ رہتے ہیں اور آبیت مُنب ارکہ رِجَالَ لَا نَصُلِهِ مِنْ فِيمَارَةٌ وَكَا بَنْ عَانَ فِي صَلَى لِهِ اللّٰهِ انہی کے عال بر صادق آتی ہے۔

ودران وقت چنان تخیّل گشت که این لم بتمام از عنصر مایت وفلکیات بته فروزت

نام ونشان ازان نماند وچن درآن مقام نبودند إلا بعض از اولیار کبار این زمان که تمام عالم را بخود در جائے مقامے شرکی یا بدچرت دست می دید که با وجود بیا برگانگی تمام خود را بایشان می بسیدند الغرض ما لتیکه گاه گاه وست میداد که دران نه خود میماند و نه عالم نه درنظر چیزسے می آمدنه درعلم حالا آین حالت تم ه است و وجود خلقت عالم از دید و درانش برآمده و

ترجمه: اوراس وقت به بات خیال مین آئی که بیرعالم سارے کاساراغنصر پات و فلکیات سے نیچے علا گیا ہے اور اس کا نام ونشان باقی کہنیں رہا اور تو نیکھ اس مقام میں معجب اور کوئی نہیں تھا اس وقت تمام عالم کو اینے ساتھ لیک میں عجبراور ایک ہی تقام میں شرکی پاکر ہبت جیرت عاصل ہوتی ہے کہ بوری بوپی

جه البيت الله المراكبة المراك

بے کا نگی کے باوجود اپنے آپ کوان کے ساتھ دیھتاہے فرضیکہ وہ حالت جو کجھی کھی حاصل ہوتی تھیں کوئی چزاتی اور نہ عالم نہ نظر میں کوئی چزاتی تھی نظم میں اب وہ حالت دائی ہوگئی ہے فبلقت عالم کا وجود دیدود انٹس دیکھنے وجاننے سے باہرکل گیا ہے۔

### شرح

سصرت امام رّبانی عکیّه الرّمتہ نے اس کتوب میں عجبیب وغربیب مشاہرات رُوعا نیہ سبان فرمائے ہیں حج عرشس کے اُوپر لطر بیّ عروج رُوحانی سُیر کے دُوران سامنے آئے۔

#### مشاہرات ُرقعانسیہ

اس کی دو وجہیں ہوسکتی ہیں۔

پہلی وجہ یہ ہے کہ اس و قت بدن رُوی انعکاس کی وجہ سے رُوح کا محکم اختیار کر بچاتھا اور بقول صوفیار کولم آنجسکا دُکَ اَرْ وَالحیکَ بدن پر رُوح کا غلبتھا۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ دُوران عورج سالک کی قرت بنیالیہ کو لیے معلوم ہو تا ہے کہ اس کا بدنِ عنصری هی اس کے ساتھ پرواز کر رہاہے ۔ محققین علم ار وصوفیا کے زدیک سیرِ بدنی سٹرغا ثابت ہے ۔

حضرت خواجه شند عکید الزممت کے اس مقام کے ساتھ اختصاص کا مطلب
یہ ہے کہ آپ کو اس مقام کے ساتھ ایک خاص علی اور اِنصابای تعلق ہے اور

اس تقام کے انوار و تحبیات کا آپ پر خاص پر توہے پیطلب نہیں کہ آپ کا عراج

اسى قام كى محدودب اوراس سے آگے آب كوغبور ماصل نہيں ہے۔ اس میں آپ نے سارے عالم کو نیچے جاتا ہوا دیجھا اس کی وجربيب كرسالك جب بلندلمي كي طرف برواز كرما سي تو عالم امکان اس کو بیچے جا تا ہوا دکھائی دیتاہے جتی کہ آننی دُوَرعیلًا جا آسے کھ سالک کی نظرمیں اس کا نام ونشان تھی ہا تی نہیں رہتا ۔ أي في مشاهده فرما يا كداس تقام ما يعض اوليات كبار بحصوا اوركوئي نهين تصاليكن اس وقت آب تمام عالم كواپنے ماتھ ايك ہى عگراورايك ہى مقام ميں شريك پاكر بہت جيرت ميں بسكتلا ہوئے۔ اس کامطلب یہ ہے کہ وج کے واقت آپ نے اس تقام رپرو لئے بعض اولیا کرام کے کسی کونہیں و کھالیکن زول کے وقت آپ نے تمام عالم کو اپنے ساتھ ایک ہی جگداور ایک ہی تقام میں شرک یا یا جیرت اس بیے ہوئی محرفیری بے گانگی کے با وجود لوری بگانگی کیسے ہوگئی جمیز تحرسالک کاعروج سے وقت عالم تے متن منقطع بوجا ماسيه اورنزول کے وقت سالک اگرجیہ عالم کے ساتھ ہو ماہے لیکن عالم مسقلبتي عتق نهيس موتانعيني اس كا ول كرفقاري عالم مسيطفوظ رببتا بيدا ورسالك ليس مقام برِباہمہ بے ہمہ ربعنی سب کے ساتھ اور سب سے جُدا کی کیفیت سے سرشار

حضرت مولانا عبدالرحمان جامی علیه الرحمة فرمات بیں : - الہی ہمب را بمن بدخو کئن رُوئے مرا از ہمب بھیٹو کئ اس کے بعد آپ نے فرما یا کہ حوجالت کھی رہتی تھی اب

چوتھامشا ہدہ وہ دائی ہوگئی ہے۔آپ کا یہ فرمان عروج کی ابتدائی مالتوں مشتل ہے بینی سالک کو ابتدائے عُروج میں مجمی عالم کانسیان ہوجا ہاہے اور کھی پھرشہود حاصل ہوجا تاہے۔لیکن جبء دج محمل ہوجا تاہے ترنسیانِ عالَم دائمی ہوجا تاہے بعیٰ حب تک سالک دعوت خِلق کے بیٹے زُول نہیں کرتا عالم کے علم تخلیق اور شہودسے فارغ رہتاہے۔

رِّفَا قَا نِمَا رِسْتُ كَرِّوصُنومُ يَكْزار دَ كَهِ مَقَامِ بس عالى نمايان شده واكابرار بغِيْقشبنديه

را قَدَّسَ اللهُ اَسْرَارَهُمْ دران مقام دید ومشارِخ دیگریم ش سیدالطائفه وغیره در اسجا بُودند و بعضے دیگر از مث اسخ بالائے آن مقام بهتنداما قوائم آنرا گرفته نشسستراند بعض بایان عملی قف اورت دس جرایتهم وخود را بسیار دور ازان مقام یافت بلکه مناسبت بهم ندیدازین قعسہ اضطراب تمام پیدائش زدیک بودکه دلواند شده برآید واز فرط اندوه وغضه قالب بهی کند چندگاه برین بنج گذشت آخر شروخهات علیته حضرت بایشان خود را مناسب آن مقسام دید .

ترجمه ؛ اتفاقاً دیعنی ایک دفع جبکه میں دھند کے شکرانہ کی نماز پخیتہ الوُعنو ، اداکر رہا تھاکہ ایک بہت ہی ملبند مقام ظاہر ہوا اور مشائخ نقش ندیہ قدّش لیڈا سراھم میں سے چار بزرگ مشائخ کو اس مقام میں دکھا اور دُوسر سے شائخ مثلاً سسستیڈ الطائف وغیرہ کو بھی اس مقام میں یا یا اور معض دُوسر سے مشائخ اس مقام سے اُوپر ہیں لیکن

اس کے یا بوں کو کیڑے ہوئے بیٹھے ہیں اور عض اپنے اپنے درحبرے مطابق اس مقام کے نیچے تھے اور میں نے اپنے آپ کو اس مقام سے بہت وُور یا یا۔ بلكه اس مقام كے ساتھ كچھ مناسبت بھی نہیں دکھی اس واقعہ سے میں نہایت بے جین وبے قرار ہوگیا۔ قربیب تھا کہ دیوانہ ہو کرنکل جاؤں اورغم وعضتہ کے باعث ایبنے صبم کوجان سے خالی کر دوں ۔ کچیے وقت اسی حالت پر گز را آخرکارآپ كى بلندتوبتهات لسے اپنے آب كواس مقام كے مناسب ديكھا۔

شركح

ايك اورمشامد معين آب نيمشاريخ نقشنه نديه ایک اور مشاہدے ہیں اب ہے سال اکا براً ربعب مشتبند ہیں ۔ قدش الله اُسْرار هُمْ میں سے چار بزرگوں کو ایک نهايت مبندمقام بي يا يصنرت علّام محدمرا دمني احمةُ الله عليهُ عرب محتو بات فرمات بین که شایدان چارسے مُراد

الاحضرت نحواجرً جهان عبب رائخان عجدواني » تصنرت خواجرستيد محتربها والذير بقشنبذ نجاري

ربى حضرت خواجه علاؤالدين عطآر

٨، تصنرت خواجه مبيدًالله احرار رحمهُم الله تعالى بين ليكن حضرت خواجهمولانا نوراحم دنقشبندي امرتسري رحمته التدعليمحشي مكتوبات نے تحریر فرمایا ہے کو میں نے اس قلمی شخر کے حاشیر برجو کہ حضرت امام رّبانی محبد رّ العن ثاني رحمة التعطيه كروصه عاليه برب لكها بهوا ديكها سع كهان اكابرأيعه نقث بندیه سے مُراد ؛

ا منحضرت نواحب لقشبند بخاري

٢ حضرت خواج مخستديارسا

م حضرت خواجه علاؤالدِّين عطار م حضرت خواجه عبيدُ الله احرار رحمهُم الله تعالى بي ( واللهُ وَعُكُمُ ) حضرت امام ربّا في قُدِّسَ سِرُّهُ فرمات بي دين سند دوسر سيمشا تخ محالاً و

ريدالطائفة صنرت خواجرمبنيد تبدا دى عليه الرحمة كوهبى اس عام يل يا .

مست الطائفة مست منیت البالقاسم اور لقب قواریی، زجاج اور خزانیه قواریی، زجاج اور خزانیه قواریی، زجاج اور خزانیه قواریی، زجاج اور خزانیه قواریی اور زجاج اور خزانیه قواریی اور زجاج خرد که ایست کیا کرتے تھے اور خزاز (بخائے معجمہ وزائے مشددہ) اس وجہ سے کہتے ہیں کم خرکے پولے کاکا مکرتے تھے کہاجا تا ہے کہ آب کی اصل نہا وندسے ہے آب حضرت خواجر بری نظلی قریب کر خراج کا جا جا جا کہ جا جا اور خلیفہ ہیں۔ یہ معیم میں مسال می اسلام بھیت نقش نبذیہ کی سندانصال سے اعتبار سے آب اکا برین مشارک نقش ندید ہیں ہے مزاد کے متصل نقش ندید ہیں۔ آب کا مزاد صفرت بری مقطی سے مزاد کے متصل بغداد شریب کے حزاد کے متحسل بغداد شریب کے حزاد کے حزاد کے حزاد کے کہا میں واقع ہے۔ دراقم الحروث کو حاصری وزیارت کی

سعادت حاصل ہوئی)۔ وَالْحَدُدُ لِلّهِ عَلَى ذَالِكَ

ہرس شاہرے بیر بعض اولیا رکو بعض دو سرے اولیا رکوام سے اُونیے مقام

پرس شاہدہ فرما نا ایک دو سرے برفضیلت مِطلقہ کی دلیل نہیں کی دیکھمکن ہے کہ

نیجے مقام والے اُوپر والوں سے علوم و معارف میں زیادہ بلند ہوں وَاللّهُ اِنْکُمُ سِب کہ

سعیرت امام رَبّانی کے اِضطراب کا سبب بیعلوم

معنرت امام رَبّانی کے اِضطراب کا سبب بیعلوم

ہوناہے کہ ایب نے جب دیکھا کہ اتنی بلند اِنتھا کہ اس کے مرتبون کی جنیا مارف

کے باوجود ابھی کس ہیں اس بلند تھا میک رسائی حاصل نہیں کر سکا تربی غیا مارف

کے باوجود ابھی کس ہیں اس بلند تھا میک رسائی حاصل نہیں کر سکا تربی غیا مارف

کے اوجود ابھی کس ہیں اس بلند تھا میک رسائی حاصل نہیں کر سکا تربی غیا مارف

کے اور جود ابھی کس بین اس بلند تھا میک رسائی حاصل نہیں کو سکا تربی غیا مارف

کا ہمام حصود ہوتا ہے اور جب وصل کی منزل دُورلِطراً سے توعاد دیکا اُن مطراب

ایک فطری امرہے کی تھوٹا وقت گزرنے کے بعد آپ کو صنب خواجر باقی باللہ فلز کر میں اور کھی اور اضطراب ختم ہوگیا۔ والحکے مدد بللہ علی ذالات اس وقت آپ بریک شف ہوا کہ بیعلوم و مراتب صنب سیندنا علی المرتضلی صنی اللہ تعالی عنه کا وہ فیصن تھا جس کے تعلق ایب نے صفرت امام ربانی قایس سرہ کو واقعہ میں فرمایا تھا۔ "آمدہ ام تا تراعلم سموات تعلیم کئم یا بعنی میں مجھے آسمانوں کا علم سمانے آیا ہموں ۔

من وگرچنان ظاهرسینود کداخلاق سسیئه ساعت فساعت می برآیند بعضی در رنگ دُود برن رنگ برشت از وجود می برآیند و گاسه در رنگ دُود برن می آیند در بعضے او قات میخیل میشود که تمام برآمده اند در نمانی الحال چیزے دیگر باز ظاہری شود و می برآید ۔

ترحمد ؛ دوسرے بیکدالیا ظاہر ہوتا ہے کہ بُرے افعال ق لمحد بلمد نسکتے جاتے ہیں ۔ بعض دھاگے کی طرح وجو دسے نسکتے ہیں اور بھی دھونٹیں کی طرح باہر نسکتے ہیں بعض اوقات بیخیال ہوتا ہے کرسب کل گئے ہیں چرکسی وقت کچھواور ظاہر ہوتا ہے اور باہر کلٹا معلوم ہوتا ہے۔

شرح

جب سالك برصفات الهيدك ألذار وتجليات وارد موت بي تووه

افلاق حسنہ مستخلق ہوجا آہے۔ بُری عادیں اوربشری کثافتیں اس کے وجُولے افکا ق حسنہ مستخلق ہوجا آہے۔ نکل جاتی ہیں جس فدر اُری عادّ ہیں جورہوتی جاتی ہیں جصنرت امام رہانی فُدس بِنَرہ نے بُری عادتوں کو تھی دھا گے اور تھی وھوئیں کی طرح مشاھدہ فرمایا بمطابق حدیث

تزکیفنس کی منزل میں اکثر اولیار کرام سے ہی قبم کے مشاہدات منفول ہیں۔
محتوب ہن کے آخر بین صفرت امام ربانی قُدس سِر ہنے سے
جندسوالات اپنے مُرشد راحی حضرت خواجہ محداثی باللہ دہلوی رحمۃ اللہ عکمیہ کی خدمت اقدس میں جندسوالات بیش کرکے ان نے جوابات طلب فرمائے ہیں ممکن ہے کہ صفرت خواجہ محدباتی باللہ دہلوی رحمۃ اللہ علیہ نے ان کے جوابات اللہ محدبات ہوں کہ میں ارشا دفرمائے ہول کین راقم احروت کی نظر سے ابھی مک نہیں گزرے دواللہ میں ارشا دفرمائے ہول کین راقم احروت کی نظر سے ابھی مک نہیں گزرے دواللہ میں ارشا دفرمائے ہول کین راقم احروت کی نظر سے ابھی مک نہیں گزرے دواللہ میں ایک میں اس کے موال کین راقم احروت کی نظر سے ابھی مک



نحقُب کنیهِ عارف ِاللّٰتِ وَاجِهِ مُصِلِمُ الْجَوْبِ إِلَّهِ مِلْمِالِمِيَّةِ مِنْ الْجِرِيِّةِ الْمِلْمِيِّةِ الْمِلْمِي عارف ِاللّٰهِ صَرْبُولِجِهِ مُصِلِمُ لِلْمِجْ لِمِنْ الْجِرِيْلِيِّ الْمِلْمِيِّةِ الْمِلْمِيْلِيِّةِ الْمِلْ



موضوعك

مئلهانتطاعت مع الفعل ، مصطلحات تعالى بندية مئله صنا وقدر كانفصيلي مبان ، مئله صفات برى الى كابيان



# مکتوب ۔ ۸

منتن که به تو آورده اند و بقا بخشیده اندعوم عنسه بیج و معارف نادره غیر متعارف به بتواتر و تو الی فاض و وارد اند اکثر آنها به بیان قوم و اصطلاح متداول شان موافقت ندارند برحب از مئله و صرت وجود و توابع آن گفت به اند در اوائل بآن حال مشرف ماخست به اند و شهود و حدست در کشرت میشر شد ازان متقام بدرجاست بالا بردند و انواع عموم درین ضمن اِفاده فرمودند .

رهبه ، کم ترین فادم احمد عرض کرتا ہے کہ جب سے اس فاکسار کو صخوبیں لاتے ہیں اور بھاعطا فرانی ہے جیب وغریب علوم و معارف جریب علوم و متعارف نہ تھے ہے در پہلے علوم و معارف قرم و صوفیائے پر ولیسل فائفس و وار دہور ہے ہیں۔ ان ہیں سے اکثر علوم و معارف قوم و صوفیائے کرام ، کے بیان اور ان کی مروجہ و عمل اصطلاح کے ساتھ موافقت نہیں دکھتے بمسکد و صدت الوجود اور اس مے شعلقات کی سبت جرکجھ ان صفرات نے بیان کیا ہے اسس فاکسار کو اس حال سے ابتدار ہیں ہی مشرق کردیا گیا اور کشرت ہیں وصدت کا مشا بدہ فاکسار کو اس حال سے ابتدار ہیں ہی مشرق کردیا گیا اور کشرت ہیں وصدت کا مشا بدہ

ماصل ہوا پھراس تقام سے کئی درجے أو پر الے مئے اور ہست منمن میں کئی ستم کے علوم کا افادہ نصبیب ہوا۔

#### شرح

حضربت امام رّبا نی مجد دالف نانی قدس ستره انبحانی فرمایت میں کرحب سے مجھے م اوربقا نصيب بوتي ايسي عجيب وغريب علوم ومكارف فاكفن اور وار دبورس بي كان مي سي اكثر صوفيار كى مرقعه إصطلاح كيم ساته موافقت بهي ركهته بيا ل مرقح إصطلاح سي آب كى مراد وحدت الوجودكى إصطلاح بيصطلب بيسب كم یر شنے علوم و معارون صوفیائے ویودیدی اصطلاحات کے ریکس ہیں۔ آپ فرماتے بهی که وحدیث الزجود اور اس کی تعلقات کے علوم ومعارف سے توابتدار میں ہی مشرف كردياكيا تفااس كع بعداب فقير كواُوپر كه ورجات پر ب جايا گيا ہے جہاں كئ قسم كے نئے علوم ومعادف جاصل ہوئے ہیں جوصوفیائے وحدث الوجود كے علوم و معارف سے بہت بلندہیں۔ اگرچر بعض پہلے بزرگوں نے اس تم کے معارف کو رمز و اجمال کے سب تھ اشارتا بیان فر مایا ہے سیسکن ان معارف کی صحت ودرستی پرظاہر شرعیت اور اجماع آبل سنت گواہ ہے جبکہ توحید وجو دی کے معادت ظاہر شرکعیت سے موافقت نہیں رکھتے اور ان کی سحت ثابت کرنے کے بیصوفیائے وَجُودیہ کو آویلات بعیدہ کا ارتکاب کرنا پڑتا ہے اور علمائے تکلین اہل سنت كوعلمائے طوا ہركے زمرے ميں شامل كرنا بل است حالا نكديہ امر خلاف حقيقت ہے

توجید و تو دی اور توحیقی و در میان فرق توجید و بودی اور شودی کے درمیان جس دوسر سے توبات شریفی میں تعصیل

#### المنت الله المنت الله المناه ا

كرساتد فرق ذكور ب اس قام برصرت ببندائمور كى طرف الثاره كيا ما ما بدر

© ترمیک در وجردی فناسے بیهک ماصل مولی کید .

© توصیب بشہوری فناکے بعد حاصل ہوتی ہے۔

توحید وجودی میں سالک ماسوار کی فغی کرتا ہے اور ہرجیز کو وجوب کے عنوان
 سے دکھی اور مہداوست (سب کچھ اللّٰہ ہی ہے) کہتا ہے۔

توحیر شہودی میں سالک مرتبہ تل البیان کت اپنچ کو صحواور بقا سے مشرف ہوتا
 بھا درممکن کوممکن اور و اجب کو و اجب جانتا ہے۔

◎ یر ترمید و مورد کا ایک کو موجو د جاننا اور اس کے غیر کو معدوم تھے ناہے ۔

توحینتهودی ایک کیھناہ محینی بیری سالک کا مشہود سوائے ایک کے کوئی نہ ہور گویا توحید وجوئوی اور شہودی میں اتنا فرق ہے مبتنا جاننے اور ویکھنے لعنی علم اور عین میں ہوتا ہے لہٰذا توحید وجودی علم الیقین کے تبیل سے ہے اور توحید شہودی عین ایقین اور حق الیقین کے تبیل سے ہے ، فاقہم و تدّر،

وجهیج موافقت بمحکاء واصول معقولهٔ آنهب منتن ندارند بلکه از علما اسلام جماعه و مخالفت بالم سنتست وارند باصول آنها نیز موافق نیست استطاعت مع الفعل منکشف شده است بیش از فعل قدارت بمقار نکت فعل می بخشد و تکلیف برسلام س آساب واعضا مید مهزید

كَمَا قَرَّرَهُ عُكَمَاءُ أَهُلِ السُّنَّةِ

ترجمہ: اورحکمار اوران کے عقلی اصولوں کے ساتھ کجید موافقت بہیں رکھتے بلکہ علمار اسلام کی ایک جماعت جو اہل سنت سے نخالفت رکھتی ہے وہ بھی ان رحکمار ، کے اصول سے موافق نہیں ہے۔ اسطاعت مع افعل کا مسلم شخصہ ہوگیا ہے انسان فعل سے بہلے کچید قدرت نہیں رکھتا جب فعل سرز دہوتا ہے اس کے ساتھ متصل ہی قعل سے بہلے کچید قدرت نہیں رکھتا جب فعل سرز دہوتا ہے اس کے ساتھ متصل ہی قدرت بین محلف قدرت بین محلف بین اور اسباب و اعضار کے سیجے وسالم ہونے کی صورت میں محلف بناتے ہیں اور اسباب و اعضار کے سیجے وسالم ہونے کی صورت میں محلف بناتے ہیں جب کے بیار اور اسباب و اعتبار کے سیجے اسلام کیا ہے۔

### شرح

حضرت امام رًا نی قدس مرّ فرماتے ہیں کہ فقیر رپر جوعلوم و معارف فائض ہوئے۔ ہیں وہ حکمار یونان کے اصولوں کے ساتھ موافقت نہیں رکھتے بلکہ فرقو معتزلہ (جو اہل سنّت کا مخالف ہے، کے اصولوں سے بھی فقیر کے معارف کوئی موافقت نہیں رکھتے جبیسا کہ مسئلۂ استطاعت مع افعل میں اہلِ منت اور معتزلہ کا اختلاف و اضح ہے۔

ال کیدی الم استطاعت مرح کفت است استدادی تعزله کے زمیان استطاعت مرح کفتیدہ ہے کہ اختلاب ہے بہتے موجود ہوتی ہے کہ مکلف بینی النان میں ہفعل کی انتظامت اس کی ایجاد سے پہلے موجود ہوتی ہے اور اہل سنت کا حقیدہ یہ ہے کہ بغول کی استطاعت اس کی ایجاد کے ساتھ مقارن و منصل ہی ہوتی ہے ۔

حضرت امام رّبانی مجدّ و الف ثانی رحمة الله علیه کشفی معارف الل سنّت کے موافق ہیں اور استطاعت کے موافق ہیں اور استطاعت مع الفعل کی تائید و توثیق کرتا ہے۔

بان چا جيئے کر ستطاعت کا اطلاق دو عنوں پر ہو تا ہے ايک قُدر تغلِ دوسرے سلامتی آلات و اسباب ۔

علمائے المستنت استطاعت سے قدرت اور استعداد مُرادیستے ہیں جوفعل کے لیے بنزل علمت یا شرط ہے اور مقزلہ استطاعت سے سلامتی آلات الهاب مُراد کیستے ہیں۔

و درین معتام خود را بر قدم حضرت خواجه منتن نقشبند قدس الته تعالی سره الاقدسس می

يابد ايشان درين مقت م بوده اند و حضرست خواجم علاؤالدین را نیز ازین مقام مصیب مست و از بزرگان این سلسله علیت رحضرت خواجه عبالخالق امٰد قد مسسس السُّر تعالى مِسره الاقدس وازمثا مُخ ماتقةُمُ تصنرست خواجئه معروفت كرخى وامام داؤدطائي وحس بصرى وحبيسب عجمي قدس الثرتعالي اساريم المقدتير ترحمه ؛ اوراس مقام ميں يہ خاكسار البنے آب كو حضرت خواج نقشبند قدس الله تعالىٰ سترہ کے قدم پریا تا ہے۔ آپ اسی مقام پر ہوئے ہیں اور صفرت خواجہ علاؤالدین عطار قدس سنترهٔ کو تھی ہی مقام سے کچھ صندہ اصل ہے اور اس ملسلہ عالیہ کے بزرگوں میں سے حضرت خواج عبد الخالق عجد وانی فتس اللهُ سترهٔ ہیں اور وہشائخ ان سے پہلے گزرے ہیں ان ہیں سے *صربت خواج مع*روف پرخی ، *صنرَت* امام وا وُ و طابئ جصنرت خواحبسسن بصرى اور حصنرت خواجه مبيب عجمي قدس التدتعالي امرارهم المُقدِّسه أي مقام بي تھے.

#### شرح

حضرت امام ربانی قدس سرهٔ النوانی فرماتی بی کدفیر ربی علوم شربیت ، معارف طربقیت اور مقامات معرفت منکشف بورسیدان میں بندہ اپنے آپ کو حضرت خواج نقشبنداوسی مجاری قدس سرهٔ الساری کے زیر قدم یا با ہے اور معلوم بو آہے کہ حضرت خواج علاؤ الدین عظار قدس سرهٔ کو بھی اسی مقام سے حصد حاصل ہو باہے آپ فرماتے ہیں کہ ملسلۂ عالیہ نقشبند یہ اور علائیہ کے بزرگوں میں خاص کر حضرت خواجرجها ن خواجرعبد الخالق غيدواني قدس سره بين جران معارف بين جارك برگول كے ميشوا بين اوران تقامات كا أكمشاف ابنى كے فيضان كا تمره بين اورائي اورائي مصوف احترت خواجر معروف كرخى ، حضرت ام واؤد طائى ، حضرت خواجر من اجرى حضرت خواجر مبيب عجمى قدست امرادهم المنى واؤد طائى ، حضرت خواجر من اجرى حضرت خواجر مبيب عجمى قدست امرادهم المنى مقامات ومعارف كے وارث ہوتے ہيں ۔ فدكورہ بالاحضرات صوفيا ، مراح وارث ہوتے ہیں ۔ فدكورہ بالاحضرات صوفيا ، مراح وارث ہوتے ہیں ۔ فدكورہ بالاحضرات صوفيا ، مراح وارث ہوتے ہیں ۔ فدكورہ بالاحضرات صوفيا ، مراح وارث ہوتے ہیں ۔

# حضرت خواجه شنبندا ويئ نجارى قُدِسَ سَرُهُ

آپ کی ولادت باسعادت م محرّم ۸۱۷ ه قصرِعار فال میں ہوئی جر بخار ا سے ایک فرسنگ کے فاصلہ پر ہے آپ کا اسم گرامی مخترین محتر انبخاری ہے بہا والان کفیّت اور شان مفتشبند لفتب ہے ۔

بیدائش سے بہدے صنرت خواجہ محتربابا ماسی رحمۃ الدعلیہ نے آب کے توّلد
کی بشارت دی اور فرمایا قریب ہے کہ قصر مہدوان قصر عارفاں ہوجائے۔ نیز فرمایا
مجھے اس مقام سے ایک مروح تی گو آئی ہے۔ ولادت سے تیسرے روز آب نواجہ خواجہ کو ابنی فرزندی میں قبمل کرکے اپنے غلیمہ صنرت سیّدامیہ کلال رحمۃ اللہ علیہ
سے آپ کی تربیت کا حمد لیا ۔ آپ کے شیخ تعلیم صنرت خواج رسیّدامیہ کلال رحمۃ اللہ علیہ ملیں اور آپ صنرت خواجہ عبد انحالی مخدواتی قدس سرّہ کے اولی ہیں کہ ان
کی رُوعانیت سے تربیت پائی ۔ آپ کا قول ہے صنرت عزیزان علی قدس سرّہ فرات ہیں کہ دان
فرماتے ہیں کہ مردان جی کے سلسنے پوری رُوستے زمین ایک دستہ خوان کی طرح ہے
اور ہم کہتے ہیں کہ ایک ناخن کی طرح ہے۔ کوئی چیزان کی نظروں سے پوسٹ بیدہ
نہیں ہے۔

ہے۔ آپ نے اپنے مبارے کے آھے میٹھ رکپھنے کا حکم دیا تھاجس کیم کی گئی۔ مفلسانیم آمدہ در کوئےئے تو شیئاً لللہ از جمالِ رُوسئے تو دست بکشا جانبِ زنبسیلِ ما آفریں بر دست و بر باز شئے تو

آپ کی عمر شراعیت بهتر (۳۷) برس ہوئی۔ آپ نے دین سلام کی بیش بہب خدمات انجام دیں طریقیت نِقشندیہ کو بے حد فروغ دیا پوری دنیا میں آپ کا نام رڈن ہوا۔ آپ کا وصال شب و وشنب سیم رہیج الاقل ۹۱ء همیں ہوا۔ مزار مبارک قصرِعار فاں رنجارانٹر لین میں ہے۔

# حضرت خواجه علاؤالة ينعظار قدس ستره

آب کا انم گرامی گربی بی بی بی انجاری ہے۔ علاؤ الدین کنیت اورع قار لفتہ ہے در اسل خوارزم سے ہیں ۔ آب حضرت خواج شخصنبند بخاری رحمۃ اللہ علیہ کے خلیف اول ،

نائب طلق اور داما دہیں بصنرت خواجہ کے بے حد تقبول نظر اور عتمد خاص تھے آپ صاحب طریقہ خاص ہیں آپ کا طریقہ علائی شہور ہے جھنرت امام رابی فی قدس سرّ فی ضاحب طریقہ خاص ہیں آپ کا طریقہ علائی شہور ہے جھنرت امام رابی فی قدس سرّ فی نے ذفتر اول کمتوب نمبر ۲۹ ہیں آپ کا بالتف یل فرفر مایا ہے ۔

تحضرت سید شرفیت جرجانی علیه الرحمة آپ کے صحاب خاص میں سے تھے۔ انہوں نے فرما یا کہ جب بک میں خواجہ علاؤالدین کی شجست سے سٹروٹ نہ ہوا میں نے غدا کو نہ بچاپا ۔ آپ کی وفات کے بعد کسی نے خواب میں د بچھا کہ آپ فرماتے ہیں ہو کوئی چالیس فرسنگ تک میری قبر کے گر دون ہوگا بخشا جائے گا۔ آپ کا وصال شب چہارشنبہ بعد نماز عشار ب تم رجب ۲۰۸ھ میں ہوا۔ آپ کا مزار تصبیح نیانیاں میں ہے

### حضرت خواجه عبالخالق عجدواني قدس سيرؤ

آب کا اسم گرامی خواج عبد الحالق غجد وانی ہے۔ آب کے والد کا اسم گرامی عبدالجميل امام قمرب وعضرت سيدنا خصنرعليه الشلام كصحبت وارتحصه بصنرت خصر عليه استلام نے انہيں بشارت دي هني كرتم بارسے بال ايك لاكا پيدا ہوگا اس كا نام عبد الخالق رکھنا جواد ثات زمانہ کے بب آپ نے اپنے وطن مالوٹ روم سے ماورار النهر کی طرف ہجرت فرمائی اور ولاریت بخار امیں موضع عجدوان میں سکونت پذریہ ہوتے جو *بخارا سے چید فرمنگ کے* فاصلہ پرہے جھنرت خواجہ عبد ان کانی عجد وان میں ہیں۔ ا ہوئے اور وہن نشو و نما بائی ۔ آپ حضرت امام مالک رضی اللّٰدعنہ کی اولا و سے ہیں۔ أب لسانقشبندیہ کے سرحلقہ اورامام ہیں طریقات کے تمام سلاسل میں فتبول و عقد ہیں آپ سرّابیت وثبتّت کی متابعت اورخواهشات نفس و بدعات کی مخالفت میں بیجد مضہورہوکتے ہیں بصرت خصر علیہ اسلام نے آپ کو اپنی فرزندی میں قبو<sup>ا</sup>ی فرمایا اور وقوف عددى اور ذکرخفی کی تعلیم دی حضرت خصنرعلیه السّلام آب کے بیر بی اور حضر خواجه بوسف ہمدانی قدس سرہ آپ سے پیریجیت وخرقہ ہیں بلسلہ عالیہ نقشنبذیہ کی جن کھ كلمات پربنياد ب وه آب بي ك مقرر كرده اورحب ديل بير.

# كلمات وأدكستيه مصطلحا فيقتنبندس

يعنى سالك كابراك سائس بربهوشيار رمنا كه ببيدار ا موسس دروم ہے یا غافل تاکہ کوئی سائس می خفلت سے زگزیے

يعنى سالك جلقے وقت نظر اپنے يا وَل كى پشت پر ٢ نظر روب م ركھے إدھراُ دھرنہ ديھے تاكدت دِنظرا وربيرونی تفرقہ

سے مفوظ رہے۔ رشحات میں ہے شاید نظر برقدم سے رُعِت بئیر کی طرف اشارہ ہے یعنی سافہ سے سے قطع کرنے اور عقبات خود رہتی سے طے کرنے میں سالک کا باطنی قدم اس کی باطنی نظرسے بیٹھیے نہ رہے بلکہ متہائے نظر پر بڑے بینانچیمولا ناجا می رحمۃ التدعلية صنرت خواجربها والذين تشبند قدس ستره كي شان اقدس مين فرمات بين ے کے زخود کروہ بشرعت سعنب باز نمٺ مذہ تدششس ار تنکسہ

سالك كاصفات بشرتية ذميمه سيصفات كمكييميده ٣ مفرور وطن كرون إتقال كرناسفر وروطن كبلا باليسار بقشبنديه ميں ملوك كوسير الفسى سے نثر وع كرتے ہيں اور اس مضمن ميں سيرا فاقى كو قطع کریتے ہیں سیرافاقی مطلوب کواپنے سے باہر ڈھونڈ ناہے اور سیرانفنی لپنے اندر آگر اینے ول کے گر د بھرنے کا نام ہے۔

حضرت امام رّ با في قدِس سّرهٔ فرماتے ہيں کرشہود نفني ميں تھي گرفتار نه وبأيله ين اور آس ومطلوب كفطلال ميس سے ايك طالفتو كرناچا ہيئے كيوں كەحضرت حق شبخانہ وتعالى جبيها كه ورائے آفاق ہے ور ائے اُفنس

بھی ہے۔ بیں اس کو آفاق وہنس سے بابطلب کرناچا ہیئے۔

نح یعنی سالک الخبن دظاہر، میں خلق کے ساتھ ہو اور م خلوت در این خلوت رباطن میں حق کے ساتھ ہو۔

از برُون ورمسي ن بازارم وز درُون خلوتميست با يارم خواجه اولیائے کبیر قُدّس بِترۂ فرماتے ہیں کہخلوت در اعجبن میر ب كسالك أكرباز ارمين جلئ تو ذكر اللي مين تغزاق كيب کوئی اواز نہ سنے بعینی جمیع اوقات خِیلوت وحلوت میں سالک کا قلب اللہ تعالیٰ کے

بليدتميرا

البيت الله المرابع ال

سائد مننغول رہے ۔ واضح ہوکہ حضرات تقشبند برملوں کی بجلئے خلوت در کمبسسن پر قناعت کرتے ہیں ۔

میادکرو یعنی بروقت ذر مین خول رسین واه ذکر زبانی بویا قلبی ۔
یعنی بروقت ذر مین خول رسین واه ذکر زبانی بویا قلبی ۔
اللہ باز کسنت نفی اثبات کے بعد بجالِ تعتری رضا کہ منظ کو بیت اللہ بیت اللہ بیت مقصود ہی و رضاك منظ کو بیت اللہ بیت اللہ بیت میں مقصود ہی اور مجھے نیری رضا مطلوب ہے مشاک مشائح نعشبندیہ وی اللہ بیت میں المنعش و کرتے ہیں کی دکھی و ہوتا ہے وہ مقصود ہوتا ہے جبیبا کہ آیت مبارکہ افر دیت میں المنعش و کرتے ہیں کی دکھی و ہوتا ہے وہ مقصود ہوتا ہے جبیبا کہ آیت مبارکہ افر دیت میں المنعش و کرتے ہیں کی دکھی اللہ کے دیم مقال ہرہے۔

اس سے مراد قلب کو خطرات و دریث بغنس دوراس و اس می است مراد قلب کو خطرات و دریث بغنس دوراس و می می است کا مداشت می می می است می است کا در است کا مدر است کا در می می می کارد نے کے بیابے کلمہ طیبتر حبس دم سے مراقع مبہت مفید ہے۔

اس سے مرادیہ ہے کہ الک ذات ہون و بھگون می ۸ باو و است فیمانہ و تعالی کی طرف بغیر لاحظہ الفاظ و خیال سے متوجہ رہے مینی دوام آگاہی و مصنور بحق نبخانہ سبیل ذوق ۵ دارم ہمر جا باہم سے مس در سم سے مال

در دل زتو آرزو و در دیده خسیال ای کیفیت کے غلبے کوفنا کہتے ہیں۔ سپ کی وفات ۱۲ ربیع الاقل هے شدہ کو ہوئی آپ کا مزار وصمال غیدوان دلجم غین ہیں ہے جرنجادا کے قریب ہے۔

حضرت خواجة معرُوف كرخي ُقدِّسِ سرَهُ

تهب كااسم گرامي معروف اوركنيت الومحفوظ تفي والدماجد كانام فيروزان تحايه آبائی دین آنش بیستی تقا کرخ کی حکومت آپ کے ناما کے زیر تھی تی پار آش ریست تص الب ف صفرت على بن موسى رضارضى النَّدعنهما كے دست اللَّه سر اسلام فتول فرمايا . بچراپنے والدین کومبی اسلام سے مشرف فرمایا آپ متقدمین سائنے میں سے انتقار مصنرت داؤدطا في عليه الرحمه كي علبت بين رب حضرت شيخ سري قطي قدس سرفك استاد ً تصے آپ نے علوم دنید کی تصبیل ونگیل حضرت سید ناا مام اظرا لومنیفه رضی الله عَنهُ مسافرهاني ونزون ببيت لحضرت سيتدنا حبيب عجمي ومتدالته عليه كمساح ماصل كياتهاجن كو شرف بعيت وخرقهٔ خلافت مصرت سيدناسلمان فارسي وني الدُّحن است حاصل تحاراس اعتبارے آپ اکا برمشائخ نقشبند میں سے ہیں ۔ آپ تبع مابعین کی صف میں شامل تصف آپ متجاب الدعوات تصعوام الناس آب كا واسطه وكر الله تعالى باران رحمت طلب كباكرت تمح تقوكا وفتوت مين شهور يحص أب ني خليف متصم عباسی کے دُور میں بغداد شراعت میں ۲۰۰ ھا ۲۰۰ میں وصال فرمایا ۔ آپ کا مزار بغداد شریف کے قدیمی قبرستان میں مرجع خاص وعام ہے ۔ ﴿ را قُوْ اِلْحِرُوف کوحاصر کی و زيارت كاشرف ماصل بمواء

حضرت امام واؤوطانئ قُدُس سنثر

آپ کا سرگرامی دا و د الوسلیمان کنیت اور نقب امام انفقهار ہے۔ آپ اہل ہون وطریقت کے سردار وں میں شمار ہوتے ہیں سیدالعقوم تھے۔ آپ حضرت خواجر مبیب

راعی رحمة الته علیہ کے فرید و خلیف تھے۔ بیس سال تک حضرت امام عظم الوجنیف و منی الله عند کی شاگر دی میں رہے جعفرت ضیل بن عیاض ، حضرت بشر مانی ، حضرت سفیان توری ، صفرت سلطان ابر ہم ہم اوحم قدس الته اسرادهم کی آب سے اکثر و بیشتر ملاقاتیں دہا کرتی تھیں۔ آخری حمرین آپ نے کوشنی نمتیار کرلی تھی آیک و فوضلیف ہارون الرشید عالم ضهرادگی مین حضرت امام قاضی الدیست رضی الله عند کے ہمراہ آب کے مکان پر آب سے ملاقات کے بیاحاضر ہوا مرحم آب نے اندر آنے کی اجازت نہ دی ۔ بالاخر آپ کی والدہ محترث کی سفارش پر و ولوں صفرات معاصر ہوئے اور آب کے ارشا وات مالیہ سے شفید ہوئے۔ آپ کا وصال کالات یا اسلام میں ابغداد شریب کے ارشا وات میں اور آب میں ہوا اور آب میں ہوا اور آب کی اور آب میں ہوا اور وہیں وفن ہوئے ۔ آپ کا وصال کالات یا سالم وفات کا حال دوئیت کی اور آب میں ہوا اور وہیں وفن ہوئے ۔ آپ کا وصال کالات میں سرحمہ میں رکھا اور میں تہدیں انتقال فرما گئے تھے۔ کی تو ایک ایک دوئی انتخال فرما گئے تھے۔

# حضرت بنواحب ن صبری قدس ستره

آبِ المعرد المعرد المعرد الموسائية ميں بيدا ہوئے آپ كا اسم گرا مي س كجبري اوگوئيت الجرمي و الدہ أم الموسنين حضرت إم سلمه رضى الله عنها كى لوندى تعين شير خوارگ كه آيا م ميں جب آپ كى والدہ كمى كام بين مغول ہوجا تيں اور آپ رونے لگئة توصفرت أم سلمہ رضى الله عنها آپ كوبهلا نے كے ليے اپنا پستان منبادك آپ كے مُنه بين وے و يا كرتى تقين المومنين كے بين وے و يا كرتى تھيں۔ اس طرح ايك دن قدرت اللي سي حضرت أم المومنين كے ليتان سي جند قطرے و و و حفظ المر ہموا جو آپ نے بين اس كى بركت سے آپ كى ذات ميں بين اس كى بركت سے آپ كى ذات ميں بين اس عادتوں اور بركتوں كى ذات ميں بين اس عادتوں اور بركتوں كى ذات ميں بين اس عادتوں اور بركتوں سے انواز ہے گئے ۔

تأب كعبيمكم وعمل اورقبلة ورع وملم تنصيستجاب الدعوات اورصا حركشف

کرامات متے تذکرۃ الاولیاریں ہے کہ آپ کی بعیت بحضرت میدنا امام من رضی اللہ عند سے میں بہا تانی ندر کھتے تھے ہمیشہ باو منور ہتے تھے عموماً ایک ہفتہ کاروزہ رکھتے اور اس سے بعد افطار کیا کرتے تھے۔ آب ملیل القدر آب بین میں سے تھے متعد وصحابہ کرام سے آپ کی ملاقا تیں ثابت ہیں بحضرت را بعہ بھریہ رحم اللہ تعالیٰ آپ کے ذمانہ میں ہوئی ہیں جو اپنے وور کے صالحین میں سے تھیں۔

آب کا وصال خلافت شام بن عبدالمالک بن مروان کے زمانہ میں ہُوا۔ ۱۹ مسال کی عمر مبادک بائی ۔ ۲م محرم اکرام شب حجمین التحد کو بصروبیں آپ نے وفات بائی ۔ مزارمبادک بصرہ سے بین میل وُور واقع ہے۔

# حضرت خواج صبيب عجمى فترس ستره

آپ کا اسم گرامی مبیب لقب عجی اورکنیت الوگذسهد آپ فارس میں پیدا ہوئے ابتدار میں بہت مالدار تصحضرت خواجیئن بصری کے ایک وعظ سے متاثر ہو کر تائب ہوئے اور آپ کے دست جن پرست پر بعیت کی اور آپ کی صحبت کی کرت سے بہت بند مقام حاصل کیا بستجاب الدعوات تھے آپ کے سامنے جب قرآن کی تلاوت ہوتی تو ہے مدروتے آپ سے بوجھا گیا کہ آپ عجی ہیں جب قرآن کو بیمے تی ہیں توروتے کیوں ہیں ؟۔

فرمایا! اگرچیرمیری زبان مجمی ہے گرمیرادل عربی ہوگیا ہے بیصرت امام ہمد برخیبل اور صفرت امام شافعی رضی اللہ عنہما کے ملاوہ ہے شمار اکا برفقہار ومشار کے سے آپ کی ملاقا تمیں ثابت کہیں میں اللہ علی وصال فرما یا اور لصرو میں دنن ہوئے۔ (آپ سے سن وفات میں اختلاف ہے)

حاصل این ہمہ کمال بُعد وہیگانگی ست کار لمن ازمعالجه گذسشته است تازمانیکه مُجُبُ مئدول بوده اندسعي وانهجام گلجائثس رفيع آنہب داشت اکنون بزرگی او حجابِ اوست منکهٔ طَبِيْتَ لَهَا وَلَا رَاقِ مُركمالِ بِيكَانِكُي وب مناسبتي را وصُل واتصال نام نهاده اندَهَيْهُاتَ هَيْهَاتَ جَمَان بیت یوسفت زَلیخا موافق حال ست ۔ ہ در افکنده دُف این آوازه از دوست كزو بردستِ دُف كوبان لودلوست شهود كحاست وشاوركييت ومشهود حبييت منخلق را روئے کے نمایداو<sup>\*</sup> مَالِلتُواَبِ وَرَبِ الْأَرْبَابِ خُود را بندة مخلوق غير قادر میداند و تهمچنین تمام عالم را و خالق وقادِر حق راعزُول میداند غیرِاین چیج نسبت اثبات نمیکند عینیتت ومرأتيت خود كجا ع 🎺 " در کدام آئیب نه در آیداو

البيت الله المراكب الم

ترجمه: ان تمام مقامات ومعارف وعلوم كاماصل كالرئبد (كامل دوري) اوربيكا بكي ہے اور کام علاج ہے گزیر کیا ہے جب تک جابات رپر دے ، کشکے ہوئے تھے کوشش واہتمام کے ذریعے ان کے رفع کرنے داٹھانے ، گانمجائش تھی۔اب اس ك بزرگى اجلال، اس كا عجاب ہے۔ فَلاَ طَبِيْبَ لَهَا وَكَمْ زَاقِقْ العِنى، بِس نہیں کوئی طبیب اس کا اور نہ افسون گر ۔

شاید انہوں نے اس کال بے گانگی اور بے مناسبتی کا وصل واتصال نامرکھا ہے۔ ہائے انسوس ہائے اونسوس مولا ماجامی رحمتہ الله علید کی کتاب " أيسف زليخًا" کا پیشعر دان کے حال کے موافق ہے۔

در انگسنده دف این آوازه از دوست كزو بردست دف كوبان بود برست

ارہی ہے دف سے وہ آواز دوست ہے مگر وُف والے کے اِنھوں میں پیست شہود (مشاہرہ) کہاں ہے اور شاہر (مشاہدہ کرنے والل کون ہے اور شہود جس کامشاہدہ کیاجائے کیا ہے ؟

خلق را رُوئے *کے ہن*ے پیر اُو ہینی خلق کو دیدار کب بخشیں گے وہ

مَالِلتُّورَابِ وَبَرِبِ الْأَسْرَبَابِ وَفَالَ وَمَام بِكَ وَالول كَ بِلِكَ والي كرساته كيانسبت كبان فاكراد كهان وه رب الارباب بي فاكرا ا الماري تومجى غيرقا درمخلوق جانتا ہے اور خالق وقا درحق تعالیٰ عزّ وُجُل کو مِانتا ہے اِس کے

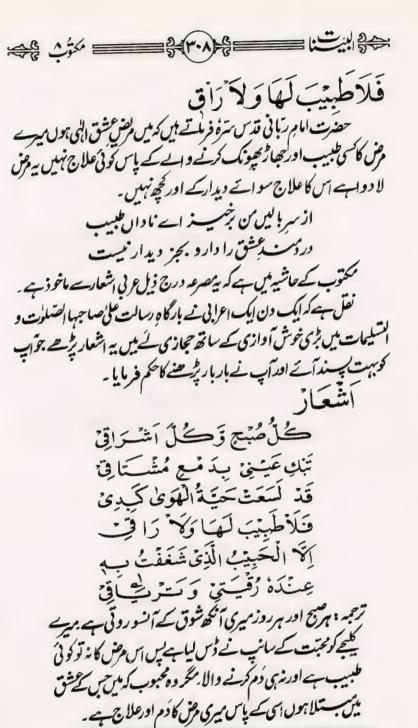
سوارالله تعالی اور علوق میں کوئی نسبت ثابت نہیں کرتا اینے عین یا آئینہ ہونے کا توسوال ہی پیدانہیں ہوتا۔

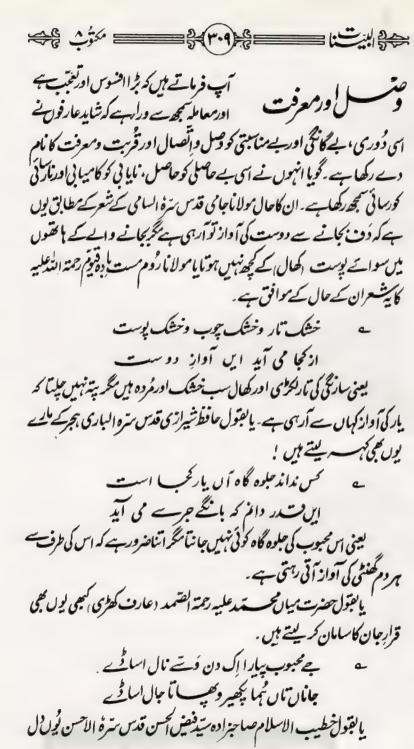
ع در گدام استین در آید اُو بعنی کون سے آئیے میں سماسکتا ہے وہ

شرح

حضرت اما مرتانی قدس سره فرمات این که نقیر برجوعلوم و معارف فاکفن موئی این کے سیسے میں ذات واجب تعالی سے دُوری اور بے گانگی کا مہا نیادہ ہوا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ عارف کو قربت اور معرفت کے مقام میں لجب اور ممن اخالق اور مبد ہے کہ عارف کو قربت اور معرفت کے مقام میں لجب اور ممن اخالق اور مبد ہے کہ درمیان کوئی مناسبہ معلوم نہیں ہوتی کیونکہ واجب لینے کھال قد وسیت و صلال جرو تیت کی بنار پُرمکن کے قیاس و وہم اور اور اکسے وراً الورار ہے جبکہ ممکن کھال جرو تیت کی بنار پُرمکن کے قیاس و وہم اور اور الورار ہے جبکہ ممکن کھال جا سے اور کثافت کی وجہ سے دُورا ور مہجور ہے لیا ہی اور ممکن کے درمیان صفات کے بر دسے حائل ہیں اگر تھی کوئی عارف ایمان وہینی اور تی ہیں گھا ذات بوتی کی مبلالت و کبر مائی خود المبال کی تعلق میں ہے المبال کے مبلول المبال کے علیات اس کی انکھوں کو خیرو کر دیتی ہیں گھا ذات بوتی کی مبلالت و کبر مائی خود الحق کے درمیان میری جا در ہے۔ وہ سیا کہ عدیث قدسی میں ہے المبال کے درکھا ور ہے۔ وہ سیا کہ عدیث قدسی میں ہے المبال کے درکھا ور ہے۔

بمبل شیراز حضرت نیخ سعدی قدس سترهٔ اس تیقت کولیں بیان فرماتے ہیں! بدر دیقین پر د ائے خسیال نماند سسرا پر دہ اِلآحب لال





كوتستى دے ليتے ہيں ۔

۔ مُطرب سے کہوچھٹے تو ذرااس جان تمنا کا قصت فرقت کے بھیا تک کموں میں کچھ دل کو سہارا ہو جائے

کویاعشق وستی کے ان جانبازوں کو اس مع فت بین شہود خبریں تو آ تاہے لیکن قصود نظریں نہیں ہما تا۔ یہ وصول توہے لیکن قصول نہیں بھر خدا ہی جانے فضل کیا ہے اور وصل کیا ہے ؟ شامہ کون ہے اور شہود کون ہے ؟ واجد کون ہے اور فقود کون ہے ؟ ہجر کا نام مع فت ہے یا عجر کا ؟ فرصون ڈتے رہنا حقیقت ہے اور فقود کون ہے ؟ ہجر کا نام مع فت ہے یا عجر کا ؟ فرصون ڈتے رہنا حقیقت ہے یا یا پالیسنا ؟ شرجے ان ریتے گئے کرتے الْعِرِّ قَالَ یَصِیفُونِ نَ

عُرْفائے کاملین کے نزدیک معرفت مطاوب کو پلینے کا نام کھالِ معرفت نہیں ملکہ نہانے کے اعتراف کا نام معرفت ہے جیسا کہ اس اُمّت کے سب سے بڑے صافونی اقل اور عار دن اِکل حضرت سے تیا نا صدیق اکبر ضی اللہ عنہ نے فرمایا!

وَ الْعِجْزُعَنَ دَمْكِ الذَّاسِةِ اِدْرَاكُ وَ الْذَاسِةِ اِدْرَاكُ الْعَجْدُ عَنْ دَمْكِ الذَّاسِةِ اِنْسَرَاكُ لَهُ وَ الْذَاسِةِ اِنْسَرَاكُ لَهُ اللَّهُ اللهِ اللهُ اللهِ الدَّاسِةِ الدَّاسِةِ الدَّاكِ اللهِ الدَّاكِ اللهِ الدَّاكِ اللهِ الدَّاكِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

بس اس بجرو وسل کی مل ملی کیفیات مین مایا بی اور نارسی کو العجر عن الا دراک کہتے ہیں اور یہ اعتراف عجز ہی معرفت کی معراج ہے۔

له قال العلى القارى عليه وحمة البارى:

الْعِجْزُعَنَ دَوْكِ الْمِرْدَى الْحِيْرِ الْحَرِينِ وَالْعَجْدُعَنَ مِرْدَاتِ الرَّبِ إِشْرَاكُ ﴿ وَالْعَجْدُعَنَ مِرْدَاتٍ مِنْكَ جِ ا

nor-countribution areas



ہیں بھٹول ترخے سن کے ہرمت شکھنت، کو تا ہ نگا ہی سے مجھے اپنی گلہ ہے! جیسے بارش کا ایک قطرہ مندر کی وسعتوں کے سامنے کوئی حثیبیت نہیں رکھتا او

جیسے بارس اہیں طرہ مندل و مسال کو استعماد کا تعدید ہیں مسامی کے جاتھ کو ان میں استعماد کا سالکین جگنوسورج کی سیاری کا تعداد مبلوں کے سالکین اور عارفین میں جال و مبلال قدرت کی لا تعداد مبلوہ سامانیوں کے سامنے مجرز و درماندگی

كا الهاركرت بوئ بكار أُمُق إن الله المنظمة الله المنظمة المنظمة الله المنظمة الله المنظمة الله المنظمة الله ال

یعنی اے اللہ ہم نے تجھے نہیں ہیجا ناجیسا تجھے کیجائیے کاحق ہے۔ دامان گھر تنگ وگل حسن تو کہسیار

صنرت الم مرباني قدس ترف المسجاني الم مرباني قدس ترف المسجود الم مرباني قدس ترف المسجود ال

ہوتے رقم طراز ہیں کہ! موتے رقم طراز ہیں کہ!

فت<mark>راتیا مرکآ</mark>ندات اور اینے آپ کونخلوق اورغیرقا درجانتا ہے خالق وقت اور صرف ذات جی کتالی ہے اس کے ملاوہ خالق اور نولوق میں کوئی نسبت نہیں اپنے عین یا آئیسٹ نہ ہونے کا سوال ہی پیدانہیں ہوتا۔

سب کایدارشاد توحید شہودی کا بیان ہے کیونکھ موفیائے توحید وجودی ممکن کو میں واجب اورخلوق کو ذات کا آئینہ قرار دیتے ہیں۔ آب کے نزدیک ذات حق اور مخلوق میں میں واجب اورخلوق کو ذات کا آئینہ قرار دیتے ہیں۔ آب کے نزدیک فات موسلے مخلوق میں میں بیٹ میں ہوسکتا جیسے تحریر محر رکے وجود پر اورصنعت میں ان اور مدلول کے اور تحقیق میں ہوسکتا جیسے تحریر محر رکے وجود پر دلیل ہے۔ اس کے مطاوہ خالق اور مثالی ہے۔ اس کے مطاوہ خالق اور مثابت نہیں ہے۔ اس کے مطاوہ خالق اور مثابت نہیں ہے۔

روں یں وابات ہیں ہیں، یہ بات بس جب ن گیا میں تیری ہیجب ن بہی ہے وہمچنین تی سبحانہ را نہ عین عالم میداند و نہ منت متن متصل عالم ونہ منقصل ونہ باعالم ونہ جا از عالم ونہ جا از عالم ونہ میط ونہ ساری و ذوات وصفاست افغال را مخلوق او میداند نہ اکہ صفات اینہا صفات اربت وافعال او بلکہ در افعال مؤثر قدرست او را میداند قدرست مخلوقات را تا شرے نمیداند او را میداند قدرست مخلوقات را تا شرے نمیداند حکما هو میدند هر الحد الحد الحد المداند میداند

ترجمہ: ای طرح می شبحانہ وتعالیٰ کو نہ عالم اکا منات اکا عین جاتا ہوں اور نہ عالم سے تصل اور نہ عالم سے تحد ااور نہ عالم کے ساری اور نہ عالم کے ساتھ ہوں اور تخلوق کی ذوات اور صفات و افعال کو اس کا پید ایس اور ان کیا ہوا جاتا ہوں میرا پیم عقیدہ نہیں کہ تحلوق کی ضغیر سی تعالیٰ کی فقیل ہیں اور ان کے افعال میں تعالیٰ سے افعال میں تعالیٰ سے افعال میں تعالیٰ سے افعال میں تعالیٰ سے انہیں جاتا ہوں اور تخلوقات کی قدرت کو انتظامین کا مذہب سے ۔

### شرح

غلمار وطلبارا بالننت يحصاته اظهارمحبت

حصنرت امام رّبانی قدس سرّهٔ النورانی اس کنتوب کیسفن مقامات پر توحیه شهودی کے علوم وسمعارف کی صحت و درستی پرتبصره فرماتے ہوئے اللّٰہ تعالیٰ کی ذات وصفات کے متعلق علم ۱۱ بل سنست کے عقائد و نظر مایت کی نوانیت تھائیت
کو جم کشفی طور پر ثابت فرمار ہے ہیں ، اس سلسے میں اہل سنست کے علماء وطلبار کے
ساتھ اظہاد محبت فرماتے ہیں کہ میں خواہش رکھتا ہوں کہ اس گروہ میں شامل ہوجا فل
اور اصول نقد کی شہور کمتاب تلوی کے جوعلام تفارا نی کی تصنیف ہے اور تمام دینی
مدارس میں بڑھائی جاتی ہے ہے مقدمات اربعہ (جواس کتاب کا ایک شکل اور دقیق
مقام ہے ، کا ایک طالب علم کے ساتھ تکوار کر تا رہوں اور فقتہ کی معتبر کیا ہے بالیہ کا بی طرح مباحثہ و تکوار جاری رہے ۔ آب کے ان فرمودات عالیہ کی وجر بیعلوم ہوئی
ہے کہ کہ ب دلا بل شرعیۃ اور شفیۃ کی روشتی میں علمار المستنت کے اعتقادات کو بنی برحق وصواب جانتے ہیں اور اہل سنت کے زمرہ میں شامل رہنا ہی فرلویہ جات کو برحق وصواب جانتے ہیں اور اہل سنت کے زمرہ میں شامل رہنا ہی فرلویہ جات

س کے بعد آپ وضاحت فرماتے ہیں کہ معارف توحید یہ و دی معارف توحید یہ و دی

اگ کا دائرہ ہیں صرف لاتھی کے ایک کونے پراگ ہے وہ دائرہ آگ کے ساتھ نہ متحد ہے نہ متصل اور نہ نفصل اس طرح مخلوق ایک دائرہ موہومہ ہے جو ذات باری تقالی کے ساتھ نہ متحد ہے نہ تصل اور نہ نفصل یہ

سي طرح أب مخلوق كي ذوات وصفات وافعال كوتعي الله تعالى كم مخلوق مبلنة ہیں اور مخلوق کی صفات کوحق تعالیٰ کی صفات اور اس کے افعال کوحق تعالیٰ کے فعال نہیں جانتے بلکے مخلوق کے افعال ہیں حق تعالیٰ کی قُدرت کومُو تر جانتے ہیں جبیبا کہ علمار منگلمین المسنت کا مذہب ہے معارف مذکورہ میں آپ نے تعکمین اہل سنّت کے سنگ کی تائیدا ور فرقہ جبر رہے، قدر رہے اور مغیز لہ وغیر ہاکی تر دید فرما نی ہے مسئلہ کی اہمیت کے بیش نظر قدر کے فصیل بیان کی جاتی ہے۔ وَهُوَهٰذَا مسکه قضها و قدر کی تحقیق فضاو قدر کے سکے میں قدیم ادیانی نلهب مسکه قضها و قدر کی تحقیق کے لوگ بھی اہمی اختلافات و مناقشات كاشكار ربتته تتصے عهدرسالت علىصاحبهاالصلات وانتىليمات ميں هي ميسسكله زریجین رہا جھنور منل اللیلیدولم کے وصال کے بعد اس مسکلہ میں اختلافات کی جلیج وسیع تر ہوتی حلی گئی۔ یہال کک کرحضرت علی صنی اللّٰی عِند کی خلافت کے دُورِمیں بيمسَلهمنا ظرات ومِبادلات كالكهاره بن كرره كبيا . كجيمالوگ قصنا وقدر كوبهتوسلم<u>رة ت</u> رہے اور کچیمنکر ہو گئے اور مختلف کروہوں میں سب کئے۔اس دور کے ہنت لانی مسائل میں افتیار وجبرکامسئله خاصی اہمیت افتیار کر گیا تھا جنانچہ اس مسئلے میں مندرحه ذبل نظريات نيرحنم ليار

 علماً مِتْكُلَمْيِن نے کہا کہ بندوں کے افعال اختیار یہ بین حق تعالیٰ کی قدرت مؤرث ہے۔

جہور معتزلہ بندوں کی قدرت کو مؤثرِ جاننے لگے۔

◎ لعض کے زویک دولوں قوتیں ٹونڑ مانی گئیں۔

قدریه بندے کو اپنے افعال کاخالی جانتے ہیں اور فرقر و میں اور کے دریہ بندے کو اپنے افعال کاخالی جانتے ہیں اور کے ورفتیار کے دریہ اور میں کے اور کی تعلق نہیں میڑھیدہ قدریہ اور میں کے ایک کی کی تعلق نہیں میڈھیدہ قدریہ اور میں کا کی کے دریہ اور میں کا دریہ اور میں کے دریہ کے دریہ

فرقر قَدرَيه درَ صَلَ مُنْكَرِ تَعَدَّرِ بِصِعَدِيثِ بِاك بِين ہے۔ اَلْفَتَدُرِيَّةُ مَجُوْسُ هُلْدِهِ الْأُمْتَةِ لِهُ يعنى تدريه اس اُتمت كے مُحُوس بين -

كيونكة قدريد كي عقائد مجس كيفيالات ونظر بابت سے قريبي مماثلت استحقة المراب الت سے قريبي مماثلت استحقة محرسي خيري خيري اور نثر كوشيطان كى جانب منسوب كرتے تھے . قدريه يهي كہتے تھے كة تعديد وغيرہ كھي نہيں ملكه الله تعالى كوامور و سواوث كاعلم اس وقت ہوتا ہے جب وہ وقوع ميں اتے ايں - كوانسياؤ بالله تعالى .

اکثر موضین کا خیال ہے کہ فرقد قدریہ کے نظریات کی نبیا دایک نصرانی نے رکھی۔ اسی سے معبد جہنی اور غیلان وشقی نے بیعقیدہ اخذ کیا بمعبد جہنی عراق میں اور غیلان وشق کے گروو لزاح میں اس نظریے کی وعوت ویتے رہے۔ بالآخر مجاج نے معبد جہنی کو اور خلیفہ ہشام نے غیلان کو قتل کر دیالیکن اس فقنے کے جراثیم بعد میں طویل عصب ترک باتی رہے۔

فرقہ جبریہ بندے کومجبور مطاباتہ اورصدور فرقہ حبسب مہیر افعال میں بندے کو بے اختیارا ورعبا دمھن (بے اختیار نتچم سمجھتا ہے بعض کے نزدیک جبرکاعقیدہ بہودی ذہن کی پیداوارہے البيت الله المرابع الم

یعقیده عهدصِحابه میں رُونما ہوااور اُموی وُور میں ایک مذہب کی حیثیت اُفتیار کرگیا بحضرت سیدناعبداللّٰد بن عباس صنی اللّٰد تعالیٰعنہااورصنرت امام سلطری مِنی اللّٰه حنہ نے عقیدہ جبریہ کی تردیدو مذترت میں اہم کردار اواکیا ۔

من المدار من المعلق المنظم المنظم المنطق المنظم ال

قدیم نہیں حادث ہے اور قیامت کے دائشی کو اللہ تعالی کا ویدار ہرگز نہ ہوگا جنت و دوزخ کو دوام و لبقانہیں وہ بالآخر فیا ہوجائیں گے خلودسے مرا دطول مدت اور گبدِ فیاہے وغیر ہا بہم بن صفوان کوسلم بن احمد مازنی نے بنی مروان کے آخری زمانہ میں قبل کیا تھا۔

# المل سنة الجاعة كامسلك

سرورِ کائنات علیه التحیات واقتسلوات واتیجات نے تقدیر پرایان رکھنے کو واجب قرار دیامگرسا تھ ہی اس میرغور وفکر کرنے سے روک دیا کیوبھ اس میرغور وخوش کرنا بسااو قات لغرش و صلالت کاموجب ہوجا تاہے۔ حدیث برل میں اجھی یا بُری تقدیر کو تسلیم کرنا ایمان کے مقاصد وضروریات میں شمار کیا گیا ہے۔ © اہل سنت کے دو لوں گروہ ااشاعرہ و ماتر یہ یہ قصنا وقدر بریم کل ایمان دکھتے ہیں اور تمام جھی یا بُری تقدیر کو اللہ تعالیٰ کی طرف سے مانتے ہیں کیونکہ و تسدر کامعنی احداث و ایجا د ہے اور اللہ تعالیٰ کے سواکوئی تحدیث و مُوجد نہیں ہوسکتا۔

مُعاحَب تمہید صنرت جبریّبہ و قدریّبہ کے عقائد کفریہ ہیں ابشکورسالی رحمۃ الدعلیہ نے ندہب جبریہ کو کُفر قرار دیا ہے کیونکہ بندے کے مختار ہونے کامسکل قرآن مدیثے

سے نابت ہے۔ جیسا کدارش وباری تعالی ہے: فَمَنْ شَاءً فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءً فَلْيَكُفُرْ لَهِ

یعنی حویا ہے مومن ہوجائے اور حوجا ہے کا فر ہوجائے۔ اس آسیت سے صراحتاً معلوم ہوتا ہے کہ بندہ اپنے فعل میں مختارہے۔

قدريطي سندس كوافعال كاخالق مان كرنصوص صرىحير كم خالفت كرك كُفز کے مرکب ہوئے ہیں مندا کا نمالق افعال ہونا آیت ِ قرآنی وَاللّٰہُ حَلَقَكُمْ وكما تَعْمَلُوْنَ الْمُ سِيرُ ابت ہے۔

# بنده ابنے افعال واعمال کاخالق نہیں کا سے

اس مسئلے میں اہل منت کامسلک افراط و تفریط کے بیکس متی و اعتدال پر مبنی ہے کہ ان کے نز دیک بندوں کے اختیاری افعال خلق و ایجاد کی تیٹیت سے حق تعالیٰ کی قدرت کی طرف نسوب ہیں اور دوسری حثیبیت بعینی کسب واکتساب کی رُوسے بندوں کی قدرت کی طرف منسوب ہیں لہٰذا بندوں کی حرکت کوحق تعالے کی قدرت كىطرف نسبت ك اعتبار سے غلوق اور إىجاد كہتے ہيں اور بنده كى قدرت كے ساتھ رلط اور تعلق كے اعتبار سے كسب واكتباب كہتے ہيں اس ليے بندے كو اینےافعال وإعمال کا کاسب کہا جائے گانہ کہ خالتے ۔

مسئلة فضا وقدرا ورحضرت سيدناغمرفارق وعثمان بني ينجاطينها

روایات میں ہے کو صفرت سید ، فاروق عظم بینی اللہ نائے کا مدست ایں ایک چور میش کیا گیا ۔ اب نے لوچھپا تم نے چیری کمیوں کی ۔؟

چرر لولا!

خدا کا فیصسسلہ ہی تھا ۔

آب نے اس برحد نا فذکر دی اور مزید کچے وُرے بھی لگائے جب آپ سے اس کی وجہ دریا فت کی گئی توفر وایا! ''اس کا ای تھ چردی کے جرم میں کا ٹاگیا اور وقت خدار چھو اہتا لگانے کے جرم میں لگاتے گئے بولیے خدار چھو اہتا لگانے کے جرم میں لگاتے گئے بولی

ایک دوسری روایت ہے کہ صرت سیدنا عُرفارُ وق رضی اللّٰدعند نے جب ابک طاعون زدہ تہر نیس داخل ہونے سے انکار کردیا تو آپ سے پرچھاگیا۔

کباآب الله تعالی کی تقدیر سے بھا گنا جا ہتے ہیں آب نے جواباً فرما با اہم خدا کی تقدیر سے بھاگ کر اس کی تقدیر ہی کی طرف جارہے ہیں کے

اس فرمان بین صفرت میته ناعمر صنی التی بیند کا اشاره اس طرف تھا کہ خداکی تقایم مرحالت بین انسان کو گھیرے ہوئے ہے۔ ایمان بالقدر کا پیمطلب نہیں کہ اسباب سے فائدہ ندا ٹھا یا جائے، اسباب بھی تقدر ہوتے ہیں۔ لہٰذا ان پیمل پیرا ہونا از بس ناگزیر ہے کیونکہ اسباب بیمل کرنے ہی سے انسان مکلف بالاعمال ہو تاہیے اور اشیا ہے عواقب ونتا کے کوبر داشت کرتا ہے۔

فلیفد موم حزت سیدناعتمان فی رضی الله عنه کشها دت میر لیمن وه لوگ بنهوں نے ملی طور رہمت لیا تھا وہ کہا کرتے تھے کہ آپ کو ہم نے قبل نہیں کیا بلکہ الله تعالیٰ نے قبل کیا ہے جب وہ لوگ آپ برتقیر تھینیکتے توسیق کہ مہارا کوئی تقدور نہیں الله تعالیٰ آپ کوئیتی مار رہے ہیں جھنرت سیدنا عثمان عنی رضی الله عسن م فرماتے " تم محبوط کہتے ہو اگر اللہ تعالی مجھے تیجم مارتے تو اس کا نشانہ محبی خطب نہ ہوتا '' آے

# مئذ تعت رير برقول يفيل

غلمارا بل منّست نےصراحت فرما ئی ہے کة قضا وقدر کے مسأئل عام حقلوں میں نہیں ا<u>سکتے ان میں زیا</u> دو غور و فکر کرنا سبب ہلاکت ہے بستید ناصلیاتی و فاروق وضى التُدعَنها المسئلة ميں محبث كرنے سے منع فرملتے كئے ما و مشاكس كنتى ميں ہيں . اتناكهد لوكه الله تعالى في أومى كوشل يتيراور وتكرحها دات ك بيعس وحركت نهیں پیدائیا بلکہ اس کوایک نوع افتیار دیاہے کدایک کام چاہے کرے چاہے نہ كري اوراس كرساته هي عقل هي دى ہے كر بھلے بُرے اور منطع و نقصه ان كو بيجان مستحادر بقرم كرسامان اوراسباب مهيا كرويت بين كدحب كونئ كام كرناجا بهت ب انقىم كرسامان مهيا جوجات اين اوراس بناريراس برموافذه ب اين آب ى بالكام بوريا بالكام تارىح بسا دونور محمراهي بي يجلائي بُراني الله تعالى ف السنام ازلى كيروافق مقدّر فرمادي بيرحبيها جونيه والاتقا اورعبيها كرنيه والاتقا اسيفعلم ے سے جانا اور وہی لکھ لیا ۔ نیمبیں کی مبیااس نے لکھ دیا ولیا ہم کو کرنا پڑتا ہے ملک مبیا مركين وال تع ويساس ني الكاديا . زيدك ذمر الالكمي السيا كازيدالي كرنے والائقا اگرز ديھبلائي كرنے والا ہوتا وہ اس كے ليے عبلائي نھمتا تو اس كے علم يا اس كے لكھ دينے نے كسى كومحبور نہيں كرويا - والتُداملم بالصّواب

مئلة فضاوقدرا وراقوال صوفيائه ومجود بيركي ماويلات

سی محتوب میں صفرت امام ربا فی مجدد الف ثانی قدس سرہ نے وضاحت تی ہے۔

ر لی بیرا یعقسیده بهیں کی خلوق کی مفتیں حق تعالیٰ کی مفتیں ہیں اور ان کے افعال ہیں ہوں اور ان کے افعال ہیں "

آب نے ایک سکدیں صوفیائے وجودید کے مضم محتوفات کی تردید فرمانی ہے کیونکے صوفیائے وجودید کہتے ہیں۔

بندوں کی معتبی در اسل حق تعالیٰ کی مفتیں ہیں جربندوں سے ظاہر ہو تی اسے ہیں جربندوں سے ظاہر ہو تی اسے ہیں جیسے بارٹ کا باتی پرنا ہے سے ظاہر ہوتا ہے۔

بندہ ابک امرِ خیرتیقی ہے لہٰذاتمام افعال کا فاعل صرف اللہ تعالی ہے بندہ مراب کی مانسٹ دہیے۔

ت صوفیائے وجو دبیہ کے اس خم کے اقوال کو مصرت امام رہانی قدس نیڑہ قابلِ اعتبار نہیں جانتے کیونکہ ان اقوال کا ظام مِطلاف بشرع اورعقا مڈ اہل سنت سکے رعکس ہے ۔

سب فرماتے ہیں کھوفیائے تنیم الاحوال اپنے اقوال و اعمال اور علوم و معار میں ہر گزرٹر لیونٹ سے تجاوز نہیں کرتے اور اگر تھی کشف ناتص کی وجہ سے محصوفی سے ایسا کلام صادر ہوتو اس کو تمل صحیح برحمل کرکے اس کی تاویل کرنی جا ہیئے میٹلاً اس تم کے اقوال کی تا ویلات میں کہا جاسکتا ہے کہ!

ایسے کمیات بعض صوفیارسے غلبہ مال اور سکر کی وجہ سے صدا در ہوتے ہیں

للذا بقول "الكيُّك الرئى مَعْدُ وْرُونَ" يبصرات معذور بين.

با به کلمات صوفیار کے احوال ہیں ندکوان کے عقائد.

 یا اس شم کے احوال وقتی ہوتے ہیں نزکہ دائی، بعد میں جب صوفیار کو ارتقار نصیب ہوجاتا ہے توبیعلے مرتبے سے تائب ہوجاتے ہیں جبیبا کرکتب صوفیار

کرام کسس امرکی شاهد میں ۔

منن وهم خنير صفات سبعه راموجو دمسيداندو

ترجمہ، اور ای طرح تی تعالیٰ کی صفات بسبعہ اجلوۃ ، علم ، قدرت ، ارا دہ ، ہمع اجر، کلام ، کو موجو دجا نتا ہوں اور حق شبحانہ و تعالیٰ کو صاحب ارا دہ و اختیار جانتا ہوں اور حق شبحانہ و تعالیٰ کو صاحب ارا دہ و اختیار امیر سے عقید ہے کے مطابق قدرت کے بیعنی نہیں ہیں کہ ان شآء فعک و این کئم یہ شآء فعک و این کئم یہ شآء کئم یہ مقال درا گرجا ہے تو کرے گا اور اگر نہیں جا ہے گا تو نہ کرے گا اور اگر نہیں جا ہے گا تو نہ کرے گا ، اس کے کہ و کو را جملہ شرطیع را ن کئم یہ شآء ، متنع ہوگا جیسا کر حکما در فلاسفہ ، اور معن صوفیار دوجو دید ، نے کہا ہے کیونکہ یہ بات اور تھنا ہے اور تھنا ہوگا ہے ہوگا ہے کہا ہے کیونکہ یہ بات کہ اور تھنا ہوگا ہے کہا ہے کیونکہ یہ بات ہوں در برخلاف تو کے کہا ہی کا تا ہوں در برخلاف تو کے کہا ہے کیونکہ یہ برخلاف تو کہا ہے کیونکہ یہ برخلاف تو کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا ہوگا ہوگا ہے کہا ہوگا ہوگا

البيت الله المنافقة ا

جبریه و قدر بدکے ہیں مالک کو کامل اختیار ہے کہ اپنی ملک بیر جس طرح چاہے تھے۔ کرے اور (مخلوق کی) قابلیت اور ہستعداد کا اس میں کچھ دخل نہیں جانتا کیونکہ عیقیہ ہ ایجاب (اللہ تعالیٰ پر واجب ہونے) کی طرف ہے جاتا ہے مالا محد حق سُجانہ و تعالیٰ مختار ہے جو چاہتا ہے کرتا ہے۔

### شرح

مسئلصفات باری تعلی بین افعات کی توت الله تعالی کصفات کے بارے بین المانوں کے مختلف گروہوں بیں اختلاف ہے۔

صفات کے وجود فارجی اور ان کے ذات پر زائد صفوت کو عین ذات کے کائن ہیں ملکہ وہ صفات کو عین ذات کیتے ہیں ۔

معتر صفات باری تعالی کی نفی کرتے ہیں ان کے نز دیک غیر فرات کو کی جز نہیں اور قرآن میں مذکورہ صفات مثلاً علیم سمیع ، بصبہ جکیم ونسب ہا کو اللہ تعالیٰ کے اسمار قرار دیتے ہیں ۔ صفات خدا دندی کا اثبات ، کرتے ہیں اور نہیں عیر من ہو

مفات خدا وندی کا اتبات کرتے ہیں اور انہیں غیر است کرتے ہیں اور انہیں غیر است کرتے ہیں اور انہیں غیر است کرتے ہیں ۔ مفات باری تعالیٰ کا اثبات کرتے ہیں گرساتھ ہی کہتے ہیں۔

مانتر بدیر تیر بین کی مفات بازی معان دات بین نظام بالذات اور نُهُ نَهْ فَات مِین دَات بین نظام بالذات اور نُهُ نَهْ فَات عُنِ الذَّات رَحَويا دَات سے الگ ان کا کوئی وجود بھی نہیں تاکہ بیہ ستحالہ لازم آئے کہ ان کے تعدد سے فُد مار کا تعدّد ثابت ہو۔

و من و صفات كوعين ذات نهيس مانت بكيصفات كوذات صوفيا سي مهوديم پرزائد مگرقائم بالذات قرار دسي كرفارج بين ان كا وجود تسليم كرشته بين .

مربعتر بر مسين الموقة و صفات كوذات كانتين مانت بي اورنه على المنت بي اورنه على المنت بي اورنه على المنت بي اورنه على المنت بي وه المنت بي المنت بي المنت ال

ساق المعنوب المعنوب المام ربانی قدس سرؤ النورانی نے جس توحیدی بلین ممبر المسلک کی وصناحت فرمانی ہے وہ صوفیائے جم و دیاور سلک کی وصناحت فرمانی ہے وہ صوفیائے جم مسلک ہے جم کتاب وسنت کی صوص صریح کے عین مطابق ہے سیکا بین سے علوم ومعارون کِشفیہ ہمی این بیاد ربنطبق ہوئے ہیں ۔ واحد للہ علی دُالک آبیک سے علوم ومعارون کِشفیہ ہمی این بیاد ربنطبق ہوئے ہیں ۔ واحد للہ علی دُالک

#### بایک اسا

حضرت امام ربانی قدّس مره العزیز کاید فرمان که میصفات بعد کو موجد دمانا موں در صل مخزله کار دہے جو صفات کے منکر ہیں اور صوفیائے وجودید کے علاوہ وگیران فرقوں کار تہے جو صفات کے وجود فارجی اور ان کی ذات برزیا وتی کے متائل نہیں ہیں۔ آپ کا یہ فرمان

و میں حق سُجانہ و تعالیٰ کوصاحبِ ارادہ و اختیار مبانتا ہوں ' حکمار و فلاکھنہ کی ترویدہے کیونکہ وہ حق تعالیٰ کومبورا ورہے اختیار جانتے ہیں مبر طرح کمراک وربانی کوجلانے اورغرق کرنے ہیں ہے اختیار جانتے ہیں ۔

اب كياس ارشادي ك

«نیفتنی طور پر قدرت کے معنی صحت فِعل و ترک فِعل تصوّر کرما ہوں "یہ اہل کلام اور فلاسفہ کے ماہین مختلف فیرسسلہ کی طرف اشارہ ہے بعنی تی آما المنت المنت

کی قدرت دو معنی کا احتمال رکھتی ہے ایک ایجاداور دوسرے عدم ایجاد اور یدونوں اندیم مکن اور جائز ہیں اور اس معنی کے کاف سے قدرت کو صحت فیمل اور تزکی فغل سے تعبیر کرتے ہیں اور اس تقدیر پر اخیار کی ایجاداور ان کی عدم ایجاد میں سے کوئی جیب خت تعالی پر واجب نہیں ہے اہل مکل ویٹر ائع نے اسی کو اختیار کیا ہے اور دور سے معنی میں اِنْ شَدَاءً فعک وَ اِنْ لَدَم بَدَشَاء کَمْ بَیفَعَک لُر مع استحال متر طبیہ ثانید کے بعنی وہ چاہے گا تو ہو ہے گا اور اگر نہا ہے گا تو نہیں کرے گا دیکن نہ چاہا ممتنع و محال ہے ۔ بیں اس سے نہ کرنے کا ممتنع ہونا بھی لازم آئے گا۔ بیس ایجاد عالم محتنع و محال ہے ۔ بیں اس سے نہ کرنے کا ممتنع ہونا بھی لازم آئے گا۔ بیس ایجاد عالم کوچاہنا اور موجود کونا و و نوں و اجب ہوئے اور اختیار نہ رہا اور فلا سفہ اسی کے کائی ہیں ۔

#### صفات سبعه ياثمانيه

 اور تعین کرلیا جائے۔ لہذا اس طرح قدرت کا درجہ ارادہ کے درجہ پر مقدم ہو تاہے
اور تکوین جسے ہم صفات جفیقت میں سے سمجھتے ہیں اس کا درجہ قدرت اور ارادہ
کے درجوں کے بعد آتا ہے لیں قدرت تو فعل (کینے) کی جہت کو دُرست قرار
دینے والی صفت (بعین صفحے فعل ہے اور ارادہ فعل کی جہت کو خاص کر نیوال
صفت ، مخصیص فعل ہے اور تکوین اسے وجو دمیں لانے والی ہے لہذا تکوین
کی صفت کو مانے بغیر حایدہ نہیں اس کی وہی صورت ہے جو اِستَطَاعَتُ مُعَلَّفًا فعل
کی ہوتی ہے جسے علما دا جمنت نے بندوں میں ثابت کیا ہے۔
کی ہوتی ہے جسے علما دا جمنت نے بندوں میں ثابت کیا ہے۔





محتُّربائيرِ عارف ِاللهِ صَرْعِوجِهِ هِي كُلُولِ إِلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عارف ِاللَّهِ صَرْعِوجِهِ هِي كُلُولِ إِلَيْ إِلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ



موضوعك

عارفت كامتعام زول ، متعام غبرتب معارف بان جامعیت انسان ، طرنقی نیف نشند به کاخاصک ب



# محتوب ۔ 9

مان عرضداشت مُدبرساه رُو ومقصّر بدخومغرور وقت و عال مفتونِ وصل و کھال کارش ہمہ نا فرما نبر داری مولیٰ ست و عماش بهد بترك عزميت وأولىست نظرگاه خلق را آرسته منطرحق تعالى وتقدس إخراب ساخته بمبتث مقصور سرظا هر آرا فی ست باطنش ازین رگذریمواره برسوا فی ست قالِ اومنا فی حال اوست وحالِ أومبني رخيالِ أو ازين خواب وخيال چه آيد و ازين فال وحال حيرنشا يداد بار وخسارت نقد وقت ست غباو وضلالت بركف دست مبدار فساد ونترارت ست نشا بظلم و معصيت بالجباء ميوب مجتمداست و ذنوب مجتمع خيرات بالولائق لَعَن وردّ وحنات الوثايان طَعن وطَرو رُبّ قَارِئِ الْعَثْرَانِ وَ الْقُرْآنُ يَلْعَنُهُ وَرَحِقِ الأَلُواهِ عَدَلَ سَتَ وَكَمْ مِينَ صَائِيم لَسْنَ لَهُ مِنْ صِيَامِهِ الْآالظُّمَّ الْجُوعُ درست <sub>ا</sub>ر اُوشا ہوصد تی ۔

ترحمه ؛ بيراس رُوسياه ، برنجت اور ُ برخُو گنام گار کاء بينىد ہے جوابينے وقت وحالت بر مغرور اور وصل وکمال بر فرلفیته ہے جس کا کام سراسرا پنے آقا کی نافرمانی ہے اور جس کا عمل سربسه عزبیت واولی کوترک کرنا ہے جس نے عکوق کی نظرگاہ عنی اپنی ظاہری حالت كوغمُده بنايا مواہے اورحق تعالٰ كى نظرگادىينى دل كوخراب وبربا دىيا مُواہے جس کی بہت اپنے ظاہر کو اراستہ کرنے برنگی ہونی ہے اور اس کا باطن اس کی وجہسے رمواتی میں ہے اس کا قال اس کے مال کے رحکس ہے اور اس کا مال اس کے خیال برمبنی ہے اس خواب وخیال سے کیاحامسل ہوتا ہے اور اس حال و قال سے كياعقده كشائي ہوتى ہے لہذا برنجن اورخسارہ كيسوا كچھ ماصل نہيں ہے ، ركشي اور گراہی ہروقت اس کے عمل میں ہے وہ فسا دوشرارت کامبدار اور فیلم ومعصیہت کا منشا ہے غرصنیکہ اس کا تمام صبح میوب اور مجبوعہ گنا ہے۔ اس کی تیکیاں لعنت او رة كرفے كے لائق بيں اور اس كى لمبلائيا طعن اور بيديك ويينے كے قابل ہيں ـ "بهت قرآن كريم طيصف واله ايسه بي كاقرآن مجيدان برلعنت كرماس "يميث اس سحے ق بین عظیر گواہ ہے" اور بہت سے روزہ دار ایسے ہیں جن کوسوائے بوگ اوربیایں کے روزہ سے کچھ عاصل نہیں ہوتا " بدیمی اس کے بارے میں شاہصادی

## شرح

نیکتوب ادب اورفساحت کاشام کارہے اس میں عادت کے مقام نزول سے مناسبت رکھنے والے حالات کا بیان ہے۔ ابتدار میں کسنوسی اور کھال کو اضع کا اظہار فرما یا ہے۔ اس کے بعد اپنے احوال واعمال کو مطعون اور اپنی نیتول کوختون مور افراین فرات کوئیبول موٹ سے متم کیا ہے اور اپنے افعال کو قصور اور تورکامجموعہ اور اپنی ذات کوئیبول اور گنامول کامجم تر قرار دیا ہے۔ بلکہ دفتر اول کھوب منبر الا اور محتوب منبر ۲۲۲ میں اور گنامول کا فرزنگ اور زندیق ملحد سے می بدتر فرط یا ہے۔ مالا کمد ایک بند کو موثن

#### بكيكاس

صنرت امامرتبانی قدّس سرّهٔ نے این ایک محتوب میں آن کا الله معرا کا خود ہی جواب شافی ارشاد فرمایا ہے۔ ملاحظہ فرمائیں استانی ارشاد فرمایا ہے۔ ملاحظہ فرمائیں استان کی است و درمائمی فیدیخل سعّد کو است از انسان کا مل و فرود آبند ہا از حالم خلق اُوطائف عالم امر است از انسان کا مل و فرود آبند ہا از حالم خلق اُوطائف عالم امر ہر حنید بالا تر روند بے مناسب تری گردند بعالم خلق و ہمان بے مناسبتی سبب یا بیان ترامدن عالم خلق است و میان بے مناسبتی سبب یا بیان ترامدن عالم خلق است و عیوب و نقائص رازیا دہ ترمی گرداند ازیں جاست کہ تنہ ہے ان مرج ع آر دُوسے آس التذاذ و حلاوت وارند کہ درا بتدا الیشاں را مرج ع آر دُوسے آس التذاذ و حلاوت وارند کہ درا بتدا الیشاں را میتر شدہ فرد و در انتہا از دست رفتہ و بے مزگی بجائے اُن شست و میتر شدہ فرد و در انتہا از دست رفتہ و بے مزگی بجائے اُن شست و کا فرنور انتہا دوست رفتہ و بے مزگی بجائے اُن شست و کا فرنور انتہا دوست رفتہ و میام امراد بعالم خلق اُد و و در

عارف این آسنزاج زائل شده است .....ال افره الع ترحمهه : دونوں تمنافیوں کاجمع ہونا اس تنرط برمحال ہے جبکہ دونوں کامحل ایک ہو اور عب بارے میں ہم گفتگو کر رہے ہیں اس کے عل متعدّد ہیں۔ انسان کامل سے اور چلنے و الے اس کے عالمِ المرکے لطائف ہیں اور پنیجے آنے والے عالم خلق کے لطائف ہیں۔عالم امر کے لطائف جس قدر لبند وبالا جاتے ہیں اس قدر عالم خلق سے مناسب ختم ہوماتی ہے اور ہی بے مناسبتی عالم خان کے بیجے ہونے کا سبب ہے اور عالم غلق عبن قدر زیادہ بنیجے اللہے اسی قدر سالک کو بیصلاوت (بے مزہ ) کر دیتا ہے اوراس كے عيوب و نقائص كى ديدزياد كام مونے لگتى ہے ہي وجربے كونتهى مرجُرع اس لذّت وحلاوت كي آرزُو كرتے ہيں لجوان كو ابتدار ميں سير ہوئى تقى اوُر انتهار میں اتھ سے جاتی رہی اور اس کی مگر بے مزگی پیدا ہوگئی اور بہی وجہ ہے کہ عارف اینے آپ سے کا فرفرنگ کو بہتر جانتا ہے کیونکہ کا فرمیں اس کے عالم امر ادرعالم خلق کے اختلاط کی وجہ سے ایک نورانیت ہے اورعارف میں ہا امتزاجی کیفیت ختم ہوگئی ہے۔

 يهي وجرب كروه اس مال كامشابده كريت بهوئ بيكار اُسمِّق بين كد كا فرفرنگ هارى سبت زياده نوراني معلوم بوما به والاند وَرُسُولُه عَلَمْ

ندکوره بالاشکال کی دصاحت فرمات ایوئے حضرت مرز بظهر کے جان جانان شہید دہلوی رحمۃ الٹھلیدر قبطراز ہیں ۔

گویم کرتی کوراب از کال ندگور منی ست برداستن حقائق ممکنات در یک صفرات مجدوری قدس سریم کدمرکب انداز اعدام رصفات وظم اللی وصفات حقیقته یعنی آن اعدام بنا برتقابل سمار وصفات در طم اللی شوت بیداکرده و مرایائی اندار اسمار وصفات ششته مبادی تعتیات عالم گردیده اندوری فقی کافل فارج حقیقی ست صبنع خداوندی دو فقی کوجود شده و بنا برین ترابیب مصدر آثار خیرو شرشده انداز جهت عدم فالی کوجود شده و بنا برین ترابیب مصدر آثار خیرو شرشده انداز جهت عدم منظام برشر نیفه و شرخید و برجهت وجود فلی کسب خبر ایس نظر صوفی به منظام برشر نیفه و تحسید برجهت وجود که دران منظام برست و مصدر خیر شده است می افتد و چون درخود نظر می کندنگاه آد برجهت عدم که ذاتی شده است می افتد و چون درخود نظر می کندنگاه آد برجهت عدم که ذاتی اوست و فضار شرست خوا بدافتا د وخود را از برخیر و کال مطلقا عاری خوا بدوید و خیرا برا خرد و از آن و ملک خوا بدوید و خیرا برا یا فرفرنگ و در گر شیائی خسید برترخوا بد فرد این و ملک خوا به وی در از کا فرفرنگ و در گر شیائی خسید برترخوا به فرد این فران در این خسید برترخوا به فرد این فرونگ و در گر شیائی خسید برترخوا به فرد این فرونگ و در گر شیائی خسید برترخوا به فرد این فرونگ و در گر شیائی خسید برترخوا به فرونگ و در گر شیائی خسید برترخوا به فرونگ و در گر شیائی خویر که در آن و در این می فرونگ و در گر شیائی خویر کشیائی خویر که در آن در خوا به در خوا به در خوا به قر خوا به در خو

ترجمہ ، اس شکال کے جواب کی تحقیق اس بات کے جاننے پرموقوت سے کہ حضرات مجدّدیہ قدس سرام کے نزدیک حقائق ممکنات اعدام اصافیہ وظلال اورصفا ہے تبقیہ سے مرکب ہیں بعنی اس اعدام نے علم الہی ہیں اسمار وصفات کے تقابل کی بنار پرلیک

س و مالت بلوك بيسالك كي طف سيم القيم كي واردات كا اظهار بلي مرسو المعرف المعارض المعرف المعر

اس کھتوب کے وہ تمام مندرجات جروی نیقص وقصور کا پہتریتے بیں در صل مقام عبدتیت کے معارف ہیں۔ اُولیائے محبوبین مقام عبرتيت سے سروزاز ہونے کے بعد جب اپنی بشرتیت پرنگاہ ڈوالتے ہدتی انہیں معلوم ہوجاتا ہے کہ ہمار اوجود عدم محض سے ہے جو کہ سرائس طلمت وکثافت اور کورت وقياحت كالمجتمد بدع فبالأظلمت وكدورت سيكون سااتي اعمل صاور موسكتاب سي وجه سے وہ فرماتے ہیں کہ مجے لوماً يَفْعَلُهُ الْقَبَسِيْحُ قَبِّ بِيْحُ عِينَ قِبِي تَصْفَرْعِ كام مى كرك گاقىيى بوگا يحيونگەگىزمەسى غوا ورغوسى گىزم حاصل نېيى بوسىتى. نىز مبشٰی سے سیاہی مُدانہیں کی جائے تی کھیونکرسیاہی اس کا ذاتی رنگ ہے اس کے اسل سرح سالک کی ذات سے عدم کا از اله ناممکن ہے خوا دکتنی توجہات بعویذات اور بھب ڑ مچونک سے کام لیا جائے کیونکہ عدم <sub>ا</sub>س کا ذاتی مرض ہے جنا قابلِ علاج ہے۔ مقام عبدتيت بين هي انسان برانن للمت وعدميت كاراز مرا المسايرة الله تعالى كيسا فق محل بيدمت المبتى كي حنبقت الشكار ہوتی ہے مقام عبدست سے پہلے سالک اپنے آپ كو تھي عين حق اور مھنی ظل حق جانتا ہے تھی کی کے ساتھ معیّت اور تھی حق کو اپنے ساتھ محیطً قرار دیرآ ہے طاہر ہے کر کیفیات و وار وات عجز بشرتیت کے برعکس ہیں کیوں کہ عينيت وظليت وعنير لإ ذات يحساقه ايك تسم كي مناسبت كي خرديتي بب اور مقام عبرتیت میں بے مناتبتی ملحوظ ہے جس سے توجید شہودی فہوم ہو تی ہے دوالیم العبديت كامقام تمام مقامات سے لبند ترہے اپنی زات میں تعجز وانکسار ملک كزااور ابيني الممال كوقصور واردكهنامقام عبتهيت كالمثره سيحومحبولوں کے ساتھ مخصوص ہے۔

کسی انسان کا عبو دتیت بیرفت دم اسی وقت پاک وصاف ہوسکتا ہے

جِبْ لِبنے إعمال كوريا اور اپنے احوال كومھن وعوىٰ خيال كرسے ہے هـ تـ مل كركم اور دور شد زر اسال اللہ مار

شْبِ معراج جب نبی اکرم سل الله اور مرات مالیه اور مرات رفیعه رفائز موسے آوجی الله تعکالی اِکن و کیا محکمت دیستم اُسْرِ فُک قال کیا دکہتے رہنست بیج آکین کیا لُعک بُود یکا تھے

ترغمیہ : الله تعالیٰ نے فرمایا الے محدّمین دینے دائے جمہیں کون سائٹرف عطا کرول آپ نے عرض کی اسے اللہ مجھے اپنی ذات کی طرف عبو دیّیت کی نسبت سے مشرّف فرما ۔

محبُوبِ فُداعَكَينه التّية والتّناكى شان عبدتيت

حنور من الدائدة من المرشهاوت راشهدات محسكدا عبده ورسالي محسك ورسالي المرسول ا

له رمالة فيريد كه بني امرائيل كه لنجسن كه رسالة فيريد كه مراجب النيسك

حضرت البراسيم عليه السّلام كى عبدتيت عليه السّلام اللّذَة اللهم اللّذة الله الله قيامت كه دن مجمعة ذليل ورُسوانه كيامائية .

ستحضا عِظْمت الهديكا يه عالم ہے كه أولولعز م بغير براور خليل الله بونے كے با وجود تھى جست اور اپنے وجود كى عدميت با وجود تھى جست اور اپنے وجود كى عدميت اور عجز عبدتيت بيش نظر ہے۔

حضرت مُوسی علید السّلام کی شان عبرتیت نصفرت مُوسی علایشلام مارا اَتفاق سے وہ مرکبیا آپ نے اس خلاف تِوقع بیجد پر اظہار افسوس کرتے ہوئے دُعا مَا نگی :

ر. رَبِ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ الله المررات بير ني البيت الله المرابع الم

انپی جان برطم کیا ہے مجھے جُن دقیطی کو مکہ مارنے سے آپ کا ارادہ محص تا دیگا تھا قتل کرنا تقصود نہ تھا۔ نیز روجہ حربی ہونے کے اس کا قتل مباح بھی تھا لیکن مُوسی عالیۃ لاً کی شان عبد تیت نے خلاف اُولی کو گناہ قرار دیا ۔

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ اِنَّ النَفْسَ لَاَمَّا َهُ بِالسُّوْءَ إِلَّا مَا دَحِيمَ رَبِّيْ لُه مَا دَحِيمَ رَبِّيْ لُه

يعنى ميں اپنے نفس كو ( بالذات ، برى بهيں كہتاكيونكد اسراكيكا نفس بائى كا

حكم دييا ہے سوائے اس لفن كے عب برميرارت رحم فرمائے۔

ابنیارکراعلیه السّلام کے نفوش طُمْنَة ہونتے ہیں گین میں بیسف علیہ السّلام کانس بھی داخل ہے لیکن آب نے مطمئة کوامارہ فرما کر اپنی عبود تیت کا اظہار فرما یا مطلب یہ ہے کہ بیری طہارت اور پاک دائمنی میرنے نفس کا کھال نہیں کر تخلف محال ہو ملکہ یہ حق تعالیٰ کی رحمت کا ملہ کا اثر ہے۔

حضرت الونجرصدين ومنى الله عند ك منان عبدتين منى الله عند ك منان عبدتين منى الله عند ك منان عبدتين منعلق حضور سرورعا لم منى الله عند و المربح ومدرك المربح ومدرك المربح ومدرك المربح ومدرك المربح ومدرك المربح ومدرك المربح والمربح ومدرك المربح والمربح والمربع والمر

مكتوب ع

کی مالت اِنتیار کرگئے تھے

حضرت عمرفاروق رصني التدعنه نيه ابني شهادت كيموقعه ريه اخرى وصيبت بير فرمانی که اینے آپ کوسب سے فراسمجھنا جو اپنے آپ کو بچھا سمجھے گا ہلاک ہولئے

گار آپ کا يرقول مقام حبرتيت كا اظهار سے ـ

صحابه كرام رصنوان التعليهم مبعين ابينه إممال كواس قدرهم والسمصة تنهي كمه انهيس ايبنيرنالنق بونيه كاشمه لهوجا تائتفا اوران برهروقت بنحوف خدا كاخلب ربتاتقار

مضرت بشرحا في رحمنه التدعليه حضرت بشرحافى كى شان عبدست عالم رّباني تصير أب كوحا في كهنه كى وجريمى كرجب آب نے آيت مِباركُنى وَ الْاَرْضَ وَسَسْنَهَا فَيَعْمَ الْمَاهِدُونَ اورزمين وبم ن وش رجهونا بناياب اورم ببت اليها علياني والع بيس يترآب برايك مال طارى بوكيا اور فرمايا كدبشرب مياسي كى كيامجال ہے جواللد کے بچھائے ہوتے فرش رہو آاپین کر بیا ۔ جیانچہ آب شکے یا وُل میلا كرت تعير التدتعالي ني إب كوبدا هزاز نبتاكه زمين كوحكم ويا اسعاز مين جدهر مع بشر ننگے یا وَل گذریں تو اس راستے سے نجات بن گاحب یا کر۔

مانى ئىيىنى بىل ئىنگى باۇل چلىنە والا رېشر مانى كى يەمالت غلىبىمىدىيىت كا

ازیں بر ملائک شرف دہشتند كه خود را به از سگ نه پند كششند

حضرت يشخ عبدلفآ درجيلاني كى ثنان عبدتية رحمۃ اللّٰدعليهُ تقرّبين بارگا ہِ احدتيت كے سروار ہيں۔ ليكين شان عبدتيت كا اظہار ان

الفاظ ميرنسسرمارهي إن ا

ایمان بۇرسسىلاست بەلب گور بریم حنىت بریرخپستى وحپ لا كۇسسا

تجب ایمان کوسلامتی کے ساتھ قبریں پینچائیں گے اس وقت اپنی میں ومالالی کی تعرب کیں گے "

مطلب بیہ کہ ہم اپنے اعمال حسنہ پر اس قدر نازاں نہیں کو فکر ہم خرت سے بینخوف ہوجا میں ملکہ حب بک دندگی ہے اس وقت کک خطرہ ہے عمل کرتے رہنا اور ڈرتے رہنا اسی ولایت کی نشانی ہے۔

آپ کو حمی کمبر بین خسته حالی اور آشفته سُری کے عالم میں یہ دُعا کرتے ہوئے دیجھا گیا کہ اے اللہ مجھے قیاست کے دن نا بینا کر کے اٹھانا کا کہ مجھے اپنے گن ہوں کی وجہ سے تیرسے بندوں کے سامنے شرمندہ نہونا پڑسے " سُبحان اللّٰہ قرآن پاک میں اللّٰہ تعالیٰ نے اپنے ایسے ہی بندوں کی شان میں فروایا ،

وعِبَا دُالرَّحَ مَانِ الدِّیْنَ یَمْشُونَ عَلَی آن صِی هُوناً الله الله صِی هُوناً الله الله صَالِحَ الله صَالِ الله الله صَالِحَ الله الله صَالِحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالِحَ الله صَالِحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالَحَ الله صَالِحَ الله مَالِحَ الله مَا ال

حضرت مولانا ژوم ست بادهٔ قیوم رکمهٔ الله ملیه فرملت بین ، ه پیش گیرسمنت نادسشس و خوبی کمن جسب زیاز آه سیستو بی مکن چُں تر یوسٹ نیستی بیقوب بہشس ہمچو او با گریہ و اشوسب بہشس

متن آرے خرم من اشری می باید آخیت بنی الله ورآید و بین از می می باید آخیت بنی الله ورآید و بین بنی از آن الآشیا فیروکال مهتا بورشر و تقص در میبا تیست من و حال را آئینه در کارست و آئینه ان باشد گر در مقابی شی باشد آمدیس در مرحی قص و شرارت بیشتر نمایندگی خیر و کمال زیاده تر عجائب کاروبارست این دَمّ معنی مدح بید اکر د و این شرارت و نقصان محل خیر و کمال گشت می در می بید اکر د و این شرارت و نقصان محل خیر و کمال گشت می در می بید اکر د و

ترجمہ ، بان خیر کے لیے شرحص تھی ہونا چا جیئے اکہ خیر کی حقیقت واضح ہو جائے اورچنری اپنی ضدول رہا کھا بل چیزول ہی سے پہائی جاتی ہیں خیرو کھال موجود تھا لہذا اس کے بالمقابل شرفت تھی ہونا چا جیئے تھا جسن وجال کو دلینے افہار کے لیے آئینہ کی ضرورت ہوتی ہے اور آئینہ چیز کے مقابل ہی ہوتا ہے یس لازمی طور پرخیر کے لیے شراور کھال تھی ہی تقدر نیا وہ نمایاں ہوگا جیب معاملہ ہے کہ اس فقم ربرائی نے مرح ، تعربین کے سینی پیدا کر لیے اور یہ شرارت و نقصان نیوکھال کے سال ومقام بن گیا۔

# شرح

سطور بالا میں صنرت امام رّ بانی قدّس سرّ و نے انسان کی مدح فرماتے ہوئے ہیں کی جامعیت پرتبصرہ فرمایا ہے۔

انسان درصل اسمار وصفات الله یکاجامع مظهراور جامع بین انسان کا مار کا مین کا مین کا مین مظهراور کا معتبیت انسان سب سے کا مین کا آخری مرتبہ ہے جس کے بعد کوئی چیز پیدانہیں گی گئی۔ آخری خانشارہ ہے۔ آبیت ویل میں اسی خانوم کی طوف اشارہ ہے۔

إِنَّاعَرَضْنَا الْأَمَا لُهُ عَلَى السَّمْوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَابَيْنَ اَنَّ يَحْمِلْنَهَا وَاشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَا الْهِ نُنَانُ إِنَّهُ كَانَ ظُلُوْمًا جَهُولًا لِهِ

ترجمہ ، بیٹ شک ہم نے امانت بیش فرمائی آسمانوں ، زمینوں اور پہاڑوں پر تو ہنوں نے اس کے اٹھانے سے انکار کیا اور اس سے ڈر گئے اور انسان نے اٹھٹ لی بے شک وہ اپنی مبان کوظلمت ہیں ڈالنے والا بڑا اوان ہے ۔

وہ بار امانت حس کو آسمان، زمینیں اور پہاڑ نہ اٹھا سکے اور صفرت انسان نے اس لوجھ کو اُتھا لیاصوفیا رکے نزدیک وہ دخلہ در وجو د"ہے بینی ذات کے اِسما وصفات کی استعداد وصفات کی استعداد وصفات کی استعداد وصفات کی استعداد وصفات کی متعداد متعداد کی متعداد متعداد کی مت

ے جو بار اسمان وزمیں سے نہ أ مُر سكا توكنے عضب كيا دل سندا ألمهالي

الله تعالى نے اپنى المانت كو اسمانوں ، زمينوں اور بہاطروں كے سامنے بيش كيام گرانہوں نے اُسے قبول ذكيا۔

م ایک کثیف دادار کے سامنے اپنا چہرہ پیش کرتے ہیں گر وہ داوار ہمارے چہرے کے مس کو قبول نہیں کرتی ہم کے اكب لطبيف اورصاف شقات أيني كيسائين مثي كرتيه بيريكن وه برتوكونتبل نهیں کرما ۔ بھرائم اپنے چرے کو ایک ایسے آئینے کے سامنے بیش کرتے ہیں جو و ومبتین ہے میلی ایک طرف سے نہایت لطیف صیاف اور حمیکدار ہے اور ورمی طرف سے زنگار الودہے تروہ ائینہ فرر اہمارے چرے کے عکس ویر تو کو قبول کر لیتا کے معلوم ہوا کہ ائیدزنگاری میں عکس سے نمایاں ہونے کی صلاحیت موجود بحرب كا اظهار اس نے ہمارے جرو كے سامنے آتے ہى كروياكيونكمسس ميں لطافت اورکثافت دونوں کاحیین امتنزاج ہے بیمکی کثیف دادار اورصاف کینے میں بیصلاحیت موجود نرخی سی طرح الله تعالیٰ سے اسمار وصفات کا پُرتو اسالوں نے قبول نیکیا کیونکہ وہ صاف و شفّات ائینوں کی شش <u>تصے اور ن</u>رز مینول در پہاراو نے قبول کیا کیونکہ وہ کثیف دیرار کی شاتھیں۔ انسان نے اِسے فرا قبول کرانیا کیونکه انسان آئینه زنگاری کی شل ہے اس کی ایک جہت ملکوتی بطافت رکھتی ہے اور دُوسری جہت جیوانی کٹافت کی حامل ہے یعنی ایک جانب وحرو کالورسے اور دُوسری جانب عدم کی ظلمت ایک جانب علم کی روشنی ہے اور دُوسری جانب جہل کی اریکی، اس طلمت اورجهل نے انسانی ایملنے کوزنگارکا کام دیا حس طرح شر خبركا أنمينه ببعا ورنقص كحال كااورخزان بهاركا اسي طرح انسان التدتعالي كماماً صفات اورجمال وكمال كأ مكينه بيع عب سيح من فكررت كي ملوسة نظر أرسطين لطافت بے کثا ونیے ب لوہ پیدا کرنہیں کئی جین زنگارہے اسیئے نہ یا دہب اری کا

■ مُكَوَّبُ الْمُحْجَةِ ذات و اجب تعالی پیهلے ہی ہرکھال اوٹےن وجمال سے موصوف تقى مبياكم إِنَّ اللَّهُ تَجْمِينًا ﴾ ثُيجَةُ الْجُعَمَّالُ له سے ظاہرہے۔ اس کے مقابلے ہیں نثر اور نقص در کارتھا تا کہ وہ ذات کے وہ جمال كا أيننه بنے كيونكم اكرمكن مير حن وجال ہو اتو ذات كاحن وجمال اسسے نمایاں نہ ہوتا ۔ لہٰذاممکن کے عدم ہونے کی ظلمت نے ذات کے شن وجمال کو اشکار کر دیا۔ بیصدم کا گویا ایک کال ہے کہ وہ آئینہ حمال ہے بہیں سے انسان کے پنی ذات بين شائر ونقص ويجصنه كيضيلت اورمقام عبدتيت كي حقيقت محسلوم ہوتی ہے۔ (واللہ اعلم) ب جر تور کی صدر اورجهول سے مرادب علمی و نادانی ہے يعنى غيرس سيبابل وسيعلم مونا يرمبل مجى ناريجي سي جوعلم كى ضدب اورعلم نؤرس تو گویاانسان کے حق میں طلوماً جرالا کا خطاب ذم (براتی کے پر دسے میں سدح حكومى وجبولى منسستبر فخراند وسيكن مظهسب عين ظهُور اند چر بیشت <sub>آ</sub>ئٹیسے نہ اسٹ ک*یڈر* نب بد 'روئے شخص از مکس دگر شب ع أنتاب از جارم إفلاك نگرد, شکسس جزیبسسر فاکث بزُرگان اندین کستشتندهسیدان به فرد ماندند از تست ریح انسان

متن كبس لاجرم مقام عبدتيت فوق جميع مقامات إشدجيه این معنی درمقام عبدتیت اتم و آلمل ست محبوباں را بارتجام مشرن می سازند مُحبّان بنه وق شهود متلّذ د اندالتذاذ دریندگی رئىس بالمخصوص كمحبوبان ست انس مخبان بمشاهرة محبوب ست وانس محبوبان به بند گیمجبوب دربن انس ایشان را باین وولت می رسانند و باین نعمت سرفراز می سازند شهسواریکه ماز این میدان آن سرور دنیا و دین وسید آولین و اخرین صبیب ب العالمين ستعليمن الصلوت أتمها ومن التحيات الملهاو كيراكهمجن فصنل خواهندكه بابن دولت رسانندأ ورامكمال متابعت واسروعليه لضلاة والتلائم تحقق مى سازند وتبولٍ آن بان ذروهٔ علیامی برند

رت العالمين بي (آب بركامل ترين درُود اور الحمل ترين سلام به وراور (كاركنان تصنا وقدر جس كومض فضل وكرم سے انقس اعمال كے ديكھنے كى، يہ دولت عطافر ما نا چاہتے بين اس كوآن سرور عالم عليہ الضلاة والسلام كى كال درجہ كى سابعت فصيب فرما ديتے بين اور اس متابعت كے وسيلے سے اس كو لمبند مقامات كى د بليز بر لے جاتے ہيں۔

### شرح

حصرت امام ِرّبا فی قدّس سره فرمات بین کی حب سالک ظلوم وجهول ہونے کی ميثيت سيدايني ذات برنظر والتأب كراسي ابنا أب ظلمت وجهل اور شروقف كا مجموعهٔ نظراً تا ہے۔ بیں اس کے بیاے نٹرارت ونقصهان کا یہی مرتبہ خیرو کمال کامقام بن جالك بنا وراس بر مقام عبرتيت كاراز كفل جانا ہے۔ آپ فرمات بي كدلاز مي طور پر عبدتيت كامقام تمام مقامات سے مبندہے اس بیے كداپنی وات میں مقص دیکھنے كا معنى مقام عبدتيت يس كامل طورريا ياجا تاب رابذا حبدتيت كايمقام مجواو كوعل فرمایاجا کا ہے جبکہ مجتبین شہو ذِعلی کے دوق سے لذت حاصل کرتے رہنتے ہیں عبدتیت اور ہندگی کی لڈنٹ محبُولوں کے ساتھ مخصوص ہے اور مجبُوب کے طابی شاہدہ کی تعمیت محبتيل كاحضرب بمقام عببتيت ملوك كأخرى مقام ہے اور شب معراج حضنور سرور عالم مَنَا لَمُ اللَّهُ اللّ ے اس مقام کی اردو کی تھی اس میں اس میدان کے سی شہوار الله تعالی کے عبوب كرم منل فعديدم بالمسكومي الله تعالى لينفصنل كيساته اس دولت مترف فرما ما جاست بي اس كوصفور رور كأنيات من الميلية أم كالما بعث كالمه كي توفيق عطا فرما فيتحابس بهي اتباع سننت وشاعيت كى وجرس وه خوش كصيب محبوبيت ذاتى كامرتبه ماصل كرليما ب مبسيا كُرَّايت كِرِيرُفُكُ إِنْ كُنْتُمْ تَحُبِّنُوْنَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوُّ فِي يُحَبِّبُكُمُ اللَّهُ

سے ظاہرسہے۔

نگوره بالاعبارت بیم محضل اور کالات متابعت کے الفاظ بین مخترف الدی الاعبارت بیم محضل اور کالات متابعت کے الفاظ بین مختر محرب المربانی قدّس سرفی کا این طرف اشار محلوم ہوتا ہے کہ اللہ تقالی نے آپ کو کمال متابعت بنوی علیہ التحیت والتنآر کی بنا پر محض اپنے اعمل سے مقام عبدتیت اور محبوبتیت وائیر کے مرتبع سے لااز اسب بیم تعدید فیلاک اللہ ویونی بیم متن کی تنگ والے کے ریوفراکر اسی جانب سے ارہ کیا گیا محترب والدی کا کہ کا کہ کا کور فراکر اسی جانب سے ارہ کیا گیا

ہے۔ دوالٹنڈ آغلم <sub>)</sub> یہ جاری

مطور بالا میں حضرت امام رّبا فی قدّس سرّؤ نے اُولیار کرام کی دوسیس بیان فراتی ہیں۔ مرو

محبو بين محبوبين محبيين

اورساتھ ہی ان کے مراتب کا باہمی فرق بھی بتایا ہے میں کی قدرے وطیات ورج زیل ہے۔

ر مور محبوبیت کے درجے پر فائز اولیار کرام محدی المشرب اور می می المشرب اور ان کا جذبہ سلوک برمقدم ہوتا ہے اور ا اینے مبدار فیفن میں سرور عالم میں المعنی الم کے ساتھ اشتراک دکھتے ہیں تعنی ان کا مبدار فیفن فیل شان امل ہوتا ہے بیصرات مجبوبیت زائید سے مشرف ہوتے ہیں تعنی مناسبت کے اعتبار سے انحصرت میں المعالیہ بی کے مساتھ اشتراک مناسبت دیکھتے ہیں۔

معموبتيت حت ذاتى كاليك على مرتبد سي مرتبد وحمسات

لے المائدة م

رحیقت محدید سے موسوم ہے اور لطفیل آتباع رسالت علی صاحبہ الصّلوٰت میسر آتا ہے اس مرتبے ہیں عارف مظہر صِفات باری تعالیٰ بن جا آہے اور اس کے عضا و حجارح ہیں غیراللہ کا کچھ حِسمتہ باتی نہیں رہتا یہ مرتبہ قرب فرائض کے بعد قرب نوافل کا خمرہ ہے۔ اس مصلے بین فائز ہونے والاستجاب الدعوات بن جا آہے۔ ایسے ولی سے عداوت اور نیفس رکھنے ہیں مورخا تمہ کا خطرہ ہے۔ نیز اس مرتب ہیں عارف کا قلب آئینے ضافی ہوتا ہے اور اس ہیں حقائق ہضایا بنکشف ہوتی ہیں اور روبیت شکال کا مراقبہ کیا جا آ ہے مندرجہ بالاسطالب حدیث قرب نوافل سے ثابت ہوتے ہیں جیسے میں ہیں ہیں۔

اولیب ایم بیری البیاعظام بهم استلام کے شارب بر بوت بریعینی جس کا مبدار فیصن البیاعظام بهم استلام کے شارب بر بوت بریعینی جس کا مبدار فیصن برزخ اجمال و تفصیل ظرّصفت العلم ہے وہ نوعی المشرب ہے اور جس کا مبدار فیصن تفصیل ظرّصفت العلم ہے وہ انجاب ہے اور جس کا مبدار فیصن تفصیل ظرّصفت العلم ہے وہ انجاب ہی امشرب ہے اور جس کا مبدار فیصن القدرت ہے وہ عیسوی المشرب ہے اور جس کا مبدار فیصن طراف تفسیم خداوندی ہے عیسوی المشرب ہے اور مشارب کا یہ فرق تقدیر از لی کے مطابق نفسیم خداوندی ہے اس میں بندے کا ابنا عمل وخل محجونہ ہیں ہوتا۔ اولیا رعبتین کا سلوک ان کے حب نہ بر مقدّم ہوتا ہے۔

طریقه عالیقشبند بیمیں جذب سلوک پرمقدم ہو ہا ہے لیکن ل طریقے میں جذبہ محبوبتیت کی وجہ سے نہیں یا یا جا آبا بلکہ ہ

اے بخاری صلعے ج

، المربعة عن طربط، إن مرطوعية مسبدية بوون مراه مسبع من أس طريق محمط الب محتب اور مريده مجمود إلى مناسقة من الشار من المسار المستدر ال

جَذْبَةُ مِنْ جَدُبُ الْعَلَى الْحَقِّ تُوازِی عَمَلَ النَّقَلَيْنِ مَعَ مَلَ النَّقَلَيْنِ مَعَ مَلَ النَّقَلَيْنِ مِعَ اللَّهِ مَعَ اللَّهِ مَعَ اللَّهِ مَعَ اللَّهِ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَعْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِلْمُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِلْمُ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ

يعنى اگر معشوق كى طرف. كيست شن نه جو تو هاشت ب جارے كى كوشيں ناكام اور ب فائدہ ثابت ہوتى ہيں۔

حضرت خواج محتصيب در ہندى قدّس مترؤ رقم طراز بي :

از مُردی ا مُرادی وازمجتی تا مجبوبی فرق بسیار است که مردی وقتن است بیارخود و مُرادی بُردن است کشار کشان ولذاگفته اند المسهونیدهٔ دیم لم بی المسموا د کوالسه کرا د کیفیو ب تحقیق ایس مخن آنست که دین طریقهٔ علیه شروع بیراز قلب است که مورد جذبه است مجلان اکثر طرق که شروع بیراز عالم خلق است به ا

ترجمہ: مُریدی سے مُرادی ک اور کھی سے مجبوبی تک بہت فرق ہے کہ مُریدی ہوت اپنے پاؤں کے ساتھ چلنے کا نام ہے اور مرادی کھینے کر سے جلنے کا نام ہے۔ ہی ہے بزرگوں نے کہا ہے کہ مُرید مراد کو وھونڈ تا ہے اور مراد بھا گتا ہے اس گفتگو کی تھیت ہے کہ طریقے نقشہٰ ندید میں سیر قلب سے شروع ہوتی ہے اور قلب ہی جذبے کا مورد و مرکز ہے بخلاف و وسر سے طریقوں کے کہ ان کی سیر عالم خلق سے شروع ہوتی ہے۔

منن مراد از کمال شروقص علم ذو تی ست بان نه آن له بشرارت و نقص مقصف شود صاحب این علم تخلق با خلاق الله دست تعالی شانه و تقدس این علم هم از جملهٔ تمرات و تخلق ست شرارت و نقص را در ان موطن چه مجال جزا نکه علم آبن متعلق شود این علم بورا سطه شهو و نام بخیر محض ست که در خبب متعلق شود این علم بورا سطه شهو و نام بخیر محض ست که در خبب آن همه نظر می نماید این بعد از فرود آمد از نوش مطمئنه است مقام خود -

ترجمہ بی شراورت وقص کے کال سے مراوسالک کاعل و وقی ہے اس سے یہ مراونہیں کہ و شخص شرارت وقص سے تصنف ہو، اس علم والانتھ اللہ تعالی مبل شاند کے افلاق سے تفاق ہوتا ہے ویلقص کا بیعلم مجمی اس کے لئے بافلاق اللہ ہی کا غرو ہے ۔ شرارت اور قص کو اس مے افکا میں ہو اس کے افکا تی اس کے افکا تی گھنائش نہیں ہے کہ علم اس کے افکا تعلق رکھتا ہے یہ علم شہوتا م رکال شاہدہ کے واسطہ سے فیر محصل رسم اسسر محلائی استحال فی کے بہلو میں تمام جزیں شرنظراتی ہیں میکیفیت نفس مطمئذ کے اسے تعام میں زول کر لینے کے بعد ہے۔ اس خیرات قام میں زول کر لینے کے بعد ہے۔ اس خیرات تعلق میں زول کر لینے کے بعد ہے۔

شرح

سطور بالا میں ایک سوال مقدر کا جراب دیا گیا ہے۔

سوال برہے کر تقام عبدتیت پر فائز ہونے والاعار و جب افلاق سوال حند اور فضنا ہے جمیدہ سے تقسمت ہوجا تاہے تو بھروہ کال درجب کے ٹر اور فقص سے کیسے بیتے صف ہوسکتا ہے۔ ؟

سپ نے جاب دیتے ہوئے فرمایا ہے کہ نتر اور تفص کے کمال جواب سے کرنٹر اور تفص کے کمال شرارت و نقصان سے مُراد سالک کاعلم ذوقی ہے بیطلب ہرگز نہیں کہ سالک ہوتا ہے اور اس سے نتر و نقص والے کامو کاص فرر ہوتا ہے کیے نکہ سالک کو لینے ہوتا ہے کیے نکہ سالک کو لینے نئر اور قصص کے بارے ہیں ایک ایساعلم حاصل ہوتا ہے جو ذوق سے عتی رکھتا ہے اس علم کے مرتبے ہیں سالک اپنے عدم ہونے کی حیثیت مِسکنہ کو پہچان لیتا ہے جو نتر و اس عقص کا مبدار ہے اور خیر و کھال سے حض خال ہے اور اس علم سے اللہ تعالی کی معرف کا علم مصل ہوتا ہے جبیا کے عارف کا قول ہے مین تھی ہے۔ نگر تنظیم فی کو تنہوں و کا حصل میں نہیں ہیں ہے۔ نگر تنظیم کے حصے میں نہیں ہیں ہی میں اور کا میں واس کا منہوں ہے۔

جوم تربمکنات پر نظر النے سے ماصل ہو آہے نیز کیفیت علم ذوتی سالک کوعرُوج سے وقت شہود نہیں ہوتی ملکہ نزول سے وقت معلوم ہوتی ہے۔ رواللہ ورُبولم علم

منتن نه انکه برکه جذبهٔ اورسلوک او مقدم ست ارمحبوبین ست کین تقدیم جذبه شرط ست در محبوبیت ارسے در بر جذبه نحوے از معنی محبوبیت حاصل ست که جذب بے آن نمی شود و آن معنی از عواصِ پیاشدہ است ذاتی نبیت نمی شود و آن معنی از عواصِ پیاشدہ است ذاتی نبیت

ترجمہ ایہ بات ضروری نہیں ہے کہ ہروہ تخص میں کا جذبہ اس کے سلوک پر مقدم ہووہ ضرور کی بیات میں ہودہ ضرور کی بین ہر میں ہودہ ضرور محبوبین ہیں ہے۔ ہیں جنہ ہر میں ہیں کے بین کے ایک فتم کے معنی پاتے جاتے ہیں کو میں کے بغیر حذب ماصل نہیں ہوتا اور محبوبہت کے وہ معنی کسی وارض سے بیدا ہوتے ہیں ذاتی نہیں ہیں۔ ہوتا اور محبوبہت کے وہ معنی کسی وارض سے بیدا ہوتے ہیں ذاتی نہیں ہیں۔

### شرح

حضرت امام ربانی قدس بر فرکے فرمان بالا کا مطلب بیعلوم ہوتا ہے کی موبتیت اور تقدّم عذبہ اور تقدّم عذبہ اور تقدّم عذبہ امر مطلق ہے اور تقدّم عذبہ امر مطلق بینی ہر محبوب بیں جذبہ برایت کا مقدّم ہونا ضروری ہے لیکن بیضروری ہیں ارزی ہوں ہوئی میں موبی فرکھ محبوبہت محدّی المشرب کے کہ حب کا مقدم ہوں وہ صرور محبوب ہو کی فرکھ موبتیت محدّی المشرب کے ساتھ مصوب اور بینی ہے۔ البقتہ ساتھ محصوب ہو اور اس میں محبوبہت کے البقتہ البیات کے قابل ہوا ہے اور اس میں محبوبہت کے۔ البقتہ البیات کے قابل ہوا ہے اور اس میں محبوبہت کے۔ البقتہ اللہ مواہد اور اس میں محبوبہت کے۔

محول البیت المحال المجار المحال المح

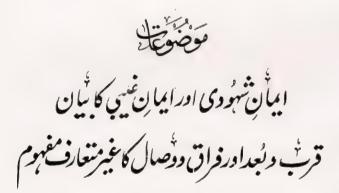
دیدن رُوستے نبی سُود نبود

in the continued trackets arrange





مَعُوْبِائِيرِ عارف بالله صر توجه هي الماجي الله الموي المستران الماج الم



## مڪنوب ۔ ١٠

• عرضداشت احقرا کندمهٔ آنکه مدتی است که از ک احوال خدمهٔ آن عتبهٔ علیه اطلاع ندار دنگرانت

ببيت :

ه جعجه نمیت اگر زنده شود جان عسندیز چون ازان یار جُدا مانده بهامه برسد میداند کهت یان دولت حضور نمیت ه این بسکه رسد ز دور بانگر مُبسرُسم حضر که کرد تارین ناده دوند کرد در در ساس ما

ترحمہ ، حضور کا کم ترین خادہ عرض کرتاہے کہ کا فی عرصہ سے اس ببند بارگاہ کے خادموں کے حالات سے اس خادم کو اطلاع موصول نہیں ہوئی۔ ہرقومت انتظار

ج-

م کیا عجیب ہے کہ مری جان کوسطے مازہ حیات اگر کسس دور کے محبوب کا آجائے سپ ا یہ خادم جانتا ہے کہ یہ آپ کی بارگاہ کے لائی نہیں عہد یہی کافی ہے کہ آئی ہے حب سس کی آواز

شرح

یکتوب مجی صنوت امام رتبانی قدس متره نے اپنے مرشد بزرگوار صنوت خولجہ محد باتی باللہ دہوی رحمتہ اللہ علیہ کی خدمت ہیں تحریر فرمایا ہے۔ اس مکتوب کی ابتدار مس آپ کا بدارشا و "شایان دولت جے نور نمیت " (بیضادم آپ کی بارگا ہ کے لائن نہیں، دوعنوں کا احتمال رکھتا ہے۔ اَوَلاَ ہوسکتا ہے کہ حضور سے فرا د حصنرت خواجہ باقی باللہ علیہ الرحمۃ ہوں اس صورت بیں اس جمعے میں آب اپنے شیخ کی بارگاہ میں اتہائی عجز و تو اضع کا اظہار فرمارہے ہیں۔ نابیا ممکن ہے کہ حصنگورسے مُراد فرات جِنْ تعالیٰ ہو۔ اس صورت میں آپ نے اپنے نُزول کی حالت بیان فرمائی ہے بعنی بندہ عاجز جو نکہ حق تعالیٰ کی بارگاہ ہے بناہ کے لائق نہ تھا اس پیلے قام عروج سے نزول کر کے امیان شہودی سے امیان غیبی کے مرتبے پر آگیا ہے۔ و جا تلند اکمی

نه و ایمان خودی اولیآر کا جصته ہے جوشہود محبوب بیس کفرق اممیال شہو کی رہتے ہیں ان کا نفس اور رُوح مرتبۂ عروج ہیں ہوتے ہیں ان کو تصوف کی صطلاح میں تہلین کہاجا تا ہے یہ بہیشہ امیانِ خہودی کی لذتوں میں محورہتے ہیں۔۔

وَ فِي الْهِ جَسَرَانِ مَوْلِلَ لِلْتُوَالِيَّ لِيَّوَالِيَّ لِيَّوَالِيَّ لِيَّوَالِيَّ لِيَّالِيَ لِيَّالِيَ يعنى ميم مجوب سے وصال كا ارا وہ ركھتا ہوں اور وہ ميري مُرائيَ کاارادہ رکھتا ہے ہیں ہیں اس کے ادا دے پر اپنے ارا دے کوترک کرتا ہوں اس لیے کہ وصال میں اپنے فنس کی غلامی ہے اور ہجر میں اپنے محبوب کی غلامی ہے۔

فع عبائب کاروبارست نهایت بُعدرا قُرب مکن نامیده اند وغایت ِ فراق را وصل گفته اند گریا فی الحقیقت درخمن این اشارت نفنی قرب و وصال کروه اند سنعر

كَيْفَ الْوُصُولُ إِلَى سَعَادٍ وَ دُونَهَا وَكُونَهَا فَكُلُ الْجُبَالِ وَ دُونَهُنَ مُحُيوْفَ وَكُلُ الْجُبَالِ وَ دُونَهُنَ مُحُيوْفَ وَكُلُ الْجُبَالِ وَ دُونَهُنَ مُحُيوْفَ مِلَا الْجُرِمِ وَامِن كَيرَآمَد مِلْ وَرانيزِ مِخْرَالا مِلْرا وَهُ مِريهُ مِي بايد شد ومحبوب رابحبّن محب محب مى بايدگشت آن سروردين و ونياعليمن الصلوات امملها ومن التحيات افضلها با وجود مقام مراديت ومحبوبيت ازمالها ومن التحيات افضلها با وجود مقام مراديت ومحبوبيت المحبر واوه المحبين آمد و ازمريدين گشت لاجرم ازمال اوجبنين خرواوه المحبين آمد و ازمريدين گشت لاجرم ازمال اوجبنين خرواوه المحبين آمد و ازمريدين گشت لاجره ازمال اوجبنين خرواوه المحبين آمد و ازمريدين گشت لاجره مرازمان اوجبنين خرواوه ما المحبين آمد و ازمريدين گشت لاجره مرازمان اوجبنين خرواوه ما المحبين آمد و المنظم المحبوبان رامخل اين بار وشوارست اين قصته بايا ين ندار و محبوبان رامخل اين بار وشوارست اين قصته بايا يت ندار و

له كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مُتَوَاصِلَ الْآخَزَانِ دَائِمَ الْفِكْرَةِ رَشَالُ رَنَى مِنْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمُ اللهُ عَالُوذِينَ الْحَدُمَا أُوْذِينُ فِي اللهِ عَزَوجَلَ ... وَاصْلُه فِي الْجُنَارِيْ القاصد الحسنة مَلاً

ہ قِصَّهُ الْعِشْقِ لَا انْفِصَامَ لَهِا ترجمہ :عجیب معاملہ ہے کہ انتہائے بعد کو قرب کے نام سے موسور کرتے ہیں اور انتہائے فراق کو وصل کہتے ہیں گویا کو دھیقت اس کے ضمن میں ان حضرات نے قرب ووصال کی فنی کی طرف اِشارہ کیا ہے۔

کی مسکرے کہنچوک میں اپنے یا رسک را ہ میں حائل ہیں کوہ وعمن رسک

لبذا ناچار بمیشه کانم اور دائمی فکر لائق رہا ہے مراد کو بھی آخرکار فرید کے اراد ہے

کے ساتھ مرید بہوجا ناچا ہینے اور محبوب کو محبت کی محبت ہیں محبت کے ساتھ
محب بن جانا چا ہیئے ، دین و ڈنیا کے سردار آخصرت علیمن احتمالات احمالات احمالات احمالات احمالات احمالات اور افضل ترین تحیات بول)
من الحقیات افضلہ الآب برکا مل ترین سلولت اور افضل ترین تحیات بول)
میں سے بوئے بیں اس بیے راویان ماریث نے آب کے حال کے تعلق مطرح میں سے بوئے اور وجو بیت تھے اور محبوب کے مال کے تعلق مطرح میں سے بوئے کو را یا محالات المحملة منظم اللہ منظم اللہ

ع نہیں ہے انتہائے قسے عشق

شرح

عارف جبء وج و وصال کے مرتبوں میں پینجیا ہے اور حق تعالی کی قدستیت اور اس کی ذات سے اپنی عَدمِ مناسبت طلاحظہ نحر آ ہے اور جان لیستا المنت المحق المنت المحقول المالي المحقول المالي المحقول المالي المحقول المالي المحقول المالي المحقول المالية المحتوال ال

ہے کہ واجب اور مکن کے درمیان کوئی مناسبت نہیں تو اس کو یہ قُرب و صل بعد و فراق نظر آ نا ہے اور اس عدم مناسبت کی بنا پرفکر و عمل کی منزلوں میں گم روست ہے اور وصال کو محال جان کر فراق ہی کو وصال سے تعبیر کر نا ہے۔

موسلِ اُو را مسال می توسیف میں توسیف میں ہے۔

قرب اُو را وصال می توسیف

كسى طالب حق في أورى اور الجركة على كهاسب

َ اَنْ حَقَّ عَن نِیْ وَالطَرِئِقُ بَعِیْدٌ وَالْفُرْبُ بُعُن وَالْوَصْلُ هِ جُرُّ وَبِیَدِ الْحَنَّ وَقِیْلَ وَقَالَ لِهِ

ترجمہ ، فدا برتر وغالب ہے اور راستہ دشوار ادر لمباہے اور اس کا قُرب بہت دُور ہے اور اس کا وصال ہجرہے اور خلوق کے انقامیں صرف قبل و قال ہے۔

مبت کی ان کیفیات کا برجرا اٹھا نامجبول کا کام ہے نہ کہ بربر ل کا صنور سے دو مالم من الدون کے برنکہ آپ کی ہتعداد من الدون مجرب و مُواد ہونے کے با وجود مُجِب اور مُرید جی تھے جونکہ آپ کی ہتعداد عشق سب سے زیادہ تھی جب آپ و است کے ساتھ عدم مناسبت ملاحظہ فر ماتے تو مُشکر اور دائم ہم کون ہوجائے کیونکہ ہی عدم مناسبت ہی آپ کے لیے ہجرو فراق کا سامان تھا جو آپ کے لیے ہجرو فراق کا سامان تھا جو ہوجو مجرفہ بیت آپ اس کے کیا حقہ متحل نہ ہوسکتے تھے ۔فالباً اسی لیے آپ نے فرایا کہ متبنی ایذ المجھے دی گئے ہے آنی ایڈ المحسن کی کہنیں دی گئی ۔ (دُاللہُ علی)

اس کمتوب میں بہلی حدیث بعبول علامہ محد مراد کی رحمة الله علیه ، شمالل تریذی بہبقی ، طبرانی ، و لا مل ،

تخريج إعادميث

ابنِ ماکر و شیب رہ میں ہے۔

دوسری صدیث کوابن عدی ، ابن مساکر مصنرت جابر ضی الله عنه سے بایں العن ظلائے ہیں ۔ العن ظلائے ہیں ۔

مَا أُوْذِى آحَت كُمَا أُوْذِيْتُ اوراحمد، ترمذى اورابن مبان معزرت استرونى الله عند سے مرفوعاً ان الفاظ كے ساتھ لاتے ہيں ۔ معزرت استرونى الله عند سے مرفوعاً ان الفاظ كے ساتھ لاتے ہيں ۔ لَفَتَ دُ أُوْذِيْتُ فِي اللّٰهِ وَ مَا يُؤَذِي آحَت كُوَ وَ أُخِفْتُ فِي اللّٰهِ وَ مَا يُخَافُ آحَت كُدُ ۔



مُعَتَّرِبُ لَيْهِ عارف بِاللَّهِ صَرْفِرِ جِهِ مِحْمِلِ لِلْاقِ بِلَى لِلَّهِ مِنْ الْمِرْضِ عارف بِاللَّهِ صَرْفِرِ جِهِ مِحْمِلِ لِلْاقِ فِي لِلَّهِ مِنْ الْمِرْضِ الْمِرْفِ



عوصوعات عارف كامقام استقار وعبُرر فائے عبن از كى تحب ، تنزلات خِمسُه سلسبِ ارض ، جذبہ يلمِ رضا



### مڪنوب - اا

منت عرضه داشت كم ترين بندگانِ احمد أن كه مقاليم سابقاً خود را دران ديده بو دجوان حسب الامرالعالي بإزملا حظه نمودعُبُورِغُلفارِثلاثه رضَوانُ النُّدِتِعاليْ ملَيهُم در آن مقام در نظرآمداما چون مقام وسيتقرار در انجا نداشت ور دفعه اوُلی نبظرنه درآمدند حیاتکه از امئهٔ اہلِ ببیت غیراز اِما مین و امام زين العابدين رضي الله تعالى عنهم المبعين ورآن مقام انتقرار وثبات ندارندسي عبورے دران واقع شدہ است بدقت نظرميتوان يافت وتأنكه اوّل خود را بآن مقام ناسب ميدييب مناسبتي دونوع ست يكة أنكه بواسطهً عدم طهور طریقے از طُرق بے منائبتی طاری میشود حون راہے ! و نمودندان بےمناسبتی برطرف میشود دیگر بے مناسبتی طلق ست کہ ہو ہے وجہ قابل زوال نیست ۔

رجد ؛ عربضه . آپ کے کم ترین خادم احمد کی گذارش ہے کہ جس مقام میں پہلے اپنے آپ کو دیجا تقام جس بہلے اپنے آپ کو دیجا تقاجب حصنور کے ارشاد گرامی کے مطابق بھراس کو ملاحظہ کیا تو خلفا مر للا الله وصفرت ابو بحرصدین مصنوت مجم فارون اور حضرت عثما جنی وضی الله تقالی عنہم کا گذر اس مقام میں اقامت و قرار نظر میں رکھتا تھا اس بیے بہلی و فعد میں بیر حضرات نظر مذا سے جبیا کہ آئم ترالی بیت

میں سے صفرت امام صن وامام میں اور امام زین العابدین رضی التد تعالیٰ عنہم جمعین کے علاوہ دور ہے آئر اس مقام میں قرار و تبات نہیں رکھتے سکین ان کا گذر اس مقام میں قرار و تبات نہیں رکھتے سکین ان کا گذر اس مقام میں واقع ہوا ہے اور بیر جو ابیت آب کو اقل اس مقام کے نام ناسب دیکھتا تھا تو یہ بے مناسبتی دوقع کی ہے ایک بیر کہ طریقیوں میں سے سی طریقے کے ظاہر نہ ہونے کی وجہ سے ب مناسبتی طاری ہوتی طریق ہوتی دور ہوجاتی ہے اور حد اس کو راستہ دکھا دیا جاتا ہے تو وہ بے مناسبتی دور ہوجاتی ہے اور دور ہی جاتی ہے۔

#### شرح

حضرت امام ربانی قدس سره اپنے شیخ کی خدمت بیں عرض گذار ہیں کہ آپ
کا کمتر بن خادم پہلے جس مقام ہیں اپنے آپ کو دیجھا کر اتھا وہ مقام ذرا محتلف تھا
لیکن جب آپ سے حکم سے دوبارہ اس مقام کو ملاحظہ کیا تو آپ کی توجہ کی برکت
سے خادم کو اسی مقام ہیں خلفار ثلاثہ (حضرت صدّی آبر اکبر احضرت فاروق عظم اور
حضرت عثمان غنی صنی الله عنهم اکا عبور نظر آیا اسی طرح آبر الله الله بین سے حضرت
امام سن احضرت امام سین اور صفرت امام زین العابدین صنی الله عنهم جمعین کا گذرهبی
اس مقام میں شاھدہ کیا ابتدار میں اس مقام سے جو بے سنا مبتی معلوم ہوتی تھی وہ
آپ کی توجہ ورہ خائی ہے وور ہوئی ہے کیونکھ بے سنا مبتی دوطرح کی ہوتی ہے ایک
وہ جوطریفیۃ ظاہر نہ ہونے کی وجہ سے ہواور دو دری وہ جو معلق ہواور کو ملی سے جو اور کو میں ہوتی ہواور کو میں کو دری کی میں کو ایک ایک بھی زائل نہ ہو۔

اب اس امرکی بین وصناحت فرطت عارف کامضامی اور وصناحت فرطت عارف کامضامی آب اس امرکی بین وصناحت فرطت اس مقام مین ستقرار و اقامت ندر دهتا تقایا وه

جو البیت نا جوار اس مقام میں تقرار ندر کھتے تھے کیونکہ عارف دومقام رکھتا ہے۔ ایک مقام ہے تاریک مقام ہے تاریک مقام ہے تقرار اور دور ارتقام عجور ۔
مقام ہے تقرار اور دور ارتقام عجور ۔
مقام ہے تعقرار کہ کا اسم فرتی اور اس کا سبدار فیض اس کا مقام ہم قرار کہ کا اسم فرتی اور اس کا سبہ تو تا ہے ۔
مقام ہے تعقرار کو جہاں اقامت و قرار نہ ہو اور و ہاں سے صوف مقام ہے جو اس کا گذر و اقع ہو اس کو مقام عجور کہتے ہیں ۔
مقام ہے جو اور یکھی مکن ہے ایک کم مرتبے کا ولی سی کا اینا مقام ہم تقرار اس ولی بین مربر است قرار سے عبور کر سے کیون اس کا اینا مقام ہم تقرار سے عبور کے سے نیجے ہوا ور یکھی ہم کن ہے کہ اولیا رکوام ، ابنیا عظام سے مقام ہم تقرار سے عبور کر سے بہت شیجے ہوا۔ سے تبور کو سے بہت شیجے ہے ۔

منتن وراه باكرموسل آن تقام اند دواند كران الت نداز دمين ورنظر ورائي آن دوطر لي طرلق درگيرظا هرنمی شود يک و درامته مه د شتن و منایت خود رامته مه د شتن مت درخيرات با قرت منزب و گرضح بت بيخ مسلسل مجذوب ايشان طرلق آول را بقدر است به سيخ عمل از اعمال خير لوقوع منايت فرموده است به سيخ عمل از اعمال خير لوقوع منی آید مگر آنکه خود را دران عمل متهم ميساز د ...... الی آخر ه

ترحمه: اور جر راستے اس مقام کے بینجانے واسے ہیں وہ صرف دوہیں اور ان سے علاوة ميسرا كونى راسته نهيربعني ان دور إستوں كے علاوہ كونى اور راسته ظاہر نہيں مآ ایک بیہے کہ اپنے نقص ونقنور کو دیکھے اور قوت جذب حاصل ہونے کے آجود تمام نیک کاموں میں اپنی نیتوں کو تہمت زوہ خیال کرے دوسرے کی کالم کمل صاب مِذَكِ عَبِيحَ كَ صُحبَت ماصل كرناحس في الوك كو بُوراكيا جو حِق سُجانه وتعالى في صنور والاكي عنايت مطفيل بهلاراسته انتعداد كيمطابن حنايت فرمادياب اسخادم سيح نيك عمل بعبي وقوع بين أماسي اسعمل بير اپنے آپ تو آہمت زوہ تصور ا كرما موں بكة حبت ك اپنے أور جيزت مى تہمتيں ندلگاؤں بے آرام وب مين رہا ہوں اپنے متعلق اتناس بھتا ہوں کہ مجھے سے کوئی عمل ایسا واقع نہیں ہوتا جو کہ دائیں طرف کے فرشتوں (کراماً کا تبین )کے تکھنے کے قابل ہواورجانتا ہوں کرمیرا دائیں طرف كاعمال نامه نيك عملول سيخالي بداوراس ك تكفيغ وال فرشق بهيار اور فارغ ہیں میرے وہ اعمال بارگاہ تق (میں میشیں ہونے) کے لائق تحب ہو سكته بن اور براس خض كوجودنيا مين بيخواه وه كافر فرجمك اور ملحد زنديق بي كيو نه ہوا پنے سے کئی درجے بہتر مانتا ہوں اور اپنے آپ کو اُن سب سے برتر خیال کرما ہوں۔

## شرح

فسطور بالا میں حضرت امام ربانی قدس سترہ نے وضول الی اللہ کے دومقام بیان فرمائے ہیں۔

یں اس کے ایک اللہ کا ایک اللہ کا اپنے آپ کو اللہ کا ا وصول اِلی اللہ کے دوم قام کا مرکز کی مخبت حاصل کرنا وصول بن جائے۔ دُور اِرتام کا مرکز کی مخبت حاصل کرنا

ایینۓ عمال کوئہمت زدہ اور ناقص جاننا وضول کا مرتبہ ہے حضرت امام رتباني فذس ستره نسيبهان بك فرما ديا كرميس كافر فرنگ اور ممحد وزندبن كوهمي اينے سيكي درجے بہتر جانتا ہوں . آپ كايہ فرمان طاہم قابل اعتراض معلوم بوتا بيات وراصل بياب كابيان مال بيد نركم بياب فتيده ئىز يەكلام تقام عبدىيات كەمھارەن سەسى أولىيا بىجىۋىين تقام عبدىيت يرمروزاز ہونے کے بعد طب اپنی بشرتیت پرنگاہ ڈالتے ہیں تو انہیں اپنا وجود عدم محض ہونے کی وحہسے راسرطلمت وکٹافت کامجتم معلوم ہو السبے اور فروج باطنی کی مالت ہیں جب عالم خلق کے لطائف بہت بنیجے رہ جائے ہیں توعالم أمرے وُوری کے بب ان کوعالم خلق ماریک وسیاہ بیش نظراً نکسے تووہ اس حال کامشاہدہ کرتے ہوئے بکار اُسٹھتے ہیں کد کا فرفزنگ بماری نسبت زیا دہ نوانی معلوم ہوتا ہے اس عار فانہ كلام كى مزيد وصناحتُ تَم لين محتوب ١٩٥ كى شرح ملاحظه فرمائين . كامل وكتل مجذوب سالك يثنخ كي صحبت ذرائعيّه وصول بيء كُوْنُوا مَعَ الصَّادِقِينَ لَهُ مِن ا*ى طرف الثارقي* ورسالت على صاحبها الصلات بين هي سب كجيدياً يا يشيخ كامل کی شجست انمبیرکا حکم تھتی ہے۔ اہل اللہ نے بہیشے شخیست شِیوخ کا التزام دکھاہے مصن كتابي رسط يليني سے آجنك كوئى كامل تكل نہيں ہوا صِحبت بينخ مِفعال الطراق باس علم مى راهتا ب اورمل كاشوق عى بدا مواب مشارخ سے مبت ادر حقیدت کے اُرابیطے صحبت سے ہی پیدا ہوتے ہیں . مُرید کو محبت او مُحبت کے اندانسے کے مطابق مرشدسے نیمن ملتاہے اوضحبت سے ہی جمعیت قلب اورصفائی باطن نصیب ہوتی ہے جُمعیت سے صحریفے پختہ ہوتا ہے اور فن اورصفائی باطن نصیب ہوتی ہے جُمعیت سے صحریفے پختہ ہوتا ہے اور فن فی استیخ کی منزل ملتی ہے۔ مخبت نیکال اگر کیس ساعت است ہمتر از صدر سالہ فرصد وطاحت است لیکن میہ امر ضرور ملحوظ رہے کئی نیخ الیا ہوجی سے کم از کم سلوک طے کیا ہو ور نہ وہ نافس ہوگا اس کی صحبت بے فائدہ اور ہے کار ہوگی۔

وجبت جذبه هرحيد بتمامي سيرإلي التدتمام شده بودأماً بنعضے ازلوازم وتوابع آن ماندبودند که درمن فعالیکه درمركز مقام سيرفى التدواقع شده بودتمام شدند واحوال آن فنارا درعرصنداشت سابق تغصيل نوشتة است ومي بايد كهضرت خواجة أحراركه نهايت اين كار را فناً كفت اند ہمان فنا بودہ باشد کہ بعدار تحلّی ذات تحقق سیرنی اللہ متحِقَق شده وفيار ارا ده همراز حملة شعب بهان فياست ـ سيكيس راتا بمكردو أونس نيست ره در بارگاه نسب يا

ترمبر ، اورجذبر کی جہت اگرچ ئیرائی الٹرکے تمام ہونے کے ساتھ پوری ہوگئ تھی نیکن اس کے مین لواز مانت وہ تعلقات رہ گئے تنصے حبکہ اس فیاسے خمن ہیں

جومقام سئيرإلى الله كمركزمي واقع بوئي تقى بيست بوسكة ادراس فما كم عالات اس فادم نے پہلے ویضے کیں تضیل کے ساتھ لکھ دیتے ہیں اور حضرت خواجہ احرار ور قدس سرونے جواس کام کی نہایت کوفنا کہاہے ہوسکتا ہے کہ یہ وہی فنا ہو عرفحاتی ذات اورسَير في الله يحصلن وتعيقى حصول كربعتفق مولي مواور فناسر اراده همي وسے سے برق اسی فناک ایک شاخ امتم ہے۔ موند کوئی شخص جب کم حسب مولا میں فنا

يا ښير سکتا وه را وکس ديا

#### شركح

منطور بالامير حضرت امام رباني فترس سروا بيني مرشد برحق حضرت خوامب باقی بانشر رحمت الدهلید کی خدست اقدس میں دور آن سلوک طا بر ہونے والے احال باطنيه كي قف يلات ميش كررسه مين اور اس امركي وضاحت كررسي مين كسلسله نقشبنديدين مزربري ببلي جهت اجس كوجذبة بدايت ياجدة أولى كهاجا كأب المكل جوب کی ہے اور پیکمیل سیرانی الله فی الاشیار کے تمام ہوتے ہی ماصل ہوگئی تقی اوراب مذبه كي دُوسري جبت مجيمتير آگئي بيعس كوجذ لينهايت ياجذ بزناني كهاما ما ب حرئيرن التدمين ماصل مونى ب اورى وه مقام فنا ب مبر مين عارف كوذات بلاكبعث كاوصول الكبيت ماصل موجاتا بيع بحضرت خواجرعبيد التداحرار فكتس مثرو نے اسی مذبر نہایت کوفاسے تعبیر فروایا سے اور فالباً اس سے مُراد وہی فناسے جرنخاتی وات اورسیرنی الله کے میں تصول کے بعد میسراتی ہے اور اسی فنار کے دوران سالک کوفائے ارادہ مجی حاصل موجاتی ہدجراس فناکی ایک متم ہے۔فاری شعریں ہی حقیقت وامنے کی گئی ہے عربی شاعرنے میں اس مفہوم کی بواقعک ریب

البيت الله المرابع المحالي المحالية ال وَمَنْ لَتُمْ يَكُنُ فِي حُبِّ مَوْكَانُهُ فَانِياً فَكَيْسَ لَيِ الْمِصْدِياهُ سَيبِيلُ اسى فنا اورسَير في الله كي تحيل كانام بقار كها كيابيداور فارسى شعريين "ره در بارگاه" اورعر نی شعرین " نِنْ بَعْرِ مَا هُ سَنِیلٌ "سے مُراد بقاہے ۔ مِذْنِهُ أُولُ سالك كوسيراليَ الشُّرينِ هاصل بوجا مّا بيه إس كومذيرٌ بتينتميرته تقشنبذريهي كتفي بيركو يحربه جذبه صرف سلساء تقشيندر كافاصة جذبة ثانب سالك كوسيرفي التدمين تنيسرا بأب اؤريه حذمه بتندنميره تمام سلاسل طربقت میں مشترک ہے۔ مرکز مقام سیرفی الله صنوت الم ربانی فدس سِترہ نے مرکز مقام مرکز مقام مرکز مقام مرکز مقام مرکز مقام ہوسکتا ہے اس سے عارف کامبدار فیفن مراوہو یہ بيح ممكن سبي كمر آب سنے اس سے مرتب واست مُراد ليا جو۔ واللہ عَلم صُوفِيا سكة زويك فَلتّ اراده كي تعربيت بيه. فنأست اراده ٠٠ ارا دُهُ خورا در ارا دُهُ حِنْ مَلِّلُ وَعَلَا كُمِ سِانَمْنَن ٬٬ سالک کا اپنے ہرارا دے کوئ تعالی کے ارا دے میں محم کردینا بینی مردوں کی طب رح سالک کی برخوابشس کا زائل ہوجانا فائے ارادہ ہے۔

> منتن تفاوُت نبیت إلاّ در عُبور و مقام و مُرور و ثبت ترجمه: فرق عُبور و عتب م ادر مُرور و ثبات کا ہے۔

شرح

لوم ہونا چاہیئے کہ یہ وہی بعض عبارات كوغلط مفهُوم كاجامه بيبا كر تجيه تنرىپندوں نے حضرت امام ربانی رحمۃ الته عليه كي خلاف جها تكير بأوشاه كو بحراكا يا نقا اور اس ني آب كو قلعه كواليارمين قید کردیا تھا بصنرت امام رباً نی رحمت الله علیہ نے اس محتوب کی مذکورہ بالاسطور میں حضرت خواجہ باقی بإلله و ملوی رحمته الله علیہ کے ارشا دکی تعمیل کرتے ہوئے اپنے میرو مُعلوكُ كَيے دوران حَرَّ باطنی احوال ومشاہدات طاہر ہوئے تحریر فرمائے ہیں حن میں آب نے فلفائے راشدین کے مقامات عالیہ ہیں اپنے ڈوحاً نی عجُور کا تذکرہ فرماً یا ہے اورساتھ ہی وصناحت بھی فرما دی ہے کہ ان مقامات میں رسانی حاصل کرنے واليسالك اورصاحب مقام بزرگ ميں فرق ہے اور وہ يد كھ صاحب مقام كوں بجكمرا قامت وقرارهاصل سهدادر دوسرون كوصرت عبور ومرورماصل بومالهد ومصن مشاهده بعدريل فغيلت نهيل أظاهرب كمصاحب مقام واستقرار، صاحب عبُور ومُرورسِت أَضْل بوناہے آب نے تخریر فرمایا ہے کہ " خود رہست بانعكاسُ المنقام رحمين ونقيش يافت" بعنى اس فادم نے اپنے آپ كومقام مجوبتیت کے پُرِ توسے ریکین ونقش محموں کیا جرسید ناصدیق اکبرونی اللہ عند کے مقام ہے قدرے بلندی برتھا۔ اس ارشاد میں بھی آپ نے بینہیں فرما یا کہ ہیں اس مقام کرشمکن ہوایا اس میں داخل ہوااور پیھی نہیں فرما با کدئیں نے اپنے آپ کو اس مقام سے زمگین یا یا بکہ بیفر ما یا کہ اس مقام کے پُرِ تُوسے اپنے آپ کو زمگین تحسوس کیا۔ اہلِ علم پر واضح ہے کہ وصمول مقالم میں اور پر تومتقام سے رنگہن ہونے

چنانچ حبب جهانگیر با دشاه نے حضرت امام ربانی مجدّد العث ثانی قدس سرہ کی فدست میں ملاقات کا اشتیاق ظاہر کرے ایک مخم امرجاری کیاجس میں آپ کو ہنے خلفار وصاجزا دگان تشریف لانے کی دعوت دی کئی اور حاکم سر ہند کو تا کید کی کھیں طرح ممکن ہو مصنرت مجدّد فریس سُرہ کو بہاں بھجواؤ۔ آپ نے پہنے ہی باطنی طور پر اطلأع بإنحر ابين أبل خانه وخلفار كومطلع فرما ديا تضاكه اس سيقبل ببده كي جمالي ترسبيت ہوتی رہی ہے اب عبلالی ترسبیت کا بند وسبت ہونے والاہے اور پایتلا وتكليف صرف ايك سال سے ياہے ہے بعداراں آرام ہوگا۔ آپ نے قصنا وقدر کے فیصلے کے مطابق جہانگیر کے پاس جانا قبول فرمالیا کجرہنی آپ شاہی دربارکے قريب يهنيخ توآپ كاشامي مهمان كي حيثيت مسخير تقدم واستعبال كيا گياجب آب دربار میں تشریف سے گئے تو آب نے آداب شاہی رج فلا ن بشرع تھے ا دا نہ فرملئے سکین اس کے با وجود با دشاہ آپ کی پُرِ الزار خصیتت اور بارتھ بیتیت سے بے حدمتا تر ہوا اور اواب شاہی بجا نہ لانے پر ذرائعبی معترض نہ ہوا۔ یہ صال دیکھ محرور باری اورخوشامدی لوگ بهت جیران موسئے ایک ماسداور شکر وزیرنے کہا بادشاہ سلامت! يه وهي تض سهيمواييني آب كوانبيا بكرام سه الفنل با تأسه اورهزت سيدناصتديق اكبرضى التدعند سيخبى الينة آب كوبهتر واضنل مجمتاب رمعاذالله اور صنرت کایم محتوب حرامی دمحتوب منبراا بھی پیش کیا جہا تگیر کے انتفسار برآیے فرما ياكر وعض صفرت على المرتضار صنى التدعمنه كوحضرت الويجر صتديق دصنى التدعنة سے اضنل مبانے وہ دائرہ اہل منت وجماعت سے فارچ تھا جا آہے جے مبایکہ كونى اليف إب كوحضرت صديق رصنى التّدعنه سع افضل سبه اوجب عباري لوگ بیمطلب سیمھے ہیں وہ بیرعروجی کا حال ہے کہ اکثر حکوفیار کو ابتدار حال ہیں بسي بطياع مقامات كى يرسير عاصل موتى بداور تعير ابين المحام تا مات بین مثلاً در بارشاهی می*ن که هرانگ* امیر، وزیر اورشهزاده کی **مگرمقر**ر به اگرشاطان

کی خض کوصلی این پاس دراسی دیر کے بیے طلب فرمائے اور اس سے رگوشی
کر کے بھراس کو واپیں کر درج نوکھ وہ خض تمام اراکین بلطنت کے مقامات سے
گور تا ہو آ اسے گا تو اس سے بیرضر وری نہیں کہ وہ خص ان کا ہم رُتبہ وہم درجہ ہو
گیا ۔ یہی حال اس عُروج باطنی کا بھی ہے علاوہ ازیں میں نے اس کم توب میں جو بیہ
لکھا ہے کہ میں نے اپنے آپ کو اس تقام کے عکس سے رگین بایا اس کی مثال اس کے مثال ہو تا ہے کہ اگر کوئی نیز آفا ب کے عکس سے روشن ہوتی ہے مگر یہ نہیں کہ اما ا افتاب ہو گئی «زمین ہر روز آفتاب کے عکس سے روشن ہوتی ہے مگر یہ نہیں کہ اما ا کوزمین آفتاب ہوگئی "غرضیکہ حضرت کے معقول جوابات سے با دشاہ کو ایسی سے ہوئی کہ اس کا عُصَّة و در ہو گیا ہے

چنانچ اس محتوب کی انہی عبارات سے کئی علمارِ وقت کو بھی دھوکہ دیا گیا جو بلاخقیق حضرت کی مخالفت پر کر بستہ ہوگئے گرحب حقیقت وحال واضح ہوئی توان میں سیعض نے توبہ ومعذرت کرلی جیسا کہ حضرت شیخ عبد انحق محدث و مہوی رحمتُ اللہ علیہ کو بھی پہلے علط فہمی ہوگئی تھی کیکن بعد میں ازالہ ہوگیا تھا ،حضرت امام ربانی فرایا ہے!

" شخصے که خودرا از حضرت صدیق صنی التّدعنهٔ انضل داندام اواز دومال خالی نمیت زندیق محض است یا جا بل صوف ......
کسید حضرت امیررا افضل از حضرت صدیق گوید از حرگهٔ المسنّت می براید کلیت که خودرا افصنل داند"که

یعنی و چھٹ ہو اپنے آپ کو حصارت صندیق رضی اللہ عنہ سے افضال مبانے اس کاحکم دومال سے فعالی نہیں یا وہ زندیق محصن ہے با جا ہل صِروف وہ شخص حوصر البيت الله المرابع الم

امیر علی رضی الله عنه کوصفرت صدّیق سے اضال کہے المسنّت وجاعت کے گروہ سے کا جاتا ہے تو کا مسلّ ملنے ۔ سے کل جاتا ہے تو بھراس شخص کا کیا صال ہے جو اپنے آپ کو ان سے اضال ملنے ۔ اس انسکال کے مزید صل کے لیے حبلدا قول محتوب ۲۰۲،۱۹۲ ، ۲۰۲ کا مطالعہ کرنا چاہیئے۔

منتن دگیرترک استخال این مل مرضی نبی نماید کیف وحال آنکه عالم گبرداب ضلالت عزق میشود و کیے که درخود قوت بر آوردن ازان کرداب می یا بر مگیونه خود رامعاف دارد ایخ

ترجمہ: ایک اور عرض یہ ہے کہ اس عمل دارشاد و تبینع بین شعنول ہونے کو ترک کرنا بسندیدہ نظر نہیں آ نا اور کیسے ببندیدہ ہوسکتا ہے جبکہ حالت یہ ہے کہ دُنیا گراہی کے
جسنور میں عزق ہور ہی ہے اور حجم شعاف و معذف و سمجھ سکتا ہے ؟ لیکن شرط یہ ہے کہ
یا تاہے وہ اپنے آپ کو کس طرح مُعاف و معذف و سمجھ سکتا ہے ؟ لیکن شرط یہ ہے کہ
بعض خطرات و خواہشات جو اس عمل کے دوران ظاہر ہموتی رہیں ان سے استغفار
کرنا اپنے اُور بضروری سمجھا جائے آسی شرط سے رضا میں و اضل ہوجائے گا لیکن
حضرت خواج بھت شبند اور حضرت خواج علاؤ الدین عظار قدیس اللہ تعالیٰ اسرار مُعاکے
بارے ہیں اس شرط کا لی اط کے بغیر ہی یے عمل بیاندیدہ ہے۔

#### شرح

مطور بالاین حضرت امام رتبانی تُدَسُّ سرّوْ عمل ارست و کی اہمیّبت اس امری وضاحت فرملتے ہیں کہ وعظو نضیحت اور تبلیغ وارشاد کاسلسلہ ترک کر دنیا رضائے الہی کے فلا ن معلوم ہو تاہے

کیونکه اس وقت دنیا سخت فنم کی گراہی میں متبلا ہے بیختص لوگوں کورا و ہا ایت پر لانے کی انتعداد رکھتا ہے وہ کئی طرح مجی عُذراور معافی کاحق نہیں رکھتا۔

آپ فرمات بین که وعظ و تبییغ کے مل کا اللہ تعالیٰ کی رضا کے مطابق ہونا ہی مشرط برسنی ہے کہ مالک اور تبع وساوس فسانی شلاشہت ہ کئی طلب جاہ اور ہو وحضرہ سے خالی ہویا کم از کم ان وساوس سے ہتعفار کرنے کولینے لیصنروری سمجھے ناکہ تدیکی رضا کے مقام میں داخل ہوجا تے جونفوس فرسیز کی نفس سے مشرف ہیں ان کا مہرا خالف تنا لو جو اللہ ہونا ہے ان کی وعظ و تبییغ بھی اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں عبول ولیندیدہ ہوتی ہے مثلاً مصرت خواجہ نواجگان شاہ تقشید کاری اور صفرت علا دَالدین عظار دُوتی اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ واحمل اللہ میں برگزیدہ ہمتیاں جن کانفس طمینان کی دولت سے مالا مال ہے اور عمل افعال میں برگزیدہ ہمتیاں جن کانفس طمینان کی دولت سے مالا مال ہے اور عمل افعال میں برگزیدہ ہمتیاں جن کانفس طمینان کی دولت سے مالا مال ہے اور عمل افعال میں برگزیدہ ہمتیاں جن کانفس کی نزل برفائز ہو کو تو ہو ہوت سے شاد کام ہیں غیر شروط طور بریان کے اعمال رصنا ہے اللی میں داخل ہیں۔

ی پر سر ابنی دات کے بارے ہیں آپ نے جو یہ فرمایا ہے کہ اس کمترین بلینہ مسیر استان فادم کا بیمل تھی رضا میں داخل ہے اور تھی نیچے ہی تھی اربہتا ہے در اصل آپ کا یہ فرمان کسرفنسی و تو افتع پرمحمول علوم ہو تا ہے۔ یہ ہم ممکن ہے کہ آپ کا یہ ارشاد حقیقت پر مبنی ہوا ور آپ اس وقت مسلوک کے مُروجی مراحل طے کررہے ہوں روالتُد افکام ، واضح ہوکہ دوران ہوکہ جب سالک بالمنی عُردج اور رُوحانی بلیغہ مخرج کے سیری ہوکہ دوران ہوک جب سالک بالمنی عُردج اور رُوحانی جب بلیغہ مخرج کے سیری ہو جاتے ہے دیادہ بولنا اور خلق سے مہاج کی تعمیل جاتے ہے تاہم میں ہوجائے ہے دورادر رکھنا باحث نقصان مجھنا ہے نیزاینی ذات اور اپنے عمال وافعال کوتھ مُور وارادر ہمت زدہ جانے گئا ہے۔ لامحالہ بلیغی قعلی مصروفیات سے الگ ہوکر اپنی سلاح و تربیت کی جانب متوجر بہنا ہے اور ہم شغولت کو جاب تصور کرتا ہے اسکونیت کو جاب تصور کرتا ہے اسکونیت کو جی البید کی جانب ہے اسکونیت کو جاب سے براہ جاری ہوئی ہے گئے تو بڑھی البید کی جانب ہے کہ ایک آئے ہو کہ ان بطالہ ہے کہ ایک انعرہ لگا تاہے اور کھی "علموں بس کریں او بار"کی مثیوں بھی تو بڑھے گا باطل ہے کا نعرہ لگا تاہے اور کھی "علموں بس کریں او بار"کی مثیوں میں جو اور شاد میں یہ احوال باتی نہیں رہتے اور سالک انبیار کی وراثت کے طور پر تبلیغ وارشاد میں یہ احوال باتی نہیں رہتے اور سالک انبیار کی وراثت کے طور پر تبلیغ وارشاد کی مسند پرفائز الم امر رہتا ہے۔

مصرت امام ربا فی علیه الرحمة جو کد کالات بنوبت کے وارث تھے اور انبیار پر وعظ و تبلیغ فرض مین ہوتی ہے ہی لیے اب عمل ارتبا دکے ترک کو بیندنہیں فرماتے اور بطور تبعیت وورا شت کے غروجی سیرکے باوج دفیق نبوت کے عنسیہ سے مثا تر ہیں اور نصب تجدید و تبلیغ کی طرف کا مل رجمان رکھتے ہیں۔ دواللہ علی صوفیاتے طریقت وعظ وارشاد کی مسند کیلیے خلیمت میں وحلیقت میں سالک کاصاحب ترکیہ ہونا صروری قرار شیئے سالک کاصاحب ترکیہ ہونا صروری قرار شیئے

ہیں ان کے نز دیک خلیفہ کی دوشیں ہیں ۔

خلیف مطلق خلیف مقید

خليفه طلق وه بوما بيع تزكيينس اورلطائف كي فنار كي بعدنغساني اور

البيت الله المحالية ا

شیطانی تسلّط سیم مفوظ ہوجائے لازماً اس کے اعمال مونی حق تعالی میں گم ہوجائے ہیں اور اس کاعمل وعظ وارشا دیجی رضامیں واض ہوتا ہے۔

فلیفد تقید وہ ہوتا ہے۔ سکیعض لطائف فیار پذیر ہو لیکن انجی کا الطور پر تزکینفس نہ ہوا ہو اسے سالک کے بیصنروری ہے کہمل ارشا دجاری رکھے بیکن وساوس کے مبش نظر کٹرت ہتنعفار سے کام لیٹار ہے اور ہتخارہ کے ذریعے بھی رہنمائی حاصل کرتا رہے نا آنکہ عاملہ تقام رضا تک ہینج جائے۔

شُرُوع مِی التّعلیم موتی تقی کمیونکر صنرت شیخ مُحی الدّین ابن عربی رحمتُ التّعلیه اور اُن کے مشکل معلوم میں افات اور کہ التّد تعالی کے علومات میں سے ایک معلوم ہے اس کا زائل ہونا محال ہے ورنه علم حبالت سے بدل جائے گا اور جب عین الل نہیں ہونا تو از بھی کہ میں نہیں جاتا ۔

#### شرح

سُطور بالا مين صنرت المام ربّانى قدس سرّه في صنرت شيخ البُرسيد البُر الخير عليه الرّخت كي الدّين البي سرقي الرّخت كي الدّين البي سرقي عين بني ما ندائر كي ما ند " اور صنرت شيخ البُرسيد بي علين الرّخت كي بعد علينه الرّحت كي توضيح و تنقيح كي بعد و فور حضرت شيخ البرسعيد البُرائي و فور حضرت شيخ البرسعيد البُرائي و فور حضرت شيخ البرسعيد البُرائي و فور سنسانه تقشيند بي كي فطيم المرتبت بزرگ ، إمام الأصفيار ، فلا الشعرا في من من المرتبت بزرگ ، إمام الأصفيار ، فلا الشعرا من المنظم المرتبت بنرگ ، أمام الأصفيار ، فلا الشعرا عبد الرحمان جامي فترس سرّه في البي تصنيف لطيف شعرات الائس من حضرات القدس " مين لقل فرما يا سي يستمال كي بيان سي المنظم الاسترات الائم كامخت تعارف مندر قار مين سيد .

#### تعارُف حضرات ِثلاثه

# المصرت في الوسعيد الوالخير رحمةُ اللَّهُ عَلَيْهِ

آپ کا اسلی نام بیخ صنل الله بن الو اخیر دمیُهٔ الله علیه ہے۔ طریقیت ہیں آپ کے شخ تعلیم صنرت شخ الد المصنل بن سین سرخی دمیُهٔ الله علیه بن اور سیخ خرقہ حضرت محمد بن موسی ملی المعروف عبدالرحمان کمی نیشا بوری رحمهٔ الله علیہ ہیں۔ آپ وقت سے مطلب المعروف سے جال تھے مشائخ زمانہ آپ کے ما بع دمخر

البيت المحالي المعالج المعالج المعالج المعالم المحالية المعالج المعالم المعالم

تعے آپ نے اشعبان المعظم بهرا حدین شب جمعه کونماز عشار کے وقت روات مائی آب نے ہزار ماہ در اس سال چار ماہ عمر پائی۔

# ٢ تحضرت شيخ اكبررهمة التعليب

" عجب معامله است شیخ با این گفتگو و با این شلح خلاف جراز از مقبولان نظری در آید و درعدا د اولیا رمشا برمی گرود... ... در در سنده شیخ درخطراست و قبول کنندهٔ او باسخان او نیز درخطر شیخ را قبول با بدکر دو مخان خلافی اورا قبول نبایدگرو ترجمہ ، عبب معاملہ ہے کہ با وجود اس کلام کے اور اسی شطح استرابت ہفلا ف جاز کے جناب شیخ مقبولان بارگاہ کہ ریا میں سے نظر آتے ہیں اور اولیار کی جماعت میں ان کامشا ہدہ ہوتا ہے شیخ کار و کرنے والاخطر سے ہیں ہے افران کے اقوال کے ساتھ ان کا قبول کونے والا بھی خطر سے ہیں ہے ۔ جناب یخ کوقبول کو نا چاہیئے اور ان کے خلافی کلام کوقبول ندکیا جائے۔

ا بینی ولادت شب و شند برسره رمضان المبارک ۷۰ ۵۵ اجار اگست ۱۹۱۰) پس اُندلس سے شہر مرسید میں ہوئی اور و فات شب مجمعہ بائیس ربیع الآخر ۱۳۸۵ استرہ نومبر ۲۱۲۰) میں دمشق (شام) میں ہوئی اور و بان عبل فکسیون میں مدفون ہوئے اب وہ مبکر صالحیہ کے نام سے شہور ہے۔

## ، حضرت مولانا عبدُ الرحمان جامی قُدِیسَ سُرُالسّامِی

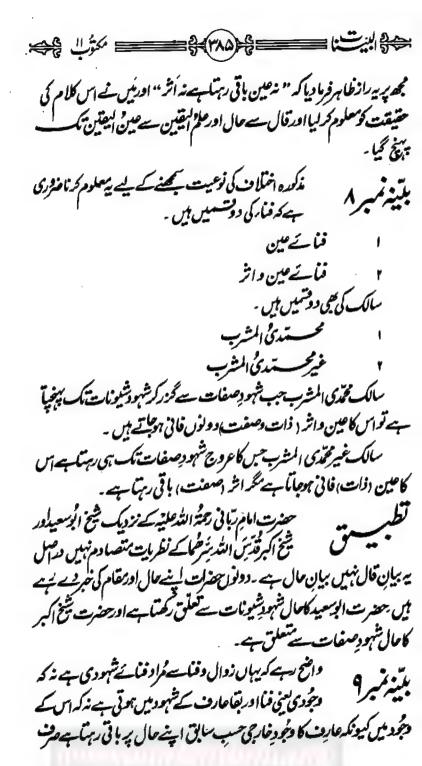
سب کا اسم گرامی نورالذین عبدالزممان بن احمد جامی رحمةُ الله علیه به آب ایم والد کا اسم گرامی نظامُ الذین احمد کا آب ایران میں علاقہ خُراسان کے قسبہ جام محکہ خرج دمیں ۴ بشعبان آمنظم ، امھ کو پیدا ہوئے مطربیت میں آب کے بہد شخص معدالذین محد نقشند می کا شخری رحمۃ الله علیہ تھے دعج صفرت میں گولا الله می کا شخری رحمۃ الله علیہ کے خلاف الدین عقاد رحمۃ الله علیہ کے خلیفہ تھے اور وہ صفرت شیخ علاؤ الدین عقاد رحمۃ الله علیہ کے خلیفہ تھے اور وہ صفرت شیخ علاؤ الدین عقاد مرحمۃ الله علیہ کے خلیفہ تھے اور وہ صفرت شیخ معدالدین کا شغری کے وصال کے بعد آب ملسانی تقشید دیسے موفوث الا تفاح صفرت شیخ معدالدین کا شغری کے وصال کے بعد آب مسلسانی تقشید دیسے موفوث الا تفاح صفرت شیخ میں ماصل کیا گئین مست بی برست برسمیت ہوئے۔ آب نے متعدد و مشاکخ سے فیمن ماصل کیا گئین میں ہوئے۔ آب نے متعدد و مشاکخ سے فیمن ماصل کیا گئین میں ہوئے۔ آب نے متعدد مشاکخ سے فیمن ماصل کیا گئین میں ہوئی تا اور خواج و الدولائی الله علیہ میں خواج الله علیہ میں خواج الله علیہ میں خواج الله علیہ کیا تھا۔ آب کے فلما الله کیا تھا۔ آب کے فلما الله کیا تھا۔ آب کے فلما الیا کیا تھا۔ آب کے فلما الله کیا تھا۔ آب کے فلما کیا کیا تھا۔ آب کے فلما کیا تھا۔ آب کے فلما کیا تھا۔ آب کے فلما کیا کیا تھا۔ آب کے فلما کیا کیا تھا۔ آب کیا کیا تھا۔ آب کے فلما کیا کیا تھا۔ آب کے فلما کیا تھا۔ آب کیا تھا تھا تھا۔ آب کیا تھا۔ آب کیا تھا تھا تھا۔ آب کیا تھا تھا تھا تھا تھا۔ آب کیا تھا تھا تھا تھا

میں آپ کے سندند ارتبار مجدد صنوت خواج سے صنیا الدین کوسف رحمتہ اللہ علیہ مصنوت میں اللہ علیہ مصنوت میں واعظ کا شفی وغیرہ کے اسمار نعل کیے گئے ہیں مگر افنوس کوسفوی سلطنت کے پہلے متعصب شید محران اسمار نعل کیے گئے ہیں مگر افنوس کوسفوی سلطنت کے پہلے متعصب شید محران اسماعی اصفوی نے آپ کے وصال سے سات سال بعد علمار وصوفیار نے جا میں اور کی کا قسل عام شروع کر دیا۔ اس کے اکھوں ہزاروں حلمار وصوفیار نے جا میں اور کی گئی ۔ آپ کے اکثر خلفاء اور شاگر دفلمار اس کے ظلم وسم کا نشا نہ ہے اور کی فرش کیا۔ آپ کے اکثر خلفاء اور شاگر دفلمار اس کے ظلم وسم کا نشا نہ ہے اور کی معلوم نہ ہوسکے۔ آپ کی قائر کر دہ سجدیں، وینی مدرسے اور خانقا ہیں بھی منہدم کر دی معلوم نہ ہوسکے۔ آپ کی قائر کر دہ سجدیں، وینی مدرسے اور خانقا ہیں جی منہدم کر دی گئیں۔ یہاں تک کر آپ کے وزار کو بھی منہدم کرا دیا۔ یہی وجہ ہے کہ آپ کے لیا۔ آپ کے سی خلیف سیسلہ نفش نبذیہ کی نشر واشاحت کے لیے کام نہ ہوسکا جو سی معلوم نہ ہوسکا گئی آف اور انجھارہ محرّم بروز جمعت المبارک ۸ م محریں علم و جائی نے اکیا کی سال عمر پائی اور انجھارہ محرّم بروز جمعت المبارک ۸ م محریں علم و جائی نے آکیا کی سال عمر پائی اور انجھارہ محرّم بروز جمعت المبارک ۸ م محریں علم و جائی نے آکیا کی سال عمر پائی اور انجھارہ محرّم بروز جمعت المبارک ۸ م محریں علم و جائی نے آکیا کی سال عمر پائی اور انجھارہ محرّم بروز جمعت المبارک ۸ م محریں علم و خائل کا یہ آفناب عزوب ہوگیا۔ مرقی افر رہرات ہیں۔ ہے۔

فنا معد و از کی بحث میشرت خواجه البسعید البه الخیر قدیم فنا میشری اثر کی بحث میشری میشری البه البی میشری میشری میشری میشری میشری میشری میشری میشری میشری اور کها تقا که حضرت خواجه البسعید میشرا بوری میشری می

حضرت خواجه الرسعيد كى خدمت ميں بيسوال بېنچا تو آپ نے كا غذ پر ايك آسيت و ايك مجمله اور ايك فارسى رُباعى تھو اكرخواجه الريكز خطيب كے حو اسلے كردى ،جب بيح اب شيخ محمد بن تصرفيبى نے بإحما تو ومبد وستى ميں اگر ايك

نعره مار کرزمین ریگر بڑے اور ساتویں دن انتقال ہوگیا حضرت نواجہ الوسعید کا ہواب میہ تَعَالَا ثُبْقِيْ وَلَاتَ ذَرْلِعِنْ عِين بني ماندارْ كَجامانه ؟ مجم بهدافتك كشت وحبيثهم تجربيت ورعطيق توبيحب مهى بايد زبيت ازمن ايشيه منساند وايعشق زميسيت چِں من ہمہ معشوق *سٹ* دم عاشق کیست <sup>ہ</sup>ے میں سُرایا اشک ہوں اور شیع ہے گرید کُناں عثق بن تیرے بغیر مبینا ہے بہاں جُنِيني إلى أوا بيعض في كيول بي نمود جُب ہم<sup>یع</sup>شوق ہوں میں مچریہ عاش<del>ق ب</del>حباں مسلك يضرت الوسعيدر حمنة التدعلنيه كامسلك يرسبت كرخلبة توحيدكے وقت سالك جب فناكى منزل ميں پنچيا ہے تو اس كائين وائڑ (اسس ك ذات اورصفت، دونوں زائل ہوجاتے ہیں۔ حصفرت ابن عرفي شيخ إبر مسلك جضرت بيح اكبررحمة الدعليه رحمة الترعليه كالسلك ہے کرعین (فرات) اللہ تعالیٰ کی علومات میں سے ایک معلوم ہے اور جرجر بمعلوم بارى تعالى مووه زائل نهب بونحتى جب عَين زائل نهب موماً نُواَثْر (صفّت) ييسے زائل بوسكتا <del>؟</del> حصنرت امامرتبانی قدس مُسلَكُ إِمامِ رَبانِي فُدِّسَ سُنَرُ والنُّوراني ستره فرمات لبي كهئي ابتدار الوك مين مساكمت بنج اكبرست عن تحام محرفيري توجر كرنے سكے بعد اللہ تعالی نے



البيت الله المراج المر

عُروج کے وقت اس کو اپناآپ فانی محسوس ہو اسسے نیز اللّٰد تعالیٰ کی صفات میں فنار وجودی اُمکن ہے۔

ماہ بربروں میں ہے۔ یصنرت امام ربانی فترس بٹر فالک محتوب میں رقم طراز ہیں : باید وانست کہ مُرا د از زوالِ عین وانژ زوالِ شہود سیت نہ وجودی چہ قول بزوالِ وجودی ستلزم انحاد وُزند قد است اُ ترجمہ : جانبا پیا ہیئے تحقین وائڑ کے زوال سے مُرا د زوالِ شہودی ہے نہ کہ وجوئی کیونکہ زوالِ وجودی کا قول انحاد وزند قد دہے دینی کو لازم کرتا ہے ۔ ای محتوب میں ووسطروں کے بعدر قم طراز ہیں ۔

" بالمبله زوال وجودی درعین و اثر فحالست و شهودی در به دو ممکن بکه واقع لیکن مخصوص مجدی مشرب است "

بلینه تمبر المسجی فیائے مین واثر سے متاز ہوسکتا ہے صفرت عُروۃ الوقعی التی متاز ہوسکتا ہے صفرت عُردۃ الوقعی الت خواجہ محد مصنوم میر بندی قدیس نیرؤ کمتوبات محدی المشرب کم الات لائت "غیرمحدی اگر در محبت بیرکامل ویمل محدی المشرب کم الات لائت

محدی بطفیل اوبرسد مکن بمکه واقع است درین صورت میتواند که عین واثر از وسے زائل شود واین لاع فن حاصل نماید ......

مور کین ہوسے داشت کہ در کعب رسد دست دریائے کبور زد و ناگاہ رسبیله ترجمہ : غیرمحدی المشرب اگرمحتری المشرب کال وکمل بیری شجست میں اس سے طفیل ولایت محتری المشرب اگرمحتری المشرب کال وکمل بیری شجست اس صورت بیل ولایت محتری کے کالات کو بہنچ جائے اس سے زائل ہوجائے اور فناکی اس نے کو حاصل کرنے ۔

ایک سکیں جیون فی خواہشس رکھتی تھی کہ کعبہ میں بہنچ جائے اس نے کبوتر کے ۔

ایک سکیں جیون فی خواہشس رکھتی تھی کہ کعبہ میں بہنچ جائے اس نے کبوتر کے ۔

ینجے کو کیرٹر لیا اور کیا کی بہنچ کئی ۔

منت وایضاً آنچه حضرت شیخ از دوام این مدسیت فرموده اندنیز ظاهر کشت که مدیث عبارت از چرچیز لود و دوام آن چه بود و درخود نیز این مدسیث دائمی یا فنت اگرچه

ازنوادرست.

### شرح

ہے اور اس کے دائمی ہونے کا مطلب کیاہے ؟ نیز میں نے اپنی ذات ہیں تھی اس نجلی کو دائمی پایلہ ہے اور عالم مثال میں اس کا مشاعدہ بھی حاصل ہوا ہے۔ آپ ذرائح ہیں کہ اگرجہ اس تخبی کی معرفت نواورات میں سے ہے اور اس اُست میں بہت ہی کہ لوگ (اُحش الحواص) اس کی معرفت سے بہرہ یاب ہوتے ہیں تاہم اس خاوم کو اللہ نعالی نے اس تخبی کی معرفت اور اس کی حقیقت کا شہود حطافہ ما دیا ہے اور یہ بات بھی معمادی گئی ہے کہ تخبی ذاتی معبدی کے حق میں برقی ہے اور نہتی کے حق میں دائمی

نفخات كى صل عبارت فرست شخ دالبرميد الوائير، از ستاد البرعلى دقاق پرسيدكه اين مديث بردولم

بود ؟ استنادگفت نه شیخ سردرمیش افکندساست دگیر سربر آورد وگفت اسے اساد این مدیث بر دوام بود ؟ گفت اگر بود نا در بودسشیخ دست بریم زد و گفت این از آن نا در باست نیم . . . . . ایخ

ترمبہ احضرت شیخ البسعیدر ممت الشعلیہ نے صفرت اس دالوعلی دقاق رم ثر الله ملیہ سے بوجھا کہ یہ بات رجی فاق رم ثر الله علیہ سے بوجھا کہ یہ بات رجی فاق مرم نامی ہمیشہ رہتی ہے ؟ اس دنے فرمایا نہیں۔
مشیخ نے ابناسر محبکا لیا اور تھوٹری دیر کے بعد سرا تھا کر کہا اے اساد و ایر بات ہمیشہ رہتی ہے ؟ اساد نے فرمایا اگر ایسا ہو تا ہے توشا ذونا در ہوتا ہے شیخ نے ہمیشہ رہتی ہے ؟ اساد نے فرمایا اگر ایسا ہوتا ہے ۔
تالی بجانی اور کہا یہ ان نا در باتوں میں سے ایک ہے ۔

حدیث دوام حدیث دوام ابسعیدعلیهٔ الرحمهٔ تجی ذاتی سے دوام سے قائل تھے حضرت امام رّبانی قُدِّسُ سُرُونے فرمایا ،

له نغات اانسس مسس

حَمَا اَخْ بَرَ اَبُوْ سَعِيْدٍ عَنْ دَوامِ هٰذَ الْحَدِيْثِ وَحَدَدُ وَصَلَتَ جُبَّهُ الْحِيدِ عِنْ دَوامِ هٰذَ الْحَدِيْثِ وَحَدَدُ وَصَلَتَ جُبَّهُ الْحِيدِ يَقِ الْاَحْبَرِ رَضِى اللهُ نَعَالَىٰ عَنْهُ إِلَىٰ هٰذَ الشَّيْعِ إِنْ سَعِيْدٍ كَانَفَ لَصاحِبُ النَّفُ الِيَّ وَعَنْهُ إِلَىٰ هٰذَ الشَّيْعِ إِنْ سَعِيْدٍ كَانَفَ لَصاحِبُ النَّفُ الِيَّ عَيْدُ وَيَ عَلَىٰ وَالْمَى مُونَى كُنْ وَي عَلَىٰ وَالْمَى مُونَى كُنْ وَي عَلَىٰ وَالْمَى مُونَى كُنْ وَي عَلَىٰ وَالْمَى مُونَى اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ عَلَىٰ اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ اللَّ

> اِذْ هَسُوْا بِقَمِيْصِيْ هَذَافَا لُقُوْهُ عَلَى وَجَهِ آبِيْ يَاتِ بَصِينِيرًا لَهُ

اوراکٹر مشائے اُمنت نے اپنے کپڑوں کے ذریعے فیض منتقل فرمایا۔ حضرت صدیق کرمنی للاغنیر کا جہر مربارک مضرت صدیق اکبر مضارت میں اللہ عمل کے اس وجود رہا آپ نے وصال سے قباوصیت جُہر مبارک حضرت خواجہ البوسعید کے ہاس وجود رہا آپ نے وصال سے قباوصیت

فرمائی تھی کوئیں نے ایک روٹی کا محرا ایک مبندطاتی کے اندر رکھا ہے جستخض کا یا تھ اس مک بغیرزینہ کے پہنچ جائے اور روٹی بھی تازہ وگرم ہوجائے جیب اس کے سیر دکر دینا یے انجی حضرت شیخ احمد جام زندہ فیل رحمۃ الڈعلیہ کو بذریعہ البيت الله المعرف البيت المعرف البيت المعرف البيت المعرف البيت المعرف البيت المعرف البيت المعرف المع

الہام کم ہواکہ فلا استام برچضرت صدّ اِق اکبرض اللّٰء عند کا نجترمبارک آب کیئے امانت فراہے وہاں جا کو صب وصیّت اسے وصول کر لو جب شیخ احمد جام وہاں پہنچے تو ورثا سے رابطہ کیا توصب وصیّت بغیرزینہ کے آب کا ہاتھ رو فی ایک خواجی ہی وقت ازہ وگرم ہوگئی اسی وقت جبّہ آب کے طاقی ہیں جابہ چا اور رو فی بھی ای وقت ازہ وگرم ہوگئی اسی وقت جبّہ آب کے سیر دکر دیا گیا جھنرت شیخ احمد جام کے وصال کے بعد اس جبّہ مبارک کا تعشیر کے سیسے ہیں ان کے ورثار ہیں احتال ف رونما ہوا تو جبّہ مبارک کے قطعات مبارکہ سیسے ہیں ان کے ورثار ہیں اُحتال ف رُونما ہوا تو جبّہ مبارک کے قطعات مبارکہ سیسے ہیں ان کے ورثار میں اُحتاج کی ان میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر انتقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہے اُحداد اُن میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر انتقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہے اُحداد اُن میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر انتقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہے اُحداد اُن میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر انتقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہے اُحداد اُن میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر انتقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہوں جاتا ہو جاتا ہے اُحداد اُن میں سے ایک قطع مبارکہ آج بھی دائر النقارت ہرات میں موجود بنایا جاتا ہوں جاتا ہوں گئی ہوں کہ مواتا ہوں جاتا ہوں

نسبت فین کانامه اسبت ملاقدین المسرفین کانامه اسبت مین کانامه اسبت سے مُراد وہ ملکدر الخدم مُرده ه

جوسالک اِکشاب سے حاصل کرتا ہے اور وہ مکداس کی روح کوجمیع جات سے اِحاطہ کرلیتا ہے اور اِس کی صفت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی حالت ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی حالت ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی حالت ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی حالت ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اِس کی سے اِس کی میں بن جاتا ہے۔ اور اِس کی صفحت ِلازمی بن جاتا ہے۔ اور اِس کی جاتا ہے۔ اور اِس کی سے ایک بن جاتا ہے۔ اور اِس کی جاتا ہے۔ اور اِس کی جاتا ہے۔ اور اُس کی جاتا ہے۔ اور اُس کی جاتا ہے۔ ا

بروبا مسلن متنبندید کی نسبت خاصد کا نام "تحلی ذاتی دائمی ہے" اور پرنسبت کم نسستول سے ملنہ ہے ۔

> حضرت الأم رَبانى مجدّ والعن ثانى رحمةُ الله عليْه نفروايا . حَصَمَا وَضَعَ فِي عِبَاراتِهِمْ إِنَّ نِيسْبَتَنَا فَنُوتِ جَمِينِعِ النِّيسَبِ لَهِ

یعیٰ جیسا کم اس سنسکے کے اکار کی تحریروں میں ہے کہ ہماری نسبت تمام نسبتوں سے مبند و بالاہے۔

#### بليت اسا

بعرب مراا چونگران سبت كازِ قتباس صفرت تيدناصة يق اكبرونى الدُّعنه معنى مرا كارونى الدُّعنه والمعنى مرا الله معت المام المت سه الفنل بين العام المبت عن المنت المنتون سه الفنل بين المام المنت عن المنتون سه الله معت أكافيضان المنتون من المنتون والمين من المام و مناق مين صنور و مناق مين صنور و مين و الله معت و المنتون والمينان اورمعيت و محبت ذات كافيله به و .

المسلفة المتعاديمين دوراستول فيض آنها المدروسة المست المست المتعاديمين دوراستول فيض آنها الدودور الراستة المتعاديمين المرضى الله عندكا بها وردور الراستة معنوت سيدنا على المرتضى الله عندكا المرتضى الله عندكا المرتضى الله عندكا المرتضى الله عندكا المرتب المتعادي المتعادي

له التوبرب له دوري مدين يوب يقاباً بكني العُطاك اللهُ الرضوان الاكْبُر قَالَ وَمُعَالَ اللهُ الرضوان الاكْبُر قَالَ وَمُعَارِضُوانُهُ ؟ قَالَ إِنَّ اللهُ يَتَّعِلَى لِلْحَلْقِ عَالَمَةٌ وَيَتَّعِلَى لَكَ خَاصَةٌ كَرُوسُ مُنْ اللهُ المُعْلَقِ عَالَمَةٌ وَيَتَّعِلَى لَكَ خَاصَةٌ مَرُسُونُ

تخلق على لينت بين تلق " فلا بركرنے اور فلا ہر ہونے " كو كہتے ہيں ۔

ی صوفیاری صطلاح میں "کسی شے کا وُوسرے مرتبے میں ظاہر ہونے"کا

نام تجلّ ہے۔ © تجلّی کو "لبکسٹر تعبیّن" سے تعبیر کیا گیا ہے۔ من محتوی

تبل کے لیے ایک کم خاص ہے جے شان کہتے ہیں رے ل کو م مو فی شارہ ہے ۔

فی سی این بین اسارہ ہے۔ ◎ حق تعالی جب بندے برخلی فرماتے ہیں قواس علی کا نام حق کے اعتبار سے "شانِ الہی" رکھا جا نا ہے اور مبندے کے اعتبار سے اسے "مال" کہتے ہیں¶ور وہ ہرآن ایک نئی عملی میں ہونا ہے کے

هر گخطه مجسب اِل خود گوع و گر آرائی شور د گر انگیسنری شوق و گر افزائی (مامی رحمترالته علیه)

تجلی ذاتی کا مفہوم مستحدیث میں ماتھ میں ہے۔ ساتھ مخصوص ہے۔

سالک جب فیائے طلق کے بعد مجتب ذاتی سے مشروت ہوجا ہا ہے اور اس
 سالک جب فیائے طلق کے اللہ کو فراموش کرے مقام کھال تک پہنچ جائے ہیں اور
 اس بیختیقت اخلاص ظاہر ہوجاتی ہے تو اس وقت تحلی ذاتی کا نزول ہوتا ہے ۔

. ﴿ تَعَفَّرِتُ الْمُرْبِانِي قَدْسِ سَرَّهُ نِي فَرِمِانِ الْمُنَا الْمُطَلِّقُ كُومِنُوطِ استَ سَجِبِلِّ وَ اللَّهِ \* يعنی فنائے مطلق تجبی ذاتی بر موقوف ہے۔ البيت المجالة المجالة

تبنی ذاتی میں سالک اپنے آپ کو بلاتعیش جہانی ورُوحانی اطلاق کے رگھ۔
 میں یا آہے کال توحید عیانی اور وصل عُریانی سے بھی مُرا دہے۔

» تصنرت امام ربانی قدس سرهٔ نے فرمایا ،

وَحَرُقُ كَبِمِنِعِ الْحُبِهِبِ الْوُجُودِيتَةِ وَالْإِعْتِبَادِيَتِةِ عِلْكَا وَعَيْدًا يَتَحَقَّقُ فِي هَذَ اللَّهَامِ لَه

ترجمه اتمام حجابات وجودي واعتباري كاعلمي وعَيني ( ذہني وخارجي طور بر دُور

ہوجانا اس مضام میں نابت ہو ماہے۔

یعنی اسمار و صفات کے اعتبارات اور ستر ہزار حجابات رافرانی وظلمانی ،

اس مقام ہیں سالک وعارف کے سامنے حائل نہیں رہنتے ۔

کے سامنے سے اسمار وصفات کے جابات دور ہوجاتے ہیں اور اس کے بعد وو بارہ حائل ہوجاتے ہیں اور اس کے بعد وو بارہ حائل ہوجاتے ہیں ہی وجہ ہے کہ ان رچنور داتی کا اٹر کم اورغیب کے غلبہ

زیاده ہوتا ہے۔

له و فنت دا وَلَ مُحوّب منبرا ٢

البنيت المحالية المائية المائي

ذات کے ماقد محوا در متوجر رہے۔ یہ قام مرتب جی قت سے تعلق ہے جو منہ ہوں کے ایسے ہے اور فغائے کامل کے بعد حاصل ہوتا ہے۔

یا در اشت حاصل شود بعب دانہ فنا بھکہ حاصل می شود بعب دانہ بقا مثن و اُحوال مناشخ متفدّ میں بیشتر مرخوب ست منت و اُحوال مناشخ متفدّ میں بیشتر مرخوب ست کتب حقائق و معارف علی الخصوص شخان توجیب و متنز لات مراتب رائمی تو اند مطالعہ کرد ۔

تنز لات مراتب رائمی تو اند مطالعہ کرد ۔

ترجمہ: اور متفذین شائخ کے مالات بہت بیت بیت ہیں جاتن اور معارف کی متاب رائب کا مطالعہ نہیں کر سکتا ۔

## شركح

سے بیزار ہوجاتے ہیں چونکہ آپ کو اُٹنائے راہ میں بیرعارف صاصل ہوئے تھے
لیکن آخر کار آپ توحید وجودی کے معارف سے گزر کر توجید شہودی کے معارف سے
شاد کام ہونے گئے جوئٹر بعیت کے عین طابق تھے۔ اب آپ کا معاطمہ اُنہا ۔ کو
پہنے جبکا تقالہٰذا یہ وقت اِبتدائی معارف کے مطالعہ کے بینے مناسب حال نہ تھا۔

### تنزلات مراتب

تر فی منظل می منظل می منظل می منظمی منظمی منظمی منظمی منظمی منظل می منظمی منظ

بہاں نزل کالغوی عنی مراد نہیں بکہ صطلاحی عنی محوظ ہے تعین بلیب منبرا اللہ وجود کا اپنی ذات وصفات کو قائم رکھتے ہوئے طہور فزما نا کیونکہ وجود حبیبا تقااب بھی وسیاہی ہے اس میں کسی سم کا تغیر واقع نہیں ہوا۔ اسس کی نشان الملان کے ماکان ہے۔

صوفیائے وجودیکے نزدیک وجودنے جن مرتبوں سے مال التیب بلین ممبرک نزدل فراکر کائنات میں ظہور فرایا ہے ان مرتبوں کو تنز لاکتے نام سے مورد مرکیا جا آ ہے اور حسب موقعہ ان کو تعینات ، تجلیات ، اعتبارات و تقیدات کے ناموں سے جی تعبیر کیا جا تا ہے : بنریہ تمام تنز لات شہودی اور عتبار ہیں نہ کہ وجودی اور عتبار ہیں نہ کہ وجودی اور عتبار ہیں نہ کہ وجودی اور عیب نہ کہ وجودی دہیں۔

### تنزلات بخمسر

حضرت شیخ اکبرمی الدین ابن عربی علیه الزحمة اوران مختبعین کاموقف یه سے کہ وجود ، وجودِ طلق ہے اور مراتب وحدت میں یہ مرتبہ لاتعیتن ہے وحدت

لپنے تعینات یا تنزلات میں بانچ مراتب سے گزر تی ہے پہلے دو تنزلات علم ہی اور بعد کے بین تنزلات عینی یا خارجی ہیں ۔

 پہنے تنزل میں ذات کو اینا شعور کجشیت وجودِ مصل مو ہاہے اور شعور صفات اجمالی رہتا ہے۔

© دُور ہے تنزل ہیں ذات کو اپنا شعور کھٹیت تنصف بصفات ہو تاہے بصفات بضیائی کا مرتبہ ہے (بعنی صفات کے بالتفصیل واضح ہونے کا) یہ دولوں تنزلات بجائے داقع ہونے کے ذہنی یا محض نظفی تنزلات کے طور رتصور کیے گئے ہیں کمیونکہ وہ غیر زمانی ہیں اور خود ذات وصفات کا امتیاز محی صرف ذہنی ہے۔ اس کے بعد تنزلات عینی خارجی تنزوع ہے۔

تیسراتنز لنعین رُوحی ہے لعنی وحدت بصورت رُوح یاارُواح نزول کرتی ہے اور وہ اپنے آپ کو بہت سی اُرواح میں تعلیم کردیتی ہے یمثلاً فرشنے وغیری رہا۔

چوتھا تنزل تعین شال ہے سے عالم مثال وجود میں آ ہے۔

بالخوان تنزل تعبین جدی ہے اس سے مظاہر یا اشیاط بعی ظاہر ہوتی ہیں ہے

البنيت المحالي المحالي

مرتبعیں عانفسیلی کی صورت ہیں ظاہر فرمایا ہے۔ اس طرح تیسرے مرتبے میں عالم ارواح بچرتصے مرتبے میں عالم ادر بانچریں مرتبے ہیں اجسام کی صور توں میں خودی تعالیٰ نے فہور فرمایا ہے۔ میں خودی تعالیٰ نے فہور فرمایا ہے۔

# حضرت ابن مسربی رخمة متدعکینه کاموفف

حصنرت ابن عربی قُدِّس سُرَّ و کے نظریَہ ترحید و تنزّ لات کی بنیا دیہ ہے کہ وُجودِ ایک ہے وہی موجود ہے '' اور یہ وجود اللّہ ہے '' ہر دُوسری چیز فقط اس کامظہر سہے لہٰذا عالم و إلا اور دات وصفات میں اتحاد و بینیت ہے۔

# حضرت امام مرتباني رحمةُ اللّهُ عَلَيْهُ كَا مُوقف

منن خودرا دری باب بحضرت شیخ علا والدوار بیار مناسب می یا بدو در ذوق وحال درین سئله بشیخ مشار الیمتفق سست اماعلم سابق تا با نکار وشدت آمدن منی دهسد به

ترجمہ ، یفادم اس بارے بین حضرت شیخ علاق الدّوله قُدِّس سرّ و کے ساتھ زیادہ مناسبت یا تاہے اور ذوق وحال میں شیخ موصوف ،علاؤ الدّولہ کے ساتھ تناق ہے لیکن ، توحید و مُحردی والوں کے موافق ، حو معرفت بہنے حاصل ہو جی ہے وہ اس کے إنکار وشدّت مک نہیں آنے دیتی ۔

### شرح

حضرت امام رّبانی فرمات بین که توحید کے حقائق و معارف کے سلسلے بین میرا باطنی مزاج محضرت کی الدین علا والد و اسمنانی رحمته الله علیہ کے ساتھ زیا وہ مناسبت مطابقت رکھتا ہے اور میں حضرت ابن عربی رحمته الله علیہ کے علوم توحیدی کے مقلبلے میں حضرت بیخ موصوف کے علوم و معارف توحیدی کے ساتھ متعق ہوں البتہ إننا ضرور ہے کہ حضرت علاؤ الدّول سمنانی نے حضرت ابن عربی پرشدید طامت فرمائی ہے اور میں ان کو طامت نہیں کرتا کیونکہ کچھ عرصہ میں ابن عربی کے معارف توجیدی کا قائل رہ جیکا ہوں اور مجھے علوم ہے کہ بیمعارف ابن عربی کا مناف ہیں نرکے تقائد نیزید امریحی پیش نی ظرہے کہ خطائے تھیا دی کی مانند ہے۔

نیزید امریحی پیش نی ظرہے کہ خطائے تھیا دی کی مانند ہے۔

کوسلطان وقت کے دربارسے وابستہ ہوئے ایک جبگ میں جب کہ سلطان اپنے وشمن سے نبر وآزما تھا آپ میں جذب کی کیفیت بیدا ہوگئی آپ ترک تعلق کرکے ہما میں بغداد گئے اور وہا کشیخ نورالڈین جبدالرحمان کسرتی رحمتُ النّہ علنے کی خدست میں عاصر ہوئے جراپنے وقت میں طریق سلوک کے امام تھے اورکشف دقائق پر آہیں بوراکال ماصل تھا۔ یہ وہ زمانہ تھا کہ آپ خانقا ہو سکا کیدمین سولسال بسر کر پی کے بھے آپ کے مبابی یا تی زندگی میں ایک سومیں ہے اور کیے دھنرت علاؤ الدول سمنانی بہت بڑے شیخ اور علوم شریعیت طریقت کے امام تھے۔ مُلوم ظاہری و باطنی میں اپنے زمانے کے مقد ارسی تعریف معدرت ابن عربی کے نظریہ وحدث الوجود پر آپ نے ان کی شدیدی الفت فرمائی متحدرت ابن عربی کے نظریہ وحدث الوجود پر آپ نے ان کی شدیدی الفت فرمائی متحدرت ابن عربی کے نظریہ وحدث الوجود پر آپ نے ان کی شدیدی الفت فرمائی متحدرت ابن عربی کے نظریہ وحدث الوجود پر آپ نے ان کی شدیدی الفت فرمائی سے ہی ابتدار میں در اصل توجید شہودی کے نشری معارف وحقائق کو انہوں نے ہی سے ان کیا تھا۔

# مصيخ علاؤالة ولهاورابن عرني مين ماببرالنزاع

رسالہ اقبالیہ میں ندکورسے کم ایک ورونیش نے شیخ رکن الدین علا والدولم

کی عبس میں دریافت کیا کہ شیخ می الدین ابن عربی نے خدا کوج " وجرکطلق" کہاہے
کیا قیاست میں ان سے اس بات پر موّاخذہ ہوگا بہ شیخ علاؤ الدّوله سمنا نہنے جہا ویا کہ میں اس قیم کی باتوں کو بالک ابنی زبان پر لانا نہیں جا ہتا کاش وہ می ایسا نہ کہتے
کیونکہ شکل بات کا کہنا جا کر نہیں لیکن جب کہد دی گئی توجیراس کی تا ویل کرنا ضروری
ہے تاکد در ونشوں کے دل میں شیب ہات پیدا نہ ہوں اور وہ بزرگول کے می میں ہے اعتقال دنہ ہوں ۔

وفات ، حبّ آب کی مرسّقرسال کی ہوئی توشب مجمعہ دوم رحب ۴۷ مھ د ماہ مار چ ۱۲۳۵ء مُرج احرارصوفی آباد میں آب کا انتقال ہوا اور قطبُ الزماں عما دالدین عبدالوہاب فدس مُرہ کی خانقاہ میں دفن ہوئے۔

منت وگیرچند مرتبه ازبرائے دفع بیضے امراص توجی کردہ شدوائر آن ظاہر گشت مجنین احوال بیصنے موتی کہ ازعاکم برزخیست ظاہر شدہ بود نیز از برائے رفع آلام و شدائد آنها توج کردہ شدا ما حالا قدرت بر توجہ نماندہ است کہ بڑیج چیز خود راجمع نمی توانم ساخت

ترجمہ: دگرعوض بیسے کدئی مرتب ہمبن آمرائش کے دُورکرنے کے لیے توجہ کی گئی اور اس کا انزیجی ظاہر ہموا اور اس طرح بعض مُردوں کے عالات جوعا لم برزخ سے ظاہر ہوئے تھے ان کے رنجوں اور تکالیعٹ کے دُورکرنے کے لیے جی توجه گیگی کیکن اب اس خادم میں اس توجّه برقُدرت نہیں رہی کیونکہ اب دلوجہہ حق تعالیٰ شانۂ میں نہاست ستغرق رہنے ہے ، لینے آپ کو کسی چیز بر جمع نہیں کرسکا الو ابعیٰ غیرِح کُمِل شانۂ کی طرف توجّه کرنے کی طاقت اب اس فقیر میں نہیں رہی ہے ،

### 8

سُطورِ بالامين صنرت امام رّا في قُدِّسِ ترف البين مُرشد برحق كي خدمت ميراني مندرجه ذيل باطني حالتين اوررُ وها في جيفيتين بيان كي بين .

 قبل آذیں جیند بار سندہ نے تعض مرصینوں پران کی بیماریاں و فع کرنے کی غرصن سے توجہ ڈالی جس کا اثر شفا کی صورت میں ظاہر ہوتا رہا ۔

عالم برزخ میں تعبی مُردوں پر ہونے والے عذاب دُور کرنے کے لیے ہی توجی کی کے کیے گئی کا میں میں کا بہت ہوئی ۔

ایکن اب بیفقر اپنے وجود میں اسی توجہات کے بیے قدرت نہیں باتا اور نہ ہی غیر حق کے ساتھ توجہ اور شعولیت کی اس فقیریں ہمت باقی رہی

متذکرہ بالاکیفیات ہیں آپ کے باطنی اِرتقار ،علوِمرتب اورسیرعالم وجُوب کی طرف اشارہ ہے۔

# سُلنبِ أَمراض

الله تعالیٰ کی طرف سے بندگان خاص کوسلب امراض اور دفع عذاب بطیب تصرفات واختیارات کاعطا ہونا قرآن وحدیث اور آثار صالحین سے ظاہو ثابت اسے ۔ جس کا اجمالی بیان ہدئیہ قار مین سہے ۔

و ترآن گواہ ہے کہ حضرت علیہ السَّلام اللّٰہ تعالیٰ کے اون سے ما درزاد

چۇ ابن<u>ت</u>نا **چىچى** 📰 محوّل ع اندصوں، کورصیوں کوصرف ہاتھ لگا کرشفا دیتے اور مُردوں کوزندہ کرنیتے تھے وأبرئ الآكتمة والابرض وأخي المتوث بإذن ای طرح مصنرت نوسف علنه السّلام نے فرمایا ،میری تیمن لے جاؤاور میر نابینا باب کے چہرے کید وال دو بینا نی وابس آجائے گی۔ إِذْهَبُوْا بِقِكِينِصِي هٰذَافَ الْقُوْهُ عَلَى وَجْهِ ٱبْ ِكِأْتِ بقيسيراكه احادبيث مباركميس كحصنور اكرم من الماية ولم في توقيه العاب وبن أور س باليد كے طريقے سے كئى ديھينوں كو با ذان الله شفائخشى -لعاب دبن لگا كرحصنرت على رصنى الله عنه؛ كا آشوب عثيم دُور فرما با له 0 حصنرت قباده رصنی اللهٔ عنه کی نکی بهونی انکه کو دوباره جرا دیا تک حبیب آینی کی لاعلاج بیار بیٹی کو محرّ سے بین میں توجہ فرما کرشفا ویدی<mark>ہ</mark> وست اقدس لگا كرچېرون كوروش اور تروتاره بنا ديينة ، يا ني مين لا تف

ولوکر بابرکت اورشفا بنا وجیئے، بالول کوسیاه ہوئے سے بچا وجیئے اور امام بوصیری رحمته الشعلیہ کو اتھ لگا کرمرضِ فالج سے بجات دے دی .

كم أَبْرَأْتُ وَصِيًّا لِمَا الْمُسْرَاحَتُهُ وَٱطْلُفَتَ آرِبًا مِن زِيْفَة وِالْكَسِيْجُ

له آل عران ۲۹ که یوسف ۹۴ سه بخاری دو م ایم محمع الزوار مالا ۴ هه شرح تصيده خريق له حجة الله على العالمين مصيم كي مماكم و٢٢ شع ، حجة التُدعل إلس لمين مستط ٢٣٦٠

فعه تفسيب ذفرده شريب

رجہ ، اس دات کی متم جس کے قبضے میں میری مان ہے بے شک مدینے کی مٹی میں ہر بھاری سے شفاکی ماثیر ہے۔

اولیار کرام وارثان ترت بی اونیمان برت کے قاسم اور برین ممبر اسم بوتے بیں اور وہ نیا بنا کالات برت سے حضر باتے بیں المنذا انہیں بھی شفائے امراص کے تصرفات ماصل ہوجاتے ہیں مشائخ طرفیت میں کامل التوجہ صاحب نسبت، قوی المراقبہ اور دائم الذکر افراد اسم المضوص پر ابُری مہارت رکھتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان کی توجہات کی عجیب فتم کی ناشر بیدا فرا دیتے ہیں۔ ذالیک فضف کی الله ویڈ تین یہ من قیضاً او

حضرت امم رتبانی فذیس بیٹرہ اور سنسبِ فراض

حضرات الفُرِّس اور زُبدة المقامات بین ہے کہ صفرت امام رّ بانی رحمۃ للد علیہ نے مولانا محدالد کا ایک کھڑا للہ علیہ بھاری بین متبلاتھے اپنا ایک کیڑا پہننے کے دیا جس کی برکت سے انہیں برسوں کی بھاری سے فراً رہائی مل گئی۔

© ایک دولت مند پرزادہ کو اج شاہی خاندان سے تھا، مرض قرائج لاحق ہوا بہت علاج کو ائے مطلق فائدہ نہ ہوا مولانا ہاشم مشمی رحمتُ اللہ علیہ کی سفارش بہت علاج کو ائے مطلق فائدہ نہ ہوا مولانا ہاشم مشمی رحمتُ اللہ علیہ کی سفارش

البيتنا الله المراج الم

پر آپ نے د فع مرض کے بیلے توجہ فرمائی اورصحت کی بشارت سنائی چنانچیر اس کا در د قولنج موقومت ہوگیا۔

موالاً فا محدصا دق کابلی رج آپ کے طبیل القدر خادموں میں سے تھے ، مرض جذام میں مبتل ہوگئے ، مرض کے خلام میں مبتل ہوگئے ، مرض کے خلیب کی وجہ سے لوگوں نے ان کے ساتھ آ محضے بیٹھنے اور کھانے پینے سے اجتناب کرنا نثر وع کر دیا۔ آپ سے صوصی توجہ کے مبتی ہوئے آپ نے دفع مرض کے بیاے توجہ فرمائی اور مرض کوخود اپنے اور کھینے لیا جنا نچ ان کے بدن کا انز آپ کے قدم مبارک پر آگیا۔ جب آپ کے صاحبر ادگان و کلصین کے بدن کا انز آپ کے قدم مبارک پر آگیا۔ جب آپ کے صاحبر ادگان و کلصین بہت مجملین ہوئے آپ نے بارگاہ خدا وندی میں النجائی تو بفضلہ تعالیٰ آپ کے قدم مبارک پر انز باقی ندر ہا۔

وَامَتَّارَفْعُ الْمَرْضِ فَعِبَارَةٌ عَنْ اَنْ يَتَحَيَّلَ نَفْسَهُ الْمَرْضِي وَآنَ بِهِ هٰذَا الْمَرَضُ وَيَجْمَعُ الْهِمَّةَ الْمَرْضَى لَا يَخُطُّرُ فِي قَلْبِهِ خَطْرَةٌ دُوْنَ هٰذَا فَانِ الْمَرَضَى يَنْتَقِلُ إِلَيْهِ وَهٰذَا مِنْ عَمَّا يُبِ صُنْعِ اللهِ فِي خَلْهِ هِهُ

ترجمہ ؛ اور سمیاری کا فور کرنا اس سے عبارت ہے کہ مردصاحب نبیت اپنی ذات کو بھارت ہے کہ مردصاحب نبیت کو اپنی ذات کو بھارت کو ایس کے دل میں کوئی خطرہ نہ کو سے سوائے اس تفتور کے جمع کرے اس خصر کے دل میں کوئی خطرہ نہ کو سے سوائے اس تفتور کے تومریین کی ہمیاری اس خصر کی طرف منتقل ہوجا وسے گی اور بیرام عجا تبات فلات

جو البنت الله المرابع المراب

اورصنعت ایزدی سے ہے اس کی خلق میں۔

### حضرت شاه عبدالعز نزمجة ث دملوى رحمة الله علنيه

شفار العلیل ترجمه لقول جمیل میں درج ہے کر حضرت مولانا شاہ عبلا ہے۔ اور دو دہری رحمت اللہ علیہ نے اللہ علیہ نے دوطریقے ہیں ایک یہ ہے کہ جب کوئی شخص بمیار ہوجا و سے یا کوئی گناہ میں متبلا ہو توصاحب نسبت وضو کرے اور دو رکھت نماز پڑھے اور فدا کی طوف متو تر بختوج ول ہوا ور زبان سے کہے دیسا من گئے یہ الم مضطلق اذا حکاہ و کی کھٹنے فٹ المت و اور اس مناجات اور تفتر ع سے درمیان میں کھے کشخص فد کورکی بمیاری یا ابتلائے معصیت ذائل ہوجا و سے اور دومراطریقتہ وہ ہے جومصنف قدش میٹرہ نے ارشا دکیا ہے۔ ہوجا و سے اور دومراطریقتہ وہ ہے جومصنف قدش میٹرہ نے ارشا دکیا ہے۔

مولاناتسيم التدخيالي رحمتُه التُدعليْه

صاحب معمولات في برمناج إليه كواله سدة طراز بي كسلب مخركا ببلاط بيقة بيه كذفائخ برجه كرمشائخ سلسله كى ارواح كوابيسال قواب كرے بيرام مبادك يائنا في برهك اس أم مبارك كے الوار كى طرف متوج موجب إلى شربیت كافیف ہونے لگے تواز الدّ مرض كے بيے اس طرح متوجّه ہوكہ مربیش اس كے ساسنے ہوا وروہ لورى طرح باطنى ہمت صرف كركے اس كے بدن سے مرض فُداكر كے اس كى بیشت كے بیجھے بھينكے ، اس عمل میں اس وقت مک شخول رہے كہ آثار توجه ظاہر ہونے تھيں جندار باجندروز ہي عمل جارى ركھے ۔

اله شفاء العليل رمبر القول الجبيل مقال

دوسراط بقديه بياء كدميض كوابنف سامني بمحال اور بقدر بالنج سوسالنول كنفى وأثبات كاشغل اسطرح كرك لآ إلك سه انتفائ مرض أد بے اور اِلا اللہ اسے شفام اوسے مین مرض زائل ہوا ور اس کی جسگہ

حضرت مرزامظم حان جانان قدس سترف ني فرمايا سے كففي اثبات ميں اندا تصينے والى سانس كے ساتھ مريش كي حبماني مرعن كاتف توركرے كه وه من اس كے حبم سے جُدا ہو تا ہے اور با ہر شكلنے والى سائس كے ساتھ بير تصور كري كدوه مرض يأتكيف عامل كاندرسي إس كى سانس كے ساتھ زمین برگرتاہے تاکہ سب کنندہ تعنی عمل کرنے والے پر رقیمل نہ ہواوروہ خودایدانه پائے اس طریقے سے امراض روحانی کوهی سلب کریں نیز سلب نسبت ورفع قبض بالك هجى كرسيحة ببن البتة فرق بيب كم اسس مي عواض رُوحانی بانسبت کے سلب کرنے میں زمین برگر انے کا تصور کرنے كى ضرورت نهين اور اس على مي المي اللي سياها بجث كاشغل كريك عالم برزخ میں اہل قلورسے معجز تا یا کر امتنا (باذن اللہ) د فع عذاب

عذاب وُور کر دنیا بھی شسرعًا ثابت ہے۔

مبیا کدر سُولِ کریم منل الله او م نے دو آدمیوں کو قبروں میں عذاب ہوتے کھ توان کی قبروں پڑھجگر کی مازہ ہری دوشاخیں گاڑ دیں جن کی وجہسے ا<del>بنکے</del> عذاب ميں تخفيف ہو گئي كيھ

اگرچه سرسبزشاخول کی تبییج سے ان کے عذاب میں تخفیف ہو ٹی ماہم آب کی توجر رحمت ہی دفع کا اصل سبب بنی کیونکھ

بتينه تميير٢٠

اُست كوتىلىم آپ نے ارشاد فرمائى ہے آئندہ بھی اُست كونیفین آپ كالعلیم اور توجرُ رحمت كے صدیقے ماصل ہوتا رہے گا۔

© ایک دُوسری مدیث بی ب کرحنرت معدبن معافرضی المتدعند کے دفن کے اور کا باتو حضور الد منا الله عند کے دفن کے بعد جان کو دبا یا توحضور الد منا الله عند ویز تک مستحان الله اور الله ایک بر بی معاجس کی وجہ سے قبرکشا دہ ہوگئی کے اور الله ایک بی بی معاجس کی وجہ سے قبرکشا دہ ہوگئی کے

من ت معاذرضی النّه عند کو قبر کا دبانا گوعذاب کا دبانا بلینه تمسر ۲۱ نقی بکدیپار کا دبانا تھا م گر دبانے سے تکلیف اور گھار ہے۔

صرور ہوئی حباب کی بیٹے اور توجہ سے دُور ہوگئی۔

ر در این می الله عنها کو همانت الله عنها کو همانت

قبرے ہیں دبایا ہے۔ چونکے صورعلیالتُلام ان کی قبر میں پیٹے تھے خالباً اسی وجسے بلینہ ممبر ۲۲ قبرے دبانے کی تکلیف موقویت رہی۔ یہ بھی آپ کی توجب تہ عبد میشفقات کا نظر تر)

بیعدبیٹ عالم برزخ میں تھترت کرنے اور توجہ و دعا کے بلینر منبر ۲۲۳ فریعے دفع عداب پر دلالت کرتی ہے۔

نیزید مدیث آیت قرآنی لا میخفف عَنْهُمْ الْعَدَ ابْ الْمُ كَمَعَالِنْ نَبِيرِ مِدِيثَ آيت قرآن لا مَعَالِثُ الْم نبیر کیونکر قرآن برج رخفیف کی فنی ہے وہ باعتبار مدت کے ہے ابعنی کفار کے البنت الله المنت الله المناه المنت ا

دائمی عذاب مین خنیف نہیں ہوگی اور صدیث میر سی خنیف کا شوت ہے وہ کی عذاب میں خنیف کا شوت ہے وہ کی عذاب کی مقدار کو کم کر دیا جائے گا ، کیفیت کے اعتبار سے ہے ایعنی ان کے دائمی عذاب کی مقدار کو کم کر دیا جائے گا ، نیز کفار کے عذاب میں تخفیف نہ ہونا اللہ کی وقت و میں کا عدل ہے اور تخفیف ہوجانا اس کا مفتل ہے ۔ ذالے فضن لی اللہ کی وقت و میں کی شکا ہے و

ق يرهي كها جامكتا م كه عدم تخفيف فراكا قانون م ليكر بعض وقات لين محبوب كل عرف المراكة المراكة

مصنرت امام رّبانی قدس سرهٔ عالم برزخ میں توجه فرما کراہل قبور سے عذاب المفاديني ببي الله تعالى كي طرف سيدايك فاص شأن ريحفيَّ تحفيه بنياني حضرت خواج محمد إلى مُحتمَى على الرّحة مصنّعتُ أربرة المقامات مقصدوم كي يفصل من قمط از بي-ايك رات بمارس صنرت مجدّد الف ثاني قُدِّسَ سرّة اليضصاح زادون اور مجيع دروليثول كوك كروبال اسر مندكا وه قبرتنان بس أب كے عبر المجد حضرت امام رقیع الدّین قدّس سترهٔ اور آب کی والده ماجده مد نون بیس زیارت کیلیے تشریب كے گئے مختصرير كر مصرت مجدّد ك اس زيارت سے واپسي بر فرما يا كرمب بي حضرت امام رفيع الدين رحمة الشعليه كد وضه كسائن كفرا بوا توميس التُدتعالىٰ من وُعالى كريا اللى البين فضل وكرم من اس قبرسّان من المام عذاب كودور فرادے ما وارا فى كەلكى ہفتے كے ليے ہم نے اس پرسے عذاب الماليا يكري منتي مواكدات برور دگارتيري رحمت كي انتهانهين ان سب كالمغفرت كوبرها وسيحكم هواكدابك مأة تك بم نه عذاب الفاليابس ك بعد لمين في خوب خوب لفترع كيا توالتُّه تعالى في البيني خاص كرم سيب كونخش دیا اس كے دُور سے دن آیپ اپنے والدماجد احضرت شخ عبدالاحد

مے مقبرے پر تشریف نے گئے اور آپ کے ول میں اس شہور مدیث پاک کا مضمون گزر اکه " جَب کوئی عالم مقبرے اقبرتان پرگزرتا ہے نوجالیس ون مک والسع عذاب أعماليا ما ناست يمن اس ميال براب كوالهام مواكر بم ن تهاري بي آمد كي وجرسے قيامت مك كيليداس قبرے افرشان ريسے عذاب الحاليا ہے۔ كثرت بِحرامات قلّت بِزُول كَي <del>وجه ِ ـ</del> ارشاد که «اب نقیر کوئسلب اَمراص اور د فع عذاب جیسے تصرّفات اور ایسے ہی گئے كرامات كے اظہار كی طرف رغبت نہیں دہی " اس امركا عمّازہ اللہ ما بختیقی اور ستغراق ذات کے اس مرتبے برفائز تھے کہ جال کر اُست کے اظہار کو معیوب سجهاما آبے اس فرمان سے آب سے علق مرتب کی شان طاہر ہور ہی تھی ۔ و اضح رہے کد کر امات کا کثرت سے ظہور در اصل قلت بُرول کی وجسے ہوناہے اولیار کا نازل ترہونا کامل تر ہونے کی دلیل ہے کیونکہ صاحب نزول عالم اسباب میں اُترا آ باہے اور انتیار کے دحود کو اسباب سے وابستہ یا تاہے اور شیائی الاسباب سيفغل كواسباب كيرر دس كي بيجيج ديجشا ب اورهب شخص نے نزول نہیں کیا یازول کرکے اساب تک نہیں پہنیا اس کی نظرصرف سُتب الاسباب کے فعل پرہے کیونکہ ا<sup>م</sup>ستبب الاسباب کے فعل پر اس کی نظر ہونے کے باعث اتمام اسباب اس کی نظرے مُرتعنع ہوگئے ہیں بس حق تعالیٰ ان سے ہرایک کے ساتھ ار کے طن کے موافق عکیحدہ علیحدہ معاملہ کر ہاہے ۔ اسباب کو دیکھنے والے کا کام اسب پر ال دیتا ہے اور حواساب کونہیں د کھھا اس کا کام اسباب کے وسیسے کے بغیر ہیا

كرويا ہے . مديث قدس آئاعِتْ دَطَليّ عَبْدِلْي فِي<sup>لّه</sup> اس بروليل ہے.

ركما قَالَ الْإِمَامُ الْرَبَّانِ فُتِّسَسِنُهُ

کرامات ارکان ولایت میں سنے ہیں میں میں میں میں میں البرع والات کا افران ولایت میں سنے ہیں اور است کا افغار لازم ہے حضرت کہ انبیار برعجزات کا اِظہار فرض ہے گئیں اولیار پرکرامات کا اخفار لازم ہے حضرت امام آبانی کا ارشاد ہے کہ خوارق کوئی ادکان ولایت میں سے نہیں ہیں اور نہی ان کی شرائط میں سے ہیں ۔ مخلات معجز اُن مخیر کے کہ وہ تقام وعوت کی شرائط میں سے لیان اولیار اللہ سے کرامتوں کا ظہور ہوتا ہے کہ درجات سے وابستہ اور سے کوئی دلیان ہیں ۔ افضلیت تو قرب الہی کے درجات سے وابستہ اور سے کوئی دلیان ہیں ۔ افضلیت تو قرب الہی کے درجات سے وابستہ واب میں ہوسکتا ہے کہ ولی اقبر ہوئی البر ہوئی اللہ میں اللہ

وه محالات عادیہ جو اولیار کوام سے خرق عادات کے طور بلینہ نمیسر ۲۲۷ پرصادر ہوں انہیں صطلاحًا کرامات کہا جا آبا ہے علمائیان اشاعرہ اور مات یہ کرامات اولیار کے قائل ہیں مجزات کی طرح کر امات بھی قرآن کریم سے ثابت ہیں مِ عزلہ (حوالک گراہ فرقہ ہے) کرامات کے مُشکر ہیں۔

منتن بعضے شدائدازمردم برنقیرگذشتندوستم ہا نمودند و جمع کشپراز متعلقان این مانب را بناحق وران ماختند وجلا وطن نمودند اصلاً بخاطر غبار وکلفت راہ

# نيافت چرجائے أنكه بر إنها بخاطس كذرد

ترجمہ البعث کیفیں گول کی طرف سے اس فقیر برگزیں اور انہوں نے ہمت کلم و ستے کیے اور فقیر سے مقتل رکھنے والے بہت سے لوگوں کو ناحق طور پران کول نے برباد اور مبلا وطن کردیا اس فقیر کے دل پر دان کے حق ہیں کمی تم کا غبار اور رنج بالکن نہیں آیا ان کے ساتھ برائی کونے کا خیال دل میں گزرنے کا توسوال ہی بہت ا نہیں ہوتا۔

### شرج

معلوب المحرب المحرب المحرب المرابي فدّس مرة كو بندي المسلم والمنا المرابي والمحرب المرابي والمحرب المرابي والمحترب المرابي والمحترب والمرابي والمحترب والمرابي والمحترب والمرابي والمحترب والمرابي والمر

وَلَنَ بُلُوَ نَكَ مُ بِشَنَى مِنْ الْحَوْفِ وَالْحُوْعِ وَلَقْصِ

ای قانون کے مطابق بندگان خاص رکھبی کطف ولواز شات کی بارشین ہوتی ہیں اور کھبی نازو ا د ا کی مجلیاں گرائی جاتی ہیں مجھبی شریت وصال سے سیراب کیا

حضرت مام را فی قدس مرا و رجد به میم ورضا مجددان این از محتد الفت این محددان این از محتد الفت این محددان الله و محدد الله و محدد الله و محددان الله و محدد الله

جه البيت الله المهاج المام المهاج المام المهاج المام المهاج المام مصمقابله فرما بااورجذ متسليم ورصاك سجريأتم بن كررضا بأنقضاكى لازوال مثال قائم فرماني ہے جنائجة آپ فرماتے لين : اگرمحبوب برحلقوم محجت إحرابتكين نمايد وبرعُضو اورااز عضو دمگر أومُداسًاز دمُحُتِ اوراعيَنِ صلاح خود د اندوبهبو دِخودتصور كمن له یعنی اگر محبوب مخب کے حلق برچیری همی میلا دے اور اس کے ایک ایک مفتو كوحُدا كردے توبھى محت اس ميں اپنى بہترى اور بہبودى تصوّر كرے گا اس سے آگے بیں رقم طراز ہیں ، " انگارم كه اين مقام فوق مقام رصاست چه دَر رَصَا رفع كراهتِ فعل اللامحبوب سأت وابنجأ إلتبذاذ باين فغل زبراكه هرحنيدانه مانب محبوب جفا مبندو مبثيتر برد ازجانب محِتِ فرح ومُســر در زباده تزباشد" بینی میں بھتا ہوں کہ یہ تقام دمجت واتی مقام رصاسے بھی اُونچاہے ہے۔ لیئے رضانام ہے ددمحبوب کی الم دہی سے کراہت وور کرنے کا "مگراس مقامیں اِکم وَہی سے لٰذَت باِ باہے اس لیلے کرحتینی محبوب کی جانب سے عنی زیا دہ ہو تی ہے مُحَلِّبَ كَيْحُوشَى وسرور مِين اصْنا فه ہو تا ہے۔ حضرت خواجة فطب لدين بختياركا كي رحمة للتعليه ورجذته ليم ضا محفل ماع میں قوالوں نے آپ کے سامنے حضرت احمد عام علیہ الرحمة کا یرشعر پیما : پیشعر پیما : پیشعر پیمان خنستگان خنب بر تشکیم را ہر زیاں از غیب جان و گیر است یعنی جولوگ امجوب کے خبر تسلیم سے ذبح ہو گئے ہیں ان کوغیب

جو المنظم المنظ

ہروک فاصول کی بھی ہے۔ اور جد طاری ہوگیا جب قوال بہلا مصرع بڑھتے تو شعر سنتے ہی آپ پر وحد طاری ہوگیا جب قوال بہلا مصرع بڑھتے تو آپ مبال بجق ہوجائے تھے اور جب وُوسر امصرع بڑھتے تو آپ وُحد کرنے لگ مباتے بالآخر پہلے مصرع بر ہی آپ واصل باللہ ہو گئے

تحضرت مِرْزامنطہرجانِ جاناں رحمۃ التّدعلیہ ورجْدِبنبلیم رضا جب دہلی کے ایک شیعہ وزیرنے آپ کوشہدکرا دیا تو آپ خاک وخن میں علماں سشر کا ور د فرمارہے تھے :

ے زخم دل مُظهَرِمب دابشود ہشیار بکشس کیں جراحت یا دگار نا وک مژگان اوت بعنی اے مُظہَر اِ دُعا کرو کہ یہ زخم دل انجِیا نہ ہو کیونکہ بیصبوب کی نگاہ ناز کے تیرکی یا دگارہے۔

حضرت خواج سیرلدین جراغ داوی رحمة الدیما او رقبه او میراند میم رضا جب دخمی مات بین قاتل جب دخمی مات بین قاتل سے دولایا کہ "تم جواگ جاو "کہ ہیں میرے مُرید اکرتہ ہیں کلیف نہ دیں ۔ جب مُریدین نے آپ سے بوجھا کہ آپ کوکس نے زخمی کیا ہے تو ذوا یا ۔ جوں حوالت ہا تے ای خربت زجائے دگیر است منظم آید گر گر و میر از فن لاں رنجب یہ اُم میں از فن لاں رنجب میں تو جھے شرم آئی میں جب اس زخم کی ساری مانتیں مجبوب کی طرف سے ہیں تو جھے شرم آئی مین جب اس زخم کی ساری مانتیں مجبوب کی طرف سے ہیں تو جھے شرم آئی

ب اگرمین کبول کرم محصے تیکیف فلان فض سے بینی ہے۔

مارون جب عروج کے افری مرتبول پر فائز ہوتا ہے اور آگان بلینہ ممبر کا کے دائرے سے باہر ملا جاتا ہے تواس وقت ممکنات کی طون اس کی توجہ نہیں رہتی۔ کا نمات اور اس کے وا دخات مارون کی نفر سے افھ جائے ہیں اور اس کی نفر صروف خالت کا نمات کی طرف متوجہ رہتی ہے رہبی وجہ ہے کہ مصائب والام کی زحمت وگفت ان کی اپنے خالت کے ساتھ مجتت واُلفت ہیں مائن نہیں ہوتی اور وہ ہوال ہیں ذات وصفات کی فرحت بخش تحلیوں میں مست رہتے ہیں اور ایک آن کے بلے بھی وہ شربت وصال کی لذت و نعمت سے محروم رہنا گوارہ نہیں کرتے بحضرت امام ربانی فریش شرف نے شطور بالا میں ابنائی کی کیمینت کو بیان فرفایا ہے۔

باران طریقیت کے باطنی احوال کا مجر بیر خواجہ باقی باللہ دہوی فرید اور باقی باللہ دہوی فرید اور باقی باللہ دہوی فرید والعزیزی ها دست مبارکتی کر اپنے مریدوں کور بہند شریفیت حضرت امام بنانی فریش نیروں کور بہند شریفیت حضرت امام بنانی فریس نیروں کور بہند شریفی دیا کرتے تھے ان باران طریقت میں کچھ وہ تھے جوالی جذب تھے ابھی سلوک میں قدم شرکھا تھا اور کچھ باران طریقت میں کچھ وہ تھے گرائمیل سلوک طریعے تھے گرائمیل سلوک طریعے تھے گرائمیل باتدائی تھا کچھ لوگ سلوک طریعے تھے گرائمیل باقی فری ان میں کہ برخدات صرف تعلیم سلوک سے بیانے مامنر رہتے اور کچھ باقی عدہ سلوک کی عمل تربیت حاصل کرتے ۔

ندگورہ بالاحبارت میں آپ نے انہی صنرات کی رُوعانی کیفیات اور باطنی اس کا کورہ بالاحبارت میں آپ نے انہی صنرات کی رُوعانی کی خصیل و کمیل اس کا کرنے اپنے مُرشد برح کی فارست میں کو روشنی میں قدم آگے باط صابا جائے۔
کے بید مزید احکامات وارشا وات کی روشنی میں قدم آگے باصابا جائے۔
وباللہ الشونین

البيت الله المرام المر

بعض دوستوں کے باطنی حالات کے تجزیدے کے من میں جنید مسأل طریقت کا ذکر آیا ہے جن کا اجمالی بیان حسب ذیل ہے ۔

چندىبر جديكشش اوعشق الى كانام ہے۔

کسب و جاہدہ کے بغیر حوباطنی احوال خال ہوجاتے ہیں ان کوجذب کہتے ہولور انہی کو اجتبار ، محبوبتیت ، فمراد تیت میں کہا جا تاہے۔

قَوْلُهُ نَعَالَى ، اللهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مِنْ نَيْشًا وُ وَيَهْدِي اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَمَنْ نَيْشًا وُ وَيَهْدِي

ترحَب : الله تعالى بين ليه است ابنى طرف من كوبابه است اور راه وكها آب ابنى طرف حراً وهر أو عرف المست ابنى طرف حراً وهر أحراً حراً است .

آیت بالا بیں ہتبارسے مُرا دجذبہ ہے اور اِحْتِدارسے مُرادسلوک ہے۔ وجد وحال ،محیّت و کستِ عراق ،جذبہ و اِمِتبار کے ثمرات ہیں اور کشف عیا نی مُجاہدہ وریاضت سلوک کے اثرات ہیں۔

جذبه کی دو قسمیں ہیں ۔ جذبۂ بدایت ، جذبۂ نہایت

فائیت کاملہ سے پہلے جوجذبہ ہو اسے وہ جذبہ بدایت ہے اور فارکے مفرنہ نہایت ہے ا

و سرک سلوک "بضمین "راه رفتن نیک روی اختیار کرون" گغت میں سلوک سلوک راسته چلنے اور نیک روی اختیار کردنی کا نام ہے۔ سلوک سلوک راسته چلنے اور نیک روی اختیار کردیے کا نام ہے۔ طریق استدلال کی بجائے سکھٹونی عیانی سے طریق پر خدا تک پینجیا سلوک کہلاتا ہے

ظر لتي استدلال في بجلسے سيرطوع على تفطريق پر خدا الک بيجيا تساول فهلاما ہے۔ صُوفياء كى صطلاح ہيں سيرعاشق بجانب مشوق ، انتقال حتى بعنوي ، جہب د بائنفس اورئيرال اللہ بھي سلوک ہي تحو بجھتے ہيں ۔

ه الشوري ۱۳



يد وه علم سيحس كا طالب ول سيند كرفيان، يدوه راسته سي كرمس برواحليا

بی علم کے مقامات کا نام شرابیت ، طربیت ، حقیقت اور معونت ہے . پیمل ادر الوجودہ سے اس علم کے فاصل کوسالک صوفی، فقیر، عارف اور انسان كامل الجنتي بي .

السان کا کی مسته ہیں۔ ﴿ اسْعَامِ اسْعَامِ اسْتَقْصُودَ رَحْيَنْ فَسْ مَكَارِمِ إَفْلَاقِ اوْرَجَمِيلِ إِفْلاص ہے۔ ﴿ امامُ الطّرِيقة حصرت خواج نعشبند نجاری قدّس سُرَة سے پوچھا گيا كرسلوك سے کيامقصنُود ہے؟ آپ نے فرما با كاكہ اجمالي معونت نفصيلي اور سستدلالي معونت

بعض معاملات سالک پر بُوری استغفار مرات و فع خطرات طرح و اضح نہیں ہوتے ص کی بنا پر، من سمحوس ہونے لگتی ہے ایسے وقت سالک کو کثرت استعفار سے کام بینا چا جیتے۔ درج ویل کمات استعفار حضرت امام ربا فی رحمته الشعلیہ کے عمولات

اَسْتَغْفِرُ اللهُ وَاتُونِ إِلَى اللهِ مِنْ جَمِيْعِ مَاكِرِهُ اللهُ قَوْلًا وَفِعْ لَاخَاطِرًا وَسَاظِرًا

ترحم بأبين الله تعالى مخيشش جاهما هون اورقول مغل منيال اورنظر سيحو چیزی الله تعالی کونالیب ندہے اس سے توبہ کرتا ہوں۔

محشى تحتوبات مولانا نؤراحمدامرتسري رحمثه التدعلية رقم طرازبين دعب كااردف ترحمه درج ذيل ب خطار في ساوس ك دفية كيلينها أني مين مرتبه بوكلمات بطيط لين اَسْتَغْفِرُ الله مِن جَمِينِعِ مَاكِرة الله وَوَلا وَفَعِلاً وَخَاطِرًا وَسَامِعًا وَنَاظِرًا لاَحْوِلَ وَلا فَوَة وَلاَ قَولاً وَالله اور اس وقت سائس كوتمنوں مرتبہ قرت كيساتھ كينني اس طرح كد هميا وه كسي جزيكو دماغ سے دُود كرر إبداور دل كوزبان كيموافق كرسائين دل ميں اس استخار كيمعنى كالحاظ ركھے ـ

مالک کوغلبهٔ احدتیت میں حب ذات وصفات کی تزییم غلب احد سرت کالیتین ہوجا تاہے اور اس پر اس مقولہ کا مفہوم ظاہر ہو

جاتا ہے کہ کے اللہ وکہ میکن ملک اللہ کے کہ کا کا کا کا کہ سینے کی وہو آلان کی کا کا کا کا کہ سینی اللہ تعالیٰ تعالیٰ اللہ وکہ میک اللہ کا کا کا کہ سینی اللہ تعالیٰ تعالیٰ تعالیٰ اللہ اللہ کا علم اور حال دو نوں برابر جمع ہوجاتے ہیں خوشیکہ حداث الم مربانی فقد سین کی فرماتے ہیں کہ بندہ کو پہلے اس خدیث المعتولہ کا علم حاصل تعالیٰ الدراب حال میں اس کے مطابق ہوگیا ہے۔ اور الب حال میں اس کے مطابق ہوگیا ہے۔

ور الم صفرت الله و المن الله و المن الله و المن الله و المن الله و المن و الله و الله



ئىخۇسائنىر مارفىلىلىن داجىخىكىلىلى بىلىن بىرى سىلىن كىلىن دارىيى مىلىن كىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن ئىلىن مارفىلىلىن ئىلىن ئىلىن



مَوَضُوعِ الله مَا مَعَلَىٰ مَا مَا مُعَلَّىٰ الله مَا مِعْلِىٰ مَا مَا مِعْرِوا خَتْ عَلَىٰ الله المعالىٰ مَا مَا مَا مُعْرِدُ الله مُعْرِدُ مِنْ الله مُعْرِدُ مُعْمِدُ مِنْ الله مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْرِدُ مِنْ الله مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْرِدُ مِنْ الله مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْرِدُ مُعْمِدُ مُعْمِعُ مُعْمِدُ مُعْمِدُ مُعْمِدُ مُعْمِدُ مُعْمِدُ مُعْمِعُ مُعْمُ مُعْمُ مُعْمُ مُعِمُ مُعْمِعُ مُعْمُ مُعْمُ مُعْمُ مُعِمِعُ مُعْمُ مُعْمُ مُعْمُو



## مكتوب ١٢١

مان عرضداشت کم رین بندگان احمد برروهٔ عرض می رسا نداز تقصیرات خود چرع خرض نماید مناسک الله کان و می رسا نداز تقصیرات خود چرع خرض نماید مناسک الله کار الله و النه و النه

گیس**ت و اُمثال آن** علقه سمر کام ترین فاده و جرفامه مین عالمه مین عضر کرانه سرکاننی کو

ترحمہ ، عرصیٰ آپ کا محم ترین خادم احمد خدست عالیہ میں عرض کرتا ہے کا بنی قرابی و کے بادے میں کیا عرض کروں حرکھی اللہ تعالیٰ نے چا یا وہ وجودیں آگیا اور حرکھی اللہ د تعالیٰ نے نہیں چا یا وہ وجود میں نہیں آیا اور گنا ہوں سے بچنے اور حق تعالیٰ کی مرضیات پڑسل کرنے کی طاقت اللہ تعالیٰ کی ملبنہ وظیم ذات اکی مدد، سے بغیر مکن نہیں جو

برِهمل کرنے کی طاقت اللہ لعالیٰ کی ملبند و تطیم ذات الی مدد، سکے بغیرِممکن بہیں بھر علوم کرف افی اللہ اور بقا باللہ سیعلق رکھتے ہیں حق تعالیٰ نے ابنی عنایت سسے ظاہر فرما دیتے ہیں اور اسی طرح اس خادم نے علوم کر لیا ہے کہ ہر چیز کی وجرِخاص

عاہر فروہ دیسے ہیں اور ای طرح ان کا در سے خوام سیا ہے مہر پیری و مبرہ ک کیا ہے اور سَیر فی اللہ کے کیا معنیٰ ہیں اور کبلی ذاتی برقی کیا ہوتی ہے اور محد مُکالفر ر

كون ب اور اس فتم كى دوسرى چيزون .

## شرح

اس محتوب گرامی میں صنرت امام ربائی مجدوالف نائی فترس مِترہ نے اسب فرشد بزرگوار کی فدست مالیہ میں ا پہنے معلی اور مقامات کے ریز فرمائے ہیں اور تصوف کی جید خاص اصطلاحات کا ذکر فرما یا ہے جن کی فضیلات قبل ازیں بیان ہو چی ہیں۔ مزید تشریح سے بیا دفتر اول محتوب ۱۹۳۸، دفتر دوم محتوب ۱۹ ور دفتر سوم محتوب ۱۴ کامطالعہ فرمائیں۔ البقہ آب سنے "ہر جیزی وجہ خاص" کا جو ذکر فرمایا ہے اس کا مختصر مفہوم یہ ہے۔

و خاص مره ہو ۔ جہر وجہ وجہ وجہ وجہ فاص ہوتی ہے۔ وجہ وجہ وجہ مات ہوتی ہے۔ وجہ وحب خاص ہوتی ہے۔ وجہ وحب مرحب کا نام ہے جا لک کی حقیقت عَدَّم یہ سے علق رکھتی ہے اور وجُد دکے بعد سالک کا مبدأ فیض بھی وہی صفت ہوتی ہے تو شط سے مسلم فیض و رکات ہی صفت کے تو شط سے اس کو پہنچتے ہیں ۔ اس کو پہنچتے ہیں ۔ اس کو پہنچتے ہیں ۔

منت فیبل متن فیبل یو کاچاک بیا کاند سم جنا کله ذوات سشیار رامجعول می داند اصل قابلیات و استعدادات رانیز مجعول وصنوع میداند ترجمه : جوکوئی می خداتعالی کی بارگاه مین مقبول ہواہے وہ بلاعترت رسبب، ہی

مصن عنابیت النی سے مقبول ہوا ہے جس طرح بیفادم ہرچیز کی ذات اور صل المصن عنابیت النی سے مقبول ہوا ہے جس طرح بیفادم ہرچیز کی ذات اور صل کو اللہ تعالیٰ کی مخبوق مبانتا ہے ہی طرح قابلیتوں اور سِستِعدا دوں کو تھی اللہ تعالیٰ کی مخبوق مبانتا ہے۔

## شرح

امامرتا نی فتنس میرو فرات بی کداولیات کبار نے بی کموم و معادف اور مشاہدات کی شاندہی فرمائی ہے بندہ کو وہ سب کچیوعطا فرمایا اور دکھایا گیاہے اور بندہ فقیر کی مقبولت کسی مل یا مجاہدہ کا بتجہ نہیں بلکھن عنایت فعدا وندی ہے کیونکہ س کی بارگا ہیں جھی مقبول ہموا ہے بینے سے سبب اور علت کے مقبول ہوا ہے۔

س نے فیبل مَنْ فیبل بِ الله مُعَلَّلُ بِهِ بِي اللهِ الله عقیده ابت فرمایا ہے اور ماترین ساک کی تایید فرمائی ہے بہسس سلامین اختلاف مراک میں جوزمان میں

محیم ہے کوئی کام طن وتخین کی بنا پرنہیں کر نا بلکہ اس نے ہرچیز کا ایک اندازہ تقرتر کی ہو اہے۔ البذا صلاح واسلنح پڑعمل کرنا فڈ اتعالیٰ پر واجب ہے کیو نکر حبب شیار کاحشن و قبح ذاتی ہے اور اللہ تعالیٰ وہی کام کرتے ہیں جوقری کیمٹ و مصلحت ہوتا ہے بنا بریں بیرمحال ہے کہی غیرصالح فعل کا حکم صا در کرے اورصا کے سے

روک دیے بیں اس سے علوم ہوا کو صلاح واسائح اللّٰدیرِ واجب ہے۔ اشاعرہ کی رائے میں اللّٰہ تعالیٰ کے افعال معلّل نہیں منٹوں پر مجامر اس کے جو اللّٰاعرہ کی رائے میں اللّٰدِ تعالیٰ کے افعال معلّل نہیں

اشاعرہ کا مسلک ہوتے اس بیے کہ وہ کسی کے سامنے سنول وجابدہ اسیار مسلک ہوتے اس بیے کہ وہ کسی کے سامنے سنول وجابدہ انہیں نیزان کے زدیک اشیار کا حسن وقع خاتی ہنیں مکرمسن وقع کا معیار شارع سے اوامر و نؤ اہی ہیں وہ کہتے ہیں کہ کوئی کام حسن اس بیے ہے کہ اللہ نے آل

النيتنا الله المرابع المحالية المحالية

كے كرنے كا حكم ديا ہے اور بيرح اس ليے ہے كہ اللہ نے اس سے روكا ہے۔ ماتريديه كانقط أنظر مغيزله واشاعره سيمخلف ماتر پدیہ کامسلک ان کی رائے ہی ہے کہ اللہ تعالیٰ عبث سے مُنترہ ہے اس کے اُفعال ہر تقاصائے محمت وصلحت صادر ہوتے ہیں اس لیے کہ وهجيم وعليمها اس نے اپنے احکام کلیفنیہ اور افعال کونیے بیر میں حکمت مصلحت كوملحوظ ركصا بسيمكر الله تعالى حكمت وكصلحت كاقصد وارا ده كرني والاسب للذا بيكهنا درست نهيير كمراس برصلاح أضلح كالمجام دينا واجب بسيح كيونكه أسس كا ومجرب إختيار وارا ده كيمنا في ہے اور اس سے لازم آتا ہے كه اس بركسي كاحق واجب الاوأہے مالانکہ وہ بندوں پر فائق ہے اور اس سے کسی فعل کی ہاز ویس نہیں کی جائےتی اور اگر اس برکسی کا م کوواجب ظہرایا جائے تو اس کا اقتضاریہ ہے کہ وہ بندوں کے ایکے مسئول اور حواب دہ ہواور بیشان خداوندی کے خلاف ہے لَايُسْتَكُلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْتَكُونِ الْمَعَالَى اللهُ عَنْ ذَالِكَ عَلُوًّا ڪَئِيُّا) نيز ماتريديه اشار کاحسُن واقح ذا تي ملنتے ٻير سکين امام اکْجِعنيفه کي آباع ميں كيت بير كما محرجيعقلاً اشياء كحسن وقبح كاإدراكم كن بيم محران إن الوقت يك م كلّف ومامُورنهين، و باجب ك شارِع حكم نه وب كبيونكم قل إلاستِقلال ديني احكام صاورنهبين كرشكتي ملكه أحكام صاور كرنا صرف ذات بارتي عسك الأكو زیب دسمیت ہے۔

ذوات اشیارا وران کی اِستعدا دات مخلوق ہیں حضرت امام رّبانی ُرخمتُ اللّٰہِ عَلَیْہِ فِرماتے ہیں کہ فقیر جس طرح ہرچیزی ذات اور جه البيت الله المرابع المحالية المبيت المبيت

صل کواللہ تعالی کی مخلوق جانتا ہے اسی طرح قابلیتوں اور ہتعدادوں کو می التد تعالی کی خلوق جانتا ہے اسی طرح قابلیتوں اور ہتعدادوں کو می التد تعالی میں کی مخلوق جانتا ہے اور کسی چیز کو اس برجا کھر سند کی طرف اشارہ فرمایا ہے اس سسکلیس معتزلہ، اشاع ہ اور مارتید ہیں کے درمیان اِختلاف ہے۔

### مسئله جبرو إفتيار

و معترار کام وقت بید کربنده اپنے افعال کاخر وخال ت معترار کام وقت بید کربنده اپنے افعال کاخر وخالت معترار کام وقت کردہ ہے۔ معترار کی والیت کردہ ہے۔ معتربی کردہ ہے۔

اشاءه کا زاوتیزنگاه بیب که افعال فداکی نخلوق بیس بند سے سیکسب کاصد ورہو تا ہے اور اسی وجب

ا سے مکلف بالاحکام کیا جاتا ہے اور وہ تواب وعقاب کاستی ٹھہرا ہے لیکن بندہ بذات بنودکسب میں موڑنہیں۔ نبابریں افعال کی طرح کسب بھی خدا کا پیدا کر دہ ہوگا لہٰذا بندے میں فعل کی قدرت نہیں ہوتی ۔

نہیں ہے جگمت فکدا وندی اس امر کی متقاضی ہے کہ بندہ صرف انہی افعال میں لو سزا کا متحق ہے جن میں وہ مختار ہے یہ نظریہ مندرجہ ذیل آیت سے ثابت ہے۔ وَ اللّٰهُ حَلَقَ کے مِنْ مَنْ اللّٰهِ مَنْ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ تَعْلَمُ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ عَلَمُ اللّٰهِ عَلَمَ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ عَلَم اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ ا

اشاعره كائتوقف

اور صدم کسب دونوں بیقا در ہے گویا وہ آزاد عُلی الْاِطْلَاق ہے اگر چاہے کے خول کو انجام دے اور اگر چاہے کے خول کو انجام دے اور اگر چاہے کے خول کو انجام دے اور اگر چاہے کے خواب کا منبع ہی ہے اندریں موت خدا کے خالِق افعال ہونے اور بندے کے ختیار میں منافات نہیں ہوگی ۔

باین فرسر این بندے کی مید قدرت جو اینر فی انگریت کی روجب ہوتی ہے اور اس باین فرمبر کا اثر وجود فعل کی صورت میں نمایاں ہوتا ہے اس کو انتظاعت بھی کہتے ہیں جو حضرت امام ظلم الومنی خد تک سرو کے نزدیک تحلیف احکام کا مدار اور منسسہ

مقىزله كےنزديك استبطاعت بندے ميں وقوع فعل سے قبل ہوتی ہے ان کی دلیل بیسهد کربندسے کو مخاطب کرکے مکلفت بالاعمال ظہونین سے قبل کیامیا تا ب نکراس کے بعد۔ لہٰذا استطاعت کا ظہونوس سے قبل یا یا جانا صروری ہے۔ مار مدید کن دریک بیراتطاعت بندے مین فل کے وقت بدا ہوتی ہے اس بيك كدير قدرت متجدّده وحادثه بيع وقوع فعل معقبل وحودين نهين المحتى تصنرت امام رّبا في قُدِّسُ مُرَّهُ كا فرمان بالانتكمائة بيزنان كي تزويد ب كيونكران ك نزديك التعداد ما كم اليدي اليفي تقفي كاملام كرتى ہے اور الله تعالی کی زات پر لازم ہے كەصاحب سلىعدا دِكو اس كی استعدا د ك إقتضار ك على ابن عطا كرك ي علماء المستنت ك نزديك حاكميت الله تعالى کے بلے سے کوئی چیزاس برحا کم نہیں ہو تھی اور نہ ہی اس کی ذات بر کوئی چیز لازم يا واجب الوسحتى ہے۔ والمحسن البين فشل وكرم سے مبر كو جاہے نواز الهدے۔ مطور بالامين أب في إنى قبلتت والتعداد كومار يدى ملك مطابق الثدتعالى كفشل وكرم اوراس كعنايات خاصه بيبي قرار دباب اورعلمارا بلسنت كيموقف وسلك كي ازر وكي كشف تاسيب عبي

ئىنسەما ئى ہے۔

اسیمات نے افعین اس میرسے وایا کا دو میم کا اسے جہدین میں سے ہے ای وقت سے سابل کلامیہ کے ہرسکد میں اس فقیری فاص رائے اور ضیوس علم ہے۔ اکٹر ہمکافی سال میں ہیں جہ الزیدیا در الثباء ہ کے درمیان تنازع ہیں ابتدائی طور پر حقیقت اطاع ہ کی طرف سمجھ میں اتی ہے لیکن حب نور فراست سے باریک بینی کے ساتھ عور کیا جا تا ہے تو واضح ہو جا تا ہے کہ حق ما تزید بیر ہی کی طرف ہے علم کلام کے تمام ہمتکا فی سائل میں الفتیر کی رائے علی نے ماترید بیری رائے کے موافق ہے اور کیجی بات یہ ہے کو منت البيت المحالي المراس المحالي المراس المحالي المحالية المحا

سنید علی صاحبه الصّلوة والسّلام والحیّته کی پیروی کی وجهسے ان بزرگوں کی بوی ہی شاپی عظیم ہے جوان کے مخالفین کو میٹر نہیں ہے کیونکھ انہوں نے فلسفیا نہ کلتہ افرینوں کی بڑی آمیزش کر والی ہے۔ اگرچہ وولوں فراتی اہل حق میں سے ہیں .



محوُّبائیرِ عارف السن واجه محکم الماقی با الله المرابور المست الزر



را وسلوکسٹ سیجایس ہزارسٹ له راه مقوله بهمه اُوسٹ اور بېمه ازوسٹ کا بیان

## مڪڻوب - ١٣

منت عرضداشت كم ترين بندگان احمد موضى گرداند آه بزارآه ارب نهايتي اين راه سير بين مرعت و وار وات وعنايات باين كثرت ازين جاست كمث تخ عظام فرموده اندسيرالي الله بنجاه بزارسالدراه ست تغريج الملكوك أ والزُّوْحُ النَّه فِي يَوْم كَانَ مِقْدَارُهُ تَحَمْسِينَ أَلْفَ ستنة مِلْ المرايات باين عني واست تداند

ترجمه بحضورِ والاکاکم ترین فاوم احمدعوض کرنا ہے افسوس ہزار افسوس کہ اس لیسے
کی کوئی اتبہا ہی نہیں ہے اس رہستہ کی سرنہا بیت تیزی کے ساتھ اور وار وات و
عنایات نہایت کثرت سے واقع ہورہے ہیں۔ اس پیمشائخ عظام نے فرما پہنے
کوئیر اِلیّ اللّٰہ کِاپس ہزارسال کار استہ ہے " فرضتے اور رُوح رجرائیل علیہ اسلام ) الله
تعالیٰ کی طرف چرط سے ہیں مینی غروج کرتے ہیں ایک ایسے ون میں جس کی مقدار رطول)
پیاس ہزارسال ہے " اس آیت مُبار کہ ہیں شاید اسی می کی طرف اشارہ ہے۔

شرع

أم يحتوب من يتقيقت واضح كى كتى ب كدراوسلوك كى كوئى انتهانهيل وعلوم

البيت المجاور المجاور

حقیقت ہلوم شربیت کے عین طابق ہیں ۔ سے سے صفرت اہام تا نی قُدِسَ سرف اس جُسکے ہیں سیرِلوک کی ہے بناہ

گزار ہیں کرمیں خداتک وصول کے بے صدولاً انتہار استے کی درازی اور بے کیفی کے سبب نااُمیدی کے مرتبے کئے ہنے جاتھا کہ آیت قرآنی کو هُوالَّذِی اُسِتَارِلُ

الْغِيَّتُ مِنْ بَعَنْ بِدِمُ الْفَنِطُ وُ الرَّيْشُ وُرَحْتَ يَا لَهُ مِعْنِ وه اللهُ تِعَالَىٰ الْغِينَ وه اللهُ تِعَالَىٰ

ہی کی ذات ہے جولوگوں کی مائیسی سے بعد بارش نازل فرما تا ہے اور اپنی رحمت کو

بھیلا دیتا ہے ۔میسے حال کی مد دگار ہوئی اس آمیت کامفہوم مجھ بر القار کیا گیا جس محمد مطنہ طب شاندہ سے دئی۔ مدانت الک میں مطافقہ م

سے مجھے باطنی طور پرتشتی نصیب ہوئی اور اللہ تعالیٰ کی رحمت سے میرا باطنی عاملہ

سيدها ہوگيا اور قصلو تقييقى وطلوب ازلى كے قُرب ووصال كى لامحدود را ہوں ہميّت مارى ساقت سياد كريں مير مارى سياسى سات كرد نور مارى

مردانه کے ساتھ جا دہ بیائی کی سعادت ل رہی ہے لیکن اس راستے کی کوئی انتہامعلوم مشہد نہیں ہوتی سین بدیس میش رحت کی خدمہ مدیرہ جات ہر کر ہوت ہوتا

وشُهودنهیں ہوتی ہے نیں آپ مُرشد برحق کی خدمت میں عرصٰ کرتے ہیں کہ اس فراق ان ورجو ورد و نواز کرکھ کے اس فراق

زده مخروم و مغموم محور بب بروری کی توجهات سے محروم ندفر مایئر که که میں بیراه شوق کا مافرمنز ل تصور گرم نه کردے گویا آپ بیختیفت و اضح فرمارہے ہیں کہ شیخ کامل

ن سامر نترک سورت ، تاریک رویا ہے یا میست وال سربار ہے ہیں کہ ہی گاری کی توجہ اور نگاہ سے ہی میرنزلیں ھے سوسکتی ہیں۔

ماناکھشق کی سنسندل میں ہرگام بیسوسوخطرے ہیں لیکن سیمنسہ اسان بھی ہے گرساتھ تنہارا ہوجلتے

مب نے مشائخ طریقت کا قران قل فرمایا ہے ۔ پیچاس ہزارسالہ راہ کہ"سیرالی اللہ پنجاہ ہزارسالہ راہ است "

يعنى خُدُا كے قُرب ووصال مک پہنچنے كار استه بيجاس ہزارسال مي<u>ں طے ہو</u>سكة

جوابر البت قرائد تعرب المسكات والمروح المسكات المحاد المسكات المحاد المست قرائد المسكات المحاد المسكات المحاد المسكات المحاد المسكات المحاد المسكات المراس ون الله تعالى عرب عرب على عمل معداري المسال كي المراس المان المراس المان المراس المان المراس المان المراس المان المراس المان المحاد المراس المان المحاد المان المحاد ا

میام مرا کا مدوروده من سب ده بسی ادامه میده یک شرک به مهدونیه سط مهی نهیی ملتی ملکه اجتسار ورحمت خدااور جذبه وشحبت اولیارهمی اس راستے میں سندائر مقصود کی شمانت ہیں ۔

سیرزاهب دہر سنتے یک روزہ ماہ سیرعارف ہر دُے می سخت سن ہ مبوہ گر آں یار بسے دُور است لیکن طے شود جادہ صب سالہ ہا آہے گاہے

وامنع ہو کہ شاکنے جو اپنے مُریدوں کوریاضت کا حکم دیتے ہیں ''بیبر ممبر استے تھسود عناصر کے صفائی اور نفس کی طہارت ہے نہ کڑھنگول قرب حِق ملکہ عناصرونفش کی پاکیزگی تھی شیخ کی توجہ اور شحبت رکڑھسر ہے۔ حسُسول قُرب حِق محض عنایت ِخدا وندی ہے۔

منن چندروزست کرسیردر اشیار واقع شده است ترمبه: چندروز بوئ کرسشیارین سیرواقع بونی ہے۔

له أمعسارج ٢

## شرح

حضرت امام رانی گذش مترفسیرلوک کے من میں سیر جہار مامینی منیمُنِ اللّٰهِ فی اللّٰهِ فی اللّٰهِ فی اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللل

یداولیادی ولایت ہے اس میں سالک اسما وصفاً ولا بیت بعضی اللہ سے فلال میں بیرکر تاہے بہل نیریس جن اشعار

سے علوم مٹ گئے تھے اب سیر جیارہ میں وہ علوم سیے بعد دیگی ماصل ہوجاتے ہیں اور سالک بظاہر گئی طور رمخلوق کے ساتھ مصروف ہوجا آسے مگر باطن میں فرات

حق کے ساتھ آشنار ہما ہے اور اس شعر کا مصداق ہو اسے۔ ۔ از ورُوں شو آسشنا وز برُوں بیگا نہ کوشس

ای مُجنین زیبا روشش کم می نود اندرجهان

منے اور ہمراُ وست "اور ہمراز اُوست" کا فیصلہ جمی ای مقام پر ہوتا ہے صوفیا نقشند دیجہ دیہ کے نزدیک اسی مقام ہیں سالک کو وحدت ِ وجود ، ہمراوست، کُفرِ طریقت اور مقام جمع کی تعبیرات سے واسطہ بالِ تاہے ۔

منتن و ورستار توحید که سابقا متوقِف بود چناس که مکرراً بعرض رسانیده بود و افعال وصفات را باصل می داد چرن حقیقت کارمعلوم کشت از توقف برآمد د بلّهٔ بهمه از وست راچرب یافت و کمال را دران بیشتر دیداز مقولهٔ به اوست

nonexecutable to the state of

# و إفعال وصفات رائم برنگ وگیر معلُوم كرد .

ترجمہ ؛ اور توجید و مُردی کے مسئلے ہیں پہلے اس فاوم کو تُروُد تھا جیسا کہ کئی مرتب عرض فد کیاجا جکاہے اور افعال وصفات کو مسلسے جانتا تھا جب معاہلے کی حقیقت معلوم ہوگئی تو وہ تردُّد و کور جوگیا اور امقولی "ہمہ از دست "کے بقہ ( دامن ) کو (مقولہ ) ہمہ اوست کے دامن سے بھاری و غالب با یا اور اس (ہمہ از دست) ہیں ہمسہ اوست سے زیا وہ کھال و کھا اور افعال دھے فات کو بھی و دسرے رنگ ہیں علوم کیا اوست سے زیا وہ کھال و کھا اور افعال دھے فات کو بھی و دسرے رنگ ہیں علوم کیا

## شرح

حضرت امام رباني قدّس تمرهٔ اینے مُرشدِ بزرگوار قدّس مرهٔ کے صنور عرص گزاریں مر بہدینادم ترجید وجودی مے سکویں متر دوتھا کہ یر توحید ابتدائی معرفت ہے یا انتهائی، ابتداریس توجید وی و علیے کی بار پربندسے افعال وصفات کو دات ك افعال وصفات كاعين ما تا تقام كراب حقيقت حال معلوم مونى ب كرتوميد وجردی ابتدائی معرفت ہے اور بندے کے افعال وصفات مخلوق ہیں اور وات کے افعال وصفات كاعكس اورطل بين نكوين نيزييمي ظاهر بوكيا ب كرتوييد ومجردى كي مقوله " بمداوست "كي بنسبت مقولة بمدارُ وست مين ربا دو كالات بين -صُوفِيائے وحدث الوج دکے نزدیک وجود کا تنات فی نمنه تجينهين صرف اسمأوصفات كاظهورب اورج نكه اماروصفات مين ذات بي اس يك كأنات اور ذات بيع ينتيت ب اور ذات چوکہ ومدت مُطلقہے ہیں ہے وجودصرف وحدت ہی وحدث کاہے خیائج <sup>مش</sup>یخ الجرمى الدِّن ابن عربي قدّس سرة وجروطاق كومجبله موجودات كاعين قرار ديتي بوستے فتومات مخية مين جي رقم طراز بي :

سُنجانَ مَنْ اَظْهَرَا لَا شَبَاءَ وَهُو عَيْنُهَا لَهُ يعنى إك ہے وہ ذات مِس نے ظاہر كيا اشيار كو مالا نكر وہ اُن كاعين ہے سُنج ابسعيد خراز رحمة الله عليه فرماتے ہيں ، اِنَّ جَمِيْعَ الْكَائِنَاتِ حَتَّى الذَّبَرَةِ لَا تَخَلُو اعْنُ ذَالِكَ الْوُجُودِ اَتْ مُن وُجُودِ الْتَحقِّ سُنجَانَهُ وَتَعَالَىٰ لَهِ يعنى موجودات مِن كوئى ذرة مجى اس وجود سے خالی ہمیں موجودی تعالی سے این ظریے کو "ہمراُ وست "سے تعبیر کیا جا آہے۔

صوفیائے وحدث الشہود کے نزدیک واحتقیقی کے سوااور کوئی چیز موجو دنہیں ہے اور ممکنات

مقولهمهازوست

غارج میں وُجو وظلی کے ساتھ مُوجود ہیں جیانچہ ان کی صطلاح ہیں و آجب کو اس اور مکن کوظل سے موسوم کیا جا آجہ۔ اس نظر سے محبوصطرت امام رّبانی مجدّد الفتانی قدّس مرّوا العزیز ہیں آپ فرماتے ہیں کے صفات عین فرات نہیں بلکہ زائد علی الذّات ہیں۔ وہ فرماتے ہیں کہ وجودِ باری تعالیٰ فی فراتہ کامل و انحمل ہے اس کو اپنی تحمیل کے ہیں۔ وہ فرمات کی جتمی نیزان کے خیال میں اگر کا نمات صفات کی تجتی ہوتی تو ان کا عین بھی ہوتی میں ایس انہیں شہوت یہ ہے کصفات کامل ہیں کا نمات نائش ان کا عین بھی ہوتی میں ایس انہیں شہوت یہ ہے کصفات کامل ہیں کا نمات نائش ہے معلوم ہوا کہ کا نمات تجی صفات نہیں ملکہ ظرفی صفات ہے اورظل محمی اس کا عین اور ظلم بڑمیں ہوتا۔ برقافہ کم

حصارت المام رّبا في قُدِّ مِن لِبِيرِهُ وَقَطِ الزبين : " يس بإعالم اور مجلى المراجي وجرمناسبت نباشد إنَّ الله لَغَيْنِيُّ

عَنِ الْعَالَمِ فِينَ اور سبحانه باعالم عَين ومتحد سأضتن بكبلسبت

البيت الموالية الموال

دادن رین فقرب یارگران است کی مناسبت نہیں بے شک اللہ تعالیٰ تمام مین حق تعالیٰ کو اس کا منات سے کوئی مناسبت نہیں بے شک اللہ تعالیٰ تمام عالم سے بیاز ہے اس ذات کو عالم کا عین یا متحد قرار دینا ملکم عالم کے ساتھ نسبت دنا مجمی فقر کے سیے بیاد عربی اس کے ساتھ نسبت کے دنا مجمی فقر کے سیے بیاد عربی اس کے ساتھ نسبت کے دنا مجمی فقر کے سیے بیاد عربی اس کے ساتھ نسبت کے دنا مجمی فقر کے سیار کی ہے۔

اس نظرید و عدت اشهرد کو "جمداز وست" سے تعبیر کیا جاتہ ہے۔
مین مر اور سے اس سے میں کہ توصید شہودی کے لوم
میں مر اور سے امران کا گفتس سے فروری کے علوم و معادف اور
کیالات سے بہت بڑھ کر ہیں اور توحید وجُودی ایک تنگ کوجہ ہے جبکہ توحید شہودی شارع عام ہے اور قرآن و کرنٹ سے نے نظریّہ توحید کے میں مطابق ہے جن فونیا نے نوجید وجودی (بمدا کوسٹ شیس کی سے تابت کرنے کی کوسٹ شیس کی این انہوں نے کا کا ارتباب کیا ہے (والٹ کُورُولُمُ اللَّمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهِ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ وَرُمُولُمُ اللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَرَمُولُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَالْ







موضوي

تجلی کامفہوم اور اقعام تجلیات شوقِ ول میں آرزف کے مونت ، اعیابِی ابت تصور شیخ کے نوا مُدا ور اسس کے طربیقے حصرتِ امم رابی محبور بیٹ بے انی مین



## مڪنوب - ١١٧

منن بعدازان مرتبهٔ و فجب كه جامع صفات كليه استظام نه وبصورت زن غير جميا منه و دالون مثل شف وبرازان مرتبهٔ اعدت بصبورت مرد و از بالاكدر ولوار باريك بهن استاده است متحل کشت واين مرد و حجل بعنوان حقانيه ظامر شدند بخلاف مجليات سابق كه نه باين عنوان بوند

ترجمه ؛ اس کے بعد مرتبۂ وجُرب جو کیصفات کلید کا جامع ہے ظاہر ہوااور بیسکورت ساورنگ عورت کی صورت میں نظر آیا اور اس کے بعد مرتبۂ امدتیت ایک دراز قد اومی کی صورت میں ظاہر ہوا جو کم عرض والی دیوار پر کھڑا ہوا وریہ دولوں تجلیات حقانیت کے عنوان اسرنامہ کی صورت میں ظاہر ہوئیں مجلات سابقہ تجلیات سے کہ وہ اس حنوان کے ساتھ ظاہر نہیں ہوئی تھیں .

## شرح

اس محتوب قدسی میں آپ نے دوران الوک پیش آنے والے مشاہدات اور واقعات کا ذکر فرما یا ہے اور ساتھ ہی ہجن طالبان طریقیت کے باطنی حالات پر محبی شہرہ فرمایا ہے جیانچہ آپ رقم طراز ہیں کہ قبل ازیں جربح لیاست مرتئم مکمنات بین ظاہر ہوئی تقییل بندہ نے ان کا حال سابقہ محتوبات میں عرض کر دیا ہو اہے اب مرتئم وجُرب کی تجلیات اوران سے مشاہدات کا بیان عرض خدمت ہے۔ مناسب ہے کہ بہلے تحلی کے عنہوم وشہوت اور اس کی اقسام کا ذکر کر لیا جائے۔ 📰 مكون ع \$**-**(141)≠8: تجنّی کالغوی عنی" نلا ہرکزنا وظاہر ہونا "سہے ۔ صطلاح صوفیاً ہیں الله تعالی کی ذات ،صفات اور اسمار وافعال کا تحسی شان پازنگ احالت میں اطہار تحقی کملا آہے۔ حضرت موسی علیہ است لام نے ربت آرینے کے کامطالبہ کیا تر التُدَّتُعاليُٰ نِيْحَبِي فرما تَي لِ فَكُمَّا نَجُكُلُ رَبُّهُ لِلْجَبَلِجَعَكَهُ ۚ دَكِّ وَخُرَّمُوسِي ترحمه أبهرجب تجلى فرائى موسى علبنه استلام كاست في بارا برتو وه بهارا ریزه ریزه ہوگیا اور نوسی بے ہوش ہو کر گریاہے۔ مديث إكبين به : أَنَا فِي زَبِي فِي آخْسَنِ صُوْرَةٍ لِهِ ترجمه بصفونبي اكرم من المطيارا في فراياك ميرارب ميرس إلى الفي صورت ميں آيا۔ چونکه الله تعالی کے ظہور کی شانیں ہے انتہا ہیں لہذا تجليات لانعدادبين تجليات بجي لاتعدادين بترض پراس كي متعدا د کے مطابق مجدا گامذنخلیات ہوتی ہیں جو تخلی ایک شخص پر ایک مرتب ہوتی ہے وہ پھر ووباره اس برِیاکسی اور کیمبن بین بیونی کیونکه تجلیات بین کزار نهبی هرؤم، سرمخطه اور برآن وه نئ نئ شان مي كلى فرما تار بتلهد كُلُ يَوْمٍ هُوَ فِي شَا زَيْهِ مِن طرح اس کی ذات لا تنا ہی ہے اس طرح اس کی تجلیات می مدوحصرے بابر ہیں۔ اے ترا برطور ول ہر وم تجلائے وگر طالب دیدار تو ہر لخطیب مموساتے وگر ميني رحمة الأعليس

ا مكونس على ان لامتنابی تجلیّات کا إماله وحصرقطعیّا 'اممکن ہے تاہم منونه كيطور ريعنيد تجليات كاذكر درج زيل سهدر اس وتحقی صوری می محت بین سالک اس محتی میں صنرت مجلى امارى حق سُجاز كوصورت مِثنيلي مين ديجيتا ہے اور وہ جان مجاليا ب كريتيلى اس دات ومده لا تركيب كى ب جيس وسى عليه السَّلام مرا بتدارين حمل بصنورت ارہونی پیرم سورت شجروانہوں نے یہ بھی جان لیا کہ اس صورت میں کو انتخابی ہے بھی بیخلِ خواب میں ہی ہوتی ہے سکین محتاج تعبیر ہتی ہے۔ بیخلی کا مل طور رصورت انسان میں ہوتی ہے۔ استخلی میں سالک حق تعالیٰ کوصفات بعلیدر او ببتیہ میں سے كسي منت كرساته متحلى إناب إس شادب بيسالك سيخول وقوتت اورفعل واراده سلب بوجا ماہے اور وہ چربینیڈ میں ایٹہ تعاسالے کی قدرت كومتصرف وجارى ديجمتا ہے۔ اس تقبل میں سالک حق تعالی کوانم است صفات میں تعلی با ما است میں تعلیم است مفات الله است کو صفات ثمانی تعلیم بھی کہا جا آ ہے اور وہ یہ ایں: ال منگوین

 البيت الله المرابع الم

ان كےعلاوہ بھی تجلیات غیر تمنا ہتہ ہیں حق شبحانہ وتعالی جبر صور مزيداقسام يرحب بيزك ساقة عبرطرح اورجب جبي برجابتا ہے بمعقول مفهوم بموئموم مسموع وشهودمين تغلق فرما ماسا ورسالك انهى تجلتيات برقانع نهيي رہتا بلکہ ھے لی مین میزید کی صدائی مبند کرارہا ہے۔ بعض صُوفيار نے حسب ذیل تجتیات کی بھی نشاندہی فرمائی ہے۔ تُجَلِّي ظهوري ، تَجَلِّي رَمُما ني ، تَجَلِّي رَمِي ، تَجَلِّي شهودي " مَجَلِّي جِها دي ، تَجلِّي نبا تي اور تخلّ حيواني وغنسيب ريل. حضرت امام رّبانی قُدّس سرہ مرتبۂ وجوب میں سیرے دوران بیش آنے والے واقعات وواردات كابيا فبنسر مارہے ہيں۔ مدر و بر می می مرتب صفات کُنید کا جامع مرتبہ ہے اور دائرہ اصل سے مرتب و حجوب تعلق رکھتا ہے۔ یا دین کے لیے مشاہدے کا مقام ہے اور وہ اس رُتب میں صفات حِقیقیہ ثمانیہ کی سیرکر آہے۔ تحسى امرك إنتصنار اوربقيني تصور كاقلب سالك براس طرح غالب اُورقوني بوجانا كه گويا وه دل كي أنكھ سے اسے ديھ رہا ب سنامده كهلا تاب حبياك حضرت عظله ضي الدعن فرمات بن مَنْكُونُ عِنْدَرَهُ وَلِ اللهِ صَلَ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ وَالْجِنَّةِ كَانَا رَأَيُ عَيْنِ ا بهم لوگ حصنورعلتیه السّلام کی خدمت میں حبّب دوزخ وجنّت کا ذکر سنتے توابور معلوم ہوتا جیسے ہم انکھوں سے دیکھر ہے ہیں۔ وجوب کے مرتبے میں سالک کو دوستم کا مشاہدہ ہوتا ہے تھمی صفات بان

عَدْ البَيْتُ الْمَالِيَّةِ الْمِيْتُ الْمَالِيَّةِ الْمِيْتُ الْمُحْدِينَ الْمُعْلِينَ الْمُعْلِينَ الْمُعْلِينِينَ الْمُعْلِينَ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْم

وی فیم اقب به به مین مین از سال مین مین از مین از مین است بری تعاقبه نید مین مین مین است مین است

كوئى تعلق نہيں ہونا۔

وررى قسم كوشهود صفات جزئيه كهاجا آب اس مرتب من صفا كامكنات كيساقة تعلق بوتأب اورسالك مشابده كرتاب كم مفنت علم فلا معلوم كے ساتھ اورصفت قدرت فلا مقد ور كے ساتھ تعلق ركهتي ہے على نباالقياس تمام صفات بمكنات سيتعلق نظراتي بس باكين ك زديك مشابد كى بيلى تم اللهو مفات كلية زياده نصنيلت رهمتى ہے. حضرت امام ِرًا في محدِّد العن ثا في رحمته التُدعليه کو مرتبۂ وجوب میں سیر باطنی کے دوران عالم ومجُب كى تجليات مختلف صورتوں ميں نظراً بئيں مِثلًا مرتنہ وَجَب بيصُورت سياه زنگ کی عورت کی شکل مین ظرآیا اور مرتنهٔ احدیّت ایک دِراز قد آ دمی کی صورت میں ظاہر فہوا اس کی معنومیت برعوٰد کرنے سے معلوم ہوتا ہے کدسالکین بریخلیّات کا تُزول تجعم صورت میں ہونا ہے اور تھی بیصور تی لمیں تھی سی خاص کیفیت میں اور تھی بيكتيني ميركين اس مرتبع مين كامل تخلِّي السان كي صورت مين ظاهر او تي ہے كيونكم تنزيبه اورشبيبه وونون مرتبه توحيد كيهل وران ولون مرتبون ميسالكين كوشاه نصيب بومار بتاب جبياك يعض مغترين فيصراحت فراني ب كدالله تعالى قیاست کے دن قرآن کے ہرحرف کصورت میں تحتی فرمائے گا۔ حضرت مولا ناحبر الرحمان جامي قدس سترة فرمات بير.

مرخ ابد در برصورت ازصورها لم ظاهر گردد واگرخوابد

البيت المجالية المجالة المجالة

ازېمەسنىدە باشدىي

یعنی اگر الله تعالی جاہے تو کا ساست کی ہورت میں ظہور فرمائے اگر جاہے تو ہرصورت سے منسندہ رہے ۔

مان ودرمین آشار آرزوئی موت پیداشد و جنان و نظر آمدکه من گویا شخصیام برکنار و ریائی محیط اسیاده ام باراد آنکه خود را در دریا انداز د آما از عقب اورابرسیان مسارت اندکه نمی تواند بدریا در ون رفت و آن رسیمان عبارت از تعلقات ببدن عنصری خود میداستم و آرز و می کرده کراین رسیمان سسته شود و ایصنا کیفیتے خاص روداد کر دران و بر بطریق دوق دریافت که دل را بہیج بلیستے غیر ارجی شبحانه نمانده است . ترجمد ، اس اتناریس موت کی خوائش بیدا ہوئی اور ایسانظر آیا گویا کوئیں ایک شخص ہوں جو دیائے معیط رہبت بلسے سندر اسے کنارے اس ارادہ کے ساتھ کھڑا ہے کہ اپنے آپ کو دریا میں ڈال دے لیکن پیچھے سے اس کو ایک رستی سے ایسا مصنبوط با ندھ دیا گیا ہے کہ دریا میں گر ہی ہمیں سکتا میں اس رستی سے مراد لینے بدن عنصری کے تعلقات کو سمجھ سے اور خوائش کرتا تھا کہ وہ رستی ٹوٹے جائے اور بیرائی خاص کی فیست میں ظاہر ہوئی کہ اس وقت ذوق کے انداز بر مجھے معلوم ہوا کہ جس سبحانہ و تعالی کے سواول میں کوئی خوائش نہیں رہی۔

شرح

سطوربالا مین صرب المام ربانی قدس من فروات بین که عالم مخواس و موب کے مشاہدہ کے دوران مجد بربوت کی ارزُو فالب الموت فی اس ارزُو کی وجربیعلوم ہوتی ہے کہ عادت جب عالم وجُرب کی نورانیت، قدسیت اورلطافت کا مشاہدہ کر اسے تو اس پر وصل کی خواش فالب آجاتی ہے میک جب حیات نیا وی میں بیروصل ممکن نظر نہیں آیا تو عادون لا محالم موت کی آرزُ وکر آ المسیح کی تو توسیل المسیح بین کے آسٹر کیو صیال المسیح بین بین موت سے طادی بیا ہے۔

مد و معروبان فدادمس كيشوق مي موت كي دُعائيس ما شكة الرزوكي من المنطقة الرزوكي من المنطقة المن

نے شوق شہادت میں فرایا ،

وَ الَّذِي نَفْسِي بَيدِهِ لَوَدِدْتُ آقِهُ أَفْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

ثُمَّ أُخيى ثُمَّ أُفتكُ ثُمَّ أُخيى ثُمَّ أُفتكُ شُمَّ أُخيى ثُمَّ أُفتكُ شُمَّ

یعنی مجھے اس ذات کی تم ہے میں کے تبصنہ فکرست ہیں میری جان ہے میری میر تمنا ہے کو میں فداکی راہ میں قبل کیا جا وَں پھرزندہ کیا جا وَں پھر قبل کیا جا وَں بھرزندہ کیا جا وَں بھر قبل کیا جا وَں بھرزندہ کیا جا وَں پھر قبل کیا جا وَں ۔

۔ آج مجبوبے نہ سک ئیں گے گفن میں آسی قبر کی رات ہے اس گل سے ُطلاقات کی الت اس لیے عارفان وات موت سے ڈرتے ہیں نہ گھبراتے ہیں مکبہ والہا نثوق

و محتوب ع کے ساتھ سکہ اتبے ہوئے ہوت کا استقبال کرتے ہیں۔ نش بن مردِ مومن با تو گوسنید چُ مرگ آیہ تبت م بر لب اُو جب کسی صاحب حال بزرگ ریشوق وصال اور لذت جمال کی ضطرانی کیفتیت طارى ہوتى ہے تو تھى نىم جان ہو كر أو است ما وكرتے ہيں۔ إمروز ونكرم ورنتطف يرتوشام شأ ور انتفاز ولسس توعمر م تسام خند آرنب زِت م ونه آ مانگار من ك ديده إسدار كدخوا برخس رام نندم یعنی اے محبوب ! آج وُوسرے دن بھی تمہارے انتظار میں شام ہو گئی ہی طرح ساری عمر تیرے وصل کے اتنظار میں تمام ہو گئی ہے ابھی میرا دوست کنہیں آیا لیکن نمازشام ہوگئی ہے اے انگوٹنتی جا کیکس طرح میری سندھ ام ہوگئی ہے۔ اوتهجى با ديدهٔ يُرِنم اور با دِلِ مُرِعْم اينے جذبات بلي كاليوں اظہار كرتے ہي ورون غور کشی ہے مصنیت مہتی حجاب روئے دوت نو گرفت رمبت الخ کسشکل میں ہے بصرت امام ربًا في محدِّد العن ثاني قدِّسَ سترهُ شوقِ وصل اورسونه فصل كي انہی ملی کی کی بینیات اسے سرشار ہو کر اپنے مُرشد برحق کی بارگاہ میں عرض گزار ہیں کہ "أرزُ وكي موت بيداشد "بعنى وصال اللي كي هيقي لذتول سي شا دكام مون كا شوی س قدر راجع حیکا ہے کہ اب اس منیا میں رہنے کی بجائے اخرے کی آرزُو غالب الحتى ہے۔

### بليتن اسا

دریائے محیط (بڑے سمندر) سے مُراد عالم وجوب کی وسعت کا سشاہدہ ہے۔
 دستی کے ساتھ سفبوط باند سے ہونے کا مطلب رُوح کے ساتھ بدنِ عضری

كي تعلقات بير.

دریا میں ندگرنے اور رسی نہ لوٹ منے سے مُرادیہ ہے کدرُوح ابھی کے جہمانی تعلقات سے گلیۃ ازاد نہیں ہوئی مینی رُوح اگرچے عالم وحوب کے مشاہرے ین صروف ہے مین حیات ظاہری ایمی <sub>ا</sub>تصالِ رُوح کی راہ میں حجا<del>ہے</del>۔

 آب کایه ارشا و "که ذوق کے انداز پر مجھے علوم ہوا کہ اللہ رتعالیٰ کے سوا دل ىي كونى خوا ئىشىن نېيى رىپى<sup>ي</sup>

اس امرکی طرف اشارہ ہے کامشاہدہ مذکورہ کے بعد آخر میں آپ کو فیائے تی تی حاصل ہوگئی اور آپ نے وصل حقیقی کا ترسب پالیا۔ رواللہ علم،

ملن وحينيَد معلوم الشت كرالنون حقيقة صفاست را باصل دا دی ۔

ترحمه ؛ اوراس وقت معلوم ہوگیا کو اب حقیقت میں صفات کو اصل کے رافق ملاد ہاگئی ہے۔

## شركح

حصرت امام رّا نی قدس سرّہ نے مرتبہ وحبب ہیں سیرکے دُوران حب صفات كوتعلقات اورخصوطتيات سيفاكي مشامده فرمايا اور ابنة إب كوهبي صفات فالى جاناتواس وقت آپ برصفات کو صل کے ساتھ ملا دینے کی خلیفت واضح ہوئی ۔

صفات کوال کے ساتھ ملانے کافہوم مالک جب صفات کو اینی ذات یا کائنات متعلق دکھیتا ہے تو اپنے آپ کومجی صفات (قدرت وطم وارا دہ وغیر کم سے تصف ياما ب اورايني صفات كو الله تعالى كي صفات كاير توجان الب اورجب الله تعالى كي صفات كو معلّقات افرصوصيّات سے الكل خالى شاہده كرما ہے تو اپنے آپ كو بح صفات سے فالی د بھتا ہے تو <sub>ا</sub>س کو معلوم ہوجا تا ہے ک<sup>ص</sup>فات کے صل کمبیا تھ مل مبانے کا بیم عنیٰ ہے اور بیم صفات کمنیہ ویج کبیر کامشا ہدہ ہے اور بہی توحید فِلص ہے اور یہی مرتبہ فاستحقیقی ہے جہاں پہنچ کرسالک شرکنے تنی سے نجات یا ماہے کنوکھ شہودصفات جزئیے کے مرتبے ہیں بر توصفات کی وجہ سے سالک اپنے آپ کو صاب الم وقدرت وغير إدبي اسے اور بركاملين كے نزديك شرك كى ايك تتم ہے۔ انہى حالق کی وضاحت کے بیے صنرت امامر بانی قُدِس سُرہ فرماتے ہیں سطارہ و تومید كاوه مرتبجن ميرصفات ( الماتعلقات وخصاصتيات ) صل كيساته ملي و في شهود ہوتی ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے مجھے عطا فرمایا اور اس وقت مجھ پر فعائے تقیقی متحقق ہوئی اور شرك كى محنّى وقيق اقسام سيفلاصي متير جو تى - رۇ انحۇرىلەغلى دالك،

من وبيش ازتجرير از صُوصيّات باصل دا دن معنى الماشت مُراز كرير از صُوصيّات باصل دا دن معنى الماشت مُراز كرير الشدكة ما هُوَكَالُ أنابِ الشَّجَلِّ الصُّورِيّ ...

more your participation of the

البيت المجاور المناسبة المحالية المناسبة المناسب

## شرح

صنرت امام ربانی قدس سرهٔ فرمات بین کصفات کے تعلقات سے الگ ہونے
سے بہلے صفات کو اصل کے مہتمہ طلا دینے کا دعویٰ چقیقت برمبنی نہیں۔ البقہ مجازاً
البیا کہا جاسکتا ہے عبیا کہ تحقی صوری کا مشاہدہ کرنے والوں نے یہ دعویٰ کیا ہے کہم
نے صفات کو اصل کے ساتھ طلا ویا ہے مالا مکہ ان کا یہ دعویٰ باکل ہے منی ہے کیونکہ
صفات کو اصل کے ساتھ طلا ہوا مشاہدہ کرنا فیائے تعیقی پر موفق ہے اور صاحبان
تجتی صوری فیائے تعیقی سے مشرف نہیں ہوتے۔

و مورت می مورت می مار دعلار کوصورت مشیلی یا دجود جهانی کی صورت می مورت مصور می بین اس طرح دیجینا کوسالک کونتین آجائے کہ میں واقعی حق روز میں اس طرح دیجینا کوسالک کونتین آجائے کہ میں واقعی حق

مجنی ندکود کیدر با ہوں عبیا کے موسی ملیہ اسکلام نے ابتدار میں تبلی بھی مورت بار دیمی بھیر آخریں انہوں نے بیمبی بہجان لیا کہ اس صورت میں کون تبلی ہے اس کو تبلی آثاری می

کھتے ہیں اس تقبی میں انسل ترین تحقی صورت انسان میں ہوتی ہے کینونکہ انسان ہی مظہر کا مل ہے۔ مظہر کا مل ہے۔

، مريس . محضرت خواحبُركن الدّين علا وَالدّولِهمنا في رحمتُهُ اللّه علينه كا كلام رشّحاست.

بدا کمدسالکانِ راهِ حق رانبخانه تنجلیّات مِسُوری می بنیند و آن آبان سبت دار و و بنجلیّات نوری می بنیندو آن با فعال نسبت دار و و به تجلیّات معنوی می بنیند و آن بصفات نسبت دار د و برنجلیّات دوقی می بنیندوآن بذات نسبت دار د و در تجلیّات مِسوری که با نار نسبت دار دحی تعسالی درصورت جمیع اشیار بر بنده تنجیّی می کسند از منهٔ مفردات عنصریات و معادن وحیوانات و افراد انسان به البيت المحرور البيت المحرور البيت المحرور البيت المحرور البيت المحرور البيت المحرور ال

ترجمه : جاننا چا جیے کہ راہ طربیت کے سالکین حق شبحانہ و تعالیٰ کو تجلیا ہی جری کے ساتھ دیکھتے ہیں یہ آثار کے ساتھ نسبت رکھتی ہے اور تحلیات بندری سے دیکھتے ہیں ہی اور تحلیات بندوی کے ساتھ دیکھتے ہیں ہی وہ صفات کے ساتھ نسبت رکھتی ہیں اور تحلیات و وقی سے دیکھتے ہیں وہ وات سے دیکھتے ہیں وہ وات سے نسبت رکھتی ہیں اور تحلیات میں جو کہ آثار کے ساتھ نسبت رکھتی ہیں تی تعالی تمام شیاری صورت ہیں بندہ بر تحلی فرما آ ہے مفردات بمنصر مایت معدنیات حیوانات اور افرادِ النسان سے ۔

مان وفائے حقیقی این زمان تحقق گشت مان ترجمہ : اور اس وقت فائے حقیقی ثابت ہو گئی ہے۔

شرح

فار مقد فائیت عدم شعور و احساس کانام ہے سالک کوجب ذات ہِ ق فیارے مقبی میں اس قدر فنائیت ہوجائے کدا پنا ہوش کھی ندرہے تو یوفنا ہے اور جب اس ہوش ندر ہنے کا بھی ہوش نہ ہوتو اسے فنار الفنار کہتے ہیں۔ مستی من رفت و خیال شس بماند ایں کہ تو ہیں نہ منم بککہ اوست فناکی عام طور پر ووقتہیں ہیں۔ افغائے اہمیت ائی

چنانچەن دونوں كے درميان فناكى بېت سى اقسام ہيں . فنائے ابتدا ئى يەسھ كەسالك شہودِمكنات سے گذر كرشہودِ فللال صفات

© قائے انہاں پہنے درسانت اسار سال میرون سرا ہو ہے۔ اور مراتب شہود ظلالِ وجو بیدکے مرتبوں سے گذر کر ذات ہی مبل وعلا کہ بینے جلئے یہ فائے کمل ہے اس کوعین ایقین سے مجی تعبیر کیاجا آسے اور بین فنائے

> منتن بعدازان بعين خود ورنطرآمد و وجرِخاص خو دنيز ـ ترحميه بهسس كے بعد اپنا تعین اور اپنی وج خاص مجی نظر آئی۔

سحضرت امام رہانی قدس سرہ اپنے مرشد بزرگوار کی خدست اقدس میں عرض گذار ہیں کہ میں نے ئیرِعام وجوُب کے دوران اپنے عین اور اپنی وجہِ فِناص کومشاہدہ کیا۔ فتعمیسے سے سمجھ شخص کے ذاتی تشخص اور سس کے دجر دِناص کواس کا ئے ان کا تاہے۔ مین تعین کہاجاتاہے۔

شخص واحد کے اسم مرتی کی تجلیات کا پر توج اس خص کی تیت عَدمیه کے ساتھ مُتنزُرِج د ملاہوا، ہواس کی وجہ خاص کہلا ماہے۔ حضرت امام رّا فی رحمتُ التُدعليّه فرملت بين كديس نے اپنے تعيّن كو يرُان يصل بوت كبرك كي ما مُندويكا من كوكسي خص في بها ہوا ہو۔ استخص کوئیں نے اپنی وجہ خاص جانالیکن یہ اُمرحقّانیت کے طور تریفترر نهيں ہوالعینی ميعلوم نہيں ہوسكا كر حقيقت ميں هي يدميري وجه فياص ہے إنهيں۔

اس کے بعدایپ فرماتے ہیں کہ مجھے اسٹخس کے اُورپیصل ہی مین مسر کی ایک باریک پوست دکھال، نظراً یا اور بیں نے اپنے آپ کو اس کھال کا حین معلوم کیا اور تعتین کے اس کیرے کوئیں نے اپنے آپ سے بیگا نہ وكيما اورج انوركم اس كهال بي تها نظراً يا مجهد وريك بعدوه أورهمي نظرت غائب مو کیا اور به بوست اورکیژامی نظرسے *سِکُ گی*ا اور وہی جہالت دنسیان ماسوَی اللّٰد، باقى*رە گئى .* 

آپ كاينسدمان در صل بيان واقعه اوراس كرتمبيري آپ خود هي

صنرات صُوفیائے کرام کی صطلاح میں واقعہ ہس امرکو کہا <del>جاتا ہ</del> جرِسالک کے قلب میں واقع ہو خواہ بیداری کی حالت میں ہو یا نمیذکے عالم میں نمین بیرصروری ہے کہ اس وقت سالک کے حواس فعا ہری عظل موں یا درہے کی صوفیا رکوام واقعات کے مشاہدے میں نمیند کے محتاج نہیں ہوتے كيزكمه ومشغوليت إذكار اورمحوتيت مراقبات كي وجهت ميدوو إنحاس موجات بي ان کے ظاہری حواس دنیا کی طرف سے بند ہومباتے ہیں اور باطنی حواس خالت کی طرف تھل مبلتے ہیں بھر رردہ عنیب سے ان پر إلقا و إلهام كاسسله شرع موجا نا ہے ذَالِكَ فَصَلْ اللَّهِ يُؤْتِيَ وِمَنْ تَيْشَا مُ

منتن وآن است كه اين صُورت ِ مُذُكُّره عين ثابته است كَالْبَرْزَجْ بَيْنَ الْوُجُوْبِ وَالْإِمْكَان ترجمه ؛ اوراس واقعه کی تبیر رج کی علم میں آئی بیٹ کصورت ندکورہ رتعین، عین نابتہ ہے جو دعجُب و اِمکان کے درمیان برزخ ، واسطم، کی ما نندہے .

## شرح

میں میں میں مصرت امام رہانی فَدِسَ سُرُونے اس واقعہ کی تعبیرات کو لعبیرات کو تعبیرات کی ہے کہ اس بیانِ تعبیر کی صحت فعلی رہبندہ کو طلع فرما یاجائے کا کہ سکین و اعتمادِ قبی ماصل ہوجائے۔ رہ ہے کہ یہ استعار ببیل انکسار ہے،

چنانچہ آپ تحریر فرماتے ہیں کہ واقعہ میں جو کچھ ریکھا گسیا ہے یہ اعیا ثبابت

كالتهودسے.

و اقعدین آپ نے بین اللہ ایکھے پُرانے کیٹرے والا کو دکھا اس سے مُراد اس کے بیٹرے کے درمیان تھا وجُود وعدم کامقام برزخیت بریک بوست و کھال جو برٹے اور لور کے درمیان تھا وجُود وعدم کامقام برزخیت بریک بوست و کھال جو برٹے اور لور کے درمیان تھا وجُود وعدم کامقام برزخیت ہے کہ نورسے اشارہ عالم وجُوب کی طرف ہے اور کیٹرے سے مُراد عدم ہے۔

اعبیان ما بریم مرتب کا مات مِتفا بلہ وضورِ علیہ جو مرتبُ اُولی میں اللہ تعالیٰ کے علم میں اللہ تعالیٰ کے علم میں اللہ تعالیٰ کے علم میں اللہ تعالیٰ کے اندیکا سے اللہ تعالیٰ کے مرتب کا موجہ دکر دیا ، اعیان اللہ کہ لا تی ہیں بعنی حقیقت کا منات عدم اور پر توصفات سے مرکب ہے کیونکہ عدم وجود خارجی میں جو دو موجود کر دیا ، اعیان اللہ وجود خارجی اس کے ساتھ صفت کا ملاب ہوا تو وجود خارجی بیدا ہوگیا ہیں جیانِ نابۃ اپنے وجود خارجی اس کے سے بہتے عدمات وصفات کے ہزاج بیدا ہوگیا ہیں جیانِ نابۃ اپنے وجود خارجی اس کے وجود علمی کا ظال ہے ۔

یہدا ہوگیا ہیں جیانِ نابۃ اپنے وجود خارجی اس کے وجود علمی کا ظال ہے ۔

اعیان نابت اور صنرت ابن عربی فرس نره مختالت الدین ابن عربی فرس نیزه مختالدین ابن عربی فرس نیزه مختالت الدین ابن عربی فرس نیزه اوران کے مُوندین صُوفیائے ویُودیه فرماتے ہیں اَلاَ عَیالُ مَا اَسْمَا اَلَّهُمَا اِلْهُمَا

المنت المنت المنافعة المنافعة

رائیکی آئو مجود دین اعیان ابته اور موجودات علمی نے وجود خارجی کی خوشنو کو بھی ہمیں ہے وجود خارجی کی خوشنو کو بھی ہمیں ہوئی شنے بھی ہمیں ہوئی است باری تعالیٰ کے سوا خارج میں کوئی شنے موجود نہیں اورصفات بنی اندین تقیقت بھی وجود خارجی نہیں کھیتیں ملکے صفات میں ان است کی مہی نبیا دہے۔

ہیں اوراُن کے نظر ئیم ہم اوست کی مہی نبیا دہے۔

اعیبان نابته اور صنرت ما مرا فی قدس سرق در مته الدعلیه اور است مرا فی قدس سرق در مته الدعلیه اور است می وجود این اور وقات سے فارج میں موجود این اور وقات سے فارج میں موجود این اور وقات سے فارج میں متیز این اور وقات نی مکنات فارج میں متیز این اور وقات یک فارج میں متیز این اور وقات یک خارد کی ایسان این این اور وقات کی مکنات کا ملہ کے فلال سے وجو کو فید یہ موت این جو مکنات میں اور عُدم خال است وجو کو فید یہ موت این مکنات میں وقات ہوسکتے ہیں۔ موت این کا ماری کے فال این کے فوا کی مکنات میں فرات ہوسکتے ہیں۔ عالم وجو سے فراک کی مناسبت بہیں رکھتے اور نہی مکنات میں فرات ہوسکتے ہیں۔ عالم وجو سے فراک کی مناسبت بہیں رکھتے اور نہی مکنات میں فرات ہوسکتے ہیں۔ تکالی اللہ عَن ذَا لِن کُلُو اللہ مُن ذَا لِن کُلُو اللہ میں اور کا طرفر فرائیں)

قامی میں کے لیے دفتر دوم مکتوب اول طاحظ فرائیں)

واضح ہو کو موفول نے ویو دیے نے ضفات ثمانیہ کے وجود خارجی کا

الله المحمود المحمود

البيتنا المحالية المعالمة المع

مکن بے عنایا سے حق و خاصا ن حق گر مگک باشد سے وہ مستش ورق ترجمہ: الله تعالیٰ کی عنایات اور اس کے خاص بندوں کی توجہات کے بغیراعمال نامد سیاہ ہی رہتا ہے خواہ فرسٹے کھیوں نہو۔

## شرح

حضرت امام ربانی قدس سرهٔ اپنی مرشد بزرگوارعلیه الرّمته کی خدمت بیرع و برداز بین که واقعات و واردات کی تعبیروتا ویل بین آپ کی طرف اس لیے رجُرع کرنا بول تا که آپ کی وضاحت اور نشاند ہی سے ان امور کے سابھ یقین پیدا ہوجائے کی دکھ آپ کی بلند توجہات کے بغیر کام بے مکھ اللہ تعالے کی عندیات کے بعد اس کے نبک اور خاص بندوں کی توجہات و ترسیب منزل مقصود عندیات کے بعد اس کے نبک اور خاص بندوں کی توجہات و ترسیب منزل مقصود کل بینچنے کے بیا و سید نبتی بین حتی کو فرشتوں کا اعمال نامر مجی سیاہ ہی رہما ہے جب کک کہ خاصان حق کی عنایات کرمیانہ شامل نہ ہوں آپ نے اس امر کا اظہار جب کا کہ خاصان حق کی عنایات کرمیانہ شامل نہ ہوں آپ نے اس امر کا اظہار ایک شعر کی صورت میں فرمایا ہے اور اہل کشف کے نزدیک پیچنیفت نفت الامریس ایک شور کات انسانوں اور جبوں کے علاوہ فرشتوں شاہرت ہے کہ مقربین فرات کے فیوش و بر کات انسانوں اور جبوں کے علاوہ فرشتوں کو جب کا مواب دینا عذوری

سوال جب فرشتے معصُوم ہیں اُڑ کاب مصنیت بھی نہیں کرتے نیز اپنے مقامات سے آگے عُرُوج و ترقی بھی ان کے لیے ثابت نہیں تو پیر ان کوخاصان حق کی عنایات کی کیا حاجت ہے ہ

بواب بلاشبه فرشتوں سے گناہ صادر نہیں ہوتے گرتف میراور ترک اُولا جواب ان سے مکن ہے میسا کہ حکایت ہے کہ خواجۂ بہاں صفرت خواجہ المنيت المناف المنافع المنافع

عبرانحان غبدوانی قدس سر فرقی مجلس شریف میں ایک خور ولوجوان ماضر ہوا اور اپنی ماجت بیش کی جصرت خواجہ نے فرا دست و ما اعظائے اور اس سے بیے نہایت عاجزی کے ساتھ دُعا فرمائی وہ خوصورت جوان بہت بخوش ہوا اور اجازت بے کر خصصت ہوگی مجلس میں ماہ کری مراز نے اس معالے کی وضاحت بوجی توحفت فواجہ نے فرمائی کہ بیج تھے اسمان کا فرشتہ تھا کسی تقصیر یا ترک اولویت کی وجسے اس کو اجران کے مال کھف وکرم ہے اس کو اور اس کے و وبارہ جو تھے اسمان میں اس فقیر کی دُعا اس کے حق میں قبول فرمائی ہے اور اس کو دوبارہ جو تھے اسمان میں اس کے مقام پر فائز کر دیا گیا ہے۔ اس واقعہ سے علوم ہوا کہ فرشتے بھی اللہ تعالی کے مقام پر فائز کر دیا گیا ہے۔ اس واقعہ سے علوم ہوا کہ فرشتے بھی اللہ تعالی کے مقام پر فائز کر دیا گیا ہے۔ اس واقعہ سے علوم ہوا کہ فرشتے بھی اللہ تعالی کے مقام پر فائز کر دیا گیا ہے۔ اس واقعہ سے علوم ہوا کہ فرشتے بھی اللہ تعالی کے ماص بندوں کی طرف احتمال و کھتے ہیں۔ کہ

منن وياران كه اينجا تعليم وكركرفنة انداكثر بطب يتِ رابطه شغول اند.

ترحمه ؛ اوجن یارون نے یہاں (سرہند شریف، وکر کی تعلیم حاصل کی ہے ان میں سے کشرطریتی رابطہ بین شغول ہیں -

شرح

سے میں امر آبانی فتس سِرہ کی فدمت ہیں جدمریدین لوک کی فضیلی سیر کیلیے حاضر تھے آب ان کی ستعدا دکے بارے میں اپنے مُرشد برحق کی فدمت ہیں رقم طراز ہیں کم ان طالبوں کی اکثریت طریق رابطہ میں شغول ہے۔

رابطہ سے مُرادیہ ہے کہ مُرید اپنے شِن کی صُورت کو اپنے دل یا طربی بر البطیم نیال میں محفوظ رکھے اس طرح کیشین کا تصور اس پیغلبہ کر جائے جب یہ رابطہ بڑھ جائے اور ہرطروب شیخ کی صورت نظر آئے تو اُس کوفٹ المنت المنت

نی اسیخ کہتے ہیں ہی طریق رابطہ کوتصور شیخ اور مغلِ برزخ بھی کہا جاتا ہے۔ حصرت خواجہ عبید اللہ احرار تُقدِس سُرُو نے فرمایا انبات طریق رابطہ کی سائیر ہب رہاست از ذکر جلّ "یعنی رابطہ کلاریت نکی ہیں دیں من

حضرت خواجه مح معصوم سربندی رحمتُه الله علینہ نے طریق بر ابطہ کے ثبوت پر
 دلاکا محبی پیشیں فروائے ہیں ہے۔

(غائب كوخيال نظر سيمثل عاضرك وتجينا ، كى طرف اثناره بحي عرصقيقت

ہے طریق رابطہ اور تصوّر شیخ کی بیمالت تھی خود نجو دطاری ہوجا تی ہے اور کھی تکھن کے دطاری ہوجا تی ہے اور کھی تکھن کھی تکھن کے ساتھ پیدا کی جائی ہے۔

بليت اس

تصوّر سيخ كے فوائد تصوّر يخ كے بے شار فوائد ہيں.

تصور شیخ سے ومدت بنیال کی شق ہوتی ہے اور وہ تہ ہے اور وہ ت پہلا سب نکرہ نیال کے حصول کے ذریعے ذات ِ احدیثیت کے مشاہدے کی راہ تھلتی ہے ۔

كارنگ، للذا طالب بشرتیت كی بناریشیخ كے ساتھ یک گوندمنا سبت ركھتا ہے نہیار كو بشرتیت كے ساتھ مبعوث فرمانے ميں هم يہى كمت كار فرما ہے كەمخلوق فُدا بشرتیت كى نسبت سے ان سے فيوم ل سے سكے ، ﴿ وَاللّٰهُ عَلَمَ

قیوم نافی صفرت خواجه نحی معموم مرمندی رحمة الله علیه اپنے محقوبات فرسیمیں فرمات این کے محتوبات اس سالک کو فرمات این کے مرسالک قبورا والیار سے استفادہ نہیں کرسکتا یہ عادت اس سالک کو ماصل ہوتی ہے جو فائے قلب سے مہلے اس

البيت المجادية المراج المجادية المحادث المحادث

میں عدمِ مناسبت کی نبار پر استفادہ کی اِستعداد نہیں ہوتی ۔ معسان میں تصوّیہ شیخ سے طالب صادق ہرجگھ شیخ کو اپنے ساتھ ملاحظہ ماری میں میں تصوّیہ شیخ سے طالب صادق ہرجگھ شیخ کو اپنے ساتھ ملاحظہ

تيسرافائده كرتاب حينانج مصنرت لوسف علينه السّلام زليخا كے نفنے سے تصور حضرت بعقوب عليه السَّلام كي سبب سينجات بإسَّكُ تصفيعلوم مواكم

نسبتِ رابطهسببِ نجات ہے۔ ' مر نسبت رابطہ انصورشینی باطن شیخ سے انوار و تحلیّات اور • • • • مر نسبت رابطہ انصورشینی باطن شیخ سے انوار و تحلیّات اور رابطه قائم كرنا ہے توشیخ كے لطائف باطنيہ سے اس كے لطائف پرالوار وتجليك منعكس هوتة بير كنيؤنكه فبيض أعكاسي هوشته بين بحضرت امام رّبا في محدِّد الفتَّاني رحمتُ اللّه علسية فرمات بين :

نسبت برابطه بهواره شمارا باصاحب رابطه مبدارد وواسط فيوس إنعطاسي ميشودشكرا ينعمت عظملي بجابابيرآ وردكبه تعنى رابطه كي نسبت تم كومه بيشه صاحب را بطه كے ساتھ رکھتى ہے اور بنج

كے فیوض وبر كات كے پر تو كا واسطہ ہے اس طبی نعمت پر اللّٰہ تعالیٰ كاشكر بجالا ما

آپ کے <sub>ا</sub>س فرمان سے معلوم ہو اکہ تصنوبے نی مُرشد کے کھالات کے جذب

دابطے کے طمیقے تصوّرِ بيخ ك كئي طريقي بي . البيتنا كالمالي المالي المالي

به المرافق مريد برتصورا ورخيال سدايند دل كوفال كرؤاك أتحين به المريد بركار في المريد بركون كالمبت كا فريعيب مريد بركون كا فريعيب مريد بركون كا فريعيب مريد بي المريد بي المريد بي المريد بي المريد بي المريد بي المريد المريد المريد المريد بي المريد المريد

و المراقع البنائية كالمكورت البنادل كر أيساني من المراقع المناسبة على المكورة المراقع المناسبة المراقع المناسبة المراقع المناسبة المراقع المناسبة المراقع المناسبة ا

میسراطرلقیم تنظیم کے طور پرخیال کر است اگرجد بظا ہر سیخ دورمی ہواس

كى صورت مى وى فائد ما دار كى حواس كى حبت فائده ديتى بد.

مُريدانيا وحردشيخك وجودين كُم كردك أورانية آپ كو چوتحفا طرليقر عين فيخ تصوّر كرك مين ادفات مُريفلئه مِجنّت شِخ كى وج سي شيخ كأفعال وأقرال اور آثار وحركات بعي اپنے اندر موس كرنے لگتا ہے اور اس كى طبيعت ہيں سے " أنا استينى " كى اوار آنے لگتى ہے ۔

حنرت امیرخمرو دہوی علیہ الزحمۃ اسی منزل ہیں اپنے شیخ کے تعلق کھتے ہیں ہے خسرورین مہاگ کی سوئی ہیں پی کے سُنگ تن مور اسمن پی کا ہویا وو نوں ایک ہی اُنگ

منت روزے فرمُورہ بُودند درمیان واقعہ از وقائع کہ اگر نہ معنے محبُوبتیت در ومی بُرد توقف بہدیار در وصُول مقصد داقع میشد ومحبُوبتیت بُاورانسبت به عنایت ِخود جمہیان دنب مودہ بودند . البيت المجال الم

## شرح

منطور بالا میں صنرت اما مرتبانی قُدِیس مترہ صنرت خواجہ باتی باللہ رحمت اللہ علیہ کی خدمت عالیہ میں اپنے تعلق آپ کا ایک فرمان قل کر رہے ہیں کہ صنواِ اللہ نے میں ہے میں کہ صنواِ اللہ نے میہ منتعلق فرمایا تھا کہ اگر اس میں مجوبہت کا معنی نہ ہوتا تو وصنول اِلی اللہ میں بہت دیر ہوجا تی جوز کھ اس میں مجبوبہت کا تحقق ہے اس لیے جذب کے راستے خدا تک جاری جنایات میں اس کی مجبوبہت میں شاب ہیں ۔ توجہات مجبی اس کی مجبوبہت میں شاب ہیں ۔ توجہات میں اس کی مجبوبہت میں شاب ہیں ۔

مطابق يہاں حُتِ نَهُور و توجَّد به خلق رُونما ہو تی ۔

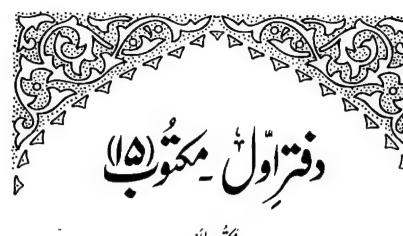
ه سیز محت ادلی در جمه هسشیارسارییت وُرند بُرگل نه زوی مبسب لِ نالار نسسهاد

حقیقت مجتبت تمام مجتول اور مجولول میں جاری وساری ہے بمجبیت و محبوبتیت کوادم حقیقت محبّت سے ہیں ۔ حضرت امام ربانی قدیسسس سرّف رقمطران ہیں : رمافة محبّان صنرت كليم الله است عَلَيْ بَتِينَ وَعَلَيْهِ الصَّلَاهُ وَ السَّلَام وسركَره وَ محبُوبان صنرت مَا تَم الرَّسل ست عَلَيْه وعَلَيْهُمُ السَّلَام وسركَره وَ محبُوبان صنرت مَا تَم الرَّسل ست عَلَيْه وعَلَيْهُمُ السَّلَات والسّيّات والتحيّات وبه تبعيّت ووراثت اين صنا وولست ان هركراباين دومقام مشرّف سازند أليه ترجمه ، مُحبّوں كے سروار صنرت موسى كليم الله بي اور محبُوبل كے سروار صنرت ماتم الوُسل اعليْه وعليْهُم المسّلوت والسّليمات ، مرّاج خود صنرت ماتم الوُسل اعليْه وعليْهُم المسّلوت والسّليمات ، بي وحمقام ومبتيت يا محبوبيت عطام وسئه بي ورومقام ومبتيت يا محبوبيت على موسئه بي ورومة الله وروراثت كے طور بيماصل ہوئے ہيں . بيروكوں كي نيابت اور وراثت كے طور بيماصل ہوئے ہيں .

واضع ہوکہ مجبوبیت محبوبیت محبوبیت مطلقہ خاصۂ سرویک الم اولیت محبوبین منا الدین ہم ہے بعض اولیائے کرام کو آپ کی متا بعت و ور انٹ کی برکت سے یہ مرتبہ محبوبیت عطا ہو اسے جن ہی حضرت بین کاشیخ عبد القاور حبلائی ، حضرت نظام الدین و ہوی محبوب اللی مصرت نوائیست یہ بہا و الدین محد اوسی مجاری المعُروف شا فرنقش بند اور حضرت امام ربانی مجد و العن ثمانی شیخ احمد فارُ و قی قدست اَسْرارُهم سرفہرست ہیں۔ ذالات فضف لُ اللّٰه و کیونیٹ و من قیشتا ہے۔

امامِ رَبّانِي محبُوبُ جاني بين

رینظر کمتوب محرامی سے واضح ہوا کہ حضرت خواجہ باتی باللہ دہلوی رحمتُ اللّٰه علیّہ نے حضرت امام رّبا بی رحمتہ اللّٰہ علیہ کو "محبوب "کے لفتب سے نوازا۔ ایک محتوب میں حضرت امام رّبا بی قدّس سستہ ہونے فرمایا ہے : البیت المحال ال



معتوب بنیر عارف بالله صنر توجه **محیکه کیا جی ب**یر کار ایر ایران میران ایرز



موضوعات

کیفیات عرُوج وزول ، مفام جمع و مقام فرق رُوح ونفس کی بحث ، اُرُباب ب قلوب ، عزیز متوفف سے کون مُرادہے؟



# مُكَتُوبِ - ١٥

مان عرضداشت ماضرغائب واجد فاقدِمُقْبلُ مُعْرِضُ المُكمة تها اورا م جُبت خود رامی یافت بعدازان کار اُو بانجا انجامید که اگرخود رامی جُبت اُورامی یافت اکنون اُو را گم کرد آماخود رامی یابد با وجود گم کردن جو یائے اُو نیست و با تحقیق فقدان خوا بان اُوند۔

ترجمہ: اس حاضر امرجود عائب (خیر صاضر) واجد (پانے والا) فاقد (نہ پانے والا) مقبل امنوجه امرجود عائب (خیر صاضر) واجد (پانے والا) مقبل امنوجه امرجون اس المحلوب حقیقی کو و حود کرتا تھا اسکے بعد اس خادم کا کام اس مقام تک بہنج گیا کہ اگر اپنے آپ کو و حود کرتا تو اس کو پاتا تھا اب اس کو گر کر حیکا ہے لیکن لینے اپ کو دھونڈ تا تو اس کو پاتا تھا اب اس کو گر کر حیکا تابت ہو س پ کو باتا ہے۔ گم کرنے کے با وجود اس کامتلاشی نہیں اور گم کر دنیا تابت ہو جانے کے با وجود اس کی خواش کرنے والانہیں۔

# شرح

زرز فرکتوب گرامی میں عارف کے مقامات عُروج و نُزول کے مناسب اوال اور مضار پرسشدہ اُسرار کا بیان ہے۔

ر من من المارة المنظمة المنظم

آجکاعُروج ونزول کی بغیات سے حقد بارہا ہے ہی لیے تھی حاضر بھی غائب،
کھی واجد بھی فاقد ، بھی خیل اور بھی مغرض ہے۔ ہیں اجمال کی تفصیل اوں ہے
کوعارف جب اپنے مبدا وفیض کک رسائی حاصل کرلیتا ہے تو اس وقت مارف رُوح کے
نفس نزول کرنا ہے اور اس کی رُوح عوج بحرتی ہے۔ اس وقت عارف رُوح کے
احتبار سے حاجن واجدا ور بھی کروح عوج بحرتی ہے۔ اس وقت عارف رُوح کے
احتبار سے حاجن واجدا ور بھی اس کی رُوح کی ترجیعا لم وجب کی طرف ہوتی ہے اور
نزول کی حالت میں عارف کا ایمان باعتبار نفس کے ایمان بالغیب ہوتا ہے اور باعتبار
رُوح کے ایمان بالمشاہدہ ہوتا ہے۔

نیزاب کایی فرمان "کرد تو اصطلاب کو دھونڈ تا تھا تو اپنے آپ کو باتا تھا" یہ مرتب بُرُول کی کیفیت کا بیان ہے اور یہ فرمان "کراگر اپنے آپ کو دھونڈ تا تو اس کو باتا تھا " بہ مرتب بُرُوج کی کیفیت کا بیان ہے کیونکہ عادون کے لیے مروج کی حالت میں عالم اسکان فراموش رہتا ہے اور عالم وجوب شہود ہو تا ہے اور نز ول کے وقت اس کا ایمان شہود می امیان غیبی کے ساتھ تبدیل ہوجا تاہے اور گر کر دینے کے کا ایمان شہود می امیان غیبی کے ساتھ تبدیل ہوجا تاہے اور گر کر دینے کے باوجود اس کا متلائی نہیں " یعنی اب عُروج کے بعد نز ول کے مرتب میں آگیا ہوں باوجود اس کا متلائی نہیں " یعنی اب عُروج کے بعد نز ول کے مرتب میں آگیا ہوں اور یہاں آکر عدم طلب کا احساس اس امر کا عمار ہے کہ وصل کا مرتب حاصل ہو جکا ہے دکیونکہ وصل کے بعد طلب نہیں رہتی ، اب یہاں عادون وعوت خلق کے مرتبے پر فائز ہوتا ہے۔

منن از رُوسے علم حاضِر و واجد مُوقبل ست واز روئے ذوق غائب و فاقِد ومُعرِض ظاہرش بقاست

#### وبالمنش فنا درعين بقافاني ست و درعين فنا باقى كين فناعِلى ست وبقا ذوقى ـ

ترجمہ ، علم کے اعتبار سے عاصر موجود ، واجد ، پلنے والل اُورُغنل ،متوجہ ہے اورُوق کے اعتبار سے فاتب ،غیر ماصن ، فاقد دنہ پانے والل اورُعرِض منہ بھیرنے والل ، سے اس کا فاہر بھا ، ہے اور اس کا باطن فنار ، عین بھا ، کی صالت ، میں باتی ہے اور عین فنا ، کی مالت ، میں باتی ہے اور عین فنا ، کی مالت ، میں باتی ہے اور علی سے اور نقا ذو تی ۔

#### شرح

آپ فراتے ہیں کہ گرجہ اس وقت عالم وجُب کا مشاہرہ ثابت نہیں اؤر ذو تِ مال کے اعتبار سے غیبوبت ہے گرج نکر سابقہ علم کا حضور موجود ہے اور مراتب وجُرب کے سابقہ شہود کو از رُوستے علم مانتا ہوں کیکن از رُوستے ذو تِ مال وہ سابقہ شہود موجود نہیں ہے۔

نیز آپ نے فرمایک اور فلا ہر بقلب اور باطن فیا العینی آپ ابنی حالت اول بات نیز آپ ابنی حالت اول بات بیری آپ ابنی حالت اول بات بیری کر بفت کے اعتبار سے تو میں صفات باری تعالی کے انعکاسس سے رنگین ہوں اور حالم خلق کی طرف فرول کرجیکا ہوں رمنی مرتبہ بقا میں ہوں ایکن و حکے اعتبار سے فائی اور شہو دیم کمنات سے بے خبر ہوں ایعنی مرتبہ فیا میں ہوں ایکن فنکے علمی ہونے کامطلب یہ ہے کر نفس کے اعتبار سے اس وقت فیا میرے علم میں ہے اور فناکی حالت کر رسی ہے اور بقا فو قی ہے یعنی انعکاس صفات سے میں ہوں اور فعلاق اللہ سے سختی ہوں ۔

مكن كاروبارش بهمبُوط ونُزول قراريافته وارضُعُود

وعُروج بإز مانده وبهم حِيَانكه أورا از قلب يُبِقلِّب قَلْب برده بودند اكنون بإزاز مقلب فلب درمقام تفنس فرود أور دند با وجودِ كخلص روح از نفنس وخروج نفنس بعد ازاطمينان ازغلبات انوارروح اوراجامع هرد وحبهته رُوح وننس ساختداند وبربرزخيت اين جبتين اورامزنن گردانیده انداستفاده از فوق وافا ده برخت اُورامعاً بواسطة حصول ابن برزخيت عطا فرمووه اند درعين تتفاده

مفيدست و درعُينُ إفاوه ستبفيد .

رحمه: اس احضرت محدّد قدس سرف كامعامله بمبُوط ونرُول برهم و كالبياد وصعُوره عرُوج سے رُک گیا ہے اور مس طرح کہ اس کو متھا م قلب سے تقلب قلب رقلب کو بِعِيرِن والعِيني حق تعالى كى طرف ك محت تھے اب بِعُرْتَقلب آلب حق تعالى كى طروف سے تقام قلب میں میچے ہے آئے ہیں۔ رُوح سے نفس سے آزاد ہوجانے اورفنس كمطمئذ بوكرا نوارك غلبول مستنطف كعبا وجوواس احصرت مجدّد فُتِيسَ سُره ) کی رُوح کورُوح ونفس کی دونوں جبتوں اطرفوں کا جامع بنا یاہے اور اس کو ان دونوں جہتوں کی برزخیت کے ساتھ مشرف فرمایا گیاہے اور اس بزخیت ك عاصل مون كى وجست فوق البغي سے أوبرك مقام والوں اسے فائدہ س كرنا اورتحت دينچے كے مقام والوں كوفائدہ يہنچانا يہ وولوں الموركميا عطافرائيے ہيں فائدہ حاصل كرنے كى حالت بيں فائدہ يہنچا ہے والا مجى ہے اور فائدہ يہنچانے ئے وقت فائدہ حاصل کرنے والانھی ہے۔

# شرح

سطورِ بالا ہیں صنرت امامِ رَبانی قُدِس سُرُوْ اپنے مقام وحال کی خبر دے ہے ہیں کہ اس فیتر کا معامل صعُود و عُروج سے وُک گیا ہے اور اب ہبُوط وُزُ ول رِکُھمِر گیا ہے مینی مقامِ قلب رِہاِستقرارہے ۔

صعود وعرف أيباضعود وغروج سے فرادعالم بالا كى طرف أو پر جانا صعود وعرف جانسے اور ہمار وصفات الهيدين سَيرواقع ہونا ہے اور بُهبوط ونُرز ول سے فراد نيجي آنا اور سند وعوت وارشاد برجمكن ہو كرمخلوق كى مميل ہتا سے ليے متوقع ہونا ہے اور پہ رئہ بوط ونُرزول کمیل كامر تبہ ہے جہاں سالک ونتا ہم

و ... بیر مقلب مقلب دول کے بھیرنے والا) سے مُراد ذاتِ مُعَلَّمِ فَكِ حَیْ تَعَالَیٰ یاعارف كالهم مُرَدَّقِ ہے۔

مقام قلب مقام قب سے مُرادشہودِ عالَم اور تقام فرق بعد اسع ہے۔ مقام کی روح انفنس کی دونوں جبتوں سے مامع ہونے کا ہم سالک کی روح اور س کی دونوں جبتوں سے امع ہونے کا ہم

حضرت امام رّبانی قُدِسَ سرّهٔ فرمات این که اس نقیری رُوح کوالله تعالی نے رُوح اور نفس کی دونوں جہوں کا جامع بنا یا ہے اور ان کی برزخیت سے مشرّف فرما یا ہے اس فرمان کا مفہوم سمجھنے کے لیے ورج ذیل سب یادی نکات کو ذہن نشسین کرنا ضروری ہے۔

ایک نوری کا بی ایسی می ایسی می ایسی می اسل وطن عالم امرہے جوعرش کے اوپر
 اوپر کی میں ایسی می ایسی می ایسی می ایسی میں ایسی ایسی میں ایسی ایسی میں ایسی میں ایسی میں ایسی میں ایسی میں ایسی ایسی میں ایسی ا

اس کی فطرت ہیں ترقی اور عُرون کی ستعداد موجود تھی اس سے اللہ تعالیٰ کی مکسیانی کا تقاضا ہوا کہ رُ وج ترقی کرے قرب حق سے مشرون ہوجائے سرگرعالم اسبب میں قُرب حق مجاہدہ پر موقوت تھا۔ اس سے مجاہدہ کی منزل عُبور کر انسان کے جہ میں فرص کو میڈ مقابل اس کو مبکہ درگئی اور رُوح کو نفنس کی مخالفت کا حکم دیا گیا چنا نچہ رُ وج جب عاصیبول ورنا فوائوں اور رُوح کو نفنس کی مخالفت کا حکم دیا گیا چنا نچہ رُ وج جب عاصیبول ورنا فوائوں کے جہوں میں وافل ہوئی تونفنس کے خواجے کی وجہ سے نفسانی تقاصنوں کے آپی ہوکو نفنس میں فائی ہوگئی اور عالم امراکی مناسبت یا کہ اس کی طرف جسموں میں وافل ہوئی تو اپنے وطن اسلی رعالم امراکی مناسبت یا کہ اس کی طرف جسموں میں وافل ہوئی تو اپنے وطن اسلی رعالم امراکی مناسبت یا کہ اس کی طرف جسموں میں وافل ہوئی تو اپنے وطن اسلی رعالم امراکی مناسبت یا کہ اس کی طرف

حضرت شاہ شرف بُرعاق سندر رحمتہ اللہ علیہ رُوح سے مخاطب ہیں۔
سے چسند باش از مقب م خود حبُدا
چسند گردی در بدر لے سے حسیب
یعنی اے رُوح توکب کک اپنے مقام سے عُبدار سہے گی اور اسے آ
سے جیا توکب کک دربدر بھرتی رہے گی۔

بنانچرصائحین کی رُوح عودی کے وقت بعن کو اپنے انوار میں جذب کرلیتی
ہے اور اپنے ساتھ حالم وجرب کی طرف ہے جاتی ہے اوران کا نفس لمپنے مربدار
مین کی بہنچ کر طمئة ہو کر رُوح سے عبدا ہو کہ واپس عالم شہود میں وعوت بعلق
مینے زول کرلیتا ہے تواب ایک ہی وقت میں عادف کی رُوح عالم وغرب سے
سنفادہ کرتی ہے اوراس کا نفس عالم شہود کو فائدہ پہنچا تاہے جیا نجے سالک رُوح
استفادہ کرتی ہے اوراس کا نفس عالم شہود کو فائدہ پہنچا تاہے والا بھی ہوتا تاہے اور دولوں کی برزخیت سے مرتز ت
ہوجا تاہے گویا فائدہ حاصل کرنے کی حالت میں فائدہ بہنچا نے والا بھی ہوتا ہے
اور فائدہ پہنچا نے کے وقت فائدہ حاصل کرنے والا بھی ہوتا ہے ۔ بعین رُوح عالم

آمرستے علق رہتی ہے اور من عالم شہا دت سے مرٹوط رہتا ہے حضرت امام رّبانی قدس سرخ نے ان کلمات میں اپنی اسی باطنی مالت اور رُوحانی کیفیّت کا اِطہار

ر المراج عاليه سي يبله كى حاكت كابيان بيركيونكه عالم وتُوب بين سيرعُ وحى سي فارغ ہونے کے بعدعارف کی رُوح می نفس کی طرح اردول کرتی ہے بُروح اور منسس وونول كاعالم شهودمين تزول كرنا وهجميلي مرتبه بيع جروعوت وارشا واوركحالات نبؤنت ستعلق ركها بعارف اس مرتب مين ظهر كالات عالم وجوب موجاتاب ادرصفات المبيك بُرِتوس حكمين موكر كدورات بشريه سے باك موجا آہے .

عارف رُوم فينسه مات بين!

ے ہرکرا جا مہ زعشقے چاک سٹ او زَمسه وعیب کل کیک سٹ

يعنى حوكوئي عشق ك غليه سے كدورات بشريه كالباس ماك كروتيا ہے وہ

ہر تسم کی حرص ادر ہر تم کے عیب سے پاک ہوجا تاہے۔ . بعد میں اللہ تعالیٰ نے آپ دحضرت امام رّبا فی کو اس مرتب کی آخری اور

تنکمیلی منازل برِفائز فرما دیا تھاجس کا اظہار ٓ اپ کلیے دیگر محتوبات سے ہو آ ہے۔

والمحتشد يله عتلى ذالك

محذشة مطورين صفرت امامرتاني فُدِّسَ مِنْ مُطورين صفرت امامرتاني فُدِّسِ مِنْ وَ مقام مجمع ومقام فرق نيمقام قلب كاذكر فرما بالمصوفيات مجدّديه عليهُ ماتِي من من من من علیہمُ اِرِّمَۃ کے زویک مقامِ قلب سے مُرا دمقامِ فرق بعد المجمع ہے مِقامِ حجمع وفرق سر اللہ میں اور میں کا سرائیں ہے۔ اس میں میں اس مے اسے میں صُوفیا ، کوام کے درمیان خِتلاف ہے۔

المنت الله الإلام ا المنابعة الله الله الإلام مُسوفیائے وجوُدیہ کے نزدیک واجب اورمکن کو ایک حمیب نہ مقام جمع بانامقام جمع ہے۔ جاماہے۔ حضرت امامرتبانی قُدِّس سرہ العزیزشان تجدید دخشیق کے لبندمرتبے پر فائزاور حقائق اِشیار کے علم سے بہرہ ورشھے ،اس بیے آب کے نزدیک رُوح اوز نفس کو ابک دیکھنے کانام مقام جمع ہے۔ مقام فرق مقام صنوفیائے وجودیہ کے نزدیک واجب اورمکن میں امتیاز کانام مقام فرق مقام صندت ہے۔ و ورسط فرفيار كارزديك سالك كامتوجه إلى أغلق بهونا اورخلق كوحق کے اُنوار کا ایئے۔ نہ مجھنامقام فرق ہے۔ حضرت امامِ رَبَا فی مُدِیّس سِرَهٔ کے نز دیک رُوح اونِفس کے امتیاز کومقام م بیر مرب جب کفش رُوح کے اُندار بیر ستعزق اور ستور ہے تو یہ میں میں مقام جمع ہے اور جب نفس کھرکنڈ ہونے کے بعد رُوح سے جُدا اوكر وعوت فل كيليي يني أجائي يتقام فرق بعد المستعب بحث رُوح رَفْس و روح عالم اَمرکی چیز ہے جوغیرا دی ہے قتل انسانی اس کی تقیقت اروح کا دراک کرنے سے عاجز ہے . ارست دِربانی ہے،

non-record Children and

قُـُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِيَرَتِيْ لَهُ نہ سب اہل سنت کی رُوسے رُوح کی تعربین یہ ہے ا انكة بجنسكم منحالي بالمتاهية وللاذااليجشيم المحسوم وَهُوَجِنْكُ نُوْرَا فِي عَلْوِئ كَخِفِيفٌ حَيْ مُتَحَدِّكَ يَنْفَذُّ في جوْهَر الْاعْضَاءُ وَمَينُرِى فِيْهَاسَرْيَانَ الْمَاءِ فِي الْوَبْرِدِ وَسَرْكِيانُ الدَّهْنِ فِي الزَّبَيْوُنِ والسِّسَا يسفِ

ترحمہ ؛ رُوح ایک جم ہے جو اپنی اہتیت کے اعتبار سے اِسمحسور حسب م عنصری کے مخالف ہے وہ جم اور انی علوی ، ہلکا ، زندہ اور متحرک ہے جو تمام عضا صم میں نفوذ کر تا ہے ہم میں اس کا مُریان ایسا ہے جیسے گلاب سے بھیول میں کا فی زیون میں رونن اور کوستھے میں آگ کا مسسریان ہے۔

امام انْبُرالقاسم بيلى رحمة الله عليه فرمات بين -

فَهُوا يَضًا جِنْكُ وَلِكِئَهُ مِنْ جِنْسِ السُرُوجِ ولذالك يمستنى ووكامن كفظ الرييج ونفيخ الميك

في مَعْنَى الرِيْحِيَّه

ترحمه ااور وه رُوح مج صبح سب مگرر بح نعینی بهوا کی منس-رُوح سے بوسرم کرتے ہیں کبور تک سیشتن ہے اور نفخ ککٹ ری کے معنی میں ہے۔ فابت بواكه روح كى بيدائش نفخ مل كمست بونى اورملا تكه كى بيدائش نويس ب البذارُوح ملائكرس زياده لطيف موني. جيسي حبم انسان كاسانس اس كي حبم سه زيا وه تطيف سه ايسه بي الائكه كا

كاسانس ان كي بم ي زياده لطيف ب :

اور نور کوحرکت وحیات ذات باری تعالی سے متی ہے میرے عزیز اس مقام کو کاحقہ مجھنامحال ہے۔

 يَّانَّهُ النَّاسُ اِنَّ اللهُ قَبْضَ اَزُواِ حَنَّامِيرِي رُوح كوئى وَالتَّ كِيرُ مُرَكَمَا تَعَاجِس نَهِ آب كى رُوح كونكِرُا وومرى روايت بس بيد يصنور مَنَا الْعِيدَةِ مِنْ فَرايا : ليه لوگو! التُّدِ تعالى في بهارى رُوح ل كوقبض كرايا تما ـ

 اس مدین پر عفر کونے سے علوم ہوتا ہے کہ ایک ہی چیز کو حضرت بلال رضی اللہ عند نفنس سے تعبیر کرتے ہیں اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم رُوح سے تعبیر فرط نے ہیں اس میں طبیق یونہی مکن ہے کہ رُوح اور صن کو ایک ہی گئی مانا جائے۔

بعد مر معاب مرفع بالبطال المواجه من المعاملة المعالم المعالم

" واضح ہو کنفس کی صفات ذمیمہ کو مجابدہ اور ریاضت سے بلی مسلم کی مقات دمیمہ کو مجابدہ اور ریاضت سے بلی مسلم کی مسلم کی مارے اور سکتا ہے ہوگا مل ہوجائے تو بیفنس مطمئہ کا درجہ ہے ۔

البيت الله المرابع ال

معلوم ہواکہ رُوح اورنفس کے درمیان فرق باعتبارصفات کے ہے نہ کہ باعتبار فات کے ہے نہ کہ باعتبار فات کے ہے نہ کہ باعتبار فات کے۔ واللہ علم بالصّواب ،

منتن معروض ميگر داند كه دست بچپ عبارت ازمقام قلب ست كرمين ازعُ وج بمقلب قلب حاصل ست بعداز هبوط از فوق كه مقام قلب فرو دمي آيند آن مقام دگير ست كه برزخ جرب وراست ست مجاهُ وانظَّا هِرُعَلَىٰ ارباب ومجذوبان سنوک ناكر ده از ارباب قلوب اندرسيدن بمقلب قلوب وابسته لبلوک ست

ترحمبہ اس کے بعد عرض ہے کہ دست ِ چیپ سے مُواد وہ مقام قلب ہے جو کہ مقلب ہت بھا ہوں اس کے بعد عرض ہے کہ دست بہتے ماصل ہے۔ فوق سے فرا ول کے بعد عرم مقام قلب ہیں نہیں آجاتے ہیں وہ ایک دُوسرامقام ہے جرکہ کئی راست کے درمیان برزخ ہے جمیسا کہ اس فن ومقام کے جانے والوں پر ظاہر ہے اور جن مجذوبوں نے سلوک ماصل نہیں کیا وہ مقام قلب والوں ہیں سے ہیں روہ ابھی مقلب قلوب کے بہنے ہیں کیونکہ مقلب قلوب کے بہنے ہیں کے کرنے پر موقون ہے۔

# شرح

صطورِ بالامیں حضرت امام رَبانی فُدِّس سَرَوْنے اپنے پیریزِرگوارعلیّہ الرِّمِنزگی خدمت میں عضن اسرارِّصوّف پڑھنو سی تبصرہ پیش کیا ہے۔ آپ فرماتے ہیں کہ صوفیار کی صٖطلاح میں مقام قلب کو دست پڑپ ( بابش ہاتھ سے نام سے تعبیر

**€ ایت است** کیاگیاہے۔ واضح ہو کہ لفظ مقام قلب کے دومفہوم ہیں۔ مقام قلب کا پہلامفہوم یہ ہے کہ الک مبتدی کو اعبی تقاقب بہلام فہوم بہلام فہوم جت تعالیٰ کی طرف مُوج حاصل نہ ہوا ہو، اس مقامِ قلب کو دست بئيب كهاجا ما تهيد · مقام قلب كا دور امفهوم بيه الكرسالك منهى فوق ميزو ر او است ورميان برزخ , وإسطه سيد إس مقام قلب سي مُراد وه مقام كلب نهايم بس كو وست بي سي تعبير كيا جا آهد. و جاب بهروه چیز جوبندے کوئ تعالی سے بے خبریا دُور عنحاب خجب مريبير بيران المناه المنسياراور خيالات ماسوی حجابات ہیں رسب سے بڑا مجاب حجاب خودی (بند کے اپنی ذات، مانظشیرازی رحمهٔ الته علیهٔ فرمکستے ہیں : حباب جب، و مان می شود غسب رشنت توخود مجاب خوری مافظ از میاں نجرسینه اصحاب تحبب بين بي : ا محاب شمال دصاحبان دست بجب، إصحاب ميمنه دصاحبان وسست راست، سابقان (ومسلانِ ذات بلا كيف، حجابات مجي تين بين : حجابات طِلْب بن حجابات بفرراني



علوم ظاہریہ رسید، عبا دات عادیہ اور انوار ملکونتیہ حجابات لور افی عبات نظری کہا حجابات بلکوتی ہی کہا جات سالک کو حجابات بلکاتی ہی کہا جات سالک کو حجابات بلکاتی ہی کہا ہے ۔ سالک کو حجابات بلکاتی ہو گئے ۔ ہی حجابات کو انتخابات کا اٹھا نا مجابات بلکا تی سے زیا وہ شکل ہو تا ہے ۔ سالک کے بیات بلکا تی سے زیا وہ شکل ہو تا ہے کیونکہ حجابات بورانی، مزے اور لذت میں حجابات بلکا تی سے بڑھے ہوئے ہیں ۔ کیونکہ حجابات بورانی، مزے اور لذت میں حجابات بلکا تی سے بڑھے ہوئے ہیں ۔ صحاب میں نہ صاحبان مجابات بورانی کو کہا جاتا ہے ۔

کیف و کم اور امکان و صدوث کے تمام مناظ و مظاہر جاباتِ
جا بات می کیمی ہیں۔ تکالی الله عن ذالات علق السخینیا
مالک کو آخریں مشاہدہ فات کے لیے تمام جابات کیفی کا پردہ جاک کرنا پڑتا ہے
اور یہ کام سب سے زیادہ شکل ہوتا ہے اور اس کے بغیر ذات ہے کیمٹ اکس رمائی نامکون ہے سابقان سے فراد و ہی صرات ہیں جو جابات ظکمانی ، اور انی اور کیمن سے گذر کر ذات بلاکیمٹ تک وصول بلاکیمٹ کے انعام سے سرفرازہیں۔
حضرت عارف رُومی رحمت الله علیہ فرماتے ہیں ؟

ے آصب اِ بے نمینٹ سبے قیاسس ہست رہ الناسس را اِ جانِ کاسس معرفیں رواں یہ سادا

می و تلب کی مبع فلرب اول، کے سنازلِ قلب بیرے فلوپ ایک منزل کا اُم قلب بھی ہے جنموفیائے کرام کے المنت المنت

مدیث قدی ہے قلب المؤیر نے تین الله کے بینی موس کا قلب الله کا عرض ہے فلب الم فی مین کا فلب الله کا عرض ہے نیز ما وسیعنی آرضی کا فیست ای الله الله الله کا عرف وسیعنی آرضی کا فیست کا فیل عقب بین حق تعالی بالذات عمور فرما تا ہے قلب الله تعالی کا ایک لور الله کا مرکز ہے قلب تقابی وجود کا آئید ہے تھب الله تعالی کا ایک لور ہے جس کی چیک تمام موجودات کا فلاصد ہے قلب ایک نقطة افر ہے جس بہا مار وصفات کا وورگروش کر تا رہتا ہے عمورات رحمانی بنسبت عرش کے اساد وصفات کا وورگروش کر تا رہتا ہے عمورات رحمانی بنسبت عرش کے دل برزیا وہ ہوتے ہیں کمیونکہ دل غیب وشہادت کے درمیان برزخ ہے۔ ول کی اورعش سے افضال ہے۔

ول بدست آور که هیج آنسب است از بزاران کعب یک ولهبهت است کعببنسیا و فلین اظهست است ول گذرگاه مبسیل اکسب است دان گذرگاه مبسیل اکسب است دعارت روی رحمة الشطلیسه

مختران محمی کی روسے اِتقوی قلب ہے اور محل وحی می قلب ہے ۔ قلب سلیم میں ہونا ہے اور تعلق میں اللہ میں ہے اور تنظیم میں اللہ علی مقلب میں ہے اور تنظیم میں اللہ عالم و فاہم میں ہے اور تنظیم میں اللہ عالم و فاہم میں ہے اور تنظیم میں اللہ علی میں ہے اور تنظیم میں اللہ علی اللہ علی میں اللہ علی اللہ علی

ہادرسامع وباصریمی، قلب کی صحت وقرت کے بینے غذائے صاکح اللہ تعالیٰ کا فرکرہ ۔ الآیذ کے اللہ تعلمت بڑ الفت اور اس کا مام قلب ہونے کی وجہ یہ ہے کہ وہ اپنے محل صلی کی طرف تقلب ہوتا رہتا ہے یا اس کے احوال تغیر پذیر ہوتے رہتے ہیں۔ صلاح باطن کا وار ومارقلب پر ہے صوفیاری تمام مازل کی برجو تھے۔ اس سے

مكن عزيزمتوقيف ازفرق فرود آمده ست درمقام مذبه أَارُوسِ بعالم بيست توجه بفوق دارد نُون عُروج فوقائی بقنه لود بالطبع مناسبت بجذبه داشت دروقت بُرُول از فوق همراه خود چیزے کمتر آور ده است ماین سبتے که از توجه قامیر بود و عُروج اَثْرِ آن توجه بود مهنوز باقی ست درسب بنه ِجذبه کالرُون فی الجسَدُست کوکا نئورِ فی الظَلْمَةِ ۔

ترجہ ،عربیمِتوقف، کا ہوا عربی فیق سے نزول کے تفام جنب مقام ظب میں آگیا ہے لیکن اس کی توجہ عالم کی طرف نہیں ہے۔ بلکہ فوق کی طرف متوجہ ہے۔
چونکہ اس کا فوق کی طرف نُم وج کرناکسی کے زبردستی کھینچنے سے تھا بعنی خلاف ب طبیعت تھا اس بین فطری طور پر جذبہ بکے ساتھ مناسبت رکھتا تھا فوق سے نُرول کے وقت اپنے ہمراہ کوئی کم ورجہ چیز لایا ہے وہ صوطری سی نسبت جزبردستی کے توجہ سے تھی اور عُروج ہی لایا ہے وہ صوطری سی نسبت جزبردستی لے جانے والے کی توجہ سے تھی اور عُروج ہیں اور نُور اندھیر سے ہیں۔

الے جانے والے کی توجہ سے تھی اور عُروج بین میں اور اور اندھیر سے ہیں۔
کس اس طرح باقی ہے جس طرح کہ دوج بدن میں اور اور اندھیر سے ہیں۔

#### شرح

حضرت امام آبائی قدّس نگرہ خصرت خواجہ دہمی رحمتُ اللہ علیہ کی جانب تحریمہ فوات ہیں کو عزیر میں تعلیم کا است ہیں کا کر کے خواجہ دہمی رحمت فوات ہیں کو عزیر میں تعلیم کا است ہیں کا موجہ ہیں دہما ہوگیا ہے جس کو مقام قلب سے تعبیر کیا جا آگیا ہے کہا جا است تعبیر کیا جا آگیا ہے کہا وجود اس کی توجہ عالم کی طرف نہیں ملکہ فوق کی طرف ہی تعرقب رہنا فقیر احضرت محبّد د، کی توجہ کی نبا پر ہے اور ہے معاطمہ اس کی طبیعت کے برعکس تھا کیونکہ وہ عزیز مِتوقف فطری طور پر نُزولی جَدَّ معاطمہ اس کی طبیعت کے برعکس تھا کیونکہ وہ عزیز مِتوقف فطری طور پر نُزولی جَدَّ کے ساتھ مناسبت رکھتا تھا ۔

عربیمتوقیف کی عُروج فرقائی کی جانب توجر مصنرت خواب محدث کر مجانب توجر مصنرت خواب محدث کر محدث

المنت الله المناه المن

ببغبان والاستدكين فواجحان تقشبند يبلبهم الزئمة والضِّوان كاجذبه س جذبه مسداير

ے مارہ اللہ اللہ اللہ علیہ فرملتے ہیں کرعزیز مِتوقیت برفقیر کی اس توجہ کا اثریکتوب تھنے کے نسبت مِند بہیں اس طرح باقی ہے جیسے ہم میں رُوح ہے۔ اثریکتوب تھنے کے نسبت مِند بہیں اس طرح باقی ہے جیسے ہم میں رُوح ہے۔

يرك و به المال ال

د وسراقول خود صنرت مام ربانی فریس سرهٔ کی ذات مِقدّسه مُرادہے۔

تتيسراقول عزيز متعقف مصفراد حضرت خاجه باتى بإلله دملوى رحمة الله عليه ہیں · تیسرا قول ہی راجے معلوم ہو ماہے اور اس پر مندرجہ ذیل شوا ہدو دلائل مپیش كيے جا سكتے ہیں ' فلاحظہ فرمائیل .

اُمریر دلیل یہ ہے کہ صنرت امام رہانی اس محتب کے اخریں سکھتے ہیں کہ "امسید است كه وروقت مطالعة إير كلمات نام تُعطه وخولِ نام در آنمقام ميترشود " بعني ا میدہے کرمیرے ان بے ربط کلمات دیشریفین کے مطالعہے و کلت آسیدکو اس مقام میں بورسے طور بر داخل ہونا میسر ہوجاً نے گا۔ اس سے صاف طور برجام



ہور ہا ہے کہ آپ کے محتوب کا مطالعہ تو صغرت خواجہ دہلوی رحمۃ اللّٰهِ علیہ فرماتے تھے اور بیکتوب بھی انہی کی طرف ہے اگر عزیز متوقف کوئی دوسر اِنحض تھا تو حضرت خواجہ کامطالعہ اس کو کیا فائدہ پہنچاسکتا تھا ۔

© سولهوین محتوب سے بربات واضح ہورہی ہے کہ صفرت خواجہ رحمتُ اللّٰہ

علیهٔ حضرت امام رحمتُه اللهٔ علیه سے ہِستنفا دہ کیا کہتے تھے۔ © ستر ہویں کمحتوب میں محسرت خواجہ رحمتُه الله علیہ کے عزیز مِتوقف ہونے

کی طرف اشارہ معلوم ہوتا ہے۔

صفرت نناه فصنل الله مجدوى رحمة الله عليه فرطت بين كه: "از كمتوب إئے مصنرت خواج كه مجضرت امام نوست تداند هيفا وه مصفر خواجه از مصفرت امام معلوم ميشود ليم،

بینی حضرت خواجہ رحمۃ الله علیہ نے جو بحتوبات خطوط مبارکہ ہصرت اما محمۃ اللّٰہ علیہ کو ککتھے ہیں ان سے علوم ہو تا ہے کہ حضرت خواجہ ان سے ہِست فا وہ کیا

كرتے تھے۔

صاحب روضة القية مديخ ريز فرات إلى كرصفرت مجدد العن تانى فيس سرّ في المنظمين المنظم ا

اله عمدة المقات إله روضة القيوسي مترجم صكا

البيت الله المرابع ال

شیخ تاج رحمتُ الله علیه آپ کے پیریجانی فرمات ہیں کو حضرت خواجہ صب رحمتُ الله علیہ اللہ عزیز متوقف "
 رحمتُ الله علیہ نے آپ کے موسوم معض مکا بتب میں جوالفاظ "عزیز متوقف"
 تحریر کرکے اس کا چارہ کار دریا فت کیا عزیز متوقف سے مُرا دخو د ذات بابر کات مصرت پیرو مُرث دستے ہے۔

اس امرکی تائید حضرت خواجه دہلوی رحمتہ اللہ علیہ کے اس شہورارشا دسیے بی ہوتی ہے۔ اس شہورارشا دسیے بی ہوتی ہے۔ ہوتی ہے جو حضرت امام ربانی کی تعربیت میں فرمایا تصاکد:

میاک شیخ احمد آفتا بی است کرمش ما بزاران شارگان دمنمن اشیان می سینیم

سیشار مدایک ایسا آفتاب ہے کہ ہارے جیسے بزاروں سارے اس کے نور میں کم ہیں او

متن ودروا قد بعضي طالبان كه نموده بودند كه خواجرا چنانچه بوده اندان عزيز متوقيف خورده است ظهور اَرَّرُ آن درين مقام ست .

ا ترجمہ ؛ اور عض طالبان طریقت نے جرکسی واقعہ میں یہ دیکھاتھا کہ حضرت خواجہ داحرار قدیس میں میں میں عزیز مِتوقّف خواجہ داحرار قدیس مِترق کی مولی دو لی کے مانند، ہیں عزیز مِتوقّف نے کھالیا ہے۔ سے واقعہ کے اثر کاظہور اسی مقام میں ہے۔

#### شرح

حضرت امام رّبا فی رحمته الله علیه فرمات بین که موجوده حالات بین جبکه آب اصفرت خواجه با قی با دلله و طوری رحمته الله علیه الله حضرت خواجه احرار فدس سرهٔ کاجذبه حاصل کر ایا به بهار سلیجن یاران طریقت نے واقعه رکشف رُوحانی بین و کھا ہے کہ حضرت خواجه احرار فدس سرهٔ ایک بکی بهوئی رونی کی مانند بین اور حضرت خواجه باقی با نله دولوی علیه الرحمة نیا به بین کھا لیا ہے ۔ اس واقع سے میطلب اخذ به قالب که حضرت خواجه المرار رحمته الله علیه کی نسبت خاصه باتی با نله دولوی رحمته الله علیه نیاست خاصه باتی با نله دولوی رحمته الله علیه نافد سرمولیا ہے اور ان کے کھالات کولور سے طور برحاصل کرلیا جذبه احرار یکو بینے اندر سمولیا ہے اور ان کے کھالات کولور سے طور برحاصل کرلیا ہے ۔

ملت این جذبه مناسّبت مبقام افاوه ندارد جمیشه درین قام ژوبفوق ست وسکر دانمی لازم آنست ب

ترجمہ ؛ بیجند برفائدہ پہنچانے کے مقام کے ساتھ مناسّبت نہیں رکھتا اس تقام میں توجہ ہیٹ فرق کی طرف ہے اور وائمی کسکر اس کے لیے لازمی ہے۔

## شرح

حضرت امام ربانی رحمتُ التُدعلیه فرمات بین کدجذبهٔ احراریه فائده پهنجان کے مقام کے ساتھ سناسبت بہیں رکھتا کیونکہ اس ہیں توجه عالم کی بجائے فوق کی طرف رہتی ہے اور دائمی کو کی کیفنیت طاری رہتی ہے کیونکہ اس مقام کا جذبہ دُوسرے مقام کے جذب سے مختلف ہے۔ جو البنت الله ووسم كاب . مهاق مهاق مهاف منافي سكوك ب . مهاق مهم منافي سكوك ب . ووسم مي مع موافق سكوك ب . ووسم مي مع موافق سكوك ب . مناب محالب اس كي ترجز أز ول كي بجائع وج كي طون ما كل ہوتی ہے لہن الم مناب سنتی ہی وجہ کے کہ یہ مبذبہ وُوسروں كو فائدہ بہنج نے كے موافق مقام كے ما قدم اس بين رحق الم رفاق مناب تي مبن رفت الم رفاق مناب تي مبن رفت الم رفاق مناب تي مناب مناب كي مناسبت كاما مل ہے ﴿ وَاللّٰهُ عَلَمُ مِنَ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ وَلَا مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ اللّٰهُ





مَوْضُوعَكَ مَا لَاتِ لِلنِّت كَنْيَن مَعْهُوم ، مُراد الْورمُريدِ كَمْ اللَّتِ لَائْت كَنْين مَعْهُوم ، مُراد الورمُريدِ وَطُلْبِ الرَّادِ ، قطب بِ افراد تُطلبِ الرَّادِ ، قطب بِ افراد



# مكتوب - ١٦

ماتن عرضداشت اَحقر اُلطَلَبه اَلكه نوازش نامه مولیب ا علا والدین رسانید در کشف بهریک از مقدمهٔ مذکور مبقتضا وقت مسوَّده کرده مث د

ترحمہ : سب سے حقیرطالب کی عرض ہے کہ مولانا علاؤ الدین رحمہُ اللہ نے حضور کا نوازش مامہ آنکتوب شرایت، ببنجایا - اس میں ذکر کیے ہوئے ہراکی مقدّمہ کے شف م مل میں وقت کی گنجائش کے مطابق توجہ کی گئی ہے ۔

# شرح

میکتوب صنرت خواجہ دہلوی رحمۃ النہ علیہ کے ایک محتوب کے جواب ہیں گھا گیاجس میں انہوں نے طریقت کے عض مقامات واحوال کی وضاحت کے لیے کم ذمایا تھا۔ میکتوب آب نے برست حصات مولانا علاؤ الدین رحمۃ النہ علیہ ارسال فرمایا تھا۔ حصنرت امام رّبانی رحمۃ النہ علیہ رخمط از ہیں کے حضور والا کے ارشاد کی میں کرتے ہوئے تمام مقدمات مذکورہ میں توجہ کی کئی ہے کجمدہ تعالیٰ ان کا شافی عل ظاہر ہوگیا ہے جو تحریری صورت ہی عنقریب آپ کی خدست میں حاصنہ رکر دیا جائے گا۔

منن الحال سِالة دلگر كه به بیاض رسیده لبود فرستاد

# البنت المسلم الموسية الموسية

ترجمه اسروست اس وقت ایک اور رساله ایک توب برکنقل کیا ہواتھا ارسال کرر ا ہوں اور یہ رسالہ ایک توب بعض احباب کی اِلمّاس برکھا گیا تھا۔

#### شرح

بعض احباب طریقت نے حضرت امام رّبا نی رحمت اللہ ملیہ سے گزارش کی تھی کہ آپ ایک السان الدیمائی است کے اور الدیما کہ آپ ایک الیمار سالہ اصفرون تحریر فرمائیں جو اہل سنت کے عقیدوں اور طریقیت میں نفع دینے والی فیصحتوں شیخ سرکوسکیں جیائجہ آپ نے دہ رسالہ تحریر فرما دیا جس کا نام کمشہ پر البرکات رکھا گیا ۔

رساله كثيرالبركات كوسرورعاكم علطيلي فياليري

"ین نوع معتقدات می با پیر حاصل کروٹ یعنی ہو تم کے عقائد حال کرنے چاہیں۔

م بلینه مراح حضرات نے فرمایا ہے کہ شاید اس سے مُرادِ محتوب منبر ۲۹۹

> ے جگے بروند زین ولمبینزة بہت بدان درگاہ والا دُست بروست

ترجمہ ہم دن سے پیغادم آپ کی خدمت سے واپس آیا ہے فوق رعُروجی کیطرت را غِب ہونے کی بنار پر تقام ارشاد رمخلوق کو خالق کی طرف ہوایت کرنا، کے ساتھ کوئی خاص مناسبت نہیں رکھتا کچھ عرصہ تک یہ ارا وہ رہا کہ گوششینی ہفتیار کرلوں کیونکہ طلقات کرنے والے لوگ بترشیر کی طرح نظر آتے تصفیات کا ارا وہ بختہ ہو بچکا تھا لیکن ہے خارہ اس کی موافقت نہیں کرتا تھا قُرب الہی کے مدارج ہے انتہا ہیں اس کے با وجودان درجات ہیں انتہائی درجہ تک عُروج حاصل ہوا اور ہوتا رہتا ہے اور اُوپہ ہے جاتے ہیں اور نیچے لاتے رہتے ہیں۔ ہرروز وہ ایک نئی شان اور نئی حالت سائغ مست کے مقامات پر انٹر تمام مشائغ اُست کے مقامات پر اس فادم کوعم سروج ماصل ہو اہے۔

"نیچی چوکھ ملے کی ملی التقوں التقریری درگاہ کا مکتب نے گئی ہے "

#### شرح

حضرت خواجه دملوی رحمته الله علیه نے مصرت امام ریّا نی رحمته الله علیه کوخلافت اور سندارشا دکی اجازت سے نواز اتھا اور حکم فرمایا کی ملی فند اکی رشد و ہدایت میں مصروف ہوجا ؤ۔

بوكر وصرت امام رباني رحمة التدعليه كي طبيعت مباركه رياس وقت عروج كا رنجان غالب تھا اس لیے علوق سے ساتھ التفات اور سیاح بل سے گریز فرماتے تھے ہی بنار پر آپ فرملتے ہیں کہ ملنے جلنے والے لوگ مجھے ببرشیر کی طرح نظر کتے ہیں اور ان سے وُور بھا گئے میں ہی عافیت نظراً تی ہے کیو بحد سالک قرمب کی منزلوں میں عروج سے وقت ماسوی اللہ کی طرف التفات بہیں کرما حصرت المرزّبان قدس تره فرمات بيركه ايك بارتوكوشنشين كأيخة عزم كراياتها مكراتخاره میں اس امرکی اجازت ندمی جنانج اب حالت یہ ہے کھمی عروج ہوتا ہے اور مجمی نزول اورشايد هي سابقه مشائخ امت بيسي كوئي روكيا موس كي رُوحانيت إس خادم كے شاہل حال ندہموتی ہو غرضيكه تمام مقامات ہل سے تقامات بلل كى مانندگزر كرا يالمحيا بيني اس قدرالله تعالى كى عنايات شامل مال مو ئى اير كه صفات كى نظلال صفات كى طرح كوا نى كنى بداوراب معاملة قرُب وعُرُوج كى انتهار كو بننج چكله عالانكه اس کے قرب کے مدارج کی کوئی انتہار نہیں اور پیسب مجھے طل سبب محصن اللہ تعالیٰ کے ففنل وكرم سے ہواہے اور محزشة مشائح أمنت كى يه توجات بعج محض الله تعالى كى

عنایات کاست سبر ہیں ۔

مر المبند مرا المستوات تھے ملین محدیث المستوات تھے مرا المستوات تھے مرا میں میں المستوات تھے مرا میں کا می

منت چندان وجوه ولايت و كمالات آن را و انمو وند كه چه در تخسه ربر آرد .

ترم به : ولایت کے مقائق واساب اور کمالات اس قدر ظا ہر کیے گئے کہ خا دم کیا تحسد ریکھے ۔

#### شرح

حصرت المامِربَانی قدّس سرّۂ اپنے بیر و مُرشد حضرت خواحدِ باقی بالله د ہوی رحمتہ اللہ علیہ کی خدمت ہیں عرض گزار ہیں کہ اس خاوم پر اللہ تعالیٰ کی عنایات عالم بیان سے باہر ہیں۔ ولایت کے اعلیٰ مراتب و حقائق اور کھالات اس قدروطا ہوئے ہیں کہ تحریر میں لاناشکل ہے۔

کمالات ولایت کیبن اوم مشتر منای قرار مین فا اسیم ایسی میر مشتر میلات کیبن اور میبن فا اسیم و است میلام فاری می دلایت میلام فاری دلایت به اولیت میلام فاری دلایت به اولیت میلام و الایت بیرا کار میلام و الایت بیرا کری در انبیائے عظام کی دلایت به میلام و الایت به

اسى طرح مقامات قِطبتيت ، فردتيت ، قيوستيت ، مرادنيت ، شهادت صديقتيت جي آب كوعنايت فرمائ كئة .

و من و و این انبیائے اولوالعزم سے بھی نواز اگیا جیساکا آپ دوسمرا مہوم موسی وعیسیٰ علیم اُسُال مے حقائق اور نشانات علیحدہ علیحدہ عطافز ملئے گئے اور یہ بھی نشاندہی کی مختی کو آپ کی کون سی ولایت کس لطیفے اور کس ہم اور مفت سیعتی رضی ہے اور ان کے مبادئ عینات کیا ہیں اور ولایات ِ آبسیا رکے کا لا

م م و م اپ کو مختلف کا لات کے درمیان امتیازات کاعلم بھی دیاگیا۔ میسسرا مہوم م مثلاً کا لات نبوت ، کا لات رسالت اور کا لات اولوالعزم کا فرق تبایا گیا اور انبیائے کوام کے مشارب کے اسرار بھی آپ پر واضح کیے گئے اسی طرح ماہیات بھائی ، تجلیات اسمار وصفات وشینات اور مراقبات کے جملے عُلوم ومعارف بھی آپ کو ود میت کیے گئے۔ والحکہ مشعلیٰ ذالک

منتن در شهر ذی انجه در مدار جزول تامقاه قلب فرود آور دند واین قام به قام بل وارثنا دست آما به نوزچنز با ارتخم م ویمبنل از برائے این مقام در کارست تاکے میئیرشود اُمر آسان نبیت باوجود مُراد تیت چندان قطعِ منازِل کرده میثود که مُریدان را در عمر نوح بهم علوم نبیت که میئیرشود بلکاین وُجُوهِ مِحضوص مُراد است مُریدان اینجا قدم گاه ندارند. البيت المحالي المحالي

ترجمہ: ماہ فی الحجمین زول کے درجات میں تقام قلب کم بنج نے آئے اور
یکمیل دارشاد کا مقام ہے لیکن المجی ہی تمام کوتمام و کمال کم بہنج نے دالی چیزول
کی ضرورت ہے دیکھیں کب مک مینہ ہوتی ہیں ۔ یہ کام اسان نہیں ہے۔ مُراد ہجوب،
ہونے کے باوجود اس قدر منزلیں طے کرنی پڑتی ہیں کہ مُریدوں کو حضرت نوح
ملیہ اسلام بینی عمر مجمی ہے تو بقین نہیں کہ ان نزلوں کا طے کرنا انہیں میتہ ہوسکے
ملیہ اسلام بینی عمر مجمی ہے تو بقین نہیں کہ ان نزلوں کا طے کرنا انہیں میتہ ہوسکے
ملیہ اسلام بینی عمر مجمولوں ہی کے ساتھ ضوص ہیں مُردوں کے لیے بہاں
قدم رکھنے کی بھی جگہیں ۔

## شرح

حضرت امام رّبانی قدّس سرّفی العزیز ارشاً د فرمات این که ماه ذی ایج میر ماهٔ بلوک مطے کرتے ہوئے نز ولی مرّبوں میں میرواقع ہوئی اور مجھے مقام قلب یک یہ میچے لایا محیا۔ یہ قرب تممیل وارشا د کا مقام ہے۔

گیا . به مترب تنجمیل دارشا د کامقام ہے۔ دور برجی ہوں اس مقام ہیں محکوق کو املاتِعالیٰ کی طرف دعوںت اور ہدایت و

بلانا ہوں میں اور میرے ابعدار بصیرت پر ہیں،

اس مقام کے اولیار کوام کو راجعین الی الدکتھوۃ کہا جاتا ہے مخلوق کو فراجعین الی الدکتھوۃ کہا جاتا ہے مخلوق کو فرائی طون بلانے کے موان کو واپس لوٹا ویا جاتا ہے۔

يه مرتبه مَيرُن الله بالله اورسَيرُن الله في الأشياء سع عبارت ب يصنوت المم منانى قدس منه فرات به يحضون الله في الأشياء سع مع يد لمبند مرتبه بنقام وعوست، نصيب بوگيا به يكوان كه بنجات كوريكال كه يبنجان والى چيزون كى اتفار ب امسيب بوگيا به منه كه وه بحى آب (حضرت خواجه باقى بالله كى توجهات سے جلد ميسر بهوں كى وجها الله والسَّو فيدية ق

سر اولیارکے حق میں کھالات نبوت ورسالت سے نصب نبوت و ملی مسیر اس رسالت ہرگز مرا دنہیں ملک تبعیت ووراثت کے طور رپان کے کھالات اورفیضان کا پُر تو مُراد ہے۔ إمکانِ وقوعی اور امکانِ عقلی کافنسسرق اضح رہنا چا ہیئے۔

و برو کا برتا ہے ایک دعوت وارشا دکا پرتھام حاصل ہوجا نا آسان مراد و مربد کام نہیں ببااوقات مُراد ہونے کے با دعود اس قدرشکل اوُر سخت منزلوں سے دوجار ہونا لِج ماہے کہ مُریدلوگ عُرُوح علیہ السَّلام ہزارسال ہی محنتوں کے بعد بھی یہ مقام حاصل نہیں کرسکتے ۔

کیونکه بیکالات مُراد اورمحبُوب اولیار کے ساتھ مخصوص ہیں بلکہ فرید توہ وا دی ہیں قدم تھی نہیں رکھ سکتے۔ اس مقام بربہنا سب معلوم ہو تاہے کہ مُراد اوُر مُرید کا فرق و اَصْلح کیا جائے۔

و و ما تعین جوابین ارا ده کواندک ارا دسے میں محووف کرکے افنی مربکت برخان کے اور میں محووف کرکے افنی مربکت اور م مربکت برضا ہوجائیں مربکت کا اللہ تھے ہیں۔ اہل تصنوف کا قول ہے اَلْمُدِنِیْ کُ مَنْ لَا یُرِیْدِ اِلْاَ اللّٰهُ مُربیہ وہ شخص ہے جواند کے سوا کوئی ارا وہ شرکھتا ہو چۇنكەئرىداپنىڭىخ كےساتقە يېنىبت ركھتاہے اس كىيے اس كومُرىد كہاجاتاہے نيزىيھى كہاگياہے كەحږلوگ لوك ورياضت اور توبدوا نابت كے راستے خدا تك پېنېس مُريداورمځت كهلات اين .

محبوبتيت اورمحبتيت إجتبارا ورإنابت حبيرى مطلحات بصنوف درصل قرآن

كريم سية ابت ومانوز بين.

معلوم ہواکہ اللہ تعالی نے عمل اپنے فضل وکرم سے حضرت المارتانی بتی بنہ مسر کا قدیر سے حضرت المارتانی بتی بنہ مسر کا قدیر سے ہ کو جو حقائق و کھالات ولایت اور مراتب ارتباد و دعوت سے لااز کر فرادیت و محبوبتیت کامقام عطافہ ما دیا تقا اس تقام کا حصنول اپنی قالمیت اور محنت پر موقوت نہیں اس کے ضابط من پر موقوت ہے اور یہ جو آب نے فر ما یا کہ اجمی اس تھام کو تمام و کھال تک پہنچانے والی چیزیں در کار ہیں اس کامطلب بھی کہ اجمی اس کے علم ہیں ہے اور وہ طلوب چیزیں جمی اس کے علم ہیں ہے اور وہ طلوب چیزیں بھی اس کے فائل سے ہی میتر ہوں گی نہ کہ اپنی کو ششش سے۔

لله ممكن بال بيزول سي كالات نبوت ورسالت و كالات بالم ممكن ب النبود و الله ممكن بالم مراد الله الله ما مراد الله مرد الله مرد الله مرد الله م

متن نهايت ِعُروجِ إنسسرادَ ، بدايت ِمقام صل سن بنيترانسرادهم گذرندارند البيت الله المنت الله المناسبة المنت المنت

رب جاسہ افراد کے عُروج کی اِنتہا مقام صل کی ابتدا تک ہے اس سے اگے اکترافراد کا بھی گذنہیں ہے ۔ کامجی گذنہیں ہے ۔

#### شركح

حضرت امام ربانی قدّس سرو که اس فرمان کامطلب بیہ ہے کہ قطب افراد کا حصرت امام ربانی قدّس سرو کے اس فرمان کامطلب بیہ ہے کہ قطب افراد کا بیت قطب المراد کا بیت میں نیادہ ہے۔ اس سے آگے دمقام مسل میں تفضیلی سیر اکثر افراد کا بھی گذر نہیں ہے۔

احراده بی درج بی به بین فرق بی واضح هو کرقطب ارشاه اورقطب افراد کے فرائنس و درجات میں فرق ہے واضح هو کرقطب ارشاه اور نیابت مطب ارشاه و محدیم بیائی صاحبه الصلات سے سرفراز ہوتا ہے ۔ نیلوق کیلیے ہوتم کی حنات و برکات کا فرریعہ اورگنا ہوں سے مخفرت کا وسیلہ ہوتا ہے ۔ دینی اور تشریعی امور اس کے تصرف میں ہوتے ہیں جضرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں بی مضرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں بی مضرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں مخدرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں مخدرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں مخدرت امام ربانی قدس سنرہ فوط تے ہیں والے میں است کہ بارشا دو ہدا ہے المحلق والے میں است کہ بارشا دو مدا سے عالم تعلق والے میں است کہ بارشا دو مدا ہے المحلق والے میں است کہ بارشا دو مدا ہے المحلق والے میں اس کی دو مدا ہے المحلق والے میں است کہ بارشا دو مدا ہے المحلق والمحلق والے میں است کہ بارشا دو مدا ہے المحلق والے میں المحلق والے

یعنی قطبِ ارشاد ہدایت وارشاد ( دعوت ، منتعلق مور میں وسوافھنی کا و سطہ ہو تا ہے۔

قطب إفراد جوسمابعت بوئ على صاحبها الصّلوٰت كے باعث فردیّت قطب فراد دات كى تحلّى سے ممتاز ہواور اپنے نتہائى كمال كى وجہ سے دائر ان قطب الاقطاب سے خارج ہو يہ روسے زمين پر اوليا ، كرام ميں صرف تين ہوتے ہیں فرد اور قطب وحدت ایک ہی مقام کے دونام ہیں فرد اور قطب وقد کام تیں افرد اور قطب وقد کام تیں اور اور قطب وقد کام تیم ہی ماہتے جرب والکر میں ملائے استانی است ہو استام اللہ میں ارشاد فرمائی وہ یہ ہے ،

اللهُمَ إِنْ تُنْهَلَكُ هُذُهِ الْعَصَابَةَ مِنْ آهَ لِ أَلْاسُلَامِ فَلَا تُعْبَدُ فِي أَلَارُضِ آبَدًا لَهِ

"بعنی اسے اللہ اگر اس جاعت کو ہلاک کردیا گیا تو آپ کی عبادت زمین میں کم مجھی ند کی جائے گئی "

گویا وُعا وَں کی قبولیت اور ضینانِ معرفت قطبِ افراد اور قطب ومدت کی خصوصیات میں سے ہے۔ وُاللّٰهُ اُعلمٰ ۔

منت وعَدَم نُورانيت بواسطة ظهورُ نُورُ طُلمت غيبت چيب زِدگيرنميت .

ترجمہ ؛ اور نوانیت کا نہ ہونا طلمت عنیب کا نورظا ہر ہونے کی وجہ سے ہطیں کے علاوہ اور کوئی چیز نہیں ہے .

## شرح

حضرت امامر آبانی فقیس بیر فرنے کئی خاص دُوحاتی مقام کے بارے ہیں قبل انہا کے فقیس بیر فرانیت معدُوم ہے۔ قبل انہاں عَدَم نُولِ نَیْت کاسبب بیان فرمارہے ہیں کامقام مذکور میں نورانیت اب بہاں عَدَم نُولِ نَیْت کاسبب بیان فرمارہے ہیں کامقام مذکور میں نورانیت نہونے کاسبب غیب کے نور کا ظہور ہے ، چونکہ ظلمت مناسب غیب

ہے اورغیب بندات خروایک ایسا باطنی نورہے میں کی فرانیت شہود نہیں ہوتی گھیا عالم غیب مدم نوانیت کے لباس میں ایسٹ بیدہ سے لہٰذا عَدم نوانیت کاسبب اس کے سوااور کوئی نہیں ہے۔ (واللہ اُعلم مِحَقِيقَد اِنْحَال،

منن مردم در تختلات خود چیز امی بزند اعتبار نباید کرد .... آن جماعه را فرمایند که از احوال این جست بال نظر خیالی خود برد شد مُجالی نظر را مُحالِ وگیر بسیار ست سه ه من گوست ده ام مر المجوسیت باخم ست دگان سخن گرسید

ترجمه ، لوگ مپینے خیال میں بہت سی اتمیں بناتے ہیں ان کا اعتباز نہیں کرنا چاہیتے . . . . . . ، س گروہ کو فرما ویجئے کہ ہن خستہ حال سے احوال سے اپنی خیالی نظر کو بندکرلیں نظر کرے ال مجموم سے مدان سومت سے سیمقامان نہیں .

نظری جولان کاہ کے یہ اور بہت سے تقامات ہیں۔
۔ میں گم ہوں مجھے مُست و مُعون و و مُعون و و مُعون و و مُعرف و مِن من کرو

شرح

حضرت امام رّبا فی رحمته الله علیه کے ساتھ حمد کرنے والوں کے ایک گروہ نے حضرت خواجر باتی باللہ وہوی رحمته الله علیه کی فدست میں شکایت کی تھی کہ آپ نے ان کو مخلوق کی ترمیت وہلیت کے لیے سندارشاد سپر د فرما فی ہے گرانہوں رحضرت مجد وہ نے ایجی تک تعمیل کم کا فرض او آہیں کیا ، علاوہ ازیں تجھے اور باتیں بھی آپ کی طرف منسوب کی گئی تھیں جب حضرت امام رّبا فی قدس ترو کو لعبض لوگوں کی ان

ماسدانه حرکوں کا علم ہوا تو آپ نے زیرِنظر سطور پیصورت مال کی وضاحت فرائی کے فرونی ماری وضاحت فرائی کے کرفیندارشا در تبلیخ وہابیت، انجام نہ دے سکنے کی اصل وجہ یہ ہے کہ فقیر ابھی کک عروجی منازل میں شغول ہے۔ ارشا دکے لیے نزولی مراتب میں واپس آ ناصروری ہو ہے۔ ان شاکہ الله نزول کے مرتبوں پر فائز ہوتے ہی ارشا دکا کام شروع کردیا جائیگا دیا تقونتی ۔
دُوا مِنْداتُتُونْتی ۔

نیزآب نے اس محتوب ہیں اپنے مُر شدِ بری کی خدمت ہیں یہ ورخواستیش کی ہے کہ ماسدوں کی اس مجاعت کو آب بھتین فرا ئیں کہ اس فقیر کے ساتھ خیالی با تمین خسوب ندکیا کریں ۔ اس سے ظاہری وباطنی نقصان کا خدشہ ہے ہم تو ابنی ہی رضا ہے موالی میں کم کر چکے ہیں اس ہے گھر شدہ لوگوں سے چھیلے تھا لؤمناسب ہیں مان و کے قابل شاگر داور شیخ کے کا مل خلیفہ کے ساتھ بساا وقات بلین مخریر کی ہم خبوں اور بیر بھائیوں میں صداور رقابت کے جذبات بیدا ہو جاتے ہیں جور وجانی ارتقار سے مانع ہوتے ہیں ۔ اہل سلوک ونسبت کو اسبی کدور توں سے باک رہنے کی کوششش کرنی جا ہیئے ، اگر تقصود تک پہنچنے میں اسانی میشرائے ۔

من ونزول درمقام قلب عقیت مقام فرق ست کرمقام ارشادست وفرق درین موطن عبارت از مُدا شدن نفس ست از رُوح ورُوح از نفس بعد از آن که نفس داخِل بُرد در نور رُوح و آن جمع بود از جمع و فرق بیش ازین هرب مفهوم می شود از مکرست .

ترحمه اورمقام فلب مي نزول كرنا رجياكم س كاذكر كزرجيكا، ورهنيفت مقام فرق

البيت الله المراجع الم

ہے جو کہ ارشاد کا مقام ہے اس مقام ہیں مقام فرق سے مُراد یہ ہے کہ نفس رُوح سے اور رُوح نفس سے مُبدا ہوجائے۔ اس کے بعد جب نفسٰ رُوح کے نورُ میں داخل ہوجائے تو یہ مقام حمع ہے جمع و فرق کے بار سے ہیں اس بیان سے زائد ہج کچھ سمجھاجا تا ہے وہ سکر کی وجہ سے ہے۔

#### شرح

حضرت امام رتباني فترس سرؤمقام ارشا و ك حقيقت ببان مقام ارمن و فرمات بین کرسالک کامقام قلب میں نزول ہی دخشقیت مقامِ فرق ہے۔ اور اسی کا نام مقامِ ارست دہے۔ رُوح،بدنِ انسانی میں دخل ہونے سے پہلے عرش سے اُور مقام ممع وفرق عالم امریس تقی مبدن میں داخل ہونے کے لعانفس می فہاہو كرنفس امّاره كے نام سے تعبیر ہوئی جب الله تعالی نے رُوح كو فوق عرش كى طرف عروج بخشا تونفن تھی عُرُوج کی منزل کہ پہنچ کر رُوح کے اُنوار میں ستور ہوگیاہی مقام کو مقام حمع سے تعبیر کیاجا تا ہے۔ اس کے بعدی ایقین کی منزل میں جبنین امّارہ ترقی کرکھے نفس طمّنہ ہوگیا تو رُوح کے انوارسے مجدا ہو کر دعوت وارشا وخلق کے ليه مقام قلب ميں واپس أثراً يا ليكن رُوح كالات عاليہ طے كرنے سے ليے وُج ہیں ہی رہٰی اس مقام کومقام فرق نُعبُ کہ الجمع کہا جا تا ہے ۔ یمعرفت حضرت امام ربانی قدس سرّهٔ کی إنفرادیت ہے صوفیائے وجودیک زدیک

واجب اورممكن كي إتحاد اواجب وممكن كوايك دكينا، كانام مقام حمع ہے اور

وو بوں کو ایک دُوسرے سے مُدا دیکھنا مقامِ فرق ہے۔ امامِ ربانی کے نزدیک

صوفیائے وجُوریکا یہ قرائی کرے قبیل سے ہے کیونکہ تن اور خلق کے درمیان آگادکی
ہاتیں کچھ بھی حقیقت نہیں رکھتیں۔ فرات واجب تعالیٰ آئ ہم کی قیاس آرائبوں سے
ور ارہے۔ اس مقام میں بہت سے صوفیا جقیقت جال سے بے خبر ہو کر رُوح کو
فُد اس بھتے رہے اور اس کی پیتش کرتے رہے بیمن سٹائن اس مقام میں تبیں بیس
مکر رُوح کوفُد اجان کر بُوجے رہے جب اس مقام سے اُوپر کزر ہوا تو اپنی طلی
پر نادم اور تائب ہوتے رہے نیافزش ارباب سکومیں سیعین کومیش آئی ہے
ہر نادم اور تائب ہوتے رہے نیافزش ارباب سکومیں سیعین کومیش آئی ہے
اسی بیا امام رّ بانی قدّیں سے رہ کے نزویک علوم سکومیت الامر ضفتور محبنی
عام ہے۔

بعن اوقات سیر باطنی کے دُوران جب سالک کی نظرعالم ارداح بلین ممیر کم پر پر لی ہے تو مرتبۂ وجوب سے مناسبت مُوری کی بناء بہاس کو می سیجھنے گلما ہے اور شہودِ عالم ارداح کو شہودِ عالم و مُجب تصنور کرکے لذت وردر عاصل کر ناہے اور بحدہ عبودیت بحالا ناہے بعد میں جب سالک اس مرتب سے ایکے ترقی کرجا تاہے تو حقیقت معلوم ہونے پرنادِم اور نائب ہوجا تاہے ۔





مُعَوَّباً مِنْهِ عارفِ لِللَّهِ صَرْتُولِدِ هِی اللَّهِ عارفِ لِللَّهِ صَرْتُولِدِ هِی اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ





# مڪنوب ۔ ١٤

منتن عرضداشت احقر الحدَّمة الله عزیز کمه چندگاه متوقیف بودندروز تحریر چنیان ظاهر شدکه از ان مقام نور اند و بقایا نمو ده بیایان فرود آمدند نیکن تتمام نزول کمرده اند و بقایا که درزیر آن مقام بود نیز عروج منوده از راه بهمان مق م فوق دُو بنزول آورده است.

ترحمیہ ، حقیر ترین فادم کی عرض بیہ کے جوعزیز کچھ مدت سے ترقی سے اُرکے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے تھے بیٹ کھنے کے دن الیا ظاہر ہو اکر اس مقام سے کسی قدر ترقی کر کے اخیر کسے بنچے آگئے ہیں لکین انہوں نے بوری طرح نزول انہیں کیا ہے باقی جو عزیز اس مقام کے نیچے تھے وہ بھی غُروج کرکے اس مقام فوق کی راہ سے زُول کی طرف متوج ہوگئے ہیں ۔

#### شركح

سطور بالا میں حضرت امام ربانی قدّس سرہ عزیز متوقیت (ترقی سے رُکے ہوئے عزیز، کو اس کی رُوعانی ترقی اور مقام توقف سے عُروج اور اس کے بعد نزول کی خبر و سے رہے ہیں اور ساتھ ہی میصراحت بھی فرمار ہے ہیں کہ ابھی کا مل طور ربینزو انہیں ہُوا .

مرا عزیزمتوقف کا پرلفظ دفتر اوّل کے تکتوب ۱۵ اور تکتوب ۱۵ میں مرمبر سستنعال ہواہے ۔ شارحین کے نزدیک اس میں دو احتمال ہیں اقل میکه اس سے مراد حصارت خواحه باقی بالله د بلوی رحمته الله علیه بین و دوسرایه که خود حضارت بیخ مجدّد قدّس سرهٔ مراد بین بصنرت مولانا نصرالله قند باری کا بلی رحمته الله علیه نے شرح محتوبات ، فارسی، میں بہلے احتمال کو ترجیح دی ہے انفصیل کے سیے محتوب ۱۵ کی شرح طاحظہ فرمائیں،

مان گرصاحب مُعامله نیز بعداز انکشاف مال خود چیزے نولید بصواب نزدیک ترست ،

ترجمہ: اگرصا حبِ معاطر ہی اپنے مال کے نکشف ہونے کے بعد کچھے تو زیا دہ بہست رہے ۔

شرح

اس ميع ويزمتوقف كواپنے احوال باطنية تحرير كين كى طرف توجه ولا فى كحى

سانک کے بیے ضروری ہے کہ وہ اپنے احوال و وار وات کسی صاحب مقام یا اپنے شیخ کے سامنے تحریراً یا تقریر امن وعن بیش کرے تاکہ شیخ کی توجہات ہمال بیں اس کے ساتھ شامل رہیں اور را ہسلوک کے نشیب و فرازسے گزر تا ہواسلامتی کے ساتھ منزل تقصود تک پہنچ سکے۔

 النيت المع الصّادِقِيْن المسه المعصدى المدام المقدد الما المعامل المقدد الما المعامل المقدد الما المعامل المعا

منت مچن مُدوث این قصنیهٔ نزول مُرِزو دلود دِهِ مِرابِطهٔ تناوُلِ مُلاب صُنف طاری شده لود بانجام کار این نزول نیرواخت بان شار دلته تعالیٰ ظاهرخوا پست

ترمبه ، چنکه نزول کے ست تصنیه کا واقع ہونا قوی اور زور دارتھا اور اس تغیرکو بہال ، مبلاب آور دوا ، لیلنے کی وجسے کمزوری لائت ہوگئی تھی اس لیے نزول کے متیجہ میں شغول نہیں ہوا اِن شاء اللہ تعالی آئندہ ظاہر ہو مبائے گا۔

شرج

آب کے اس فرمان سے دوام ثابت ہوئے پہلا یدکدرا وطریقت بی الک کیلے مجاہدہ وریاص سے ماقص تھ شخ کی باطنی توجہات بھی ضروری ہیں اور اس کے بیے سالک کو کمالِ اہتمام اور إفلاص کا مظاہرہ کرنا چاہیئے۔ یہ مجی معلوم ہواکہ الک کوجس طرح حروجی مراتب ہیں مُرشد کی توجہ در کارہے اسی طرح نزول کے مرتبولیں مخیص چی توجہ کی ضرورت باتی رہتی ہے اور سالک دمرید کسی وقت بھی اپنے مشیخ کی توجہات سے بے نیاز نہیں ہوسکتا ۔

وُور ایک باطنی اُمور کے کشف وظہور میں صُروب ہمت اور وظا لَفَ طِرِفِیْت کی او آئی کے معاطلات کے بیے سالک کی ظاہری جبانی صحت و تنذر سی تھی لاڑی ہے کیو بی حبانی صحت رُوحانی صحت پر از انداز ہوتی ہے۔ ہی وجہ ہے کو آل جو البيت الله المالي المالي

سنّت اور طبت نبوی علی صاحبها القدادت مین خطان صحت کے امسول وقواعد بنائے مکتے اور معا طالب زندگی میں اعتدال وقوازن کی طرف خاص توتب ولائی محکی ہے ۔ سالک کو چاہیئے کہ وظا تفت عبود تیت بجالا نے اور آ واب طربیت اوا کرنے کے لیے حبانی صحت وعلاج معالجہ کے امسولوں برجم بکمل طور برکار مبندو کا مدیث نبوی فیان کے ایک کے گئیٹ کے قائد کرتے ہے ہا کا مجد برحق ہے ، ای امر پر وال ہے۔ اُمر پر وال ہے۔

مارے مٹائخ کے نزدیک عبادات و معاطلت کی او آئی کے ساتھ ساتھ رزق صحت اور دو امبینی متوں کا مجی مناسب اہتمام کے ستمال ہونا چا ہیئے غیر شرعی عبمانی مشقتوں اورغیر سنون مجنوں دریاضتوں کے ذریعے رُومانی ترقی مل کرنے کی کجائے سنست و شریعیت بچمل کرکے رُومانی ارتھا رماصل کرنا چا ہیئے جنانچہ عزیمت بچمل کرنا خصوصتیات نقشند دیر میں سے ہے۔



مُعَتَّرِبائيرِ عارف باللاصر توجر **مُحَكِّرُ لِلْإِنَّ الْمِنَّ الْمِنْ الْمِن**َّ لِلْمِنِّ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ



موضوصات تلوین وکمین ، مراتب بین کی تعربغیات ولایت کے مراتب لاثہ ، آبنیه و تنزینیه کی مجن



## مڪنوب - ۱۸

ترجمہ ، بندہ کم ترین فرتف پر احمد بن عبدالا مدوض کرتاہے کہ جب کہ قلب بر احوال و دار دات ظاہر ہوتے رہے عض کہنے گی کتا خی وجراًت کرتا رہا لیکن جب حق تعالی نے آپ کی مبند توجہات کی برکت سے احوال کی غلامی سے آزا و کر دیا اور تعرین سے تعکین کے ساتھ مشرف فرما دیا تو کام کا حاصل جیرت و پراٹیا تی کے ہوا کچے ہاتھ ذایا اور وصل سے جدائی اور قرب کے دری کے سوا کچے حاصل نہ ہوا اور موفت کے عَدُمِ معرفت اور علم سے جہالت کے سوا کچے ذیا دہ نہ ہوا۔ ناچار عربے ایسال کرنے میں عَدُمِ معرفت اور علم سے جہالت کے سوا کچے ذیا دہ نہ ہوا۔ ناچار عربے ارسال کرنے میں البيت المحلق البيت المحلق المراه المحلق المح

توقف واقع ہوا او محض روز مرہ کے حالات عرض کرنے کی جرائت نہیں کی اور اس کے ساتھ ہی ول پر ایسی عنوی سردی فالب آگئی ہے کہ کسی کام میں جوش فی حرارت نہیں دکھتا اور بریکار لوگوں کی طرح کسی کام میں شغول نہیں ہوسکتا ۔

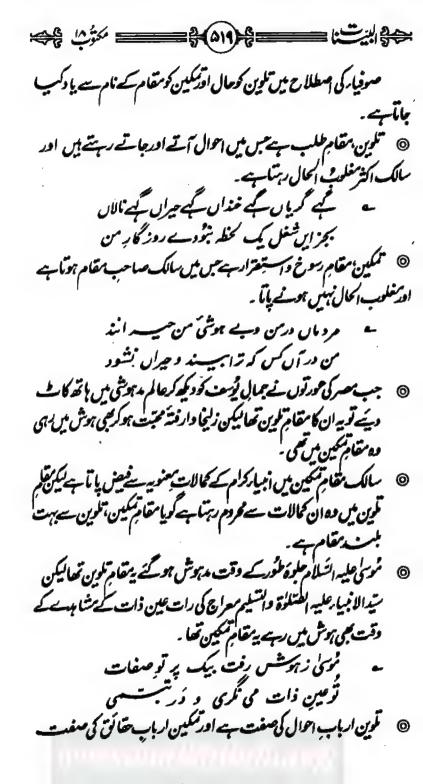
## شرح

حضرت امام رّبانی قُرِّس سرّه لیسے کی خدست میں وص پر واز ہیں کہ جب تک بندہ پر احوال و وار دات اور کو بنات کا خلبر ہا خطوط و مرکا تیب کے ذریعے فشیلا عوض کر تارہا مگرجب سے آپ کی بلند توجہات کی برکت سے احوال کے تسلط سے ازادی ملی ہے اور تلوین سے کمین میں لائے ہیں تب سے چرت و رپانی بی کہوا کچھ معاصل نہیں ۔ لامحالہ آپ کے ساتھ تحریری را بطے میں تھی توقف و اقع ہوگیا جسے بین جب کمی بندہ مقام تلوین میں تھا مختلف اور تعقد و احوال کا مشاہرہ ہوتا رہا تھا جو آپ کی خدمت میں عرض کر دیئے جلتے تھے ۔ اب چو ککر مقام کمی ہی سے مشرف کر دیا گئی اسلامہ نہ ہوگیا ہوگیا ہے اس مقام میں مختلف احوال و وار دات کا سلسلہ بند ہوگیا ہے مشرف کر دیا ۔

## تلوین توسکین

م موفیار کرام کی صطلاح میں تعام تلوی مختلف کبلیات اور وار وات ملوین محتلف کیات اور وار وات ملوین کی میں میں کے اللہ میں ارت ہے میاں کے اللہ میں ارت ہیں ہیں ۔ پہنچنے سے پہلے ظاہر ہوتی رہتی ہیں ۔

مختلف مالات اور وار وات كاسلسائنقطع مونے اور سالك كے اطیف كا اپنے مبدار فیض كك بہنج جانے كومقام مكين كہا جا آہے.



سبعد وفوالتدعلم

© تموین فقر کا ایک مقام ہے جس میں مالک کے ول ربختلف اقسام کے مالاً وار و ہوتے اور بھرتے ہے۔ فقیر ایک مال بزہمیں رہتا تجلیات الی اور جاتی رہتی ہیں۔

مجد برطب رم علی نشسیم مجد برئشت بائے خود نرسیسنم

تمکین سلوک کاایک مقام ہے جس میں سالک قرب النی کے مرتب میں پہنچ کو المین ان قب ما صل کرایٹ ہے اور دائی طور پرکشف جفائق سے متاز تہت ہے۔
 ہمینانِ قلب ماصل کرایٹ ہے اور دائی طور پرکشف جفائق سے متاز تہت ہے۔

معنوی سردی فالب آگئی ہے" اس امر پردال ہے کہ کام پردا ہوملنے کے بعد جب مِعْ الْمِيْتِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ال

منزل متصودل مبائے توسوائے آرام اور بے کاری کے کوئی کا منہیں رہتا اسی کو منوی سردی کے الفاظ سے تعبیر کیا جاتا ہے۔

منت برسراصل من آئیم عجب آنست که مالا نجق تقین مشرف ساخته اند که دران موطن علم وغین حجاب کیب دگیر نمیتند و فنا و بقا در آنجا جمع اند درغین چیرت و ب نشانی بعلم و شعورست و نفس غیبت حضورست با وجود علم و مقع جزاز دیا و جبل و کرت نمیست ه

عجب این ست کدمن و اصل و سرگردانم ترجمه: اب بم اسل بات بیان کرتے بی تجب بیسے کداب اس خب دم کو حق ایقین کے ساتھ مشرف فرما یاہے کہ جس تقام میں علم ایقین اور میں ابقین ایک و و سرے کا مجاب نہیں ہیں اور فنا و بقا اس مجھ مجمع ہیں عین چرت و بدنشانی کی مالت ہیں علم و شعور کے ساتھ ہے اون فنس فییبت ہیں صنور ماصل ہے علم و معرفت کے با وجود جہل و ناسشناسی کی زیادتی کے سوا اور کھی نہیں ہے۔ تعجب ہے کہ ہیں و اصل ہوں اور بچر بھی پریشیان وسرگرداں مہوں

#### شرح

حضرت الم مرتبانی فقرِس سرفی ترسینری ایقین سے مشروف ہونے کے بعد اس مرتبے کے کالات بہان فرما دہے ہیں صوفیائے کرام کے نزدیک بقین کے تین مرتبے ہیں کلم ایقین ،عین ایقین اورحق ایقین مصرت المام رتبانی قدّس سرفسنے تینوں مرتبوں کی تعربیت اس طرح بیا مینسسرمائی ہے۔

عِلُو لَمُقَ . علم لِيقين در ذات حِن مُنجانهُ وتعالىٰ عبارت از شهود آياته عِلَمُ الْمُعِينُ سَت كه دال اند برقدرت وأو تعالىٰ وتعت مَن وشهودِ آن آيات راسيراً فاتى گوسين دله

ترجمہ، مصنرت حق مجانہ وتعالیٰ کی ذات میں علم البیتین ان آیات انشانات کے شہودسے قراد ہے جو اس کی تُدرت پر دلالت کرتے ہیں۔ ان آیات کے شہوُ د کوسیراً فاقی کہتے ہیں گویا مشاہرة اَ فاقی مغید علم ایتین ہے۔ جیسے وُمعواں، اُگ کی موجودگی پر دلالت کر تاہے۔

 سالک کے وجود کا تعین بالک حجم ہوجا تاہے اور اس کے دیدہ شہود ہیں ہسس کا کوئی اثر باتی نہیں رہتا اور سالک خود اپنے شہود میں فانی وستہلک ہوجا تاہے اور یہ شہود اس بزرگ جاعت کے نز دیک اور اگر بسیط سے تعبیر کیا گیا ہے اور اسی کو مدف یہ محمد کھیا

من المعنى المعنى والمنطق عبارت النهود أوست منطاذ بغداز تفاع التعين وعلانه والمعنى المنطق المعنى وعلانه والمنطق المنطق المنطق والمنطق المنطق والمنطق والمنطق المنطق والمنطق المنطق والمنطق المنطق المنطق والمنطق المنطق الم

ترجمہ: اوری الیقین سے مراد اس شجانہ کا ایسا شہود ہے کہ س کے بعرطالب کا تعیتن اور اسمحلال ختم ہوجائے سکن رعار ہے لیے ہی شبحانہ کا پیشہودی تعالیے کے ساتھ ہو آ ہے نہ کم عار ہ کے اپنے ساتھ کیونکہ

" با وشاه كے عطبیات كواس كسواريان مى الصاسحتى بين "

اوریشهود بقا باشری ج ین کیت کے وین گینجی و این و میرے ذریعے سنتا ہے اور بیرے ہی ذریعے دکھتا ہے "کامقام ہے ماصل ہو جاتا ہے جہاں سالک کو فائے مطلق کی تحقیق کے بعد جو ذات وصفات کی فنا ہے تی شبحان وتعالی صن اپنی عنایت سے اپنی طرف سے ایک وجود عطا فرما تا ہے اور کر حال اور ہے خودی سے حووا فاقت د ہو شیاری ، ہیں لا تا ہے اور اس وجود کو وجود موجوب البيت المحالي المعالي المعالي المعالي المعالي المعالي المعالية الم

حقّانی رالله تعالی کاعطا کروہ وجُری کہتے ہیں س مقام میں ملم اور عین ایک فرسے کا حجاب نہیں ہوتے ۔

> اے برتر ازخیال و قیاسس و حمان و قیم وزہرج گفتر ایم وسنسنیدہ ایم و خواندہ ایم

> > اقسام عارف عارف دوتم عمرت بن

ا بعض عادت عم تحر ترسب خیال میں ہی رہتے ہیں ۔ ۲ بعض اس مرتبے سے آگے گذر کر ترسب برادراک بلاکیعٹ سے

ممثاز ہوجاتے ہیں۔

بہاق مے عادفین مرتبہ ذات کے ادراک سے تطعا عاجز ہوتے ہیں ہوں مری قسم کے عادفین مرتبہ ذات کے ادراک سے تطعا عاجز ہوتے ہیں ہوت ہیں تو سے عادفین حب مقام بیچر نی سے مشرف ہوکر خودمی بیے جُران ہوجاتے ہیں ہو بیا کہ بیا کہ مولانا اُروم علمیں الرحمة نے فرمایا : -

إتّصاب بي كميّعنسب سبع تميساس من بامان اس من المعان اس

بر بر مرب اور فات کے بینے بی فیل کے فیل کے فیل کا اطلائی مجاز آہے کہ بر مرب اور فات کے بیخ بی ہے جمل کے مقولین نے جو فر یا ہے کہ الایست مقولین نے جو فر یا ہے کہ الایست مقرد کو آت کے بیخ وات کا اور اک وتصور محال ہے ۔ ان کا یہ قرار ترب کا است مقر رکھا ہے کہ اندائی کا اور ایک وتصور محال ہے ۔ ان کا یہ قرار ترب کی فرا یا گیا ہے کہ کہ اندائی کا مقت بر اور اللہ اللہ مقاب کے اللہ مقاب کے اللہ مقاب کا تفکر واس سے مراد تفکر با مقت بر کی مصن و کہ اللہ مقاب کے مقاب کے اور اللہ مقاب کا تفکر وادر اللہ جا کرنے کو کو کہ معن وجو در مقاب کے موجود مقاب کا تو من اس می فات بھی وقدرت کا مقد ہو کے موتے ومثال سے پاک ہے ادر الدار الدا

منتن فرق مقام ولايت مقام شهاوت سي نبت ولايت بشهاوت نسبت بحلى صورى تجلى ذات ست بال بُعند لم البيئة مما اكف ترض بعد هد ذين التَّجَلِيك فِي كُفُ دَامَرَةً وَوَقِ مِعت م شها دت مقام صِدَ فَبَيْت ست.

ترحمه : مقام ولايت سع أوبرمقام شها دت سبع اور ولاببت كوشهادت

البيت المحالي المحالي

کے ساتھ وہی نسبت ہے جو تخلق صوری کو تجلی ذاتی کے ساتھ ہے مبکہ ان وونوں اسبتوں کا درمیانی بعد س بعد سے کئی درجے زیادہ ہے جو کہ ان دونوں تجلیّات کے درمیان ہے اور تھام شہادت سے اوپر مقام صدّلقیّت ہے۔

#### شرح

حضرت امام رّا بی فقیس بندهٔ رقم طراز بین محدولایت بین مراتب بیل به است مین مراتب بیل به است مقام در این مقام م استمام مقام مشها وست

۴ مقام صدیقیت

حندت اام رّانی قدش سترهٔ فرانے بین که ای طرح مقام شهادت اورُقام صدیقت بین حرتفاوُت ہے وہ توکسی عبارت یا اشارے سے ملی تعب بینیاں کی ماسک ت

# تعرنفين ت واتب

ببالم مرتب الله تعالى ك قرب اور مبت كاببلا مرتبه ولايت سه كرافي

بروزن فيسين فاعل اورضول وونوائعنول مين أتاب إن الولي من كان عَلَىٰ بَيْنِيَنَةٍ مِنِنْ زَرَبُهُ ولى وه موما سبع جوالين رب كى طرف سع واضحاله روشن دليل بربهو مبسياتح الشررب العزت مل مجده الكريم ففرطايا وتحقلت كَ نُوْرًا يَعْشِى بِهِ فِي النَّاسِنَ لِينَ بِمِنْ السَّاكِ الْدُويَاسِةِ سِك ساتھ وہ لوگوں میں میلتا کیٹر تکہے۔ اُولیار در امثل انبیا کے ورثار ہوتے ہیں نتوت ك بعديبي حضرات زمين به اخلاق البيه كي تصويرا ورمرا بارشد و بدايت موتيمير اور اس دنیا کے رہنے والوں کے لیے ان کا وجُود ڈرلیئے رحمت وبرکت ہوڑ ہے۔ ولايت كا دور امرتبه التب والمرادية الذن بَذَلُوا ارْوَاحَهُمْ فِي طَاعَةِ اللَّهِ يَعَالَىٰ رَاعِلَا كيلمت فيعنى تثبدات مراه وولاك بين جوابني مانون كوالله تعالى كاطاعات اس کے دین کی سرمبندی سے یہ وقعت کردیں ۔ شہا دست کی دوسیں ہیں جہا دست مُنغرى اورشها دت كُبُرى بشهادت مِنغرى كى تتعدداقسام بي ان بيست على شاد التُدتعالىٰ كى راوميں فازى مونے كى مالت ميں كفار ومشاكين كا مقابله كرتے ہوتے انى جا بېتسىربان كردىپاسىنىد

شهادت کری دومتین بن

بہل قتم اللہ تعالی کی صفات کی وجسے اس کے ساتھ بلا ملت مجت کرنہ ہے دوسری فتم شہادت کی الماقتم ہے اور وہ یہ ہے کہ عارف کوئی تعالی کا شاہرہ (بلاکیف، نصیب ہوجائے۔ و کھٹم اکھٹل الحصن فررِمَعَ اللهِ تَعَسَل لا عَلیٰ بَسَاطِ الْعِیلْمِ مِیدًا

يعنى ابل شهادت وولوك بي جبي الثرتعالي كساتع بساط علم كيطابق

المروح إمان مرد مية الم المالية المروع المان مره مية المد بين

توارىشهاوت شهاوت فمغرى ب

اور محبّت کی شہادت، شہادت کبری ہے .

گول مجیلینجی ایک وه شهید بست جولوہ کی تلوارسے شہید ہو تاہے دُوسرا وه شهید ہے جوعشق کی تلوارسے شہید ہو تاہے لیکن دونوں بین فرق یہ ہے کہ لوہ کی تلوار جب ملبتی ہے تو ایک کو دو کردیتی ہے اور شق کی تلوار جب ملبتی ہے تو دو کو ایک کردیتی ہے۔ مافظ شیرازی علسیہ الزممت نے کیا خوب فرمایا ہے۔

ه گبسیار دیده ایم کدیک را دو کرد تنفی مشعشیرهشق بین که دوکس را یکے کشند

ولايت كيرب ديج كانام مرتبط يقيت مدين مبلن كانام مرتبط يقيت مدين مبلن كا من مرتبط يقت المسلم المرسم من مبل المنظم المنطقة من المنطقة المنطقة

بيهقى وقت حضرت علامة قامني شف إلى الله بافي بين نتشبندي مجدوي وم

النعلب بون رقم طرازين:

الصدة نفون وهم المبالغون في الصدق المتصفون بكمال متابعة الآنسياء ظاهرًا وباطنًا المستغرفون في حكمالات النّبوق والتّجليّات الذّابيّة له يعنى صديق مبالغ كى حد تك يتح بهوت بي اورظ برى و بالمنى طور بإنبيا كام كى كامل رين اتباع سي تصف بموت بي اور كما لات نبوت اور تجليات واتي بي متغرق بهوت بي .

صاحب نفیر روح المعانی علام مورد الوی المعانی علام میرد الوی علادی جار کا مل مرتب مبارکه میردی قدس سرون نامی ایک میردی م

أَوْلِهِكَ مَعَ الْمَدِينَ اَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِينِينَ وَالْحِسَدِيْهِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالْحَسَالِحِينَ ..... الْحَ كَمَّتَ كُرِيفُولِينِ : وَنَقَلَ بَعْصُ تَلَامِذَةِ مَوْلَانَا الشَّيْخِ خَالِد إِلنَّقَشْ بَنْدِي قُدِسَ سِنُهُ عَنْهُ اَنَهُ قَرَرَ يَوْمًا اَنَ مَرَاتِبَ الْحُمُلِ اَرْبَعِتَهُ ؟

سِرة عنه الله هرريوم المكراب المسارة أبينا ملائية الم

ثُمْ صِدِيقِيَةً .... وَقُطْبُ مَدَارِهَا اَبُوَّكُمْ وِالصِّدِيْقُ اللهُ

شُمَّ شَهَادَةً أَسَدَ وَقُطْبُ مَدَارِهَا عُمَرُ الْفَارُوْقُ اللهُ تَعَسَالُ اللهُ تَعَسَالُ اللهُ تَعَسَالُ اللهُ تَعَسَالُ

وتجهه

ترحمبه ، حضرت مولا ناشیخ خالد نقشبندی فدسسترهٔ دخلیفهٔ مجار حضرت شاه غلام علی دلوی رحمته الله علیه ، کے بعض شاگر دوں نے نقل کیا ہے کہ انہوں نے ایک البيت الله المنافعة ا

دن جاركا م مرتبول كومقرركيا اورفرماياكه :

رصى التدعِنه بين

می میسیده بین به ادر است اور است قطب المحضرت عمرفاره ق رضی الله عندی بی بیخها کامل مرتبه تها ادر است قطب مدار صفرت علی کرم الله و مرجه بین به مقام والایت مین معاریف میکرید کا اکثر اظهار به تاریها عمایی تم ما فی البیاب همیا که وحدت الوجود کے معارف رکٹرت میں وحدت کا شہود و عنب دلی

مقام شہادت میں معاریف شکریہت کم ظاہر ہوتے ہیں اگرچہ یہ مقام ایسے معارف سے بالکل خالی جن ہیں ۔

مقام صِدَلقیت بین معارفین سُکریکا وجود قطعاً نابید ہوتا ہے کیونکہ معارف صدافیت معارف نیست کی اندہوتے ہیں اور ان دونوں کے درمیان فرق بیہ کہ معارف نبوت طعی ہوتے ہیں اور معارف صدافیت نظی .

منتن ونشايدكرميان صديقيت ونبوّت مقام بوده باشد بكدئ الرست واين كلم بن اليّت او كمشف صريح يحيم علوم كشرة وآنچ بعضے ازابل اللّه واسطه ميان اين دومقام بابت كرد اند و بقرُبت ناميده اند بج ان نيزم شرف ساختند و رحقيقت آن مقام اطلاع دا دند بعد از توجُرب بيار و تصنُّر ع بـ شار اوّلاً بمان طور که بعضے اکا برفرمودہ اندالی برشد آخرالا مرحقیقت رامعلوم فرمودند آرسے صول آن مقام بَعد مُصولِ مقام صدیقتیت سنت در وقن عُروج اَمَّا واسطہ بودن مُلِّ م تاکل سنت

ترجمہ ، اور کمکن بہیں کو مقام صدیقیت اور مقام نبوت کے ورمیان کوئی اور مقام ہو بلکہ محال ہے اور اس کے محال ہونے کا یہ مکم واضح اور میح کشف سے معلوم ہوا ہے اور بس کے محال ہونے کا یہ مکم واضح اور میح کشف سے معلوم ہوا ہوں اور اس کا نام قربت رکھا ہے اس سے بھی مشرف فرما یا گیا اور اس مقام کی حقیقت بر اطلاع بخشکی کئی بہت توجہ اور بے شمار عاجزی کے بعد شروع میں اسی طرح جمیں کی بہت توجہ اور بے شمار عاجزی کے بعد شروع میں اسی طرح جمیں کی بہت توجہ اور بے شمار عاجزی کے بعد شروع میں اسی طرح جمیں کی بہت نے فرما یہ ہو آ اخر کا رحقیقت کا علم کرا دیا بال اس مقام ہو کا عاصل ہونا محروم کے وقت ہیں تھام صدیقیت کے صول کے بعد ہے لیکن اسلم ہونا عور طلب مقام ہے۔

شرح

حضرت المامرتانی قدس سرّہ فرماتے ہیں کھتدیعیت اوز بتوت کے درمیان کوئی قام نہیں اور جن اکا ہر دمثلاً سشیخ اکبراین عربی رحمۃ الشّعلیہ وغیرہ سنے ان وولوں سکے درمیان جمعام ثابت کیا ہے اس کا نام قربت رکھا ہے اور اس کو واسطہ قرار دیا ہے ان کا یہ فرمان محلِ آئی اور غورطلب ہے کیونکہ قرآن باک نے بنی اور صدّیق کے درمیا کوئی مقام ثابت نہیں کیا۔ جه ابيت الله المحالية المحالي

ٱوْلَيْكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَتَمَ اللَّهُ عَكَيْهِمْ مِّنَ النَّهِ بِيِّينَ

قران كا نبيآ ك بعدصنيقين كانذكره كرناس امرر دليل سے كذبى كے بعد اگركونى

ورجه جوسكتاب تو وه صرف صديق كاب . و الله تعالى عام

بتر مرسال واضح ہو کہ نبوت اور صدیقیت کے درمیال عقام قربت و اسط نہیں ہو بتر مرسم مرسل سکتا کیونکر مقام وہ ہے جوعرُ وج وُنزول کامتقاضی ہوا ور قربت

ووهب يوعروج ونزول سيفالي بونيز قربت صديقت سيفليحد كهسي جيزكا نامنهين ملكريه صديقتيت كاجزو اخيرسے سيدام بھي ملحظ رہنا چا جيئے كد مقام قُربت كى توجة فاكھل تنزيب

كى طرف ہے اور وہ بتمام عُرُوج و فناہے اور مقام صدّیقیّت ونبوّت سار مرزُز ول وصّحوو

بقام يس ان دونون تقامون مين بهت برا فرق الله والله علم

مفترین کرام بھی اسی امرے قائل ہیں کو نبوت کے نیچے صرف مرتب میں استہ کے تعلیم اللہ میں استہ کے تعلیم اللہ میں استہ کے تعلیم اللہ میں ا

ملتن وزائدتيت وجُورَبر ذات ِعَلَّ وَعَلاَ درِين مقام ظاهر مى شودجنا نكه مقررِعلما برابل حق ست شكر الله تَعَالَ عَلَيْهُمْ ترجمہ ؛ اور اللہ تعالیٰ کی ذات پر وجود کا زاید ہونا اسی مقام میں طاہر ہوتا کہ جسیا کے علما دِاہلِ حق کے نز دیک ثابت ہے۔ اللہ تعالیٰ ان کی کو سٹ شوں کی جزائے

شرح

حضرت امام رّبانی قدِّس مِّر کومقام صدّلقیّت کی سیرومعرفت کے دُوران بذرایم ً

تخشف والهام معلوم بواكه التُدنّعالي كا وجوداس كي ذات بِرزائد ہے آپ كا ييشف علمائے حق اہل سنت وجاعت کے عقیدہ کے عین مطابق ہے کیونکہ ان کے نزدیک وجودحق ذات بعق برزائد ہے بعنی ذات موجود، عالم مہتی و وجُود سے مُنزّہ و مُبرّلہے اور ذات کائنات سے وَرارُ الوراَ بے جبکہ صوفیائے وجُوریہ ذات اور کائنات میں إتحاد ثابت كرتے ہيں صوفيائے شہوديك الم مصرت الوالمكارم دكن الدين شيخ علاوَالدّولة منانى قدّس سرَوْك فرمان "فَوْق عَالَيم الْوُجُود يَعَالَمُ مَالِكِ الْوَدُ وْ دِيْ ؛ عالم وحود وستى كے اُوپر بہت محبّت كركنے واليے بادشاہ كاعالْم ہے، كا بھی ہی مطلب ہے بیر معلوم ہو اکہ حضرت امام رّبانی قدس سرہ کا کشف وشہو د علمائے شربیت رام سنت وجاعت کے صول سے بال برا بر مبی منالف نہیں ہے۔ اللہ تعالے سربیت رام نے آپ کے لیے شرعی نظری، استدلالی علوم کو ضروری شفی بنا دیا تھا حضرت خواجہ بزرگ خواجه بهاؤالدين تقشبت كجاري رحمة الته عليه نف فرما ياكسلوك معصوديهي سي كمالي معرفت تفضيلي اور إستدلالي معرفت مختفى بوجائي ببث أبت بهوا كفلوم شرعيد بي صلى غلوم ہیں را وسلوک میں حوعلوم کے ربیمیٹیں اتے ہیں وہ اصلی علوم نہیں ہوتے ان سے گزر جا نا چاہیئے ، رؤ باللّٰدِ التّوبِ بْنَ

منن وبرسترمسئارة قضا وقد زيز اطلاع دا دند و آن را برنهج إعلام فرمودند كه به بيج وجه به اصولِ ظاهر مِشر بعیت غرّا مخالفت لازم نیاید و از نقص ایجاب و شائهٔ جهر مُبتراو مُنزه است و در ظهورمشا برقم لیکهٔ البدرست عجب ست محم با وجود عدم مخالفت باصول شریعیت این سیکدر اجرا بوشید با وجود عدم مخالفت باصول شریعیت این سیکدر اجرا بوشید المنت المنت المناسبة المناسبة

ترجمہ : اور سکل تضاوقدر کے راز پرجمی اطّلاع بنتی گئی اور اس کا اس طرح پرواکرایا گیا کہ کی طرح بھی روشن شربیت کے ظاہری اُصول وقراعد سے نما لفت لازم نہیں آتی اور یہ اُسکلہ ایک باب رواجب کرنا) کے نقص اور جبر رخم بور کرنا) کی آمیزش سے پاک وصاف ہے اور چروصویں رات کے جاند کی طرح ظاہر ہے تیجب ہے کہ جب بیسکلہ اُمول شربیت کے نما لف نہیں ہے تو بھر اس کو ایک شدیدہ کمیوں رکھا ہے۔ ؟

## شرح

المام الما الما المال ال

البيت المحالي المحالي

علم از بی سے جان لیا تھا اور قضا و قدر میں اس کو مرتبۂ علم میں ثابت کر دیا تھا السندا انسان تقدیر کے لیکھے جوئے برجور نہیں بلکہ تقدیر کا لکھا ہوا اس کے قبل اختیاری کے تا ہے ہے بیس نوشۃ تقدیر کو نوشۃ تا ایم نے کی طرح محمول کرناچا ہیں ہے۔ رواللہ اعلم © فرقہ قدریہ بندہ کو خالق افعال ما نتاہے لیکن ملمائی تعلمین الم بسنت وجماعت نے افاط و تفدیلے رمکس عست دال نتخب کیا ہے حوق آن وسنت کی تعلمیات کے عین

پیداکیا اور جمجیم *تر کرتے ہو ''* ھیسندہ قدرت مخلوقہ کے لیارہ

بنده قدرت بمنوق کے بل بہتے پرکسب افعال اور عدم کسب دونوں پرقا درو ممنارہے۔ اگر چاہے کی معل کو انجام دے اور اگر چاہے چیوڑ دے ای بنا پر وہ تواب عذاب کاستی مفہر اسے مبیا کہ ارتبا و خدا و ندی ہے جسر آء بیکہ اسے اندوا کی جستی فوا بہت اندوا کی جسال کی جزار ہے "نیز فرایا معنی نو کی حقیق و حق رفت اندوں کے اعمال کی جزار ہے "نیز فرایا معنی خاری میں ایسی فرایا کے خدیث کے خدید میں اور جو جاہے الیاں لگئے اور حور کرنا " بندول کے اور جو جاہے الیاں لگئے اور کھر کرنا " بندول کے ادا دو و اختیار کے ساتھ مر کو طاہے بہن ابت ہوا کہ جربیہ و قدر یہ کے عقائد نصوص قرائیہ کے خلاف ہیں ۔

الْبَصِيْرِ اوَلِكُلُامِ إِنَّبَاتُ مَنزِيهِ عِضَ سَت كَمَا هُوَ الْطَاهِرُ وَقَوْلُهُ شِخَانَهُ وَهُوَ الْسَمِيْعُ الْبَصِيْرُ الْطَاهِرُ وَقَوْلُهُ شِخَانَهُ وَهُوَ الْسَمِيْعُ الْبَصِيرُ مُعَلَّمَ الْمَسْتَ لَهُ جِن اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْمِلِي الللْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللْمُعْمِلِي اللْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْ

وررؤبت وسماع مي مرضح ندارو الخ

ترجمه ، أن علوم بي سيعض عرض فدمت بين التدّ تعالى فرا تا بيد اس كي مثل كوئي چيز نهين اور وه سننے والا و يحصنے والا بيد "اس آبيت كا ببلا جزو الكينس مثل كوئي چيز نهين اور وه سننے والا و يحصنے والا بيد اس آبيت كا ببلا جزو الله المحت على مثل كوئي چيئى فالص تنزيبه كوثا بت كرتا جه اور دُوسرا جُر (وَهُو كَاللّتيمينية اللّه حَلَيْنِي اس تنزيبه كوئي وا اور كا مل كونے والا ب اس كى وضاحت يہ بير چيئى عالم كے يائے مع وبصر كے ثابت ہونے ميں باہم شابهت كي شوت كا وہم ہوتا ہے مالم كے يائے مع وبصر كے ثابت ہونے ميں باہم شابہت كي شوت كا وہم ہوتا ہو "اكر چي فرضى طور پر ہى ہو "اس يائے الله تبارك وتعالى نے اس وہم كو دُوركونے كے الله تبارك وتعالى نے اس وہم كودُوركونے كے الله عن ميں جو الله ميں يعنی وبصير الله مجالي نظم الله عن الله كا بي الله تبارك و تعالى الله ميں الله كا بي والله كا والم كے والم ميں بيا الله كا بي ويصنى والم الله كا الله كا والله والم الله كي الله الله كا الله كو الله كا الله كا كھو والله كا الله كا الله كا الله كا الله كا الله كا الله كو الله كا كو الله كا كوئوں ميں موالله كا الله كا الله

## شرح

حضرت امام ربانی قد سرک ده مقام شهادت کے مناسب بعض عُلوم و معار اللہ اللہ معار معار بیان فرماد ہوئے جنانچہ آپ فرماتے ہیں اللہ میان فرماد ہوئے جنانچہ آپ فرماتے ہیں

البيت الله المراج المرا

آئیمُ ارکه کیس کے مِثْلِه شَنی گوهُ وَالسَّمِنِیُ الْبَصِینِرُله کے دو جُسِرُین ،

بہلاج و کیس کے مشالہ شیخ اللہ تعالی شان تنزیبہ کا بیان ہے اور دوس ا جزو کی کھو السکے نیم المبحث و مجمی سی شان تنزیبہ ہی کو پورے طور برخل ہر کر رہا ہے یکن صوفیائے وجودیہ اس آیت کی تشریح میں فرماتے ہیں کہ آیت کا پہلا جزو تنزیبہ اور وُور اِجزو تشبیہ کا بیان ہے ان کا مسلک یہ ہے کہ اللہ تعالی جامع تنزیبہ و تشبیبہ ہے

تث بديهر نغزيه

المِتِصوف كنزويك اشيائك كأنن مين طهور ذات كانام تشبيه ب أور ذات من كاصفات مكنات سي ياك وسننده بونا تنزيه ب .

صوفیائے وجودید کے نزدیک مراتب وجب جھے ہیں اور وہ مرتبر شبیبہ کو تعلی انہی مراتب سے جانتے ہیں ان کا خیال یہ ہے کہ ہماری سع واجہ بھی اللہ تعلی لے ہی ہم سے جو بہان ظہور کرآئی ہے جیسے کہ بارش کا پانی برنا ہے سفل ہر ہوا ہے در اصل برنا ہے سے نہیں ۔

حضرت اهام رّبانی قدس مترف کے نزدیک ذات جی تعالی بیش اور بے بچن و
 بے بچون ہے اور مرتبر تشبیب سے مثر و مبرا ہے۔ تعالی الله عَنْ ذالات
 عُلُوّا کے بیراً

⊙ حضرت الم رّبانی قدّس ررّهٔ کے نزدیک صوفیائے وجودید کا مذکورہ قول سکر کے قبیل سے اور آپ کا کمشوف می میں سے جوائر مقام فہادت کے علوم کے مناسب ہے جو شراعیت کی کے قبیل سے جو شراعیت کی میں سے جو شراعیت کی میں سے جو شراعیت کی میں ہے جو شراعیت کی ہے جو شراعیت کی میں ہے جو شراعیت کی ہے جو شراعیت

المنت المحالية المحال

مناركيس طابق ، وَالْحَمْدُ لِلْهِ عَلَى ذَالِكَ

حضرت امام رباني قدَّس متره ك زوبك أيدُ مباركه وهو التيميني البطنير كامطلب بيسب كدالتندتعالي بمحتميع وبصبير بصاور مبنده ندات خود هركز تسميع بصبر نهبس ملكه التُدتعاليٰ ابني عادت ِجاربه كيمطابق هاري سمع وبصر (كان و ٓ) نكه كوسنينه اور ویکھنے کی نا نیرات عطا فرما تاہے جو 'سننے اور دیکھنے کاسبب نبتی ہیں اگر اللہ تعالیٰ وہ تا تیرات نیختین تو ہندے مننے اور ویکھنے سے محروم ہوجا میں کہوں کہ بندول كى يصفات جما دمحض ہیں اور سننے دیکھنے میں کو ئی تاثیر نہیں تھتیں۔ صُوفیائے وجود یکا اس آیت کے حصرو اِختصاص سے مرّتہ تشبیہ پر دلیل لا نا ازقبيل مسكرب وجنتبقت سيعيد بيكيؤكمه كؤكان المبخث ميذاداً لِّكَ لِمَاتِ رَبِي لَه كِمِطَابِق صفات إرى تعالى صدوحس سع إبراس. ذات حق كومكنات كيكسي مرتب ك ساتق تشبهه ومثيل سے ورار جانا جا ہيئے بيساكة ابت ريد كنيس كيفيله شيئ يس مريح على موج دب يجن أبات واقوال صوفياً مين وبشبينه وتشيل كالفاظ وار وجوئ إب ووتشبيه يا تمثيل من كُلِّ الْوَجُون نهيل موتى بلككسي خاص أمريين مواكر تى ہے اور وہاں بھي عارضي اورحتيقي كافرق ملحوظ ربناجيا جيئية وصل بات بيهب كه عالم مثنال ميرلجب سے دے کرممکن مک جرب نرمثال ہے اگر جبراس کی سٹل کوئی چیز نم ہو مک اُ نُوْرِهُ, وغيرِ لِأَي مَثْمِيلِ كُوهِي إِسى قاعده رِجْمُولِ كُرْنَا جِاسِينَةِ ـ وَالنَّهُ مِمَاكُمُ



مُعَوَّبِ أَنْهِ عارف باللات والمحمد المقصر المحمد المحمد



مَوْضُوعَ الله ماجت مندفقرار وعُلمار كي مالي امداً و ومنفارشس



# مكتوب - 19

منن عرضداشت ِ احقر الحدَّمر الدشخص الانشكر آمده والمؤكر مبدخ وظیفه واران فقر ارد بلی و سربهنداز بابت فیصل فریون گذشته حوالهٔ ملازمان عَنْبُ علیته کرده اند که بعب از حقیق حق مبتجفان رسانند

ترجمہ احقیرترین خادم کی درخواست، ہے کد تشکرسے ایک شخص نے آگر بتایا کا گذشتہ نصبل خرید کا روہیہ کا گذشتہ نصبل خرید کا روہیہ کے گذشتہ نصبل خرید کے ملازموں سے حوالے کیا گیا ہے تاکہ سیجے تحقیق کے بعد متحقین کو پہنچا دیں .

### شرح

یک توب گرامی صنب امام را ای قدس سرخ نے صفی حاجت مندوں کی امداد
کے لیے بطور سفارش اپنے مرشد برخ کی بارگاہ میں ارسال فرمایا ہے جس میں
مشیخ الجر اس حافظ ، مولانا علی آور شیخ شاہ محتم حافظ و دیگر اہل علم صنرات علیہم الرحمة
کے سالانہ وظائف ایک ایک ہزار نکہ رسکتہ را نج الوقت، کی ادائی وحاجت
براری کے لیے درخواست بیٹیں کی گئی ہے۔

تحضرت امام رّبانی رحمته اللّهُ علیه کے بیر بھائی خانقاہ عالیہ باقویہ وہلی تالیف کے منظم اعلی حضرت خوا حبشین سیّد فرید بناری رحمته اللّه علیہ حرصمُونی مشربِ بونے كے ماتھ ساتھ صاحب تروت، امنير، سخى دل اور فياض طبع تھے۔ اُنہوں خ خانقا ه كے اخراجات كے علاوه خاص خاص حاجت مندعلمار اور فقر امريح عول وظا لَف بھى مقرّر فرمار كھے تھے جو حضرت خواجہ باتى باللہ اور حصرت امام رّبانى رحمةُ اللہ عليہ ماكى معرفت اوا فرما ياكرتے تھے ۔

واضع ہو کدارباب موائع کی ماجیں گوری کرنا ہوجب اجرظیم اور عادات
اہل کرم سے ہے۔ مدیث نبوی علی صاجبها الصّلوات تحیرُ النّاسِ مَنْ
نَفَعَ النّاسَ الله کے مطابق صفرت نواج دہوی اور صفرت امر آبانی قدّس
اللّٰدُ الْمُرارِهُما غُربار ومساکین کی خیرخواہی ، ہمدر دی ور شرکن معاونت فربایا کرتے
سے اور اس سلسلے ہیں آب نے اپنے کئی محتوبات ہیں اہل ٹروت صفرات کو اس
اخرمید کی طرف توجہ دلائی ہے۔

الماعم اَورابلِ ذکر کی صوصیت کے ساتھ دستگیری اور مالی معاونت بجلئے خود ایک بہتاری عباوت ہے کیونکھ اس طرح بالواسطہ دواعی علم و ذکر کی سریستی

ہوتی ہے بجصد قرماریہ کے زُمرے میں شامل ہے۔

بزرگان دین کامعمول رہاہے کہ وہ علمارا ورصوفیار کو اپنے مجود وسخا کا مرکز قرار دیتے تھے جب اُن سے اس کاسبب دریا فت کیا جا تا تو فرماتے یہ وہ نوش نصیب حضرات ہیں جن کا نصب اُلعین فقط اللہ تعالیٰ کی ذات ہے ۔ جو پورٹی وئی ، کے ساتھ قرب اہلی اور خدمت دین کے درجات کے حصول کے وُرسے نے ہیں اگر ان کی مددنہ کی جائے تو ان کی کیونی اور اخلاص میں فرق آئے گا۔

صرت عبدالله بن مبارك عليه الرحمه جهيشه البيني صدقات وعطيات عُلمار وضوفيا كيك وقف ركھتے مديث نبوي ہے اَطْعِيمُ وَاَطَعَا مَصِيمُ البيت المحالي المحالية المحالي

الْآئِفِياءَ وَاوْلُواْمَعُوْوْفَكُمُ الْمُؤْمِثِينَ ابنى دعوتوں میں انہی لوگوں کو میں انہی لوگوں کو میں انہی لوگوں کو میں کو دیکے اور برہنے گار ہیں یا ایسے مومنوں کو جن کو نیکی سے شخف ہے۔

آپ اس کاسبب یہ بیان فرمانے کرعلمار کوعلم دین کی تعلیم و تبلیغ کی داف متنوجہ رکھنا فرانصن میں داخل ہے اگر بیصفرات روز مرہ کی ضروریات میں اُلکھے رہے توعلمی و دینی مشاغل کیونکر جاری رکھ سکیں گے۔

صُوفیا، کرام کے نزدیک خدمت خلق اور صیست زدہ افراد کی ہمکن امداد بڑی اہم عبادیت کا درجہ رکھتی ہے۔ عدیث نشریف ہیں ہے :

مَنْ نَفْسَ عَنْ مُوْمِنِ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنِيَا نَفْسَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيامَةِ " يعىٰ جِن شُض نِهِ مِي مُومِنِ كَى دنيا وى كاليف بَين سے ايك تكليف

رفع کی اللہ تعالیٰ اس کی آخرت کی تکالیف میں سے ایک تکلیف رفع کر دیگا۔ فالباً حضرت شیخ معدی علیہ الرحمہ نے اسی لیے فرمایا تھا ، ے طریقت بجسند فدمت خلق نمیت

بشنیع و سحب ده و دلق نیست



مُحَوَّبِ لَيْهِ ماد فِيالِيْتِ وَلِيهِ مِحْكُمُ لِمَا إِنِّي لِللَّهِ لِمِنْ الْمِنْ ماد فِيالِيْتِ مِنْ وَلِيهِ مِحْكُمُ لِمَا إِنْ إِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ



یه محتوب گرامی می آپ نے بعض حاجت مندوں کی سفار سس کے سیلیلے میں اپنے مرتبر برگروار میس ف کی خدم منت عالمیہ میں تحرر فرما یا ہے۔





نحقُوبائيرِ ح**نرِت بِنَ مُحِيّالِ كَلَّى** ولد**امي ق**ارئ وملى لامِرُى يَوْفِيهِ



متوب ليه مخرت شيخ محركی ولدهای قاری موئی لا بوری دهمة الشرعلیه (ان کے حالات زندگی معلوم نبیس بوسطے)

## مكتوب -۲۱

من إعْلَمُوالِخُوانِي آنَ الْمَوْتَ الَّذِي فَكُنُ الْمَوْتِ الَّذِي فَكُنُ الْمَوْتِ الَّذِي فَكُنُ الْمَوْتِ الْذِي فَكُمْ اللهِ مَالَمُ مَنَّ حَفَقُ لَمْ يَتَنَسَّرِ الْوُصُولُ اللهِ مَالَمُ مَنَّ حَفَقُ لَمْ يَتَنَسَرِ الْوُصُولُ اللهِ مَالَمُ مَنَا اللهُ وَاللهِ مَالَمُ مَنَّ اللهِ الْفَدْسِ بَلُ لَمْ يَكُنُ اللّهُ الْفَاقِيَةُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهِ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالل

ترحمه : میرے رُوما نی بھائیو ا آب کومعلوم ہونا چاہیئے کر جب کک وہ موت جومع وف ہوت سے پہلے ہے جس کو اہل اللہ فناسے تعبیر کرتے ہیں ثابت نہیں ہو گی اس وقت تک بارگاہِ قدس تک وصول میسٹر ہیں ہوگا بلکہ آفاقی باطل معبودوں رکفار وفبی رکے معبود لات ومنات وخیر مل اور نعنسی ہوائی خداؤں (خواہشات نعنس) کی لِوُجا سے نجاب حاصل نہیں ہوگئی ۔

## شرح

حضرت امام ربانی قدس سرؤ العزیز ارشاد فرات بین که فنادنسیان ماسوی الله کمی بند کا فرانسیان ماسوی الله کمی بندر ایک می بندر ایک می بندر ایک می بیانی ماصل نهیس به و می می بند که در اشاره ب جندت این می مرف اشاره ب جندت الم مرافی قدس سنده ندوایا ، ام مرافی قدس سنده ندوایا ،

جه البيت الله المحالي المحالي المحالي المحالي المحالي المحالية ال

موت بعرون رطبعی وت ، سے بہلے مرجا نا لطائف بستہ قالبید سے مجدا ہوجہا نا ہے اور وہ اس طرح ہے کہ سالک کا نعنس ترقی کر کے مقام قلب کک بہنچ آہے اور بھر یہ دولوں مل کر مقام رُ وح کک اور بھر تی مینوں مقام ہے تک بھر میاروں مل کر مقام بھی تک بھر پانچوں مل کر مقام افخی تک پہنچتے ہیں بھرسار سے مل کر عالم قدس دوطرف کی کی طرف پر واز کرجاتے ہیں اور لطیفہ قالبیہ کو خالی جو طرجاتے ہیں یکن ابتدار ہیں یہ برواز بطراتی آحمال ہوتی ہے اور انتہا کیں بطراتی ہقام اور اس مدائی کے باوجود قالب میں سرق حرکت باقی رہتی ہے کیہ

رك، با مراج من المراج من المراج من المراج من المراج المرا

۔ تن حویلی تنے توں وجید بیلی جان مکان مہارا میں مرجکی آں ہے کرسٹ یں سیعٹ ملوکا یارا

مُوتُوافَّبُل آنْ تَسَمُوتُوا مُوت تفرقه بَيْت اِجْمَاعيكانام به مُوتُوافَّبُل آنْ تَسَمُوتُوا مُوت دوقسم برہے۔ ۱. موت اطلال ای

مفارقت رُوح از بدن ( رُوح کا بدن مے مُداہونا، موست إصطراری ہے۔

خواہشات بغن کامقاطعہ لذات جمانیہ سے اعراض اورگناہوں سے کامل توہموت افتیاری ہے اور ممؤ تُوا فَبُل اَنْ تَسَمُوتُ وَ اسے اس موت کی طرف إشاره ہے ۔

موت افتياري كي اقبام كسروت كي باقسين بن ا

جو البيت الله المحالة المحالة

ینی مبوک، پیکس، نیند پر ا مروت مربیل سفیدموت ) قابر پالین، چرکداس موسے التراقیت برهمتی بند بالدا اسے مفیدموت که دیتے ہیں ۔

یمنی دونون جہاں سے منہ بھیر

المحموت نور (سیاہ موت )

المحاف المحق و (سیاہ موت )

المحق و المحاف المحق و المحاف ا

یمن آئندہ کے لیے اُمیدوں اور ۱ موت نِت منسر اسٹرموت ) امنگوں پر بانی بھیر دینا اورطوال ل یمنی لمبے نصولوں کو خیر باد کہہ دینا بچ نکہ اس سے سالک کی خوشحالی اور سرسنری کا آغاز ہوتا ہے لہٰذا اسے سنرموت قرار دیا گیا گے

مَنْ فَلَمْ يَتَحَقَّقَ حَقِيْقَةُ الْإِسْ لَامِ وَلَمْ يَتَيَسَرُ حَمَالُ الْإِنْ مَانِ فَكَيْفَ يَخْصُلُ الدُّخُولُ فِي زُمْرَةِ الْعِبَادِ وَالْوُصُولُ إلى

## دَرَجَةِ الْأَوْتَادِمَعَ اَنَّ هٰذَا الْفَنَاءَ قَدَمُ اَوْلُ يُوضَعُ فِي اَطْوَارِ الْوَلَايَةِ الْ

ترجمہ ایس دفاکے بغیر انسالام کی حقیقت نابت ہوتی ہے اور نہ ہی کمال ایمان حاصل ہوتا ہے تو بچراللہ تعالی کے خاص بندوں میں داخل ہونا اور او تا دکے درجے تک بینجیا کس طرح میتر آسکتا ہے۔ حالا تکہ یہ فا بہلا قدم ہے جو ولایت کے دہا میں رکھا جاتا ہے۔

### شرح

حضرت المربانی قدس سرف العزیز فرات این کیجب کک سالک مقام فن میں قدم نہیں رکھنا آفاقی اور فضی معبودوں سے رہائی ماصل نہیں کرسکا اور نہی اسلام اور ایمان کی حقیقت ثابت ہوئکتی ہے کیونکہ یہ مرتب صفیۃ قلب اور تزکید فنس کے بعاصل مواج اس سے پہلے اگر اسلام ہے توصورت اسلام ہے اگرا میان ہے توصورت امیان ہے ۔ ای طرح تزکیہ سے پہلے نماز وزکوہ ، روزہ وج کی مجی صورتیں ہی ہیں نرکھیقت میں ۔

صورت إيمان اور صقيت إيمان فرق موت إيان تصديق الحكم مورت إيمان اور صقيت إيمان فرق شرعيه كانام ب حقيقت إكان شهود مصداق الحكم شرعب كوكها جاتاب.

معرودوں کی نعنی کرنے سے ایمان ابت ہوجا تاہے ، ظاہر تربیت کے یکم میں مرف ان آن معرودوں کی نعنی کرنے سے ایمان ابت ہوجا تاہے یہ ایمان کی صورت ہے لیکن کیان کی حقیقت انعنی عبر دوں کی نعنی پر موقوت ہے صورت ایمان کے توزائل ہونے کا البيت الله المحالة الم

كاحمال ب ليرضيت المان اس جمال معفوظ ب

ور ما رسائد الله المائد المائد المائد المائد المستنبي المراح المستنبي المراح المستنبي المراح المستنبي المراح ا ادا بول قريدان كي صورت بداور الحر بلا تكلف رغبت بنس كساتع ادا بول قوير ان كي حقيقت ب

مصرت شاه عبد العزيز محدث والموى رحمة التّدعليه في فرايا كرايمان كي دو

ا ایان منسدی ۱ ایسان مقیقی در تحقیق می دونتر رسید

ایمان میمیمتی مجمی دونتم پرسہے ؛ ۱ کہستدلالی ۲ کشفی

اور ہرایک ان دو تموں سے یا توحد و نہایت دکھتا ہے یا شرحد و نہایت رکھے وہ علم ایقین ہے اور جرند رکھے اس کی پر رو تھیں ہیں یاسٹا ہدہ ہے کہ اس کا نام عین ایقین ہے اور یامشہود ذاتی ہے کہ اسس کوئی ایقین کہتے ہیں ہے

منیت ایمان، المینان فلب کے بعد ہوتی ہے اور المینان فلب اللہ کے وکرسے حاصل ہوتا

ے - آلآبدِ حصر الله تَعظمان الفه الفه الوئت اور اس كى علامت يرب كم مؤن كا ول اس قدر منور من الله يسب كم مؤن كا ول اس قدر منور موجات كراس كى روشنى مين وفرش جنت و ووزخ اور المرالم مرزخ وغير إس كه سائن من منشف ، وجائين .

مِيساكَد مديث ِ مارث بن مالك إس أمر ربيشا بدست ملاحظ مو .

عَنْ حَارِثِ بِن مَالِكِ الْاَنْصَارِي وَضَاللُه عَنْهُ آكَ هُمَّرً بِرَسُولِ اللهِ مِمَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ لَهُ حَيْفَ آصِيَعْتَ

ياحارِثُ قَالَ آصَبَحْثُ مُؤْمِنًا حَقًّا فَقَالَ رَسُولُ الله صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَإِنَّ لِحُلِّ حَقِّ حَقِيْقَةً فَمَا حَقِيْقَةُ إِنهَ مَا يَكَ فَالْ عَزَفْتُ نَفْسِى عَنِ الدُّنْيَا وَآهْ لِهَا وَكَأْنِ آنْظُرُ إِلَى عَرْشِ رَتِي بَارِزًا وَإِلَىٰ آهْ لِهِ الْجُنَةِ يَتَزَا وَرُونَ فِينَهَا وَآهُ لِ السَّارِ يُعَذَّبُونَ فِينَهَا فَقَالَ عَنِهُ كَوْرَ اللهُ قَلْبَهُ لَهُ يُعَذَّبُونَ فِينَهَا فَقَالَ عَنِهُ كَوْرَ اللهُ قَلْبَهُ لَهُ

مديث مرا مديث من المان شهودى كوهى ايمان قيقى قرار ديا كياب قرآن من ممر كرم من الحالمان كولؤركها كياب الله ولي المدين المنوا يُحفّر جُهُم من الطلكمات الى المنورك دوسرت عام برارشادب نور على نور مي هدى الله لينوس, من يَسَاء عه اوريى وه لورايان جعب كم تعلق ارشاد بارى تعالى ب

يَسْعَىٰ نُوْرُهُمْ بَنِنَ آيندِنيهِ مِ وَبِاَيْمَانِهِمْ ٤

من وَلِلُولَاتِةِ وَرَجَاتُ بَعْضَهَا فَ وَقَ بَعْضِ أَذْ عَلَىٰ قَدِم كُلِنَبِي وَلَاسَةً بَعْضِ أَذْ عَلَىٰ قَدِم كُلِنَبِي وَلَاسَةً خَاصَةً بِهِ وَاقْصَلَى وَرَجَاتِهَا هِى الْبَيْ عَلَىٰ قَدَم نَبِينَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ جَمِيْعِ الْحَوَانِهِ مِنَ الصَّلُواتِ اَتَتُهُا وَمِنَ الْتَعِيَّاتِ اَيْمَنُهَا.

ترجمہ ، اور ولایت کے کئی درجے ہیں جن میں بعض در جے بھض سے افضل ہیں کیونکہ ہرنبی کے قدم پر ایک ولایت ہے جاسی کے ساتھ خاص ہے اور ان درجات میں سب سے بلند وہ درجہ جو ہمادے نبی (آپ پر اور تمام انبیار کرام برہماری طرف سے کامل درود اور مبارک ہیے میں ہوں کے قدم برہے ۔

### شرح

حضرت امام ربانی قدّس سرہ کے فرمان سے علوم ہوا کہ ولایت کے کئی درجات
ہیں جوایک دُور سے سے بلند وبالا ہیں واضح رہے کہ سلم پر قرآن وحدیث کے
واضح اشارات موجود ہیں اورکت بِصوفیار ہیں اس کی تفصیلات مذکور ہیں۔
ادباب طریقت کے نزدیک ولایت کی دوشیں ہیں۔
جو تمام موسنین کو ماصل ہے مبیا کہ ارشادِ ربانی ہے ،
اگر ایست عاممہ الله ولی الذیت کی استواکہ ارشادِ ربانی ہے ،

الظُّلُمَاتِ إِلَىّ المُثُورِلِهِ

البيت معولا الم

يه والايت عُروج وَرُزول اور فها وبقاسة عبارت سهاس كى تعربين عموفيا كرام نه يه والايت عُروج وَرُزول اور فها وبقاسة عبارت سهاس كى تعربين وكيت المعتبد في السحيّ وَيَقِتَ الْمِهِمُ الله نه يه مارن كالم حضرت خواجه باقى بالله رممة الله طليسك المعوظات بين والاير فيلم

كى دوشميل بيان كح كنى بي واقل دُلايت ابغتم وافر ادوم ولايت انجسرواف .

وُلايت، واوَكَى فَعْ رزبر كرماعة عن تعالى كرما قد بندس ك قرب وكم ہیں اور ولابیت <sub>(</sub> وا وَکے کرہ ازیر ، کے ساتھ ، اس صفت کو بجنتے ہیں حمیر سیسب سي بنده مخلوق ميم متبول بوجا ما سي اور دنيا و الساس كر كرويده بوجات بي خواق م تفرفات اس دوسری قسم میں و افل ہیں اور جربر کات مستعدلوگوں کوماصل ہوتی ہیں وه وُلايت ( بالفتح ) كا الرّ ہو تاہے يعن لوگوں كوان دونون موں ميں صرف إكم قتم ماصل بوتى بساويصن حضارت كوان دونول كاكافي جبئيه حاصل بهؤما بيصا وبعض ان ولورا قسموں کی ولایتوں میں سی کئی ایک کا جصته دوسری سے زیا دہ حاصل ہوتا ہے برشائخ نقشنديه رحم الله تعالى برميشه ولايت ، بالفتى كَا ولايت (بالكسر، بفله دم است اور اگر كوئى مقلدار شخص اس ونياسي أتمقال فرما تلب توولايت (بالكسر) كوليني كسي مخلص کے بیے چھیوٹرم آباہے اور وَلایت دبالغتی کو اپنے ساتھ لیے جا آ ہے اور تحمی كى نغرش كى مبارير ولايت ( الكسر ) كو ولى سے دلېپس كے لينتے ہيں كے إبل علم كوالتدتعالي نرمخنف ورجات سيدنوازلهب اخُوا وطلم ظامري مويا باطني مبيها كدارشا وسهد:

وکیذین اُونگواالیسلم در جات کے مصوفیار کا در کا است کے دو درج میں اقل ولایت کم خرکے اور مصوفیار کا میت کی دو درج میں اقل ولایت کم خرک دوم ولایت کم کی محمد کی دوم ولایت کم کی میں درج میں اور ولایت کم کی کے جار درج میں اور ولایت کم کی کے جار درج میں ا

يد درج صنب المارة معلى المسلام المسلام المسلام المسلام المسلمة المسلم ا

و مرا ورجرت به درجمبوب فدامناندیم کے الدنا ہر ہوا اور درجرت بالا کو اللہ تعالی نعیب کے مدید وارا جیا کا کہ آپ نے مدید وارا جیا کہ آپ نے مدید وارا کی اللہ کو آپ نے مدید وارا کی سے ،

مراپ معروبا ان حبیب الله ولا و حکورت مریف وای ب ، كنت كنت كنداً مخفیتاً فاكمبكت أن اعرف ف خلفت نور محديد بكر آپ كى تبيت من آپ ك ملامون كومبى يه درج عطا موا جيساكد إن كنتم

بِيُ اللهُ عَاشِيعُ وَنِي يُحْدِبُ كُمُّ اللهُ فَ سَعْنَا بِينَ مَنِي اللهِ عَلَيْهِ مِنْ اللهُ عَالَمَ اللهُ يُحُدُّونَ اللهُ عَاشِيعُ وَنِي يُحْدِبُ كُمُّ اللهُ فَ سَعْنَا بِسَهِ مِن

يد درج فاتيت مِحدي في المسلوت كسة في المسلوت كسة في المسلول المسلول المسلول المسلول المسلول المسلول المسلوب ا

له المخب دلہ ۱۱ کے النسآر ۱۲۵ کے ترزی می<sup>نایا</sup> سمے ہے العراب ۲۰۰ کے بنی اسسائیل ا

واضح رہے کر رور کا کنات میں اور میں ہور کا کنات میں اور میں ہور کا کنات میں اندائی کا بھی ہور کا کنات میں اندائی کا است میں ہور کا کہ ہور کی است میں اور کا کہ کا لات انسانی کا انتصار بھی آپ کی اِ تباع بہ برموقوت ہے۔ بعید کرام ، اہل بریت عظام وا ولیائے فعام کو تمام کا لات برموقوت ہے۔ بعید کرام ، اہل بریت عظام وا ولیائے فعام کو تمام کا لات برموقوت ہوتے ہے۔ کہ اتباع ہی کے دریعے میتر آئے اور آپ ہی کے شکوۃ نبوت سے فیضل یاب ہوئے ۔

مق اتباع کی دقیمی ہیں متابعت طاہری اور متابعت والمنی است علی است والمنی متابعت والمن متابعت والمن متابعت والمن متابعت والمن متابعت والمن متابعت والمن والمن

ومنع رہے کہ نبوت کا فی ہر و باطن کا باطن کے دنبوت کا فی ہر شریعت ہے اور نبوت نبوت کی فی ہر شریعت ہے اور نبوت کی میں میں اور باطن کو باطن سے اور باطن کو فل سے اور باطن کو کا ہر سے ایک فاص میں کی بنار پر اماد اور پر وکرشس ملتی رہتی ہے۔

نبوت كاباطنى ببلوييه كدالته تعالى فات كساته كابل النغراق وقنات كالم تغراق وقنات كالم تغراق وقنات كاقرى تعلق قائم بهوبائ المائه ولايت ب نبوت كافا برى ببلويه به كدى بالم تعلق كى بنار برعالم قدس سے جو تجه ماصل بو وه خلق فدا تك بطراق مناسب بهنجا و ياجائ تا كه بيك وقت فالق اور خلوق دونوں كساته تعلقات استام وجي بهن فوت ب لئدا به بنى ولى بوتا ہے ليكن برولى بنى بىس بوتا يوبكه ولايت فرق ولا الى الحك كانام ب اور نبوت نزول إلى الحلق كوكها جاتا ہے ۔

صوفیائے محقین کے زدیک سرور کائنات مناسطی و مام کالات محقیۃ و فعقیۃ کے اسل اور مظہر ہیں اور ساری کائنات کو تمام مراتب کالیہ آپ کے ہی وجود سے ماصل ہوئے ہیں۔ لہذا جُملہ انبیار و مسلین کی روحانیات نے آپ کی ہی دوخی سے ماصل ہوئے ہیں۔ لہذا جُملہ انبیار و مسلین کی روحانیات نے آپ کی ہی دوخی سے ماخذ فیصنان کیا ہے کی می مراتب ہی اقراع سے اخذ فیصنان کیا ہے کی می مراتب ہی اقراع سے اخذ فیصنان کیا ہے کی می مراتب ہی اقراع سے اخذ میں ۔ ۔

وَ كُنْهُمْ مِنْ زَسُولِ اللهِ مُلْتَمَسِنُ عَرَفًا مِنْ الدِّيمُ عَرَفًا مِنْ الدِّيمُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

اوریہ بات مجی محتاج ولیل نہیں کدا ولیار اللّٰہ دا نہیار کوام کے وارث اور نائب ہوتے ہیں اور انہیارہی سے نوت اس کی سے نوت کی سے نوت اس کی سے نوت اس کی سے نوت کی تو کر نوت کی تو کر نوت کی سے نوت کی تو کر نوت کی کر نوت کی سے نوت کی سے نوت کر نوت کی سے نوت کی سے نوت کی سے نوت کی سے نوت کی نوت کی سے نوت کی کر نوت کی سے نوت کی کر نوت کر نوت کی کر نوت کر

بابت يركهاجا تاب كه فلان ولى فلان بى كے قلب بريا زير قدم ہے.

ولاست البيار جداگانشان ولايت كامظهر جو الولوالفردم نبي ورُول ايک لطیف سے البیار جداگانشان ولايت كامظهر جو البياور وه اپنے ایک محیق لطیف سے تقام کمال کر بینچا ہے مثلاً آ دم علیہ التلام لطیفہ مرتب جی علیالتلام لطیفہ مرتب جی علیالتلام لطیفہ مرتب جی علیالتلام لطیفہ من سے اور سرورعالم من الدین والم سے المیفہ التلام کی الدین ہوتی ہے جو التی التالام کی مرتب بین بینچ بیں نیز ہرنبی کے لیے التہ تعالی کی صفات بین سے ایک صفت و رابر ابہ یم علیہ التلام کی مرتب التالام کی مرتب التلام کی مرتب التلام کی مرتب التالام کی کی مرتب التالام ک

اولیات کرام کے درجات و مراتب اور مناصب کے درجات و مراتب اور مناصب کے تعلق ج غلط فہریاں با تی جات ہیں اورجن کے خلاف بعات کے نام سے نظریں جیلائی جاتی ہیں ان کے از الدے یا احادیث مبارکہ سے جند شواہد مئی ناظرین ہیں۔

ی حضرت امام مبلال الدین یولمی رحمته التعطید نے اللا کی المحصن و عین میں قریبا بیس کتب رواة سے "ابدال" کی احادیث افرائی بیل اوران احادیث میں قریبا بیس کتب رواة سے "ابدال" کی احادیث نقل فرائی بیل اوران احادیث کے رُوات پر جرح کے بعدتمام احادیث کوحن اور بیح قرار دیا ہے تمام فرق لماؤث کو جمع کرنے پر ایک قرار ختار کہ بعنی ابدال کے وجود کوتسلیم کرنے پر ایک قرار ختار کرنے کا بدال کے وجود کوتسلیم کرنے پر ایک قرار ختار کی ابدال کے وجود کوتسلیم کرنے پر ایک وراث کی ابدال کے وجود کوتسلیم کرنے پر ایک قرار ختار کی ابدال کے وجود کوتسلیم کرنے پر ایک ایک وحد کا اسلیم کوت کے بیٹ کا بدال کے وجود کوتسلیم کرنے کے بیٹ کو سے کا بیٹ کا بدال کے وجود کوت کی بیٹ کی ابدال کے وجود کوتسلیم کرنے کے بیٹ کوت کی بیٹ کوت کی بیٹ کرنے کی ابدال کی ابدال کی بیٹ کوت کی بیٹ کوت کوت کوت کی بیٹ کے بیٹ کوت کی بیٹ کرنے کی بیٹ کوت کی بیٹ کوت کی بیٹ کوت کی بیٹ کوت کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کرنے کی بیٹ کی بیٹ کی بیٹ کرنے کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کرنے کی بیٹ کرنے کی کرنے کی بیٹ کرنے کرنے کی کرنے کی بیٹ کرنے کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی بیٹ کرنے کی کرنے کی بیٹ کرنے کی کرنے کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے کرنے کرنے ک

أست متفق بين اس موضوع برامام حلال الدّين موطى عليه الرحمة في ايك تعل كماب تصنيف فرماني من محرف الدّالُ على وُجُود الْفُطلْبِ وَالْأُولَادِ وَالنَّا اللَّهُ الدّالُ عَلَى وُجُود الْفُطلْبِ وَالْأُولَادِ وَالنَّا اللَّهُ عَلَى مُعَلَى وُجُود الْفُطلْبِ وَالْأُولَادِ وَالنَّا اللَّهُ عَلَى مُعَلَى وُجُود الْفُطلْبِ وَالْأُولَادِ وَالنَّا اللَّهُ عَلَى مُعَالِدُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُولِ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

صوفيار كيم بصل اصطلاحات كي صل توقرآن وحديث سية ابت بهي مِثلًا ولي اَبرار ،اُخيار ،نُجُبار ،نقبار ،عمد ، رجال اور ابدال وغير **ل**ا - **سي طرح عنوث بتسيّوم** افراد اوراوتا د وغیر ہاکی صطلاحات کتب صوفیار میں کنرت کے ساتھ موجود ہیں علام سيوطَى علب الرحمة في "الخبر الدّال" بين اس سلسك كي حينداها ديث نقل فرما في بين ا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ لِلْهِ عَزَّوتَجَلَّ فِي الْحَسْلَق ثَلْتُمِاتَةٍ قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلِلْهِ فِي الْحَلْقِ ٱرْبَعُوْنَ قُلُوْبُهُمْ عَلَىٰ قَلْبِ مُوْسَىٰ عَلَيْهِ والسَّكَاهُمُ وَلِيلِهِ فِي الْحَكَلَقِ سَنعَةٌ عُلُونُهُمُ عَلى قَلْبِ إِنْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلِلْهِ فِي الخالى خمسة فتكؤئه معلى قلب جبرسن كاليدالتكام وبله ِ فِي الْخَلْقَ ثَلْكَ أَقُلُوْ لُهُمْ عَلَى قَلْبٍ مِنْكَابِيُّلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلِلَّهِ فِي الْحَلْقِ وَاحِدٌ قَلْبُهُ عَلَى قَلْبِ إِسْرَافِيْ لَعَكَيْهِ المستكرم كه

حوليت الله المالية الم

قلب کی شل ہیں ؛ بی ایسے ہیں جن کے قلوب صفرت جرائیل علیہ اسلام کے قلب پر ہیں جین ایسے ہیں جن کے دل سیکائیل علیہ اسلام کے دل پر ہیں اور ایک اسب سے عبر کا دل حضرت اسرافیل علیہ السلام کے دل پر ہے۔

مسس كيدرقم طرازين:

وَالْحَطِيْبُ مِنْ طَرِيْقِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ مُحَكَّدٍ ٱلْعَبْسِىٰ قَالَ سَسِعِعْتُ الْسَحَنَا فَى يَقُولُ النُّقَبَاءُ ثَلْثُمِ اصَّةٍ وَالْغُنِبَاءُ سَبْعُوْنَ وَالْبُدَلَاءُ اَدْبَعُونَ وَالْآخِيارُ سَنِعَةٌ وَالْعَتَمَدُ اَدْبَعَتَهُ وَالْغَوْثُ وَاحِدٌ لَهُ

ترمبر اخطیب نے بطریق عبیاللہ بھے سالعسی س مدیث کا افراج کیا کہ میں نے کنانی سے سناہے کہ نعبار تین سویں بخبار ستر ہیں ، ابدال چالیس ہیں ، اخیار سات قطب چار اور خردث ایک ہے۔

عِن آنسِ رَجِي الله عَن آنسِ رَجِي الله عَنهُ مَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنهُ مَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ وَرَسَلُم كُن مَخْلُو الآرضُ مِسنَ ارْبَعِينَ رَجُع لَا مِثْلَ خَلِيْ لِي الرّحْسَانِ فَي هِمْ يُسْقَوْنَ وَبِهِمْ يُسْقَوْنَ وَبِهِمْ مُنْ الْبَيْنَ مِنْ يُنْ مَحْسَنَ الْبَيْنَ مِنْ فِي مَحْسَمَعِ الْمُؤْولَةُ وَالْبُدُوالِي الْبَيْنَ مِنْ الْبَيْنَ مِنْ فَي مَحْسَنَ عَلَيْ الْمُؤْولَةُ وَالْبُدُوالِيْدِ السَّنَادُهُ وَحَسَنَ عَلَيْهِ الْمُؤْولَةُ وَالْمُؤْولِينَ الْمُؤْلِقَةُ وَالْمُؤْلِقِيلُ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْنَ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْنَ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

مرجمہ، حضرت انس وضی اللہ عندسے روایت ہے کہ نبی کریم میں اللہ عند اللہ عند اللہ عند اللہ عند اللہ عند اللہ اللہ اللہ اللہ کے فرمایا چاہیں آویوں سے زمین خالی ندرسہے گی جوشل خلیل اللہ کے جیں ان کی برکت سے ان کی احداد کی جائے گی احدان کی وجہ سے ان کی احداد کی جائے گی

البيت الله المنت الله المنت ال

مجسم الزوائد مي بي كاس مديث كي أناوس مي

وامني رب كروريث إس كرسوا ومتعدد احاديث ين موجود بي اور عديث

مرب عود کی تفصیل مدیث خطیب سے مجی ثابت ہے۔ ابن عود کی تفصیل مدیث خطیب سے مجی ثابت ہے۔

بن - مدن ما معرب المستحدة المنه الم

بعض إسطالاهات مناصب كأغبوم

معنرت علايرسند شرمين جرماني مليه الرحمة فرمات بن كالفظ المطاولي ولي ورسني بن المسلم ا

الوّل، وَ لَيْ بَرْوَدُن فَعِيْلَ بِمَعْنَى فَاعِل مِنْ قريب اوْرُب ريحَے وال مِي إِمِلهم وات دِيْ

روم) وَ لِيَّ بَرُوزُنِ فَعِيدًا بِيَعِنِي مِعَعُولِ مِنْ مُغَمُّول مِنْ مُقَرِّب وَرِب كِهِ مِن مِيهِ مِنْ مُعَوِّلُ مِن مُعَوِّلُهُ مِن مِيهِ مِنْ مُعَوِّلُهُ مِن مُعَوِّلُهُ

عكولًا على المنظمة كے لحافات آيتركريم آلآ إِنَّ أَوْلِينآ اللهِ لَاحْوْفُ عَلَيْهِمْ وَلِاهُمْ يحنز ننون له مصمتفاد وثابت ہے اور جب مرتبهٔ ولایت کسی کے سیلے ثابت بواب تواین تمام لوازمات سمیت ثابت بومای و اِذَا شبت الشینی شَبَتَ بِحَدِيْعِ كُوَا زِمِهِ ﴿ وَالْحَسَمَدُ لِلَّهِ عَلَىٰ ذَالِكَ ﴾ و المنت عرب من قطب على كانت المنت ا بغيرنظام عالم بحنهين ملسكتا قطب كيسبب بى دائرة وجود عالم قائم ومحفوظ ربب ہے اور ونیا ملی آثار برکات اور طہور جنات اس کے دم قدم سے وابستہ ہوتے ہیں۔ اقطاب، القطاب، تطب كاكئى اقسام بين مثلًا تطب الاقطاب، تطب العرب العرب المرابط الدرس و المورث و ما من المرب المرب العرب الدرس و المورث و ما من المرب ا قطبُ الأَبدال ، قطبُ المدار ، قطبِ أهمي بعض طفراتُ نے بارہ اقطاب كے وجود كاقول كياسه والنه علم بالصواب . فرائض اقطاب كمصنت الامرتاني قبس سترة العزرين اقطاب فرائفن " قطبِ أبدال و اسطهُ وصولِ فيوض است كداوجودِ عالم و است آمستى دارو' وقطب ارشاد وسطة وصول فييض است كدبارشا وو بدايت عالم تعلق دارد ليُرتخليق وترزيق وازالهُ بليّات ود فيج أمراض وحصُول فيك وصحت منوط بفيوص مخصوصة قطب أبدال است واميان وبدايت و توفيق حنات وانابت ازسيئات نتيجؤ فيوضات قطب ارشا داست ترحمه اقطب الدال عالم ك وعجود اوراس كى بقاسة تعلق ركھنے والے المورمين

وصولِ فیض کا واسطہ ہوتاہے اور قطب ارشاد ہدایت وارشاد سے تعلق ام کور میں وصول فیض کا واسطہ ہوتا ہے۔ اس لیے بیدائش، رزق مصائب واُمراض کے دُور ہونے اور صحت وعافیت کے ماصل ہونے کا تعلق قطب ابدال کے فیض کے ساتھ مخصوص ہے اور ایمان و ہدایت اور کیکیوں کی توفیق اور گنا ہو سے توب کا تعلق قطب ارشاد کے فیض کا سیسے جہے۔

نقل سسرمایا ہے:

وَجَعَلَنَااللهُ تَعَالَى مُعِيَّ الِلْقُطْبِ الْمَدَارِمِنِ اَوْلِيَاءِ اللهِ تَعَالَى الَّذِي جَعَلَهُ اللهُ تَعَالَى مَدَالِلِعَالَمِ وَجَعَلَ تَقَاءُ الْعَالَمِ بِبَرْكَةِ وُجُوْدِهِ وَافِنَاضَيَهُ \* ترجمهٔ صفر خصر عليه التلام في فرايا الله تعالى في م كوقطب مدار كامعاون ترجمهٔ صفر غضر عليه التلام في فرايا الله تعالى في م كوقطب مدار كامعاون

تر بمر محضوت مرهیمه اسلام سے فرقیا المدتعان سے ہم و مصب مدرہ معادی بنایا ہے جواللہ کے ولیوں میں سے ہے جس کو اللہ تعالیٰ نے عالم کا مدار بنایا ہے اور جس کے وجُود کو رکت اور فنین رسانی کی بقا کا سبب بنایا ہے۔

غوت مصدر مبنى بلفاعل ہے اس كے عنى بين دُعاكر نيوالا، فرادِكر عوت ولا فراُرس، بكارنے والا جيسے غونث الْرَيج لِ وَ اسْتَغَاثَ حَسَاحَ وَاعْوَكَاهُ لَهِ

ے کے وقت ایسے ستجاب الدعوات انسان کے لیے لولا جا مسطلار صوفیار میں عوت ایسے ستجاب الدعوات انسان کے لیے لولا جا ہے میں کی طرف لوگ اضطرار کے وقت دُعا کے لیے محماج ہوں اور وہ اگر کھی بات میرقیم کمانے تواللہ تعالیٰ اس کوسیا کردیماہے عِن شالتٰدتعالیٰ کے إذن سے

متصرف في الاكوان والأوان عوقاسه.

و و م تیزم خلوق برتمام انعلات البید کاسب بوتا ہے اُولو العزم رُول کا اللہ کا سب بوتا ہے اُولو العزم رُول کا اللہ کا مناف اس کے منین سے محروم ہوتا ہے۔

حضرت الأمرة إلى قدس مسترة نفرايا المستران المسترة منها المسترة المسترة منها المستران المركم والمنات المركم والمنات المركم والمن المركم المان المركم والمن المركم المان المركم والمن المركم المان المركم والمن المركم المان المركم والمن المركم والمركم والمركم والمناكم والمركم والمن المركم والمن المركم والمركم والمركم

ترمبه ، قبيم انسان كال ، وناسي حب كوتمام اشيار كائنات كا قيوم لهي خليفترالله بنايا جا تاسيد تمام مخلوق كروج داور بقااور تمام كالات زلمام ي و باطني اسي كيسيد مناسب سنوند ...

برابید این عارفی کر بمنصب قیومتیت اثیا برخرو گشته است مکم وزیر دار د كرفهمات مخلوق را بأو مرجوع وكهشتراند"ك

ترمر، وہ عارف جو تیوم کے مرتبے پر فائز ہو آہے وزیر کا حکم کھی کھیاہے کم مخلوق کے اہم معاطات کا تعلق الی کے سے تعہوتا ہے۔

فَقِمُ کے دوم و تفلِقِمَ مب ذات اری تعالی ملی مجدہ الکری کیلیے فیوم کے دوم و بلامات تراس کامنی قادما ایک اید وملاقا ليغت بره موكالعني جرندات خود كالم مواور دومرون كوقائم ريحف والأمواورير الفظ حب كسى غلوق سم يب بولا جلسة قواس كالغويم منى مرا وليا جلت كا وراس کی آویل کی جائے گی مینی کسی شئے کے قیام اور بقاکا وسیلہ و فرلیہ۔
صوفیائے کرام نے وصاحت فرائی ہے کہ تیج می خوش قطب الاقطاب اور
فردکا ال تقریباً ایک جیسا مفہوم رکھتے ہیں ،صرف قیرم کی اصطلاح صفرت ام ربائی
قدس سرف سے شہور ہوئی اور آپ نے تیو سیت سے ملافت اور وزارت مُرا فیل ہے
جنانچہ آپ نے اپنے متعلق اور اپنے جانشین و و قالوت تی تصریح فرائی ہے۔ ملاحظ۔
اللہ علیہ سے تعمل منصبِ قیر ترتیت کے عطا ہونے کی تصریح فرائی ہے۔ ملاحظ۔
اللہ علیہ سے تعمل منصبِ قیر ترتیت کے عطا ہونے کی تصریح فرائی ہے۔ ملاحظ۔
اللہ علیہ سے منائیں ؛

معداز لمحه دید که بفرزندی مرحمت فرمودند و آن خبلعت أو را بتجسام پوشا نیدند و این خلعت زا کر کنایت از معامله قبیمتیت کُوده است که بتر بتیت و کمیل تعلق داشته له "

یعنی آپ نے واقعہ میں دیکھا تھا کہ آپ کے جم سے ایک فلعت دلباس، برا ہوگئی اور وہ آپ کے فرمت فرائی گئی مبدالرحمة کو مرحمت فرائی گئی وہ المحد ہو محد المرحمة کو مرحمت فرائی گئی وہ خلعت زا کمر معاملة قیر میت ہے جو کہ تربیت وکھیل سے تعلق رکھتاہے مساحب روضة الفیر قیر تیز نے درست دوضة الفیر قیر تیز نے درست وست المرسلین کی الدیائی قال میں اور می اللہ المرساد کی بر درساد مبادک ابد می اور منصب قیر میت کی مبارک با و دی لیے اور منصب قیر میت کی مبارک با و دی لیے

حواليت مكوُّا الله المام الما

كوكس كعبل مين بيداكرويابي

بعض مثائ نے ابدال کی وجہ سمتیہ یہ تحریر فرمائی ہے کہ وہ لوگ جوکد ورات بعض مثائی نے ابدال کی وجہ سمتیہ یہ تحریر فرمائی ہے ہیں۔ بعثر تیہ سے معلقہ ہو کر اپنی صفات و سمیمہ کوصفات ہمیدہ سے بدل یہ ایسی ہوئے ہیں۔
 ابدال جیم مثلائق سے پوشیدہ ہوتے ہیں اولیا ئے کا ملین کے سوانہ یں کوئی نہیں جانتا ہے۔
 نہیں جانتا ہے۔

یعنی جب کوئی ان سے مددلینا چاہے توسیحے "اسے اللہ کے بندو میری مدد کروی

واضح ہوکہ بزار نے اپنی مندیں صفرت ابن عباس سے اس مدیث کو مرفوعاً روایت کیا ہے اور مجمع الزوائد میں ہے کہ اس کے را وی تقدیمی اس کے مومی کی آیکد میں قاصنی محدبن علی شوکانی نے حضرت عبداللہ بن سعود رصنی اللہ عندسے مرومی یہ حدیث تکمی ہے :

إِذَا أَنْفُلَتَتْ دَاكِةُ إِحَدِكُمْ فَلْسُنَادِيَا عِبَادَ اللهِ آخِيسُ مَوَاهِ

یعن جب کئی کا جانور دیگل می کھوجائے تو اس کو بکار کرلیں کہنا چاہیے کہ اسے اللہ کے بندو اس کورو کو کیونکر اللہ تعالیٰ کے بعض بندے لیے

هذا ۱۹۹۰ میر العدار جانستره مرحم ملساجه ای کی کراهانی کا مصرت مین کام محمع الزوائد مساجه ۱۳۵۰ بر ۱۰ تخت الذاکین بھی ہیں جوعالم کو گھیرے ہوئے ہیں تو اُمید ہے کہ شاید وہ روک لیں۔ اس مدیث کوامام الوبعالی اموسلی اوطسٹ انی نے بھی ابن اسنی کی صدیر ہے۔ وایت کیا ہے .

حضرت مولاناروم مست بادهٔ قیوم رحمة الته علیمتنوی شریف میں فرملتے ہیں :

سخیر مردانت درعب لم مدد

آل زماں کا فغان طلب کوماں رسد

بانگ مظلوماں نر ہرجب بہ نوند

آل طرف بوگ رحمت حق مسیدوند

آل طرف بوگ رحمت حق مسیدوند

آل ستون ہائے خلل ہائے جہاں

آل طبیب بانِ مرض ہائے ہہاں

مِن اِذِالتَّجَانِ الذَّاتِيُّ الَّذِي لَا اِعْتِبَارَفِيَهِ لِلْاَسْمَاءِ وَالصِّفَاتِ وَالشُّينُونِ وَالْإِعْتِبَارَاتِ لَا إِلْاِيْجَابِ وَلَا إِلْسَكُب مَخْصُوص ؟ بَوَلَا يُتِهِ عَلَيْهِ الصَّلُوةُ وَالْسَكَمُ ترجمہ ، جبکہ تخبی ذاتی جس میں اسمار وصفات و اعتبارات کا کوئی احتبار نہیں نرایجاب دانتبات سے طور پر کوئی اعتبار ہے اور نہ سلب رہفی کے طور پر سرورِ عالم منل الدولاء کی ولایت و ولایت محقد یمالی صاحبہ الصلات سے ساتھ مخصوص ہے ۔

#### شرح

اسمار وصفات اورشینات و اعتبارات تصنوف کی دقیق اِصطلاحات ہیں۔ حضرت امام ربانی قدّس رز فر نعی محتوبات و قدّسیدیں ان کی تعریفیات اوران کے باہمی فرق کو واضح مزمایا ہے یفصیل وفترا و اُسکتوب چہارم کی شرح میں واحظہ فرمائیں۔ یہاں تھی اختصار کے ساتھ چنداشارات نذر قاربین کہیں۔

# اسمأ وصفات اور شونات اعتبارات كي تجث

واضح ہوکہ اللہ تعالی صفات و مجودیہ جینیتہ ، اِضافیہ ، صفات سِلبیہ اور ان اُما عظی سے موصوف ہے جو قرآن و مدیث سے ابات ہیں احادیث مبارکہ کے اشارات اور اولیا رکوام کے شف و شہو دسے بیتہ میل اُسے کہ اسمار وصفات کے طلال بھی ہیں اللہ تعالی کے اسمار وصفات انبیار اور طلاکہ کے مبادی تعینات رجہاں سے وہ فیض ماصل کرتے ہیں ، اور اسمار وصفات کے طلال رجا بات ، لیطیف اور و اسطے ، اِنْ ماصل کرتے ہیں ، اور اسمار وصفات کے طلال رجا بات ، لیطیف اور و اسطے ، اِنْ

مخلوق کے مب دئ تعینات ہیں ۔

امم، اس لفظ یا عبارت کو کہتے ہیں جس سے حق شبحانہ اسمار وصفات و تعالیٰ کی جانب اشارہ کیا جائے۔ وہ اشارہ با متباراس کی ذات کے ہوخواہ باعتبار اس کی صفات کے، ایم مٹم کی تحضیص کر اسپ او صفت موصوف کی مالت بیان کرتی ہے۔

إمماركي اصل راوبتيت بصاورصفات كي صل البيت تمام المارك المستقاق رب ہے ہے اور مجلوصفات کا انتخراج اللہ اور الرہے الماروصفات ذات كے جابات ہيں ح جلالي هي ہيں اور جبالي هي، ذات عق مجانه' وتعالیٰ ان مجابات میں ستوراوران سے ور آرہے جب سالک یاعارف ان عجابات برنظر والتاب تواس كاسامنا اسمار وصفات ك نشانات وآثار ہو اہے اور جب ان سے آگے نظر براحا آ ہے تو وہ راؤسیت اور الہیت کی معرفت کے بعد ذات جی وحدہ لاشر کی کا متیاز معلوم کر کسیت ہے۔ رو اللہ و اُللہ اُللہ ملمی کے بعد اُللہ اُللہ اُللہ کے انعال خیر متناہی اس کے اِنعال خیر متناہی اس کے اِنعال خیر متناہی المماير سنى بريكن ان سبكا مُرجع اصول تناهيد كي جانب موتله عجو تعدادين نالوندين انبي اسمارسنى سے تعبير كيا جاتا ہے جبيا كر قرآن مجيد ميں ہے وَلِلْهِ الْآسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوْهُ بِهَالَهُ يعنى الله تفالي ك إسمار عنى بين اس كوان إسمار سي يكارو . مدیث یاک میں ہے :

التُّ لِلْهِ تَنْعَةُ وَتِنْعِيْنَ السَّامِائَةُ غَيْرُواحِدَةٍ مَنْ آخصَنَا هَا دَخَلَ الْجَنَّةَ لَهُ ترجمہ: اللہ تعالی کے ننا نوسے ایک کم سو ہنام ہیں جس نے ان کا اِحصار کر لیا (ان کے عرفان وشہو دسے باطن کومنو رکرلیا) وہ جنت میں جائے گا۔ وید ان اس اسمار عنی کا مُرجع آ کھے ہمولوں کی جانب ہے جنہیں

ان اسمار المهار المهارة المعالم المعالم المعالم والماري المبارة المعالم المعا

تجمی کہا جاتا ہے وہ یہ ہیں .

را، حیات رق علم رق قدرت ربی اراده

(۵) سسع را، بصر (۵) کلام (۸) شکون

واضح رہد کوجب اساء وصفات غیر تمنا ہمید کا مرجع ننا نو

اسم جا مع اصولِ متنا ہمید کی جانب ہے تبدیں اسما برسنی کے تیے ہوالوا اسما تی محلفات بھی تا اور وہ اسم اللہ ہے جا میں جانب راجع ہوں گے اور وہ اسم اللہ ہے جو جامع ہے جیسع صفات اللہ یک اور شامل جانب راجع ہوں گے اور وہ اسم اللہ ہے جامع جیسع صفات اللہ یک اور شامل ہے جیسع صفات اللہ یک ور اللہ یک اور شامل ہے جیسع صفات اللہ یک ور اللہ یک اور شامل ہے جیسع صفات اللہ یک ور اللہ یک اور شامل ہے جیسع صفات اللہ یک ور

اعبان نابنه و اعبان مكنات مسته به معادا به المارا به المعالم المعالم

ہیں وہ صورتمیں با وہ منطا ہرجن میں اعاملم اللی میں ظاہر ہوتے ہیں اعمیان ثابتہ اور صورِعلمیہ کے نام سے موٹوم ہیں اور وہ منظا ہر حرِخارج میں ظاہر ہوتے ہیں اعمیان مرب میں در است در

مكنات وجُوعينى اورعالم شها دت كنام سي بكارس جلت بير.

مصنوت أمام ربّاني فدّس سرّو العزيز فرملت بين « الت وصفات " ذات آنست كه قائم بنغسه باست دوصفات « دات آنست كه قائم بنغسه باست دوصفات

قائم أوم، يعنى ذات إس كو كهت بي جوخود البني نفس كرساته قائم بواور صفات

جوای ذات کے ساتھ قائم موں لیکن دات پر زائد ہوں،

جهورملما*یتکلی*ن المانت کے نزدیک صفات زمین وات ہیں اور ندغیر ذات اليني لأهو ولا عَنيرُهُ بن اور بي فصل مي اور واقتر كے مطابق ہے۔

حضرت امام رّبانی قدس سندهٔ فرمات بین ،

ابل حق بوجود صفات قائل شده اند ووجود ايشاں را زايد بر وجود زات می دا نندخ مجانز را عالم بعلم می گویند و قا در بقدرست می دا نند و علی هسند ا التبباس ومغتزله وسنسيعه وطحما لنبغئ صفات قائل إندلي

ترجمہ ؛ اہل حق صفات کے وجود کے قائل ہیں اور ان کے وجود کو ذات کے ومود برزائد سيصفين ووح شبحانه وتعالى كوعلم كرساته عالم اور قدرت كرساته وادر

جانتے ہیں علیٰ ہٰدالقیاس اور مقزلہ وشیعہ اور حکمارصفات کی نفی سے قائل ہیں ۔ -ای معرفت میں آگے رقم طراز ہیں :

وبعضے ازمتاخ بن صوفیا کے بوصت وجود قائل اند درنفی صفات مبتر لہ وحكما رموافق اند .

يعنى متاخر ين صوفيه ميس مع محج وحصارت جو وحدت الوجود ك قائل بين صفات كنفى كي مسكر بن معتزله اور حكمار كي ساته متعنق بن ي

تعلقات ذات يامجات وجرالترك مرتب كانام سن بعيسني كيلونات لابوت كرماته رج أكمشاف اثيار كامبلك اثيات كأنبات كي جو إختصاصي علقات قام بين انى كوصوفيارى صطلاح بين ثيونات كے نام معموروم كست إلى يعبن صوفيا سف مرتبة احدثيث يا وحدث محصند كاس ملالى مرتبے دمراً وقات مبلال بحشیونات کامرتبہ قرار دیا ہے جس سے انحشات رجا بات المنت المحالة المنت المحالة المنت المحالة المنت المحالة المنت المحالة المنت ال

حضرت امام ربانی قدس سرف ف فرایا:

مشيونات اللى فرع الدمر ذات راجل شانه ك

بعنی الله تعالی کی شیرنات اس کی ذات کی فرع ہیں ۔ واضح ہو کہ ہر تملی کے لیے ایک حکم خاص ہے جسے شان مجتمتے ہیں جق تعالی حبب بندے بر تحلی فرما تاہے تو اس کجل

کانام حق کے اعتبار سے شان البی رکھا ماتا ہے اور بندے کے اعتبار سے حال یا امر

كيت إن

اعتبارات مترع ہواور اس کے فہورات کا وہ مرتبرجر ذات ہے اعتبارات مترع ہواور اس کا وجود خارجی نہ ہو مرتبر اعتبارات کہلا آب میں شعد جوالد کے تھم انے سے دائرے بغتے چلے جاتے ہیں یہ دائرے اس معلیج آب کے اعتبارات ہیں۔ یہ مرتبر عارف کے اور اگ سے ورار ہوتا ہے اور مرتبر ذات کے ساتھ خاص مناسبت رکھتا ہے۔

سائک کافلال صفات کی و مول ولایت میزی ہے اور مقا بلین ممبر کے کے وضول ولایت کری ہے اور یہ انبیا مے عظام کی ولایت ہے اور شین ات کی وضول ولایت ملاء اعلی ہے اور ذات کی وصول مرسب

کھالات نبوت ہے۔

 ⊙ صفات شیونات اور اعتبارات کے درمیان فرق یہ ہے کوصفات کا وجود خارجی ذات پر زائد ہو آہے اور مرتبۂ شیونات مرتبۂ فات سے منتز عہد اور وجود خارجی نہیں رکھتا اور مرتبۂ اعتبارات بھی ذات سے منتز جے اور وجود خارجی نہیں کھتا لیکن شیرنات در امتبارات کے درمیان فرق با متبار اور اک عارف ب العین اگر عارف مشاہدہ کو سے کا اللہ مشاہدہ کو سے کا اللہ مشاہدہ کی اللہ مشاہدہ اللہ کا اللہ مشاہدہ المتبارات الیکن اس مشاہدة المتبارات کے نام سے نیکا الم اللہ کا اللہ مشاہدة المتبارات کے نام سے نیکا را مبائے گا۔

واضح ہوکہ مرتبہ خلال سے قریب صفات بلدہداور مرتبہ صفات سے مرتبہ شیونات افضل ہے اور مرتبہ شیونات سے مرتبہ احتبادات اعلی ہے کیو کہ اسس آخری مرتبہ میں عادیت وات جی شمانٹ کے زیادہ قریب ہوجا تہ ہے ہی وجہ ہے کہ یہ مرتبہ قرب وات اور بے کمینی کے مبہ سے عادون کے اوراک سے بہت بلذہ ہے۔ واللہ اعلی بھٹی تھر ایکان

مِن وَجَوْفُ جَمِينِهِ الْحُرُبُ بِهِ الْوَجُودَةِ وَالْمُؤْفِقِ الْمُحُودَةِ وَالْمُؤْفِقِ الْمُحْدَا الْمُعَالَمُ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقُ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقُ الْمُعَالُ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقُ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقُ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقُ الْمُعَالُ الْمُعَالُ عُرْبَانًا وَيَحْفَقُ اللّهُ الْمُعَالَ الْمُعَالُ عُرَبَانًا وَيَحْفَقَ اللّهُ الْمُعَالَ الْمُعَالُ الْمُعَالُ الْمُعَالَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

ترجمہ ، اور ملم ومین کے کاظ سے تمام وجودی اور اعتباری مجابات کا افر جانا اس مقام میں حاصل ہو تاہے اس وقت وسل پری طرح نصیب ہو تاہے اور وجد درجر محان میں نہیں مجد مقبقتاً حاصل ہوجاتاہے۔ المنيت المنافقة المنا

#### شرح

عارفین کے نز دبک اللہ تعالی کے الکار وصفات انبیار اور ملائکہ کے مبادی عینا رہاں سے فیض اخذ کیا جاتا ہے، ہیں اور المار کے ظلال باقی مخلوقات کے مبادی

تتعینات ہیں ۔

ظلال سے مرادسائے نہیں ملکہ ظلال مخلوق کے وہ لطائف ہیں جن کو اسمار و صفات سے بوری مناسبت ہے اور اسی مناسبت کی وجہ سے اسمار وصفار کافیمین مخلوق تک پہنچیا ہے اسی بنار پر الطبیفوں اور سینتوں اور واسطوں کو سیمھنے میں کہانی کے لیے ظِلال کہا جاتا ہے۔

ممکن ہے کہ ظلال سے مُواد وہی جابات ہوں جن کا ذکر صدیث حجابات ہوں جن کا ذکر صدیث حجابات ہوں جن کا ذکر صدیث حجابات میں آتا ہے ؛

جَابُهُ النُّوْمُ لَوْكَ شَفَهُ لَاَحْرَقَتْ سُبُعَاتُ وَجَهِمُ مَا انْتُهِلِ النُّومُ لَوْكَ شَفَهُ لَاَحْرَقَتْ سُبُعَاتُ وَجَهِمُ انْتَهِلِ النَّهِ النَّارُ لَوْكَ شَفَهَا لَاَحْرَقَتْ سُبُعَاتُ وَجَهِمُ حَجَابُهُ النَّارُ لَوْكَ شَفَهَا لَاَحْرَقَتْ سُبُعَاتُ وَجَهِمُ

ولایت محری ولایت محری مرتب میں تمام مجابات کے الحق جانے کا مطلب ملی مرب کے ہوجاتے ہیں اورعادف مرب کے موجاتے ہیں اورعادف مرب کے موجاتے ہیں اورعادف مرب کے موجاتے ہیں اورعادف مرب کے میان میں بینے جاتا ہے اور اورج ہے تعداد آمداور قابلیت جذب فیض کے عادف اس مقام کی تجابیات کا محل ہوجا تا ہے۔ وَبا طبر التوفیق

حجابات کی دقسیں ہیں ۔ حجابات نوانی وحجابات ظلمانی

حجابات زُرانی سے فراد صفات بسفیونات اور اعتبارات کے ظلال ہیں۔ حجابات ظُلمانی سے فراد عالم امکان اور کدورات بشریم ہیں۔ حجابات لوانی کی دوسمیں ہیں .

مجابات وجودیه ، طلال ایماًو حجابات و مجودید و حجابات اعتبارید صفات ہیں . عبابت اعتباریز طلال مشیونات و اعتبارات ہیں ۔ زوال عبابات بمبی و وقتم پرہے جابات بندانی کا زوال ملی و روال علی او جودی کی اندانی کا زوال از زوال علی ہے رویان میں او جودی کی کیونکو صفات و شیرنات در بیان میں رم ہیں جب ایس مبیاکہ ایک عارف نے کہا ہے گئے تو چنال کو د مرا زیر و زبر کونیال کو د مرا زیر و زبر کونیال کونیال وخط زُلف توام نیست خبر کونیال وخط زُلف توام نیست خبر حجابات بظلمانی کا زوال ، زوال عینی و جودی ہے کے عالم امکان کی کٹافتوں اور

عجابات عما ی ۵ روال ، روال میں وجودی ہے جمعالم امکان فی سافعوں اور بشرتیت کی کدور توں کا اردا کہ جوجا آہے۔

صل على المن اسكانغوى عنى بدير بهنه وصل ابديره و الاقات، اصطلاح و المن عنى المن المن الله و المن الله و المن الله و الله

کانام ہے بینی ذات جن کا ایسامشاہدہ جس میں کسی اعتبار زائد کا نشان نہ ہو۔
سخترت انام ربانی رحمت اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ولایت محقدیم کی صاحبها الصّلوٰت و
السّلِمات کے مرتبے میں عارف کو مقصور عقیقی کا وصل تحقیقی میتر آیا ہے نہ کہ وصل گھانی
یعنی الیا وصل کہ عارف اور ذات کے اسار وصفات وشیونات کے درمیان نہ حجا آب طلانی حائل رہتے ہیں اور نہ حجابات اورانی ۔

آپ فرملتے ہیں اگر کوئی خش نصیب اس مقام کو ماصل کرنا جا ہتا ہے تو اس کو لازم ہے کہ میں است کو اس کو لازم ہے کہ میں است من الله علیہ کا مل متا بعث ومجتب اختیار کرے اور سنت و منزوجت کی بابندی کا خوب اہتمام کرے کیونکہ بیمقام عزیزُ الوجُودہے۔

مَّن وَهٰذَاالتَّجَلِيُّ الذَّاقِيُّ بَرُقِيُّ عِنْدَاكُثْرِّ الْمَشَانِخِ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالَىٰ سُنِحَانَهُ

ترحمه : اوربيتحلِّي ذا تي اكثر مشائخ : اللهُسُجانهُ وتعالىٰ ان بدِرهم فرماتے ،

کے نزدیک برقی ہے۔

#### شرح

حضرت امام رَباني قدس مَرُهُ العزيزِ فرمات مِين كه "تجلّي ذاتي" جو ولايد يُحِبّ مَدّ علىصاجها الصّلوت والسّلمات كے ساتھ مخصوص ہے اكثر مشائخ طریقیت کے نزديك برتى بيعيني بيحلى اوّلا اور بالذّات مروركائنات عليه التينة والثنا كوحاسل ہے دیجر خمید آبسیا ، کرام کو توسال اور تمام اولیا رکوام کو تنبغا اور ورا شامیسراتی ہے اور ولايبت كالبنذتزين وأكمل تزين درجه ولايت محدّية على صاحبها احتىلوات كا در<del>جه ب</del> مباحب فتوحات محكيت اورصاحب مرأة الاسرار نے ولایت کی چاراقسام بیان فرمائی ہیں اور ولایت مجتر پیطلقہ کوتصر فات صوری معنوی کے درمیان جامع اور مقرون ببخلافت قرار دیا ہے اور فرمایا ہے کہ اس کے فاتم صنرت سيدناعلى المرتضلي رضى الله عند بين بينانجيه اس جبت سع آب كايد قول نقل فرمایا ہے کہ اگر اہل كتب اربعه حمع موجائيں توميں ان ميں سے ہراكي كوان بى كى كَمَا لِول مست محم كرسكما بول. (والله اعلم بحقيقة المحال) صوفیار کے زویک ذات احدثیت سے پہلے مرتبر ظہویا نظر تلى والى مرقى اوربيجهت تجلى كو تحب تى ذاتى كهاجاتا كي ذاتى مي سائك وعارف فاني مطلق موكر اينے علم وشعوراور اور اک سے بے تعلق ہو كر اپنے س کو بلانعیتن جبیانی ورُوحانی اطلاق کے رنگ میں یا تاہے ۔اور بقا با متاب<del>کے مربت</del>ے ير فائز ہو کر کمال توحيد عِيانی اور وصل عُريا نی کا مقام حاصل کرليتا ہے۔ وہالٹالتوفیق يتحلّى ذا تَى جب كواكثر مشائخ رحمُهم الله تعالى نے برقی كہاہے اس كامطلب يہ ہے کہ بیتحلی ان کے نزدیک وائمی نہیں کمبکہ برق (اسمانی بجلی) کی طرح تقوش ویر

البنت المحدد البنت المحدد الم

حضرت امام رَبانی قدس سرو دقم طراز ہیں کداکا برنقشنبدیہ نے اپنی کہا ہوں ہیں اس امری صراحت فرمانی ہے کہ ہماری نسبت تمام نسبتوں سے بالا ترہے وہ نسبت

\equiv مَكُولِ عِ ه البي**ت**نا ≡ \$ (AA) **€** E حفنُورِ ذاتی دائمی مُرا د کیستے ہیں ۔ سنسبت كى مبندى وررزى كاراز ايند راج النهائية ال سبب المعتمدية المستان المسال المستان المست انتهائیں حطافر مایاجا آہے وہ اس سلسلے کے سالکوں کو ابتدار میں ہی وہ وہ سیتے ہیں۔ان بزرگوں کے نزدیک جذبہ دوقعم پہنے جذبہ بدایت اور جذبہ نہا بہت کہ س سيد بين مذبة بدايت سالك كوابتداريس اسيد دياجا أسيد اكدطالب جذبه كى لذت يحصيفيرمرنه مات بيخاحة بلاكروال صرت نواحة شا القشيند كارى قدس سرة كى طرف سے اپنے مريدوں كے بيلے صدقد اور خيرات ہے بىلساز نقشبنديد ميں البُراجُ النَّهُ أيَّة في السّب أيَّة كي المعللاح كي صل يدب كدييلسلة خصوصي طور يرطر إن صحابه كرام ليهم الضوان برقائه بعنى اس مرح مواضيل وارومدار صبت اور متبت يرب كيونك صحابه كرام في محصور من النطية والم كي بها صحبت بيس مي وه فيوض و بركات ماصل کریا تھے جو و وسروں اولیار کرام کو اُنتہا میں بھی صاصل نہیں ہوتے۔ يدام المحظ رب كدط بقيت كتمام سلاس عاليه كي بنيا دعقائل ال سنت اوراتباع صحابرية قائم بي للكن دوسرت تمام سلاسل نزديك افاده وكستفاده رياضت يرموقون بياور حضرات بقشبنديد كانز ديك يد دوات صُحبت رُيخصر بيدي مناسبت اس سلسك كافاصدكم لاقى بدع واسلاق دُور بے سلاس سے متاز کرتی ہے۔ صنرت المربان قنس مرة فرات بي أنَّ وَلَا يَتَهُمُّ مَ مَنْ وَلَا يَتَهُمُّ مَ مَنْ وَلَا يَتَهُمُّ مَ مَنْ وَبَاللَّهُ عَنْهُ مُنْ وَعِلَا لَهُ عَنْهُ بعنى اكار نقشبنديه كي ولابيت حضرت سيّد ناصدّ إنّ اكبرينّي الليّعِند سيمنسوب سبع. واضح رب كريد نرگ دوطريقول سي اسسبت جامعة بك بهني اين. أقلاً ..... بطريق مضرت مستيدنا صديق اكبر صى الله عنه

البيت الله المركب المحالي المحالية المح ثانياً .... بطريق حضرت سيدنا على المرتصني رضى التدعنة بحبكه دوسر وسالس كرزك صرف سيدناعلى المرتضى رضى الله عند كرطراق واسسل ہیں ۔ بتبيغ تمسر لم المن قام پريشه وار د موسكة ب كجب اكارتقشند بداور دُوريك تمام طرنقيوں كے اكابر تھى حضرت سيدناامام حبفرصادق رضى التّدعنه مص منسوب ہیں تو پیر تقطیبندی اکا برسے انتیاز کی وجد کیا ہے ؟ تو اس شبر کا جواب بیر ب كبصرت المام معفرصا وق رضى الله عنه انسبت صديقي اورنسبت علوى وواول کے جا مع تھے ۔ آپ کے وجُودِمعُود میں یہ دونوں سبتیں مُدا کا نہ شان کے ساتھ او پذریکھیں اور آپس میں اختلاط واست زاج نہ رکھتی تھیں ۔ مبیا کہ دریا نے جمنا وگنگا وونوں انکھے بہتے ہیں مگرایک وور سے سیطیعدہ رہتے ہیں . سے ساقال اللهُ تَعَالَىٰ مَسرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيكَانِ بَيْنَهُمَا بَزْزَحُ لِآيَيْعَيَانَ الْهُ بين أن و من من المربع في من العن المن الله المربع حاصل ہوئی کہونیکن بیصنول بھی حضرت میں ناصدیق اکبرجنی الٹروننہ کی ولابیت ہی سے مقتبس بيعبيا كدحنرت شيخ البسعيدا بوالخيرقدس ترؤ كومضرت سيدنا صديق كمبسه رصى الله عنه كامجته مبارك يهيض سه ييسبت ماصل هو في تقي جنانجه اس خبته مبارك كا اكم المحرا آج مك دار النصرت شهر برات مين موجر وسياية ئِبَةِ، لبَكِسِس مِانحَى مُتبَرِكِ چِيزِكِ ذريبِعِ القاستِ نسبت و بلید ممیردا فیمن کاستاد قرآن وسنیت سے ابت ب مبیا کا حضرت

أوسعف على بسسيتنا وعليه الصلاة والسلام ك كرته مباركه ك مست مصرت

البيت المحالي المحالية المحالية

بیقوب علی نبسین وعلیہ الصلام و السلام کی انجھوں کی بینائی و ابس لوط آئی یا جیسا کے حضور طلب ان واپس لوط آئی یا جیسا کے حضور طلب الفران اللہ عند ال



نحتُوبائيرِ خر<u>ت ش</u>خ عَبُل المجتمع ولاشخ مُحمِّق لامُزَى الطِّيبَا



مُوَخُوعِكُ رُورْح ونفس كى تفصيلى مجنت اوليائے مُنتهكين ومروعِين اوليائے مُنتهكين ومروعِين

፟ቖ፞ቚ፟ጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜዹቑቑፙኇጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜ

# مکنوب ۲۲۰

منن سُبَعَانَ مَنْ جَمَعَ بَانِنَ النُّوْمِ وَالظَّلْةِ وَقَرَنَ اللَّامَكَ إِنَّ الْمُتَبَرِئَ عَسَنِ الْجِهَةِ مَعَ الْمَكَ إِنِّ الْحُاصِلِ فِي الْجِهَةِ فَحَبَّبَ الظُّلْمَةَ إِلَى النُّوْرِفِعَشِقَ الْجِهَةِ فَحَبَّبَ الظُّلْمَةَ إِلَى النُّوْرِفِعَشِقَ بها الح

ترجمہ: پاک ہے وہ ذات جس نے نور (رُوح ) خطمت انفس) کے ساتھ جمع کیا اور لام کانی (رُوح) کوجو کہ جہت راطران، سے بُری ہے مکانی انفس) کاجس کوجہت حاصل ہے ہم قرین رساتھی، بنایا اور طلمت کو لؤرکی نظر پیس محبوب کر دیا لیس وہ نور اس ظلمت پر فریفیۃ ہوگیا۔

### شرح

نفش مضمون کی شرح سے قبل رُوح اور فنس کی حقیقت کے تعلق کچھ مواد قارئین کی خدمت میں میش کیاجا تا ہے ناکہ اس محتوب اقدس سے صنمون کو سیسی نے پس ہولت ہو۔ وُباللہ التوفیق ۔ و روح کا افظ ریخ کی مشت ت ب ریخ کامعنی ہواہی، اورح کا افظ ریخ کی منی ہواہی، اورح کا افظ ریخ کی منی ہواہی اسے ہوائی منی ہوائی ہوں کہ افغ رائی ہونا ثابت ہونا ہو ہے اور اس کا اول صنموم ہے اور یار کو واؤسے بال دیا گیا ہے لہذا اس کی جمع اُرواح آئی ہے اور ریخ کی ریاح ، رُوح حبم اورانی ہے اور ریخ جبم متحرک جیسا کھ امام ابوالقاسم نہیلی رحمتہ اللہ علیہ نے روض الانف بین اس کی تصریح فوائی ہے۔ الانف بین اس کی تصریح فوائی ہے۔

و رئي المورد على المولية من المبت المقلات المعلام التي المواتي الموات

إِنَّهُ حِسْمُ مُخَالِهِ إِلْمَاهِيَةِ لِلهَ الْجِسْبِ الْمَاهِيَةِ لِلهَ الْجِسْبِ الْمَحْسُوسِ وَهُوجِسْمُ نُوْرًا فِي عَلَوِئَ حَفِيفَ حَيْ الْمَحْسُوسِ وَهُوجِسْمُ نُوْرًا فِي عَلَمِي عَلَوْئَ حَفِيفَ حَيْ مُتَحَرِّكُ يَنْفُدُ فِي جَوْهَ رِالْاَعْضَاءَ وَكَيْدِي فِينِهَا مُتَحَرِّكُ يَنْفُدُ فِي الْمَنْفُونِ سَرْمَيَانَ الدَّهُ نِ فِي الزَّنْشُونِ مَسْرَيَانَ الدَّهُ نِ فِي الزَّنْشُونِ وَالنَّارِ فِي الْفَحْدِمِ لَهُ وَالْمَارِقُ فِي الْفَحْدِمِ لَهُ وَلَيْنَا وَلَهُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَلَهُ وَلَهُ وَلَيْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ الْمُعَلَّالَةُ اللَّهُ اللَّالَّةُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

ترجمہ ؛ بے شک رُوح ایک جم ہے جواپنی است کے اعتبار سے اسس محسوس غنصری جم کے عالمات ہے اور وہ جم افرانی ، علوی ، ہلکا ، زندہ اور متحرک محسوس غنصری جم ہے کا است اور جم میں اس طرح ساست مجم جم ہونی نامی ہونا ہے جمید گلاب کے میں اگل میں پانی ، زنتون میں تیل اور کو کمے میں اگل میران ہوتا ہے۔ "

المام فخرالدين رازى عليه الرحمة في الم حق كامسلك أيس بيان فرما ياسه : مِنْهُمْ مَنْ قَالَ الرُّوْحُ غَيْرُ مَوْجُوْدٍ فِي دَاحِسِلِ الْعَالِمَ وَلَا فِيْ خَارِجِهِ وَغَنَرُمُنْصِيلِ فِي دَاخِيلِ الْعَسَالَيَمِ وَكَا فِي خَارِجِ ﴾ وَغَنْرُ مُتَصِيلٌ وَلَا مُنفَصِيلِ عَنهُ لَكِنَّهُ بَالْبَدَنِ تَعَلَّقُ التَّذِيثِيرٌ والتَّصَرُفِ لِه

زحبه ابعض محققين كاقول بدير ووح مزعالم مين داخل بدنه ارج مين مز د اخل مین تصل ہے نہ خارج میں، نی تصل ہے نہ اس سے نفصل ، لیکن انسانی بدن سے سے کانعلق تدبیروتصرف کاہے۔

علمات تكليين صوفيات مقفين جمات اشراقين وسشائين كايبى سلك كدرُ وح حم مادى ، خيرُ فانى ، محدث ، متجزى ، نوانى ، الامكانى اورعد مرمير وسيد

◎ گروح کے مادی ، مُحدث اورغیرفانی ہونے کامطلب پر ہے کہ وہ قدیم نہیں کہ اس کے لیے ابتدار بے مگراس سے لیے انتہانہیں عنی اس کے لیے فنانہیں جلیا کم مسيفيس ب خُلِقَ الْاَنْرَوَاحُ قَبْلَ الْآبْسَادِ بِالْفَى عَامِلُه یعنی ووحن وحمول سے دو ہزارسال پہلے بید اکیا گیا اس بین سے اس

ك يدخدوث زمانى مى نابت بوكيار

 متجزی ہونے کامعنی بیسبے کی جمع و تفرقہ سے تہم ہے جوصفات محدثات سے ب يغوائه مريث بويعلى صابها الصّلات الْآزُوالْ جُدُودٌ مُحَدَّدُهُ لَهُ

> لەتنىكىبىرمىڭاج ە كه كتاف الرُّوح صد م بهم مطبوه مرس ا میحی بخاری صد ج

📰 محوَّاتِ چ 3€(01·)€=

یعنی رومیں جمع کیے محمئے نشکر ہیں اور بیصریث ُردّ ہے ان صوفیائے ومُجردیہ کا <del>جس</del>کہتے ہیں کد رُوح واحدہے اور مکنات اس کے مظاہر ہیں مالانکر مدسیف کے مطابق ھر و وج ایک الگ اور شقل میشیت رئیستی ہے نیزجو ہر فردھی نہیں که صدیث بی کافرای موت ك وقت رُوح كى يفيت يه بها في كني ہے كه تَسْفَرَقُ فِي جَسَد لَهُ كَرُميّت

کے بدن میتفسترق ہوجاتی ہے۔

 نورانی اس لیے کہا گیا کہ یعالم ام سے ہے اور نفخ طائک ہونے کی وجے نۇرىبىدادرىمىشىتول سىد زيا دەلىطىدىك سى كى نىغى شىنى اس شى سىلىلىدىن بىوتلىپ جیسے انسان کا نفنج اس سے طبیعت ہے اور لام کا نی کا اطلاق مجاز آہے۔ روح کی اس كيفنيت كوحديث ميں لفظ عمار سے بيان كيا كيا ہے۔

 جو ہر ہونے کامفہوم یہ ہے کہ عرض نہیں اور مجرد جونے کامطلب یہ ہے کیشف نهيس مكر حمر بطيعت بداوراس كيكل وصورت استمم كيشكل وصورت كيون شابر ہوتی ہے جب کی رُوح ہے اور رُوح کی جبمتیت متعدوا مادیث سے ابت ہے © رُوح سے تعلق موجُده سأمنس كايہ نظرير بھي فلط ہے كدرُوح حيات كى ايك

ترقی پزشیکل کا نام ہے۔ ا*س نظریئے سے مطاب*ق حبم اور روح میں دُونی کا فرق باتی نہیں رہت جس سے نتیجے میں حیات أبعد الممات كا انكار لازم آئے گا، دہرتیت كى بنیا دىجى

ىيى عقىدە جەيجۇڭفرصرى اورىشركىبىتى جەد ، ۋالعَياد بالله تِعَالىٰ

بهرحال رُوح ايك لا يُونى تطيفه بيحسب وكو التدتعالى ني حباني مجتّ مين ودلعت فرايس

> كه شرح الصدورص م المواسب لدنيه صلى ج (

البيت المحالي المحالي

وہ ذی شعوراور مکرک الحقائق ہے لیکن خود کیفتیت و اُفیتیت سے ورار ہے محققی سے یہ اُنہ کے محققی سے میں میں کہ ان ا یہ مجی فرمایا ہے کہ انسان کی تین رُومیں ہیں ۔ رُومِ نباتی ، رُومِ حیوانی اور رقبہ اِنانی انسانی روح کونفس ناطقہ اور نفس مدر کہ مجمعے ہیں ۔

و کے دوبدن کے دوبدن کے دوبدن کی الادی علیارہ میں اللہ می

"مخققان کابل که کشف اینان مختب ارسان و نیوت است برا ند که روح را دو بدن است عنصری ومثالی در نشار و نیا ببدن عنصری تعلق دار د و بعد فساد این بدن آب مثلا لے لطیعت و در حشر باز ببدن عنصری تعلق تعلق خام گرفت و بهر را معلوم است که بدن عنصری در خواب مطل می شود و آن بدن و گیر است که در خواب دیده می شود ، درین حالت و و ح مشال من در و بدن می کمت و الله بدن عنصری فاسد شود و و و ح در عالم مثال سیر می کدن عبائب عالم مکوت را ، روح ممش اولیآر و رحیاست مثال سیر می کدن عبائب عالم مکوت را ، روح ممش اولیآر و رحیاست مثال سیر می کند عبائب عالم مکوت را ، روح ممش اولیآر و رحیاست و این بدن عنصری می تواند و این بدن عنصری می تواند و این می شود " ا

 انسان کوخول میں جو بدن انسانی نظر آ تا ہے وہ یہ بدنے نصری ہیں لکہ وہی مثالی بدن
ہوتا ہے اہذا رُوح دونوں پدنوں کی تدبیر کرتی ہے درنہ بدائے نصری فاسد ہوجائے
اور رُوح عالم مثال میں عالم مکوت کے عجائبات کی سرکرتی ہے اوراولیائے کاملین
کی رُوحیں اس بدنِ عُنصری سے ذاتی اختیار کے تحت بھی جُدا ہوئے تی ہیں اس مالت
کو اصطلاح تصنوف میں انتزاع اور اِنحلاع دالگ ہونا، کہتے ہیں اور اس تم کی ہوت
اختیاری ہوتی ہے جس بُرشق وریاضت سے قدرت و اِختیار حاصل ہوسکتا ہے۔
و و کروہ ہیں۔ ان میں سے ایک
د و کروہ ہیں۔ ان میں سے ایک
د و کروہ ایک ہی ہے جے رُوح
کے بارے میں الرقیقیت کے دوگروہ ہیں۔ ان میں سے ایک
د و کروہ ایک ہی ہے جے رُوح
کی میں جی اور اُرواج جُزئیہ ای رُوح اوّل ، نوراول کے العن ظ

دُور اگروه تُعدُّدِ ارواح كا قائل ہے اور تبعیق میں علیحدہ رُوح كا وجُده انتا ہے جو بلا إنعكاس ذاق لطافت كى الك ہے اور وہ دلیل میں مدیث آلا رُواح دُور دُور دُور مُرج مَن كَمَ اللَّهِ مُرج مُن كَمَ اللَّهِ مُرج مُن كَمَ اللَّهِ مُراح اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّهُ اللَّهُ

اس امریس می اخلاف ہے کہ اُرواح کی تخلیق اجبام سے پہلے ہوئی یا اجبام کے بعد قرآن و حدیث سے سے اختا ہے اجبام سے کے بعد قرآن و حدیث سے صراحتا ہی ثابت ہے کہ اُرواح کی تخلیق اجبام سے قبل ہوئی ۔

بن بن به امرطے شدہ ہے کدرُ وح کی سیح تعربی اور اس کی قیقت و و مکسیب کرم ایک تاریخ اور اس کی قیقت و و مکسیب کرم ایک تاریخ کا رہے کا کم کرنا ایک تکل تریخ کی ارسے باور فوان باری تعالی کیسٹ کو دَنات عَنِ الدُّ وَج مُن لَمْ مِنَ الْعِلْمِ اللَّا قَلِين لَا لَهُ كَلِي اللَّهُ وَحُ مِنْ الْمِنْ وَمَنَا اللَّهُ وَمِنَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الل

کامیابی ہے صوفی اِمحقین کے ایک گروہ نے رُوح کی ماہیّت اور اس کے تعین کے بارے میں توقف کو امرِ محموُد و قرار دیتے ہوئے کہاہے کہ ہم ماہیّت رُوح کی دریافت کے بیام کقف ہی نہیں پھر اس برغور وخوض کی کیاضرورت ہے۔ اس کی حقیقت اللہ تر مبانا ہے ہی کانی ہے کہ ہم قرآن وسقت کے مطابق وجود رُوح کا اقرار کرلیں ۔

© دُوراگروه حکمائے مغرب کا ہے ان میں کججو لوگ توبرے سے رُوح کے قائل ہی ہیں ہیں ان کے زدیک انسان صرف جبہ عُنصری کا نام ہے جس میں اعضار و تو کی کی ترکیب و نظیم کے ساتھ زندگی کا سلسلہ قائم وجادی ہے۔ اس سے زیا وہ وہ انسان کی وہ خلوقا کوئی حقیقت لیے ہیں کہ انٹرونالمخلوقا ہونے کی نفی ہوتی ہے۔ ان میں سیعض نے رُوح کی حقیقت یا لینے کا وعولی بھی کیا ہے جبکہ ان کی تحقیق کا انحصار سائنسی اور ما دی اصولوں پر ہے جس میں ناکا می لیقینی ہے وہ یہ بھی کہتے ہیں کہ رُوح ہمزا وہ ہی کو کہتے ہے ان کا خیال بھی باطل محض ہے کیونکہ رُوح عالم اُروح کی خیقیقت کا نام ہے۔ آج کل لورب میں رُوح عالم اُروح کی خیقیقت کا نام ہے۔ آج کل لورب میں رُوح عالم اُروح کی خیقیت کا نام ہے۔ آج کل لورب میں ماضرات اُرواح کے مراکز بھی قائم ہیں جہاں رُوح ن کو بلاتے اور ملا قائیں کر اتے ہیں ماضرات اُرواح کے مراکز بھی قائم ہیں جہاں رُوح ن کو بلاتے اور ملا قائیں کر اتے ہیں یہ بھی ایک خوش نہی ہے۔ مراکز بھی قائم ہیں جہاں رُوح ن کو بلاتے اور ملا قائیں کر اتے ہیں اُرواح سفلیہ خبیشہ کا کر شمہ ہو۔ (والٹ دُواک میں ہوں یا عالم نامُوں کے شیاطین و رواح سفلیہ خبیشہ کا کر شمہ ہو۔ (والٹ دُواکم)

ی بیقیت بھی ناقابل انکارہے کوسوفیائے عادفین ہیں مجھ صفرات ایسے بھی گرائے ہیں جو صفرت رُوح کی ماہیت سے آگاہ ہیں ﴿ گواس بارسے ہیں ان کاعلم قلیل اوراجالی ہی ہوں بیصفرات رباضت ومجاہدات اور مراقبات ومکاشفات کے ذریعے اللہ تعالیٰ کی طرف سے شف مراز کی توفیق پاتے ہیں اور انسانوں کو چررت ہیں ڈال دینے واسے عُلوم کا اظہار فرماتے ہیں ۔ البيت الله المنت المناه المنت المنت

مرمیم کسی چیز کی ذات یا اس کے وحرد کو نفس كماما تاب يفظ نفس نفاست سے يا تنقش سے، اگر نفاست سے موتواس كا معنی ہے نفنیس اور لطبیف . تو نفاست اور لطافت کی وجرسے اس کونفس کہتے ہیں اگر تنفنن سے ہوتو اس کامطلب ہے" سانس کا آناجانا" توسانس کے آنے اور جانے کی وجہ سے اسنِفنس کہا جا تاہیے 'اگرنفن سے مُرا د رُوح لی جائے تو ہیر اسمعسنی ہیں درست ہوگا کہ نبیند کی حالت میں اُر و حسم سے نکل کرحیلی جاتی ہے اور ہیداری کی حا میں واپس لوٹ آتی ہے لیکن اصطلاحی طور ریفنس سے مُراد اخلاتی ذمیم کی وہ کیفیات بن حوفطرى اورخلقى بين شلاحيد ، تُجِلْ ، تُحَبِّر عَنيبت اوركذب وغيرها . © نفس سے مُراد ایک ایبالطیف وجُود ہے جواخلاقِ ذمیمہ کا مُورْ د ومُصْدَر ہو جیسا کہ کان <u>سننے</u> کا ، ٹاک سُونگھنے کاا ورزبان چھنے کا مرکز ومصدرہے ۔ <sub>ا</sub>سی طرح نعش اخلاق ذميمه وعا دات ر ذيله كالطيعث اور رُوحا ني محِلّ إنّصا ف ہے بُعنس كانيفهوم قرآن سے نابت ہے اِنَّ النَّفْسَ لَا مَنَارَةٌ كِالنَّسُوعِ بِعِنْ مِسْ رِانِّيوں كَاحْكُم دینے والا ہے نفس کی اسی تشریح سے رُوح کے تعلق بھی یہ نظریہ قائم کیا جاسکت بے کہ وہ اخلاق حمیدہ اور اعمال صالحہ کا نورانی محِل آنصا من ہے اوران کا مرکز ومور اورمصدرہے اور اس ہستدلال کی نبیاد بیتقیقت تسلیم کی جاسکتی ہے کہ قرآن پاک میسی جَمُومِي کسي ُ بدي يا گناه کو رُ وح کی جانب منسوب نہیں کیا گیا۔ وُاللّٰہُ اعلمُ بالصُّوابُ صوفيات كرام كززويك فنس عالم خكن كي لطالف ميس ا ایک لطیفه به خیرس کامقام صبم انسانی میں وسط پیثانی یا ناف ك يتفسل بيد بجونفس عاوات بتفليد مي علوب بواكس كونفس اماره كبيته بس إن

النفس لَآ مَدَارَة بِالسَّوَ فِي جِفْس رياضت اور مُجاهِه كُوْرَى رَكَتَ معيّت بِ النفس لَا الله الرَّا الله وال كونفس لوآمه بهت إلى النفس بِ النفس اللَّوَا مَدَة لِه عِنفسُ مَرَى وَمُطْهِ الوَصلاح وفلاح كما على مراتب برفائفن الوما الله اللَّوَا مَدَة لِه مِحْدَة فِي مَلْمَ اللهُ عَلْمَ اللهُ مُلْمَدَة مُحِدَة فِي مَلَى اللهُ مُلْمَدَة مُحَدَّق فِي مَلَى اللهُ مُلْمَدَة مُحَدَّق فِي اللهُ عَلَى اللهُ مُلْمَدَة مُحَدَّق فِي مَلَى اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مَلْمُ اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مَلْمَدُ اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَد اللهُ مُلْمَدُ اللهُ مُلْمُ اللهُ مُلْمُ اللهُ مُلْمَدُ اللهُ مُلْمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ مُلْمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ مُلْمُ اللهُ الل

مالد الفرس موات مواركزديك البيس، نعنس كي جبت بعلالت في مالات المحمد الم

نفس اور و حقیقت احده بی کفن اور دو حقیقت و احده بی ایمنسیدین اختلان اور و حقیقت و احده بی ایمنسیدی اور دو حقیقت احده بی ایمنتلغه جمبورهمار کے نزدیک دو و اور نفس ایک بی حقیقت کے دو نام بین، ان میں تغایر باعتبار صفات کے ہے ندکہ باعتبار دات کے باعتبار آولیت کے دُوح ہے اور باعتبار بغیر سے ایعنی نفخ کک، ورشتے کا مال کے پیٹ میں می کوئن کے وقت توروح ہے لیکن کسب مصیتت کے وقت اس بنفس پیٹ میں میں بیٹ کے دو ت اس بنفس کا اطلاق ہو تا ہے دوس الا نفٹ فیک شک

فرائى ہے اور كتاب الرُّوح ميں ملا مرابِقِيم نے صراحاً فكريا كو إِنَّ النَّفْ سَص والرُّوْحَ مُسَسَعًا هُمَا وَاحِد عَلَى وَهُمُ وَهُمُ الْحَجُمْهُ وَهُمْ الْحَجُمْهُ وَهُمُ يَعِيٰ فَسَ اور رُوحِ عَلَى كابِمِ المركى دليل قُرَان سے مابت ہے۔ الله يَسَوَ فَ الله يَسَوَ فَ الله نَفْسَ حِينَ مَوْتِهَا لَه يعنى الله تعالى مى رُومِي قَبِينَ مَوْتِهَا لَه يعنى الله تعالى مى رُومِي قَبِينَ مَوْتِهَا لَهُ يَسَوَ فَ الله يَسَالَ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَى الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَى الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَى الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَى الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمَ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمُ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمَ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمَ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمَ الله عَلَيْهُ وَالله وَسَلَمُ الله عَلَيْهُ وَالله وَسَلَمُ الله عَلَيْهِ وَالله وَسَلَمَ الله وَسَلَمُ الله وَالله وَلَمُ الله وَلَمُ الله وَسَلَمُ الله وَلَمُ الله وَلِمُ الله وَلِمُ الله وَلِمُ الله وَلِمُ الله

 البيت المحالية البيت المحالة ا

اورنفس کورُ وج کامحبُوب وحشوق بناکر اِسمی اِتَصال ومجاورت کے ذریعے رُ وج کی مبلا اور حیک میں اصنا فرکر دیا ہے کیونکہ

> م لطافت بے کٹا فت حب وہ پیدا کر نہیں کتی ہے ۔ چین زنگارہے ایت نئے باد بہب اری کا

جبياكة أئينساز كرد آلود أيمني صفائي اورلطافت بيداكرن كي إس كوخالًا و كرتيه بيرحتي وظلمت ترابيه كي دُكراس شيشے كاصورت نورانية ظاہر جوجاتي ہے ليس جب حكمت الليدكا تقاضا مواكد رُوج انساني كواپنے قرب وارتقار كي منزلوں برِفاً من كياجائة واس ذات بن تعالى في مروس سي يهدر وحور كوبيد اكرك ان كوفوق العش يعنى عالم امر (لامكان ميں قيام نجشا اوران كى توجبات كوعالم قدّس (مرتبئه و توبب ، كى نبأ مبذول كردياليكن عن بحرر ومول كوذات كے مزيد قرب ووصال كى تمنائقى اور كال قرب وصال كوالتُرتعالي نع مُجابد اور ياضت برموتوف كرركها تحا اورعالم قدّس, عالم أمر مجاهب كمشقتون اوكلفتون سيرباك تعابنا بين التدتعالي نيه روح كوعالم أمر كى نور است تكال كرعالم خلق ميں انسانى بدلوں كظلمتوں ميں واخل كر كے فسل كى مخالفنت برمامور كردياحتي كوروح البيضعشوق ظلماني انفس مين فنائيت اورب تعزاق کی وجسے اپنے شہو دِ قُدُسی ابنی لورانیت ولامکانیت کو فراموش کرکے صحاب ہیں ( د ) ئیں جانب والوں، سے کل کر اصحاب ثنال ، بائیں جانب والوں، میں شامل ہوگئی۔ حصرت بُرعاق لسندر رحمة التُرعليه اسى بنار ير روح كوخطاب فرماتي بي ٥ چهند باشی از مفت م خُود حبُدا

چنند باشی از مفت م خود حربدا حبنند گردی در بدر اے بے حیا

چنانچ اگر رُوح اس معثوق ظلمانی انفنس کے استغراق میں باتی رہ کرفنا تیت مطلقہ کک نے بہنچی تو اس کے لیے لقینیا ہلاکت اور ربادی ہے کمیز ککہ وہ اپنے وطن اسلی سے دُور رہ کر اپنی استعداد وصلاحیت کے جُر ہر کو ضائع کر رہی ہے۔ اسی ضرورت کی کمیل کے البيت الله المحل ا

لیے اللہ تعالی نے وٹیامیں آبسیار و اُولیار کو اپنی طرف وعوت دینے کا فرلصنہ سونیا اور لوگوں کو ان کے وطن اسلی کی یا د دلانے کاحکم دیا بھٹرت مولا ناروم رحمتہ اللہ علسیہ نے فرمایا ہے

> ہرکے کہ دُور ماند از اصل خوکیش باز جُرید روزگارِ وسسل خولیشس

چانچ اېل سادت کی رُومیں انبیار واولیار کی دعوت پر اپنے وطن صلی کی طرف عروج کر جاتی ہیں اورصالحین و مقربین کامقام حاصل کولیتی ہیں اور اہل شقاوت کی رُومین دوت سے اعراض و انکار کرکے اپنے معشو قِ ظلمانی مینی فنس کی قید میں رہ کر فاسق و فاجر اور عاصفی کا فرکا خطاب باتی ہیں ۔

و رُوح نے بدن انسانی میں داخل ہونے کے بعد عشوق طلمانی ہفس میں فنا ہو کر اپنے وطن اسلی رالاسکان کو فراموش کر دیا تھا ذکر لطائف اور شیخ کامل کی ترجہات کی وجہ سے جب رُوج انسانی بیدار ہو کر عالم فندس کی جانب پرواز کرتی ہے تو نفس کو بھی اپنے ساتھ عُروج کر اتی ہے اور ئیر عُرُوج کے دریعے فنس کو مطمئة بناویتی ہے جنانجی نفس مزکن و کُول ہر ہو کر زول کرتا ہے اور رُوح مزید کا الات قرب حاصل کرنے کے سیاے عُروج کرتی ہے اس طرح یہ دونوں اپنے اپنے مقامات اصلیتہ و کھالات مُلیّة پر پہنی کو وج و زُروان فنی رَجُندی ورُوحی سے مشرق ہو کرفا و بھائے نفسی ورُوحی سے مشرق ہو کہا ہو جائے ہیں۔

© رُوح کے بُدن ہیں تغراق کی دقیمیں ہیں۔ اگررُ وح اپنے وطن اسلی کو کمل طور بر فراموش کر دے اور کچھے بھی یا ونہ رکھے تو ایسے لوگوں کوطائعنہ ناسیاں ہے تے ہیں اور اگررُ وح اپنے وطن اسلی کو بالکل فراموش نذکرے تو ان کو طائعنہ سابعت ں کہا جا تا ہے۔

اوليائج هلكين مربوعين

جب نف مطمّنہ ہو کرفنا وبقاسے شرف ہو کر اپنے مبدار فیصل کب بہنچ جائے تو اس وقت ایسے خطر صادتی آبہے۔

 ولی دوصال سے خالی نہیں ہوتا یا توعالم قُدّس میں اس کا ستمزاق و استہلاک رعوجی دائی ہوگا یا دعوت خلق کے لیے رحجُ ع انزول ہوگا۔

م المرتفس اور رُوح کا اُستغراق وعُروج دائمی ہوگا اور زُر ول نہ ہوگا تو وہ ا<del>ولیاتے</del> متبلکین ہیںسے ہ**وگا** اور اگر نعنس زُر ول کرسے اور رُوح عُروج میں رہے تو ایسا

شخص اوليائے مرغومين ميں سے كه لائے گا۔

سے ہیں اور قلب سنوری دمنی کوشت، حقیقت جامعہ اقلب لودی کے ساتھ ظرفیت و مظروفیت کا تعلق رکھ تا ہے اور قلب لوری، رُوح کے ساتھ خاص سناہ کا مامل ہے کیونکہ یہ دونوں حالم اُمر کے کیطیفے ہیں بردار فیاص د ذات بن ہسسے تمام فیوض و ربکات اوّلا رُوح پر وارد ہوتے ہیں اس کے بعد رُوح سے قلب فری

ر اور قلب نوری سے قلب صنوری پر اور و ہاں سے نفس پر عیر بواسط ہفت کو اس جوارح یک پہنچتے ہیں اور جو کم ہواس وجوارح کاخلاصہ نفنس میں موجود سے اس سیے ان کو تفاصیل نفس کہا جا آہے۔ (وُ اللّٰهُ اعْلَمُ © الداک ہو کسس سے مسئلے ہیں عُلمائے معقول کا اختلاف ہے عض کے زدیک 



مُعَوَّبِائِيْهِ مِرْاعَبْلُالْحَكَمِیْظِ اِنْجُانان ﷺ



مَوْضُونِ الله مَعْدِينَ مَا الله مَعْدِينَ الله مَعْدِينَ الله مَعْدِينَ الله مَعْدِينَ الله مَعْدِينَ الله مُعْدِينَ الله مُعْدِينَ الله مُعْدِينَ مِعْدُوبُ مِلْ الله مُعْدِينَ مِنْ الله مُعْدِينَ الله مُعْدَينَ اللهُ مُعْدَيْنَ اللهُ مُعْدَينَ اللهُ مُعْدَ

*ক্ষিক্তিক বিভাগৰ বিভা* 

ریزظر محتوب البید نازنظر محتوب حضرت امام رتبانی قدس سرفر العزریف مرزا علیدی محتوب البید منافانان رحمته الله علیه کی طرف صاور فرمایا آپ کے نام حضر اقدس رحمته الله علیه کی طرف صاور فرمایا آپ کے نام حضر اقدس رحمته الله علیه برختوب ارسال فرمائیجن کی تفضیل یہ سب و فقراق ل میں محتوب ۲۲۷ - ۲۲۷ - ۲۲۷ اور دفتر دوم میں محتوب ۲۲۷ - ۲۲۷ اور دفتر دوم میں محتوب ۲۲۷ - ۲۲۷ اور دفتر دوم میں محتوب ۲۲۷ - ۲۲۷ اور دفتر دوم

وتعله مرزاعبدالرحي خانخانان كو والدكانام مرزا بيرم خان تحاراب ولا وست مليم المراسفرالمنطقر ١٢ و مبطابق ١٥٥ و بروز جمعرات قطب البلا ولا ہورمیں امیر خبال خاں میواتی کی صاحبزادی کے نطبن سے متولد ہوئے . انہی جار برس کی عرضی کداپ کے والد کو گجرات میں قبل کرویا گیا، وار ثوں نے آپ کو اگرہ نتقل كرديا بجال آب شابى ماحل من يرورش بات رب فرابوش سنحالي تو علیمی سلسلے کا آغاز کیا۔ اپنے وقت کے نامور علمار وفصنلا رخاص کرعلامہ فتح التٰد تَيرِازْي، قاصَى نظام الدِّين نَجْشَى ، مولا مَا حَدَامِين اندجا بي جَحيم على كيلا تي رحمهم التُدتعاسط يبهم أم عين سي علوم ظاہري وباطني وفوائد كثيره ماصل كيے عجوات كے معروف بزرك كشيخ وجيبه اللدبن شيخ تصالله علوى رحمها التدتعالي سيدرُوما في طريقية اخذكيا . اميركېيرم وشمس الدين غراندي كي صاحبزادي سے نكاح كيا . اكبرك وور حكومت ميں اعلی حکومتی عہدوں پر فائز رہے ۔ گجرات سندھ اور دکن کے بعض علاتے آپ کے بالتقون فتح ہوئے اکبرنے آپ کوخائنخاناں کالقب دیا ایک متبحرا ورقابل عما د عالم ہونے کے ساتھ سائقہ آپ حربی ، فارسی ، ترکی ، ہندی اورسے مندمی لغات کے بھی ڈبروسنت ما ہرتھے ۔ اپنے وُور میں صاحبُ القمروُ السَّیٰعِف کے لقب سیے پہوار هوستة البينية ؤورمين آب مبيهامتنوع القنفات الدجامع الفضائل هخض شايد مى كوئى مو، ١٠٢٧ صير دبل مين أعت ال فرايا ( نزعة الخوامسيد و مَا شرالاً مرار)

## مكتوب ٢٣٠

من بَعَانَا اللهُ سُبِعَانَهُ وَإِيَّاكُمْ عَنِ الْمُعَرِّ الْمُعَرِ وَعَلَى اللهِ مِن الصَّلُونِ وَالْمُحَمِّ اللهُ عَبْدًا قَالَ المِينَا اللهُ عَبْدًا قَالُ الْمِينَا اللهُ اللهُ عَبْدًا قَالَ اللهُ اللهُ عَبْدًا قَالَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَبْدًا قَالَ الْمِينَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَبْدًا قَالَ الْمِينَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَبْدُ اللهُ الل

ترجمہ ای مسجانہ و تعالی ہم کو اور آپ کو اپنے صبیب ببیب سیالبشر منل شایندونم رجواسود و احمر احبّن و انس پاسیاہ فام و شرخ فام پاعرب وعجم ، کی طرف مبعوث ہوئے، کی طفیل ایسے قال سیے جوحال سے اور ایسے علم سے جوحمل سے خالی ہو نجامت بخشے راتمین اور اللہ تعالیٰ اس بند سے پر رحمت از ل فر ماستے ہو اس دُعا پر آ مین کہے ۔

#### شرح

میکتوب مرزا عبدالرحیم خانخاناں کے ایک محتوب کے جواب بیں صادرہوا جس بیٹ بیخ ناقص سے طریقہ افذ کرنے کی ممانعت اور شیخ کا مل سے ملازمت فی البيت مكوُّت المجهد البيت المجهد البيت المجهد البيت المجهد البيت المجهد البيت المجهد البيت المجهد ا

یا رَبِ لَا تَسَلُبُ فِی حَبَهَا اَسَدُا وَیَرْحَهُ اللهُ عَسَبُدًا مَثَالَ اُمِیْنَا یعنی اسے الله ایلی محبّت کو ابدیک میرے دلسے وُورنہ فرما وررح کر اس شخص پرجومیری کسس وُعاپر آمین کھے۔

منن اغِكَمْ ايُهَا الْآخُ الْقَابِلُ لِسِطُهُ وَ الْمَا الْأَنْ اللهُ الْسِطُهُ وَ الْمَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَتَعَالَىٰ اللهُ اللهُ

ترجمه : اسكالات كفهوركى مستعداد ركفنه والديجانى إ الله تعالىب كى متعداد كوقوت سفعل مي لائر أب كوجاننا بعابية كدونيا آخرت كيميتي ب

شرج

الممرّبان فتس سرة المسنحاني في مزاعبدالرحيم مانخانان عليه الرحمة كي يك

المنت الله المنت المناه المنت المنت

ايك دُحائيهُ كلمه ارشاد فرمايا سيدكد الله تعالى في آب كي ذات مين وكالات ولايت بالفوة ركع بوست بي ان كوبالفعل فلمرفر لمائة اكداب كى استعداد وقابليت عمل طور برسلمن أجائ بعر وعلك بعدايك حديث تربيث براعيت كفهوم كاطرت توجه ولائى كم الدُّنيك مَنْ رَجَعَةُ الإلْخِسرَةِ لِه رُونِيا آخرت كي تعيتى سب الركامطلب يب كحبم انساني تخم ولايت كي تعيي ب الشخص بإنسوس ب كرس في تعيي ين فقرو والبيت كانتج ندبويا إحمال صالحه كاياني ندديا اوراس كي انتعدا وكوضائع كوديار اس کے بعد ارشاد فرمایا که زمین شخ ناقص و شیخ کامل کی بیجان کی کستعداد کوضائع کرنا دو طرح برسب ایک بر کوزمین انتعداد می مجرزایا دوسرے برکر خراب اور فاسد بیج بوديا اوركجه نهبيك احدفاسد تخم لودينا زياده نقضان وه بساور فاسديهج بودينا يهب كطريقه كمي شيخ القس مع ما كرا يكيونكه يشخ اقص وه ب عجر خوابشات بغنس كے ابع بوسنت وشربیت كامكمل پابندند بورطر بق مُومِلُ اور غيرموسل مين متياز ندكرسكتا مو، طالبول كي متلف استعدا دات كونه تمحمت موظام ب كرجب يضيخ ان امحديس اوراك وفهم ندركها موكا تونقينيا مبذبه كي استعداد واسك طالب كوسكوك كدراست براور سلوك كى التعداد وإلى كومندب كيطريق برادال كر ان كي قابلتيت كوضائع كر دسه كاس طرح خود مجي محراه ب اوران كوتمي كمراه كرر دے کا کیون کے طالبوں کی انتعدادیں مختلف ہوتی ہیں بعض محبوب مجذوب أور محمدی المشرب بوت بین اور معبن محت سلاک اور خیر محدی المشرب ہوتے ہیں ان ہیں ہر دوسکے زوق مسبق اور اور اور دوفا لقت بھی مُدامُدا ہو سَتِے ہیں بینانج محبوابول كاسبق بحوار اسم ذاست ومراقبات بين أكدمذر بالفتوة سي بالفعل بوجا البنيت الله المرابع المحاسبة المعربة ا

اورُ مِبِّن کاسبت تکرارِ نفی اثبات اور مجامده وریاضت بین تاکد آبهین تزکیهٔ نفس کی ثنان ماصل موصل ہے۔

مشيخ الاسلام صنرت خواج عبدالله انصاري رحمته الله عليه فرمات بيكي كشف م م فتر م

فراست کی دونشمیں ہیں ۔

ا قُ لِ کشف و فراست اہل مُوع و ریاضت جیسا کہ ہند کے جگی بہمن اور کُونان کے کی بہمن اور کُونان کے کی بہمن اور کونان کے کئیں کے کئیں کے کئیں کے کئیں کے کا در کے فرسیعے اُمور کوئیں کے کشف پر قا در ہوجا ہدوں کے فرسیعے اُمور کوئیں کے کشف پر قا در ہوجا ہے ہیں .

دوم کشف وفراست ابل صلاح ومعرفت جوط البان حق کی متعدادوں میں تمیز کر استحقے ہیں اورجائتے ہیں کدکون شخص حصول معرفت کی قابلیت رکھیا ہے اور کون نہیں رکھتا یہ بی وہ نفوس قدسیہ ہیں جوشیخ کامل کہلانے کے ستی ہیں جائج امام ربانی جید دالف تانی رحمته الله علیه فرماتے ہیں کھ:

اَلْشَيْخُ الْكَامِلُ الْمُكَمِّدِنَّ إِذَا اَرَادَ تَرْبِيَةَ هَذَا الْكَالِبِ وَتَسْلِبُ وَالْمُكَمِّدِنَّ الْحَتَاجَ اَوَلَا الْلَّ اِزَالَةِ مَا اَصَّابَ مِنَ السَّالِلِهِ النَّاقِصِ الْحَابَ مِنَ السَّالِلِهِ النَّاقِصِ الْحَ

یمی شیخ کا ال مجل جب طالب کی تربتیت کرنے اور اس طریق پر میلانے کا الاوہ کرتا ہے تو بہتے اس خرانی کو ورکرنے کی ضرورت محسوس کرتا ہے جو اس کوشنخ ناقص سے پہنچی ہے بچراس کی زین قلب ہیں اس کی استعداد کے مطابق عمدہ تخر فرالت ہے بنب اس سے ابھی کھیتی اس کے امید والبتہ ہوتی ہے جب یک ایک ایات المیت اللہ میں اس کے ایات اللہ اللہ مست کے اللہ مست کے اللہ مست کے اللہ میں مدملتی ہے ۔

البيت المجال الم

حضرت امام ربانی کے نز دیک شیخ کامل کم کی شخبت کبرسیت احمر است رخ گندهک اکی طرح الحمیرہے ۔اس کی نظر دَ وا اور اس کا کلام شفاہے جبانی جسب تضریحات صوفیائے کرام شیخ کامل کے نثر ائط وقیو د درج ذیل ہیں ۔

ياب ويناف رم عن ما م الصف مراه ورود جورور وين الما الما الشائد. بابند عقيده الم المنت ، عالم قرآن وحديث ، عادل ومتفق ، عامل بالكتا الشائد.

زاهد فی الدنیا ،راغب فی الآخسگرة ،آمر بالمعروف ، ناهی عن المنکر ، مجذوب سالک ملوک تمام کرده ،سالک مجذوب ،سلوک تمام کرده ،صاحب تنجره سلید ، صا

اجازت وخلافت وغيرهم. ١ كاني شفار العليل وخميده من كتب التصوّف،

مساح رباده تر محدوب سالک، و معلی میروند وه معبت صدیعی کی و جدسے مستر اور مندب کی در اور مستر محبت اور مندب کی در اور مندب کی

ر بهنا ہے اور انہیں محبوبیت کی مندر پھلایا جاتا ہے بعبیا کو حضرت خواجہ بلاگر داں منافقت نبند کخاری قدس سے زہ العزیز نے فروایا :

سی سال سٹ آنچہ تہا وَ الدّین میگو بیٹ دااُوکنڈ یعنی مجھے تمیں رس سے محبور بیت کی مُسند پر بیاعز از حاصل ہے کہ میں جوکہ آ

ہوں فداوہی کرتاہے۔

سلسلانفشندر محددید میں عالم امر کے لطائف کی سیرکومقدم رکھاجا آہے اور الم ہے کہ عالم امرکی سیرکو عبد به اور عالم خلق کی سیرکوسلوک نام دیا جا آہے۔ نیز عالم امرکی سیرسے طالب کو تصفیہ کی دولت سے نواز اجا آہے اور عالم خلق کی سیرسے تزکیہ کہ مقام حاصل ہوجا آہے کیونکہ عالم امراہنی ذات کے اعتبار سے لطبیعث وراؤراتی ہے اورعالم خلق اپنی ذات بیں کثیف اور طلمانی ہے لطائف عالم خلق کی صاحب اور مجاورت ہے اس کا اور مجاورت ہے اس کا اور مجاورت ہے اس کا کرت وخبار اور طلمت بھاجاتی ہے اسس کا کرت ذکر، إتباع سنت اور توجہات بیخ سے تصفید کیاجاتا ہے اور عالم خلق عجُر ل کہ باعتباد ذات کے طلمت اور کد ورت سے طقت ہے اس ہے مجاہدہ وریاضت باعتباد ذات کے ظلمت اور کد ورت سے طقت ہے اس ہے مجاہدہ وریاضت محبور کر میں متعاصلی ہے محبور بیت نے اور محبور کر محتری المشرب کا فاصد ہے اور محبور کی المشرب کا فاصد ہے اور محبور کر محبور بیت محبور کی ایک تم کا جذبہ رکھی ہے اور محبور بیت نواہ عارضی ہو جو کر عفر میں المشرب کی صفت ہے اور ترکید سے بہلے جذبہ کی لذت سے آشانہیں ہو تا

ا قسام مسیخ سشیخ کی دقیمیں سیان کی جاتی ہیں۔ اسلم میزُوب سالک دمیرُب،

سالک مجذوب (محت)

طالب کے بیک پیش اقل کی مخبت اکمیراورعزیز الوجودہ۔ اگر ایسے بیخ کی محبت ماصل نہ ہوسکے تو پھر شیخ دوم کی محبت کو فنیمت بھی باباہیے گودونوں صحبتوں میں بہت فرق ہے جس مقام کر سے اقل کی محبت بہنچا سکتی ہے شیخ دوم کی محبت وہاں کے تصور سے بھی فالی ہے۔

سشیخ کال و کمل طالب کے باطنی مزاج اور اس کی استعداد کے مطاباق ترجیت کرتا ہے بیٹنلا اگریٹن کسی صاحب استعداد محدی المشرب کوسلوک کی راہ پر لے جلتے تو لاز آ اس کی استعداد کو ضائع کر دے گا اسی لیے پیٹنے کا مل اگر کسی طالب کی ترجیت اپنے ذھے لیہ ا ہے تو وہ پہلے بین خاتص کی فاسد تربتیت کے مغرر کو دور کرتا ہے اور اس سے لبعد طالب کی استعداد کے مطابات اس کے قلب کی زمین میں صالح نہج ڈال آ ہے جو کار آ مدا ورسی جو نیز ٹابت ہوتا ہے۔ مِن الشَّتِمَةُ الْعَجَبُ كُلُ الْعَجَبِ اَنَّ الْاَخَ الصَّادِقَ قَدْ نَقَلَ النَّ مِنَ اللَّهَ اللَّخَ الصَّادِقَ قَدْ نَقَلَ النَّ مِنَ الشَّعْرَاءِ الْفُضَلَ لَآءِ مَنَ اللَّهُ عَرَاءِ الْفُضَلَ لَآءِ مَنَ اللَّهُ عَرَاءً اللَّهُ عَرِالْكَ فَرِي وَالْحَالُ اللَّهُ عَرِيالِ اللَّهِ عَرِيالُ اللَّهُ عَرِيالُّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَرِيالُ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ الْعَلَقِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللْعِلْمُ اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ اللْعَلَيْمِ اللْعَلَى الْعُلَالِي الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ اللْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ اللَّهُ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ الْعَلَى الْعَلَيْمِ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَيْمِ الْ

اَنَّهُ مِنَ السَّادَاتِ الْعِظَامِ.

ترجمہ ، آخرکلام، نہایت تعبّب کی بات ہے کہ سینے بھائی ، قاصد ، نے یہی بات ہے کہ سینے بھائی ، قاصد ، نے یہی بایک شخص شعروں میں لینے سیالے بنایا کہ آپ کے خطام میں سے ہے ۔ کُفری ، خلص ولقب استعمال کر آہے ۔ حالان کھ وہ سادات عظام میں سے ہے ۔

#### شرح

حضرت امامر آنی فدس سترہ نے مزاعبدالرجیم خانخاناں کو اپنے محتوبیں اس طرف توجہ دلائی ہے کہ آپ کے ایک فاصل شاع دوست اپنے شعروں میں اپنے بیے گفری مختص کے ایک فاصل شاع دوست اپنے مقام ہے اپنے بیے گفری مختص کے مسلمان کے بیے لازم ہے کہ ایسے گفریہ بزرگ خاندان سے تعتق رکھتے ہیں جبکہ ہم ممان کے بیے لازم ہے کہ ایسے گفریہ القابات و زشسابات سے اس طرح و وربھا گے جس طرح بھا لڑنے و الے شیر سے دوربھا گنا چاہیے اور ملمانوں کو قرآن کی میں کا فروں سے دشمنی رکھنے اور ان برختی کرنے کا حکم دیا گیا ہے۔

چَنَانِچِ ارْسِثُ اُو ہِارِی تَعَالَیٰ ہِے : یَاکَتُهُ الَّذِیْنَ اَمَنُوْ الْاَسَتَحِدُ وَالْکے فِرِیْنَ اَوْلِیکَا اَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِ بِنَ الْمُؤْمِنِ وَالرَّسِمِ الوَلِي وَالرَّسِمِ الوَلِي وَلِي اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلِ الْمُؤْ

سے آگے آپ نے خانخاناں کو تھکم دیا ہے کہ اس فاضل شاعرکو میری اس سے آگے آپ نے خانخاناں کو تھکم دیا ہے کہ اس فاضل شاعرکو میری طرف سے پیغام دیجئے کہ اس قسم کے کا فرانہ تخلص کو بدل کر کوئی بہتر اسلامی لقب و اپنا میں جوجامع برکات ہوا ورسلمان کے قال وحال کے موافق ہو۔ نیز کا فرانہ لقب و خانور نبی سے اور باعث وشرب ہے حضور نبی کرم علی پالصلاق و التسلیم کا فرمان تھی ہی ہے :

يعمر المنظر المتواضع التهريم في " يعني بهمت كم وتعول سي بيد" الرابيد تعالى في الرسف و فرمايا !

ولَعَبْدُ مُنْوَمِنَ حَسَيْرَ مِنْ مُشْرِكِ مُنْ مُشْرِكِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله

لهذا اسلامی القاب این آب کونمسوب کرنا الله تعالی اور اس محبیب یاک سن الله افغان کے زدیک بندیدہ امرے ، وَهُوَ الْمَطْلُوْبُ

متن وَمَاوَقَعَ فِي عِبَارَاتِ بَعْضِ

الْمَشَائِخِ قَدْسَ اللهُ تَعَالَىٰ اَسْرَارَهُمْ فِي غَلَبَاتِ السُّكْرِمِن مَدْجِ الْكُفْرِوَ التَّرْغِيْبِ عَلَى شَدِ الزُّنَّارِ وَامْتَ الِ ذَالِكَ فَمَضْرُوفٌ عَنِ الظَّاهِ رِوَمَحْمُ وَلُّ عَلَىٰ فَمَضْرُوفٌ عَنِ الظَّاهِ رِوَمَحْمُ وَلُّ عَلَىٰ

التاوييل

ترجمہ ؛ اور بیح بعض مشائخ کی عبار توں میں علبُ سکر کی وجہ سے گفر کی تعرفیہ اور بُر قار باند صفے کی ترغیب اور اس قتم کی دوسری باتیں صا در ہوئی ہیں ان کو ظاہری مطلب سے بھیرکر ان کی تا ویل و توجیمہ کی جائے گی ۔

#### شرح

حضرت امام ربانی قدس مترہ فرماتے ہیں کہ معض مشائخ کی سکر بیرعبارات ہو کھنز کی تعرفیت اور زبار در در در در در خورہ خورہ و خورہ و نصاری اپنے فدہبی عب ا کے طور رکھر میں باند صفتے ہیں اور ہندوجو گی وغیرہ گلے میں فرالتے ہیں ہی ترغیب پرشمل ہیں۔ در صل وہ فعلبۂ سحروحال کی وجہ سے اس قسم کی منوعات کے اڑکاب میں معذور سیمھے جاتے ہیں اور ان کے اس قیم کے کلام کوظا ہرسے بھیرکرکسی اپتھے مفہوم پر گھمان کیا جانا جا جیتے۔

ُّجِيبِ کَ کَلَامِ جَبِیْ مَنصُورِ حَلَّاجِ مِیں ہے: ڪَفَرتُ بِدِینِ اللّٰہِ والْکُفْرُولِجِبُّ لَدَیتِ وَعِندَ الْمُسْلِمِینِ وَسِیْخُ اورکسی دوسرے بزرگ نے غلبۂ حال میں کہا ۔ پر ذعشہ ہے سب اردیں کیا نہ

کا فرعشفت مسلمانی مرا درکار نمیت هررگ من تارگشته حاجت ِ زُنّا رنمیت

مالانکہ ان بزرگوں کے نز دیک بھی گفر حقیقیا فقص وعیب ہے اور اسلام

حقِنقتاً سرا پاکمال ہے۔

اور خولوگ اہل محریں سے نہ ہوتے ہوئے اس مے اقوال واحوال کو دیال سند بنائیں اور اسی کلام کے مریحب ہوں وہ اہل شریعیت و اہل طریقیت دو نوس کے مزدیک محمد اور کا فرسمے عبائیں گے جبکہ منصور صلاح جیسے علوب ایجال بزرگ کے شکر یہ اقوال پر اہل ٹر بعیت نے فتوائے گئرصا در کیا ہے اور اہل طریقیت می تعقیقت کے کنز دیک بھی وہ خطرہ وقص سے خالی نہیں اور اکثر اولیائے کا ملین نے اس کو کا طوں بلد حقیقی مسلمانوں میں بھی ضمار نہیں کیا کیونکہ اہل شریعیت وحقیقت کے نودیک حقیقت کے نودیک حقیقت کو اور خلیہ حال ظاہر ہونے سے پہلے گفر و اسلام میں امتیاز نہ کن الاتفاق گفر اور زند قد ہے اور حقیقت کار اور غلبہ حال ظاہر ہونے کے بعد بھی گفر و اسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ اسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ واسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ واسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ واسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ واسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح اور عیب جیسے ہوریہی اہل حق کا متوقف ہے۔ واسلام میں فرق نہ کرنا نقص صریح کا در عیب جیسے ہوں کے اور عیب بھی کو در کا متوقف ہے۔

عرفارکے نزدیک اسلام می دوم کا ہے اقل اسلام الله می دوم کا ہے اقل اسلام کی دوم کا ہے اقل اسلام کی دوم کا ہے اقل اسلام ہے تھی ہے الله می دوم کی مائے خوام کا اسلام ہے جہوں نے بِحَدُا قَاتِ قضایائے شرعیہ کو کففی نظر سے دیما تو نہیں افسان گردل سے سیم مرور کرتے ہیں انہیں افسان گردل سے سیم مرور کرتے ہیں انہیں افسان کے تقیقین اور عرفائے کا ملین بالفی آئے ہیں اور اسلام ہے جہوں نے بھی نظر سے مشاہدہ بھی کا اسلام ہے جہوں نے بھی فائز ہیں اور کہا ہے اور اسلام ہے در جب سے سے بھی فائز ہیں اور کہا ہے اور زبان و قلب سے سے بھی و تصدیق کے مرتبے بر بھی فائز ہیں اور کہا ہے اور زبان و قلب سے سے بھی و تصدیق کے مرتبے بر بھی فائز ہیں اور

اَنْ تَغَبُدَ الله كَانَكَ تَرَاه له كَى نويدسے بى شادكام بى دانكا ايمان كستدلالى ايمان بهروى سے تبديل ہوج كلہ اوران كے علوم اجمالى ان كے حق مد تفصيلى ہو چكے بيں اور وہ شنيدسے ديد تك اور كوش سے اغوسش كى ترين محمد بين حكے بيں وقد وہ شنيدسے ديد تك اور كوش سے اغوسش كى ترين محكے بيں وقع كا اللہ مكرا دُد





تعتُوبائيرِ علجنان المجادثي عِيَّةُ



مُوضَّوَّ الله مُوتِّ الله مُوتِ الله مُوتِّ الله مُوتِ الله مُوتِّ اللهُ مُوتِّ اللهُ مُوتِ اللهُ اللهُ مُوتِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللَّهُ ال

میکتوبگرامی صنرت امام ربانی فدس سندهٔ العزرنی نقیج خان اندجانی علالرات کے نام صاور فرمایا ۔ آپ صنرت خواجہ باتی بالله وہلوی قدس سنرهٔ کے برادرسبتی تھے محتوبات بشریف کے دفتر اقل میں آپ کے نام حسب ذیل میں کمتوبات ہیں۔ محتوب نمبر ۲۲ - ۲۱ مواقی جو دراصل ترکی زبان کا لفظ ہے ترکی میں قلیج تلواد کو

کہتے ہیں۔ با دشاہ اکبرنے آپ کو اپنے بیٹے دانیال کا امالیق مقرر کیا تھا بھر مختلف اوقات میں لا ہور ، کابل ، آگرہ ، مالوہ اور بنجاب کا انتظام آپ کے مُیر دکیا کیا اور

سنبسل کا علاقہ آپ کوجاگیریں دے دیا گیا۔ آپ جہائگیر کے عہدیں بھی گجرات، پنجاب اور کا بل کے حاکم رہے۔ آپ ایک متبتحرعا لم متعتی اور فداترس انسان سے

پیجاب اور کا بل نے حامم رہنے۔ اب ایک بھرعام ، سی اور مدارس اسان – پنجاب کی صوبداری کے زمانے میں بھی آپ نقد ، تفسیراور صدیث کی تعلیم و تدرلیں کا فریضہ سرانجام دیتے رہنے ٹیلوم شرعید کی ترویج واشاعت میں آپ نے نایاں جھتہ لیا غرضیکہ اپ صاحب سیف وعلم بھی تھے اور صاحب ورسس وعلم بھی

آب نے ۱۰۲۳ھ میں وفات پائی کیا۔ آب نے ۱۰۲۳ھ میں وفات پائی کیا

له حضرت القدّس جددوم جرموم له مأثر الأمرار ونزعة الخواطر

البيت الله المائية الم

## مڪنوڪ -۲۲

من اَلْمَرُءُ مَعَ مَن آحَبَ فَطُوْبِ لِمَنَ لَمْ يُبُولِ لِقَلْبِهِ مُحَبَّا إِلاَّمَعَ اللَّهِ سُجَعَانَهُ وَ لَمْ يُرِدُ إِلاَّ وَجْهَهُ تَعَالَى وَتَقَدَّسَ فَيَكُونُ لُهُ مُومَعَ اللَّهِ جَلَّ سُلَطَانُهُ وَإِذْ كَانَ هُومَعَ اللَّهِ جَلَّ سُلَطَانُهُ وَإِذْ كَانَ ظَاهِرُهُ مَعَ الْخَلْقِ وَاشْتَعَلَى بِهِمْ صُورَةً وَهُوشَانُ الصُّوْفِيِّ الْكَانِي الْبَائِنِ.

ترجمہ: آدمی اس کے ساتھ ہے جس کے ساتھ وہ محبّت کر آہے ہیں اس خص کومبارک ہوجس کے ول ہیں اللہ تعالیٰ کے ساتھ محبّت کے سواکسی دُورے کی محبّت باقی نہ رہ گئی ہوا ور وہ ذات جی کے سواکسی کی طلب نہ رکھتا ہوئیں ایسا آ دمی اللہ لیا کے ساتھ ہے اگر جیصورٹا اس کا ظاہر مخلوق کے ساتھ مشغول ہوا ور یہ اس صونی کی شان ہے جو کائن بائن ہے رحقیقت ہیں خد اسے واصل ہے اور خلق سے جُد اہے با ظاہر مین خلق کے ساتھ ہے اور خقیقت ہیں ہے۔

### شرح

صوفی کائن مائن ہے کہ دہ کائن بائن قدس سترہ نے فرمایا کی سونی کی شان یہ صوفی کی شان یہ کے دل میں حق تعالیٰ کے دل میں حق تعالیٰ کے دل میں حق تعالیٰ موقی ہے۔ کائن کے در اس کے دل میں حق تعالیٰ ہوتی ہے۔ کائن بائن کا ایک معہوم توبیہ کے صوفی حقیقت بیں کائن رحق کے ساتھ، ہوتہ ہے اور بائن رخل سے مجدا، ہوتا ہے۔

وُوسِ اِمفہوم اس طرح ہے کے صونی صورت میں کائن (خلق کے ساتھ) ہو تاہے۔ اور حقیقت میں بائن (خلق سے جُدا) ہو تاہے۔

انبی نفوس فرستیک بارے میں ارشاد باری تعالی ہے ،

لے انتور ۲۴

جه ابیت است او ۱۱۱ او سام مکون ابیت

مانسان تر بلائے حب ن تو

اى كىفىيت مىر شونى بكار أشماب.

م حبی خرند یا و تو ، از ول ناست و برفت وزسسینه مواتے گل وشمث و برفت مستغرق ذکر حبب م که دِگر در ذکرِ تو ، ذکرِ تو از یا دم برفت

ترجمہ اسوائے تیری یا دے مرے دل ناشا وسے ہر چیز جاتی رہی سینے سے گلاب اورشمشاد کی خواہش بھی کا گئی اور اب تیے ذکر میں اس قدر ڈو ا ہُوا ہوں کہ تیرے ذکر میں تیرا ذکر بھی میری یا دسے جاتا رہا۔

بِسَ ثابت ہوا کہ زیا دہ چیزوں سے مجتب رکھنے والا ان چیزوں کو اپنے نفس ہی کے سیے چا ہتا ہے۔ نی نفسہ ان اشاء کو نہیں چا ہتا جب اس کو اپنے نفس سے مجتب نہیں رہے گی توان چیزوں کی مجتب می اس سے نفس کے تابع ہونے کی وجہ سے دُور ہوجائے گی۔ اس سیے سُو فیار کرام کے زدیک بندے اور حق تعالیٰ کے درمیان حجاب بندے کا اپنانفس ہے۔ چنانچہ آپ نے ارسٹ وفر مایا :

من فَلِهٰذَاقِيْلَ إِنَّ الْحِجَابَ بَيْنَ الْعَبْدُ وَالرَّبِهُ هُونَفْسُ الْعَبْدِ لَا الْعَالَمُ فَإِنَّ الْعَالَمَ فِي نَفْسِهِ عَمْيُرُ مُرَادِ لِلْعَبْدِ حَتَّى يَكُونَ خِعَابًا. مُرَادٍ لِلْعَبْدِ حَتَّى يَكُونَ عِجَابًا. ترجمہ: پس اسی یے کہاجا تہے کہ بندے اور حق تعالیٰ کے درمیاں حجاب بندے کا اپنانفس ہے نہ کہ جہان کا نبات کی ونکہ کا نبات فی نفسہ بندہ کا تھا تو وہ ہیں البيت المحالية المالية المالية

جو کہ حجاب بن سکے .

#### شرج

آپ فرماتے ہیں اشیائے کا تنات فی نفسہ انسان کامطلوب وقصور دنہیں بلکہ بندے کا اپنانفس اور اس کی خواہشات انسان کی مُراد ہوتے ہیں اور وہ اپنے نفس ہی کے لئے تمام ہشیار کو محبوب رکھتا ہے اور بجر نفس کی کدُور تمیں ہی انسان کوحق تعالیٰ سے دُور رکھنے کاسبب بنتی ہیں۔ ایک عارف فرماتے ہیں :

آنت العَهَمَامَةُ عَلى شَهْمِيكَ يعنى تيرى نفسانى كدُوريس مى تيرى قبى مِستعداد يربادل بن كرچاجاتى بين.

مدین قدی میں ارشادہ: عَادِ نَفْسَكَ فَانَهَا اِنْتَصَبَّتُ بِمُعَادَاتَی ایعنی اپنے ننس سے دُمْنی رکھ کیونکہ یہ میری دشمنی بر کھڑا ہے اور اسی فہوم کی تائید میں ہے دَغ نَفْسَكَ وَتَعَالُ اپنے نفس کو چھوڑ دے اور میری طرف چلاآ۔

مانظست برازی فرماتے ہیں: 8

· توخود حجاب خودی حافظ از میان خرمینه

یعنی اے حافظ تیرا اینانفن تیرے لیے حجاب ہے تو منود درمیان سے گھڑے ۔

نيزنسرمايا :

ے تو از سرائے طبیعت نمیروی برون گجا به کوُئے حقیقت گزر توانی کرد یعنی تو اپنی طبیعت انفس، کی سرائے سے با ہزہیں نکلنا توحقیقت کے کوئیے میں تیرا گزر سکیسے ممکن ہے جہانچ حضرت امام ربانی قدّس سترہ فرماتے ہیں کی خسس سے چید کارا یا جانے کی دولت عظلی فائے مطلق کے بغیر متیسز نہیں آسکتی ۔

مِنْ وَهِذِهِ الدَّوْلَةُ الْقُصْوٰى لَا تَتَحَقَّقُ اللَّبَعْدَ الْفَنَاءِ الْمُطْلَقِ الْمَنْوْطِ بِالتَّجَلِّي الذَّاقِيِّ.

ترجمہ: اور یہ اُنہائی اعلیٰ درجے کی تعمیت فائے طلق کے بعد ہی حاصل ہوکتی ہے۔ ہوکتی ذاتی پرموقوف ہے۔

#### شرح

مصرت امام ربانی قدس سرّهٔ فرماتے ہیں کد فات جی کے ساتھ محبّت اورخواہشا مخسب سے نجات کا بداعل ربن درج سالیک کو فنائے مطلق کے بغیر سیّبر نہیں اسکتا اور فنائے مطلق تحبی فاقی تمام بیشری کد کورتوں اور فنائے مطلق تحبی فاقی تمام بیشری کد کورتوں اور مادی کا فتوں کا از المنہیں کرسکتی اور نہیں سالک کو معبّت فواتی سے مشرف کرسکتی ہے۔ مبیا کو صفرت مولانا روم ست بادہ قیوم رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا۔

ہے مبیا کو صفرت مولانا روم ست بادہ قیوم رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا۔

کے حسمہ موسک و مبار سے موسکوی کے مسلوع ہوئے بغیر است کی تاریخیاں و ورنہیں ہوسکتیں اسی طرح فنائے عنون اور تحبی فواتی کے بغیر است کی تاریخیاں و ورنہیں ہوسکتیں اسی طرح فنائے عنون اور تحبی فواتی کے بغیر است کی تاریخیاں و ورنہیں ہوسکتیں اسی طرح فنائے عنون اور تحبی فواتی کے بغیر است کی تاریخیاں و ورنہیں ہوسکتیں اسی طرح فنائے عنون اور تحبی فواتی کے بغیر است کی تاریخیاں و ورنہیں ہوسکتیں اسی طرح فنائے عنون اور تحبی فواتی کے بغیر نفسانی الاکٹوں سے چھٹا کا رائے اللہ ہے۔

البيت الله المرابع ال

مرم مرطا .. سالک کے تمام لطائف کا مکمل طور پر اپنے مبداً فیصن تک فی اسے کو اس مقام میں سالک فنار کی تمام قبار سے کو کا م منائے طابق ہے۔ اس مقام میں سالک فنار کی تمام قسموں سے گزر کر کا مل طور پرنسیان ماسوی اللہ کی دولت سے سف د کام ہوجاتا ہے۔ ہوجاتا ہے۔

بر بر واضح رہے کہ ایک ہے سالک کی فنائے طلق جیسا کہ اُوپر بیان بیسی کم مر کا میں میں اور ایک ہے سالک کی فنائے طلق وہ صرف اس کی کی فنائے طلق وہ صرف اس کی کے لیے کا ماسوئی کو فراموسٹس کر دینے کا نام ہے۔

مُحَبِّت ِذَا تَيْمِينَ إِنَّهُ وَإِلِامُ بِرَارِبُوتِ بِينَ مَنْ فَإِذَا حَصَلَتْ تِلْكَ الْمُحَبِّةُ الْمُعَنَّرُعَنْهَا بِالْمُحَبِّةِ الذَّاتِيَةِ الْمُعَنِّرُعَنْهَا بِالْمُحَبِّةِ الْمُحَبِّةِ الذَّاتِيَةِ السَّتَوْى عِنْدَ الْمُحِبِ انْعَامُ الْمُحَبُونِ وَإِنْهَا مُهُ فَحَ حَصَلَ الْإِخْلَاصُ وَإِنْهَا مُهُ فَحَ حَصَلَ الْإِخْلَاصُ

ترحمه : بیں حب بدمجتت حاصل ہوجاتی ہے حسب کو محبت واتیہ کہا جا تاہے تو محت کے نزدیک محبوب کا إنعام اور إیلام (رنج و تکلیف دینا) برابر ہوجا تاہے بیس کس وقت اس کو اخلاص حاصل ہوجا تاہے .

### شرح

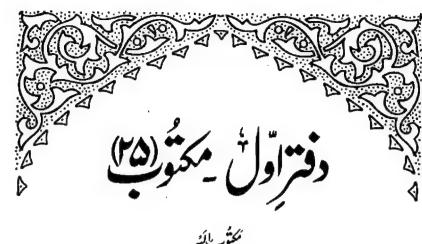
سالک جب مجتب فراتیہ کے مرتبے کو پالیتا ہے اور اس کو اخلاص کی حقیقت میں سراجاتی ہونے و الی تعمین میں سراجاتی ہونے و الی تعمینیں

🛮 محتوس ع 🚓 اورزحمتیں اس کے لیے ایک جبسی ہوجاتی ہیں کیونکدمجت کومحبوب کے ہفعل سے ایک خاص فتم کی لذّت حاصل ہوتی ہے اور عاشق ہمیشد معشوق کے افعال کاسشمہود چا ہتا ہے خواہ وہ انعام کے زنگ میں ہویا اطلام کی صورت میں اس سے نز دیک جو تح جيام طلق كي طرف سيرة تاسيح جيل مو ماسي - ع " از دست ووست مرحه رئسد نیک گفته اند" حضرت امام رّا نی قدّس سرّهٔ فرملت ہیں کم محبّ عب طرح محمُوب کے انعام سے لذت بإناب اس كراح اس كرام الم الم المستعبى النت حاصل كرنا الم المام ملية ست كى زيادتى يا مائى كى كى كى اميرش نهين بوتى -محبّت ذاتيه عارف كاوه مرتبه بيحس مين عارف كي عبارا اور اس کے اعمال میں طمع ونٹوت، ثواب وعذاب اور نفع و نقصان كاجذبه ورجحان غلبه ندرينهي بوقا بكدمجتت الليديين فانى بوسف كى وجس اس کے ہر ممل اور اس کی ہرعبا دت سے رصاتے البی قصو و ہوتی ہے . ه غرض زعشق تر ام چاسشنی در د وغم ست ں و تنعم ہے۔ کمراہت مقربين كي عبادات ميرستت مقربین کی عبادات میں فرق مقربین کی عبادات بیشت تفریدن ابرار کی عبا دات میں فرق کا طبع اور دوزخ کاخون شامل نهبير بوما بلكوص رضاكه المي بيش نظره بتي بي جبكه ابرار كي عبا دات طمع اورخوف سے موٹ ہوتی ہی کیونکہ وہ مجتت ِ ذاتیہ سے بہرہ یاب نہ ہونے کی وجسیفس کے تقاصنوں سے پورے طور بر آزا دنہیں ہوتے لہذا ان کی عبا دات پرطسسع<sup>و</sup> خوف سے موت ہونے کا اطلاق ان کے نفس کی مٹرکت کی بنار پر کیا جا اسے۔ حضرت امام رباني قدّس سرؤ فرمات بين بس لأمحاله أبرار كي نيكيان جبت عباد کے اعتبار سے خنات ذیکیاں ہیں اور جہت بغس کے کحاظ سے سیبات دگاہوں،

کے زُمرے میں آتی ہیں اور مقربین کی نیکیا رحسنات محصنہ ہیں کیونکہ وہالفنس كُالائش كاكونى خطرفهي مع الجية تحسَّناتُ الْأَبْرَارِسَينَاتُ الْمُفَرِّدِينَ كايبى طلب ب مقربين كومرتبة ولايت خاصه كے بعد كالاًت بُروت سيم كي أيدا جعته طما إح جبكه أبرار اوليات سيستهلكين داوليات مغلوب لحال، مي سي ت ہیں اور مرتبۂ کمالات نبوت اور مقام مفین وارشاد کے اہل نہیں ہوتے ۔ بلية فمريس واضح رسي كدمقر بين كى عبادات كاطمع اورخوت سيفالي وما بلينه ممبرا عروج كوق متحتق اوتلب كيونكديكيفيت عروجي مرتبول بي بیش آتی ہے۔ بُرُ ول کے مرتبے میں مقربین تھی طمع اور خوف سے خالی نہیں ہو تے لیکن اس مرتبے میں ان کاطمع اورخوف تعن کے تقاضوں کے تحت نہیں ہوتا وہ جنت كاطمع البني نفس كے آدام كے ليئے نہيں ركھتے بلك حبّت كے صرف اس يا السيام وقد بيرك وه رضائ اللي كامحل ب اور دوزخ كاخوف الين نفن کی اذبیت و تکلیعن کے بیش نظر نہیں رکھتے ملکہ دوزخے سے صرف اس لیے پناہ مانگتے ہیں کہ وہ قہراللی کامحل ہے۔ وہ اپنے نفس کے لیے انعام و إيلام کے تصورت ازاد ہو چکے تصورت وارد ہو چکے

 نے جنت کی طلب کوخیر کی طلب تمجد لیا اور حبّت سے ال تعلّقی اور دوزخ سے لا پر واہی ظاہر کرنے لگئے۔ لا پر واہی ظاہر کرنے لگئے۔

بلید مرم مرکز بین کا ترک برزول ان کے مرتبہ عُروج سے زیادہ بلندہوتا بلید مرم مرکز کے مرتبہ عُروج سے زیادہ بلندہوتا بلید مرم مرکز سے کیونکھ وج کا مرتب رجُوع اِلَی انحی ہے اور نینی ہے اور کی دولت وارشا دکا مرتب اور بہی ہے۔ اللّٰه مَ انرزُقْنَ اِلیّا هَا۔



اعتربائير حريب محركا بالمنون خواج بجهال الله



কীৰ্ত্তিক<del>ৰিক বিকাৰ কৰিব কিবলৈ কিবল</del>

و وست محرکا ملی المزد خواجرجهال واشکه

آب کااصل نام دوست محد نقب خواجرجهال کابل که رہنے والے
تصریحتوبات بٹرایند دفتراقل میں کتوب ۱۷۵ اور ۷۲ آپ کے نام صادر
فرمائے گئے۔ آپ کی صاجزادی جہانگیر یا دشاہ کی زوجیت میں تھیں ۔ اسی بنا
پر آپ کو اعلی حکیمتی منصب مجبی حاصل تھا آپ نہا بیت بنتقی، عابدا ور دیا نڈار
یقی، اپنے فرائن کوری دیا نڈاری اور توجہ سے انجام دیتے تھے۔ ۱۰۹۹ میں وفات یا تی اے
بیں وفات یا تی اے

المنيت المالية المالية

## مڪنوب ـ ۲۵

من سَلَمَ اللهُ تَعَالَى قَلْبَكُمْ وَالْآنَ صَدْرَكُمْ وَنَرَكَىٰ نَفْسَكُمْ وَالْآنَ جِلْدَكُمْ كُلُ ذَلِكَ بَلْ جَمِينِهُ جِلْدَكُمْ كُلُ ذَلِكَ بَلْ جَمِينِهُ حَمَالاتِ الرَّفِح وَالْسِيرِ وَالْخَفِيّ وَالْآخِفَى مَنْوَظُ بِمُتَابَعَة قِسَيدِ الْدُرْسَلِينَ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ مِنَ الصَّلُولِةِ الْدُرْسَلِينَ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ مِنَ الصَّلُولَةِ افْضَلُهَا وَمِنَ الشَّنِيلِمَ الشَّيلِمَ الصَّلُولَةِ

ترجمہ ؛ اللہ تعالیٰ آپ کے دل کوسلامتی عطافہ بائے اور آپ کاسینہ کھول کے اور آپ کاسینہ کھول کے اور آپ کاسینہ کھول کے اور آپ کے خش کا ترکی کے درے اور آپ کے میں ممالات سیدا لم سلین راکب پراور آپ کی آل پرافضل کے آل میں اور اور کامل سلام ہوں کی آبعداری پرموقوقت ہیں۔ آپ کی آل پرافضل در ود اور کامل سلام ہوں کی آبعداری پرموقوقت ہیں۔

#### شرح

معندت امامر آبی قدس سرهٔ العزین ابتدایک توب می خواجهٔ جهال کومنده ذیل میار دُهاوَل سے لذازا ہے۔ ہما و الله تعالیٰ آپ کو قلب سلیم حطا فرمائے میں دعار کیونکہ قلب سلیم ہی محل تعلیات وانوارہے اسی پر شرف إنسانیت كالمِنصار المَايَةِ قَرَاني يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالَ وَلَا بَنُوْنَ وَإِلَّا مَنْ آتَ الله يقلب سكين لم يصطابق قياست كدن الله تعالى كى بارگاه بي قلب الم ہی نا فغ وموجب نجات ہوگا۔

تلب سلیم ماسولی الله کی آلودگی سے فارغ دل کا نام ہے ۔ فدا کے ذکر سے غافل دل كوقب لِتقيم كها جاتات ولا تُطِلعْ مَن آغَفُ لْنَا قُلْبَ وَعَنَ ذِ کے بِنَاکم سے دل بدار اور دل بھار کا فرق واضح ہے مدیث میں اللہ تعالى سيتَعلب ماشع طلب كرن كي وعاسكها في كُني هي اللهميَّ إِنَّ أَعْقِ دُم بِك .... مِنْ قَلْبِ لَا يَخْشَعُ لَهُ قَلْبِ فَاشْع بَى قَلْبِ لَيم مُوتا ہے۔ 

كومطابوا. اَلَـمْ نَسَشْرَحْ لَكَ صَدْمَكَ كُ

حضرت وسلى كليم التعطيه استلام ني مجى شرح صدركى دعا مانتكى دكت المشرح لِيْ صَنْدَيرِي هُ مُنْ شَرِيحِ صدر بصيرت عَبَى ، فراست إيماني اور قوت فرراني كانام ے . آفتمن شَرَحَ اللهُ صَدْرَة لِلإِسْكَامِ فَهُوَعَلَى نُومِ مِن رَبِهِ

إنشراج صدرس بندة مومن كوعقلى شعورا ورقلبي نؤرهاصل موما بيحب كي روستني میں وہ رشدو ہایت اور علم ومعرفت کی منزلیں طے کر تاہے۔

الله نعاك إب كنعس كاتزكيه فرمك. مری وعار التدنعات البسک می ایمانی کی میداورباریا بی کی میداورباریا بی کی نریہ بہیا کوفر مایا ، قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَدَرَکیٰ کُ مُبَت ِ ذَاتی اور تَجَلَی ذاتی کا شرف زکیے نفس رہوفوف ہے اضلاص مل بھی تزکیۂ نفس ہی کا ثمرہ ہے۔ موقع می دعار ترکی نفس سرن یا معرب سالکر کردے ۔ میونی دعار ترکی نفس سرن یا معرب سالکر کرکی ورصفانی جاصل کو

چوھی وعام ترکینس کے دریعے جب سالک کی دوج صفائی حاصل کر ایسی جب اور سے نتیج میں باطن کا اثر جم کے فاہر مربعی نودار ہوتا ہے اور سالک کا جم منزلد رُوج ہو کرزم لطیف اور کے فاہر مربعی نودار ہوتا ہے اور سالک کا جم منزلد رُوج ہو کرزم لطیف اور ملائم ہوجاتا ہے آجستاد کی آروا گئا کا مقولہ بھی اس حقیقت برصادی آ آ اور ہا ہوجاتا ہے بلی بعض بزرگان دین کے جم کا سایر بھی نہیں رہا ۔ حضرت میدنا چین سے آلوم ہاروی اور صنرت خواج شمل الذین بیالوی علیم الرحمت کے بارے میں اسیسی روایات سن گئی ہیں ۔ والله اُ آغ کہ م

مولانا رُوم نے فرمایا ۔

کچونسٹ در نفتر بہیسہ ایہ شود اُو محُستید وار سیےسس یہ شو د

معنی مرافع و می المام را بی قدّس سرهٔ فرمات بین کودعا و سند و کرکیے گئے میں میں اور اخلی محض البارع سند بند می اور اخلی محض البارع سند بند می اور اخلی محض البارع سند بند می اور احتیاب العند الم می اور یا اور یا اور یا اور می اور می به کار کار می المام می قلب نسیان ماسولی الدی ساتھ مراؤ و بسید اور شرح صدر ترکی نفس ربخ صدات می مخلی مسلمات اور کا الات بعنی مجلی صفات و رکی الات بعنی مجلی صفات می سند و اور کالات با مع کے ساتھ مراو و و مشروط بیں ۔

مَّن فَعَلَيْكُمْ بِمُتَابَعَتِهِ وَمُتَابَعَةِ خُطَفَآئِهِ الرَّشِدِيْنَ الْهَادِيْنَ الْمَهْدِيِيْنَ مِنْ بَعْدِهٖ فَالنَّهُمْ نُجُوْمُ الْهِدَاسِيةِ وَشُمُوسُ الْوَلَايَةِ. وَشُمُوسُ الْوَلَايَةِ.

ترجمہ ، پس تم برلازم بے کو سرور عالم منل الدائی وراب کے معالیت در ایت در ایست در ایست در ایست در ایست در ایست در ایست کی میں کے میں است کے میں ایست کے میں کے بیار کے میں ایست کے میں کے بیار کے میں ایست کے میں در ایست کے در ایست کے میں در ایست کے میں در ایست کے میں در ایست کے میں در ایست کے در ایست کے

#### شرج

سخرت ابن عبسس رضى الدُّعنها سے روایت سے کررول الله مُن الله عبد الله والله الله والله مَن سَت اَصْحَانِ کَعَت الله والله والله الله والله الله تعالى اور ورست و الله الله تعالى اور ورست و الله تعالى الله تعالى

کصرت ماکند و من الله عنها سے روایت ہے کدر کول الله من الله علیہ اسے روایت ہے کدر کول الله من الله عنه و کا سے فرایا اِن سنسرَ اسرَ الله منی آخر کو ایک ہیں جمیرے اصحاب پر دلیہ ہیں۔ ان لؤائی میری اُمنت ہیں سے بُرے وہ لوگ ہیں جمیرے اصحاب پر دلیہ ہیں۔ ان لؤائی جمیر وں کوجوان کے درمیان واقع ہوئے ہیں نیک وجہ پرجمول کرنا چا ہیئے اور ہُوا وتعمیر سے دُور بھنا چا ہیئے کیونکہ وہ مخالفتیں تاویل واجہا د پر مبنی تعمیل نہ کہ ہوا و ہوسس پر رہی المِنت کا خرب ہے۔

البيت المحالي المحالية المحالي



مُعَوَّبِالَيْهِ سشيخ العلم صنرولان كالجح محمل الايرى ملاً



موضوعك

مديني شوق كالفِصيلي بان ، وجُرا تواجُداور وحرد كالحبُ ماع وقص اور وجد حضرتِ الم آنى كى نظر من منب يب لاكل ، برعب في الظريفتيت في الظريفتيت کتوبالیہ یکتوب کرائی آپ نے شیخ العالم صفرت مولانا ماجی محدلا ہوئی رحمۃ اللہ علیہ کوصاور فر مایا۔ دفتر اقل میں آپ کے نام درج ذیل یا نج محتوبات ہیں محتوبات محتوبات ہیں محتوبات محتوبات

# مكتوب - ۲۶

مِن وَمَدَ فِي الْحَدِيْثِ الْقُدْسِيَ الْطَالَ مَن وَمَرَدَ فِي الْحَدِيْثِ الْقُدْسِيَ الْاَئْلُ الْمَشَدُ شَوْقُ الْاَئْرَارِ اللهُ الْسَعَانَ اللهُ الشَّوْقَ الْلاَئْرَارِ شَوْقًا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَقَالِلاً اللهُ ال

ترجمہ : حدیث قدسی میں وار دہے "اگاہ رہواً برار انیک بندوں کاشوق میری طلقات کے کیے بہت بڑھ گیا ہے اور میں ان کی طرف ان سے مجی زیادہ مشاق ہوں "اللہ تعالی نے شوق کو اُبرار کے لیے ثابت فرمایا ہے کیونکہ مقربین وصلیان کوشوق باتی نہیں رہتا اس لیے کہشوق مطلوب کے فقدان رحاصل نہ ہونا ان کے حق میں فقو دہے۔ ہونے کام متقاضی ہے اور طلوب کا حاصل نہ ہونا ان کے حق میں فقو دہے۔

## شرح

حضرت امام رّبانی فدس برّهٔ العزیز فرات بین کدانتهٔ تعالی نے شوق کو اُبرار کے حق بین ابت فرایا ہے اور مقربین کوشوق سے فارغ رکھاہے کیو کارٹوی طاوب کے ماصل نہ ہونے پر ولالت کر آہے اور مقربین تو ہیں ہی طلوب کے صنو لاور وصول سے شاد کام ہوتے ہیں۔ ائپ اس کی مثال لویں بیان فرماتے ہیں کہ شخص اپنے وجود سے مجتب کے با وجود اپنے وجود کا استعیاق نہیں رکھنا کیونکہ اس کا وجود اس کے پاس مہیشہ ماضر و ماصل ہے۔

ن درم فرق المنظم و الفت میں شوق سخت خواہش اور بڑی آرزد کا نام ہے۔
سوق کا فہوم اسطلاج صوفیار میں شوق مشاہدہ محبوب کے بعد بیدا ہونے
والی حالت کو بہتے ہیں جس میں لقائے محبوب کے بغیر کسی صورت تسکین ند ملیے،
کیونکہ اسولی طور پروقتی مشاہدہ سے دائی شاہدہ کا شوق ٹرھنا ہے یاسالک کے اس ال کا نام شوق ہے جس میں اُن ویکھے عبوب کی طون خبت کا مظاہرہ کرسے اہل ہوک شوق کو قرب الہی کے لیے عملت ِ غائی قرار ویتے ہیں اور بیالت مجمب اور جب ورفوب دونوں پر برابر طاری رہتی ہے۔ نیم جی میں اسی صالت کا بیان

م عاشقاں ہر جید مشتاق جمال دِلسب اند دلسب اِس برعاشقاں ازعاشقاں عاشق تر اند حضرت اہام اُلُوالقاسم قشیری قدیس تیرہ نے رسالہ قشیر ہی میں شوق کی ناسیداوراس

کے ثبوت میں یہ ایت گحربر فرائی ہے۔

مَنْ ﷺ مَنْ ﷺ مَنْ سَكِمَانَ يَرْجُولُ لِقَاءَ اللهِ فَالَّ اللهِ فَاللهِ لَلهُ اللهِ لَا اللهِ لَا اللهِ لَا ا بعنى عبر عض الله تعالى سے طلقات كى أميدركھتا ہے داسے علوم ہونا چہتے، كه الله كامقرركيا ہواوقت آنے والا ہے۔

 وَاَسْتُلُكَ النَّظْرَ إِلَى وَجِهِكَ الْحَصْرِيْمِ وَسَّوْقًا إِلَىٰ لِمَا يُلِكُ وَسَنَعُ الْحَصَرِيْمِ وَسَوْقًا إِلَىٰ لِلَّا فِلْنَا فِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الْمُنْ الْمُوالِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ الْم

تبعن المرتصوف كنزديك أوليارك ايك كروه كو ليجال إستياق رجال شياق كهاجا تهدي وحالت شهود واشياق مين من المراد المن المراد المرد المراد المرد المراد المرد المراد المرد المراد المرد المراد المرد المرد المرد ال

مقربین مقربین واراری استطلامات قرآن کریم سے ماخوذ بین مبیا که مقربین میں اللہ مقربین کا اللہ مقربین کا اللہ مقربین کا مسالہ مقربین کا اللہ مقربین کا مسالہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کا کا کہ کا کہ

واضح رہے کہ جومقر بین خوق سے خالی ہوتے ہیں ان کومقرب و امبل کہا جاتا ہے اور مقرب و اصل وہ خوش نصیب افراد ہوتے ہیں جوصفات بشریہ سے فاتی ہو کرصفات باری تعالی سے باقی ہو چکتے ہوں اسی لیے مقر بین کی تین شہیں بیان کی گئی ہیں ۔

ن ن ہیں۔ ا مقرب فبتدی ۲ مقرب متوسط ۳ مقرب و اس خرکورة الصدر پہلے دونوں مقربین رمبتدی ویتوسط، اہل شوق سے شمار کیے گئے ہیں۔

یک ایرار آبرارسے مُراد وہ اہل شوق ہیں جوابھی کک فنا وبقا کی لذّت ورعُ وج ابرار وزول کے معارف سے مشرف نہ ہوئے ہوں کی وات حق کی طلب ہیں ہروقت مُصنطرب وربے قرار ہوں اورطلوب کے تصوّرِ حبال وصال سے ان کے صبروسکون کی ونیا میں زلزنے پیدا ہوتے ہوں حدثرت مُوسیٰ 

#### لے طلب ۸۲ کے احیار العکوم مراہم میں

اِنْ تَفَرَّرَبَ إِنِّى بِيشِيرِ تَفَرَّرُ مِنْ الْكَيْدِ ذِرَاْعِكَا مَّ الصحيح للبغاى بِلْهِ الْمَ يعنى اگرميرابنده ميري طرف ايك الشت قريب هو المه تومين اس كاطرف ايك اتحد برطمة مول ـ البيت المائج المائح الم

حديث قدسى المنت المعلى المنت المعلمة التعليد فرايا المنت ال

ترجمہ ، حدیثِ قدسی اور قرآن میں فرق یہ ہے کہ حدیثِ قدسی الہام یا فوہ یا فرشتے کے فریعے بالمعنیٰ نازل ہوئی ہے پھرنی کریم علیہ الصالوۃ والسلیم ہس کو اپنے الفاظ میں بیان فراتے ہیں اور اپنے رت تعالیٰ کی طوف ہیں کومنسوب فراتے ہیں اور قرآن کریم جریل امین علیہ اسلام عین الفاظ میں نبی کریم منی المعایہ ویا رپر نازل کرتے ہیں اور قرآن متواتر ہو تا ہے سنجلاف حدیثِ قدسی سے بیں اس کا حکم فروع میں نہیں ہوتا۔

من نُقِلَعَنِ الصِّدِيْقِ الْآكَنَ الْفَرْانَ وَعَالِمُ الْقُرُانَ وَعَالِمُ الْقُرُانَ وَعَالِمُ الْقُرُانَ وَيَنْكُونَ فَقَالَ هَكَذَاكُ فَا الْفَعَلُ وَلَكِنَ وَيَنْكُونَ فَقَالَ هَكَذَاكُ فَا الْفَعَلُ وَلَكِنَ قَسَتَ قُلُونُ بَا هَذَامِنَ قَبِسْنِ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَسَنِي اللّهُ الذَّمْ وَبِعَالُ اللّهُ الذَّمْ وَبِعَالُهُ الذَّمْ

البيت الله المرابع ال

ترجمبہ استفرت صدّین اکبرض الله عندسے نقول ہے کہ آپ نے ایک قاری کو دیکھا کہ قرآن بڑھ رہاہے اور رور ہاہے تو آپ نے فرمانیا ہی کرتے تھے کیکن اب ہمارے وابعث ہوگئے ہیں۔ آپ کا یہ فرمانیا '' ایسی تو لیف ہے فرمانیا '' ایسی تولیف ہے جو فرمن سے کے مشابہ ہو ''

### شرح

حضرت الم رتبانی فرتس تر ف نے صفرت الدیجیصدین رضی الدی فرن کو قل اس بات کی آئید میں بیش فرط یا ہے کہ '' شوق آبرار کو ہوتا ہے مقربین کو نہیں ، قاری کا ظاوت کے دوران رونا شوق اور وَجد کی علامت ہے آپ چڑکہ مقرب واصل ہو گئے تھے اس لیے شوق اور وجد وغیرہ باقی ندر ہا تھا۔ بطا ہر آپ کے اس قول میں ذم ، برائی کا بہلون کل آپ کی مرح کا مظہر ہے اور آپ کے مرتبہ کال پر فائز ہونے کی خروبیا ہے۔

#### زوال شوق کےاسباب

مِنَ الْأَوَّلِ وَآتَمُّ مِنْ وُهُوَمَقَامُ الْخُرُاكُمْ الْكَاسِ مِنَ الْأَوَّلِ وَآتَمُّ مِنْ وُهُوَمَقَامُ الْيَاسِ وَالْعَاجِمْ زِعَنِ الْإِذْرَاكِ فَإِنَّ الشَّوْتِ يُتَصَوَّرُ فِي الْمُتَوَقِّعِ فَحَيْثُ لَاتُوتَّعُ لَاشَوْقَ . ترجمہ: اور شوق کے زائل ہونے کے لیے ایک دُور امقام ہے جہنے سے زیادہ کائل ہے اور وہ نامیدی اُور اور اک رہانے سے جو کامقام ہے کیونکر شوق وہائ سے جو اس اللہ کی توقع موجود ہو اس سے جہاں طلوب کویا لینے کی توقع موجود ہو اس سے جہاں توقع نہ ہو شوق تھی نہیں ہوتا۔

#### شرح

ید دونوں متر کے سالک کُر ولی مراتب میں مختلف الاحوال ہوتے ہیں مِثلاً جوسالک وصل پر آہی قاعت کر لیتے ہیں اور إدراک کی طلب نہیں رکھتے وہ حالت زول میں ہو کہ کا طلب نہیں رکھتے وہ موجانے کا وقت ہے، دوبارہ صاحب شوق ہوجاتے ہیں اور جو موجانے کا وقت ہے، دوبارہ صاحب شوق موجاتے ہیں اور جو مالک طالب اوراک ہونے کے باوجود إوراک سے عاجز اور مالی سے ہوجاتے ہیں موجاتے ہیں موجاتے ہیں کو عرق وہ حالت نُرول میں بھی شوق سے خالی رہتے ہیں کیونکہ وہ جانتے ہیں کو عرق وجی مالک کی استعداد برسبت ہوسے مراتب میں بھی اوراک ناممکن ہے۔ ایسے سالک کی استعداد برسبت ہوسے مالک کی استعداد برسبت ہوسے مالک کے زیا دہ بلند ہوتی ہے۔

م الدراك بيطاور ورك المحضرت المام رباني فيس نرو كي بيمعارف اجواس بليم ممبر معرف بين بيان الموسئ اب كو ابتدائي احوال مين بين اك تصح جوكم معارف ال سي بت اب كو ابتدائي احوال مين بين اك تصح جوكم معارف ال سي بت بين سي بين ما تلت ركھتے ہيں مبيا كو دفتر سوم كے بلند تر بين جوكم معارف بتوت سے كامل مماثلت ركھتے ہيں مبيا كو دفتر سوم كے بات وقت آب وصل سے گزر كو اور اكر بيط اور وزك الإ فراك سے جمي مشرف الو ي سے من الله وقت آب وسل مقد وقت الله وقت الله

مِن لَا يُقَالُ إِنَّ مَرَايِّبَ الْوُصُوْلِ لَا تَنْقَطِعُ اَبَدَ الْآبِدِينَ فَيُتَوَقَّعُ بَغِصْ يَنْكَ الْمُرَاتِبِ فَيُتَصَوَّمُ الشَّوْقُ حِيْنَادٍ

ترجمہ : ینہیں کہا جائے گا کہ وصول کے مرتبے ابڈالابا دیک ختم نہیں ہوتے پس ان مراتب ہیں۔ سے بعض کی توقع کی جاتی ہے تو اس وقت وہلِ مقرّب کے جن میں تھی نٹوق کا ماصل ہونا متصوّر ہوگا۔

## شرج

سمبراجا القصیا حضرت الم رتبانی فقیس ٹیرؤ فرماتے ہیں کیعجن لوگوں سمبرراجا کی سیر میلی کانی خیال ہے کیچ نکہ وصول کے مراتب کھی ختم نہیں ہوتے لہٰذا شوق اورطلب ہمیشہ رہتے ہیں قرینِ قیاس نہیں کیونکہ اپ کے نزدیک پیموفت دوسیروں برخی ہے۔ اقال برسیرخصسی ہی دوم برسيراجمالی وصول کے متبول کا کبھی خم نہ ہو ناسیم فیلیں ہے جب کہ عارف تفصیل کے ساتھ تمام اسمار وصفات و تعلقات منات اور شیون و اعتبارات کی سیر کرنا ہے۔ ایساعار و سمینی شوق وطلب میں رہتا ہے کیونکہ تعلقات اسمار و صفات اور تفصیلات شیون و اعتبارات غیر متناہی ہیں۔

لیکن آب جس عارف کی نسبت گفتگو فرمات بین اس سے مُراد وہ عارف میں آب جس مارد کی نسبت گفتگو فرمات بین اس سے مُراد وہ عارت سے معربہ بین ہوسکتی اس میں میں میں اور اس کی سیر نہیں ہوسکتی اس میں عارف ولا بیت خاصہ سے مُرزاز ہوتے ہیں کیونکہ اعظیم مرتبے مک ان کا وصُول سیراِ جمالی کے بغیر تصنور نہیں ہے۔

بیر سده بی مسلم مواکه جوء فار تفضیلی بین مصروت رہتے ہیں ان کے مراتب وصول مجنی نہیں ہوتے اور وہ صرف مجتمات صفاتیة تک ہی مجبوس رہتے ہیں اور جوء فارسیر الجمالی سے شاد کام ہیں وہ تجتمیات ذاتیہ سے حصمہ باتے رہتے ہیں۔ وَ بِلَّنْدِ الْحَمْدُ

ای سیرت این عربی التر کا کا اس میرید می سیرت می الدین ابن عربی میرید می الدین ابن عربی قدس سیرة می الدین ابن عربی قدس سیرة الدین این الدین این الدین این الدین ال

جه البيت الله المراكبة المراكبة المحالية المراكبة المحالية المراكبة المراك

فرائی کوخاتم البیوت علی صاحبها الصلولت بادشاه کی مشل ہیں اور خاتم الولاسیت وزیر خزانہ کی مشل ہے اللہ کی اللہ کی اللہ کی سے اور بادشاہ خزانے اپنے وزیر خزانہ سے ہی طلب کی اللہ کی سے ہی ساتھ ہیں گے۔ کوتے ہیں گے۔ کوتے ہیں گے۔

کیکن واضح رہنے کو حضرت جامی علیہ الرحمۃ نے اپنے علم ظاہری کی قوت سے یہ توجیہہ فرائی ہے علم باطنی شفی اس کا حقل نہیں ہے اُولیائے کرام کے زُمرے ہیں حق شبحان و تعالی نے حضرت امام ربانی فدس سر ف کو علوم ظاہر یہ وکشفیہ ہیں ایک منفر دمقام عطافر مایا ہے اس نبار پر آپ فرماتے ہیں کہ : ''سیر محبوباں سیراجمالی می باسٹ تا مقصر درسنہ و نبجام تفاصیل

منفات التفات نمیفر ماید ... . کے بعنی محبولوں کی سیراجمالی ہوتی ہے ناکھ جلدی قصود ( ذات ، کسبینجیں اسی لیے وہ تفاصیل صفات کی طرف توجز نہیں فرماتے ۔

آپ فرمکت بین چرکم بینکم ائت کے تمام کالات کاجامع ہوتا ہے اور
ائست کوج کچھ حاصل ہوتا ہے نبی کی متابعت کے واسطہ سے حاصل ہوتا ہے
المذا ہرائمتی نبی سے فیصن اخذ کر تا ہے نہ کہ نبی کسی اُمتی سے اِنعو وُہا للہ مِنْها اور شیخ اُکر کے مقولہ میں جو مطلب ثابت کیاجا تا ہے وہ ہر گر مقصود اسلی اور کھتے ہیں اور نہیں کیو کہ تجلیات صفاتیہ کے اِنعکاس ہیں یہ مرتب اسلی اور ذات بی مشجانہ و حضور سرور کا منات من الله عند ہم کے تمام مرتب اسلی اور ذات بی مشجانہ و تعالی سے بلا واسط مقتبس ہیں وہ اسلے کی مجانش کا تصور می محال ہے تعالی سے بلا واسط مقتبس ہیں وہ اسلے کی مجانش کا تصور می محال ہے اسلی کے دریعے واضح فرمایا کہ اگر بادشاہ اپنے اسکے دریعے واضح فرمایا کہ اگر بادشاہ اپنے انسکرے ذریعے کوئی شہریا ملک فیخ کرے تو یہ فیچ وشوکت در اصل با دشاہ ا

کی ہے کیونکوشکر کے پاس الات ِ حُرب و صنرب سب بچھ بادشاہ ہی کا ہے ہاں الدبتہ کٹ کر کو بادشاہ کی وجہ سے ہی بیر جُرونی صنیلت ملی ہے لیکن اگر وہ بیر دعویٰ کریں کہ بادشاہ کو بیرساری شوکت اور صنیلت ہماری طرف سے ملی ہے تو بیر ایسا دعویٰی ہوگاجس کی دلیل مام نہ ہوگی اور مصن لَعْتِی شمار ہوگا۔ وَاللّٰہُ اَلْمُ مُعْتَمْ عَلَیْ اَلْمُ اِلْمُ

من فَأَصْحَابُ الشَّوْقِ وَالتَّوْاَحُبِ فِي الشَّوْقِ وَالتَّوْاحُبِ لَيَسُوْلِ الْآ اَصْحَابُ التَّجَلِّ التَّجَلِّ التَّاتِ الدَّالِيَّةِ الشَّفُولِ اللَّهُ وَالْمَلِيَّ التَّجَلِيَّاتِ الدَّالِيَّةِ اللَّهُ وَالْمَلُولُ فِي الشَّوْقِ وَالْوَجْدِ لَهُ مُ نَصِيبَ فِي الشَّوْقِ وَالْوَجْدِ لَهُ مُ نَصِيبَ فِي الشَّوْقِ وَالْوَجْدِ لَهُ مُ الْمُلَولُ فِي الشَّوْقِ وَالْوَجْدِ لَهُ مُ نَصِيبَ فِي الشَّوْقِ وَالْوَجْدِ اللَّهُ وَالْمَحْدُ اللَّهُ وَالْمَالُ اللَّهُ وَالْمَالِيَّ اللَّهُ وَالْمَالُ اللَّهُ وَالْمَالُ اللَّهُ وَالْمَالُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَالْمُوالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَاللَّهُ و

# شرح

حضرت امام رّبانی فدّس سرؤنے اس اُمرکی وضاحت فرمانی ہے کے صوفیاً کا جو گروہ سیوصیلی کرتاہے وہ تجلیّات مِسفاتیہ تک ہی محدود رہتاہے یہ کروہ شوق اور وَمِد والوں کا ہے جومرتبر اُبرار برفائز ہوتے ہیں اور اربابِ قلوب ہیں ہے ہیں ۔

یں ہے ہیں۔ لیکن صوفیار کا جو گروہ میراِ جمالی کرتا ہے وہ تجلیّات ِ ذاتیہ سے بہرہ یاب ہو تا ہے یہ گروہ مقرّ بین وصلین اور کا ملین کا ہے جوار بابِ مکین میں سے ہے البنت الله المرابع المرابع المرابع المحابة المرابع الم

اور وصل دائمی سے باریاب ہو کرشوق اور وجدسے بے نیاز ہوجا آہے کی ذکرشوق اور وجدسے بے نیاز ہوجا آہے کی ذکرشوق وجد ، تواجد ، ہماع وقص اور اضطراب کی کیفیات ہجر و فراق کی علامات ہیں جب و قرار بہکوت و فتات ہے محکور وسکون کی کیفیات ، قرب و وصال کی علامت ہیں جب اکہ وسکے اور جوب ہوش ہو گئے اور جوب رب العالمین منا اللہ اللہ تعلق ذات کے با وجود ہوش میں رہے اور بہی فرب بہ مسکیل و کمیل کا ہے۔

وجد کا معنی بیانیا "اِصطلار صوفیار مین شید البیّه محقیقت وجد اورسوز وگداز کی حالت بین سالک پر بینخود کر دینخالا آج خود کر دینکا مشاہدہ کے بینے بین قراری سے قلب میں جو حرارت بیدا ہوتی ہے اسے وجد کہا مشاہدہ کے بینے بین قراری سے قلب میں جو حرارت بیدا ہوتی ہے اسے وجد کہا جاتا ہے صوفیار کے نزدیک وجد کی حقیقت معالیت کو دہ عزافتیارید "کاغلبہ جاتا ہے البقراس عنایت کاسب سے اور یہ حالت کو التحقیاری ہوسکتے ہیں اور اس کی رُوحانی نسبت کا اقتضار بھی سالک کے آعمال وا وراد بھی ہوسکتے ہیں اور اس کی رُوحانی نسبت کا اقتضار بھی

# مطلق وحمب دكاثبوت

مطلق وجدکے ٹبوت ہیں درج ذیل آیاتِ قرآنیہ شاہر ہیں۔ سرخمر و قرر کہ طانا علی مشاؤد ہے نم اڈف اکم والے امین مبر ہم نے ان کے دل صبوط آستقیم کردیئے جب وہ کھڑے ہوئے۔ امین نمبر کا کترانی آغینہ کم تفیض مین الدّنمیع مِستَاعَ فُوْا

مِنَ الْحَقَّالَ

یعنی آسے مجبوب منا لئوائیہ ونم آپ ان کی انھیں آنسوؤں سے بہتی دکھے لیہے بیں سبب سے کہ انہوں نے حق کو پہجان لیا ۔

سر من النَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهِ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهِ وَجِلَتُ اللَّهِ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلْتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجُلُولُهُ مِنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَجِلَتُ اللَّهُ وَاللَّهُ ولَهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّالِهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَ

لینی ایمان والے لوگوں کی شان بیہے کہ اللہ تعالیٰ کے ذِکر کے وقت ان کے دل ڈرجاتے ہیں ۔

آيات إلاسَ الرخشيّت كي مندرجه ذيل علامات منهوم هو تي بير .

ربطِ قلب بمعرفت الهی تیں رونا ، ذکر کے وقت دلوں کا ڈرجانا ، بدلوں اور دلوں کا زم ہونا وغیرہ ۔ انہی علامات خشیت کوصوفیار کرام نے وجد کا نام دیا ہے بعض روایات سے وجد کی حالت بین جم کی حرکات محمودہ غیر اختیار یہ کا نبوت بھی طمانے سے دیئر مشائخ طریقیت سے بھی طمانے سے دیئر مشائخ طریقیت سے توانز کے ساتھ وجد کی مختلف کیفیات بھی ثابت ہیں جبکہ بعض مشائخ وجد بہن مائن وجد بہن مائن وجد بہن مائن وجد بہن مائن کے انہی تا تزات کا حرکات کے قائل نہیں ان کے زدیک وجد قلبی وروحی وجد ان کے انہی تا تزات کا

نام ہے جوصراحتیا قرآن وحد بیٹ سے ٹابت ہیں ۔ و و توانجد ، باب تفاعل سے ہے جس کے عنی میں کھٹٹ اور ذاتی اختیار کو احبر کا اعتبار غالب ہو تاہے جیانچہ اپنے اِختیار سے وجد لانے کو توجہ کہتے ہیں کین اس تم کے شخص کا وجد کامل نہیں ہو آگیونکہ اگر پیکا مل ہو تا تو واجد محسلاتا ۔

مثنال كيطوريرا كحركوني فتحض محفل ماع ياحلقنية ذكربين شركب هويا أشعار وقصائد سنة ناكداس كے دل میں رقت وگدار كے مذبات بيدا ہوں اور وہ ہن مد نک طبعیں کم<sub>ا</sub>س کوبیے خود و مدہوش کردیں۔ اکٹر کی اس کیفنیت کو دعوت <sup>د</sup>ینا یا اس کے لیے اس طرح کا اہتمام و تکلف کرنا کہ ایسے حالات پیدا ہوجائیں یہ سب تجيرتوا مُدكِ مُن بين أناب توامد كتعلق صوفياري دور ائه بن ایک گروه اس بیر کوئی مضا تقه خیال نہیں کرنا که رقب اور گداز کی فصنا تربحلف پیدا كى ملئ ان كے اس مُوقف كى نبياداس مديث پرہے اَنبكُو اَفَيان لَهُ تَنْكُوْ الْمُتَاكِمُ وَلَهُ لِينَ خُوبِ فَدَاوِنْدِي مِين رويا كُرو اِكْرَبْهِين رونا مُرْآئِ تورونے کی کوشش کیا کروم توفیار کا دوسراگروہ تواجدے احتراز کی تلفین کریا ہے کیونکھان کے نز دیک اس میں کلف اور نباور مل کا مُنصر یا یا جا آ ہے جو روحاني إرتقار كي يدركا وط كاباعث بهدان كي توقف كي بنيا د كسس حديث بربيت كرحضورا كرم من الدينية ولم كم محفل مين سحاب كرام براس قدر سكونت و جمودطاري رہماً كه پرندسے سروں پر بیٹھ كر اُرم جاتے اور انہیں احساس بھي نہ ہوآ مبیاکہ صنرت برار بن عاذب سے مروی ہے بھکنٹ اسے اُگ على رُؤوسِتنا الطّليراء يعنى بميسے بارے سروں پر پرندے بلیھے ہوں (المُرحِ كُت كَي تُوكِينِ أَرْ مَرْجا بين)

اِستىلامِ محسوس كرتاب كه نفن وا فاق ميں وجودِ بارى تعالىٰ كے شوا بر وجود يا تا ہے سگریہ اسی وقت ہو آہے جب عار وٹ کے حبمانی ہیک کے مادی تعاشفے خم هُومِا بِينَ اورُسُلطانِ حَقِقت ظهور نِدِيرِ موجلئے نفس کی نشری کدُور میں خصبت ہو جانبي اورعارف اينے وجُ داور احساس الكيسے آگے طرح كَر وجُ دِحْق اور إحساس ذات كى منزل باليه اسى خليفت كوحصارت الوالحسين نورى بغدادى عليه الرحمة في ان الفاظيس بيان فرمايات .

النَامُنُذُعِشَرِنِنَ سَنَةً بَيْنَ الْوَجْدِ وَالْفَقْدِ ئى بىس بىس سى وتجوداور فقذان وجود كى منزلوں بيں ہوں "

يعنى حبب جب بمحص البن ومؤدكا احساس موتاجا تاب اس كى ذات کا احماس مفقود ہو آجا آہے اور جب جب اپنی ذات کو مفقو در گئم کم با تا ہوں اس کی ذات کو موجود با تا ہوں ۔

من المراب المراب المراب موفى صاحب الوجود كى دومالتين بوتى بين صوفى صاحب لوجود "صواد رَغو" مالت صِحوى كيرساته بقاكالم

ب اور مالت محوس كرساته فنا كو كبت بسله

. رابط ملك الله وجد، تواجدا ورونج د كا بالهمي ربط بيب كه توافيد ابتدار كانام ب اور وجوُد انتهائے سے تعبیر ہے جبکہ وجد اس سلد کی درمیانی کردلمی

ب بصنرت البعلى دقاق رحمة الشعلبيت فرمايا

التَوَاجُدُ يُوْجِبُ اِسْتِيْعَابَ الْعَبْدُ وَالْوَجْدُ يُوْجِبُ اِسْتِغْرَاقَ الْعَبْدِوَالْوُجُوْدُ يُوْجِبُ السَّيْهَ لَالْتَ الْعَتَبْدِيَّهُ

تواجدیہ ہے کہ احساس عبدتیت بوری طرح کھیرے میں اجائے وجداسی

المنت المعالي المعالية المعالي

احساس کو گئم کر دینے کا نام ہے اور وجود کلیٹا اِستہلاک کا تقاصا کرتا ہے۔

بر بر بر کا حضرت امام ربّانی قُدِسَ سترہ کی تخییق انیق کے مطابق وجد وحال

بر بر ممبر اور قص وشلوق متوسطین کے لیے ہے کا ملین اور منتہی الکین

کو اس کی ضرورت نہیں کیونکہ یہ اُمور ارباب قلوب کے حال کے مطابق ہیں
ارباب ممکین کاحال اس سے بہت بلند ہے۔
ارباب ممکین کاحال اس سے بہت بلند ہے۔

اختلاف ایک فطری تقیقت ہے لیکن اختلاف میروفیا کی محمت اس میں توازُن واعتدال ایک حیین وہیل انتزاج کارُوب دھارلی تاہے جس طرح عُلمار کے مختف مکاتیب ہیں، فقہا کے

الگ الگ شغیے ہیں ممکما کے ہاں معالجات کے تعدّدطریقے ہیں اسی طرح باطنی اخلاق واعمال کی درستگی کے بلیے صنوفیا رکے اندرجھی طریقت کے کئی سلاسل میں اور سری ماہ زمجہ ورویزیال مشتقہ میں لیکس کی فیصل میں میں اللہ

ہیں اور پرسب جا دہ حق واعتدال رستقیم ہیں کئی ان کا اُختلاف رصائے الہٰی کے لیے اِضلاص رِمنی ہے کیونکہ بیرصارتِ الاکشِ نفسیانیہ سے باک ہوتے ہیں تمام

سلاس تصنوف اس امر رتفق ہیں کہ اُن کے سیروسلوک کا اصل مقصود و مطلوب اِن استان کے طریقے استان کے طریقے

مختف ورتعدوي مبياكم فرماياً كيا حل رق الوصول إلى الله بعت دو انفاس الخلائية يعن الله تعالى كبيني ك طريق مخلوق كي النول

كى تعداد كے مطابق ہيں۔



صَلَىٰ التَّعَلَيْهِ وَلَمْ كَي فَرُوتِيت كَامِلِ وَأَحْمَل بِيهِ اوراً بِ كَي وَانتِ اقدَس فَمَا مِ أَبِسِياً و مركبين عليهم السلام كي صَفات وكهالات كالمجموعة بسيداور آب بي تمام انوار وتجليل كامُورد اورمُصدر بين لهذاا وليا ركوام جب آب كي إتّباع مين وصول كے مرتبوں كى جانب گامزن ہوستے ہيں تو آپ كى فردتيت كاملہ كى كو ي جہت اور حقيقت مجاير كى كونى تجلَّى ان كے قلوب يېنعكس ہونى تب تو اس جہت يا تجلَّى سے اِس ولى كو ايك خاص باطنى معنق بيدا موجا بأب حب كواصطلاح طريقيت مين سبت كهاجا بآ ہے۔ یہ خاص سبت اس ولی سے مسوب ہونے والوں میں اتباع سنسے ترامیت کی برکت سے طہور ندر ہوتی رہتی ہے اور صوفیار کے سلاسل مرتبیتوں کی بھی صوريت اختلاف صوفياركي نبياو ب- أصولي طور برتمام صوفيا مُتَدَّالُاصِ إِنْ البقة مقصة وكي صفول كي طرق ومع كجات بيركسي قدر فرق ب سالاس أليتبي كي تعلق حضرت سيدافد إلم ن عرف الأرميان رحمته الله عليه احبر حضارت موالب نا ضنك الزحمان محنج مُراداً با دى رحمة التُدعليد كيصاحزا ويصصرت احمد ميا ك خليف تنصى في بهائيت المم الموربيان فرائي بيك جو مُعَضَّا بدية قارين بي.

# نسيت شاكسل

سلسالقشنبنديد أفترك الطُرُقُ اور سَهْ لُ الْوُصُنُولَ بِ كَرُمُعَامِلًا بزرگان تشبنديدين سبت صديقي كاظهورب يرطرفيت صديقى شابداسى عنى كے بيں اورنسبت حضرت صديق اكبرونى الله عنه كى المامي تقى اورىرودِعا لم صَلَى الدِّعِلْيَهِ وَلَمْ كَيْ صَمَّنيَّت كَبِرِي حاصل مَعْنَى كَدْ مَسَاحِسَتِ اللَّهِ وَ في صَدْرِي شَيْئًا إِلَّا وَ قَدْ صَبَبْتُهُ فِي صَدْرِ آبِي بَكُرْكُ

له مجوه رسائل مسلا مطبوعه كانبور ١٩١٣ كم الكسسرار المرفعه صلير

جو البيت الله المراكبة المراك

المذافیض اس نسبت کا إلقا بِسینه بسینه به جمعنت شافی تشبندر مرته التعلیه بسین به خصرت خواجه بها و الدین تقشیند کے بسین الله و مرت خواجه بها و الدین تقشیند کے بساتھ بیر و مُرشد من رست خواجه الله علیة کا دواج تھا لیکن جب حضرت خواجه جمع کرنے کا دواج تھا لیکن جب حضرت خواجه عبد النا علیه محضرت خواجه عبد النا نات عجد و انی سے بطر ای اولیت یک تفیض جوئے تو آب نے دو بارہ کس مسلط میں ذکر شفی کوجادی کیا .

بزرگان قادرید مین سبت فاروتی کاظهور بے اور سیدنا سلسلهٔ فا در بیر فاروتی اعظم رضی اللهٔ عنه کی نسبت مُوسوی تھی اسی سب آپر

جلالت الهيدا ورتصرفات عِظيمه اس للسلط كى مناسبت ب حرحضرت سسيدنا غوث الاعظم شيخ عبالقا ورجلاني قدس مترؤ سيظهور پذير موتى .

علیہ السّلام کی دعوت کو قبول کم ہواا ور اُمّت نے ایدا پہنچا نی صنرت عثمان تھی ہید ہوئے رہی وجہ ہے کہ اس سلسلے کار واج بھی کم ہے البقہ اس طریقے ہیں عبادات رقوں میں سے مارور طورات وروز

اورتعمیراِد قات کی طرف طرال تفات ہے۔ • الرقعمیراِد قات کی طرف طرال تفات ہے۔

#### بليك التا

© تصریحات بالاسمعلوم موتا ہے کہ طریقت کے چاروں بڑے سلسلے خلفا اربعہ کی سبتوں کے مظاہر ہیں اور سائلین کاسلوک اپنی چارطریقوں پرواقع ہے مبیا کے حضرت امام ربانی قدس سرف نے رساله مکاشفات عینیہ ہیں اس کی وصاحت فرمائی ہے۔ یہ امر جمی محوظ رہے کہ قرب اللی کے بلے دور استے ہیں بہلا رستہ قرب مبترت کا ہے دور اربستہ قرب ولایت کا ہے۔

تربنبوت کا فیصن حضرت سیدناصدیق اکبرضی الله عند کے واسطے سے مامسل ہوتا ہے ۔

© تحرب ولايت كافيض صنرت سيّد ناعلى المرّتضي رضى الله عنه كه وسيك

باتی دونون خلفار رحضرت فاروق وعثمان رضی الدعنها، بھی قرب بتوت
کے سلوک سے وابستہ ہیں بینانچ حضرت صدیاتی اکر کا سلوک پر انفسی سلیمائی رکھنا
ہے اور صفرت علی الم تصلی کا سلوک میرا فاتی سے تعلق رکھنا ہے ۔ گو دونوں سلوک
مشکل قر انواز نتوت سے عقب ہیں کی دونوں حضرات کے ساتھ علیحدہ علیحدہ طور
پر مخصوص ہو گئے ہیں ۔

© دُوسِ سلاسل، قادریہ ، مُہرور دیہ اور خبتیہ وغیر لی اکثر طور برجن رخیب لی رضی اللہ عند کے طریق قرب ولایت کے ذریعے تقصو و اُس پہنچتے ہیں جبکہ سلسلہ نقشندید دولوں طریقوں و قرب ولایت ، سے مُوسِل ہے لیکن تقشندید دولوں طریقوں و قرب ولایت ، سے مُوسِل ہے لیکن قرب بیتوت کی نسبت اس میں غالب ہے تمام مُسلوں کے اکا برمشائخ اِبتدائی دور میں اس نسبت کا سلوک طے کرکے قصود و مک پہنچتے رہے گو بعد میں جب موست علی رضی اللہ عنہ کے سلک کا شیورے ہوا تو اکثر مشائخ نے اسی مسلک کو

افتيار کرليااس کی دو وجهير تقين ـ

بهای وجربی کر حضرت صدیق اکبر کے مسلک میں پوشیدگی وخیفا کی وجہسے مُنبتذی کو اس برحیلانا دشوارتھا حبیبا کہ عارف جامی نے فرمایا: مه نقشبنداں عجب مت فلہ سب الارا نند کو بڑند از رو بنہاں مجسسرم قافلدرا

اسى طرح مصرت فارُوق اور صفرت عثمان رضى الله عنها كليم سلك بير، بوشيد كي تعى ان برجلنا بھى آسان نرتھا اور صفرت على رضى الله عنه كامسلك ظهور ركھتا تھا لہذا اسان ہونے كى وجه سے ہي مسلك ِ ظاہر زيادہ شائع مُوا۔

و ورى وجريب كرخوت على رضى الدونه كا ذاذ ارشاد تمينون خلفار كرام المي يتجيب الميذا سلاسل كاز تساب و براه المي باريدا بهى كرما توجوا.

اس سے يعفره مركز افذ ذكيا جائے كرتسليك و كميل صفرت على رضى الله عنه كرسات و مين الله و المؤد و الله و الله

انهی اختصاصات سلاسلی انهی اختصاصات سلاسل کی انسی انهی اختصاصات سلاسل کی انسی انتیاد پرصوفیار پر مخصوص کاپ انسی می انس

سے طبعاً گرز کرتے ہیں۔ میقتصند کے تسببت ہی يے جو حضرات نقشنبذر کو توامُد ، ذکر بالجبرا ور قص وسماع سے دُور رکھنا ہے کیونکہ ان کی سبت صدیقی ہے ،ان کاطراق فیصن القائے سیند بہمینہ ہے جو تکان کی بيرانفنسي بن للمذا اس نسبت مين تحوت و إخفارا ور دوام صنور كا غلبه ب مبي وجبيك كريسك لنعره باستعاشتيات اورتص وسماع كيطرف التفات نهين كهتا اوراس سلسلے میں نثرع کے حوا ہرفعنہیہ ویے کر وجد وحال کے اخروط ومنقلی نہیں خرید تنے اور نفس انحتاب وسُنّت کو پھوٹر کر نفس (فصیوس انحکم ) کی طرف نهیں جھکتے اور فتومات مدینہ ( وحی کے مقلبلے میں فتومات مِکتیہ رکھف کی طرف إلى خات نهيي كرت. امام طريقت عارف برحق حضرت سيدنا محدّد الف نانی قُدِس ترهٔ استبهانی ای سبت کی تجدید و احیار پر مامور موت این . بتره کے زرمک صحاب وجدوحال،ارباب قلُوب میں سُسے ہیں۔اُربابِ ممکین کو وجد وَحال ا ور رقِص فِ سماع کی ہر گزمنرورت نہیں رہتی جنائجہ آپ اِرشا د فراتے ہیں : سَمَاعَ وَوَجُدَمِها مِدرا مَا فِع است كُنْتَقَلُّب أحوالَ مُتَّبِعِيفِ ا ندور تبكُّ ل أو قات مُسْبِم وتقع ماضرا ند و وسقة غائب گاسب واحداند ومكاسب فاقداليك نندار باب فلوك كچھ آگے فرملتے ہیں ؛ فَهُمْ أَبْنَاءُ الْوَقْتِ وَمَغْ لُوبُوهُ فَ الخسرنى تيفيطاؤن ارباب شمليات فاتيدكه تهاه

برآمده بقلّب تلب بيست الدوبكليّت الزرقيّت أحمال مجرِّل المحال محرِّل المعرَّر الله المحرِّل المحرِق المحرّل المحرّل

ترجمه بهماع اور وجداس مباعت کے لیے تفیدہے جو تقلیب احوال سے جن کے احوال بدلتے رہتے ہیں ہتصف ہیں اور تبدیلی او قات کے ساتھ ِ و اعدار ہیں جوایک وقت میں حاضراور دورسے وقت میں فائب ہوجاتے ہیں برلوگ واجد داینے مقصور کو پانے والے ، کوتے ہیں اور محمی فاقد رگم کرنے والے ، یرلوگ ارباب فلوب ہیں جینانچر بیرلوگ ابن الوقت، وقت کے بلیطی ہیں اور وقت کے عکوب ہیں تھمبی عُروج کرتے ہیں اوٹھمی ہمبُوط دینیچے آ جائے ہیں ایکن ان کے رجکس اُرباب تجلیّاتِ ذاتیہ دِرمُقامِ قلب سے کُل طور پر با ہرآ کرمُقلِّب قلب رحی تعالیٰ کے ساتھ وابستہ ہو گئے ہیں اور کلمینٹہ احوال کی غلامی سیے مکل کر محِّلِ احوال داحوال کو تبدیل کرنے والیے بیٹی حق تعالیٰ کی بارگاہ میں بہنچ گتے ہیں وه لوگ ماع و وجد کے حت ج نہیں ہیں کیونکران کا وقت دائمی ہے اوران کا حال سرمدی ہے بہیں ملکران کے لیے نہ وقت ہے اور ندحال یہ لوگ الرالوقت ( وقت کے باپ، ہیں اور اصحاب تمکین (اطمینان والے، ہیں اور ہر ایسے مل ہیں جر رجر عسے قطعًا محفوظ ہیں اور نہ فقدہے ران سے ان کامقصور گم نہیں ہو سكتا، للذاجن كيديد فقد نهيل ان كيديد ومدهي نهيل.

اسی محتوب میں محجیدا گئے تخریر فرماتے ہیں : "ارام این بزرگواران برعبا دات است و تسکین در ا وائے حقوقِ بندگی وطاعات .... ایشان راامتیاج برسماع و وَجدنمیت عباق است ایشان را کارِسَماع می کند و نوانیت اصل از عُروج کفایت می کنشد جماعی مقلدان از ابل سماع و وَجد که برخطم شان این بزرگواران و اقت نیست مندخود را از عُشاق می گیرند و ایشان را از مُز ا و گوئیاعشق و محبت را مخصر در رقص و و جدمید انند به

ترجمبر ، ان بزرگوارون کا آرام وجین عبادات میں ہے اوران کی سکین بندگی و ملا عات کے حقوق کی ادائیگی میں ہے ان کوساع و وجد کی کچھ حاجت بہیں ان کی عبادات ان کے لیے ساع کا کام کرتی ہیں اور اصل کی نورانیت عُروج سے کفایہ کرتی ہیں اور اصل کی نورانیت عُروج سے کفایہ کرتی ہیں اور اصل کی نورانیت عُروج سے کفایہ کرتی ہے اہل سماع و وجد کے مقلدوں کا ایک گروہ جوان بزرگواروں کی عظیم شان سے واقعت نہیں ہے وہ اپنے آپ کو عُشاق میں سے سمجھتے ہیں اور ان کوزا ہوں میں سے جانتے ہیں گویا یہ لوگ عشق و مجتت کو رقص و وجد ہیں خصر سمجھتے ہیں ۔

میں سے جانتے ہیں گویا یہ لوگ عشق و مجتت کو رقص و وجد ہیں خصر سمجھتے ہیں ۔

بیرنسر ماتے ہیں ،

یرک دید بین است و مُنافی عُروج برجید بشرائط واقع مبتدی را سُهاع و وَمُدمُقِرَ است و مُنافی عُرُوج برجید بشرائط واقع شود .... وَمُدِ او معلول است هال اُو و بال است حرکت و اُوطبی است مُرَّکُ وْنُ مُنْ اَرْبَابِ الْقُلُوبِ وَ اَرْبَابُ الْفَتُ لُوبِ وَ اَرْبَابُ الْفَتُ لُوبِ مَرِّ الْمُنتَدِي مَرَّ اَلْمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَ ہوائے نفسانی مے خلوط ہے اور اربابِ قلوب وہ ہیں جو مُنتدی اور نتیج اربابِ قلوب میں میں میں اور نتیجی سے جوار باب قلوب میں سے نہیں ہے اور اربابِ قلوب وہ ہیں جو مُنتدی اور نتیجی سے درمیانی مقام (متوسطین) میں ہوتے ہیں درمیانی مقام (متوسطین) میں ہوتے ہیں

عقیقت ِنمانسے بے خبر ہیں:

جم غفيرازين طائفة تسكين إضطراب خودرا ارسماع ونغمه ووَفَد وَلواجُد جتند وطلوب خودرا در برد المئن فنه مطالع نمودند لاَحَرَم قُصِلُ رَقَاصی را وَيدنِ خودگرفت ند باَانکه شنیده باشنه مَا جَعَلَ اللهُ فِي الْحَدَرُ إِلَيْهِ مَا فَي اللهُ فِي الْحَدَرُ إِل شِيفًا عَبِ اللهُ فَي اللهِ مَن اَن مَا عَلَى بِكُلِّ حَشِيْتُ إِللَّهِ اللهَ يَي اللهَ يَي اللهَ يَي اللهَ يَ يعضي ويصيم الرائز وم ارسماع ونعنم نزدندے ويا دِ وَجد و تواحب دنه كروندے .

ق چُن ندیدند حقیقت ره انساند ز دنده ترجمه: اس طائفه کی ایک کثیر جاعت نے اپنے اضطراب وبے قرای کی سکین کوسماع و نغمه اور وُجه و تواجه میں تلاش کیا اور اپنے طلوب کو نغمه کے کی سکین کوسماع و نغمه اور قص و رقاصی کو اپنامسلک بنالیا ہے حالا نکه انہوں نے سُنا ہوگا مساجعت ل الله فی الحسس ایر شیاع الله تعالی نے وامین میں نفانہیں رکھی ہاں الغریفی کی سینے کی سینے لے حیث نیس و کھیں الشہینی مُعینی و کوسینے و الاشخص ہرایک سینے کا سہارا و حود و الاشخص ہرایک سینے کا سہارا و حود و الاشخص ہرایک سینے کا سہارا و حود و الاستان کے کھولات کی کھی

البيت المجالية المجالة المجالة

بهی قیقت ان برینکشف ہوجاتی تو وہ ہر گرزساع ونعمہ کا دم نہ بھرتے اور وَجدو تواجُد کو یا دنہ کرتے ہیں۔

ع جب حقیقت ندملی ڈھُونڈلی افسانے کی راہ

حضرت الم ربّانی قُدِسَ بِیتُرُوْ تَحْری فرماتے ہیں:

وجهاعه از متاخرین مِلفائے ایشان ترک
اوضاع این بزرگواران گرفتہ بعضے اُمور درین طریق اِحداث بنووہ
اند وسَماع ورقص وجهر اختیار کردہ منشابہ آن عدم وصحول است
بحقیقت نیات اکا بر این خالؤادہ بزرگ خیال کردہ اند کہ براین
مُخدثات ومُنبُدَعات کمیل و تمیم این طریقه می نمایند ندانست اند
کہ در تخریب و اِضاعت آن می کومشند کھ

ترجمہ ؛ اورسکسانفشبندیکے خلفائے متائظ دین کی ایک جماعت نے ان بزرگوں کے اوضاع و اطوار کو تزک کرکے بعض ایسے نئے امور مثلاً سماع و رقص اور ذکر جہر اختیار کر لیے ہیں اس کی وجہ عدم وصُول ہے یہ لوگ اس بزرگ دن سر بریں کے نتاتہ کہتا ہے ۔ یہ نیں کسختاں نیا کہ معظم مدے

خاندان کے اکا برین کی نتیق کی حقیقت مک نہیں ہنچتے اور خیال کر بیٹھے ہیں کہ ان محدثات (نئی با توں) اور مُبدعات ( برعثق ) سے اس طریقہ کی تکمیل و تمیم کر

رہے ہیں مالانکہ یہ نہیں سمجھتے کہ اس طرح سے وہ طریقہ کوخراب اور ضائع کیے گئے کی کوسٹ شش کررہے ہیں۔

ابنی طرفیت کی حفاظت اہم ترین امرہ اور مجد دی صالت میں ایک انٹر نقشبندی ایک انٹر نقشبندی حضرت اور مجد دی صالت کے ربکس تواجد، ذکر جہرا ور رقص و



سماع کی رسموں رقبل پر اہیں اور اس نسبت جامعہ کے بطنی فیوس وبرکات سے خالی ہیں اور ڈو و سر سے سلاسل کی طرح اس سلسلہ کے لوگوں ہیں جم تعلیم و تربتیت کا تفاؤت اور عملی طریقت کا فقدان نظر آر ہا ہے افسوس کہ اس خالص نسبت کے حامل افراد بہت کم ہیں اور نیسبت کر بیت احمر اسٹرخ گندھک، سے بھی زیادہ نایاب ہے۔

بهلی وجه بیر بست کی حبید و جوبات بین وجه بیر بست که انهوں نے اس نسبت کی اس کی حبید و جوبات بین اصل حقیقت سے بی خبری کی بنار بیض اپنی دکا نور کو میکانے کا کاروبار نثر وع کرر کھا ہے۔

تمیری وجریه می معلوم بوتی ہے کہ وہ اپنی نسبت کے ساتھ ساتھ دو مسری نسبتوں سے بھی اختلاط و استاب رکھتے ہیں لام عالہ اپنے مزاج کی مجبوری اور اپنی طبع کے میلان کے سبب جس نسبت کا غلبہ پاتے ہیں ہی پر فریفیۃ ہو کروہی رنگ اختیار کر لیتے ہیں ، و لیل آس فی ایک نیفیش فرن کر داھیں ، مالانکر جستر کر فلط ملط المور بانی قدس میر فراس ہے ای نسبت میں دور مری نسبت کو خلط ملط کھے نے بیٹ منع فرایا ہے ۔

آپ نےاِرقام فرمایا ؛ مورو شکر کو مقرمی کنونونونونوں معتند میں

إحداث كه وُرطرُ بقت بُيدِ اكنند نزدِ نقير كم از برحتے نيست.... چون امرِ مُحدث درطرِ بقت پيدا شدرا و منوص وبرکاتِ ان طريق مَندُ ودگشت پسِ محافظت طريقت از اَئِم مَهام آيد من ماشرُ رصورُ آيذه البيت المجالية المجالة المجالة

ترجمہ: وہ نئی بات جوطر بقت میں پدا کرتے ہیں نقیر کے زدیک بدعت
سے کم نہیں جب کوئی نیاطر بقد سابقہ طربقت میں داخل کیا جا تا ہے تو اس کے
فیوض و رکات کار استد بند ہوجا تا ہے۔ اس لیے اپنی طربقت کی حفاظت اہم
ترین امرہے۔

عامشید محفظانشة له دفتراول مکتوب ۲۷۷





نحوُّبائیرِ صرت خاجر عکافی بخیا (بری رمنالله



موضوعك

نىبت نفت ئىندىية تمام نىبتول ئى مىلىنىپ يا دداشت اور ياد كردىي فرق ، جماست بيته

<del>ૺ</del>

کتوبالیہ یکتوب گرامی صفرت خواج عمک بخاری رحمۃ اللّٰه علیہ کی طرف صادر فرمایا جوغالباً سخیخ المشائخ حضرت خواجہ ہاتی ہاللّٰہ وہادی جمۃ اللّٰه علی نہ کے ہر بھائیوں ہیں ہے تھے۔ رواللّٰہ اعْلَم ،خواجب عمک کے نام دفتر اقل میں صرف رکھتوب نمبر ۲۵۔ ۲۸ ) ہی دو مکتوب موجود ہیں مزید حالات معلوم نہ ہوسکے ۔

## مڪنوب ۔ ۲۴

منتن مخدُوها دُرهبارات اکابراین سلندُعلیّه قُدّس الله انسرارهُمْ واقع شده است کنسبت افوق بهمنسبت است ازنسبت حشور و اگاهی خواست اند و حضوی که نزد ایشان معتبرست حضویب فیسبت ست که تعبیر ازان بیاد داشت نموده اند

# شرح

نسبت نقتنديتم أسبتول سطبندب

کسس کوب گرامی میں صفرت امام رہائی قدش سرہ السبحانی نسبت نعشندی کی بدندی وبرتری بیان فرمارہ ہیں کہ اس سسلم کے بزرگوں نے اپنی کہا بول میں سخر پر فرمایا ہے کہ ہماری نسبت تمام نسبتوں سے بالا ہے اور یوسبت دکا مر انگو میں میں مارون سے بالا ہے اور یوسبت کا والم

کو ذات جن کے ساتھ ایسی صنوری اور آگاہی حاصل ہوجائے ہودائی ہوا وُر کھی غیبُت اور پیٹ یدگی قبول نہ کرے ۔ اسی مقام کو تجلی ذاتی وائمی سے تعبیر کے ہیں اور خواجہ بہاں صنرت خواجہ عبد انحالی عنجدوانی رحمتہ اللہ علیہ نے اسی کویا دفوات روں میں دور ہے۔

بعض شائخ كن زديك يا وداشت حفظ الْقَلْبِ إو واشت على شُهُو دِ تَجَلِي الذَّاتِ عمارت بعاور بعض على شُهُو دِ تَجَلِي الذَّاتِ عمارت بعاور بعض

معلى منطق الله تعالى على الدائي على الدائي الدائي

یا د و است میں فرق میں اور دیا دورہ میں فرق ہے کہ یا در دیں کھی غیبت اور کھی ہے کہ یا در دیں کھی غیبت اور کھی کھی کھی ہے کہ یا در دیں کھی غیبت اور کھی کھی کھی ہے کہ جھٹ ور بات ہے بکہ غیبت ہیں جنگور ہوتا ہے اور یا دو اشت میں جنگور ذاتی دائی کہتے ہیں جبکہ یا دکر دیجاتی ذاتی برق سے عبارت ہے در حقیقت بجتی برقی بجتی ذاتی ہندی کھی خائب ہوجاتی ہے۔ کھی خائب ہوجاتی ہے۔ کھی خائب ہوجاتی ہے۔ کارسٹا کنے نقشبند یعلی خاتی دائی ہے کہا ہے اور سے المار سے کھی خائب ہوجاتی کو در سے اکارسٹا کئے نقشبند یعلی خاتی دائی ہے لیکن کو در سے المار سے بالا ترقرار دیا ہے۔ اسی بنار پر حضرت امام میں تقشید رہے نے نسبت بقشبند یہ کو تمام سبتوں سے بالا ترقرار دیا ہے۔ رہی نا قرار دیا ہے۔ رہی نا فرقرار دیا ہے۔

منن این نسبت عَلیّه رُبْهِ عِزابت پیدا کرده است که اگر فرضاً مبیش أرباب مهین سلسله بزرگ گفیة شوخیم ل که اکثر آنها درمقام إنكار ابندوبا ورندار ندنسيتي له اكال رميان ارباب این خا بواورهٔ بزرگ متعارف شُده است عبارت از حضنورِ حق ست مُبْحانه وشهُوْدٍ أُو تعالىٰ بُر وجِهِ كه از وصفِ شاہدی ومشہودی مُنیّرہ باشد و توبیّجےست مُعیّرااز جہات سِستّه مُتعارفه اگرچهجهت ِ فوق متوّتَهم باشد و بطا هر دوام يذبر واين نسبت درمقام جذبه فقط نيرمتحقِق ميكرود ترحمه ؛ يەملىنەنسىت اس قدر نادراورىمياب ہوگئى ہے كەاگراج بالفرض اسی بزرگ سلسلہ انقشبندیہ، کے بزرگوں کے سلسنے بیان کی جائے تو احتمال ہے کہ اکثر مشاکخ (اس کی نُدرت وقلت کی ښارېر)اس کا اِنکارکر دیں اوریقین پذ کریں اور چزنسبت کہ اب ا آج کل اس بزرگ فاندان کے مشاطخ میں مشہورہے اس سے مُرا دحي مُسْتِجانهُ وتعالى كااليهاحسُور وشهو دہے جوشا ہرا ورشہود ہونے كے عنی اور وصف سے پاک ہواور ایسی توجّه مُرا دہے جومشہور ومتعارف چھطرفوں سے خالی ہوا گرچہ فوق البندی کی طرف ذہن جاتا ہے اور نظام دائمی علوم ہوتا ہے لیکن ہے جہت فن محض وہم اور محمان کے درجے میں ہے اور یذسبت صرف مقام جابم ہیں ہی یائی مباتی ہے

### شرح

حضرت المام ربانی قدّس سرّهٔ فرماتے ہیں کنسبت فِشنبندیج ووام حسُور مع التی بلا غیبو بہت سے تبار اور اس کو تجلی ذاتی وائمی کے نام سے پکار اجابہ ہو اس قدر قلبل الوجُودا ور کمیاب ہو چی ہے کہ اگر بالفرض اس سلسلہ کے آج کل کے مشا کے کے سامنے اس کی حقیقت بیان کر دمی جلئے تواکثر اس کا انکار کر دیں گے کہ اس عظیم نسبت کے حصول کے بین جو ہستعدا دوقا بیتت ور کا رہے وہ آج کل کے اکثر مشاکنے وسالکین میں فقو دہے ۔ نیز اس نسبت کا حصول محض اللہ تعالی کے اکثر مشاکنے وسالکین میں فقو دہے ۔ نیز اس نسبت کا حصول محض اللہ تعالی کے اکثر مشاکنے وسالکین میں فقو دہے۔ نیز اس نسبت کا حصول محض اللہ تعالی کے اکا کے اکا میں توقیق ہے۔ ذالے فضل اللہ یُونید مِسَن قیشناً ہو۔

الم سالک کے یہ صفور جن تعالی میسر آنے کے دو وقت ہوتے

بي -

اولاً جذبۂ بدابیت کے دُوران جبکہ شیخ کی صوصی توجہ یا اللہ تعالیٰ کا تعنیٰ لل حال ہوتو سالک لطائف کے تصفیۃ اور تزکیہ سے پہلے بھی حضور حق کی نسبت سے شاد کام ہوجا تا ہے لیکن چ نکھ بغیر بلوک طے کیے مقام مذبہ کک پہنچا ہے اور اس کے جصتے ہیں صرف اِستہ لاک و اِستحالال ہے اور شاہدہ کی لیاقت وصلاحیّت ماصل نہیں کرسکا المندا اسے شاہر نہیں کہا جائے گا اور نہی حق تعالیٰ و تقدّس اس کے بیے شہود ہوں گے۔

تانیا سالک کے لیصٹوری میتر آنے کا دُوراوقت وہ ہو آہے ببکہ مقام مذر بہایت ہیں قدم رکھے اور کمل سلوک طے کرکے لطائف کے تصفیتے اور تزکیے کے بعد مقام شہود ہیں پہنچے اور یا د داشت کی منزل ماصل ہوجائے تو اس وقت سالک ترکی کرکے عارف بن جا آ ہے اور اس کو شاہدا وری تعالیٰ کو مضہود کہہ سکتے ہیں کیونکہ اس وقت عارف وصیل عربانی سے بہرہ یاب ہوکر وجود المنيت المحالية المنابع المالية المنابع المناب

موهوب حقانى سيع بقايا كرشهُود ومشاهره كي لياقت وصلاحيّت عاصل كرليبيّا ب البذا اس كي مي مين شهو دومشا بده كا اطلاق ورست ب روالله الله محتوب گرامی میں سالک کے لیے اسی توخبر مذکورہے جوجہا رسته ٔ (چھطرف) سے خالی ہو اس سے مُراد متعارف اور مشہورچپطرفیں ہیں بعنی سامنے ، پیچھے ، اُوپر مینیچے ، دامتیں اور ہاہئی جونکہ ذات عِنْ مُنْجَانُهُ وتَعَالَىٰ جَهَات وأطراف كي قيُّود سے يأك ہے اور بمطابق سيت قراني أمنيت مأتو لؤا فكتم وتجهه اللهام يعني ص طرف بعي منه كرو كادهر ہی الله کی وات ہے صوفیار کے نزدیک مشاہدہ کے بیے سالک کو بے جہت توخه در کار ہوتی ہے جو ہرطرف سے خالی ہو کیونکہ ذات جن کو کسی ایک جہت یا طرف بين محكور ومحدُود سجفامُوهم شرك سبع . والعيادُ بالتُرتعالي حضرت امام رّبانی قدّس سترو العزریت اس محتوب کے آخریں سلسكة نتشبند يركحه اكابرمشاشخ كي مدح مين حور باعي درج زماني ب و وسُلطان العاشقين حضرت مولانا عبدالرعان جامي نقشبندي قدّس سّرهٔ العزيز كي طرف بنسوب سے بُمعرب بحق ات حضرت كل مُرا دمكي رحمة الله عليه نے اس فارسي رُباعی کا جومنظوم عربی ترجم کیا ہے وہ قارئین کی خدمت ہیں بیش کیا جا السے آخر ين است كامنظوم أرَّد وترجمه از حضرت مولاناستيد ز وارخسين شاه مرعوُم ،مترجم مکتوبات مجی ہدیات ارئین ہے۔

هنسی قاصرے گرکسنداین طائفہ راطُعنِ تَصُور کاشش بٹیر کو بُرارم بِزبان این گِلہ را البيت الله المرابع المحالية ال

همهشيران جهان بنه اين سله اند رُوبه از حيله جيان تجسله اين سله را

عَرُفِ

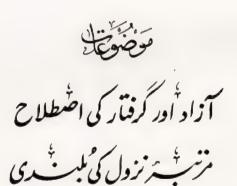
إِنْ عَابَهُمْ قَاصِرُ طَعْنَا بِهِمْ سَفَهَا بَرَّانَ سَاحَتُهُمْ مِنْ آفْحَشِ الْكُلَم هَلْ كَفْطَعُ التَّعُلَبُ الْحُتَالُ سِلْسِلَةً فُيْدَتْ بِهَا اُسْدُ الدُّنيَا بِاَسْرِهِم

اُمْر**دُ** وَ

ایسے لوگوں پر اگر اقص کرے طعنہ زنی میں کروں اپنی زباں سے کچھ گلہ ؟ توبہ مری گل جہاں کے شیرو ابستہ ہیں اس زنجیرے لومری توڑے گی اس صلفہ کو سجس تدبیرسے



مَعَوْبائِيْرِ صرت حولج كم كك علية





### محتوب - ۲۸

من چنعی ست که آزادان یا دگرفتاران کنند و چه دو کتے ست که رسیدگان غم خوار کی مهجران نمایند بیچارهٔ مهجر خورخ ن خود را شایان و صال نیافت بضرورت مخمول زاویهٔ هجران کشت و از قرب گریخهٔ به نبعه آرام گرفت و از آنصال بانفصال قراریافت و چون در اختیار آزادی گرفتاری دید برمینت گرفتاری گزید

چوں طسمع خوا ہد زمن صلطان دین فال بر سسہ ق فیاعت بعد ازین ترجمہ ،کیاخوب معت ہے کہ آزاد لوگ گرفتاروں ،قیدیوں کویا دکرتے ہیںاورکتنی بڑی دولت ہے کہ مزل رسیدہ ،عُروج والے ،جُدائی کے مارے ہوئے زنزول والے ،لوگوں کی غرخواری کرتے ہیں۔ اس بیجارے ،جرکے الے ہوئے نے جب اپنے آپ کو وصال کے لائق نہ پایا تو مجبوراً مُدائی کے گوشہ ہوئے نے جب اپنے آپ کو وصال کے لائق نہ پایا تو مجبوراً مُدائی کے گوشہ میں گرنام ہوگیا اور مقام قرب سے بھاگ کر مقام مُجد میں آزام لیا اور اِتصال رول سے انفصال (ہجر، کے ساتھ قرار حاصل کیا اور جب ، خیری سے آزادی کے اختیار کرنے ہیں ،غیر کے ساتھ گرفتاری دیمی توناچار ، مخلوق کے ساتھ ، گرفتاری قبول کرلی ۔

جب سلطان دین کومیراطمع پسندہے تو پیرمجھے قناعت پر کا رسبند

البيت الله المواجعة المعالمة ا

رہنے کی کیا ضرورت ہے۔

#### شرح

بیکتوب حضرت امام ربانی قدّس سر ف نے حضرت خواج ممک رحمته الله علیہ کے ایک محتوب کے جواب میں صاور فرمایا۔ ان کے گرامی نامہ پر اظہارِ سنگر فرماتے ہوئے از راہ عجر واخلاص تحریر فرمایا کہ بیکتنی بڑی نعمت ہے کہ آزاد اور وصل لوگ گرفتار اور مہجر لوگوں کویا دکرتے ہیں۔ بنظا ہر اس عبارت سے بڑھنے والے کوید وہم بیدا ہوسکتا ہے کہ حضرت امام ربانی قدّس سرّہ اپنے مرتبہ زول کی ببندی اور لینے اور تیزل کا ذکر فرما رہے ہیں کور حقیقت آپ نے مرتبہ زول کی ببندی اور لینے مرجب کہ وہ درجات کی ترقی کی طرف اشارہ فرمایا ہے۔ بزرگان دین کا بیک شیوہ رہا ہے کہ وہ اینے ہر کمال اور ببندی کو ہمت زدہ اور نامحل قرار دیتے رہتے ہیں اور بہان کی ببندی درجات کا راز ہو تا ہے بحضرت امام ربانی قدّس سرّہ نے جہاں اپنے مقام نزول کی خبردی ہے ساتھ ہی حضرت امام ربانی قدّس سرّہ نے جہاں اپنے مقام نزول کی خبردی ہے ساتھ ہی حضرت خواجہ عمل رحمۃ اسلّہ علیہ کے مرّب برائی فردی ہے۔ اسلام دیا ہے۔

اراد اورکرفیاری صطلاح اصطلاح اُن بزرگوں کے لیے تعال کی جاتی ہوں اور انھیں کے بزدیک "آزاد" کی جاتی اور انھی نزول کے مرتبہ تک نہینے ہوں اور انھی نزول کے مرتبہ تک نہینے ہوں اور انھی نزول کے مرتبہ تک نہینے ہوں اور گھی نزول کے مرتبہ تک نہینے ہوں اور گھر فقار وہمجور کے الفاظ ان صنرات کے لیے استعمال ہوتے ہیں جو مرفح عین ایمنی سیززو کی ہیں صروت ہیں اور صنرات انبیار کرام کی نیاست کے طور پرسند وعوت وارشاد پرفائز ہوتے ہیں اور انسحاب نزول مُرادِی کے ساتھ قت اُم ہوتے ہیں اور انسحاب نزول مُرادِی کے ساتھ قت اُم ہوتے ہیں اور انسحاب نزول مُرادِی کے ساتھ قت اُم ہوتے ہیں اور انسحاب مال ہے۔

وَشُغْلِيْ بِالْحِبْبِ بِحَلِّمَالِ اَحَبُّ اِلْتَ مِنْ شُغْلِيْ بِحَالِّيْ يعنى مجرُب كرما تومشول مونام محصے ہمال میں اپنے حال كي شغوليت زيادہ محبوب ہے .

محویا عبارت کامفہوم لویں ہوگا کد آزادی اختیار کرنے والے در اصل بنی مراد ۱عروج، میں گرفتار ہیں جبکہ مُرادی انزول، میں گرفتار لوگ اپنی مُراد رغروجی

سے ازاو ہیں۔

مقام عُروب کی ملید مقام عُروج کا نثرف ابنی مبگر ہے سکین صنیا ست مرسمتہ ہمر ول کی مبلید کی مقام عُروج کا نثرف ابنی مبلید ورج مراتب لائیت سے ہے اور یھی معلوم ہے کہ ولایت کا نہائی مقام نبرت کا انہائی مقام نبرت کا انہائی مقام ہے۔

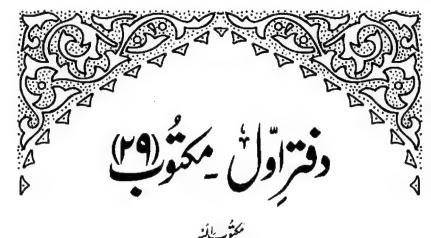
عبارت بالامین صرت امام ربانی قدّس رزه اپنے تعلق مرتبر نرول برفائر المونے کی نشاندہی فرمارہ میں جو کہ مقام نیابت انبیار اور مرتبر وعوت وارشاد ہے۔ آپ فرمائے میں کو جب اس مجور نے اپنے آپ کو وصل کے لائق نہایا تو بحر اللہ کو قتاری اور حبرائی کو قبول کر لیا تعین مجھے مند وعوت وارشا و پر بجھا دیا گیا ہے۔ اس مرتبے ہیں عارف اور سالک حق سے خلق کی طرف رمجوع کر تاہے حبکہ عروج

ك مرتب ين سالك فلق سيدي كى طرف سيركر آب.

برس واضح رہے کہ فصنیات کے اعتبار سے مرتبۂ زول بہت بلندہے لیکن لذّت کے اعتبار سے مرتبۂ عروج محبوب سمجماجا ہے کیونکہ نزگول بیرمخلوق کے ساتھ (سبلسلہ ُرشد وہدایت ہشغولیت ہوتی ہے اورعرُوج بیرمخلوق سے دُوری اورخالق کے ساتھ شغولیت ہوتی ہے۔ دواللہ وُرُولُدُ عِمْلُ م

amental and a fall in the





مشيخ نِظامُ اللِّينِينَ بَثْنِ عُلِيَّوْرَى عِيْمَايِي



ييحتوب كرامي شيخ نطام الدين بنشيخ عبدالشكور عمرى كمنجي تفانيسري كى طرف صا در فرما يا حوعلم لعمل كے جامع اور ظاہرى وباطنى كالات یے تصف تھے اب سلساج تتیصاریہ کے بزرگ مصرت سیخ مبلال الدِّن تھانیسری کے مجتبعا ، داما د اور *فلیفہ تھے م*تنعدّ دکیا ہو<sub>ا</sub> کے عن تھے آپ کے نام دفتر اول میں صرف ۲۹،۷۹ و و مکتوبات ہیں شہزادہ خرم کے ساتھ تعاون کرنے ترجہا گئیرسے مخالفت ہوگئی تھی۔ ١٠٢٢ هيس وفائت يا تي ه اس محتوب بيس شيخ نظام الدين تصانبيسري رحمة الدعليه كيعبس ان الات بربدايت ومنبيه فرماني گئي ہے جو كه خلا ب سنت تھے۔ مثلاً بوا فل کی جاعبت کاانتمام ،وضو کاتعمل یا نی مربیوں کو ملا ما اور تجدةً عظيمي كرانا وغير لإ ـ كَتْمَاسِيَا فِي ذِكِمُ هَا فِي آخِرِ هٰذَاالْمَكُتُوْب

له نزمة الخواطر

## مڪتوب ۔ ۲۹

متن مُقرِبات اعمال بافرائض انديا نوافل انوافل را در جَنْبِ فرائص بيج اعتباز ميت اوات فرصط فرائض وروقة المرائد التناوات فرصط فرائض وروقة المرائد التناوات في المرائد المائد المائد المرائد المرائد والمثال المنها بلكه كويم كه رها بيت فرائض فرائض فرائد والمثال النها بلكه كويم كه رها بيت فرائض فرائض فرائد والمدار والمثال المنها بلكه كويم اوات فرائض فرائض فرائد والمدار والمناب ورهيم الواست فرائض فرائض فرائد والمدار والمنابع المرائد والمنابع والمنابع المرائد والمنابع وال

ترجمہ : وہ اعمال جواللہ تعالی کے قرب کا باعث ہیں فرائص ہیں یا لوافل،
لفلوں کا فرضوں کے مقابطے میں کوئی اعتبار نہیں ہے ، فرضوں میں سے کسی ایک فرض
کا اس کے اپنے وقت میں ادا کرنا ہزار سال کے لوافل ادا کرنے سے بہتر ہے گرچہ
وہ نوا فل اخلاص نتیت کے ساتھ ادا کیے جائیں خواہ وہ نماز ، زکوٰۃ ، روزہ اور ذکر
وفکر وغیرہ یا ان کی مثل کوئی اور تفل بھی ہو بلکہ ہم کہتے ہیں کہ فرائص کی ادا یکی کے وقت
سنتوں میں سے سی شنت اور ستحبات میں سے سی سے سی رعابت کرنے کا بھی
میں کھے اور کے ادا کرنے سے بہتر ہے )
میں کم ہے ، ایعنی وہ بھی نوافل کے ادا کرنے سے بہتر ہے )

#### شرح

البيت الله المعرفي الم

مام فرائصن برنا و المحتمد المناو المصنل ترین اور الم مرتین فرض ممازی المحتمد و من ہے۔ ارشاد باری تعالی وَاقِیْمُوالحَمَّدُوقَ مِن المحتمد و المناد باری تعالی وَاقِیْمُوالحَمَّدُوقَ المحتمد و المنح ہے قرآن باک میں ایمان کے بعد سب زیادہ تاکید نماز کے بارے میں فرمائی گئی ہے۔ احادیث مبارکہ میں نماز کی فرضیت احتب الاعتمال که اور عِسمادُ الدِّین کا فلا ہری سبب نماز کی فرضیت کا حقیقی سبب تو حکم اللی ہے اور اس کی اوائی کا فلا ہری سبب نماز کا وقت ہے کا حقیقی سبب تو حکم اللی ہے اور اس کی اوائی کا فلا ہری سبب نماز کا وقت ہے کا وقت و من ہوگا جب اس نماز کی وقت و الماری کے سب سے کیا وقت و الماری کے الماری کی المحتمد کی وقت و الماری کے الماری کی المحتمد کی وقت و الماری کے المحتمد کی وقت و الماری کے المحتمد کی المحتمد کی المحتمد کی وقت کر در نے کے بعد نماز بڑھی تو ہر گزاد انہ ہوگی ۔

حضرت امام رّبانی قدّس سرّو اسی امر شرعی کی وضاحت میں فرماتے ہیں کہ کسی
ایک ذرض نماز کا اس کے اپنے وقت میں ادا کرنا ہزارسال تک نوافل ادا کرتے ہے
سے بہترہے اگر چہوہ انوافل اضلاص نہیّت کے ساتھ ادا کیے جائیں اور خواہ وہ عبادا انفایہ، بدنیدا ورمالیہ میں سے کوئی کھی فعلی عبادت ہو بلکہ اس ریُستنزاد، آپ فرماتے ہیں
کہ فرائطن ادا کرتے وقت سنتوں میں سے کسی سنت اور سخیات میں سے کسی سخت کی رعابیت کی ہزارسالہ نوافل سے بہتر ہے لیے نی منن اور سخیات کا درجہ بھی فعلوں سے
بہترہے لیے نی منن اور سخیات کا درجہ بھی فعلوں سے
بہت زیادہ بلندو بالا ہے ۔

منن منقول ست کرروزے امیرالموندی صنرت فارق الله نابدادرا بجاعت گزار دند بعداز فراغ ارصالوة در قوم نگاه کر دند تخصے را زام حاب خود دران وقت نیافتند فرمودند که فلان بجاعت عاضر نشد ما مان عرض کردند که اُواکثر شب بیدار می باشد می کرد درین وقت خواش بُرده باشد فرمودند که اگرتهم شبخ اب میکرد و نماز با مدادرا بجاعت می گزار دبهتری لوز ق

اَنَّ عُمَرَنِّنَ الْخُطَّابِ فَقَدَ سُلِمَانَ بَنَ آفِ حَمَّةَ فِي صَلَوْهِ الْصُّبِحِ وَانَّ عُمَرَبْنَ الْخُطَّابِ عَدَّا إِلَى الشَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَانَّعُمَرَ بِنَ الْخُطَابِ عَدًا إِلَى الشَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَعَلَى الشَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَعَلَى الشَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَعَلَى الشَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَعَلَى الْمَالِيَ السَّوْقِ وَالْمَيْمِ وَعَلَى اللَّهُ وَالْمَيْمِ وَعَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ الْلِلْمُ اللَّهُ اللَّالِلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُوالِلْمُ اللَّهُ الْمُ

البيت المحالي المحالية المحالي

ترجمہ ہنقول ہے کہ ایک روزام المونین صنرت عمرفاروق صلطیانہ نے فجر کی باجاعت نمازسے فارغ ہو کر مقتد ایوں کی طرف دیکھا تو اپنے ساتھیوں میں سے ایک ساتھی البیمان بن ابی حتمہ صلطی ہیں کہ اس وقت موجود نہ یا یا ساتھیوں سے دریات فرما یا کہ فلا شخص آج جاعت میں حاصر نہیں ہوا تو انہوں نے عرض کیا کہ وہ رات کا اکثر جمعت شب بداری کرتا ہے فیمکن ہے وہ اس وقت سوگیا ہو۔ آپ نے فرمایا آگر وہ تمام رات سومار ہما اور فجر کی نماز جماعت کے ساتھ اداکر تا تو زیادہ بہتر ہموا۔

شرح

رب اس مدیث سے جماعت کی فضیلت معلود موئی جماعت کی فضیلت اس سے زیادہ فضیلت کا بیان مدیث شمامی

جىرودعالم النائية ولم نے فرمایا ا مَنْ صَلَى الْعِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَانَّمَا قَامَ نِصْفَ الْكَيْلِ وَمَنْ صَلَى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَانَّمَا الْكَيْلِ وَمَنْ صَلَى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَانَّمَا

حَلِي اللَّيْلَ كُلُّهُ لَهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

معنی اللیسی الی

اے میکی مسام جرا

بقية مامشيص فوگذشت

حضرت مُحرِی طلب بھی نے نماز صبح بیں صرت میان ان جشر کونہ یا یا بحضرت عمرین خطاب کے است کرنے صبح بازار کی طرف گئے جضرت میلیمان کھی کا گھر بازاراور مجد کے درمیان بڑاتھا تو آب اُم سیمان کے باست گزیے اور انہیں می طب موکر فرایا کہ میں نے نماز فجریں میلیان کونہیں دکھا تواس دائم سیمان ہنے عوض کیا کہ ووشب بیداری کرتے سے میں لیس اُن پڑنید کا خلیہ موگیا تو صرت عمرنے فرایا کم فجری نماز باجاعت اداکر نامیر کڑدیک ماری رات کے قیام سے نیادہ مجرب البيت الله المراكبة ا

كيايعني كويا اس نے نوافل او اكسنے ميں رات گزارى .

دُوسری روایت میں ہے حضرت ابن مُرصنی التّرعنهٔ سے روایت ہے حضورُر

عُكنيه إصلاة واكتكام ن فرمايا:

صكلوة المجكماعكة انضك مين صكلوة الفذيس

وْعِشْرِنْنَ دَرَجَةً لَهُ

يعنی جماً عت كے ساتھ نماز راجھ ناتنها نماز راجنے سے شامئیں درجب

 نماز باجاعت کی فضیلت و اہمیّت کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا ہے كرميدان جها واورمالت خويت ميرهجي حماعت كيساقط نمازير هيف كاحتم قرآن مديث ميں صراحتًا موجود ہے تومالت امن میں حماعت کے ساتھ نماز بڑھنا کس قدر اہم وصروری ہوگا اسی وجہسے احنا ف اورشوا فع کے نز دیک نیسئلہ مُسلّمہ ہے کہ اُلڑ کسی سی کے لوگ باجماعت نماز ترک کردیں توان سے قبال جہا، كباجات كاجبيا كوعمدة القارى ملد بنجم مي علامه بدر الدين عيني عني رحمة التدعلية ت اور منی المحتاج علِدا ول من منتج محدث البنی شافعی رحمته الته عِلیه نے صراحت

ر میں ہے۔ متر ہم اواضح رہے کہی عُذرِ شرعی کے بغیر جماعت ترک کرنے کی ہر گوز میر ممبر اجازت بنیں ہے جبیا کہ مدیث میں ہے:

عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ مَنْ الْعِيْدِةُ مَنْ سَمِعَ المُمَنَادِي فَكُمُّ لَيَمْنَعُهُ مِنِ إِنَّاعِهُ عُذْرُحُ فَ الْوَاوَ مَاالْعُذُرُقَالُ حَوْفُ اَوْمَ رَصْحُ لَـُمْ تُقْبَلُ مِينَهُ

على المكون المحاجب **3**€(1∧<)+8= الصَّلُوةُ الَّتِي صَلَّالَهُ بعنى حرشحض نيے اذان مُنى اور بغيرُغذر جماعت سے نماز نہ رفعي اس كى برطى مونى مناز فبول ندموكي صحاب نے عض كيا عدر كيا ہے ؟ فرما يا خوف من © مشيخ الوسليمان داراني زخمةُ التُدعِليّه كا قول بي صخص كي مباعث إس کے گناہ کی وجہ سے فوت ہوتی ہے سلف صالحین کامعمول تھا کرحب شخص کی کبیر اوُل وزت ہوجاتی اس شخص کی تمین دن کمت تعزیّت کرتے اور جس کی لوِری جا رہ جاتی اس کی سات دن تک تعزینت کرتے ہے ام المطلم البحث وت مركز المراطم البحثيف ممان بنب المراطم البحث من المراطم البحث المراطم المراطم البحث المراطم انس رحمة التُدعِليد كنزويك جماعت سنّت مُوكّده ب ان كى دليل مرمديث ب مصرت عبداللري معود منى الله عندن فرايا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ مِنْ النَّالِيهِ وَلَمْ عَلَّمَ مَنَا السُّمَنُ الْهُدَى وَإِنَّ مِنْ سُنَ الْهُداى الصَّالَةُ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي ئۇذەن<u>ىپ</u>ەرىلە منن صُدّی میں سے یہ بھی ہے کہ حبر مسجد میں افان دی گئی ہو اسی میں منساز برهمی جاتے۔

دُورى روايت بين من صفرت عبدالله ابن عود رضى الله عندن فرمايا: وَلَوْ اَنْكُمْ صَلَفْتُمْ فِي بُنُونِكُمْ كَمَا يُصَلِّى هٰذَا الْمُتَحَلِّفُ فِي بَيْتِ مِلْ لَتَرَكُمْ مُسَنَّةً نَبِيتِكُمْ هٰذَا الْمُتَحَلِّفُ فِي بَيْتِ مِلْ لَتَرَكُمْ مُسَنَّةً نَبِيتِكُمْ البيت المحالي المحالية المحالية

وَلَوْتَرَكَ مُنْ اللّهُ الْمِنْ اللّهُ اللّهُ الْمُعْلَدُ الْمُ الْمُنْ الْمُ اللّهُ اللّهُ

ان احادیث مربارکہ سے یہ اُمربخ فی واضح ہور ہاہے کہ جماعت سے نماز بُرِ منا سنت بوکدہ ہے جبکہ بعض فقہار ومشائنے کے نزدیک نماز باجماعت واجب ہے اور امام احمد بن منبل رحمۃ التّرعلیہ کے نزدیک فرصْ عین اور امام شافعی رحمۃ التّرعلیہ کے نزدیک فرص کفایہ ہے ہے۔

من بین نما فیفتن را در نصف نیراز شب گزاردن و ان از باید تا با

البيت الله المالي المالي المالي المالي المالي المالي المالي المالية ال

# شرح

حضرت امام رتباني قدس ترؤ العزيز يضحضرت يخ نظام تعافيسري كماس محتوب بين إنتباه فرمايا ب كراب عشاركي نماز كورات كفيسف اخيرين اداكمن كى عادت محيور دير اوراس ماخير كونماز تهجد كى او أيكي فيتنى سبان كا وسيله مذساييس کیونکرفتہائے اُمناف (الله الله ان سے رہنی ہو) کے نزدیک عشاری نماز رات کے نصبف اخيرس روصام كروه بفقهار ني تصريح فرماني ب كممازعشاركا وقت مسنوُن وستحب شفق (مُرخى كے بعد مفیدی غائب ہُونے سے لے کڑنلٹ اول رات کاببرلاتها نی حِصّہ کک ہے اور الشواقل کے بعد نصف رات مک قت مُباح ب اورنصف رات كي بعطائوع نجرك وقت بحروه ب توفيا برسيكم و مُحروه جومُباح مح مقابله مين بومكرو وتحريري بوتا بي مبيا كحر كوالرائق مي بيم وَافَادَانَ التَّانِيْ لِيَعْنِيرُ إِلَىٰ نِصْفَ الْلَيْلِ لَيْسَ يُسْتَحَبِّ وَعَيَالُوْالِكَ مُسَاحٌ وَإِلَىٰ مَسَابَعُ لَهُ مُكُرُونُهُ لِهِ ریعنی عشار کی مناز کو آدھی رات مک موخر کرناستحب بہیں اور فقهارنے اس كومباح كباب اورآوهى رات كے بعد مكر و مب ـ نیز فتن پیدسے رحبید مطور کے بعد منعقول ہے : تَأْخِيرُ الْعِيشَآء إلى مَا مَرَادَ عَلَى نِصْمِفِ اللَّيْل كَرَاهَتُهُ تَحْرِثُهُ . بیعنی عشار کی نماز کو آ دمی رات کے بعد مؤخر کرنا مگر و آتر می ہے۔ عِشَائِکے وقت میں مُزاہبِ آبعہ کَمُدَارِبعِہ مِنْ اللّٰمِنْہِ اللّٰہِ عَنْهِ کَا رَابِعِهِ اللّٰهِ عَنْهِ کَا م عِشَائِکے وقت میں مُزاہبِ رَلْعِبہ کَرَدِیکِ عِنْهِ رَکَا وَقَعْمَاتُ

غائب ہونے کے بعد شروع ہوتا ہے اور طلوع فجر تک باقی رہتا ہے۔ یکن کی میں نہاد میں سال دیوں تاریخ ہے۔

قَوْلُهُ مُن الله الله وَاحِرُ وَقَتِ الْمَغْرَبِ اِذَا السَوَّةُ الْأُفُقُ.... اَلَخْ وَاخِدُ وَقْتِ الْعِشَاءِجِ يُنَ يَظِلَعُ الْفَجَرُ وَلَهِ

البقة اس أمريس اختلاف ہے کشفق غروب آفقاب کے بعد سُرخی کا نام ہے۔ اور ہے۔ یاسفیدی کا نام شفق ہے اور ہے۔ یاسفیدی کا ۔ آئمہ ثلانٹر جمہمُ اللہ تعالیٰ کے نزدیک سُرخی کا نام شفق ہے اور

امام عظم الومنيف رحمته الله عليه كے نزديك فيدى كانام شفق ہے۔

ا حضرت إمام الوجنيفه اورامام احمد بن صنبل بضى التُلحنها كفرزديك عشاركى نماز نكث اقل درات كابيهلاتها في حصته ك توظر كرك بره هناسنون وستحب مه حضرت إمام مالك بن الس اور حضرت إمام محدّ بن اوريس شافعي يضى التُعنهُمُ كاليك قول بهي مهدا وروقت عشارك تعلق مديث عائشه يضى التُرعنها ميں جو

کا ایک فول ہی ہے اور وقت عشار کے مصلی حدیث عائشہ رضی الندعها میں جو لفظ حَتِیٰ ذَهَبَ عَامَتُ اللَّیٰ لِ رات کا اکثر جصّہ گزر حیکا تھا، وار دہے تو

فہار نے اس کومبالغہ رمجمول فرمایا ہے کیونکہ نصف شب کے بعدعشار کی نماز

مِن الخير كرناكسى امام كامدم به بهيك امام عظم البعنيف كيم توقف بروه مدسيف دليل من مائي وما فط ابن ابي من يبرف من الله عند سنفت ل

کیاہے:

أَنَّ النَّيِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْ وَسَلَمَ يُصَلِّى الْعِشَاءَحِيْنَ يَسْوَدَّ الْاُفُقُ هُ

۔ ریعنی رسول الله منل شائند و ملیا ہی چھیلنے کے بعد عشار کی نماز پڑھتے تھے دوسری دلیل بیحد بیث ہے جس کو امام الرداؤد سلیمان بن اشعدت رحمتہ اللہ

لے فتح المتدیر مع المعدایة منظ جوا کے اکال کھالد المعیم جوم کے شرع می محمل از فودی منظم جوم کے منظم منظم کار فودی منظم جوا کے مستعمل ان فودی منظم جوا کے مستعمل ان فودی منظم جوا کے مستعمل ان فودی منظم جوا

و مكتوب علي क्ष्रेच् ११। }हि≡ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَسْلِيرِ قَالَ أَنَا آعُكُمُ النَّاسِ بِوَقْتِ هُذِهِ الصَّلُوة الْعِشَاءَ الْأَخِرَةِ كَانَ رَسُوْلُ اللَّهِ يُصَلِينَهَا لِيُقُوطِ الْقَصَرِ الثَّالِيَةِ لِهُ ریعنی بعمان بن شیروشی التّٰدعنهٔ فرماتے ہیں کمیں تمام لوگوں کی بنسبت عشار کے وقت کوزیا وہ مانتا ہوں رسُول التَّد مَنل الله عِشار کی نماز اس وقت رکیھا كرتے تصحب ميسرى رات كا چا ندع وب ہوجا تا تھا۔ اوریہ بات ظاہرہے کر تبیری رات کا چاند افق کی سفیدی غائب ہونے کے بعدغ وببهوما ہے اوروه جومديث ملمي واردب كروَقْتُ صَلَاةِ الْعِشَاءِ الْحِلْ نِصْفِ اللَّيْلِ الْأَوْسَطِ لَنَّه يعنى عشاركى نمازكا وقت أدهى رات مك سهد احناف کے زدیک یہ وقت انتہار ہے۔ مكن الصِنْكَابُ مُعْمَلُ كَهُ إِزَالَهُ مُدُثُ مُودُه باشديا به نبيّت قُربت انتعالش كرده باشند دروضُ وتجويز مكنندكه مردم آن آب رابخورند كهآن اب نزدامام عظرتج بُنُغَلطست وفقهامنع

نوردن آن آب کروه اند وخوردن آن را مکروه د<del>ر منس</del>ته اند أرب بقيتراب وصنورا خورون شيفا گفتة اند ترممه، نیز وُضو کامتعمل بانی برحس سے مَدَث کو دُور کیا ہویا وہ تعل بانی البيت الله المالية الم

جس كو قربت كى نتيت سے وضوبين متعال كيا ہو العنى وضو ہونے كے با وجود ثواب كى نتيت سے بچروضوكيا ہو، تولوكوں كے بيائے ايسے تعمل بانى كا بينا جائز ذكرين كيونكه وہ بانى امام عظم الوجنيف وضى الله عند كے نزديك بخبر مخلف ہے اور فقهار نے اس بانى كے بينے سے منع فرما ياہے اور كو وہ كہاہے ہاں وضوكے نبيح ہوئے ياتى كے بينے كوشفا كماہے .

شرح

معنوت الموراني قدّس ترة نے صنوت نظام تقانيسرى رحمة الله عليه كے الم الله على الله ع

وَقَالَ الصَّدُوُ الشَّهَ يَبِدُلَا يَصِينِهُ مُسْتَعْمَلًا مَالَمْ يَكُنْ يَسْتَقِرُ فِي مَكَانٍ وَسَيْكُنُ مِنَ الشَّحَرُكِ لَهِ ايعنی بان اس وقت تک متعلنه بن کملاآجب تک اعضار سے مُداہو کوکسی مکان میں تُھرز جائے اور حرکت کونے سے دک نرجائے۔ حب كرملاً مرضيا في فرمات بين : الصّحيم أنّه كما ذال عَنِ الْعُضُوصَارَ مُسْتَعَمَلًا وَ مِهِ مُمَّمِ مِنْ مُنْ مِنْ مُنْ مِنْ مُنْ مِنْ مُنْ مِنْ مُنْ مَسْتَعَمِدُ مِنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مِنْ مُن

ربینی میمی بیرے کہ ان عُضوسے فبدا ہوتے ہی تعمل ہوجائے گا۔ ان کلک کودگر کتب فقہ میں درست کہا گیا ہے۔

تصنرت الم البعنيف ومنى الترعن بس ما بستمل كيم من بين قوال معتولي بهلاقول ، روايت من بن زياد كي مطابي بم من تطرب

دور اقرل ؛ روایت امام الورسف کے مطابق مخبر منقف ہے۔

تیبراقل ، روایت محدبات و زفر کے مطابق طاہر غیر طہرہے۔ م ای تمیہ دے قول کو محققین ما ورام النہر نے اختیار کیا ہے اور اسی برفتولی ہے حضرت امام عظر منی اللہ عند کے اقوال ثلاثہ میں بظاہر تصناد علوم ہو ماہے

مرحقیقت بین تصاونهای رفع تصاوک ایک ایک بین بر مام به بین مرکز مقیقت بین تصاونهای رفع است دلیل بین من بات بین و وار د بواہے که وضوسے گناه و مطلقه بین حتی که انکھ، کان ، ناک ، سُر، باتھ ایافل

اور ناخوں کے نیچے سے مجی گناہ کل ماتے ہیں مثلاً متن توضّاء فاحسن

الْوُضُوْءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ حَتَّىٰ تَخْرُجَ مِنْ تَحْت اَظْفَارِهِ لَه

بكدايك رواليت مي تون بعي ،

خَرَجَ مِنْ ذُنُوبِ مِكْمَا وَلَدَتْ مُأْمُتُهِ "كَ

چونکہ صنرت سیدنا امام عظم رحمۃ اللہ حلیہ اہل شاهدہ وکشف میں سے تھے جب آب لوگوں کے آب وطنوکو دیکھتے توان گنا ہوں کو پہچان سیتے جراعصنات وضو سے دھل کریانی میں گرتے۔ اسی وجہسے آرمستعل کے بارے میں آب کے

ا العداية اولين ٣٩ ، لع محمدة القارى من ج ٣ ، من من من الله طبران كبير ع ١٠ الم

=\$ (۱۹۲)\$ مكوَّكِ ع ین قول ہو گئے جانچ سیدنا امام عبدالوہاب شعرانی رحمۃ الله علیہ نے مارِ تنعل کے متعلق امام عظم الومنيعذرهمة التله طليه كيتين اقوال كي حو توجيهات بيان فرما في بس به يَهُ قاربَيْن بين بخصرت الم عبالوباب شعراني رحمة الشّعليه فرمات بين . ين نے اپنے سروار صنرت علی الحق صرحة الله عليه سيمنا كدامام عظم الوليد ك مدارك التف لطبيف بير كمان براكابر أوليار الم مشاهده بمطلع مو المقتر الله وَلِلْإِمَامِ آبِي حَيِيْفَةَ فِي الْمَآءِ الْمُسْتَعْمَل شَكَلتُ رِوَايَاتٍ آحَدُهَا إِنَّ الْمُسْتَعْمَلَ فِي الْمَتَيْ مُحَكِّمُهُ مُحَكِّمُ الْمَآء الْمُتَغَيِّر بِالنَّجَاسَة ثَانِيهَا إِنَّهُ كتبول البهاييم سواع تاليهاات طاهرك نَفْسِهِ عَنْرُمُطَهِ رَاغَتْرِهِ لَهُ العينى، ماستعمل كي تعلق امام عظم رحمة التعليد سيمين رواتيس بين بيل وابت یہ کری یا نی اس یا نی کے محم میں ہے اج کسی خاست سے ملنے سے تنفیر ہومائے للذا وه نجاست غليظه يحمكم مل موكا . دُوسري روايت بين ب كروه با في حسلال جا نوروں کے بُول کے محکم میں ہے البذا اِس بریجاست خِفیفہ کا اطلاق ہوگا اورمیری روايت كيمُطابق وه بإني حزوباك بدلين دُوسري جيز كوباك بنبي كرماً للمذا طالبر موكان

اس کے بعد آپ نے تینوں روایات کی توجہات بیان فرمائی ہیں کر ماہلتمل کو نجس محد آپ نے ماہلتمل کو نجس محد آپ نے ماہلتمل کو نجس مغلط قرار دینے کی توجہہ افذ بالامتیاط ہے کہ آپ نے مشاہدہ اورکشف کی نظر سے کہا ترکی مرکب افراد کے عنالہ (دھوون) کو نجاست فلیظہ سے ملوث پایا ادرص فائر کے مرکبین کے عنالہ برچلال جا اوروں کے بُول کی طرح نجاست فیمنیہ

البيت المؤب الموثب المحالية الموثب المحالية الموثب المحالية المحال

كامكم لكايا اورشن طن كى بياد پر اكثر ابل ايمان كاخساله طاهر كے ورسع بين مشاحد فرايا ليكن الذكاب محروبات كونن غالب كى بنار برغير طبر كامكم لكايا جينا نجر آپ نے صراحت فرائى كم تسبيعة عن تسبيعة علي الْحَقّ السنة عَلَي اللهُ مَامُ اَبُو تَحْدِيْفَة بِنَجَ استة عُسَالَة مِنَا وَ مَنْ اللهُ اللهُ مَامُ اَبُو تَحْدِيْفَة بِنَجَ استة عُسَالَة مِنَا وَ الطلق الدَّي اللهُ اللهُ

"بمركور وابيت بهني كداما م عظم الجنيف رضى التُدعِنهُ جامع سَجد كوف كي وض مِ تشریف کے گئے ایک مشخص ولفنو کرر ہا تھا مصنرت امام نے اس کے وصنو کے بہتے ہوئے یا نی پر نظر والی تو فرما یا اسے بیٹے ! ماں باپ کو ایذا دینے سے توب كر، اس نے وزاً توبر كرلى ـ ايك وورس اومى كاعشاله ديكه كرفرمايا اسے بھائی اِ زُماسے توربرکر ، ایک اور شخض کا دُھوون دیکھ کرفروایا اے سندے إ خراب بیمینے اور مزامیر <u>شننے سے</u> توبہ کر، وہ دونوں تائب ہوگئے'؛ <sup>ل</sup>ے وصوب کی و مصلنے کی مدیث کے تحت فیم ارومحدثین نے فیر ما یا کہ يبار كنابهون سيصغائر مرادبين مطحرا لكشف ومشاهره أكحتيق كيمطابي كبارتقبي ومصلته بير واكر بوري طرح زائل نتجي بُمون نامهم كمبائر كي تويث اب وصنومیں صرور موتی ہے کیونکر اکابرین اولیائے کرام کے مشاہدات استمن يس تُوارْسك ساتھ موجو دہیں اور سبّدنا امام عظم صّی اللّٰدعنهٔ کوّ سرملقہ اصلِ مشاہدٌ تھے ں پانی کے تعلق مفتیٰ ہو قول ہیں ہے کر وہ طا ہر میں مرطب<sub>ر</sub>ے اور <sub>ا</sub>س کی طہارت

يريه صديث وليل ہے ؛

اَلْسَائِبُ بَنُ يَزِنِدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اَيْقُولُ ذَهَبَتْ بِيَ
خَالَيْنَ إِلَى النَّبِي مَلَ اللَّهُ عَنْهُ وَهَالَتْ يَارَسُولَ اللَّهِ إِنَّ البَّنِ الْحَيْقَ وَقَعْ فَمَسَحَ رَأْسِيْ وَدَعَالِي بِالْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكَ فِي الْبَرْكِ فَي مَسَحَ رَأْسِيْ وَدَعَالِي بِالْبَرْكَ فِي وَفَى وَفَى اللَّعِنْ وَصَلَّى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ الللِه

صرت كلاعلى قارى رحمة الله عليه الى مديث كر تحت لكھتے ہيں : وَعَلَى هٰذَا يَكُونُ وَلِيْلًا عَلَى طَهَارَةِ الْمَاآءِ الْمُسْتَعَمْدَ لِهُ نيزاكِ اور مديث شريف بيس ہے :

قَالَ آبُوْمُوسَى دَعَاالَكِيُ اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَلَمَ فِيهِ مِمَاهُ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَا اللهِ فَي اللهِ عَلَاهُ اللهُ عَلَا اللهُ عَلَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ عَلَا وُجُوْهِ كُمَا لَا اللهُ عَلَا وُجُوْهِ كُمَا لَا اللهُ وَجُوْهِ كُمَا لَا اللهُ وَكُمَا لَا اللهُ عَلَا وَكُمَا لَهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَلَا لَا لَال

ربینی، انوموسی شعری رضی الله عنهٔ نے کہا کہ نبی اکرم میں الدعیہ والم نے ایک بیالیہ بانی کا منگوا یا اور اسی میں کئی فرمائی بھر بانی کا منگوا یا اور اسی میں کئی فرمائی بھر بلال اور انوم کوسی سے خرما یا اس میں سے تم دولوں بی لواور اپنے مُنہ اور سینہ بیال

اس مدیث کے تحت علام کرمانی رحمة الله علیه نے فرمایا که حفورعلیا است والتلام كالعاب فمبارك مشك وعنبرسي زيا ده فوشبو دارتها ك اور یہ تھی نابت ہواہے کہ بزرگان دین کے آنار وستعملات کو تبرک بنا ما سَيْدِ لِمُ اللَّهُ اللَّاللّلْمُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّل صراحت فراتی ہے کہ: وَمِنْ ثُمَّ إِخْتَارَكَ ثِنْرُونَ مِنْ اَصْحَابِنَاطُهَارَةً فضكات مقكنه الصلاة والسكام رىعنى، ممادى بهت سے بزرگول نے صنورعليه المسلوق والسَّلام كے فُصْلاتِ مباركه (يُول ورار وغيره) كى طہارت كاموقف اختياركيا ہے ۔ علام عيني رحمة التدعليه في مصرت المام عظم الوصنيف رحمة التدعليد سع يرومين نقل منسدمانی ہے: وَهُوَيَقُولُ بِطَهَارَةِ كَوْلِهُ وَسَاَّئِرِفُضَكَ يَتِهِ كُه

وهُوكَيْفُولُ بِطِلْهَارَةِ كَوْلِهِ وَسَتَايْرُ فِضَلَايَهِ كُهُ ربعنی امام ابر عنیفرتمة التُّرعلیه حنورعلیه احتلاق والسُّلام کے لبل مب ارک اور تمام خصنلات مبارکہ کوطام قرار دیتے ہیں۔

السيطرح عارف رتبان حصارت سيدي عبدالواب شعراني قدس مرف العسسزيز تحرير فرمات بين :

كَيَنَ الْفَتَىٰ بِهِ مَسْنَعِ الْإِسْكَامِ الْبَلْقِيفِي والسُّسَبَكِيُّ

والجَلَالُ السُّيُوطِيُّ وَعَيْرُهُمْ حَتَّى قَالَ شَيُّ الْالْسَارِمُ السَّيْعُ الْالْسَادِمِ الْسَيْرَاجُ الْمَالَقِيْنِيُّ وَاللَّهِ لَوْ وَجَلْتُ شَيْرَبُتُهُ وَلِيلَا النَّبِيِّ اللَّهِ لَمْ وَعَالِيطِ اللَّهِ لَمْ وَجَلْتُهُ وَشَرِبُتُهُ وَلِيلَا النَّبِينِ صَلَى النَّعِيدُ وَلَا الْحَلَى الْمَسَلَّمُ وَعَيْرُهُ فَكُنُ مَعَاشِرُ مَا يُولِيدُ وَاللَّهِ اللَّهُ الْمُسَلَّمُ الْمَسْلَمُ الْمُلَا الْجَلَافِقُ وَعَيْرُهُ الْمُسَلَّمُ الْمُلَا الْجَلَافِقُ وَعَيْرُهُ الْمُسَلِّمُ اللَّهُ الْمُسَلِّمُ الْمُلِيدُ وَلَمْ لَمُ الْمُسَلِّمُ مَنْ مَوْضِع بَرَانِهُ مَلَى الْمُسَلِّمُ مِنْ مَوْضِع بَرَانِهُ مَلَى الْمُسَلِّمُ مِنْ مَوْضِع بَرَانِهُ مَلَى الْمُسَلِّمُ مَنْ مَوْضِع بَرَانِهُ مَلَى الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسَلِّمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ اللْمُ الْمُسْلِمُ اللْمُ اللْمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللْمُ الْمُسْلِمُ اللْمُ الْمُعْلِمُ الْمُسْلِمُ اللْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ اللْمُسْلِمُ

منن وایضاً مردم محتمد نقل کرده اندکه بعضے از مُلفارِ شمارا مُریدانِ الشان سجده می کنند بزمین بوس بم کفاست نمی کننده شاعت این فعل آظهر مِن المُست منج جو ابنت الله المرابع المابع ا

# شان کمنی د واکید در منع نمائید

ترجمہ: اورنیز باعثما دلوگوں نے بتا یا ہے کہ آب کے بعض خُلفا، کو اُن کے مربیدیں کرتے۔ اس فعل کی رُائی مربیدیں سے مربیدیں سے مربیدیں سے اس فعل کی رُائی سے سے بعی زیادہ ظاہر ہے آپ انہیں منبے کریں اور منع کرنے میں ناکسید سے کام لیں۔

#### شرح

صنرت امام رابی قدس سرؤن زرنظ سطور میں صنرت سیخ نظام تھا نیسری رحمت الله علیہ کا استحالیہ کی اللہ کا اللہ کا ال رحمت الله علیہ کوان کے بعض خلفار کی الفطی برا گاہ فرمایا ہے کہ وہ اپنے لیے مُردِّی ل سے سجد سے کرواتے ہیں۔ اس لیے آپ پر لازم ہے کہ ان کو اس فعل شنیع سے آگید اُ منع کریں ،

#### سجده عبادت محيت

سحب سحب المعنى عَايَةُ التَّذَكُ لِي انتها فَي ذِلْتَ عاجزى المَّهَا فَي ذِلْتَ عاجزى المَّهَا فَي ذِلْتَ على الإَرْضِ المَّرِي المَّهَا فَي كَالْمَ وَمُهُوم مِهِ وَضْعُ الْجَبْهَةَ عَلَى الْإَرْضِ (مِثْيَا فِي كازمِين بِرركهنا)

سجدہ کی دوشمیں ہیں ہا، سجدۂ عبادت ہا، سجدۂ تجیّت سجدۂ عبا دت حضرت حق مِلْ مُلالُہٰ کے بیے خاص ہے ۔ غیرِفُد ا کے بیے سجدۂ عبادت لیقیناً اجماعاً شرک مہین اور گفر مبین ہے ۔ یہ عجدہ تمام سابقہ مذاہ ب مِلْ ہیں بھی غیرِفُد ا کے بیے بھبی جائز نہ ہوا ۔ (کشمافی کُنْبِ الْعَقَائِد) میں مجدہ محیّت اجو صرف تعظیم واحرام کے بیے ہے) پہلی شریعتوں میں اُز تفالىكى بهارى تربعيت بيسخت حرام وگذاه كبيره به كيونكه اس كى مانعست بر اماديث متواتره وار د مونى بين - ركسًا في التفنية يا لغيّر شيزي،

اللي طرح علمار ومشائع ومزارات أوليارك يصحبه محرنا قطعاً حرام وناجائز

ے اگرجیاس میں عظیم و تحیت ہی قصارو ہو۔

كَأَنْتَكَارَسُولَ اللهِ اَحَقُّ اَنْ نَسْجُدَلَكَ قَالَ اَرَأَيْتَكُوْ مَرَمْتَ بِقَبْرِيْ آكُنْتَ تَسْجُدُلَهُ قَالَ قُلْتُ لَا قَالَ فَلَا تَفْعَلُوْ الوَكْنْتُ امِرًّا اَحَدًا اَنْ يَسْجُدُ لِاَحَدِلَا مَرْتُ النِّسَاءَ اَنْ لَيَنْجُدُنَ لِاَ زُواجِهِنَّ لَهُ لِاَحَدِلَا مَرْتُ النِّسَاءَ اَنْ لَيَنْجُدُنَ لِاَ زُواجِهِنَّ لَهُ

ترحمہ : اے اللہ کے رئول میں المباہ ولم آپ سجدہ کے زیادہ ستحی ہیں فرمایا مجالا تم اگر میری قبرسے گزرو توکیا میری قبر کو سجدہ کروگے ؟ میں نے عرض کی نہیں فرمایا پس تم سجدہ نذکرواگر ہیں کسی کوکسی کے لیے سجد سے کا حکم دیثا توعور توں کو لینے خاوندوں کے لیے سجدے کا حکم دیما ۔

نبر حضرت كيمان كارسي صنى التدعند في حضور عليه القسلاة والسلام كوسجده كرنا با الترسي ني فرمايا ،

كَ يَنْبَعَيْ لَيْمَخُلُوْقِ أَنْ تَيَنَجُدَ لِاحْسَدِ الْآلِلْهِ وَتَعَسَالُ لَهُ وَلَا لِللهِ وَتَعَسَالُ لَ محى مخلوق كوزيبانهي كروه الله تعالى كيسواكسي كوسعده كرس م حضرت معا ذہن جبل رضی التّدعنهٔ ملک شام ہے آئے تورشول التّر شال الله و کا کو سجدہ کیا جصنوراکرم من الله الله و فرایا معاذ! یدکیا ہے ؟ عرصٰ کیا میں نے ملک شام میں نصار می کو دیکھا کہ وہ اپنے یا در اور اردر داروں کو سجدہ کرتے ہیں تومیرے دل میں خیال آیا کہ محصنور کو سجدہ کریں .

فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ سُلَّالِيَهِ اللهِ اللهِ سُلَّالِيَهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُولِ اللهُ ا

ایعنی مجھے بحدہ نہ کروا گرئیں غیرِخدا کے لیے سجدے کا مکم دیا توعورت کو ایٹ شوہر کے ایک سجدہ کرنے کا حکم دیتا ۔

سجدہ تحقیت کوشرک قرار دینا اقتعائے باطل ہے۔فرشتوں کا آدم بلمینہ مسرک علیہ السلام کوسجدہ کرنا اور بھائیوں کا حضرت کیسف علیہ السلام کوسجدہ کرنا آس امرکے نبوت کے لیے دلیل کا فی ہے کہ سجدہ عظیمی شرک نہیں کیوں کہ اللہ تعالیٰ کا کسی مخلوق کو اپنا شریک بنانے کا مکم دینا مُحالِ قطعی ہے اور ملائکہ کرام و انبیائے عظام علیہم اسلام کی ثنان کے بھی منافی ہے کہ وہ ایک آن کے لیے بھی غیراللہ

گواسس کا شرکک بنائیں ایاجائز تھہ ائیں ۔ البتہ سجدہ تحییت کے بارے ہیں تعبین فقہار سے گفر کا قوام نقول ہے سیکن تحقیق کے بعد اس کو گفر صُوری رمجمول کیا گیا ہے ۔

طرىقة محدية الممى نوع سيزويم أفات قلب مين اللكوحرام تباكر فرمايا ، ومين ألك محود م المراكب و الرين المسكرة و المراكب و المراك

یعنی اُفرار وسلاطین کے بیے سجدہ ،رکوع یا رکوع نک جھکنا بھی حرام وُمنوع ہے۔ ایسے ہی اُمرار وسلاطین اور شائخ طریقت کے بیے زمین کولوسہ دینا بھی حرام ہے۔ ایسے ہی اُمرار وسلاطین اور شائخ طریقت کے بیے اور اس فعل کو کرنے والا اور اس سے خوش ور اضی ہونے والا دونوں گناگار ہوں گئے۔ اُم

فیہ الوجعفر رحمۃ التعلیہ نے فرمایا حوجمس با دشاہ یا امیر کے سامنے زمین کو بوسہ دیے استے زمین کو بوسہ دیے یا سجدہ کرے گروہ ہیں ہوگا تو اس سے وہ شخص مشرک و کا فرتو نہیں ہوگا لیکن گذاہ کہیں گذاہ کہیں گذاہ کہیں گذاہ کہیں گریس ہوگا اور اگر عبادت کی نتیت سے کرے گا تو مشرک کی کا فرہمیں ہوگا۔ ہوجائے گا اور اگر اس کی نتیت کچھ می نہ ہوتو اکثر علمار کے نزدیک وہ کا فرہمیں ہوگا۔

امامدرشهیدرهمة الله علیه نے تحریفرمایا:
 مَن قَبَّلَ الْاَرْضَ بَن یَک یک الشه لطان اَوْ اَمِین یِا وَ سَجَد لَهٔ
 فیان کے ان علل و نجه الشّجیّة یلائیکفئز ولکن ازتکب النّکین قریب اللّب اللّب

نرحبہ، جس نے بادشاہ یا کسی بڑے آدمی کے سلسنے زمین کولوسد دیا یا اسے سجدہ کیا اگر تعظیم کے لیے ایسا کیا تو کا فرنہ ہوگا لیکن کبیرہ گناہ کا مرکب ہوگا۔

⊚ اسی طراح علمار ومشائخ تو تعظیمی سجده کرنا یا مزارات کی طرف سحده کرنا اور کوع کی حد تک جھکنا بھی حرام قطعی ہے۔

⊙ حضرت امام عبالعلی ناملی رحمة الدعلیه نے تصریح فرمانی ہے کہ کشخص کے اوب واحد ام کے لیے میں کرئی حرج نہیں۔
 اوب واحد ام کے لیے عدر کوع سے کم کے جیکئے ہیں کوئی حرج نہیں۔
 کولا با اس بے کا نقص مین تحدید الریک فوج نے۔



معربية صريضيغ نيطكام المرال ترثي تعانيري روسية



مُونَ فَيْ اللّهُ مُعَلّمُ مَا مُعَلّمُ مِنْ مُعَلّمُ مِنْ مُعَلّمُ مِنْ مُعَلّمُ مُعَلّمُ مُعَلّمُ مُعَلّمُ م مُعْلُوبُ آفاق وأنفسُ مِنْ كَافْرِق مُعْدِدُ عدم اور وعُردِ فِنَار ، مقام عُدِيّت وعُود عدم اور وعُردِ فِنَار ، مقام عُدِيّت



البيت المحالية المحال

# مڪٽوب ۔ ٣٠

مان این عنی مه در سیرانعنی که بنهایت کار متیر شود میسر و ست حضرت خواجر بزرگ خواجر نقشبند قدّس الله تعالی سترهٔ الافتر می بنیند درخود الافتر می بنیند درخود می بنیند در وجود خود ست و فی آنه سیست که بیش ازین هر سیر سی که میست اطلاق لفظ به ماصلی ست دانط می میست دانط می میست و اللا آن نیز از جماد سشد انط و می عدانه ست

ترجمہ : میعنی بھی رسال کے رئیز انفنی ہیں متیراتے ہیں جو کدکام کی انتہار بیاصل ہوتی ہے جو خرت خواجہ بہا وَالدِین بقشند کناری رحمۃ اللہ علیہ نے فرما یا ہوتی ہے جو امل اللہ فنا و بقا کے بعد جو کچھ و پھتے ہیں اپنی ذات ہیں و پھتے ہیں اور جو کچھ یہ پہانے نتے ہیں اپنی ذات ہیں و پھتے ہیں اور ان کی حیرت اپنے وجو د ہیں ہوئی ہے کچھ یہ پہانے نتے ہیں ابنی ذات ہیں کہا ہے گھ یہ کا میں ہوئی ہے و فی آنفی ہے ما آفکا تُبھور و تن اور اور کیا تم اپنے نفنوں میں نہیں و پہلے جو سیر جس کے وہ سیر آفاقی میں داخل ہے جس کا حاصل و کیکھتے۔ اس سے پہلے جو سیر جس کے وہ سیر آفاقی میں داخل ہے جس کا حاصل و کیکھتے۔ اس سے پہلے جو سیر جس کے وہ سیر آفاقی میں داخل ہے جس کا حاصل

حوالبنت السعاد، المحالية المنتا المنت

کھے بھی ماصل نہونا ہے اور بہاں ہے ماصلی کے لفظ کا اطلاق اصل طلب کے ماصل ہونے کی نسبت سے ہے۔ ورنہ وہ مِنْ مُبلہ شرائط اور اصل مطلب کے لیے آما وہ کرنے والے اممور میں سے ہے۔

## شرح

حضرت امام رّبانی فدس سرهٔ استجانی ننه اس محتوب میں مِن حُبکہ دیگر انمور کے شہو دِ اُنفنی و آفاتی کا فرق بیان فرمایا ہے۔

مروسه و سه و المسى كافرق البنده النه سي البدائ كلمات بين آب نه بي المرى كيوخرنيين كما المرى كيوخرنيين كما البنده النه المرى كيوخرنيين كما النه كواب في المدينة والدور كراس كي وضاحت اليان فرادى به كرا كري الما قراد وري كراس كي وضاحت اليان فرادى به كرا كري الما كاليك مرتب المين الما كلوب شهود المنسى به المندا المسل كي المواب شهود المنسى به المندا المسل كي المواب الما كل الما المواب الما كل المواب الما كل المواب المواب الما كل المواب المواب الما كل المواب المواب الما كوري المواب المواب

مطاوب فاق والفرس ورارس مسلوب المرابان قدّس ترهٔ مطاوب فاق والفرس ورارس فرست فراس فرست المساك كاليك على مقارت والمست المؤرد الفلى كى معرفت و مؤرد فراياب كرا المال الله فنا ولها كم بعد حركي ويصف الرح تجرب في بجيانته بين ابنى ذات بين بى ويحقة الدر بجابنت بين واضع موكة صرت خوامة بزرگ الا وصفرت امام رباني فرّس مرّو البيت الله المرابع الم

بترشُماکے یہ دونوں فرمان ان کے ابتدائی معارف میں ہے علوم ہوتے ہیں کیونکہ اس کے بعدان کے دیگرا قوال اس سے بھی بلندم عرفت مرشم تل نظراتے ہیں مبیا كرّاب نے فرمایا "مطلوب ما ور ائے آفاق وانفنس است " بَعِني مطّلوب ٱفاق والفن سے آگے ہے اور نیز فرمایا ''فَقُوْمُنِجَائِذُ وَرَارَ الوَرَاءِ ثُمَّ وَرَارَ الوَرَاءَ ثُمُّ وَرَارُ الوِّرَالِهِ ۗ اورحضرت نواج بزرگ نے ارشاد فرمایا "ہرجہ دیدہ شاد وسٹ نبیدہ شدو د انسته شدان ممرعنراست به بيني و کچه ديڪيا گيا اور و کچه مُناگيا وه سب عنر ہے اور ہی معرفت حقیقت اور نثر بعیت کے عین مطابق ہے کیونکہ شہود ہ فاق و انغش طلال کے ساتھ مر کوُط ہے اور آ فَاق و اِنفس اصل کے دُرک و وصل کی اقت نہیں رکھتے بیں لامُحالہ وہ بیرح بسالک کو آفاق وانفس کی سیرکے بعد میسرا تی ہے اس سیرکا تعلق ظلال کی بجائے اصل کے ساتھ ہوتا ہے اور اس کوئیا قربیت كهاجانا كص حِبْ كامدلول أيت قرافي" وتنخف أفترب إليه م بنجب ل الْوَرِيدِيدِ " بيجهام طلوب لباس ، ومم وخيال سے منز همشه و د ہوتا ہے اور يه مرتبة وصل عُرياني سے تعبير كياجاتا ہے عارف رُومي رحمة الله عليہ نے كىپ

وب فرویا ہے۔ من شوم نحریاں زتن اُو ازخیال من شوم نحریاں در نہایات الوصال اور اسی معرفت کوعارف کھڑی رحمۃ الله علیہ نے لیُوں بیان فرمایا۔ جے محبوب بیارا اِک دن فَستے نال اساڈے جاناں کیں مُما نجھیرو تھیب تا جال اساڈے اسی معرفت کو حضرت امام ربّانی قدنس سرّرہ نے یوں بیان فرمایا : "هرچه در مرایات افاق و أهنس ظاهر شود بداغ ظیّت متسم است بس مزاوار نعنی بود تا اثبات اصل نموده آید و چون معامداز آفاق و انهنس گذشت از قدظلیت رست .... منتهیان دائره ظل رانجلی برقی که ناشی از مرتبهٔ اصل است میسراست که یک ساعت از قید آفاق و فنس وار باند و جمع کداز دائره آفاق و انعنس درگذست تند و از ظل باصل پیوستنداین تخی برقی درحق ایشان د آمی است هی به

ترجبہ: جو کچھ آفاق و افض کے آئینوں میں ظاہر ہوتا ہے ظلیت کے داغ

سے داغدارہے لیں لاز مانفی کے لائن ہے تاکہ اصل کا اثبات و اضح ہوجائے
اورجب معاملہ آفاق و افض سے گذر کر ظلیت کی قیدسے خلاصی بالیتا ہے .....
ترخم ہی سالکوں کو جو دائر ہ ظل سے نجات با چکے ہیں تجل برتی میسر آئی ہے جو تمرب کہ
اصل سے تعلق رکھتی ہے اور ایک ساعت کے یہ سالک کو (برق کی طرح)
اصل سے تعلق رکھتی ہے اور ایک ساعت کے یہ سالک کو (برق کی طرح)
امن قاتی وافس سے رہائی دلاتی ہے اور وہ حضرات رفعش ندیہ جو دائرہ آفاتی وافس سے گذر کر ظل سے اصل مک رسائی حاصل کر لیتے ہیں سے کبی برتی ان کے لیے دائی ہوجاتی ہوجاتی ہوجاتی۔

حصرت خوامجست معصوم مرہندی رحمۃ التُدعِليہ فرملتے ہیں ، "فَزِ وَحضرت النِّيْاں ما قدّسنا التُّرْسِحانہ بِسَرِم يافت علوب بيرون اُفاق نُفنسس است اُو تعالیٰ راجِنانچہ در مرا پاسے اَفاق گھنجا تش نيست در مِرُات اِنفس نير گھنجائے نہ ٤٤ کے

ترجمہ : ہمارے حضرت ایشاں دامام رّبانی قدس سرفی کے نزدیک طلوب کی یا فت اُ فاق و بفض سے باہرہے ۔ ذات بحق تعالی کے لیے عب طرح اُ فاق کے

البيت المجال الم

آئینوں میں گنجائش نہیں اس طرح انفس کے آئینوں میں ہی گنجائش نہیں ہے۔ نفور انفٹنی وتحلی صوری کا فرق نہودِ انفٹنی وجلی صوری کا فرق

من ازشہو دِ افسی کے در تو تئم نیفتہ و ان را در رنگ شہو دِ تخلی صُوری لہ در فینِ مُتحلیٰ لہ ست نخبل نہ کند۔ ترجمہ :شہو دِ افسی سے کوئی شخص وہم میں مبتلانہ ہوجائے اور اس کو تجاہو کی کے شہود کی مانند جو کہ محلیٰ لہ' جس رِنخلی ظاہر ہوئی کے فیس میں ہے خسیال نہ کرے ۔

#### شرح

حضرت اما مرتبانی قدّی سرهٔ النورانی فرماتی بین کرجب سالکتام قدس کی تخلیات وار د ہوئی ہیں تو مبتدی سالکین حقیقت تجلیات سے آگاہ نہ ہونے کی وجہ سے بیااوقات وہم یا غلط ہی ہیں بتلا ہوجاتے ہیں جیسیا کو بعض سالکین نے شہو وِصُوری کو شہو و الفنسی سمجھ لیا اور معرفت کی تحمی کے باعث مجبوراً اتحاد کی باتم کرنے کے حالا کہ اصل معاملہ اس کے رعکس ہے یخلی صُوری سالک کو فائے تقیقی کے فائے تقیقی سے بہلے حاصل ہوتی ہے جبکہ شہود ایعنی عادف کو فیائے تقیقی کے بعد میٹر آتا ہے۔ لیکن یہ امر کھوظ رہنا چا ہیئے کہ تحقیق کو ری اور شہود ایعنی عادون ہو و ایعنی دو اون سالک وعادف پر بقا کے وقت میں وار د ہوتی ہیں یعنی تحقیق کی باتم وقت میں ہوتا ہے اور شہود انعنی وجُدِ مِنوہو کی کاشہود وقت میں ہوتا ہے اور شہود انعنی وجُدِدِ مُوہوُ کی کی بقا کے وقت میں ہوتا ہے اور شہود انعنی وجُدِدِ مُوہوُ کی کی بقا کے وقت میں ہوتا ہے اور شہود انعنی وجُدِدِ مُوہوُ کی کی بار پر شہود میں میں کلام یہ ہے کہ بعض سالکین ان دو نقا کا فرق نہ سمجھنے کی بنار پر شہود ماصل کلام یہ ہے کہ بعض سالکین ان دو نقا کا فرق نہ سمجھنے کی بنار پر شہود و انتہ کی مصرف کی بنار پر شہود

صوری کوهی شهودافنسی کا درجه دینے مگتے ہیں اور نہیں سمجھتے کہ بقائی دوسمیں ہیں ایک بھا قبل افغار اور ایک بھا بعد الفنار جو بھا قبل از فاہے اس بھاسے مراد الک ایک بھا قبل افغار اور جو بھا بعد از فاہے اس بھاسے مُرا د عار ن کے وجُو دبھری کی بھاہے اور جو بھا بعد از فاہے اس بھاسے مُرا د عار ن کے وجُو دمو ہو کی بھا ہے۔ واضح ہو کہ عالم قد س کی تجلیات سالک کے وجو دکو فنا کو نے اللہ میں بھر موری کی بیشان نہیں اور وہ سالک کو مرتبہ فنا میں بہت ہم میں بہت بھی است کے اللہ اللہ میں اللہ کو مرتبہ فنا میں بہت ہیں اللہ عنہ اللہ میں اللہ کو مرتبہ فنا وغیر باکا از الد ضرور کرتی ہے۔ جبکہ دیگر تعین عجلیات بلاکیف وجود بشرین کی فاتی کر دبتی ہیں۔

من مین بین میں الکین پرایک وقت ایسابھی آناہے کہ وہ اپنے شہو وقبی و بلیم میں آناہے کہ وہ اپنے شہو وقبی و بلیم م بلیمة ممبر انفسی کوشہود حق نبحانهٔ وتعالی محمان کر میٹھتے ہیں اور یہ توحید کا ابتدائی مرتبہ ہے حقیقی توحید اس سے مبند ترہے لیکن اس مرتبے کی دلیا و وہیث فرایا ، قدتسی ہے جس میں اللہ رہش العزب سے فرمایا ،

لَمْ يَسَعُنِيٰ اَمْضِيُ وَلَاسَتَمَا ثِنُ وَسِعَنِي فَلَابُ عَندِى النُمُؤْمِن لَهِ

ئیں زمینوں اور اسمانوں میں نہیں ساسکتا ،لیکن سبندہ مومن کے دل میں سماسکتا ہوں ۔

مطلب یہ ہے کہ زمین و اسمان شہودی کی قابلیت و گفنجائش ہر گرنہیں رکھتے لیکن بندہ مومن کا ول جو کر حقیقت جامعہ ہے ایک قتم کی ہے جو کن قابلیت اور سبے کیفٹ گفنجائش رکھتا ہے اگر جو لیکھنجائش مالیت، مُحلیف فریت البيت الله المائية الم

اور نظروفیت سے مبراہے۔اس امر کو سمجھنے کے لیے آئیندا ورعینک کی مثال بیش نظر دہنی چاہیئے جیسے کہ آیکنے اور عینک میں بغیرالیت وظرفتیت کے صورتیں مشہود ہوئی ہیں اسی طرح قلب عادت کو آیننے یا عینک کی مش مجلی بائے تومیس سند قریب افہم ہوجا ماہے۔ اواللہ اعلم موجا ماہے۔ اواللہ اعلم موجو فرق ما ورجم وفی ا

منن این ماکے گویدکہ بھائے باللہ عبارت ازیافت خود ست عین حق تعالی و تقدّس نرجینی ست اگراین عنی از بعضے عبارات این قوم ستفاد شود آن راجواب گؤیم کداین بھا درمقام مذہبہ بعضے رابعداز ایم لاک اسمحلال کرشبیر بہ فناست دست مید بدوا کا ربقت بندیہ قدّس اللّٰہ تَعَالیٰ سُسُرار حُمْ تعبیرازان بوجُ وِعَدَم می کدند

ترجمہ ایبال کوئی شخص بیرنہ کے کہ تھا باللہ سے مراد سالک کا ابنی ذات کوئی تعالی و تقدس کی ذات کا عین مشاہدہ کرناہے ابسا ہرگز نہیں ہے۔ اگر اس کے جواب میں اس کروہ کی بعض عبارتوں سے بیعنی مجمع اجانا ہوتو ہم اس کے جواب میں کہتے ہیں کہ یہ لقا مذہبہ کے مقام میں مجن حضرات کو استہلاک و اِسمحلال کے بعد بحرکہ فیا مذہبہ کے مقام ہی تعین مقام اور تھے ہیں۔ اور اکا برنقشبند یہ قدس اللہ ائر ارشم اس کو وجو وعدم سے تعیم فراتے ہیں۔

#### شرح

حضرت امام رتباني قدّس مترهٔ العزیزیند استضمون میں ایک سوال کاجواب ارشاد فرما يائے سوال برہے کر بعض سالک حضرات کی عبار توں میں ہے کم بقاباللدكي مرتبعين سالك اين أب كوعين حق تعالى معلوم كرتاب إس كي وج كياست ؟ تو آب نے اس كا جواب يوں ارشاد فرماً ياست الحرسالك كويہ وبم فقط مقام عذبهٔ بدائیت میں اتہ لاک واشملال استعزاق ومیتی کے سبب ببدا ہو تاہے للذاسالک اس وقت بیگھان کرلیتا ہے کوئیری ذات عین ذات حَقّ تعالىٰ ہے ليكن بيعاليت دوام ندِرينهيں ہوتی مبحہ زوال ندِرَ ہوتی ہے سيعسيني سالك برعالم وعرُب كى تحليّات تحقيى اس كومعدوم كانشان ديتى ہيں اور تحقبى موجوُ د کا بہتر دہتی رہتی ہیں بخبی کے وقت وہ اپنے و جو اِئشری کومعدوم یا تاہے اور انقطاع بتلك وقت اس كا وجود بشرى ميرعودكراً تلب كيونكه وه انجي ك فاستحقيقي سيئمترف نهين بواء اكابرين قضبند ييليم الرمنة سالك كي اسطالت كو وجُودِ عَدَم سے تعبیر كرتے ہيں يعنى سالكِ اپنى عَدْمتيت كامشاہدہ كرليات اور يد حالت فالتحقيقي سے يہديمينيا وي محمي اس سے يرحالت لے يلتے إلى اورهم دے دیتے ہیں اور وہ بقاجو فنائے حقیقی کے بعد حاصل ہوتی ہے ہرست کے زوال اور ملل سے محفوظ ہوتی ہے اس کو ویجد فاسے تعبیر کیا ماتا ہے۔ ومج وعدم كى مثال اس لوسكى سى بعد وراك كى عبى مين ماكر اك بن ما ما ہے لیکن سرد ہو نے کے بعد بھروہی لوہے کالوہاہے اور وجودِ فناکی مثال اس مانبے کی سی ہے جو تھیںیا گری کے عمل سے سونا بن مبا ماہے کیکن تھیر دوبارہ مانبا نهيں بن سکتا يسونا ہي رہتا ہے ٻِ ان بزرگان قشبند پيليهم الرحمة کی فنا وبقاد ائی ہے۔ بیصنرات جین تقایس فانی اورعین فنائیں باقی ہوتے ہیں اور حوفنا وبقا

زوال ندر ہیں وہ احوال و تلوینات ہیں سے ہیں ان کی فنا و بقا دوام ندریہ۔ ان کے احوال سرمدی ہیں بکہ یہ الوالوقت ہیں ان کے یائے نہ وقت ہے نہ حال ان کامعاملہ وقتوں کے بید اکرنے و الے اور احوال کے بیدینے و الے کے ساتھ ہے بیلی کا زائل ہونا وقت اور حال کے ساتھ محضوص ہے اور حوال وقت و مال سے گزر جکے ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالات فضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالات فضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالات فضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالات فیضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالیت فیضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالیت فیضل الله من تیک ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالیت فیضل الله میں کو تیک ہوتے ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالیت فیضل الله میں کو تیک ہوتے ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔ ذالیت فیضل الله میں کو تیک ہوتے ہوں وہ زوال سے محفوظ ہوتے ہیں۔

میسا که حضرت خواجهٔ نقشبندا ولیی نجاری رحمته الله علیه نے فر مایا که : در وجُودِعدم وجُودِ بشریت کی طرف عود کرتا ہے لیکن وجُودِ فنا وجُودِ ابشریت کی طرف عُود نہیں کرتا یا کہ

حضرت خواجه محر معضوم مرب دى رحمة التُدعليد في فرمايا:

"عدم جاسسلسله کی عبار توں بیں آتا ہے اس سے مُراد اس اہم الہی گی ہی کا ورُود ہے جو کہ عارف کامبدا تعیق ہے اور کسی پر و سے کے بیچے سے جذب و مجست کے راشتے سے مُدر کہ سالک پر وار د ہوتا ہے جس کے بہو ہیں سالک کی ہمتی جیب جاتی ہے اور سالک اپنے آپ کو اور اپنے اوصا ف کو گم کر دیبا ہے اور نہیں یا تا اور وجو دِ عدم سے مُراد اس ستی کا تابت ہونا ہے وہ وجود و بقا ہو می بر مرتب ہوتی ہے اور بیجی احتمال ہے کہ وجو دِ عدم سے مُراد حالت عَدم بدی کا تابت ہونا ہے وہ وجود و بقا ہو می بر مرتب ہوتی ہے اور بیجی احتمال ہے کہ وجو دِ عدم سے مُراد حالت عَدم بدی کا تحقق ہونا ہونا کہ اور وجود میں مالک کے اندوسفت عدم کا بید ا ہو جانا مُراد ہے اور بید عدم اور وجود عدم ہونا و بھا ہی بر مرتب ہوگی وہ جی دائمی بہیں ہوگی اور وجود دِ اُنظریت کی طرف عود کرنے سے خفوظ بہیں ہوگی ۔ جب تک وہ طہور و اقع ہے اس وقت تک سالک کی ہمتی تھی ہوئی نہیں ہوگی ۔ جب تک وہ طہور اور موجود اس وقت تک سالک کی ہمتی تھی ہوئی ہے اور جب وہ طہور اور موجود اس وقت تک سالک کی ہمتی تھی ہوئی اور وجب وہ طہور اور محتمالی کی ہمتی تھی ہوئی اور وجب وہ طہور اور محتمالی کی ہمتی تھی ہوئی اور وجب وہ طہور اور محتمالی کی ہمتی تھی ہوئی اور وجب وہ طہور اور محتمالی کی ہمتی تھی ہوئی اور وجب وہ طروب کی اور وجود کی اور وجود کر اپنے گا گو

البيت الله المراك المرا

س منبر بدایت بین سالک برایسی مالت مدمیه کاطاری مونا جو دوام بلینه ممیر پرینه مو وغروعدم که لا تا ہے۔ بین ممیر بیرنه مو وغروعدم که لا تا ہے۔

س میر می حق تعالی کی متی کا عارف کی ذات پر اس قدر غلبہ ہوجا یا کہ عارف بلید ممبر میں متام تعلقات سے خالی ہو کر وَ تَبَ مَثَلَ اِلَبِ وَ تَبِ يَلَا لَهُ کَانُونُ بن جائے فیائے عیمی کہ لا ما ہے اور ہی اِفلاص کا مرتبہ ہے کے

منن لہٰذا نہایتِ مراتِبِ وِلایت مُقامِ عَبدِتِت س در درجات ولایت فوقِ عَبدیت مقامے نیست ترجمہ ، لہٰذا ولایت کے مرتبوں میں آخری مرتبہ '' مقام عبدتیت ''ہے ولایت کے درجن ہیں عبدیّت کے درجے سے اُورِ کوئی درجہ نہیں ہے۔

## شرح

حضرت امام ربانی فدّس مرّهٔ فرمات بین کدارشاد خدا وندی کے مطابق اسان کی تخبیق می قصود مبندگی دعبا دت کے عمولات مجالاناسب اور صوفیار نے جوعشق اور محتبت کو مبنیا و قرار دیا ہے وہ مبا دی اور ورمائط کے اعتبار سے ہے نک مقاصد کے اعتبار سے مجتت اور عشق توصر ون ماسوی اللّٰہ کی گرفتاری سے أزاد ہونے کا دسیہ ہے اصل مقصنو د توصرت حبا دیت اور معرفت الہیہ ہے جبیا كمفرايا ومَسَاحَلَقْتُ الْبِجِنَّ وَإِلَّا نُسَلَ إِلَّا لِيَعَبُدُوَّ لَهُ لَهُذَا الْمَامِ ربانی قدّس منرہ کے نزدیک توحید وجُردی شق و محبّت کے غلبے کا میتجہ ہے جب کم توحيد بشودى عبأدت اورمع فت كالخروس يبي وجرب كوتوحيد وحودي الك كوابتدارمين اور درميان ميرثيث آتى كبير جبكه توحيد شودى عارت كواخر ميرمشه ہوتی ہے۔ جبیبا کوشب معراج میں معرور عالم صلی انتقافیہ ونم قرب کے آخری مرتب بِرْ فَأَنْهُ وَكُرْمِي التَّاتِعَالَىٰ كَيْحَصُور مِن بِنِسْبَلِي إِلَيْكَ بِالْعُسَبُودِيَّةَ عَيْ تفاصا كريت رسيعني اسه الله بمصمقام عبرتيت بين بي قرارعطا فرما . حضرت مجدّدِ الف ثاني قدّس بترهٔ العزيزَ كخنز ديك ولايت كے مراتب ہيں اخرى مرتبر "مقام عبدتيت ہے اور ہی مقام کو آپ وُخدمَت اِلشّہو د کا بھی نام دیتنے ہیں ۔ آپ لنے نظرِیہ وحدث الشهود بيلن كرك نظريه وحدث الوحود كالكثيط يانتر ديدنهين فرمائي بلكأة وحدث الوحودسية بيدا ہونے وَالى خلط فنم بيوں اور خالق ومخلوق تے درمَيال كا وماول كتمام شهات كودُور فرماكريهمها دياكه توجيد ويجدى سوفياركا إيك حال ہے کیکن یہ آخری حال نہیں س کو مقام عبور سمجھنا جا ہیئے نہ کو مقام قرار .... اورجن مزرگوں نے اس مال کی باتیں فرمائی ہیں وہ اس مال میں مبیشد ندرہے تھے بلکہ اکثر مشائخ اس مال سے ترتی کرکے مقام عبدتیت سے مشرّف ہوتے ہے بن - وَسِاللّه التّوفينيق كيونكر توحيد وعُردى مقام وعُردتيت سيء اوراس ا محمقًا مُظِلِّيت ہے اور بھرسب سے طبعہ کر مقام عبدتیت ہے وراس سے هُوَ الْمُورَادُ . هُوَ الْمُورَادُ . مقام عبرت میں سالک اور عارف اپنی ذات کو بندہ اور مخلوق مجھا اور دیجھا ہے۔ اور اپنی ذات وصفات کے اللہ تعالیٰ کی ذات وصفات کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں دیا اور نہی اپنے آپ کو ذات بغدا کا ظل رسایہ، قرار دیہا ہے اور نہی اپنے آپ کو ذات بغدا کا ظل رسایہ، قرار دیہا ہے اور نہی اپنے افعال کوعین افعال باری صور کرتا ہے جبکہ مقام عبدیت کے علاقی نہیں افران کو اس قیم کی کئی پیچیدگیاں اور غلط فہمیاں رو نما ہوئی رہتی ہیں اور اگلامقام منکشف ہونے کر پیچیلے مقامات سے تو بہ کرتے رہتے ہیں۔ ذالے فض ل اللہ فیونی یہ من تیساء م

# شرح

حضرت امام رّبانی قدّس سرؤ العزیز فرماتے ہیں کا معض فیار نے خالق اور بندہ کے درمیان حو وحدت فغل کا حکم کیا ہے یہ ان کا سکریہ کلام ہے جق ہے ب کدافعال کاخالت ایک ہے اور فاعل متعدّد ہیں آپ فرماتے ہیں کوصر کے حق وہی ہے جوعلمائے اہل سنت اور خاصت کی تحقیق سے نابرت ہو اہے سابقہ انبیا کی شریعت ہو تھی ہے کہ شریعت ہو اسے سابقہ انبیا اسکار تو ہوں کی شریعت ہو تھی ہے اس کے علاوہ زند قد و اس کے علاوہ ارز قد و اس کے علاوہ زند قد و اس کے معالم ہوتی ہے متنام مطابقت تقام عبرتیت میں توحید اور یہ تمام مطابقت تقام عبرتیت میں توحید فعلی ساقط ہو جاتی ہے۔

سالك مبتدى كيايي اثنائي راه سلوك بين ذوق اورجذبه طرهانے کے لیے حق تعالی عالم مثال کی سی نرکھی شان میں ابني خبتيات جبته ظاہر فرمات رہتے ہيں اصطلاح صوفيار ميں اس ظہور كو انسي كأنام هي دياجا تلب اوراس قسم كى تجليات كوتجليات افعالية كجماما تأسيه ان تجتيبات كاسالك بروهى الثرمزكب بؤماهي حويتراب كانشراب بيبينه والحربر بواب استخليب الكصفات فعليدي سيكي مفت كيسا فدح تعالى كومتجلّى يا ماسب اس وقت سالك ابنا فغل جول اور اراده سُلب يا ماسبدا وروه بر چیزیں الله کی قدرت اوراس سے افعال کوماری وساری یا تاہیے اور پرسب کچھائم مال اور کی وقت کا نیتحد ہو اہے جا لا کد معاملہ اس کے رحکس ہے اور وہ بیہ کہ الله تعالی خانق افعال ہے اور بندہ فاعل افعال ہے۔ اس کو آپ ایک مثال کے ذريع واضح فرثات بيرا وروه يركه مثلاً كوئي شعبده بازير فسينسم يستجع بالمركز حيند بعاب صورتول أورمورتبيل كوحركت دركيران بي عجبيب وعزيب حركات اورافعال صدور بی لا ماہے باریک میں لوگ توجان پیتے ہیں ان افعال کاصا دَر وخالق توبی<sup>ر کے</sup> کے بیٹھے بیٹھا ہو اسے اوران افغال کو اختیار کرنے والی وہ صورتیں ہیں جرریے سے باہر موجود ہیں ای لیے وہ کہتے ہیں کیصورت مُتحرِک ہے اور بینہیں کہتے کہ شعبده بازَمتحرک ہے . کافہمٌ .



البيت الله المالية الم

# منقبت

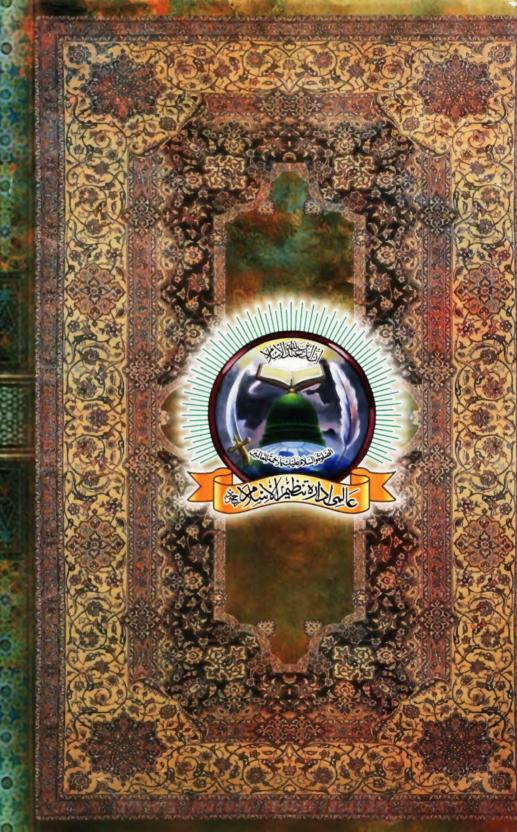
کیانہادہشکستر دیں کو آے پھر کستوار تونے خزال رسيده جمين كوبيمر كرد بالمسسدايا بهار ستوني زبین *مربهند کر*لیا اینا *عرشس نعست* و قار<del>ستی</del>نے سُلا کے آغوش عاطفت میں تقبیب پرور دگار <u>تو نے</u> عجرکے ماحول کے سبب جو اسے مکدر کیے ہوئے تھا ر داکئے رُومانیّت کے دائن سے دھو دیا وہ غبار <u>توئ</u> دِلوں کو پیرسے سکھائی تُونے اد اسے ہے باکی محبّت کیاہےصدّان اورحیدر کا آکے زندہ شعار <u>او ُ ن</u>ے ہوس کی رہیشہ دوانیوں سے رئیائے غیرت تھی ہارہ مارہ کیا رفو آکے تیرنقسب ری کا دامن کار آرسانٹ نے انر ذرا بھی نہ ہوسکا مجھ پیسسیلِ باطل کی بدرشوں کا جہاں کو بن کر دکھا دیا حق کا ساحل ہستوار تو نے معاِفضنائے بیطیں اُڑگئے وصوتین بن اکبری جِ آکے ہندوستاں میں بھونکا ضون باطل شکار <del>۔ آئے</del> دکھایا ایمال کااس طرح زور نقر وشاہی کے معرکے ہیں بڑھا دیا ہے سریر شا ہی سے بوریے کا و قار <u>۔ تو ن</u>ے عبائے ثنانبشبی نیبسنده زن ہوئی ہے گلسی مراُد ذر بیک بگرمخل جہاں ہے بدل ذہیئے کارو بار کے نے

بایق*ن کوئیراب ایک اربها رستون* ہے گا محفوظ حشر کے جو کہ دست باطل کی لورشوں سے ری پر آکے رکھا وہ آج پُراِفتخار <del>۔ تو</del>نے أعجم كوكياب متحونغمه إستة حجانب تحيب ب اللق سے چیز کر راط میت کے آر آڈ ن ترى نولىئے تېرىس كى دھن يەسبى گامزن دوق د نورى عطاکیاہے رہر وطریقت کوشوق منزل شکار گڑنے رفُو نه اب کرستگے گی اس کوخر د کی حیلہ گڑی اُبد تک ہے دامان شرک و برعمت کواس طرح ار ار ارتف نے مِن كُلُرِيكُاكِ شُوق سِيے شاہ كار <u>تو ُن</u> بريط وراب المشال بند شاخ نخل مرا ديراب کیاہے دام خردسے نیفِس عزس کولوں سنگار الورن

خطيال الم منز صاحبزاد كاستي في من المستن الله وحمد الله علية والمستال المنافض المنظمة الله عليه المنطقة المنافض المنطقة المنط







#### Maktabah Mujaddidiyah

www.maktabah.org

This book has been digitized by Maktabah Mujaddidiyah (www.maktabah.org).

Maktabah Mujaddidiyah does not hold the copyrights of this book. All the copyrights are held by the copyright holders, as mentioned in the book.

Digitized by Maktabah Mujaddidiyah, 2012

Files hosted at Internet Archive [www.archive.org]

We accept donations solely for the purpose of digitizing valuable and rare Islamic books and making them easily accessible through the Internet. If you like this cause and can afford to donate a little money, you can do so through Paypal. Send the money to <a href="mailto:ghaffari@maktabah.org">ghaffari@maktabah.org</a>, or go to the website and click the Donate link at the top.